

अनुक्रमणिका.

अनुक्रम.	विषयनुं नाम	पृष्ठांक.
१	शास्त्री कको.	१
२	बाराखडी.	२
३	नवकारना लुटा शब्दना अर्थ.	५
४	नवकार मंत्र.	५
५	नवकारना विस्तार अर्थ.	६
१	नमो अरिहंताणं ए शब्दना जुदा जुदा अर्थ.	६
२	नमो सिद्धाणं ए शब्दना अर्थ.	११
३	नमो आयरियाणं ए शब्दना अर्थ.	१२
४	नमो उवइजायाणं ए शब्दना अर्थ.	१५
५	नमो लोए सव्व साहूणं ए शब्दना	१०६
६	पंच परमेष्ठिने नमस्कार कथन.	१०७
७	एसो पंचनमुकारोकाउस्सगगनुं चैत्यवंदन.	१६७
८	अरिहंतना शब्दना अर्थ	१६७
९	सिद्ध भगव विस्तार अर्थ.	१६७
१०	आचार्यनानार अर्थशब्दना अर्थ.	१६८
११	उपाध्यायजीना पणं जोमे देवमिभो सूत्र.	१६९
१२	साधुना सत्तावीसगंगा विस्तार अर्थ	१७०

(५)

१३ नवकारनो महिमा तथा ते उपर श्रीमतीनी कथा.	३७
पंचिंदियना छुटा शब्दना अर्थ.	४०
६ पंचिंदिय सूत्र.	४१
पंचिंदियना विस्तार अर्थ.	४१
इच्छामि खमासमणना छुटा शब्दना अर्थ.	४३
७ इच्छामि खमासमण सूत्र.	४४
इच्छामि खमासमणना विस्तार अर्थ.	४४
इरियावहियंना छुटा शब्दना अर्थ.	४५
८ इरियावहियं सूत्र.	४६
इरियावहियंना विस्तार अर्थ.	४७
तस्सउत्तरीना छुटा शब्दना अर्थ.	५३
९ तस्सउत्तरी सूत्र.	५४
तस्सउत्तरीना विस्तार अर्थ.	५४
अन्नथ उससिणंना छुटा शब्दना अर्थ.	५६
उससिणं सूत्र.	५८
उससिणं विस्तार अर्थ.	५८
	६१
	६३
	६४
	८०
तथा अर्थ समजुती साथे.	८१
	८६

१३	करेमिभंते सूत्र.	८६
	करेमिभंतेना विस्तार अर्थ.	८६
	सामाह्य वयजुत्तोना लुटा शब्दना अर्थ.	८९
१४	सामाह्य वयजुत्तो सूत्र.	८९
	सामाह्य वयजुत्तोना विस्तार अर्थ.	९०
	वांदणाना लुटा शब्दना अर्थ.	९१
१५	वांदणा सूत्र.	९२
	वांदणाना विस्तार अर्थ.	९४
	सांजनां पञ्चख्खाणना लुटा शब्दना अर्थ.	१००
१६	सांजनां पञ्चख्खाण.	१००
	१. पाणहारनुं पञ्चख्खाण.	१००
	२. चउविहारतिविहार अने दुविहारनुं.	१०१
	चैत्यवंदनोना लुटा शब्दना अर्थ. १-२-३-४ ना	१०३
१७	शत्रुंजय तीर्थनुं चैत्यवंदन.	१०५
१८	पंचपरमेष्ठि चैत्यवंदन.	१०७
१९	वीश स्थानकना नामनुं चैत्यवंदन.	१०७
२०	वीश स्थानकतपना काउस्सग्गनुं चैत्यवंदन.	१६७
	जंकिंचिना लुटा शब्दना अर्थ	१६७
२१	जंकिंचि सूत्र. विस्तार अर्थ.	१६७
	जंकिंचिना विस्तार अर्थशब्दना अर्थ.	१६८
	नमुथ्युणंना लुटा शब्दनां जोमे देवसिभो सूत्र.	१६९
२२	नमुथ्युणं सूत्र. तग्गंना विस्तार अर्थ	१७०

	नम्मुथ्युणंना विस्तार अर्थ.	११३
	जावंति वे ना लुटा शब्दना अर्थ.	११०
१३	जावंति चेइआइं सूत्र.	१२०
	जावंति चेइआइंना विस्तार अर्थ.	१२१
२४	जावंत केविसाहू सूत्र.	१२१
	जावंत केविसाहूना विस्तार अर्थ.	१२१
२५	नमस्कार अर्थ सहित.	१२२
	उवसग्ग हरंना लुटा शब्दना अर्थ.	१२२
२६	उवसग्गहरं सूत्र.	१२३
	उवसग्गहरंना विस्तार अर्थ.	१२४
	स्तवन ?-२ ना लुटा शब्दना अर्थ.	१२७
२७	ऋषभ देवनुं स्तवन.	१२८
२८	प्रथम व्रत पूजानुं स्तवन.	१२९
	जयवीयरायना लुटा शब्दना अर्थ.	१३२
२९	जयवीयराय सूत्र.	१३३
	जयवीयरायना विस्तार अर्थ.	१३३
	इआणंना लुटा शब्दना अर्थ.	१३७
		१३७
	अर्थ.	१३८
	अर्थ.	१४०
		१४१
		१४१

३२	सिद्धचक्रनी शोय अर्थ सहित.	१४४
	संसार दावाना छुटा शब्दना अर्थ.	१४५
३३	संसारदावानी स्तुति.	१४६
	संसार दावाना विस्तार अर्थ.	१४७
	स्नातस्थाना छुटा शब्दना अर्थ.	१५०
३४	स्नातस्थानी स्तुति.	१५२
	स्नातस्थाना विस्तार अर्थ	१५४
	पुरुखरवर दीवहेना छुटा शब्दना अर्थ.	१५६
३५	पुरुखरवरदीवहे सूत्र.	१५७
	पुरुखरवरदीवहेना विस्तार अर्थ.	१५७
	सिद्धाणं बुद्धाणंना छुटा शब्दना अर्थ.	१६०
३६	सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र.	१६१
	सिद्धाणं बुद्धाणंना विस्तार अर्थ.	१६२
	वेआवच्चगराणंना छुटा शब्दना अर्थ.	१६५
३७	वेआवच्चगराणं सूत्र.	१६५
	वेआवच्चगराणंना विस्तार अर्थ.	१६५
	देवसिपडिकमणे ठाउंना छुटा शब्दना अर्थ.	१६७
३८	देवसिपडिकमणे ठाउं सूत्र.	१६७
	देवसि पडिकमणे ठाउंना विस्तार अर्थ.	१६७
	जोमे देवसिओना छुटा शब्दना अर्थ.	१६७
३९	इच्छामिठामि काउस्सगं जोमे देवसिओ सूत्र.	१६९
	इच्छामिठामि काउस्सगंना विस्तार अर्थ	१७०

	नाणंमिदंसणंमिना लुटा शब्दना अर्थ	१७२
४०	नाणंमि दंसणंमि सूत्र	१७४
	नाणंमिदंसणंमिना विस्तार अर्थ	१७५
४१	देवसिञ्चं आलोउं सूत्र	१७१
	देवसिञ्चं आलोउंना विस्तार अर्थ	१८१
	सातलाखना लुटा शब्दना अर्थ	१८२
४२	सातलाख सूत्र	१८३
	अठार पाप स्थानकना लुटा शब्दना अर्थ	१८४
४३	अठार पापस्थानक सूत्र	१८४
४४	वंदिता सूत्र तथा लुटा शब्द तथा विस्तार अर्थ सहित	१८६
	अप्भुठिओमिना लुटा शब्दना अर्थ	२४२
४५	अप्भुठिओमि सूत्र	२४३
	अप्भुठिओमिना विस्तार अर्थ	२४४
	आयरिय उवञ्चायना लुटा शब्दना अर्थ,	२४५
४६	आयरिय उवञ्चाय सूत्र	२४६
	आयरिय उवञ्चायना विस्तार अर्थ	२४६
	सुअदेवयोदि थोयोना लुटा शब्दना अर्थ	२४७
४७	सुअदेवयानी थोय तथा विस्तार अर्थ	२४७
४७	क्षेत्र देवतानी थोय	२४७
	क्षेत्र देवतानी थोयना विस्तार अर्थ	२५०
४७	कमलदलनो थोय विस्तार अर्थ सहित	२५०
५०	यस्याः क्षेत्रं नी थोय विस्तार अर्थ सहित	२५१

५१	भुवन देवतानी थोय विस्तार अर्थ सहित	३५१
	नमोस्तु वर्द्धमानायना छुटा शब्दना अर्थ	३५२
५२	नमोस्तु वर्द्धमानाय सूत्र	२५३
	नमोस्तु वर्द्धमानायना विस्तार अर्थ	२५४
	स्तवनना छुटा शब्दना अर्थ	३५५
५३	स्तवन (सखी आवी देवदीवाळी)	२५६
	वरकनकना छुटा शब्दना अर्थ	३५७
५४	वरकनक सूत्र	२५७
	वरकनकना विस्तार अर्थ	३५८
	अढ्वाइज्जेसुना छुटा शब्दना अर्थ	२५८
५५	अढ्वाइज्जेसु सूत्र	२५८
	अढ्वाइज्जेसुना विस्तार अर्थ	२५९
	सस्त्राय (अनाथी मुनीनी)ना छुटा शब्दना अर्थ	२६०
५६	सस्त्राय (अनाथी मुनिनी)	२६०
५७	लघुशांति सूत्र छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ	
	सहित	३६३
	चउकसायना छुटा शब्दना अर्थ	२७६
५८	चउकसाय सूत्र	२७७
	चउकसायना विस्तार अर्थ	३७७
	जग चिंतामणिना छुटा शब्दना अर्थ	२७९
५९	जगचिंतामणि चैत्यवंदन	३८०
	जग चिंतामणिना विस्तारार्थ	२८२

	भरहेसरनी सज्जायना छुटा शब्दना अर्थ	२८५
६०	भरहेसरनी सज्जाय	२८७
	भरहेसरनी सज्जायना विस्तार अर्थ	२९०
	इच्छकार सुहराइना छुटा शब्दना अर्थ	२९८
६१	इच्छकार सुहराइ सूत्र	२९८
	इच्छकार सुहराइना विस्तार अर्थ	२९८
	तीर्थवंदनाना छुटा शब्दना अर्थ	३००
६२	तीर्थवंदना	३००
	सवारनां पञ्चख्वाणना छुटा शब्दना अर्थ	३०२
६३	पञ्चख्वाण	३०३
	१ नमुकार सहिअंनुं	३०३
	२ नमुकार सहिअं मुठिसहिअंनुं	३०४
	३ पोरिसि साहूपोरिसिनुं	३०४
	४ पुरिमहू अवहूनुं	३०६
	५ विगइ निविगइनुं	३०६
	६ एकासणा तथा वेआसणानुं	३०८
	७ आयंविलनुं	३१०
	८ चउविहार उपवासनुं	३११
	९ तिविहार उपवासनुं	३११
	१० चउथ्य छठ भत्तादिकनुं	३१२
	११ तपना दिवसे पाणहारनुं	६१२
	१२ गठसहिअं आदि अभिग्रहानुं	३१३

१३	देसावगासिकनुं	३१४
१४	पञ्चख्वाण पारवानो विधि	३१४
१५	निवियातां विचार	३१५
	विशाल लोचनना छुटा शब्दना अर्थ	३१५
६४	विशाल लोचन सूत्र	३१५
	विशाल लोचनना विस्तार अर्थ	३२०
	सीमंधर जिन चैत्यवंदन, स्तवन तथा थोयना छुटा शब्दना अर्थ	३२२
६५	सीमंधर जिन चैत्यवंदन (सीमंधर परमात्मा)	३२२
६६	सीमंधर जिन चैत्यवंदन (सीसीमंधर जगधणो)	३२३
६७	सीमंधर जिन स्तवन (पुरुखलवइ विजयेजयो)	३२४
६८	सीमंधर जिन स्तवन (चितडुं संदेशो मोकले)	३२४
६९	सीमंधर जिन थोय (सीमंधर जिनवर तथा श्री सीमंधर मुजने वहाला)	३२६
	सिद्धाचलनां चैत्यवंदन तथा स्तवनना छुटा शब्दना अर्थ	३२७
७०	सिद्धाचलनुं चैत्यवंदन (श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्र)	३२७
७१	सिद्धाचलनुं स्तवन १ लुं (जात्रा नवाणुं करीए)	३२७
७२	” २ जुं (चालोने प्रीतमजी प्यारा)	३२८
७३	सिद्धाचलनो थोय (पुंडरिकगिरि महिमा तथा श्री शत्रुंजय गिरितीरथ सार)	३२९
७४	सकलाऽर्हत छुटा शब्दना तथा विस्तार अर्थ सहित	३३०

७५	श्रावकपाक्षिकादि संक्षिप्तातिचार	३५२
७६	श्रावकपाक्षिकादि विस्तारातिचार	३६७
७७	श्रावक पाक्षिकादि अतिचार	३७६
७८	अजितशांति छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	४०७
७९	बृहच्छांति स्तव छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	४५१
८०	संतिकर स्तोत्र छुटा शब्दना तथा विस्तार अर्थ सहित	४७२
८१	तिजयपहुत्त, छुटा शब्दना तथा विस्तार अर्थ सहित	४८३
८२	नमिञ्जण, छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	४९८
८३	भक्तामर छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	५१६
८४	कल्याणमंदिर छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	५५९
८५	संधारा पोरिसि, छुटा शब्दना अर्थ, तथा विस्तार अर्थ सहित	६०७
८६	सागरचंदो, छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	६१६
८७	पोसहनं पच्चखाण, छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	६२१
८८	पडिलेहेण करवानो विधि	६२३
८९	देववांदवानो विधि	६२४
	मन्हजिणाणंनं छुटा शब्दना अर्थ	६२५
९०	मन्हजिणाणंनी सद्याय	६२५
	मन्हजिणाणंनं विस्तार अर्थ	६२७

९१	पोसहनां चोवीश मांडलां	६२७
ए२	पोषधविधि-	६३०
१	गमणागमणे	६३३
२	स्थंडिल जवानो विधि	६४३
३	माथे कामालि नांखवा संबंधि काल	६४४
४	अचित्त पाणीनो काल	६४४
५	परचुरण समजुतो	६४५
६	पोसहना अठार दोष	६४५
	ज्ञान पंचमीनी स्तुतिना छुटा शब्दना अर्थ	६४७
९३	ज्ञान पंचमीनी स्तुती (श्रीनेमिःपंचरूप)	६४७
	ज्ञान पंचमीनो स्तुतिना विस्तार अर्थ	६५०

चैत्यवंदनानि.

९४	वीजतुं चैत्यवंदन (दुविध धर्म जिणेउपदोश्यो)	६५३
ए५	ज्ञान पंचमीनुं चैत्यवंदन (त्रीगडे वेठा वीरजिन)	६५४
९६	अष्टमीनुं चैत्यवंदन (महासुदो आठम दाने)	६५५
९७	एकादशीनुं चैत्यवंदन (शासन नायक वीरजी)	६५६
९८	रोहिणी तपनुं चैत्यवंदन (रोहिणीतप आराधोये)	६५७
एए	वीश स्थानक तपना काउस्सगनुं चैत्यवंदन	६५८
१००	आदि जिन चैत्यवंदन (सर्वारथ सिद्धे थकी)	६५ए
१०१	चोवीश जिनना वर्णनुं (पद्मप्रभने वासुपूज्य)	६५९
१०२	चोवीश जिनना लंछननुं चैत्यवंदन (वृषभ लंछन रूपभदेव)	६६०

१०३	पार्श्वनाथ चैत्यवंदन (जयचिंतामणी पार्श्वनाथ)	६६१
१०४	शांतिजिन चैत्यवंदन (जयजय शांतिजिणंदवीर)	६६१
१०५	आदिजिन चैत्यवंदन (अरिहंत नमो भगवंत नमो)	६६२

छंद.

१०६	गौत्तमाष्टक छंद	६६३
१०७	सोलसतीनो छंद	६६४
१०८	नवकारनो छंद (वांछोत पुरे विविध परे)	६६६
११०	महावीर स्वामीनो छंद	६७०
१११	नवकार लघुछंद (सुख कारण भविअणं)	६७१

स्तवनानि.

११२	वोजनुं स्तवन (प्रणमो सारदमाय)	६७२
११३	पांचमनुं स्तवन (पंचमो तप तमे करेरे प्राणी)	६७४
११४	अष्टमीनुं स्तवन (हारे मारे ठाम धरमना)	६७५
११५	एकादशीनुं स्तवन (जगपति नायक नेमि जिणंद)	६७८
११६	एकादशोना दोढसो कल्याणकनुं स्तवन	६८४
११७	मोटुं दीवाली स्तवन (श्री श्रमण संघतिलकौ पमं)	६९६
११८	वीर स्तवन (वीर हमणां आवे छे मारे मंदिरिए)	७१५
११९	वीर प्रभुनुं दीवालीनुं स्तवन (मारग देशक मोक्षनोरे)	७१६
१२०	आराधनानुं स्तवन.	७१७
१२१	ज्ञानपांचमनुं स्तवन मोटुं (सुत सिद्धारथ भूपनोरे)	७२०
१२२	छ आवश्यकनुं स्तवन	७४१
१२३	मुनिराज गुण स्तवन (सम्यक् दृष्टीने संतोषो)	७४७

१२४	पूजाविधि आश्रयीश्री सुविधि जिन स्तवन	७४ए
१२५	पार्श्वनाथजीनुं भाव पूजानुं स्तवन	७५१
१२६	सिद्धाचलजीनुं स्तवन (बापलडारि पातोकडारि)	७५३
१२७	ऋषभ देवजीनुं स्तवन (माता मरुदेवीना नंद)	७५५
१२८	सोद्धाचलजीनुं स्तवन (चालो चालो विमलगिरि)	७५६
१२९	सिद्धाचलजीनुं स्तवन (आंखडीएरे में आज शेत्रुंजो दीठोरे)	७५७
१३०	समेत शिखरजीनुं स्तवन (ममेतशिखर जिनवंदीए)	७५८
१३१	समेत शिखरजीनुं स्तवन (जइ पूजोलाल)	७५ए
१३२	समेतशिखरजीनुं स्तवन (समेत शिखर गिरिभेटीएरे)	७६१
१३३	आबुजीनुं स्तवन (आबु अचल रलियामणोरे)	७६३
१३४	अर्बुदगिरिनुं स्तवन (आवां आवोने राज)	७६४
१३५	आबुगिरिनुं स्तवन (आदि जिणेसर पूजतां)	७६५
१३६	गिरनारजीनुं स्तवन (तारणथीरथ फेरी चाल्याकंत)	७६७
१३७	गिरनारजीनुं स्तवन (सहेसावन जइ वसीए)	७६८
१३८	गिरनारजीनुं स्तवन (नेम निरंजन देवके)	७६ए
१३ए	अष्टापद स्तवन (चउअठ दसदोय वंदीएजी)	७७१
१४०	अष्टापद स्तवन (अष्टापद अरिहंतजी)	७७३
१४१	अष्टापद गिरिस्तवन (अष्टापद गिरियात्रा कारणकुं)	७७४
१४२	तीर्थमालानुं स्तवन (शेत्रुंजे रिखभ समोसर्या)	७७५
१४३	श्री सीमंधरजिन स्तवन (धन धन खेत्र महाविदेहजी)	७७६
१४४	श्री युगमंधरजीन स्तवन (श्री युगमंधरने केजो)	७७८

१४५	अजरापार्श्वनाथनुं स्तवन (हारिं मारिं आजनीं घडीं ते रलियामणिरे)	७७९
१४६	पांच करणनुं स्तवन छ ढाळनुं	७८०
१४७	संभवनाथजीनुं स्तवन (साहिव सांभळोरे)	७८०
१४८	संखेश्वर पार्श्वनाथजीनुं स्तवन (अंतरजामी सुण)	७९०
१४९	दीवालीनुं स्तवन (जयजिनवर)	७९१
१५०	दीवालीनुं स्तवन वीजुं (रमती गमती अमुन साहेली)	७९२
१५१	सिद्धचक्र स्तवन (अवसर पामोनेरे)	७९३
१५२	रोहिणी तपनुं स्तवन (हारिं मारिं वासुपुज्यनो नंदन)	७९५
१५३	गौतम स्वामीनुं प्रभाती स्तवन (मात पृथ्वी सुत)	७९६
१५४	संखेश्वरा पार्श्वनाथनुं प्रभाती स्तवन (पास संखेश्वरा)	७९८
१५५	दान, शीयळ, तप अने ज्ञावनुं प्रभातिउं (रेजीव जैनधर्म कीजीए)	७९९
१५६	प्रभातिउं (जोवनीआनी मोजां फोजां)	७९९
१५७	प्रभातिउं (आवी रुडी भक्ति)	८००
१५८	स्तवन राग प्रभाती (आजको लाहो लीजीए)	८०१
१५९	स्तवन प्रभाती (जागे सो जिन भक्त कहावे)	८०१
सजायो.		
१६०	आप स्वभावनी (आप स्वभावमारिं)	८०१
१६१	सहजानंदीनी (सहजानंदीरे आतमा)	८०३
१६२	चेतन शीखामणनी (चेतन अवकळु चेतियं)	८०६
१६३	आत्म बोधनी (हो सुण आतमा)	८०६

१६४	आत्म वोधनी (सांभल सयणां)	८०७
१६५	धोवीडानी (धोवीडा तुं धोजे मननुं)	८०८
१६६	भरतजीनी (मनहीमें वैरागी)	८०९
१६७	ढंढणरुषिनी (ढंढण रुषिने वंदणा हुं वारी लाल)	८१५
१६८	अइमत्ताजीनी (श्री अइमत्ता मुनीवरजीकी)	८११
१६९	करकंडुनी (चंपानगरी अतीभली)	८१३
१७०	क्रोधनी (कडुवां फल छे क्रोधनां)	८१३
१७१	माननी (रे जीव मान न कीजीए)	८१४
१७२	मायानी (समकीतनुं मूल जाणोयेजी)	८१४
१७३	लोभनी (तुमे लक्षण जोजो लोभनारे)	८१०
१७४	आठमइनी (मद आठ महा मुनी वारीए)	८१६
१७५	मेतारज मुनिनी सज्जाय.	८१८
१७६	अरणिक मुनिनी सज्जाय.	८२०
१७७	वणजारानी सज्जाय.	८२१
१७८	आत्म शिक्षा सज्जाय.	८२२
१७९	सामायकना वत्रीस दोषनी सज्जाय.	८२३
१८०	शाश्वता जिन स्तुति.	
१८१	आदिजिन स्तुति.	८२५
१८२	बीज तीथिनी स्तुति.	८२६
१८३	पंचमीनी स्तुति.	८२७
१८४	अष्टमीनी स्तुति.	८२८
१८५	एकादशी स्तुति.	८२९

१८६	रोहिणी तपनी स्तुति.	८३०
१८७	पञ्चसणनी स्तुति.	८३२
१८८	पञ्चसणनी स्तुति.	८३३
१८९	अध्यात्म स्तुति.	८३४
१९०	शांतिजिन स्तुति.	८३५
१९१	पंच तीरथनी आरती.	८३७
१९२	शांतिजिननी आरती.	८३८
१९३	आदिजिननी आरती.	८३९
१९४	मंगलदीवो.	८३९
१९५	मंगलचार.	८४१
१९६	जिन नव अंग पूजाना दोहा.	८४१
१९७	सामायक लेवानी विधि.	८४२
१९८	सामायक पारवानी विधि.	८४४
१९९	देवसि प्रतिक्रमण विधि.	८४४
२००	राइप्रतिक्रमण विधि.	८४९
२०१	पखिखप्रतिक्रमण विधि.	८५१
२०२	चउम्मासीप्रतिक्रमण विधि.	८५५
२०३	सांवत्सरि प्रतिक्रमण विधि.	८५५
२०४	चउद् नियम धारवानी विगत.	८५६
२०५	समकित सहित वार व्रत उचरवानी टीप.	८५९
२०६	पञ्चख्खाणना आगारनी गाथा.	८६४

॥ ॐ ह्रीं श्री पार्वनाथाय नमः ॥

अथ श्री पंच प्रतिक्रमण सूत्र.

(वात्सावबोध-अर्थ सहित.)

॥ श्री ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ नृ नृ
अ आ ष ष उ उ ऋ ॠ नृ नृ

ए ऐ औ न ओ औ अं अः
ऐ औ औ ओ औ औ अं अः

॥ क ख ग घ ङ ॥ च छ ज ङ

॥ ङ ञ ग घ ङ ॥ य ष ञ ङ

ज ॥ ट ठ ड ढ ण ॥ त थ

अ ॥ ट ठ ड ढ ण ॥ त थ

द ध न ॥ प फ ब न्न म

द ध न ॥ प फ ब न्न म

॥ य र ल व ॥ श ष स ह

॥ य र ल व ॥ श ष स ह

हं हः ॥ १ ॥
क्ष क्षः ॥ १ ॥

क	ख	ग	घ	ङ	॥	च	छ
क	७५	७७	७८	७९	॥	२२	२७

ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण
७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४

॥	त	थ	द	ध	न	प
९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१

फ	ब	भ	म	॥	य	र	ल
१०२	१०३	१०४	१०५	॥	१०६	१०७	१०८

श ॥ ष ॥ स ॥ द ॥ इ ॥
 श ॥ ष ॥ स ॥ द ॥ इ ॥

अ आ इ ई न क ए ऐ न औ अं अः

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
ङ	ङा	ङि	ङी	ङु	ङू	ङे	ङै	ङो	ङौ	ङं	ङः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः

ब	ग	गि	गी	ब्र	ब्रू	ब्रै	ब्रौ	बं	बः
ज	जा	जि	जी	ज्र	जू	ज्रै	जू	जं	जः
ऊ	ऊा	ऊि	ऊी	ऊ्र	ऊू	ऊ्रै	ऊू	ऊं	ऊः
अ	आ	अि	अी	अ्र	अू	अ्रै	अू	अं	अः
ट	टा	टि	टी	ट्र	ट्रू	ट्रै	ट्रू	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठ्र	ठ्रू	ठ्रै	ठ्रू	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	ड्र	ड्रू	ड्रै	ड्रू	डं	डः
झ	झा	झि	झी	झ्र	झ्रू	झ्रै	झ्रू	झं	झः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढ्र	ढ्रू	ढ्रै	ढ्रू	ढं	ढः
ण	णा	णि	णी	ण्र	ण्रू	ण्रै	ण्रू	णं	णः
त	ता	ति	ती	त्र	तू	त्रै	तू	तं	तः
थ	था	थि	थी	थ्र	थ्रू	थ्रै	थ्रू	थं	थः
द	दा	दि	दी	द्र	दू	द्रै	दू	दं	दः
ध	धा	धि	धी	ध्र	ध्रू	ध्रै	ध्रू	धं	धः
न	ना	नि	नी	न्र	नू	न्रै	नू	नं	नः
प	पा	पि	पी	प्र	पू	प्रै	पू	पं	पः

फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः
र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ञ	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

८ ९ ० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

(५)

उदाहरणो.

गुण, कमल, नल, पवन, पाप, जीव, अ
जीव, पुण्य, दास, अपकाय, तेजकाय, त्रस
काय, पृथ्वी, बलचर, खेचर, अश्वर्य, औदा
र्य, स्तुति, इत्थामि, खमासमणो, वदिउं, मन्त्र
एणा, इत्यादि.

नवकारना तुटा शब्दोना अर्थ.

नमो-नमस्कार थाओ.
अरिहंताणं-अरिहंतोने-नुं.
सिद्धाणं-सिद्धोने-नुं.
आयरियाणं-आचार्योने-नुं.
उवज्जायाणं-उपाध्यायोने-नुं.
लोए-लोकने विषे.
सव्व-सर्व
साहूणं-साधुओने-नुं.
एसो-आ-ए

पंच-पांच
नमुक्कारो-नमस्कार
पाव-पाप.
प्पणासणो-नाश करनार
मंगलाणं-मंगलिकोनुं-(मां.)
सव्वेसि-सर्वनुं
पढमं-पहेलुं
हवइ-छे-थाय छे.
मंगलं-मंगल.

१ ॥ नवकार मंत्र. ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो

(६)

आयश्चिन्नाणं, नमो उवद्यायाणं, नमो
लोए सव साहूणं, एसो पंच नमुक्कारो,
सव पाव प्पणासणो, मंगलाणं च
सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—हवे प्रथम सर्व मंगलनुं मूल, श्री जिनशा
सननो सार, अगिआर अंग अने वार उपांग तथा चौ
द पूर्वनो उधार, हमेशां शाश्वत एवा श्री पंच परमे
ष्ठिने नमस्कार रुप महामंत्र श्री नवकार ठे. तेनो प्रा-
रंज करीए ठीए. तेमां पहेलुं श्री अरिहंत पदनुं वर्णन
करीए ठीए. नमो अरिहंताणं के० अरि के० रागादिक
वेरी प्रते हंताणं के० हणनार एवा, वार गुणे करी स
हित चोत्रीस अतिशयवंत समवसरणने विषे विरा
जमान एवा विहरमान तीर्थकर जे श्री वीतराग अ
रिहंत देव ते प्रत्ये, नमो के० नमस्कार आनु.

अर्हीआं नमः ए पद ड्य तथा ज्ञाव संकोचने
अर्थे ठे माटे एवने हाथ, पग, अने माथा वने करी.
सुप्रणिधानरुप नमस्कार आनु. एटले कर, मस्तक
अने विशुद्ध मननो नियोग ते ज्ञाव संकोच जाणवो,

(७)

एटले इय अने ज्ञावथी नमस्कार थाल एवो नमस्कार कोने थाल ? तो के अरिहंतादिक पंच परमेष्ठिने अहींआं प्रथम नमो अरिहंताणं ए पदना त्रण जूदा जूदा पाठ ठे तेनां नाम. १ नमो अरहंताणं २ नमो अरिहंताणं अवे ३ जो नमो अरुहंताणं.

पहेला (नमो अरहंताणं के०) नमोऽर्हन्नयः जे पूजाने योग्य ठे तेने अर्हंत कहिये, अर्थात् देवोए रचे ला एवा अशोक वृक्ष आदि आठ महा प्रातिहार्यरूप पूजाने जे योग्य ठे तेने अरहंत कहियें ते विषे आवो पाठ ठे.—अरहंति वंदण नमं, सणाइ अरहंति पूअसकारं ॥ सिद्धिमणं च अरहा, अरहंतातेण बुञ्चंति ॥१॥ अर्थः—जेठ वंदण नमस्कारादिने योग्य ठे, जेमने पूजा सत्कार करवां घटे ठे अने जेठ सिद्धिगति पामवाने योग्य ठे ते माटे तेमने अरहंत कहे ठे.

अथवा अरहंत एटले जेम वादलां सूर्यमंजुलने ढांके ठे तेम कर्मरूप रज आत्माना ज्ञानादिक अनंत गुणोने ढांकी दे ठे एवां चार घातिकर्मरूप रजने हण वाथकी अरहंत कहियें. तथा रहस्याज्ञावात् अरहंत एटले केवलज्ञान अने केवलदर्शनवमे करीने रहस्यनो अज्ञाव

(८)

ठे एटले जेनाथी कंइ ठानुं नथी माटे अरहंत कहिये.
अथवा (अ के०) नथी (रह के०) एकांत प्रदेश
अने (अंत के०) मध्यभाग पर्वत गुफा विगेरेनो जेने
एटले समस्त वस्तु समूहना प्रबन्नपणाना अज्ञावे करी
अरहंत कहिये अर्थात् कंइपण वस्तु तेमनाथी ठानी
नथी सर्व वस्तुने तेउ जाणे ठे तेवा जगवंताने नम
स्कार थान.

अथवा (अ के०) नथी (रह के०) रथ विगे
रे वधो परिग्रह अने (अंत के०) विनाशना करना
रा एवा जरा विगेरे जेमने एवा अरहंत तेमने नम-
स्कार थान.

अथवा अरहयज्ञयः एटले प्रकृष्ट रागादि हेतुचूत्
एवा मनोज्ञ अने अमनोज्ञ विषयो तेना संपर्कअकी पण
जे पोतानो स्वस्वज्ञाव ठारुता नथी ते माटे अरहंत
कहिये.

हवे (नमोअरिहंताणं के०) नमो रिहद्वयः नमो के०
नमस्कार थान. (अरि के०) आठ कर्मरूप शत्रुलेने (हं
ताणं के०) हणानारा एवा श्रीअरिहंतदेव प्रत्ये नमस्कार
थान. ते श्रीअरिहंत जगवानने महागोप महामाहण,

(ए)

निर्यामक अने सार्धवाह ए चार उपमा अपाय ठे ते सार्धकज ठे ते आ रीतेः—महागोपः—जेम गोवाल गा योने चराववाने वनवगमामां लइ जाय ठे तेम अरि हंत जगवान जीवोने निर्वाण रूप वन प्रत्ये पोहोचामे ठे माटे महागोप कहीए. वली महा माहण एटले अ रिहंतजी प्राण, जूत, सत्व अने जीव ए चार प्रकार ना जीवोने माहण माहण एटले मारो नही मारो नही एवो शब्द कहे, माटे महा माहण कहीए. वली ए अ रिहंत जगवानना आश्रय थंकी संसार समुद्रनो पार पमाय ठे माटे निर्यामक कहीए. वली जेम कोइ सार्धवाहनी मददथी इच्छित नगरे जवाय ठे तेम श्री अ रिहंतनी सहायथी मोक्षरूप नगरीए पोहोचांय ठे मा टे तेमने सार्धवाहनी उपमा अपाय ठे. ए रीते चारे उप मा अपाय ठे. ए चारे उपमा सार्धक ठे अने ते श्री अरिहंतनेज ठाजे ठे.

वली राग द्वेष, परिसह अने उपसर्गने नमावनार पांच इन्द्रियोना त्रेवीश विषय, चार कषाय, बावीश प रिसह तथा शरीरमां स्वप्नावे करीने उत्पन्न थएली अने बीजाए करेली एवी बे प्रकारनी वेदना अने अनु

लोम उपसर्ग (ते स्त्रीआदिककामनी प्रार्थना करतेते)
अने प्रतिलोम उपसर्ग (ते देव मनुष्य तिर्येच वीगेरे
थी तामना तर्जना शाय ते) इत्यादिक शत्रुजने हण
नार माटे अरिहंत कहीए ते अरिहंतने नमस्कार था
नु. एवा अरिहंतने मन वचन अने कायानी एकाग्र
ताए ज्ञाव सहित नमस्कार करतां थकां जीव ज्ञवना
सहस्रोथी मुकाय तथा बोधिना लाजने पामे. ए वी
जा पाठनो अर्थ थयो.

हवे त्रीजो पाठ (नमो अरुहंताणं केण) नमो अरुह
ज्जयः एनो अर्थ कहे ठेः—कर्मरूप वीज नाश थवा थकी जे
मने संसारमां फरी (अ केण) नथी (रुहंत केण) उपजवुं
तेमने अरुहंत कहीए एटले जेमने एके ज्ञव करवो
नथी. कह्युं ठे केः—दग्धे बीजे यथाऽत्यंतं, प्राडुर्भवति
नांकुरः ॥ कर्मवीजे तथा दग्धे, न रोहति ज्ञवांकुरः
॥१॥ अर्थः—जेम अत्यंतपणे वली गएला बीजने वाव
वाथी अंकुरो फुटतो नथी तेम कर्मरूप वी वली ज
वाथी ज्ञवरूप अंकुरो जगतो नथी. एटले नवा ज्ञव क
रवा परता नथी; माटे अरुहंत कहीए. एवा अरुहंत
ज्ञगवानने नमस्कार थानुं ए त्रीजा पाठनो अर्थ थयो.

अहींआ कोइ कहे के उपर वर्णवेला लक्षणवा
ला अरिहंत जगवानने शा माटे नमस्कार करवो जो
इए ? तेने उत्तर कहे ठे जे आ संसाररूप महा जयंक
र अटवीमां भ्रमण करवाने बीहीता एवा जीवोने अ
नुपम आनंद आपनार जे मोक्षपुरी तेनो मार्ग बताव
वाथी परम उपकारी ठे ते माटे तेमने नमस्कार कर
वो योग्यज ठे. अहींआं 'नमो अरिहंताणं' ए सात
अक्षरनुं पहेलुं पद अयुं. वली ते पद पहेली संपदा अ
इ. संपदा एटले ज्यां अर्थ समाप्तिनो अधिकार होय अ
थवा ज्यां विसामो लेइए तेने संपदा कहीअें. ए अरि
हंत पदने श्वेत वर्णे ध्याइए. ए प्रथम अरिहंत पदनुं
जावमंगल वर्णव्युं ॥

हवे बीजुं सिद्धपदनुं मंगल वर्णवे ठे (नमो
सिद्धाणं केण) नमः सिद्धेभ्यः अहींआं सित केण
चिरकालनो बांधेलो एवो आठ कर्मरूप लाकमानो
ज्जारो, तेने ज्वाजळयमान शुक्लध्यानरूप अग्निवरे जेणे
ध्मातं केण धम्यो ठे, बाळ्यो ठे, जस्म कीधो ठे तेने
निरुक्ते सिद्ध कहिए. एवा सर्व सिद्धने नमो केण नम
स्कार होजो. अथवा विधु धातु, गत्यर्थवाची ठे एथी

अपुनरावृत्तिये एटले पाबुं न अवाय एवी रीते मोह
 प्रत्ये गया ते सिद्ध कहेवाय, अथवा शिक्षा करनार शा
 स्त्रकथक अया तेथी सिद्ध कहेवाय, अथवा शासनने
 प्रवर्त्तावनार अइने सिद्धरूप मांगळ्यपणाप्रत्ये अनुभव्युं
 ते सिद्ध कहिये. अथवा नित्ये नहीं बदलाय तेवी अनंत
 त स्थितिने पामवाथी सिद्ध कहिये अथवा जेमनाथी
 ज्ञव्य जीवोने गुणोनो समूह प्राप्त थाय ठे माटे सिद्ध
 कहिये. ए विषे उपर कहेला ज्ञावार्थवालो आ श्लोक
 लख्यो ठे. तद्यथा ॥ ध्मातं सितं येन पुराणकर्म, यो
 वा गतो निर्वृत्तिसौधमूर्ध्नि ॥ ख्यातोऽनुशास्ता परिनि
 ष्टितार्थो, यः सोऽस्तु सिद्धः कृतमंगलो मे ॥ १ ॥

ए सिद्ध परमात्माने अनंत चतुष्क एटले ज्ञान
 दर्शन चारित्र तथा वीर्य ए गुण प्रगट अया ठे ते गु
 णोए करी सहित होवाथी ज्ञव्य जीवोने अतिआनंद
 उत्पन्न करे ठे तेथी अत्यंत उपकारी ठे माटे श्री सिद्ध
 जगवान् नमस्कार करवा योग्यज ठे. एमनुं राता वणे
 ध्यान करीये. आ पंचपरमेष्टि मंगलनुं वीजुं मंगल
 जाणवुं. ए नवकारनुं वीजुं पद तथा वीजी संपदा अइ.
 हवे आचार्य पदनुं त्रीजुं मंगल कहे ठे. (नमो

आधरियाणं के०) नम आचार्येभ्यः आ एटले मर्यादाए करी, एटले विनये करी चर्यते के० सेवाय ठे अर्थात् जिनशासनना अर्थना उपदेशक ठे अने तेथी ते उप देश सांजलवानी इत्ता करनारा जीवो जेमने सेवे ठे तेमने आचार्य कहियें तेवा आचार्यने नमो के० नम स्कार आउं. कह्युं ठे के “सुत्तविक्र लक्षणा, जुत्तो म वृस्स मेठिज्जुअ ॥ गणतत्ति विप्पमुक्को, अत्तं वाएइ आयरिअ ॥ १ ॥

अथवा आ एटले मर्यादाए करी चार एटले वि हार ते आचार कहियें ते पांच प्रकारना ठे. तेनां ना मः—ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्राचार तपाचार अने वीर्याचार ए पांच प्रकारना आचार पालवामां पोते च तुर ठे, तथा बीजाने ते आचार पालवानो उपदेश करे ठे तेथी तथा बीजा साधु प्रमुखने ते आचार देखामे ठे तेथी आचार्य कहियें. कह्युं ठे के, “पंचविहं आयारं, आयरमाणा तहा पयासंता ॥ आयारं दंसंता, आयरि या तेण वुच्चंति ॥ १ ॥

अथवा आचारमां युक्तायुक्तनो विजाग करवामां अनिपुण शिष्यने जला यथार्थ शास्त्रार्थ उपदेशक ठे

तेथी आचार्य कहेवाय.

एवा आचार्य ज्ञव्य प्राणीनुने आचारनो उपदेश करे ठे तेथी परोपकारी ठे अने ठत्रीश ठत्रीशी गुणे करीने विराजमान युगप्रधान, ज्ञव्य जीवोने उपदेश आपी प्रतिबोधी कोइने सर्व विरति, कोइने देश विरति अने कोइने समकीती करे ठे, तथा कोइक उपदेश सांजलीने ज्ञक परिणामी आय ठे, एवा उपकारना करनार शांतमुझना धणी कृण मात्र पण कषा यवाला न होय; वली आचार्य जगवान् नित्ये प्रमाद रहित अका अप्रमत्त धर्मना उपदेशक ठे; वली राज कथा, देश कथा, ज्ञक्त कथा अने स्त्री कथा सम्यक्त्व ढिलणीयानी अने चारित्र ढिलणीयानी कथा एवी ठ वि कथा करता नथी. वली शिष्यादिकने सारणा, वारणा, चोयणा अने पन्चोयणादिके करी प्रवचननो अत्र्या स करावनार ठे अने साधुजनने क्रिया धरावता अका ठे. वली जेम सूर्य अस्त अयाथकी घरमां घट पटादिक दे खातां नथी, पण ज्यारे दीवो करीए त्यारे सर्व पदार्थ देखाय ठे तेम अहियां केवलज्ञान ज्ञास्कर श्रीतीर्थकर देव मुक्तियें पधार्या पठी सकल जूवनना पदार्थने प्र

गट करवाने दीपक समान एवा आचार्य जगवान ठे एवा आचार्य जगवानने नमस्कार करवो योग्य ठे. ए श्री आचार्य जगवानने सुवर्णवर्णे ध्यायीए. ए पंच प रमेष्टि मंगलमां त्रीजुं मंगल अने नवकारनुं त्रीजुं पद तथा त्रीजी संपदा अइ.

(नमो उवद्यायाणं केण) नम उपाध्यायेज्यः
 उप केण पासे आव्या एवा जे साधु प्रमुख तेमने अ
 ध्याय केण सिद्धान्तनुं अध्ययन करावे तथा उपाधीय
 ते केण जेमनी पासे आवी जणाय तेमने उपाध्याय
 कहियें ते प्रते नमः केण नमस्कार थानु.

अथवा जेमना पासे घणीवार जवाय अथवा सू
 त्रनुं स्मरण कराय ते माटे उपाध्याय कहियें. ते विषे
 कह्युं ठे के, “वारसंगो जिणस्काउ, सञ्चानु कहिनु बु
 हेहिं ॥ ते उवइसंति जम्हा, उवद्याया तेण वुच्चंति
 ॥ १ ॥ अर्थः—श्री जिनेश्वर जगवाने अर्थथी ज्ञाख्यां
 एवां वार अंग तेनो स्वाध्याय पंक्ति पुरुषोए कह्यो
 तेनो उपदेश करे ठे ते माटे तेमने उपाध्याय कहियें.

वली उ अहुर ते उपयोगने अर्थे ठे, अने व ए
 पापनुं समस्त प्रकारे वर्जवुं तेने अर्थे ठे, अने द्या ते

ध्यान करवाने अर्थे ठे अने उ अक्षर ते कर्मथकी प
ठा हठवाने अर्थे ठे. ए रीते चार अक्षर मलवाथी ह
वञ्चानु एटले नुपाध्याय एवो शब्द आय. ए नुपाध्य
य जगवान पचीस गुणे करी विराजमान ठे अने व
दशांगीना धारक ठे तथा ते द्वादशांगी सूत्रथी साधु
उने जणावे ठे एथी ए महा नुपकारी ठे अने आच
र्यजी जगवान शासनना राजा ठे तेस श्री नुपाध्याय
जी युवराज ठे एवा नुपाध्यायजी जगवानने नमस्का
र करवो योग्यज ठे. ए श्री नुपाध्यायजी जगवानने
नीलवर्णे ध्यान करीए. ए पंचपरमेष्ठी मंगलमां चोष्ट
मंगल थयुं अने नवकार मंत्रनुं चोष्टुं पद, अने चोथी
संपदा थइ.

(नमो लोए सब साधूणं के०) नमः लोके सर्व
साधुभ्यः आ लोकमां सर्व साधु जगवानने नमस्कार
थान. जे ज्ञानादिके करी मोहने साधे, अथवा सर्व
प्राणीमात्र नुपर समपणुं राखे, शत्रु अने मित्र समा
न गणे तेने साधु कहिये. बली साधु जगवान मोह
मार्गने साधवामां सहाय करनार होवाथी नुपकारी ठे
तेमने मारो नमस्कार थान.

जेम जमरो एक फूलपरशी सुगंधी लेइ बीजा फूलपर जाय पण फूलमांशी कंइ उलुं अतुं नशी, तथा ते तेने कंइ पीसा करतो नशी तेम मुनि पण एक घेरशी बेतालीस दोष रहित आहार लेइ बीजे ठेकाणे जाय पण गृहस्थने कंइ पीसा उत्पन्न करे नहि; पंच इंद्रिय ना विषयने जीते, १०००० शीलांग रश्ने धारण करे, तथा मुनीश्वरोने जयणा सहित वंदीने पोतानो जन्म पवित्र करे. वली नव प्रकारे ब्रह्मचर्यनी गुप्ति धारण करे एवा साधुलेने नमस्कार करवो योग्यज बे.

पांचे इंद्रिना विषयने जीते, ने पांचे इंद्रिने वडा राखे, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, अने त्रसकाय, ए व कायना जीवनी रक्षा सर्व प्रकारे पोते करे, अने बीजा पासे पोते करावे, सत्तर जेडे संजम पाले, बीजा पासे पलावे, सर्व जीवपर करुणाजाव राखे, वली नव प्रकारे ब्रह्मचर्य नी गुप्ति धारण करवामां, तथा वार जेडे तपस्या करवामां शुरा, जेमने वंदन पूजननी वांढा (इच्छा) नशी, एवा मुनीनां दरशन तो पुरो पुण्यनो लदय होय तो वाजीए. ए पांचलुं मंगल धर्यु तथा नवकारनुं पां

चमूं पद अने पांचमी संपदा अइ.

आ पंचपरमेष्टि नमस्कारना अनुक्रम विषे आम
कहूं ठे:-

पुष्पाणुपुष्पि न कसो, नेवय पञ्चाणु पुष्पि एस ज
वे ॥ सिद्धाईआ पढमा, बीआए साहुणो आइं ॥ १ ॥
अरहंता उवएसेलां, सिद्धाणं जंति तेण अरिहाइ ॥ ए
वि कोइ परिसाए, पणमिता पणमइ रत्नोति ॥ २ ॥

अर्थ:-आ पंच परमेष्टि नमस्कारमां पेहेला श्री
अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु ए री
नमस्कार कस्यो ठे ए रीते नमस्कार पुर्वानुपूर्वी क्र
मी नथी, केमके आ सौमां सिद्ध मुख्य ठे, साटे
छने नमस्कार पेहेलो करवो जोइए. तेसज आ बी
पश्चानुपूर्वी क्रमथी पण नमस्कार नथी, केमके ते
पेहेलो साधुने नमस्कार करवो जोइए, आ १ संका
समाधान ए ठे के अरिहंतनेज प्रथम नमस्कार
योग्य ठे केमके श्री अरिहंत जगवानना उपदेश
ज सिद्धने जाणीए ठीए अने वली अरिहंते तीर्थ
तीर्थी उपदेश अप्यो तेथी जीवो चारित्र आदरी
रहित अइ सिद्ध अथा तेथी अरिहंतनेज प्रथम न

(१ए)

र करवो योग्य ठे, बली कोइ पर्वदाने नमस्कार करी राजाने नमस्कार करतुं नथी पण राजानेज प्रथम नमस्कार करे ठे तेम अरिहंत जगवान पण राजा समा न ठे, तेथी तेमने प्रथम नमस्कार करवो योग्य ठे.

(एसो पंच नमुक्कारो केण) एष पंच नमस्कारः एटले ए पांचनो नमस्कार ए नवकारनुं ठठुं पद अने ठठी संपदा थइ.

(सब्बपावप्पणासणो केण) सर्व पाप प्रणाशनः एटले सर्व पापने नाश करनारो ठे ए सातमुं पद अने सातमी संपदा थइ.

(मंगलाणं च सब्बेसिं केण) मंगलानां च सर्वेषां एटले सर्व मंगलाने विषे, ए आठमुं पद थयुं.

(पढमं हवइ मंगलं केण) प्रथमं जवति मंगलं एटले पेहेलुं मंगलीक ठे, एटले ए मुख्य या उत्कृष्ट मंगल ठे. मंगल वे कारनां ठे. ड्ब्य मंगल ते दहीं, अहत्त, दूर्वा, चंदन, कनक, कलश वगैरे लौकिक मंगल आ लोकमां अल्प सुख साधक ठे, पण ज्ञाव मंगल जे पंचपरमेष्ठी नमस्कार रुप जे लोकोत्तर मंगल, ते आ लोकमां सुख तथा परलोकमां परंपराए मोक्ष प्रा

सि रूप उत्कृष्ट सुख आपनार ठे तेथी अवश्य करवा योग्य ठे. ए नवसुं पद अयुं अने आठमा तथा नवमा पदनी एक आठमी संपदा अइ. आ नवकार मंत्रना एकसठ लघु तथा सात गुरु अक्षर भली अक्षर अक्षर अक्षर अथा.

हवे महामंत्र श्री नवकार मंत्रमां पंच परमेष्ठी ने नमस्कार करीनेते पंचपरमेष्ठीना १०८गुण वखाएठे.

श्रीअरिहंतना गुण ११

१ अशोकवृक्षः—ज्यां जगवान समोसरे त्यां जगवानना देहमानथी बार गुणो लंचो अशोकवृक्ष एटले आसोपालवनुं ऊरु देवता रचे ते नीचे बेसीने जगवान देशना दे.

२ सुरपुष्पवृष्टिः—जगवानना एक जोजन प्रमाण समोसरणनी पृथ्वी उपर जल अने अलमां निपजेलां सुगंधीदार पंचवर्णां संचित फुलनी वृष्टि ढींचण प्रमाण देवतां करे.

३ दिव्यध्वनिः—देवताळ जगवाननी वाणीनी मालवकोशराग वीणा वांसली आदिकना स्वरबने पूरे

४ चामरम्—देवो रत्ने जमीत लोतानी ढांकीवाला

धोला चार जोनी चामरो समोसरण मध्ये जगवंतने वीजे ठे.

५ आसनं=सिंहासनः—जगवंतने वेसवा सारु रत्ने जमीत सुवर्णमय सिंहासन देवतालु रचे ठे.

६ जामंरुलंः—(जा के० तेजनुं, मंरुलं के० मांरु लुं) जगवानना मस्तकनी पूंठे शरद तुना सूर्यना किरण जेवुं आकरा तेजवालुं जामंरुल एटले कांति नुं मंरुल देवता रचे. ते न होय तो जगवानना मां सा सुं जोवाय नहीं.

७ डुंडुजिः—देवतालु आकाशमां देवडुंडुजि वि गेरे कोरोगमे वार्जीत्रो वगामे ठे तेथी जाणे ते एम कहेता न होय के जो जव्यो ! प्रमादने ठांरुने मुक्तिपू रीना सार्थवाह सभान आ जगवानने सेवो.

८ ठत्रंः—जगवानना मस्तक उपर उपरा उपरी शरदपूनमना चंड जेवां त्रण धोलां ठत्रो मोतीनी मा लाए विराजमान एवां देवतालु धरे—समोसरणनी नि श्राए वार ठत्र धरे ते जाणे एम जणावतां न होय के त्रण जुवनना परमेश्वर एवा जगवानने सेवो. ए रीते आठ प्रातिहार्यना आठ गुण थया, तद्यथा॥अशोकवृक्षः

सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनिश्रामरमासनं च ॥ ज्ञामंरुलं
डुंडुनिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥१॥

हवे जगवानना चार मूल अतिशय रूप चार
गुणो ठे ते आ प्रमाणेः—

ए अपायापगमातिशयः—(अपाय के० उपड्व
अने अपगम के० नाश=उपड्वनो नाश) ते बे प्रकारे
ठे; १ स्वसंबंधि अने २ परसंबंधि. १ स्वसंबंधि अपाया
पगमातिशय बे प्रकारे ठे. ड्व्य अने ज्ञाव. ड्व्यथकी
जगवानने सर्व रोगनो नाश अयो ठे अने ज्ञाव थकी
जगवान अठारदोष रहित अया ठे ते अठार दोषनां ना
मः— १ अज्ञान २ क्रोध, ३ मद, ४ मान, ५ माया,
६ लोभ, ७ रति, ८ अरति, ९ निडा, १० शोक, ११
जुहुं, १२ चोरी, १३ मत्सर, १४ जय, १५ जीव
हिंसा, १६ राग, १७ क्रीडा प्रसंग, १८ हास्य ए अ
ठार दोष रहित जगवान ठे ते विषे आ बे गाथानुलखी
ठे ॥ अत्राण कोह मय माण, माया लोहो रई अरई अ ॥
निदा सोय अद्वियवयण, चोरिआ मठर जया य ॥१॥
पाणिवह पेम कीला, पसंग हासाय जस्स ए दोसा,
अठारस विपणठा, नमामि देवाहिदेवं तं ॥ १ ॥ व

(५३)

की पाठांतरे अठार दोष कहेवे. १ दानांतराय, २ लाज्जांतराय, ३ वीर्यांतराय, ४ ज्ञोगांतराय, ५ उपज्ञोगांतराय, ६ हास्य, ७ रति, ८ अरति, ९ ज्ञय, १० शोक, ११ जुगुप्सा एटले निंदा, १२ काम, १३ मिथ्यात्व, १४ अज्ञान, १५ निंदा, १६ अविरति, १७ राग, १८ द्वेष, १९ दोष रहित वीतराग ज्ञगवान ठे. ए स्वाश्रयी ज्ञगवान नो अपायापगमातिशय थयो. हवे पर संबंधि अपायापगमातिशय कहेवे. ज्यां ज्ञगवान विहार करे त्यां चारे दिशाए सवासो जोजनमां प्राये करी सात इतिना उपड्व जेवा के अतिवृष्टि, अनावृष्टि, उंदर, शुक अने तीरुना उपड्व, भरकी, स्वचक्र एटले पोताना राजाना सैन्यनो ज्ञय अने परचक्र एटले पारकाना सैन्यनो ज्ञय; रोग तथा वैर विगेरे होय नहीं. ए परसंबंधि 'अपायापगमातिशय' जाणवो.

१० ज्ञानातिशयः—ज्ञगवान केवलज्ञान केवल दर्शने करी सर्व लोकालोकना ज्ञाव जाणे देखेवे, एमनाथी कांड ठानुं नथी.

११—पूजातिशयः—ज्ञगवानने बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्ती तथा चारनिकायना देवता ते ज्ञवनपति, व्यं

तर, ज्योतषी अने वैमानिक देवता तथा तेमना इंद्र वगैरे जगत्रयवासी ज्ञव्य जीवो तेमनी सेवा करे ठे ते त्रीजो पूजातिशयनामा अग्यारमो गुण थयो.

१२ वचनातिशयः—जगवंतनी वाणी संस्कारादि क गुणे सहित होवाथी देव, मनुष्य अने तिर्यंच पोत पोतानी ज्ञाषामां समजे ठे ते विषे एक जिद्धनुं उष्टां त कहेठे. कोइ एक जिद्ध पोतानी त्रण स्त्रीसाथे एक दिवस वनमां जतो हतो ते बखते पहेली स्त्रीए कहुं मने हरण हणी आंणी आपो; बीजीए कहुं मने तर स लागी ठे तेथी पाणी लावी आपो; त्रीजीए कहुं मने कांइ सारुं गीत संजलावो. आ त्रणेना उत्तर ते जिद्धे एक जवाबथी वाट्या के 'सरो नहि,' एथी पहेली समजी के तीर नथी ते हरणने मारीने झीरीते लावी आपे; बीजी समजी के सरोवर नथी ते पाणी केम लावी आपे; त्रीजी समजी के तेमनो राग नथी ते सारुं गीत केम करी संजलावे. एम एक जवाबथी त्रणे स्त्री अ समजी गइ तेम जगवाननी वाणी सर्वे कोइ पोत पोतानी ज्ञाषामां समजी जाय, ए तेमनो चोओ अति शय अने वारमो गुण थयो.

सिद्ध जगवानना आठ गुण.

१ ज्ञानगुणः—ज्ञानावरणीय कर्म ह्य जवाथी केवलज्ञाने करी सिद्ध जगवान लोका लोकना स्वरूपने समस्त प्रकारे जाणे ठे.

२ दर्शनगुणः—दर्शनावरणीय कर्म ह्य जवाथी केवलदर्शन प्राप्त थयुं ठे तेथी सिद्ध जगवान लोका लोकना ज्ञाव समस्त प्रकारे देखी रह्या ठे.

३ अव्याबाध सुखः—वेदनीय कर्म ह्य जवाथी अव्याबाध (सर्व प्रकारनी पीडा रहित) अनंत सुख सिद्ध जगवानने प्राप्त थयुं ठे. ते सुख, बलदेव, वासु देव, चक्रवर्ती, चार निकायना देवो, ए सरवेनां सुख ए कठां करीए तेथी अनंतगुणुं ठे. जेम मुंगो माणस गोल खाय अने तेनो स्वाद जाणे पण कही शके न हीं तेम ते सिद्धनां सुख केवलज्ञानी जगवान जाणे ठे पण कही शके नहीं, केमके वचनातीत ठे.

४ हायक समकीतः—मोहनीय कर्म ह्य जवा थकी हायक सम्यक्त्व प्राप्त थयुं ठे, ते सिद्धने विषे यथावस्थितपणे होय ठे.

५ अक्षय स्थितिः—आयु कर्मना ह्य जवाथकी

सिद्धना जीवोने सादि अनंत स्थिति ठे. एटले सिद्ध गतिमां गयानी आदि ठे, पण अंत नथी.

६ अरुपीगुणः—नाम कर्म क्य जवा थकी सिद्ध ना जीव, वर्ण, गंध, रस, तथा फरस रहित ठे, तेथी अरुपी ठे.

७ अगुरुलघुः—गोत्र कर्म क्य जवा थकी, अगुरु लघु (नहीं हलवो तथा नहीं जारे एवो तथा नहीं नीच कुलना तथा नहीं उंच कुलना एवों) गुण प्राप्त थयो ठे.

८ वीर्य गुणः—अंतराय कर्म क्य जवा थकी, सिद्ध जगवान अनंतदान, लाभ, जोग, उपजोग वीर्यमय होय. तेमनुं स्वजाविक आत्मानुं वीर्य एवं अयुं ठे के लोकनुं अलोक करे अने अलोकनुं लोक करे परंतु एवं वीर्य कदी फोरव्युं नथी, फोरवता नथी, अने फोर वशे नहीं. ए रीते सिद्धना आठ गुण थया.

आचार्यना त्रयीस गुण.

१—५ फरसइंदि १ रसइंदि २ घ्राणइंदि ३ चक्षु इंदि ४ श्रोतइंदि ५ ए पांचे इंडीना त्रयीस विषयोमां जे मनगमता होय तेना उपर राग नहीं अने अणगम

ता होय तेना उपर छेष नहीं ते माटे पांच इंद्रियोना विषयने रोकनार कहेवाय.

६ स्त्री पशु अने नपुंसक थकी रहित एवा स्था नकमां रहे.

७ स्त्रीनी साथे सरागपणे कथा वारता करे नहीं.

८ स्त्री बेठी होय ते आसने पुरुष बे घनी सुधी बेसे नहीं ने पुरुष बेठी होय ते आसने स्त्री त्रण पडो र सुधी बेसे नहीं.

९ स्त्रीनां अंगोपांग सरागपणे निरखे नहीं.

१० ज्यां स्त्री पुरुष सूतां होय, तथा काम क्रीडा विषे वातो करतां होय त्यां जीतना आंतरे रहे नहीं.

११ पूर्वे पोते स्त्री साथे जोगवेलां सुखने सं जारे नहीं.

१२ सरस स्निग्ध आहार करे नहीं केमके तेम करवाथी विकार जागे.

१३ नीरस एवो पण अधिक आहार ले नहीं.

१४ शरीरनी शोभा न करे.

१५ उपर कहेली नव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति पावे.

१६ क्रोध न करे.

होय तेपर राग धरे.

२५ दर्शनाचारः—ते पोते समकीत पाले, पलावे अने समकीतथी परुता जीवने हेतु युक्तिवने स्थिर करे.

२६ चारित्राचारः—ते पोते शुद्ध चारित्र पाले, पलावे अने पालताने अनुमोदे.

२७ तपाचारः—ठ बाह्य अने ठ अन्त्यंतर ए रीते वार जेदे तप पोते करे, करावे अने करताने अनुमोदे.

२८ वीर्याचारः—धर्मानुष्ठान जेवांके पम्कमणु, पम्किलेहण, देववंदन वीगेरे करवासां बलवीर्य गोपवे नहीं, अने उपर कहेला पंचाचार पालवासां वीर्यशक्ति फोरवे.

२९ इर्यासमितिः—बधी दीशाए उपयोग राखतो धोंसरा प्रमाणे दृष्टिए जोतो चाले.

३० ज्ञाषासमितिः—सर्वथा सावद्य (पाप सहित) वचन बोले नहीं तथा उघाने मुखे बोले नहीं पण मुखे मुहपती राखी बोले अने क्रोधादिके करी रहित वचन बोले.

३१ एषणासमितिः—आधाकर्मादिक बेंतालीश दोष रहित आहार ले तथा मांरुत्वाना पांच दोष टाले.

३२ आदान जंरुमत्त निहेपणासमितिः—जंरुप

गरण मात्रुं वगेरे दृष्टीए जोइ पूंजीने ले मूके.

३३ पारिष्ठापनिका समितिः—लघुनीति (पेशाव), वस्तीनीति (जाओ) वगेरे दृष्टिए जोइ पूंजीने 'अणु जाणह जस्त गो' एम कही परठवे अने परठव्या पूंठे त्रण वार वोसिरे कहे.

३४ मनोगुप्ति (मनो=मननी, गुप्ति=देशधी यत्र वा सर्वधी योगनी निवृत्ति) ते त्रण प्रकारे ठे.—असत्कल्पना वियोगिनी, समता ज्ञाविनी अने आत्मारामता. १ असत्कल्पना वियोगिनी मनोगुप्ति एटले माठा विचार जेवा के शत्रुबुने मारवा, रोगादिकनी चिंता करदी विगेरे आर्त ध्यान रौइ ध्यानना परिणामधी मनने पाबुं बालवानी बखते थाय ठे, जेम प्रसन्नचंद्र राजर्षिने थयुं ते. २ समताज्ञाविनी मनोगुप्ति ते सिद्धांतने अनुसारे धर्म ध्यानने अनुयायी ज्ञावनाए करी सहित परलोक साधक एवी समता परिणामरूप होय ते. ए गुप्ति शुज्ज ज्ञावना तथा शुज्ज ध्यानना सन्मुख जीव थयो होय त्यारे होय. ३ आत्मारामता मनोगुप्ति—शैलेडीकरण काले सकल मनोयोगनी निवृत्ति थाय ठे ते.

(३२)

३५ वचन गुप्तिः—एनावे जेद ठे? मौनावलंविनी वचन गुप्ति=सर्व प्रकारे मौन धारण करी रहेवुं. हों-कारो, खोंखारो, कांकारो फेंकवो, संज्ञा करवी. विगेरे ठांनवाथी पूजा तथा ध्याननी वखते होय ते. ९ बा-धियमिनी वचन गुप्ति=ज्ञान ज्ञावुं ज्ञावावुं ते संब-धि पूठवुं, प्रश्ननो उत्तर देवो, धर्मोपदेश देवो इत्यादि काम करतां शास्त्रानुसारे मुखे मुहपत्ती राखी यतना पूर्वक सावध्य वचन न बोलवुं ते.

उपाध्यायजी जगवानना १५ गुण.

११ अंग तथा १२ उपांग सम्यग् रीते ज्ञाने ज्ञाना वे. १ चरण सित्तिरी, २ करण सित्तिरी शुद्धरीते पा ले पलावे. ए गुणो जुदा जुदा नामवार कहेवे.

अंगीयार अंग.

१ आचारांग, २ सूयनांग ३ ठासांग, ४ समवा यांग, ५ जगवती ६ ज्ञातासूत्र, ७ उपांगक दशांग. ८ अंतगन, ९ अहमरोवदाइ १० अश्वव्याकरण ११ वि-पाक सूत्र.

वार उपांग.

१ नववाइ, २ रायपसेणी, ३ जीवाग्निगम, ४ पन्नवणा, ५ जंबुद्वीप पन्नत्ति, ६ चंद्र पन्नत्ति, ७ सूर्य पन्नत्ति, ८ कप्पिया, ९ कप्पवरुंसिया, १० पुप्फीया, ११ पुप्फचुलिया, १२ वह्निदशांग. ए तेवीस गुण थया.

२४ १चरणसित्तरी पाले. २५ २करणसित्तरी पाले.

१ चरणसित्तरीना सित्तेर भेद छे; तद्यथाः—वय समणधम्म संजम, वेयावच्चं च वंभगुत्तिओ ॥ नाणाइतियं तव कोह, निग्गहाइइ चरणमेयं ॥ १ ॥

अर्थ—वय के० ५ महाव्रत, समणधम्म के० १० प्रकारे श्रमण धर्म, संजम के० १७ प्रकारे संजम, वेयावच्चं के० १० प्रकारे वेयावच्च, वंभगुत्तिओ के० ९ प्रकारे ब्रह्मचर्यनी गुप्ति, नाणाइतियं के० ज्ञानादिक त्रिक, तव के० १२ प्रकारे तप, कोहानेग्गहाइं के० क्रोधादि ४ कृपायनो निग्रह तेना छुटाछुटा ७० भेद वतावे छे.

१ प्राणातिपात विरमण, २ मृयावाद विरमण, ३ अदत्तादान विरमण, ४ मैथुन विरमण ५ परिग्रह विरमण ६ क्षमा ७ मार्दव (कोमलपणुं), ८ आर्जव (सरलपणुं), ९ मुत्ति (लोभत्याग) १० तव (तप) ११ संयम (आश्रवनो त्याग) १२ सत्य (जुठनो त्याग) १३ शौच (पवित्रता), १४ आर्किच्चन (द्रव्यरहितपणुं), १५ ब्रह्मचर्य (मैथुनत्याग), १६ पृथ्वीकाय जीवनी हिंसा न करवी, १७ अपकाय जीवनी हिंसा न करवी, १८ अग्निकाय जीवनी हिंसा न करवी, १९ वाउकाय जीवनी हिंसा न करवी, २० वनस्पतिकाय जीवनी हिंसा न करवी, २१ वेइंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २२ तेइंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २३ चउरिंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २४ पंचइंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २५ अजीव संयम

साधु जगवानना ११ गुणो.

१ प्राणातिपात विरमण, १ मृषावाद विरमण,

(सोना प्रमुख निषेध करेली अजीव वस्तुनो त्याग) २६ प्रेक्षासंयम (जयणापूर्वक वक्तवुं) २७ उपेक्षासंयम (आरंभ तथा उत्सूत्र प्ररुपणा न करे ते) २८ प्रमार्जन संयम (सर्व वस्तु पूंजीने वापरवीं ते) २९ परिष्ठापना संयम (जयणापूर्वक परठववुं ते) ३० मनः संयम (धर्मवृत्तिमां मन राखवुं ते) ३१ वचन संयम (सावद्य वचन न बोलवुं ते) ३२ काया संयम (उपयोगथी काम करवुं ते) ३३ अरिहंतनो वैयावच्च, ३४ सिद्धनो, ३५ जिनप्रतिमानो ३६ श्रुत सिद्धांतनो ३७ आचार्यनो ३८ उपाध्यायनो ३९ साधुनो ४० चारित्र धर्मनो ४१ संघनो ४२ समकित दर्शननो वैयावच्च, (पाठांतरे नीचे लखेला दश पण गणाय छे. १ आचार्य २ उपाध्याय ३ तपस्वी ४ शिष्य ५ ग्लान साधु ६ स्थविर ७ समनोज्ञ (सरखा समाचारीवाळा) ८ चतुर्विध संघ ९ कुल, चंद्रादि १० गोत्र. ए दशनोविनय) ४३ स्त्री पशु ने नपुंसक ज्यां रहेतां होय ते जग्यानो त्याग, ४४ सरागे स्त्री साथे कथा वार्त्ता न करवी ४५ स्त्रीना आसने वे घडी सुधी बेसवुं नहीं, ४६ सरागे स्त्रीनां अंगोपांग जोवां नहीं, ४७ स्त्री पुरुष ज्यां क्रीडा करतां होय त्यां भीत प्रमुखना अंतरे रहेवुं नहीं, ४८ भोगव्यां सुख न संभारवां ४९ सरस अहार न करवो, ५० अति मात्राये अहार न करवो, ५१ शरीरनी शोभा न करवी. ५२ ज्ञान, ५३ दर्शन, ५४ चारित्र, ५५ अणसण, ५६ उणोदरी, ५७ वृत्तिसंक्षेप (अनेक प्रकारना अभिग्रह करवा ते), ५८ रसत्याग, ५९ कायक्लेश ६० संलीनता (इंद्रियोने वश राखवी ते) ६१ प्रायश्चित्त, ६२ विनय, ६३ वैयावच्च, ६४ स्वाध्याय (सज्ज्ञायध्या न करवुं), ६५ धर्मकथा, ६६ काउसग, ६७ क्रोधत्याग, ६८ मानत्याग, ६९ मायात्याग, ७० लोभत्याग.

२ करणसित्तरीना सित्तर भेद छे तद्यथाः—पिंडविसोही स

३ अदत्तादान विरमण, ४ मैथुन विरमण, ५ परिग्रह

मिद्, भावण पडिमाय इंदियनिरोहो ॥ पडिलेहण गुत्तिओ, अभिग्ग
हं चंवे करणं तु ॥ १ ॥ ४ पिंडविशुद्धि, ५ समिति, १२ भावना,
१२ पडिमा, ५ इंद्रियोनो निरोध, २५ प्रतिलेखना, ३ गुप्ति, ४
अभिग्रह ए सर्वं मळी सितेर थया ते नामवार कहे छे.

१ आहार. २ उपाश्रय. ३ वस्त्र. ४ पात्र. ५ चार बेतालीस
दोष रहित ले. ५ इर्या समिति. ६ भाषासमिति. ७ एषणासमिति.
८ आदानभंडमत्त निखेपणा समिति. ९ पारिष्ठापनिका समिति.
१० अनित्य भावना. ११ अशरण भावना. १२ संसार भावना. १३
एकत्व भावना. १४ अन्यत्व भावना १५ अशुचि भावना. १६ आ
श्रव भावना. १७ संवर भावना. १८ निर्जरा भावना. १९ लोकस्व
भाव भावना. २० बोधिदुर्लभ भावना. २१ धर्मना कथक अरिहंत
छे ते भावना २२ एक मासनी प्रतिमा. २३ वे मासनी प्रतिमा. २४
त्रण मासनी प्रतिमा. २५ चार मासनी प्रतिमा. २६ पांच मासनी
प्रतिमा. २७ छ मासनी प्रतिमा. २८ सात मासनी प्रतिमा. २९ सात
दिन रातनी. ३० सात दिन रातनी. ३१ सात दिन रातनी. ३२ एक
दीन रातनी. ३३ एक रातनी. ३४ फरस इंद्रिनिरोध. ३५ रसइंद्रि
निरोध. ३६ घ्राण इंद्रिनिरोध. ३७ चक्षु इंद्रिनिरोध. ३८ श्रोत इंद्रि
निरोध. हवे पचीस पडिलेहणा कहे छे. ३९ मुहपत्ति. ४० चोलप
ट्ट. ४१ उननुं कल्प. ४२-४३ सुतरनां वे कल्प. ४४ रजोहरणनुं
अंदरनुं सुतरनुं निषिद्ध. ४५ बहारनुं पग लुछवानुं निषिद्ध. ४६
ओधो. ४७ संथारो. ४८ उत्तरपट्टो. ४९ दांडो. ए ३९ थो ४९ सुधी
नी अगियार चीजोनी पडिलेहणा प्रभातमां सुर्य उदय पेहेलां करा
य छे वाकीनी चौद उपगरणनी पडिलेहणा. त्रिजे पहोरने अंते क
रवामां आवे छे ते कहे छे. ५० मुहपत्ति. ५१ चोलपट्ट. ५२ गो
च्छक. ५३ पात्र. ५४ पात्रबंध. ५५ पडलाओ. ५६ रजख्राण. ५७
पात्र स्थापन. ५८ मात्रक. ५९ पतद्ग्राह. ६० रजोहरण. ६१ उननुं
कल्प. ६२-६३ सुतरनां वे कल्प. ए पचिस पडिलेहणा छे तेनी

विरमण, ६ रात्रि जोजन विरमण, ७ पृथ्वीकाय रक्षा,
८ अपकाय रक्षा, ९ तेजकाय रक्षा, १० वाजकाय रक्षा,
११ वनस्पतिकाय रक्षा, १२ त्रसकाय रक्षा, १३ फरस
इंद्रि निग्रह (वश करवी), १४ रस इंद्रि निग्रह, १५ घ्राण
इंद्रि निग्रह, १६ चक्षु इंद्रि निग्रह, १७ श्रोत इंद्रि निग्रह,
१८ लोह निग्रह, १९ कृमा, २० ज्ञाव विशुद्ध ते चित्तनी
निर्मलता, २१ वस्त्र विगरे पन्विलेहेवामां विशुद्धि, २२
संजम जोग (५ समिति अने ३ गुप्तिने आदरवां अने
विकथा, अविवेक, निडा प्रमुख ठामवां), २३ माठे ठा
मे जतां मनने रोकवुं, २४ माठे ठामे वचन प्रवर्ततुं
होय तेने रोकवुं, २५ माठे ठामे काया प्रवर्तती होय तेने
रोकवी, २६ शीतादिपरिसह सहेवा, २७ मरण उपसर्ग
सहन करवो ए सरवे मली पंच परमेष्ठिना १०८ गुणश्रया.

गाथा १ मूल॥मुहपोति चोलपट्टो, कण्पतिगंदोनि सिसिज्ज रयहरणं ॥ सं
थारुत्तरपट्टो, दसपेहा उग्गाएसुरे ॥ गा. १ ली ॥ अन्ने भणंति एका
रसमो दंड उत्ति, ॥ गाथा २ जी मूल ॥ उवगरण चउदसगं, पडि
लेहिज्जइ दिणस्स पहरतिगे ॥ उग्गाडपोरिसीए उपत्तनिज्जोग पडि
लेहा. गा. २ जी ॥ विस्तार प्रवचन सारोद्धारथी जोइ लेवो. ६४ म
नगुप्ति. ६५ वचनगुप्ति. ६६ कायगुप्ति॥अभिग्रह. ६७ द्रव्यथी अमि
ग्रह. ६८ क्षेत्रथी अभिग्रह. ६९ कालथी अभिग्रह. ७० भावथी अ
भिग्रह ए चार प्रकारे अभिग्रह पट्टले प्रतिष्ठा एम सर्व मली सि
त्तर भेद करण सित्तरीना थया.

नवकारनो महिमा.

नवकारना एक अक्षरवमे सात सागरोपमनां पापनो, एक पदवमे पचास सागरोपमना पापनो, अने आखो नवकार जसवाथी पांचसें सागरोपमनां पापनो नाश आय ठे. वली जे माणस एक लाख नवकार गणे अने जिनेश्वर जगवाननी विधि सहित पूजा करे ते पुरुष तीर्थकर नाम गोत्र बांधे एमां कांइ संदेह नथी. जो कोइ माणस ८०००८८०८ आठ क्रोरु आठ हजार आठसें आठ नवकार जक्ति सहित गणे तो ते शाश्वत स्थानकने (मोक्ष) पासे. ए नवकारने ज्ञाव सहित गुरुए आपेली आमनाय साथे विधि सहित जपतां आ लोकमां अने परलोकमां वांछित फलनी सिद्धि थाय. आ लोके देवता सानिध्य करे जेम श्रीमतीने देवताये सानिध्य कीधुंतेनी कथा.

आ जरतक्षेत्रमां पोतनपुर नगरमां सुगुप्त नामे एक श्रावक रहेतो हतो तेनी श्रीमती नामे पुत्री हती. ते धर्मवंत तथा रूपवंत हती. तेने देखीने, एक मिथ्या त्वी शैठनो पुत्र व्यामोह पास्यो, अने तेने परणवानी इच्छा थइ. तेथी पोताने घेर जइ, पोताना बाप पासे

ते कन्यानुं मागुं कराव्युं. पण ते सुगुप्त (कन्यानो बाप) मिथ्यात्वीने कन्या आपे नहीं. पठी ते मिथ्यात्वी कपटे श्रावक अइ श्रीमतीने परणी पोताने घेर लेइ गयो. तेने घेर सौ कुटुंब मिथ्यात्वी ठे. त्यां श्रीमती सर्व घरनां काम करे. पण कोइ रीते पोते मिथ्यात्वमां प्रवर्ते नहीं, जैन धर्म पाले, अने शंका कंखादि अतिचाररहित शुद्ध समकित पाले ते देखी सासु नणंद वारे घनी ए खीजे. पण श्रीमती धर्म न मूके, अने पोताना कर्मने दोष दे, अने आत्माने निंदे; पण धर्म चुके नहीं. कुटुंबनो प्रेम श्रीमती उपर नहीं होवाथी तेनो जरतार उद्वेग धरे अने तेने मारीने बीजी परणवानी इच्छा करे. एक दिवस तेना जरतारे एक मोटा विकराल सरपने घनामां घाली तेने ढांकी सूवाना जरनामां एक ठेकाणें मूकयो, अने सूवानी वखते पथारी उपर बैठेला पोताना स्वामीए श्रीमतीने हुकम कर्यो के, पेलो घनो उघानी फुलनी माला लाव. आ सांजली महा विनीत श्रीमती तरत त्यां जइ नवकार जपतां ढांकणुं उघानी घनामां हाथ घाल्यो. नवकारना प्रज्ञा वे तुष्टमान अएली शासन देवीए सरप फेनीने फुलनी

(३९)

माता कीधी. ते फुलनी माता श्रीमतीए लेइ ज़रता रने आपी. ते देखी तेनो ज़रतार चमत्कार पाभ्यो, जे आ शुं अयुं ? ज़रतारे त्यां जइ घनो जोयो, जुए तो घ ना मांहे साप नहीं अने घनो फुलथी महमहे ठे. ते देखीने जाण्युं के एने देवताये सहाय करेली ठे, अने में तेना उपर मातुं चिंतव्युं ठे. एनो धर्म रुनो ठे. एम विचारी पोताना स्वजन कुंडुंबने सर्व वृतांत कह्यो. ते सांजली सर्व कुंडुंबे श्रीमती आगल पोतानो अपराध खमाव्यो, अने तेनी प्रशंसा करी तेना गुण उपर अनुराग धरे. एक दिवस अवसर पामी श्रीमतीए ज़र तारने जैन धर्म समजाव्यो. पुन्य उदयथी शुद्ध सम कित सहित बार व्रत धारी श्रावक अयो यावत् जीव धर्म पाली सुक्ति पहोच्यो.

हवे साधु, साध्वी अने श्रावक श्राविकाने सम- कितनी शुद्धिने अर्थे त्रिकाल देव वंदन करवुं कह्युं ठे अने सांजे तथा सवारे ए बे वखते ठ आवश्यक रूप प्रतिक्रमण करवुं कह्युं ठे तेथी सर्वे दोष दूर टली जाय ठे अने आत्माने उपकार आय ठे. ते ठ आवश्यकनां नामः—सामायक, चउविसठो, वंदण, परिक्रमण, का-

उसग अने पञ्चस्काण. ए ठ आवश्यकरूप प्रतिक्रमण करवाथी आत्मा निर्मल थाय ठे. जेम जांगुलि मंत्रना प्रज्ञावथी सर्पनुं विष उतरी जाय ठे तेम आवश्यकनुं आराधन करवाथी पाप दूर जतुं रहे ठे. वली जेम मजुर पोताने माथे मुकेलो नार मुकाम आवेथी माथे थी नतारे ठे त्यारे तरत हलवो थाय ठे अने सुखी थाय ठे तेम पम्क्कमणामां अतिचार आलोयतां मनुष्य ना आखा जन्मना दोष जता रहे ठे अने हलुकर्मी थाय ठे. ए ठ आवश्यकरूप पम्क्कमणुं, गुरुनी समह करवुं जोश्ये अने गुरुजीना अज्ञावे स्थापनाचार्य मांढी करवुं जोश्ये; जो स्थापनाचार्य न होय तो नवकारवाली अथवा पुस्तकनी स्थापना करवी पमे ठे ते स्थापनानो पाठ लखीए ठीए.

पंचिंदियना गुटा शब्दना अर्थ.

पंचिदिय—पांच इंद्रियो.

गुति - गुप्ति.

संवरणो—रोकनार, वशकरनार.

धरो - धारण करनार.

तह—तथा, तेसज.

चर - चार.

नव - नव.

कसाय - कषाय.

विह = विध, प्रकार.

मुक्को = मुक्त, मुकाणा.

बंभचेर - ब्रह्मचर्य, शीलव्रत.

इअ = ए.

अद्वारस = अदार.

गुणेहिं = गुणोए.

संजुत्तो = सहित.

पंच = पांच.

महव्वय = महाव्रत.

जुत्तो = युक्त, सहित.

आयार = आचार.

पालण = पालवाने.

समत्थो = समर्थ, शक्तिवान.

समिओ = समितिवालो.

ति — त्रण.

गुत्तो — गुप्तिवालो.

छत्तीस — छत्रीश.

गुणो — गुणवालो, गुण.

गुरु = गुरु.

मज्झ = मारा.

३ ॥ पंचिंदिय ॥

॥ पंचिंदिय संवरणो, तह नव विह बं
नचेर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इअ
अद्वारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय
जुत्तो, पंचविहायार पालण समत्तो, पंच समि
उ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मच्च ॥ २ ॥

अर्थः—पंचिंदिय संवरणो के० पांच इंद्रियोने वश राख

नार एटले पांच इंद्रियोना त्रेवीश* विषय अने व
सें बावन* विकारने रोकनार.

तहनवविह बंजचेर गुत्तिधरोः—तथा नव प्रकार
नी ब्रह्मचर्यनी गुत्तिने धारण करनार एटले शि
यलव्रतनी नव वामोने पालनार.

* ५ इंद्रियोनां नाम तथा अर्थ.	विषय २३.	विकारो २५२.
१ फरस इंद्रि=चामडी	१ हलवो, २ भारे, ३ लुखो, ४ चोपडो, ५ खडबचडो, ६ सु वालो, ७ टाढो, ८ उन्हो.	८ विषयने सचित, अचित अने मिश्र ए त्रणे गुणतां २४ थाय. ते सारा अने नरसा ए वेए गुण तां ४८, ते राग अने द्वेष ए वेए गुणतां ९६ थाय.
२ रस इंद्रि=जीभ	१ मोठो, २ खाटो, ३ खारो, ४ कडवो, ५ कषायलो, ६ तीखो.	६ रस, सारा अने नरसा मली १२, सचित, अचित, मिश्र अने ते रागद्वेषे गुणतां ७२ थाय. वे गंधने सचित, अचित अने मिश्र गुणतां ६ थाय, तेने राग अने द्वेष ए वेवडे गुणतां १२ थाय.
३ घ्राण इंद्रि=नाक	१ सुरभिगंध=सु गंधीदार अने २ दु रभिगंध=दुरगंध वालो.	ए पांच रंगने शुभ अने अशुभ ए वेए गुणतां १० थाय, तेने सचित, अचित अने मिश्र गु णतां ३० थाय. तेने राग अने द्वेष ए वेए गुणतां ६० विकार थाय.
४ चक्षु इंद्रि=आंख	१ सफेद, २ कालो, ३ लीलो, ४ पीलो, ५ रातो.	ए त्रण विषयने शुभ अने अशु भे गुणतां ६ थाय अने राग, द्वेषे गुणतां १२ थाय.
५ श्रोत इंद्रि=कान	१ सचित, २ अचि त अने ३ मिश्रशब्द.	
५ इंद्रियो.	२३ विषयो	२५२ विकारो.

चञ विह कसाय मुक्को के० क्रोध, मान, माया
अने लोभ ए चार प्रकारना कषायथी मुंकाणा
ठे एवा.

इअ अठारस गुणोहिं संजुतोः के० ए अठार
गुणे करी सहित. ॥१॥

पंचमहव्रय जुतो के० पांच महाव्रते करीने सहित.
पंचविहायार पालण समच्छो के० पांच प्रकारना
आचार पालवाने समर्थ.

पंचसमिन्न तिगुतो के० पांच समिति अने त्रण
गुतिवाला.

बत्तीसगुणो गुरु मज्ज के० ए बत्तीस गुणे करीने
सहित मारा गुरु ठे ए बत्तीस गुणोनो विस्तार
पा. ३६ थी ३९ सुधीमांथी जोइ लेवो. ॥२॥

इच्छामि खमासमणना बुटा शब्दना अर्थ.

इच्छामि = हुं इच्छुं छुं.

निसीहिआए = शरीरवडे.

खमासमणो = क्षमावंत साधु.

मथथण = मस्तकवडे.

वांदिउं = वांदवाने.

वंदामि = वांदुं छुं.

जावणिज्जाए = शक्ति सहित.

॥ ३ ॥ इच्छामि खमासमणो वंदितुं जाव
णिजाए निसीहिआए मध्यएण वंदामि ॥

अर्थ:—हे क्षमादि गुणे करी सहित एवा श्रमण
(साधुजी), तमने जावणिजाए केण शक्ति सहित एवा
निसीहिआए केण प्राणातिपातादिक निषेध अयां ठे जे
मांथ्री एवा नैषेधिक्या केण शरीरवन्दे वंदितुं केण वांद
वाने इच्छामि केण इच्छुं तुं.

उज्जा अका हाथ जोमी जरा नीचा नमी उपर ल
ख्या प्रमाणे कही बे संमासा पम्पिलेही, बे जानु (ठीं
चण) बे हाथ, ने ललाट (कपाल) ए पंचांगे करी
जूमिफरसतो मध्यएण केण मस्तके करीने वंदामि केण
वांडुं तुं एम कहे.

पठी उज्जा अइ बे पगनी वच्चे आगलथी चारआं
गलनुं अने पाठलथी त्रण आंगल जाजुं अने चार आं
गल मातुं एवुं अंतर राखी एम पगे जिनमुझ साचव
तो तथा बे हाथनी आंगलीन एक एकमां थापी कम
लना दोमना आकारे हाथ जोमी मुख आगल राखी
हाथनी कोहोणीन पेट उपर राखी एवी योग मुझ

साचवतो इच्छाकरेण संदिसह जगवन् इरिया वहियं
पणिकमामि इच्छं इच्छामि पणिकमिञ्जं.

इरियावहियंना वुटा शब्दना अर्थ.

इच्छाकरेण = इच्छाथी.
संदिसह = आदेश आपो.
भगवन् = हे भगवंत.
इरियावहियं = रस्ते चालतां.
पणिकमामि = पाछो वळुं छुं.
इच्छं = प्रमाण.
पणिकमिञ्जं = छोडवाने.
इरियावहियाए = मार्गमां चाल
तां.
विराहणाए = विराधना थइ होय
गमणागमणे = जतां आवतां.
पाण = जीव.
कमणे = चांपवे.
वीय = बीज.
हरिय = लीली वनस्पति.
ओसा = ठार.
उत्तिग = किडीआरुं.
पणग = पांच वर्णनी सेवाल.
दग = पाणी.

मट्टी = माटी.
मक्कडा = करोलिआनां पड.
संताणा = जाल.
संकमणे = चांप्या.
जे = जे.
मे = में.
जीवा = जीव.
विराहिया - विराध्या.
एगिंदिया - एक इंद्रिवाला.
वेइंदिया - वे इंद्रिवाला.
तेइंदिया - त्रण इंद्रिवाला.
चउरिंदिया - चार इंद्रिवाला.
पंचिंदिया - पांच इंद्रिवाला.
अभिहया - साया आवता हण्या.
वत्तिया = धुलवडे ढांक्या.
लेसिया - भोंय साथे घश्या.
संघाइया - शरीरे शरीर मेलव्यां.
संघट्टिआ = पीडा करी.
परियाविया - दुखी कर्या.

किलामिया - थकव्या.
 उद्वविया-भय पमाड्या.
 ठाणाओ-एक ठेकाणेथी.
 ठाणं - बीजे ठेकाणे.
 संकामिया-मुक्या.

जीवियाओ - आवखाथी.
 ववरोविया - चुकाव्या.
 तस्त - ते.
 मिच्छामि - मारे मिथ्या.
 दुक्कडं - पाप.

इत्थाकारेण संदिसह जगवन् इरियावहियं, पदि
 क्कमामि, (गुरु कहे पदिक्कमह,) (शिष्य कहे) इत्थं,
 इत्थामि, पदिक्कमिन्. ॥ ४ ॥ अथ इरियावहियं.

इरिया वहियाए, विराहणाए, गमणागम
 णे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, नसा
 नत्तिंग, पाणग दग, मट्टी मक्कमा संताणा संक
 मणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइ
 दिया, तेइंदिया, चनरिंदिया, पंचिंदिया, अत्ति
 हया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, प
 रियाविया, किलामिया, उद्वविया, ठाणाउ,
 ठाणं, संकामिया, जीवियाउ ववरोविया, त
 स्स मिच्छामि दुक्कडं.

विस्तार अर्थः—इच्छाकारेण केण तमारी इच्छापूर्वक पण मारी दाक्षिणताए के बलात्कारे नहीं. जगवन् संदिसह केण हे जगवंत आदेश आपो. इरियावहियं केण ? चालवानो मार्ग, तथा ९ साधु श्रावकनो सर्वविरति देशविरति रूप मार्ग, तेने विषे जे पाप लाग्युं होय तेथी पम्पिक्कमामि केण निवर्त्तुं ? पाठो वलुं ? त्यारे गुरु कहे पम्पिक्कमह केण निवर्त्तो. तेवारे शिष्य कहे. इच्छं केण एमज, आपे आझा आपी तेमज. इच्छामि पम्पिक्कमिनुं केण हुं पम्पिक्कमवाने इच्छुं तुं. इरियावहियाए केण ? चालवाना मार्गमां, तथा ९ साधु श्रावकना आचारमां, जे कोइ जीवोनी, विराहणाए केण विराधना अइ होय, गमणागमणे केण जतां आवतां, पाण केण विगलेंडि जीवोने, क्कमणे केण पगे करी चांपवाथी, बीयक्कमणे केण बीज सुकां लीलां चांपवाथी, हरियक्कमणे केण हरित एटले लीली वनस्पति चांपवाथी, ए वे पदे करी सर्व वनस्पतिने जीवपणुं कहुं.

* जीवनां लक्षण सर्व वनस्पतिमां दीठामां आवे छे ते आ प्रमाणे मनुष्यना शरीरनी पेटे वनस्पतिनुं शरीर कोमल, तरुण, तथा वृद्धता प्रमुख सहित दीठामां आवे छे. तथा जेम हाथ तथा पगादिक अवयवोए करी मनुष्यनो देह वृद्धिने पामे छे तेम शाखादिक अवयवोएकरी वृक्षनी वृद्धि थाय छे. तथा जेम मनुष्यादिं

तथा नसा के० सर्व त्रेह ते ऋर एथी सूक्ष्म अ

क प्राणीओमां जाग्रत तथा निद्रा अवस्था दीठामां आवे छे तेम पुंआड तथा आमली प्रमुख वृक्ष, चंद्रविकासिक तथा सूर्यविकासि कादिकं कमल, अने अंबाडी पुष्पादिकमां निद्रा तथा जाग्रत् अवस्था दीठामां आवेछे तथा लोभ, हर्ष, लज्जा, भय, मैथुन, क्रोध मान, माया, आहार, ओघसंज्ञा, इत्यादिक सर्व विकार वृक्षोने पण मनुष्यनी पेटे थता दीठामां आवे छे. जेम के, श्वेत आकडानुं वृक्ष पलाशादिक वृक्ष, भूमिगत निधानने पोताना मूलने जडेकरी वींटी लिये छे हे लोभनो भाव जाणवो; वर्षाकालनेविषे मेघनी गर्जना सांभलीने शीतल वायुना फरसेकरी अंकुर उत्पन्न थाय छे ते हर्ष नो भाव जाणवो. लज्जालू वेल मनुष्यना हाथ विगेरे अंगनास्पर्शथी संकोचाई जायछे; ए लज्जा तथा भयनो भाव कहवाय; अशोकवृक्ष वकुलवृक्ष तथा तिलकवृक्षादिक नवयौवनस्वरूप सालंकार कामिनी ना पगनी पान्हिना प्रहारेकरी; मुखनुं तांबूलछांटवार्थी; सस्नेहालि गन वडे तथा हावभाव कटाक्षेकरी तत्काल फलता दीसे छे; ए मैथुन संज्ञा जाणवी. कोकनदवृक्षनो कंद मनुष्यनो पग लाग्याथी हुंकारा सूकेछे; ए क्रोधनो भाव जाणवो. रुदती वेल, अहो हुंछतां आ लोको दुःखी कां थायछे ? एवा अहंकारेकरी निरंतर अश्रुपात करे छे केम के, तेनार्थी सुवर्णनी सिद्धि थाय छे; माटे ए माननो भाव जाणवो. घणुं करीने बधी वेलीओ पोतपोतानां फलोने पांद डांएकरी ढांकी लियेछे ए मायानो भाव जाणवो. तथा भूमिका जलादिक आहारना योगे वृक्षोनी वृद्धि थायछे; अने ते विना कुम लाई जायछे. मनुष्यनी पेटे नागरवेलि प्रमुखने निलवट गोमय तथा दुग्धादिकना डोहला उपजे छे ते परिपूर्ण थया पछी पत्र, फल, फूल, तथा रसनी वृद्धि थाय छे; ए पण आहारसंज्ञा जाणवी. वृक्षने पांडू, गांव, सोजो तथा दुर्बलपणुं प्रमुख रोगेकरी फूल, फल, पान, त्वचाने विकार दीसे छे. सर्व वनस्पतिनां आउखां पोतपोतानां निय वृज होय छे; इष्ट तथा अनिष्टआहारनी प्राप्तिए करी वृक्षो अणुए

(४ए)

एकायनं पण ग्रहण करवुं. ए सूक्ष्म अपकायनी वि
 ना पापनुं कारण ठे. ते कहे ठे:—एगंमि उदग विं
 जे जीवा जिणवरोहिं पन्नत्ता ॥ ते जइ सरिसव
 जंबु दीवे न मायंति ॥ अर्थ:—एक पाणीना विं
 वर देणे जे जीवो कह्या ठे, ते जीवोनुं
 रूप करीए तो जंबुद्वीपमां न
 जाकार जीवो जूमिने विषे वृ
 ष्टीने रहे, अर्थात् जूमिने विषे

(४६६) जनुं जुइया एवुं नाम होयठे, ते
 ग शब्दे करी, कीमीडना नागरा

। मार्गने मूकीने वृक्षनी उपरज चडेछे;
 ए ओघ संज्ञानो भाव जाणवो इत्यादिक युक्तिए करी श्री आचारांग
 ना पहेला श्रुतस्कंधना पहेला अध्ययनमां सविस्तर जीवपणुं थाप्युं छे.
 अहीं कोइ पूछे के, जो वनस्पति जीवरूप होय तो छेदन तथा
 भेदन प्रमुख करतां केम रोतां नथी अथवा नाशी जतां नथी ?
 एनो उत्तर ए छे के, मनुष्यनी पेटे वनस्पतिने मुख, पग, तथा
 हाथ प्रमुख अवयवोनो अभाव छे. अने ख्यावर कर्मना उदयथी ना
 सवाने वनतुं नथी. तोपण तेओने अव्यक्त वेदना होयज छे. जेस
 कोइ एक आंखलो, बेहेरो, बोवडो, ठुंठो, पांगलो, अने विषम वायु-
 ना विकारे करी थंभाणो थंको सर्व अंगोपांगना व्यापार रहित एवो
 पुरुष होय तेने कोइ ताडन प्रमुख करे तो तेनार्थी ते सहन थाय
 नहीं, पण मुखादिकना अक्षाषे रोई शके नहीं, तथापि तेने वेदना तो
 थायज छे. ते माटे कोइ मोटा अवश्यना कारण विना वनस्पतिनी
 विराधना करवी नहीं, अने सर्वे जीवोने सरस्वा जाणी यतना करवी.

पण जाणवां. पणग के० पनक एटले पांच वर्णी नी लफूल जाणवी. दग के० पाणी. मट्टी के० माटी अथवा दगमट्टी के० पाणी अने माटीना जेगा धवाशी जे कीचरु थाय ठे, ते पण जाणवो. मक्कना के० मर्कट एटले करोलिआ. तेनी संताणा के० जाल. संकमणे के० पगे करी चांप्याशकी जे कांइ विराधना थइ होय.

इह्याकारेण संदिसह जगवन् त्यांशी ते इहं इह्यामि परिक्कमिजं सुधी पेहेली अच्युपगम संपदा जाणवी. अच्युपगम संपदा एटले आलोयणा. लक्षण रूप कार्यनुं अंगीकार करवुं ते. अने इरिया वहियाए, विराहणाए ए बे पदनी (अंगीकार करेली वस्तुने उपजवानां कारण रूप) निमित्त संपदा जाणवी. तथा गमणा गमणे ए पदनी (प्रायश्चित्त उपजाववा रूप) नुघ ते सामान्य हेतु संपदा जाणवी. अने पाणक्कमणे त्यांशी संताणा संकमणे सुधी चार पदनी चोथी इत्वर (विशेष) हेतु संपदा जाणवी. केमके पाणक्कमणे वीयक्कमणे एम दरेकनां नाम देइ देइने विशेषे कहुं. ते माटे ए चार पदनी विशेष हेतु संपदा जाणवी. जे मे जीवा विराहिया के० जे कोइ जीवो में विराध्या होय, उख

मांहे पारुधा होय, एमां जीव विराध्या एम सामान्य
कह्युं. पण विस्तारे नाम देइ देइने न कह्युं माटे एस-
धला जीवना परिताप रूप एक पदनी पांचमी संग्रह
संपदा जाणवी. एगिंदिया केण जेने शरीर रूप एकज
इंद्रिय होय ते पृथ्वी पाणी, अग्नि, वायु, अने वनस्प
तिरूप पांच प्रकारना स्थावर (धिर रहे एवा) जीवने ए
केंद्रिय कहीए. हवे त्रस (एक ठेकाणेथीबीजे ठेकाणेजइ
शके तेवा) जीव कहेठे. वे इंद्रिया केण जेने शरीर अने जी
वने एवे इंद्रियोज होय. एवा करमीया, शंख, ठीप, जलो,
गंधोदा, अलसीया, प्रमुख जेने पग न होय तेने बेंद्रिय
जीव कहीए. तेइंद्रिया केण जेने शरीर, मुख तथा नाक
ए त्रणज इंद्रियो होय एवा गदहिया, कुंथुआ, जू,
लीख, मांकण, कीनी, मंकोरा वगेरे जेने आठथी
अधिका पग होय अथवा जेने मां आगद शींग होय
तेवा जीवने तेइंद्रिय जाणवा. चन्द्रिंद्रिया केण जेने
शरीर, मुख, नाक, अने आंख ए चारज इंद्रिय होय.
एवा कंसारी, करोलीआ वींठी तथा माखी, फुदां म
खर, मांस, चांचर, जमरी, टीरु वीगेरे जे जे उरुना
जा जीव होय. जेने ठ अथवा आठ पग होय, तथा.

मस्तके शींग होय, ते चार इंद्रियाला जीव जाणवा. पंचिंद्रिया के जेने शरीर, जीभ, नाक, आंख अने कान ए पांच इंद्रिय होय तेने (मनुष्य देव पशु पंखी अने नारकीने) पंचिंद्रिय कहिए. ए पांच बोल मध्ये सर्व संसारी जीव आवी गया. एमां एकेंद्रि बेंद्रिय एम जीवनां नाम कहां तेश्री ए पांच पदनी बढी जीव संपदा जाणवी. अग्निहया के सामा आवता पगे करी हएया. वक्तिया के धूलवमे ढांक्या अथवा एक ढगले कर्या, लेसिया के ज्ञोय घश्या तथा लगार म सट्या, संधाइआ के शरीरे शरीर मेलव्यां संघट्टिआ के श्रोमो हाथ अमाकी डुख दीधुं, परियाविया के परिताप (डुख) नपजाव्यो अथवा पीट्या, किलामिया के अकवीने मरण तोल कर्या, उहविआ के त्रास पमानी हादी चाली शके नहीं एवा कीधा, गणां के एक स्थानकेथी बीजे स्थानके संकामिया के मुक्या, जीवियानु ववरोविया के आवखाथी चुक्या (मार्या) तस्स के ते संबंधी मिहामिडुकरं के जे कोइ पाप लाग्युं होय ते निष्फल थानुं. ए अग्निहयाथी तस्स मिहामिडुकरं सुधी विराधनानां ना

म दीधां माटे ते विराधना नामे सातमी*संपदा थइ.

तस्स उत्तरीना तुटा शब्दना अर्थ.

उत्तरी = विशेषे शुद्ध
करणेणं = करवे, करवावडे
पायच्छित=आलोयणनुं तप
विसोही = वधारे शोधवुं
विसल्ली = शल्य रहित.

पावाणं = पापोनुं
कम्माणं = कर्मोनुं
निग्घायणट्ठाए = टाळवाने अर्थे
ठामि = रहुंछुं
काउस्सग्गं = काउस्सग्गमां

हवे एनी विशेष शुद्धिने अर्थे काउस्सग्ग करवा
वांठतो थको तस्स उत्तरी कहे ठे ॥

* आ सात संपदानां नामवार अक्षरोनी गणत्रीनो कोठो.

संख्या	संपदा	लघु	गुरु	सर्व अक्षर.
१	अभ्युपगम संपदा.	६	२	८
२	निमित्त सं०	१२	०	१२
३	ओष सं०	६	०	६
४	विशेषहेतु सं०	३२	६	३८
५	संग्रह सं०	८	०	८
६	जीव सं०	२१	०	२१
७	विराधना सं०	५१	६	५७

१३६

१४

१५०

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायञ्चित्त कर
णेणं, विसोही करणेणं, विसद्धी कर
णेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायण
वाए, ठामि कानुस्सग्गं

अर्थः—तस्स उत्तरी करणेणं एटले जे पाप पाठ
ल आलोव्यां पणिकम्म्यां तेने उत्तरी करणेणं के० तेनी
विशेष शुद्धि करवा सारु कानुस्सग्ग करुं ठुं; ते शुद्धि
शाथी थाय ते कहे ठे. पायञ्चित्त करणेणं एटले गुरु
पासे प्रायश्चित्त कख्याथी गुरुये दीधो जे आलोयणानो
तप ते करिये तेने प्रायश्चित्त कहिये अने कानुस्सग्ग
ते पण अंतरंग तप ठे ते माटे कानुस्सग्गने करवे क-
रीने आत्मा पापरहित थाय, तथा विसोही करणेणं
एटले विशोधी करवाथी एटले पापरूप भलने टाल-
वाथी; विसद्धी करणेणं एटले माया शल्य, नियाण
शल्य, अने भिष्ण्यात्व शल्य ए अंतरंग त्रण शल्यने
टालवा थकी (अथवा एथी रहित थवा माटे कानुस्स-
ग्ग करुं ठुं.) पावाणं कम्माणं एटले संसार हेतु ज्ञाना

वरणी आदिक जे पाप कर्मों ठे तेउने, निग्घायणवा
ए एटले निर्घातन अथवा फेरवाने अर्थे, गामि कानुस्स
गं एटले एक गामे रही कानुस्सगग करुं. ए पन्निक्क
मण संपदा आठमी अइ. तस्स उत्तरीकरणेणं इत्यादि
कमां पन्निक्कमवाना शब्दो कह्या ते माटे ए ठ पदनी
संपदा आठमी ठे ए सूत्रोनो गद्य पाठ ठे, गाथाबंध
नथी. एमां संपदा आठ, पद बत्तीश, गुरु चौबीश
लघु एकशो ने पंचोत्तर, सर्व मली एक शो नवाणुं
अहरो ठे.

ए इरियावहि मन सुद्धे पन्निक्कमतां अठार ला
ख चौबीश हजार एक सो ने वीश *मिन्नामिडुक्कमं
देवाय ठे.

* त्यां प्रथम पांचसैं त्रेशठ स्थानके जीव उपजे छे ते भेदोनुं
विवरण करे छे:-पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय तथा वाउकाय. ए
चार सूक्ष्म तथा बादर मली आठ भेद थाय अने वनस्पतिकायना
त्रण भेद छे:-एक सूक्ष्म निगोद रूप तथा वे प्रकारनी बादर, एक
प्रत्येक ने बीजी साधारण. ए पांच स्थावरना मलीने अग्यार भेद
थया; तथा वेइंद्रिय तेइंद्रिय ने चउरिंद्रिय ए विकलैंद्रिय कहेवाय
छे. ए समुच्छिन्नज होय छे. ए त्रण पेला अग्यारनी साथे मेलवी
ए. एटले चौद भेद थाय; ते चउद पर्याप्ता तथा चउद
अपर्याप्ता मली अठ्ठावीश भेद थाय. हवे पंचैंद्रिय तिर्यचना
दश भेद कहेछे:-तेमां सर्व प्रकारना मत्स्यादि जलचरनो

अन्नञ्च उससिएणां तुटा शब्दना अर्थ.

अन्नथ = अन्यत्र, बीजे ठेकाणे
 उससिएणं = उंचा श्वासवडे
 नीससिएणं = नीचा श्वासवडे
 खासिएणं = खांसीवडे
 छीएणं = छींकवडे
 जंभाइएणं = बगासा वडे
 उडुएणं = ओडकार वडे
 वायनिसग्गेणं = वा सरवा वडे
 भमलिए = तमर आवे, फेर आवे
 पित्त = पित्तना
 मुच्छाए = मुच्छा आवे, जोरे
 सुहुमेहिं = सूक्ष्म-रीते-वडे

अंग = शरीर
 संचालेहिं = संचारवडे
 खेल = कफ-गलफा
 दिष्टि = दृष्टि
 एवम् = ए प्रकारे
 आइएहिं = इत्यादि लइने
 आगारेहिं = आगारोवडे
 अभग्गो = अखंड
 अविराहिओ = नहीं विरोधेलो
 हुज्ज = होजो
 काउस्सग्गो = काउस्सग्ग
 जाव = ज्यां सुधी

एक भेद, थलचरना अण भेद तेमां एक घोडा प्रमुख चतुष्पद
 आशीविष प्रमुख उरपरि सर्प, अने गोह पमुख भुजपरि सर्प ए
 थलचरना अण भेद अने चार प्रकारना खेचरनो एक भेद ए म
 लीने ए पांच गर्भज अने पांच समुच्छिम मली दश भेद थाय. ए
 दशने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणीए त्यारे वीश भेद थाय. ए वी
 शमां पैला अठावीश मेलवीए त्यारे अडतालीश थाय. ए तिर्यच
 ना भेद जाणवा. हवे नारकीना भेद, रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालु
 का प्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभा, तथा तमतमा प्रभा, ए सात
 नरकना, नारकी पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली चौद भेद थाय; तेमां
 पाछला अडतालीश मेलीए त्यारे वासठ थाय. हवे मनुष्यना भेद
 आ प्रमाणे:—पांच भरत, पांच ऐरवत, तथा पांच महाविदेह ए
 कर्मभूमिना पंदर भेद; पांच हैमवंत पांच हिरण्यवंत, पांच हरिवर्ष,
 पांच रम्यक, पांच देवकुरु तथा पांच उत्तर कुरु ए अकर्मभूमिना

भगवंताणं = भगवंतोने
 नमुकारेणं = नमस्कारवडे
 न = नहीं
 पारोमि = पारुं
 ताव = त्यां सुधी
 कायं = शरीरने

ठाणेणं = स्थानक वडे
 मोणेणं = मोन वडे
 ज्ञाणेणं = ध्यान वडे
 अप्पाणं = आत्माने-मारीकायाने
 वोसिरामि = वोसराबुंछुं

श्रीशभेद; अने छप्पन्न अंतर द्वीपो कहेवाय छे. ए छप्पन्ननी साथे पेली कर्मभूमिनां पंदर तथा अकर्मभूमिना त्रीश मेलवीए त्यारे ए-कशोने एक भेद मनुष्य जातीना थाय. एमां गर्भज मनुष्यना पर्यासा तथा अपर्यासा मली वसें ने वे भेद थाय अने तेनी साथे एकसो एक समुच्छिन्न मनुष्यना भेद मेलवीए त्यारे त्रणसें त्रण भेद थाय. अने वासठ प्रथम तिर्यचना कहा ते सर्व एकठा कखा-थी त्रणसें पांसठ भेद थाय.

हवे देवताना एकसो अठाणुं भेद कहिये छैये:—प्रथम पर-माधामांना पंदर, दश भुवनपति; आठ व्यंतर; आठ वाण व्यंतर; दश ज्योतिषी तेमां पांच चर ने पांच स्थिर जाणवा. त्रण किल्वि-षिया, दश तिर्यकृजृंभक, नवलोकांतिक, वार देवलोकना, नव त्रैवेयकना, पांच अनुत्तर विमानना ए सर्वमलीने नवाणुं थया ते पर्यासा तथा अपर्यासा ए वे मली एकसो ने अठाणुं भेद थाय. ते पाछला त्रणसेंने पांसठमां मेलीए त्यारे पांचसें त्रैसठ सर्व जीवो-नी उत्पात्ति स्थान थाय, तेने अभिहयाथी ववरोषिया सुधीना दश पदवडे दशगुणा करिये त्यारे पांच हजार छसेंने त्रीश थाय; ते वली रागने द्वेषथी बमणा करिये त्यारे अग्यार हजार वसेंने साठ थाय; ते मन वचनने कायाए करी त्रण गुणा करिये त्यारे ते त्रीश हजार सातसें ने एंसी थाय; ते करवा कराववा तथा अनुमोदन-ती त्रण गुणा करिये त्यारे एक लाख एक हजार त्रणसेंने चाली-स थाय. ते अतीत अनागत तथा वर्त्तमान काले करी त्रण गुणा करिये, त्यारे त्रण लाख चार हजारने वीश थाय, ते अरिहं-

॥ अथ अन्नं नससिएणं ॥

अन्नं नससिएणं, नीससिएणं, खा
सिएणं, ठीएणं, जंजाइएणं, उडुए
णं, वायनिसग्गेणं, जमलिए पित्तमुत्ता
ए, सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं
खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिठि संचा
लेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अज
ग्गे अविराहित, हुज्ज मे काउस्सग्गे,
जाव अरिहंताणं, जगवंताणं, नसुक्का
रेणं, न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मो
णेणं, ऊणेणं, अप्पाणं वोसिरामि, ॥१॥

अर्थः—अन्नं के० अन्यत्र के० बीजे ठामे एटले
हवे जे आगारो कहेसे ते आगारो वर्जीने बीजे ठेका

तनी साखे सिद्धनी साखे, साधुनी साखे, देवनी साखे गुरुनी सा-
खे तथा आत्मानी साखे ए छनी साथे छ गुणा करिये त्यारे अट्टार
लाख चोवीश हजार एकत्ताने वीश मिच्छामिदुक्कड थाय पर्या
रीते जीवने खमत खामणां कीजे, इरियावहि पडिक्कमतां शुभ ध्यामे
करी अनेक घोर पाप विलय जाय.

(५९)

एषे कायानो व्यापार करवानो नियम करुंठुं. उससिए णंकेण मुखे नासिकाए उंचो श्वास लेतां महारो का उस्सग्ग न ज्ञांगे; नीससिएणंकेण नीचो श्वास मूकतां, खासिएणं केण उधरस आवे, ठीएणं केण ठीक आवे, जंजाइएणं केण बगासुं आवे, उहुएणं केण उहुकार आवे, वायनिसग्गेणं केण अधो द्वारे वा सरवे, जमलिए केण जमरी आवे, फेर आवे, पित्तमुच्चाए केण पित्तने प्रकोपे मूर्धा आवे, एटलां वानां श्येथी कानस्सग्ग न ज्ञांगे; इहां अन्नञ्जनससिएणंथी आंहीसुधीमां एकेका आगारनां नाम दीधां ते माटे ए नव पदनी प्रथम आगार संपदा अइ.

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं केण सूक्ष्मशरीरने इला ववेकरी शीतादिक वेदनाए रोम उजां अवाथी कान स्सग्ग न ज्ञांगे, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं केण सूक्ष्म श्लेष्म चलाववे कफगलवादिके करी कानस्सग्ग न ज्ञांगे, सुहुमेहिं दिठि संचालेहिं केण सूक्ष्म दृष्टी चलाववे करी मीचवा उधामवाथी कानस्सग्ग न ज्ञांगे एमां सुहुमेहिं अंग संचालेहिं प्रमुख मांहे बहुआगारनां ना

म दीघां तेमाटे ए बहुआगार संपदा बीजी जाणवी

एवमाइएहिं आगारेहिं के० ए पूर्वोक्त वार आगार आदे देइने आदि शब्दवमे बीजा पण आगारेहिं के० आगार लेवा ते कहे ठेः—बीजलीनुं अथवा दीवानुं अजवालुं आते नढवाने वस्त्र लेतां, अने नंदर बिलाफी आमी अवाथी आगल पाठल थवुं पमे, तथा चोर अथवा राजाना ज्ञयथी आघा पाठा थतां, अग्नि लागे अथवा ज्ञींत पमते तथा सर्प मंश मारे तेथी आघो पाठो थतां, कानस्सग्ग पारतां थोमी विराधना थतां अज्जग्गो अविराहिन के० कानस्सग्ग ज्ञागे नहीं, एण विराध्यो रहे, ए रीते हुज्जमे कानस्सग्गो के० एवो मुऊप्रते कानस्सग्ग होजो; इहां एवमाइ इत्यादिकमां आगार कह्या माटे ए बीजी आगंतुक (नवा) आगार संपदा जाणवी.

हवे कानस्सग्गनो वखत आंके ठे, एटले एवो कानस्सग्ग केटली वार सुधी होय ते कहे ठे. जाव अरिहंताणं के० ज्यांलगे अरिहंत ज्ञगवंताणं के० ज्ञगवं नमुक्कारेणं के० नमस्कारेसहित एटले नमो अरि

हंताशंनो उच्चार करी कानुस्सग्गने न पारेमि केण न
पाहं समाप्त न करुं त्यांसुधी जाणवुं. इहां जाव अरि
हंताणं इत्यादिकमां कानुस्सग्गनुं मान कह्युं. ए कायो
त्सर्गविधि नामे चोथी संपदा थइ.

ताव कायं केण त्यांलगे शरीरने ठाणेणं केण ए
कठामे उज्जुं राखवुं, मोणेणं केण मौनपणे रहेवे करी
जाणेणं केण धर्मध्यान सहित रहेवे करी मनने स्थिर
रपणे राखी, अप्पाणं वोसिरामि केण (कानुस्सग्ग रहित
पणाथकी अने सावद्य व्यापारपणाथकी) आत्माने वो
सिरावुं. एमां तावकायं इत्यादिकमां शरीर स्थिर रा
खवुं कह्युं माटे ए स्वरूप संपदा पांचमी जाणवी.

लोगस्सना छूटा शब्दना अर्थ.

लोगस्स-लोकने-ना
उज्जोअगरे-उद्योतना करनारा
धम्मतित्थयरे-धर्मतीर्थना क-
रनारने
जिणे-जिनेश्वरभगवानने
अरिहंते-अरिहंत भगवानने
कित्तइस्सं-स्तुति करीश
चउवीसंपि-चोवीशने पण

केवली-केवलज्ञान पामेलाहे
उसभं-ऋषभ देवने
अजियं - अजित नाथने
वंदे - वांदुछुं
संभवं - संभवनाथने
अभिणंदणं - अभिनंदन
स्वामीने
सुमइं - सुमतिनाथने

पञ्चमप्पहं - पद्मप्रभने
 सुपासं - सुपार्श्वनाथने
 जिणं - रागद्वेष जितनारने
 चंद्रप्पहं - चंद्रप्रभने
 सुविहिं - सुविधिनाथने
 पुप्फदंतं - पुष्पदंतने
 सीयल - शीतलनाथने
 सिज्जंस - श्रेयांसनाथने
 वासुपुज्जं - वासुपुज्य स्वामीने
 विमलं - विमलनाथने
 अणंतं - अनंतनाथने
 धम्मं - धर्मनाथने
 संतिं - शान्तिनाथने
 कुंथुं - कुंथुनाथने
 अरं - अरनाथने
 मल्लिं - मल्लिनाथने
 मुणिसुव्वयं - मुनिसुव्रत
 स्वामीने
 नमिजिणं - नमिनाथने
 रिड्डनेमिं - अरिपूनेमिने
 पासं - पार्श्वनाथने
 वद्धमाणं - वर्द्धमान स्वामीने
 मए - महारे जीवे
 अभिथुआ - स्तुति कराया
 विहुय - टाल्या
 रय मला - रज अने मेल

पहीण - अति क्षय कर्या
 जर - जरा एटले घडपण
 मरणा - मरणो
 तित्थयरा - तीर्थकरो
 पसीयंतु - प्रसन्न थाओ
 कित्थिय - स्तव्या
 वंदिय - वांछा
 माहिया - पूज्या
 उत्तमा - उत्तम
 आरुग्ग - रोगरहितपणुं
 वोहिलाभं - समकित वोधि
 बीजनो लाभ
 दिंतु - आपो
 चंदेसु - चंद्रथकी
 निम्मलयरा - घणाज निर्मत
 आइच्चेसु - आदित्यथी-सु
 रजथी
 अहियं - वधारे
 पयासयरा - प्रकाश करनार
 सागर - समुद्र
 वर - प्रधान, श्रेष्ठ
 गंभीरा - गंभीर
 सिद्धिं - सिद्धिने
 मम - मने
 दिंसंतु - आपो

(६३)

॥ अथ लोगस्स ॥

गस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिठ्यरे
णो ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवी
पि केवली ॥ १ ॥ उसन्न मजिअं
वंदे ॥ संन्नवमज्जिणंदणां च सुमइं
॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चं
इप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥
सीअल्ल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विम
लमणांतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वं
दामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मद्धि ॥ वंदे
मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि
रिठ्ठनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणां च ॥ ४ ॥
एवं मए अज्जियुअा ॥ विहुयरयमला
पहीणजरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणव
रा ॥ तिठ्यरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कि
त्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स

उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्गबोहिलात्रं ॥
समाहिवरमुत्तमं दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु नि
म्मल्लयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयास
यरा ॥ सागरवरगंजीरा ॥ सिद्धा सि
द्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

अर्थः—लोगस्स के० पंचास्तिकायात्मक लोकमां
हे केवलज्ञाने करी उज्जोअगरे के० उद्योतना करनार,
धम्मतिब्बयरे के० धर्मतीर्थना करनार, चतुर्विधसंघना
प्रवर्त्ताविणहार, जिणे के० राग छेषना जीतनार एहवा
अरिहंत के० श्री अरिहंत जगवंत प्रते नाम लेऽने
कित्तइस्सं के० कीर्त्तना स्तवना करीश. चउवीसंपि
केवली के० चउवीसे जिनवर जे केवली ठे तेमने.
इहां अपिशब्दे ऐरवतक्केत्रे तथा महाविदेहक्केत्रे जे के
वली ठे तेउने पण स्तवुं. ॥ ? ॥

हवे चोवीश तीर्थकरनां नाम अनुक्रमे करी क
हे ठे. प्रथम उसत्तं के० श्रीरुषन्नेदेव, विनता नगरी,
नात्तिराजा पिता, मरुदेवी माता, वधा तीर्थकरोनी,

मातानु पहेला स्वप्ने हाथी देखे अने श्रीमरुदेवीजी ए पहेला स्वप्ने वृषज्ज दीठो एवो गर्जनो महिमा जाणी श्रीरुषज्ज नाम दीधुं, तथा धर्मनी आदिना प्रवर्त्ता वनार तेथी बीजुं आदिनाथ नाम कहिये. पांचसे धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी लाख पूर्वनु आयु, सुवर्णवर्ण, वृषज्ज लांठन.

बीजा अजियंच केण श्रीअजितनाथ, अयोध्या नगरी, जितशत्रुराजा पिता, विजयाराणी माता; प्रथम राजा राणी बाजी पासे रमतां त्यारे राणी हारी जती अने राजानी जीत थती हती अने जगवंत गर्जे आव्या पठी राणी जीते अने राजा हारे एवो गर्जनो महिमा जाणीने अजितनाथ नाम दीधुं. साढा चारसं धनुष्यप्रमाण शरीर, बहोत्तेर लाख पूर्वनु आयु, सुवर्णवर्ण, हाथीनुं लांठन; तेमने वंदे केण हुं वांडुं.

त्रीजा संजवं केण श्रीसंजवनाथ. श्रावस्ति नगरी जितारि राजा पिता, सेना राणी माता, देशमां डुकाल हतो ते जगवंत गर्जे आव्याथी अणचिंतव्यो पृथ्वीमां धाननो संजव थयो तेथी संजवनाथ नाम

दीधुं चारसैं धनुष्य प्रमाण शरीर, साठ लाख पूर्व आयु, सुवर्ण वर्ण, अश्व (घोडा)नुं लांठन.

चोथा अन्निनंदणं च के० श्रीअन्निनंदनस्वामी. अयोध्यानगरी, संवर राजा पिता, सिद्धार्था राणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी इंड महाराज आवीने जगवंतनी माताने घणी वार स्तवीने जता हता; ते वारे राजा प्रमुखे जाण्युं जे ए गर्जनोज महिमा ठे माटे अन्निनंदन नाम दीधुं. साठात्रणसैं धनुष्य प्रमाण शरीर, पचास लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, वानरनुं लांठन.

पांचमा सुमइं च के० श्रीसुमतिनाथ. अयोध्यानगरी, मेघरथ राजा पिता, सुमंगला माता, प्रभु गर्जमां रह्या पढी ते गाममां एक वणिकनी वे स्त्रील हती तेमां न्हानीने पुत्र हतो अने महोटी दंभ्या हती यण ते ठोकरानुं प्रतिपालन वने माताल करती हती. एज करतां ते वाणीयो ज्यारे सरण पाभ्यो त्यारे महोटी स्त्री धननी लालचे कडेवा लागी जे पुत्र महारो ठे, माटे जेनो पुत्र तेनुं धन आय ठे एवो चाल

ठे, तेमज न्हानीनो तो दीकरो हतो तेथी तेणे कहुं
के ए पुत्र महारो ठे, अने धन पण महारुं ठे; एम
बन्ने सोक्योनो टंटो थयो. ते वढती वढती दरबारमां
आवी तेवारे गर्जना महिमाथी राणीने चुकादो करवा
नी जली बुद्धि उत्पन्न अइ, तेथी राणीये कहुं जे बन्ने
मलीने धन अर्धो अर्ध वहेंची लो अने ठोकराना पण बे
जाग करी अर्धो अर्ध वहेंची लो. ते सांजली न्हानी स्त्री
बोली के मारे ड्य जोशुं नथी, अने ठोकराना कांइ
बे विजाग थाय नहीं माटे ए ठोकरो एनो ठे ते महा
रोज ठे. ते सांजली राणी बोली के ए ठोकरो न्हानी
स्त्रीनो ठे, केमके पुत्रनुं मृत्यु थाय त्यांसुधी पण महो
टी स्त्रीथी ना कहेवाणी नही अने न्हानी स्त्रीये मा
खानी मनाइ करी; माटे पुत्र अने धन एने हवाले
करो, अने महोटी स्त्रीने घरथी बाहेर काढो. ए गर्ज
ना महिमाथी जगवंतनी माताने एवी बुद्धि उपनी,
ते माटे सुमति नाम दीधुं. त्रणसें धनुष्य प्रमाण श-
रीर, चालीस लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, कौंच लांठन.

ठठा पञ्चमप्यहं के० श्री पद्मप्रज्ञस्वामी कौशां

(६७)

वी नगरी, धरराजा पिता, सुषीमा राणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी माताने कमलनी सजाए सुवानो मोहोलो ऊपन्यो, ते देवताए पूरण कस्यो अने जगवंतनुं शरीर पद्म (कमल) सरखुं रक्तवर्णे हतुं माटे पद्मप्रज्ञ नाम दीधुं. अहीसें धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीश लाख पूर्वनुं आयु, रक्तवर्ण, पद्म लांठन.

सातमा सुपासं केण श्री सुपार्श्वनाथ, वणारसी नगरी, सुप्रतिष्ठराजा पिता, पृथ्वीराणी माता. मातानां बन्ने पासां रोगे करी कोढीयां हतां ते जगवंत गर्जे आव्या पढी बन्ने पासां सुवर्णवर्णे घणां सुकोमल घयां माटे सुपार्श्व नाम दीधुं. एक प्रतमां जगवंतना पितानां वे पासां कोढ रोग वालां हतां तेने जगवंतनी माताये हाथ फेरव्याथी सुकमाल निरोगी घयां एवो पाठ लख्यो ठे. वसें धनुष्य प्रमाण शरीर, वीश लाख पूर्व आयु, सुवर्ण वर्ण, स्वस्तिक (साथीया)नुं लांठन.

आठमा जिणं च केण वली जिन वीतराग चंद प्पहं केण श्रीचंडप्रज्ञस्वामी, चंडपुरी नगरी, महसेन

(६९)

राजा पिता, लक्ष्मणा राणी माता, जगवंत गर्जे आ
व्या पढी माताने चंडमाने पान करवानो होहोलो
ऊपन्यो ते प्रधाने बुद्धिये करी पूर्ण कस्यो एवो गर्जे
नो प्रज्ञाव जाणी चंडप्रज्ञ नाम दीधुं, एकसो पचास
धनुष्य प्रमाण शरीर, दशलाख पूर्वनुं आयु, श्वेत वर्ण,
चंडनुं लांढन, तेमने वंदे केण हुं वांडुं.

नवमा सुविहिं च पुष्पदंतं केण श्री सुविधिना
थ, अने बीजुं नाम पुष्पदंत ठे. काकंदी नगरी सुग्रीव
राजा पिता, रामाराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या
पढी माता तथा पिता जली विधिए करी धर्म करवा
लाग्या. एवो गर्जनो प्रज्ञाव जाणी सुविधिनाथ नाम
दीधुं, अने मचकुंदनां फूलनी कली सरखा प्रजुना
उज्वल दांत हता. माटे बीजुं पुष्पदंत नाम दीधुं, ए
कसो धनुष्य प्रमाण शरीर, बे लाख पूर्व आयु, श्वेत
वर्ण, मगरमहनुं लांढन.

दसमा सीयल केण श्रीशीतलनाथ. जह्दपुर
नगर, दृढरथ राजा पिता, नंदाराणी माता, पिताना
शरीरे दाहज्वर हतो ते जगवंत गर्जे आव्या पढी रा

जाना शरीरनी ऊपर राणीये हाथ फेरव्याथी शरीरे शीतलता अइ. एवो गर्जनो महिमा जाणी शीतलना अ नाम दीधुं. नेवुं धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख पूर्व आयु, सुवर्ण वर्ण, श्रीवच्च लांठन.

अगियारभा सिङ्गस के० श्रीश्रेयांस जिन. सिंह पुर नगर, विष्णुराजा पिता, विष्णुराणी माता, देरासरमां परंपरागत देवता अधिष्ठित सज्जानी पूजा अती हती ते सज्जाए जे बेसे अथवा सुवे तेने उपड्व ऊप जे ते जगवंत गर्जे आव्या पढी साताना मनमां आव्युं जे देवगुरुनी प्रतिमानी पूजा आय ते तो खरुं ठे, पण सज्जानी पूजा तो क्यांये सांजली नथी. एम चिं तवी सज्जानी रक्षा करनार पुरुषे मनाई कस्या ठतां पण प्रभुनी माता ते सज्जा उपर वेठां तथा सुतां ते ठतां गर्जना प्रज्ञावथी अधिष्ठित देवता सज्जा मूकी ज तो रह्यो. त्यार पढी राजा प्रमुखे ते सज्जा वपराशमां लीधी. एवो गर्जनो महिमा जाणी श्रेयांस नाम दीधुं एंशी धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी लाख वर्षनुं आय, सुवर्ण वर्ण, गेंनीनुं लांठन.

बारमा वासुपुङ्गं च के० वली श्रीवासुपूज्यस्वामी. चंपानगरी, वसुपूज्यराजा पिता, जयाराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी इंडमहाराज वारंवार आवी वसु एटले रत्ननी वृष्टी करी माता पितानी पूजा करता, तेथी वासुपूज्य नाम दीधुं, सित्तेर धनुष्य प्रमाण शरीर, बहोतेर लाख वर्षनुं आयु, रक्तवर्ण, महिष (पामा)नुं लांगन.

तेरमा विमल के० श्री विमलनाथ. कांपिलपुर नगर, कृतवर्मराजा पिता, श्यामाराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी तेमना नगरमांकोइ स्त्री जर्तार देहरे आवी उतस्यां त्यां कोइ व्यंतरी देवी रहेती, तेणे ते पुरुषनुं सुंदर रूप दीठुं तेथी कामक्रीडा करवानी अजिलाषा अइ; पढी तेनी स्त्रीना जेवुं व्यंतरिये पोतानुं रूप विकूर्वि तेनी पासे सुती. प्रजाते बने स्त्री समान देखी ते पुरुषे कह्युं जे, एमां महारी स्त्री कोण ठे त्यारे पेहेली बोली के ए महारो जर्तार अने बीजी बोली के ए महारो जर्तार ठे. एम वढतां वढतां सर्व राजा पासे आव्यां. राजा तथा प्रधान बने बेहु स्त्रीने

जाना शरीरनी ऊपर राणीये हाथ फेरव्याथी शरीरे शीतलता अइ. एवो गर्जनो महिमा जाणी शीतलना थ नाम दीधुं. नेवुं धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख पूर्व आयु, सुवर्ण वर्ण, श्रीवह लाठन.

अगियारभा सिङ्गस केण श्रीश्रेयांस जिन. सिंह पुर नगर, विष्णुराजा पिता, विष्णुराणी माता, देरासरमां परंपरागत देवता अधिष्ठित सज्जानी पूजा अती हती ते सज्जाए जे बेसे अथवा सुवे लेने उपड्व ऊप जे ते जगवंत गर्जे आव्या पढी साताना मनमां आव्युं जे देवगुरुनी प्रतिमानी पूजा आय ते तो खरुं ठे पण सज्जानी पूजा तो क्यांये सांज्जली नथी. एम चिं तवी सज्जानी रक्षा करनार पुरुषे मनाई कख्या उतां पण प्रज्जुनी माता ते सज्जा उपर वेठां तथा सुतां ते उतां गर्जना प्रजावथी अधिष्ठित देवता सज्जा मूकी ज तो रह्यो. त्यार पढी राजा प्रमुखे ते सज्जा वपराशमां लीधी. एवो गर्जनो महिमा जाणी श्रेयांस नाम दीधुं, एंशी धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी लाख वर्षनुं आय, सुवर्ण वर्ण, गेंमीनुं लाठन.

वारमा वासुपुङ्गं च के० वली श्रीवासुपूज्यस्वा
मी. चंपानगरी, वसुपूज्यराजा पिता, जयाराणी माता,
जगवंत गर्जे आव्या पढी इंडमहाराज वारंवार आवी
वसु एटले रत्ननी वृष्टी करी माता पितानी पूजा कर
ता, तेथी वासुपूज्य नाम दीधुं, सित्तेर धनुष्य प्रमाण
शरीर, बहोतेर लाख वर्षनुं आयु, रक्तवर्ण, महिष
(पामा)नुं लांठन.

तेरमा विमल के० श्री विमलनाथ. कांपिलपुर
नगर, कृतवर्मराजा पिता, श्यामाराणी माता, जग-
वंत गर्जे आव्या पढी तेमना नगरमांकोइ स्त्री जर्तारि
देहरे आवी उतख्यां त्यां कोइ व्यंतरी देवी रहेती, तेणे
ते पुरुषनुं सुंदर रूप दीवुं तेथी कामक्रीडा करवानी
अजिलाषा थइ; पढी तेनी स्त्रीना जेवुं व्यंतरिये पो
तानुं रूप विकूर्वि तेनी पासे सुती. प्रजाते बने स्त्री
समान देखी ते पुरुषे कह्युं जे, एमां महारी स्त्री कोण
ठे त्यारे पेहेली बोली के ए महारो जर्तारि अने बीजी
बोली के ए महारो जर्तारि ठे. एम वढतां वढतां सर्व
राजा पासे आव्यां. राजा तथा प्रधान बने बेहु स्त्रीने

समान देखी कोइ रीते निवेसो करी शक्या नही पण राणीये पुरुषने दूर उज्जो राख्यो अने बन्ने स्त्रीनुने पण दूर उज्जो राखी ने बोलीके जे पोताना सत्य वचनना प्रज्ञावथी ज्ञत्तारिने स्पर्श करे तेनो ए ज्ञत्तारि जाणवो. ते सांजली व्यंतरीए देवशक्तिना प्रज्ञावे पोतानो हाथ लांबो करी ज्ञत्तारिने स्पर्श कर्यो. तेवोज राणीये तेनो हाथ पकरी लेईने कह्युं के तुं तो व्यंतरी ठेमाटे ताहरे स्थानके जती रहे. एवी रीते चूकादो थवाथी विमल मतिवाली राणी कहेवाणी ते गर्जनोज प्रज्ञाव जाणी विमलनाथ नाम दीधुं, साठ धनुष्य प्रमाण शरीर, साठ लाख वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, सूकर (सुअर, सुंरु)नुं लांगन.

चक्रदमा मणंतं च के० श्री अनंतनाथ. अयोध्या नगरी, सिंहसेन राजा पिता, सुयशाराणी माता, स्वप्नमां जेनो अंत न आवे एवं एक महोदुं चक्र जम तुं राणीए आकाशने विषे दीतुं अने अनंत रत्ननी मा ला दीठी तथा अनंत गांठना दोरा करी बांध्या तेथी लोकोना ताव गया एवो गर्जनो प्रज्ञाव जाणी अनंत

नाथ नाम दीधुं, पचास धनुष्य शरीर, त्रीस लाख वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, सिंचाणानुं लांठन.

पंदरमा जिणं केण वीतराग धम्मं केण श्रीधर्मना अस्वामी. रत्नपुर नगर, जानुराजा पिता, सुव्रताराणी माता राजा राणीने पूर्वे धर्म ऊपर अट्ठप राग हतो ते जगवंत गर्जे आव्या पढी बन्नेने धर्म ऊपर अत्यंत राग थयो एवो गर्जनो महिमा जाणी धर्मनाथ नाम दीधुं, पिस्तालीस धनुष्य प्रमाण शरीर, दश लाख वर्षनुं आयु, सुवर्णवर्ण, वज्र लांठन.

सोदमा संतिं च केण श्री शांतिनाथ. गजपुर नगर, विश्वसेन राजा पिता, अचिराराणी माता, ते दे शमां मरकीनो ऊपड्व घणो हतो ते जगवंत गर्जे आव्या पढी माताएं अमृत ठांटयुं तेश्री मरकीनी शांति थई, एवां प्रजावथी शांतिनाथ नाम दीधुं. चालीस धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, मृग लांठन, तेमने वंदामि केण वांडुंबुं.

सत्तरमा कुंथु केण श्रीकुंथुनाथ. हस्तिनागपुर नगर, सूरराजा पिता, श्रीराणी माता. जगवंत गर्जे

आव्या पढी माताजीए स्वप्नमां रत्ननो शुभ्र पृथ्वीने वि
षे दीठो, तथा शत्रु हता ते कुंभुआनी पेठे न्हानाअया
अथवा कुंभुआ प्रमुख न्हाना महोटा जीवोनी जयणा
देशमां प्रवर्त्ति तेषी कुंभुनाथ नाम दीधुं. पांत्रीस ध-
नुष्य शरीर, पंचांणु हजार वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण,
ठाग (बोकमा)नुं लांठन.

अठारमा अरं च केण श्री अरनाथ. गजपूर नगर,
शुदर्शन राजा पिता, देवी राणी माता, जगवंत गर्जे
आव्या पढी राणीए स्वप्नमांहे रत्नमय आरो तथा शु-
भ्र दीठां. एवो गर्जनो महिमा जाणी अरनाथ नाम
दीधुं, त्रीस धनुष्य शरीरनुं मान, चोरासी हजार व
र्षनुं आयु, सुवर्णवर्ण, नंदावर्त्त लांठन.

जगणीसमा मद्धिं केण श्रीमल्लीनाथ. मिथिलान
गरी, कुंभराजा पिता, प्रजावतीराणी माता, जगवंत
गर्जे आव्या पढी माताने एक रात्रीये, ठए रूतुना फू-
लनी शय्याए सुवानो दोहोलो उपन्यो, ते देवताए पू-
ख्यो. एवो गर्जनो प्रजाव जाणी, श्रीमल्लीनाथ नाम
दीधुं, पचीश धनुष्य शरीरनु मान, पंचावन हजार

वर्षनुं आयु नील वर्णा, कुंज लांठन.

वीसमा वंदे के० वांडुंबुं. मुणिसुव्यं के० श्रीमुनि
सुव्रत स्वामीप्रते. राजगृहनगर, सुमित्रराजा पिता, प
झाराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी मातापिता
मुनिराजनी पेरे सुव्रत के० जलां बारव्रत श्रावकनां
साचववा लाग्यां. एवो गर्जनो प्रजाव जाणी, मुनिसु
व्रत नाम दीधुं. वीश धनुष्य शरीर मान, त्रीश हजार
वर्षनुं आयु, कृष्णवर्णा, काचबानुं लांठत.

एकवीसमा नमिजिणं च के० श्रीनमिजिनेश्वर
ने. वंदामि के० वांडुंबुं. मिथिलानगरी, विजयराजा पिता,
वप्राराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी सीमानि
आ राजा जगवंतना पिताना शत्रु हता, ते चढी आ
व्या; गामना किछ्चाने चारे बाजु लश्करनो पनाव ना
खी विंटी लीधुं. राजाने घणी बीक लागी पण राणीये
किछ्चानपर चढीने शत्रुने वांकी नजरे जोया ते रा
णीनुं तेज वयरी राजालुथी खमायुं नहि, तेथी सर्व
आवीने जगवंतनी माताने नमस्कार करी कहेवा लारया
के अमारा उपर सौम्यदृष्टीये जून. राणीये तेमना उपर
सौम्य नजरे जोइ माथे हाथ राख्यो. सर्व राजान्, अन्

एलीने पगे लागी आझा मागी पोतपोताने नगरे गया. एवो प्रज्ञाव जाणी नमिनाथ नाम दीधुं. पन्नर धनुष्य शरीरनुं मान, दश हजार वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, नीला कमलनुं लांढन.

बावीसमा अरिष्टनेमिके० श्रीअरिष्टनेमि प्रभु, सौरीपुर नगर, समुद्रविजय राजा पिता, शिवादेवीराणी माता, प्रभु गर्जे आव्या पढी माताये स्वप्नमां अरिष्ट एटखे काला रत्ननी रेल दीठी तथा आकाशमां चक्र ऊढलतुं दीठुं एवो प्रज्ञाव जाणी अरिष्टनेमि नाम दीधुं. बीजुं नाम श्री नेमिनाथ. दस धनुष्य शरीर मान. एक हजार वर्षनुं आयु, श्याम वर्ण, शंख लांढन.

त्रेवीसमा पासंके० श्रीपार्श्वनाथस्वामी, वणार सीनगरी, अश्वसेनराजा पिता, वामाराणी माता, न गवंत गर्जे आव्या पढी माताये अंधारी रात्रे पोतानी पासे सर्प जतो दीठो ते सर्पना जवाना मार्गनी वच मां राजानो हाथ देखी राणीये ऊंचो कीधो तेश्री राजाजागी ऊठयो ने बोळयो केशा माटे हाथ ऊंचो की सर्प दीठो कहुं. राजा बोळयो, तमे जुठुंबो मंगावी जोयुं तो सर्प दीठो. ते वारे

विस्मय पामी राजाये विचारयुं जे में न दीछेने राणीये दीछे ए गर्जनो प्रज्ञाव ठे. एम जाणी श्री पार्श्वनाथ नाम दीधुं, नवहस्त प्रमाण शरीर, एकसो वर्ष आयु, नील वर्ण, सर्प लांठन.

चोवीशमा तह केण तेमज वड्ढमाणं च केण श्री वर्द्धमानस्वामी, कन्नियकुंरु नगर, सिद्धार्थराजा पिता, त्रिसलाराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी माता पिता समस्त रुद्धियें वृद्धि पास्यां, धन धान्यादिकना जंनार तथा देश नगरादिकती वृद्धि अई, सर्व राजा आझामां वर्तवा लाग्या. एवो प्रज्ञाव जाणी वर्द्धमान नाम दीधुं. वली बाढ्यावस्थामां मेरुपर्वत अंगुठे चां प्यो, तथा आमल क्रीडा करतां देवता हास्यो माटे इं इमहाराजे श्री महावीर एवं बीजुं नाम दीधुं. सात हाथ शरीर, बहोतेर वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, सिंह लांठन. ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

एवमए केण ए रीते में चोवीश तीर्थकरने विशे षे जुदे जुदे नामे करी अजिषुआ केण स्तव्या विहुयस्यमला केण टाढ्या ठे पापरूप रज अजे मल जे एतेमां रज ते तत्काल आ जवनां बांध्यां कर्म, अने

मल ते घणा कालनां पूर्व ज्वनां वांध्यां कर्म जाणवां.
 वली पहीण के० क्य गया ठे जरमरणा के० जरा, रो
 ग अने मरण जेमनां एवा, चउवीसंपि जिणवरा के०
 चोवीश जिनवर वर्त्तमान काले थया ते, अपि शब्दथकी
 महाविदेह तथा ऐरवत क्षेत्रोने विषे जे तीर्थकरो ठे ते
 पण लेवा. एवा तिह्यरा के० तीर्थकर ते मेके० मुज
 ने पसीयंतु के० प्रसन्न थानु ॥ ५ ॥

ए तीर्थकरोने नामे करी कित्तिय के० स्तव्या, वं
 दिय के० वांध्या, महिआ के० पूज्या; जे ए लोगस्स के०
 जे तीर्थकर ए लोकने विषे, उत्तमा सिद्धा के० उत्तम
 सिद्ध थया ते मुजने आरुग्ग के० आरोग्यता एटलेनी
 रोगता आपो; केसके नीरोगता होय तो धर्म साधन
 थाय. वली बोहिलाज्जं के० बोधबीजनो लान्ज एटले
 ज्जवांतरे सम्यक्त्व रूप धर्मनी प्राप्ति थाय, अने समा
 हिवरं के० प्रधान समाधि ते मननुं स्वस्थपणुं उत्तमं
 के० उत्तम ते मुज्जप्रते दिंतु के० द्यो आपो ॥ ६ ॥

चंदेसुनिम्मलयरा के० चंडमाथकी अत्यंत निर्म
 ल. वली आइच्चेसु के० आदित्य जे सूर्य ते थकी पण
 हयं के० अधिक पयासयरा के० प्रकाशना करनार

ठे. सागरवरगंजीरा के० स्वयंभूरमण समुद्रात्री पण
 अत्यंत गंजीर ठे एवा सिद्धा के० सिद्ध ते सिद्धि के०
 मोक्षप्रते ममदिसंतु के० मुजने द्यो. संपदा अष्टावीस,
 पद अष्टावीस, गुरु अक्षर अष्टावीस, लघु अक्षर बसेने
 बत्रीस, सर्व मली. सबलोए सहित लोगस्तना बसें
 साठ अक्षरो ठे ॥ ७ ॥

विधि.

प्रथम नंचा आसने आचारजी पधरावीने, ते न
 होय तो पुस्तक, नवकारवाली प्रमुख बाजोठपर मू
 कीने श्रावक श्राविका कटासणुं मुहुपत्ति, चवलो लेइ
 शुद्ध वस्त्र धारण करी तथा जग्या पूंजी कटासणापर
 वेसी मुहुपत्ति नावा हाथमां मुख पासै राखी जमणो
 हाथ थापनाजी सामो अवलो राखी एक नवकार ग
 णी पंचिंदिअ कही इत्थामि खमासमणो वंदिनुं जाव
 णिजाए निसीहिआए मथ्यएण वंदांमि एम खमास
 मणुं देइ, इत्थाकारेण संदिसह जगवन् इरियावहियं
 पत्तिकमासि, इत्थं इत्थामि पत्तिकमिनुं एम कही इरिया
 वहिया, तस्सनुत्तरी, अन्नअथ नससिएणं कही एक लोग
 स्तनो अथवा चार नवकारनो काउस्तगग करी, पारी,

प्रगट लोगस्त कही, खमासमणुं देइ, इञ्जाकारेण संदि
सह जगवन् सामायक मुहपत्ति पम्ल्लेहुं, इञ्जं एम क
हि मुहपत्ति पम्ल्लेहीए, एना पचाश बोल नीचे मुजब.

अथ मुहपत्ति पम्ल्लेहवाना ५० बोल.

१५ मुहपत्तिनी पम्ल्लेहणाना बोल.

सूत्र अर्थ तत्व करी सर्वहुं १ समकित मोहनी २
मिश्र मोहनी ३ मिथ्यात्व मोहनी ४ परिहरुं. काम
राग ५ स्नेहराग ६ इष्टिराग ७ परिहरुं. सुदेव ८ सुगुरु
९ सुधर्म १० आदरुं. कुदेव ११ कुगुरु १२ कुधर्म १३
परिहरुं ज्ञान १४ दर्शन १५ चारित्र १६ आदरुं. ज्ञानवि
राधना १७ दर्शन विराधना १८ चारित्र विराधना १९
परिहरुं. मनगुप्ति २० वचनगुप्ति २१ कायगुप्ति २२ आ
दरुं. मनदंरु २३ वचनदंरु २४ कायदंरु २५ परिहरुं.

२५ अंगनी पम्ल्लेहणा.

हास्य १ रति २ अरति ३ परिहरुं. जय ४ शोक
५ डुगंठा ६ परिहरुं कृष्णलेश्या ७ नीललेश्या ८ का
पोतलेश्या ९ परिहरुं रिङ्गारव १० रसगारव ११ सा
तागारव १२ परिहरुं. मायाशब्द १३ नियाणशब्द १४
मथ्यात्वशब्द १५ परिहरुं. क्रोध १६ मान १७ परि

हरुं. माया १७ लोत्त १९ परिहरुं. पृथ्वीकाय २० अ
पकाय २१ तेजकाय २२ नीजयणा करुं. वाजुकाय २३
वनस्पतिकाय २४ त्रशकाय २५ नी रक्षा करुं.

मुहपत्ति केम पन्निह्वी तथा ते वने अंग केम
पन्निह्वुं ते विषे विशेष विवरणनी पांच गाथा तथा
तेनो सविस्तर अर्थ लखीये ठीए.

॥ अथ मुहपत्तिनी पचीश तथा शरीरनी पची
श मलीने पचाश पन्निह्वणा विवरीने लखीये ठैये.॥

॥ सुत्तत्त तत्त दिठी, दंसण मोहयतिगं च रागतिगं ॥
देवाइतत्ततिगं, तह य अदेवाइतत्ततिगं ॥ १ ॥ नाणा
इतिगं च तद्वि, राहणयं तिन्निगुत्ति दंसतिगं ॥ इअ मु
हणंतगपन्निह्वे, हणाइ कमसो विचिंतित्ता ॥ २ ॥ हा
सो रइ अरइ तिगं, अय सोग डुगंठया य वज्जित्ता ॥
अजुअलं पेहंतो, सीसे अपसत्तलेस तिगं ॥ ३ ॥ गा
रवतिगं च वयणे, उअरि सत्ततिगं कसायचउ पिठे ॥
पयजुअले ठजीववहं ॥ तणुपेहाए विजाणविणं
॥ ४ ॥ जइवि पन्निह्वणाए ॥ हेउ जिअरस्कणं जि
णाणाय ॥ तहवि इमं मण मकरु, निजंतणहं मु
णि विंति ॥ ५ ॥

अर्थः—सुत्तत्र के० मुहपत्तिने पहिले पासे सूत्र अने बीजे पासे अर्थ तत्त के० सम्यक् प्रकारे तेनुंतत्व हृदयने विषे धरुं. ए प्रथम दिठी के० दृष्टी पमिलेह ए जाणवी.

पढी त्रणवार खंखेरिए, त्यां शुं चिंतवीए ? ते कहेठे. दंसणमोहयतिगं के० सम्यक्त्व मोहनी, मिश्र मोहनी, अने मिश्र्यात्व मोहनी, एत्रण मोहनी ठांनुं. रागतिगं के० काम राग, स्नेह राग अने दृष्टी राग ए त्रण राग ठांनुं. एवं सात अइ पढी मुहपत्तिये एकपम वालीने आंगुलनी वच्चे मुहपति जरावीने हाथ उपर पखोमा अखोमा करे, त्यां जे चिंतवे ते कहे ठे. देवाइ तत्ततिगं के० देवादिक तत्त्व त्रण एटले देवतत्त्व, गुरुतत्त्व ने धर्मतत्त्व ए त्रणने आदरुं, ए त्रण अखोमा हाथ उपर त्रण वार खंखेरीए एवं दश अइ. तहय के० ते मज वली अदेवाइतत्ततिगं के० अदेवादिक तत्त्व त्रण एटले कुदेव, कुगुरु ने कुधर्म ए त्रण तत्त्व ठांनुं, ए त्रण पखोमा हाथ उपर पुंजीयें एवं तेर अइ. नाणाइ तिगं के० ज्ञान, दर्शन ने चारित्र ए त्रणने आदरुं, ए त्रण अखोमा हाथ उपर त्रणवार खंखेरीए. च के० व

ली तद्विराहणयं के० तेनीज विराधना एटले ज्ञान विराधना, दर्शन विराधना अने चारित्र विराधना, ए त्रण विराधना ठांमु. ए त्रण पखोना हाथ उपर मुहपत्तिये करी त्रण वार पुंजीए; एवं लंगणीश अऽ. तिन्निगुत्ति के० मनगुत्ति, वचनगुत्ति अने कायगुत्ति आदरुं ए त्रण अखोना हाथ उपर त्रणवार खंखेरीए. दंरुतिगं के० मनदंरु, वचनदंरु ने कायदंरु ए त्रण दंरु ठांमुं. ए त्रण पखोना हाथ उपर त्रण वार मुहपत्तिए पुंजीये इ अमुहणंतगपमिलेहणाऽ के० ए मुस्कानंतक एटले मुहपत्ति तेनी पचीश पमिलेहणा कही ते कमसो वि चिंतिका के० पूर्वोक्त अनुक्रमे करी मनमां चिंतववी.

हवे शरीरनी पचीश पमिलेहणा कहेठे. तेमां प्रथम बे जुजानी पमिलेहणा कहेठे; हासोरऽअरइ तिगं के० हास्य, रति अने अरति ए त्रण परिहरुं. अ हीं नावा हाथनी जुजा त्रणवार पुंजीए अने जय सो ग दुगंठयायवज्जिजा के० जय, शोकने दुगंठा ए त्रण वजुं. अहीं जमणा हाथनी जुजा त्रणवार पुंजीये. ए जुअजुअलं के० जुजा जुगलने पेहतो के० पमिलेहतो अको ए ठ वोल कह्या ते चिंतवे. हवे सिसे के० मस्त

कनी त्रण पन्धिलेहणा करतो अको अपसन्धलेसतिगं के० अप्रशस्त जे त्रण लेश्या एटले कृष्ण, नील ने कापोत ए त्रण माठी लेश्याने ठांमुं; एवं तव अइ. हवे वयणे के० वदन जे मुख तेनी पन्धिलेहण करतो अको गारवतिगं के० रुद्धि गारव, रस गारव अने साता गारव ए त्रण गारवने ठांमुं. अने नअरि के० हृदयनी पन्धिलेहणा करतो अको हृदय अकी सद्धतिगं के० माया शब्द, नियाण शब्द अने मिथ्यात्व शब्द ए त्रण शब्द काढुं; एवं पंदर अइ. तथा कसाय चउ के० क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार कषाय ते पिठे के० पुठे बे पासांनी पन्धिलेहणा करतो ठांमुं. अने पयजुअले के० बे पगने पन्धिलेहतो अको ठ जीववहं के० पृथ्वी कायादिक जीवोनी जे ठ निकाय ठे, तेनी जयणा करुं; एवं पचीश. ते तणु के० शरीरनी पेहाए के० पन्धिलेहणा करतो अको विजाणविणं के० मन ठामे राखवाने एवी रीते मनमां चिंतवे. जइवि पन्धिलेहणाए के० जोपण ए पन्धिलेहणा जे ठे ते जिअरस्काणं के० जीव रक्षानो हेउ के० कारण जव्य जीवने ठे. एम जिणाणाय के० तीर्थिकरनी आझाठे, तइवि के० तोपण

ए ध्यानते मणमकर के० मनरूप मांकमाने निज्जंत
एतं के० वश राखवाने अर्थे ठे, इमं के० ए रीते मु
णि विंति के० पूर्वाचार्य कहे ठे.

ए शरीरनी जे पचीश पन्धिलेहणा कही तेमा
थी स्त्रीनुं मस्तक ठांक्युं होय माटे मस्तकनी त्रण त
था हृदय ठांक्युं होय माटे हृदयनी त्रण तथा बे पासां
ठांक्यां होय माटे बे पासांनी चार, ए रीते दश पन्धि
लेहणा शरीरनी उगी थाय ठे.

अने साध्वीनुं तो मस्तक उघामुं होय माटे म
स्तकनी त्रण पन्धिलेहणा करे, तेवारे साध्वीना शरी
रनी अठार पन्धिलेहणा थइ शकेठे. ॥ इति मुहपत्ति
पन्धिलेहण विचार समाप्तः ॥

विधिः—मुहपत्ति पन्धिलेह्या पढी खमासमणुं दे
इ पढी इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायक संदि
साहु, इच्छं एम कही खमासमणुं देइ इच्छाकारेण संदिस
ह जगवन् सामायक ठाऊं, इच्छं एम कही बे हाथ जोमी
नवकार गणी इच्छकारी जगवन् पसत्य करी सामाय
दंन उचरावोजी. पढी गुरुके वन्दित करेमिज्जंते कहे.

करेमिञ्जंतेना तुटा शब्दना अर्थ.

करेमि - करुं छुं
भंते - भदंत-कल्याणकारी
सामाइयं - सामायिक
सावज्जं - सावद्य-पापवाला
जोगं - योगने
पच्चरुखामि - त्याग करुं छुं
नियमं - नियमने
पज्जुवासामि - सेवीश-सेवुं
दुविहं - वे प्रकारना

तिविहेणं - त्रण प्रकारे करीने
मणेणं - मने करीने
वायाए - वचने करीने
कायेणं - कायाए करीने
कारवेमि - करावुं
निंदामि - निंदुं छुं
गरिहामि - निंदुं छुं (गुरुनी
साक्षीए)

॥ अथ करेमिञ्जंते ॥

करेमि ञ्जंते सामाइयं, सावज्जं जो
गं, पच्चरुखामि, जाव निअमं, पज्जु
वासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं,
वायाए, काएणं, न करेमि, न का
रवेमि, तस्स ञ्जंते, पक्कमामि, निं
दामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसि
रामि, इति ॥

अर्थः-करेमिञ्जंते सामाइयं केप करुंछुं हे ञ्जगवं

तत् (वे घनीनुं) सामायक व्रत; जीवने समता परि
णाममां राखवुं तेने सामायक कहिये ते सामायकमां
सावज्जं केण जेणे करी पाप लागे तेने सावद्य कहिये ते
नो जे जोगं केण व्यापार तेने पञ्चस्कामि केण पचखुं
एट्ठे निषेधुं बुं. जाव नियमं केण ज्यां लगे सामायक
सेववानो नियमठे त्यां लगे पञ्चवासामि केण ते सेवुं बुं इ
विहंकेण वे प्रकारनो सावद्य व्यापार ते तिविहेणं केण
त्रण प्रकारे न करवो. ते त्रण प्रकार कहेठे एक मणेषं
केण मने करी बीजो वायाए केण वचने करी त्रीजो का
एणंकेण कायार्ये करी. हवे पूर्वोक्त वे प्रकारनो सावद्य
व्यापार जे कह्यो ते न करेमि केण सावद्य व्यापार हुं
न करुं न कारवेमि केण बीजा पासं सावद्य व्यापार
करावुं नहीं, पण पुत्र स्त्री वाणोतर प्रमुख जे सावद्य
व्यापार करेठे तेमाटे अनुमति मोकली ठे ए द्विविध
त्रिविध कहिये तस्स केण ते सावद्य व्यापारथी जंते केण
हे जगवंत हुं पम्पिक्कमामि केण पम्पिक्कमुबुं निवर्तुं के
वीरीते जे निंदामि केण आत्मानि साखे निंहुं, गरि
हामि केण गुरुनी साखे गरहुं; अप्पाणं केण पापनो

करनार एहवो जे महारो आत्मा तेने पाप थकी वो
सिरामि केण वोसिरावुं बुं. इति ॥

विधिः—पढी खमासमणुं देइने इच्छाकारेण सं
दिसह जगवन् बेसणे संदिसाहु, इच्छं. खमासमणुं दे
इ, इच्छा० बेसणे ठानं; इच्छं. खमासमणुं देइ, इच्छा० स
ज्ञाय संदिसाहु. इच्छं खमासमणुं देइ, इच्छा० सज्ञाय
करुं एम कही बे हाथ जोमी त्रण नवकार गणवा. प
ढी बे घनी सामायकमां रहे, ज्ञान ज्ञणे, के नवकार
वाली गणे, शास्त्र सांजले वगेरे संवरमां रहे. बे घनी
थइ रहे त्यारे सामायक पारे ते वखते खमासमणुं
देइ इरियावहि पम्किमीए त्यांथी लोगस्स कहीए
त्यां सुधी सामायक लेवा प्रमाणे करवुं पढी खमास
मणुं देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् मुहपत्ति पम्कि
लेहु, इच्छं एम कही मुहपत्ति पम्किलेही पढी खमासमणुं
देइ इच्छाकाण सामायक पारु, यथाशक्ति; खमासमणुं
देइ इच्छाकाण सामायक पार्युं, तहत्ति; एम कही ज-
मणो हाथ चरवदापर स्थापी माथुं नमावी सामाइ
अवयजुत्तो ज्ञणे.

सामाङ्य वय जुत्तोना तुटा शब्दना अर्थ.

सामाङ्य - सामायक-ना
वय - व्रत
मणे - मन
होइ - होय
नियम - नियम
छिन्नइ - छेदे
असुहं - अशुभ
कम्मं - कर्मने
जत्तिआ - जेटली
वारा - वार

सामाङ्यंमि } सामायिकने विषे
सामायिके }
उ - तो
कए - कर्णे
इव - जेम-पेटे
सावओ - श्रावक
जम्हा - जेकारणमाटे
एएण - एणे
कारणेणं - कारणे करीने
बहुसो - घणीवार
कुज्जा - करवुं जोइए

॥ अथ सामाङ्य वयजुत्तो ॥

सामाङ्य वयजुत्तो, जाव मणे होइ
नियम संजुत्तो ॥ ठिन्नइ असुहं कम्मं,
सामाङ्य जत्तिआ वारा ॥ १ ॥
सामाङ्यंमि उ कए, समणो इव सा
वउ हवइ जम्हा ॥ एएण कारणेणं,
बहुसो सामाङ्यं कुज्जा ॥ २ ॥ सा

(ए०)

सायिक विधिं लीधूं, विधिं पार्युं,
विधि करतां जे कोइ अविधि हुन
होय॥ ते सविहुं मन वचन कायायें क
री ॥ मिच्छामिडुकुम् ॥ इति

अर्थः—सामाइयवयजुतो के० बे घनीनुं जे सामा
यकव्रत तेषोकरीने युक्त, जाव मणे के० ज्यांलगे
मन मनमांहे नियमसंजुतो के० ए नियम सहित होय
त्यांलगे, विन्नई असुहं कम्मं के० अशुज्जकर्मने ठेदे.
सामाइअ जत्तिआ वारा के० सामायक जेटली वार करे
तेटली वार अशुज्ज कर्मने टाले ॥ १ ॥

वली, सामाइअंमि नु कए के० सामायक कर्ये ठ
ते, समणो इव के० साधुनी परे, सावउ हवइ के० श्रा
वक पण निष्पापी होय, जम्हा के० जे माटे, सामायक
करवाथी एवा परिणाम आय ठे तो, एएण कारणेणं
के० एकहुंजे कारण ते कारणे करी, बहुसो सामाइअं
कुज्जा के० घणां सामायक करियें ॥ २ ॥

सामाइय पोसहसं, विअजीवस्स

(९१)

जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बो
धवो, सेसो संसार फल हेउ ॥ १ ॥

अर्थ:—सामाइअके० सामायक अने पोसह के०
पोसह तेने विषे संठिअ के० रह्यो थको जीवस्स के०
जीवनो जाइ जो कालो के० जे काल जाय ठे सो सफ
लो के० ते कालने सफल बोधवो के० जाणवो अने सा
मायक तथा पोसहविना शेष जे काल ठे ते संसार फ
लहेउ के० संसारना फलनो हेतु जाणवो ॥ ३ ॥

विधि:—देवसि पम्किमणुं करतां सामायक ली
धा पढी सञ्चाय करवानो आदेश माग्या पढी वे
हाअ जोनी त्रण नवकार गणी पढी पाणी पीधुं होय
ते मुहपत्ति पम्किलेहे अने खाधुं होय तो मुहपत्ति पम्कि
लेही वे वांदणां दे ते (सुगुरु) वांदणासूत्र लखीए गीए.

वांदणाना तुटा शब्दना अर्थ:—

अणुजाणह:—आज्ञा आपो.

मिउग्गहं—मित अवग्रह.

३॥ हाथ प्रमाण जग्ग्या.

निसीहि—निषेधुं छुं.

अहो—अधो—नीची.

कायं—शरीर.

संफासं—फरस, संस्पर्श.

खमणिज्जो—खमजो.

मायिक
विधि व
होया॥ ते
री ॥ निष्ठा

अन्नवराए-अनेरी, बीजी.
जोकोचे-जे कांड.
मिच्छाए-मिथ्या (भावरूप
आशातना) वडे.
मन-मन (नी)
दुःखडाए-पापरूप(आशातना)
वच-वचन (नी)
शाय-शरीर (नी)
क्रोहाए-क्रोधे करी
माने करी

अर्थ:-सामाइ

यकव्रत तेणेकरीने
मन मनसांहे नियमस
त्यांलगे, विन्नई असुहं
सामाइअ जत्तिया वारा के
तेटली वार अशुभ कर्मने

करी
करी
संबंधी

उपच

वली, सामाइअंमि उ
ते, समणो इव केण साधुनी
वक पण निष्पापी होय, जम्हा
करवाथी एवा परिणाम थाय ते
के० एकहुंजे कारण ते कारणे
कुळा के० घणां सामायक कश्चि

सामाइय पोसहसं, वि

(९३)

णिजाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाण
ह, मे, मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो, का
यं, काय, संफासं, खमणिज्जो, जे, कि
दामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुत्तेण, जे,
दिवसो, वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता, जे ॥४॥ ज, व,
णि, ज्जं, च, जे ॥५॥ खामेमि, खमासमणो,
देवसिअं, वइक्कम्मं ॥६॥ आवसिआए,
पम्किमामि, खमासमणाणं, देवसि
आए, आसायणाए, तित्तीसन्नयरा
ए, जंकिंचि, मिच्चाए ॥ मणउक्कमाए, व
यउक्कमाए, कायउक्कडाए, कोहाए, मा
णाए, मायाए, लोच्चाए, सबकाळिआ
ए, सब मिच्चेवयाराए, सब धम्माइक्क
मणाए, आसायणाए, जो मे अइआ
रो कउ, तस्स, खमासमणो, पम्कि
मामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं

भे-भगवंत.

किलामो-किलामणा, थाक.

अप्प-अल्प, थोडा.

किलंताणं-थाकेलाने. थोडा
श्रमवालाने.

बहु सुभेण-बहु शुभवडे, घणे
कुशलपणे.

दिवसो-दिवस.

वइक्कंतो-वीसो, गयो.

जत्ता-यात्रा (तप, संयम नि
यमरूप.)

जवणिज्जं-शरीर, (इंद्रियो अ
ने मन.)

खामेमि-खमावुंछुं, खामुंछुं.

देवसियं-दिवस संबंधी.

वइक्कम्मं-व्यतिक्रम. अपराध.

आवसिआए-अवश्यकर्तव्यथी

खमासमणाणं-क्षमाश्रमणोनी
(संबंधी.)

देवसिआए-दिवस संबंधी.

आसायणाए-आशातनाए क
रिने.

तित्तीस-तेत्रीश.

अन्नयराए-अनेरी, बीजी.

जंकिचि-जे कांड.

मिच्छाए-मिथ्या (भावरूप
आशातना) वडे.

मण-मन (नी)

दुक्कडाए-पापरूप(आशातनाए

वय-वचन (नी)

काय-शरीर (नी)

कोहाए-क्रोधे करी

माणाए-माने करी

मायाए-मायाए करी

लोभाए-लोभे करी

कालिआए-काळ संबंधी

मिच्छोवयाराए-मिथ्या उपचा

रवडे, कुडकपटवडे.

सव्वधम्म-सर्व धर्म ते आठ प्र

वचन मातारूप.

अइक्कमणाए-ओळंघवा रूप.

जो-जे.

मे-में, मारे जीवे

अइआरो--अतिचार

कओ--करी

॥ अथ सुगुरु वांदाणां ॥

इत्तामि खमासमणो, वंदिनं, जाव

णिजाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाण
ह, मे, मिनगहं ॥२॥ निसीहि, अहो, का
यं, काय, संफासं, खमणिज्जो, जे, कि
लामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुत्तेण, जे,
दिवसो, वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता, जे ॥४॥ ज, व,
णि, जं, च, जे ॥५॥ खामेमि, खमासमाणो,
देवसिअं, वइक्कम्मं ॥६॥ आवसिआए,
पम्भिमामि, खमासमाण्णाणं, देवसि
आए, आसायणाए, तित्तीसन्नयरा
ए, जंकिंचि, मिहाए ॥ माणउक्कमाए, व
यउक्कमाए, कायउक्कडाए, कोहाए, मा
णाए, मायाए, दोजाए, सबकादिआ
ए, सब मिहोवयाराए, सब धम्माइक्क
माण्णाए, आसायणाए, जो मे अइआ
रो कउ, तस्स, खमासमाणो, पम्भि
मामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं

(एष)

वोसिरामि ॥ ७ ॥ इति ॥

बीजी वारने वांदणे 'आवसिआए' पद
न कहेवुं राइ पस्कि चनुमासी संवत्स
रीए आम पाठ कहेवो ॥ राइ वइकंता,
चनुमासी वइकंता, परको वइकंतो, सं
वत्तरो वइकंतो, एम कहेवुं.

अर्थ—इच्छामि के० इहुं तुं—वांहुं तुं. खमास
मणो के० हे क्कमा श्रमण तमने. वंदिंथी निसीहिआ
ए सुधी उज्जां थकां कहेतो थको वंदन करवानी इच्छा
जणावे; पढी ते शिष्य लगारेक नीचो नमी उज्जो रहे
त्यारे गुरु कहे के, उंदेण के० तमारी इच्छाथी वंदना
करो. पढी शिष्य कहे. अणुजाणह के० अनुमति ते
आज्ञा आपो, मे के० मने मिउगहं के० भित एटवे
मव्यो जे अवग्रह सामात्रण हाथ रूप तेमां आववानो,
त्यारे गुरु कहे के अणुजाणामि के० आज्ञा आपुं तुं.
वढी शिष्य कहे जे निसीहि के० पाप व्यापारनो नि
षेध करीने विधिए युक्त वांडुं तुं. एम कहीने जूमिने
पुंजतो थको आघो आवी संमासा पुंजीने बेसे. पढी

(एणु)

शिष्य कहे के अहोकायं के० अधःकाय एटले तमारां
चरण रूप जे हेठेनी काय ठे ते, काय संफासं के०
मारा मस्तकरूप कायाये करी फरसुं; ते तमारे खम-
णिज्जो जे के० खमवुं. हे जगवन्, किलामो के० पग
फरसतां जे किलामणा उपनी होय ते. एम खमावी
माथे हाथ चढावी कुशलता पूढे; अप्पकिलंताणं के०
किलामणारहित एवा तमने थोला श्रम एटले थोला
प्रयासे करी बहुसुत्तेणं के० घणी निराबाध संयम क्रि
या समाधीए करी, जे के० जगवन् तमारो दिवसो व
इकंतो के० दिवस व्यतिक्रम्यो के० वीत्यो ते वारे गुरु
कहे, तद्वत्ति के० जेम तें कहुं तेमज अमारो दिवस
वीत्यो ठे. वली शिष्य बे हाथ जोनी, जत्ता जे कहेतो
थको त्रण आवर्त्त करे. ते केम—इश आंगलीनु समी
राखी गुरुना पगने हाथ लगामतो थको पहेलो (ज)
अक्षर नीचे सादे कहे अने बीजो (ता) अक्षर मध्यम
सादे कहे. त्रीजो (जे) अक्षर निलामे के० कपाले फ
रसतो नुंचे सादे कहे. एटले त्रणे अक्षरे पहेलो आवर्त्त
जत्ताजे के० सुखे संयमनी यात्रा ठे तमने ? तेवारे गु
रु कहे तुप्रंवि वट्टए के० तुजने पण यात्रा वर्त्ते ठे. ए

जेम त्रणे अहरे पहेलो आवर्त कह्यो तेम बीजो अने
 त्रीजो आवर्त पण शिष्येज कहेवो. ते आ प्रमाणे—ज
 व णि ऊं च ज्ञे के० तमारां पांच इंद्रिय अने नोइंद्रिय
 एटले मन ए ठ वानां तमारे वश ठे ? अथवा तमारुं
 शरीर निराबाध ठे ? तेवारे गुरु कहे एवं के० एमज
 निराबाध ठे—वश ठे. वली शिष्य बे हाथ अने मस्तक
 गुरुना पगे लगानीने कहे खामेमि खमासमणो के०
 खमावुं बुं हे क्कमाश्रमण, क्कमाने विषे उद्यमवंत, दे
 वसियं वक्कमं के० दिवस व्यतिक्रम्यो ते संबंधी अप
 राध. त्यारे गुरु कहे अहमवि खामेमि तुम्हं के० हुं
 पण तमने खमावुं बुं. पढी शिष्य उज्जो अइ अवग्रह
 घी बाहेर नीकलतो कहे आवस्सियाए के० अवश्य क्रि
 या जे पफिलेहणादिक ते करवाने अर्थे अवग्रह बाहेर
 नीकली उज्जो अइ कहे पफिक्कमामि के० पफिक्कमुं बुं,
 निवर्त्तुं बुं खमासमणाणं के० हे क्कमावंत यति तमने
 देवसिआए आसायणाए के० दिवस संबंधी आशातना,
 तित्तीसन्नयराए के० तेत्रीशमांनी अनेरी कोइ एके आ
 शातना कीधी होय, जं किंचि मिह्याए के० जे कांइ
 मिश्यात्व एटले खोटा ज्ञावघी घेयावच्च विषे सर्व बल

उतां नही करवानी बुद्धिही निर्वलपणुं देखामतो मुखे
खोटा उपचारे करी आशातना कीधी होय, मण डु
कमाए के० गुरुनी उपर मने करी मातुं चिंतव्युं होय,
वयडुकमाए के० वचन डुष्कृत एटले असंबंधवचने
करीने, काय डुकमाए के० कायाए करी मातुं करयुं होय,
कोहाए के० क्रोधे करी, माणाए के० मान अहंकारे
करी, मायाए के० मायाये करी, लोहाए के० लोभे
करी, सब कालियाए के० सर्वकाल अतीत अनागत त
था वर्तमान कालने विषे, मित्रोवयाराए के० सर्वे मि
त्र्या उपचार जे उपाय—तेणे करी जे खोटा मने वि
नय साचव्यो होय, सबधम्माइकमणाए के० जेणे क
री सर्व जिनधर्मनो अतिक्रम थयो होय, एटले आठ
प्रवचन मातारूप सर्व धर्मने अतिक्रमवे करी, इत्यादि
क आसायलाए के० आशातनाए करी जो मे अइयारो
कन के० जे में अतिचार अपराध कीधो होय, तस्त
के० ते अपराध खमासमणो के० हे हमाश्रमण, ह
मावंत गुरु, पणिकमामि के० ते अपराधने हुं तमारी
साखे पणिकमुंहुं. निंदामि के० ए पापोने आत्मानी सा
खे निंडुंहुं. गरिहामि के० गुरुनी साखे गरहा करुंहुं,

अप्पाणं वोसिरामि के० पापनो करनारो एवो मारो
आत्मा तेने वोसिराबुंठुं. एटले आशातनानिमित्त जे
काले उपनी जे मति ते रूप आत्माने बांठुं.

ए प्रमाणे बे वार बांदणां देतां १५ आवश्यक
साचववा ते पच्चीश आवश्यकनी गाथा लखीएं बीए.

दोवणायमहाजाय, आवत्ता बारचउ
सिर तिगुत्तं ॥ दुप्पवेसिग निस्क
माणां, पणवीसावसय किइकम्मे ॥१॥

अर्थ—दोवणाय के० बे वार शरीरने नमारुं,
त्यां एक तो इच्छामिखमासमणो—निसीहिआए एम
कहीने नमे ते वारे एक अवनत, एमज बीजी वारने
बांदणे बीजो अवनत, ए बे अवनत एटले नमवाना
बे आवश्यक थया. अहाजाय के० यथाजात एटले बा
लकने जन्म अवसरे बे हाथ जोरुनीने कपाले लगाने
ला होय एवी स्थितिमां बांदणां लेवां ए त्रीजुं यथा
जात आवश्यक. आवत्ता बार के० बार आवर्त्त ते अ-
हो, का-यं, का-य ए ववे अहरे त्रस आवर्त्त थय ते
अ अहर ज्ञातां दश आंगुलीठ नंधी गुरु चरणे ल
गाने अने हो अहर ज्ञातां ते सीधी करी पोतानो

(एण)

ललाट देश फरसे ए रीते का-यं, का-य एम त्रण
आवर्त थयां ते पठी संफासंधी वइकंतो सुधी यथा
जात मुझए त्रणी पठी ज-त्ता-जे, ज-व-णि, जं,
च,-जे ए त्रण आवर्त वांदणाना अर्थमां बताव्या प्र
माणे करे, ए ठ आवर्त थयां; अने बीजा वांदणानां ठ
आवर्त मळी बार आवर्तना बार आवश्यक थया ते
पहेलाना त्रण साथे मेळवतां पंढर आवश्यक थया.
चउसिरके० चार बार मस्तक नमारुवुं एटले पहेले वांदणे
बे बार अने बीजे वांदणे बे बार मस्तक नमारुवुं, एरीते
चार आवश्यक एवं जुगणीश. त्रण गुप्तिः-मन, वचन
अने कायाने इव्य तथा ज्ञावशी अयत्नाए न प्रवर्ता
वे ते त्रण आवश्यक एवं बावीश.

दुष्पवेस के० बे बार गु रुनीआज्ञा मागीने अवग्रहमां
पेसवुं ए बे आवश्यक अने पहेला वांदणामां आवसिआ
ए कहेतोबहार निकले ते इगनिखमणे के० एक बार नि
कलवानो एक आवश्यक एवं पचीश आवश्यक थया. ए
पचीश आवश्यक वांदणां देतां अवश्य साचवदा.

विधिः-बे वांदणां दीधा पठी यथाशक्ति प
चस्काण करवुं.

सांजना पञ्चस्काणना तुटा शब्दना अर्थ.

पाणहार-उष्ण पाणीनोआहार
चरिमं-छेडो (त्याग करे)
पञ्चख्खाइ-पञ्चख्खाण करे,
अन्नथ-अन्यत्र, विसरी जवाथी
अणाभोगेणं-अजाणपणे
सहसा-सहसात्कारे
आगारेणं-आगारवडे

महत्तर-मोटा (रहे छते)
सव्वसमाहिवात्ति-सर्वअसमाधि
असणं-खोराक
पाणं-पाणी
खाइमं-खादिम
साइमं-स्वादिम

तिविहारा अठम, ठठ, उपवास करेते तथा आं
बिद नीवी एकासणुं बेसणुं करनार सांजे पाणहारनुं
पञ्चस्काण करे. खाधुं होय ने रातरे तांबुल तथा पा
णी वापरवुं होयते इविहारनुं, एकलुं पाणी वापरवुं हो
य ते तिविहारनुं, अने पाणीए न वापरवुं होयते चउवि
हारनुं पञ्चस्काण करे.

पाणहार दिवसचरिमनुं पञ्चस्काण

पाणहार १दिवसचरिमं २पञ्चस्काइ, अन्नठणा
३न्नोगेणं, ४सहसागारेणं, ५महत्तरागारेणं,

१ दिवस चरिमं=दिवसना छेडाथी मांडीने नवो सुरज उगे त्यां
सुधी.

सर्वसमाह्वित्तियागारेणं, वोसिरे ॥ १ ॥

दिवसचरिमि चञ्चविहार

दिवस चरिमं पञ्चस्काइ चञ्चविहंपि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं, अन्नठणान्नोगेणं, सहसागारेणं,
महत्तरागारेणं, सर्वसमाह्वित्तियागारेणं वोसिरे ॥ २ ॥

तिविहार.

दिवस चरिमं पञ्चस्काइ १ तिविहंपि आहारं अस
णं, खाइमं, साइमं, अन्नठणान्नोगेणं, सहसागारेणं, म
हत्तरागारेणं, सर्वसमाह्वित्तियागारेणं वोसिरे ॥ ३ ॥

डुविहार.

दिवसचरिमं पञ्चस्काइ १० डुविहंपि आहारं ११ अ
सणं खाइमं अन्नठणान्नोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरा
गारेणं, सर्व समाह्वित्तियागारेणं, वोसिरे ॥ ४ ॥

२ पञ्चस्काइः पञ्चखुं छुं त्यागकरंछुं. गुरु पञ्चस्काइ कहे अने
पञ्चस्काण करनार पञ्चस्कामि कहे.

३ अन्नथथ=बीजे ठेकाणे एटले पञ्चस्काणनो उपयोग विसर-
वाथी-अणाभोगेणं=अजाणपणे अनुपयोगे कोइ वस्तु मांमां मुक्वा
थी पञ्चस्काण न भांगे, परंतु वचमां पञ्चस्काण सांभरे त्यारे त-
रत म्होमांथी थुंकी काढे, म्होथी हेहुं उतर्युं पछी तरत अथवा
मोहुं सांभरे तो पण पञ्चस्काण न भांगे. पण शुद्ध व्यवहार माटे

विधिः—पञ्चस्काण कर्मा पठी इच्छामिस्वमास-
मणो० इच्छाका० चैत्य वंदन करू, इच्छं एम कहे, वमेरा
के पोते चैत्यवंदन करे. प्रसंगशी आखु चैत्यवंदन
श्रोय सुधी लखीए ठीए.

फरी निश्चक न थाय, माटे यथायोग्य प्रायश्चित्त लेवुं. ए रीते स-
र्व आगारोने विषे जाणी लेवुं.

४ सहसा०—करेला पञ्चस्खाणनो उपयोग तो विसर्यो नथी प-
ण काममां प्रवर्ततां सहसात्कारे एटले एकाएक मुखमां पेसी जाय,
जेम भैस दोहतां, दही वलोवतां, घी तोलतां अचानक मुखमां
छांटो पडे अथवा चउविहार उपवासे चोमासामां मेघना छांटा
मुखमां पडे तो पञ्चस्खाण न भांगे.

५ महत्तरा०—मोहोटी निर्जराने लाभे अथवा वडेराना कहेवाथी
बहु निर्जराना कारणे पञ्चस्खाण न भांगे.

६ सव्वसमाहि०—सर्व प्रकारे शरीरमां असमाधि रहे, एटले
पञ्चस्खाण कर्मा पछी तीव्र शूळादिक रोग उपने थके अथवा सा-
प डश्यो होय तेथी जीव आर्तिमां पडे, अथवा ज्यारे अकस्मात्
कष्ट थाय त्यारे सर्व इंद्रियोनी समाधिने अर्थे अपूर्ण पञ्चस्खाणे प-
ण पथ्यऔषधादिक लेवां पडे तो तेथी पञ्चस्खाण भागे नही; अने
समाधि थया पछी पूर्वनी परे रहे.

(७) वोसिरे=त्याग करे-गुरु वोसिरे कहे अने पञ्चस्खाण
करनार वोसिरामि कहे एटले हुं त्याग करुं छुं.

(८) चउविहंपिआहारं०—चार प्रकारना पण आहार जेवा के,
अशन, पान, खादिम अने स्वादिमरूप.

(९) तिचिहंपिआहारं०—त्रण प्रकारना पण आहार ते अशन,
खादिम, स्वादिम.

(१०) दुचिहंपिआहारं०—वे प्रकारना पण आहार ते अशन अ-
खादिम.

चैत्यवंदनो (१-२-३-४)ना वृटा शब्दार्थ.

विमल-निर्मल
कमला-लक्ष्मी
कलित-सहित

त्रिभुवन-त्रण भुवन (स्वर्ग, मृ-
त्युलोक, पाताल)
हितकरं-सुखकारक

(११) असणं=अशन ते शालि, जुवार, घउं बंटी प्रमुख सर्व जातिनां धान्य, चोखा, मग अने तूवर प्रमुख सर्व कठोळ तथा सा-
थूआदिक सर्व जातिना लोट तथा मोदकादिक सर्व जातनां पक्वा-
न्न तथा सूरणादिक सर्व जातनां कंद, तथा मांडा प्रमुख सर्व जा-
तनी केलवेली वस्तु तेमज विसण वीगेरे ते पण अशन कहीए.

पाणं=पाणी-कांजी, जव चोखा अने काकडी प्रमुखनां धोवण,
तथा नदी प्रमुख सर्व जलाशयनां पाणी, ए सर्व पाणी कहीए.

खाइमं-खादिम ते खारेक, बदाम, शिंगोडां, खजूर, कोपरां, द्रा-
क्ष तथा अखोडादिक सर्व जातनो मेवो, तथा काकडी, आंवा, फ-
णस, नालियर प्रमुख सर्व जातनां फळ तथा धाणी, पहुआ वगे-
रे शेकेलां धान्य, तथा पापड प्रमुख सर्व खादिम कहीए.

साइमं-स्वादिम ते दातण, शुंठ, हरडे, पीपर, मरी, जायफ-
ळ, काथो, खसखस, जेठीमव, तमालपत्र, तज, एलची, लवंग,
जावंत्री, सोपारी, पान बीडलवण (वलवण), पीपळीमूळ, चिणि-
कवाला, कचुरो मोथ कांटाशेलीओ, कपूर, संचळ वेहेडां, आंवळां,
हिंगळापृक, हिंग, त्रिविसो, पुष्करमूळ, जवासामूळ, आपचीवावची,
वावळनी, धवनी, खेरनी अने खीजडानी, छाल, पान, तुलसी,
कोठपत्र, कोठवडी, आंवागोटली वगेरे स्वादिम कहीए.

(अणहारी वस्तुनां नाम.)

लिंबडानां फळ, फुल, छाल, मूळ अने पत्र तथा गायनुं मूत्र
गळो, कडु, करीआतुं, अतिविष. सुखड, राख, हलदर, रोहिणी,
उपलेट, वज, त्रिफळा, धमासो, नाही, आसंध, एलीओ, गुगळ, कं-
थेरमूळ, पूंआड, मजीठ, कुंदरू, तमाकु प्रमुख अनिष्टस्वादवाळी
वस्तु ए सर्वे अणहारी वस्तु छे ए अहीआं प्रसंगथी लखी छे.

सुरराज-देवताना राजा (इंद्र)
 संस्तुत-स्तवन करेल.
 चरण-पग
 पंकज-कमळ
 आदि-पहेला
 गिरिवर-मोटो पर्वत
 शृंग-शिखर
 मंडण-शोभावनार, घरेणुं
 प्रवर-उत्तम
 गण-समुह
 भूधरं-पर्वत
 सुर-देव
 असुर-दैत्य
 किन्नर-गवैया देव
 सेवित-सेवेला
 किन्नरी-अप्सरा, गानारी देवी
 मनहर-मनने हरण करे तेवी
 निर्जरावालि-देवतानी श्रेणी
 अहनीश-रात दिवस
 पुंडरीक-रीखवदेवना पहेला ग-
 णधरनुं नाम
 गणपति-गणधर
 साध्य-साधवानुं (मोक्ष)
 साधन-साधवाने माटे
 सुर-थुरा

वर-उत्तम
 केडिनंत-अनंत क्रोड
 रमणी-स्त्री
 सुरलोक-देवलोक
 गिरिवरतो-गिरिवरथी
 अपरं-बीजुं
 तीर्थपति-तीर्थकर
 विहंडण-नाश करनार
 परम-उत्कृष्ट
 ज्योति-तेज
 निपाइए-निपजावीए
 जीत-जीखा छे
 कोह-क्रोध
 विछोह-वियोग
 निद्रा-उंघ
 परमपद-मोक्षपद
 स्थित-रहेलुं
 तत्पर-तैयार
 दोहग-दौभाग्य, दरिद्रता
 जपतां-जाप करतां
 अष्टोत्तर-आठ वधारे
 सय-सो
 प्रवचन-सिद्धांत
 थेराणं-स्थविर मुनि
 पाठक-उपाध्याय

गरिष्ठ-गरिष्ठ, सौथी मोटा
नाणस्त-ज्ञानने
ध्याव-ध्यान करवुं
वंभवय-ब्रह्मचर्यव्रत
धारिणं-धारनारने,
किरियाणं-चारित्रनी क्रिया
तवस्त-तपने
गोयम-गौतम
सुअस्त-श्रुतने
तीर्थस-तीर्थने
सुखखाणी-सुखनीखाण

पचवीश-पचीश
पणवीश-पचीश
अडवीस-अठावीश
गुणीश-गुणवंत
द्वादश-वार
संच-संचय (जथो)
संक्षेपथी-टुंकामां
लेश-लगार
पद-पग-चरण
पद्म-कमळ-अथवा पद्मविजय

॥ १ ॥ श्री शत्रुंजय तीर्थनुं चैत्य वंदन.

॥ *विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन
हितकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि
जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंरुण प्रवरगुण
गण जूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोमि सेवित, नमो आ
दिजिनेश्वरं ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरी गणगाय जि
न गुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमे अहनिस, नमो
आदि जिनेश्वरं ॥ ३ ॥ पुंरुरीक गणपति सिद्धिसाधि,

* निर्मळ केवल ज्ञानरूपी लक्ष्मी वडे सहित स्वर्ग मृत्युलोक
अने पाताळ ए त्रण भुवनने हित करनार अने देवोना राजा जे
इन्द्रो तेमणे सम्यक् प्रकारे स्तन्या छे चरण कमळ ते जेमनापवा
आदीश्वरभगवानने नमस्कार थाओ ॥ १ ॥

मो धेराणं पांचमे, पाठक गुण ठठे ॥ नमो लोए सब
 साहूणं, जे ठे गुण गरिठे ॥ १ ॥ नमो नाणस्स आ
 ठमे, दरशन मन ज्ञावो ॥ विनय करो गुणवंतनो,
 चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ ॥ नमो बंज्रवय धारिणं, ते
 रमे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो
 जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सनेए, नमो तीठ
 स्स जाणी ॥ जिन उत्तम पद पद्धने, नमतां होय सु
 ख खांणी ॥ ५ ॥

॥ ४ ॥ वीशस्थानक तपना कानस्सग्गनुं चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पन्नर पिस्तालीश, ठत्रीशनो करि
 ये ॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, कानस्सग्ग मन ध
 रिये ॥ १ ॥ पंच समसठि दश वली, सितेर नव पण
 वीश ॥ बार अरुवीश लोगस्सतणो, कानस्सग्ग धरो गु
 णीश ॥ २ ॥ वीश सत्तर एकावन्न. द्वादशने पंच ॥

॥ एणि पेरे कानस्सग्ग

॥ ३ ॥ अनुक्रमे कानस्सग्ग

श; ॥ स्थानक

ज्ञाव धरी मनमां

उत्तम पद पद्धने

जंकिंचिना बुटा शब्दना अर्थ.

जं-जे
किंचि-कोइ
नाम-नाम
तिथं-तीर्थ
सग्गे-स्वर्गे-स्वर्गमां
पायालि-पातालमां

माणुसे-मनुष्यसंबंधी (मां)
जाइं-जे (बहु)
विंवाइ-विंवो, प्रतिमाओ.
ताइं-ते (बहु)
सव्वाइं-सर्वे

॥ अथ जंकिंचि. ॥

जं किंचि नाम तिहं ॥ सग्गे पाया
लि माणुसे लोए ॥ जाइं जिण विंवा
इं ॥ ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ इति ॥ १५ ॥

अर्थ:-जं किंचि नाम तिहंके० जेकोई नामेकरी
तीर्थ ठे, सग्गे के० स्वर्गनेविषे पायालिके० पातालने
विषे, माणुसे लोएके० मनुष्यलोकनेविषे, जाइं जिन
विंवाइंके. जे काइं जिन तीर्थकरना विंव ठे ताइं स-
व्वाइं वंदामि के० ते सर्व विंबने हुं वांइं बुं. इति.

नमुठ्युणांना बुटा शब्दना अर्थ.

नमुठ्यु-नमस्कार हो. [अव्यय
णं-वाक्यनो अलंकार वतावनार

आइगराणं-आदिना करनार
शरुआतना करनार

मो घेराणं पांचमे, पाठक गुण ठे ॥ नमो लोए सब
 साहूणं, जे ठे गुण गरिठे ॥ १ ॥ नमो नाणस्स आ
 ठमे, दरशन मन ज्ञावो ॥ विनय करो गुणवंतनो,
 चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ ॥ नमो बंज्रवय धारिणं, ते
 रमे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो
 जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सनेए, नमो तीठ
 स्स जाणी ॥ जिन उत्तम पद पन्ननें, नमतां होय सु
 ख खांणी ॥ ५ ॥

॥ ४ ॥ वीशस्थानक तपना कानस्सग्गनुं चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पन्नर पिस्तालीश, ठत्रीशनो करि
 ये ॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, कानस्सग्ग मन ध
 रिये ॥ १ ॥ पंच समसठि दश वली, सितेर नव पण
 वीश ॥ बार अरुवीश लोगस्सतणो, कानस्सग्ग धरो गु
 णीश ॥ २ ॥ वीश सत्तर एकावन्न. द्वादशने पंच ॥
 ॥ एणि पेरे कानस्सग्ग जो करे, तो जाये जवसंच
 ॥ ३ ॥ अनुक्रमे कानस्सग्ग मन धरो, गुणि लेजो वी
 श; ॥ स्थानक एम जाणिए, संक्षेपथी लेश. ॥ ४ ॥
 ज्ञाव धरी मनमां घणो, जो एक पद आराधे, ॥ जिन
 उत्तम पद पन्ननें. नमी निज कारज साधे ॥ ५ ॥ इति

जंकिंचिना बुटा शब्दना अर्थ.

जं-जे
किंचि-कोइ
नाम-नाम
तिथ्यं-तीर्थ
सग्गे-स्वर्गे-स्वर्गमां
पायालि-पातालमां

माणुसे-मनुष्यसंबंधी (मां)
जाइं-जे (बहु)
विंवाइ-विंवो, प्रतिमाओ.
ताइं-ते (बहु)
सव्वाइं-सर्वे

॥ अथ जंकिंचि. ॥

जं किंचि नाम तिष्ठं ॥ सग्गे पाया
लि माणुसे लोए ॥ जाइं जिण विंवा
इं ॥ ताइं सव्वाइं वंढामि ॥ इति ॥ ११ ॥

अर्थः-जं किंचि नाम तिष्ठंके० जेकोई नामेकरी
तीर्थ ठे, सग्गे के० स्वर्गनेविषे पायालिके० पातालने
विषे, माणुसे लोएके० मनुष्यलोकनेविषे, जाइं जिन
विंवाइंके. जे काइं जिन तीर्थकरना विंव ठे ताइं स-
व्वाइं वंढामि के० ते सर्व विंवने हुं वांइं वुं. इति.

नमुअथुणांना बुटा शब्दना अर्थ.

नमुअथु-नमस्कार हो. [अव्यय
णं-वाक्यनो अलंकार वतावनार]

आइगराणं-आदिना करनार
शरुआतना करनार

तिथ्यराणं-तीर्थं करोने
 सयं-पोते (पोतानी मेळे
 संबुद्धाणं-बोध पाषेलाने
 पुरिस-पुरुष
 उत्तमाणं-उत्तमने
 सिंहाणं-सिंहोने
 वर-श्रेष्ठ उत्तम (जेवा) ने
 पुंडरीयाणं-पुंडरीककमळ
 गंधहृथीणं-गंधहस्ती (जेवा)ने
 लोगुत्तमाणं-लोकमां उत्तमने
 लोग-लोक(ना)
 नाहाणं-नाथोने, स्वामीने
 हिआणं-हित करनारने
 पर्इवाणं-दीवा (समान) ने
 पज्जोअगराणं-प्रकाशकरनारने
 अभय-अभय (भयराहितपणुं),
 दयाणं-आपनारने
 चखु-चक्षु-आंख
 मग-मार्ग-रस्तो
 सरण-शरण
 वोहि-बोधि, समकित
 धम्म-धर्म
 देसियाणं-उपदेश करनारने
 नायगाणं-नायकने (नारने)
 सारहीणं-सारथीने, रथ हांक-

चाउरंत-चार [गति]नो अंत
 करनार]
 चक्कवट्टीणं-चक्रवर्तीने.
 अप्पडिहय-अप्रतिहत एटले
 कोइथी हणाय रोकाय नही एवुं
 नाणं-ज्ञान
 दंसण-दर्शन
 धराणं-धारणकरनारने
 वियट्ट-निवर्त्युं छे
 छउम-छदमस्तपणुं-कपटपणुं
 आवरणपणुं
 जिणाणं-जिनोने, रागादि श-
 त्तुओने जीतनारने
 जावयाणं-रागादि शत्रुओथी
 जीतावनारने
 तिन्नाणं-तरेलाने
 तारयाणं-तारनारने
 बुद्धाणं-[पोते] बोधपाषेलाने
 बोहयाणं-बोधकने, बोधकराव-
 नारने
 मुत्ताणं-मुक्तने, मोक्षे गएलाने
 मोअगाणं-(कर्मथी)मुकावनारने
 सव्वन्नणं-सर्वज्ञोने
 दरसिणं-दर्शीओने, देखनारने
 सिवं-कल्याणकारीउपद्रवाविनांतुं

अयलं-अचळ, स्थिर
 अरुअं-रोग रहित
 अणंतं-अनंत
 अरुखथं-अक्षय
 अन्वावाहं-पीडारहित
 अपुणराविते-फरी पाळु आ
 वडुं नथी
 सिद्धि-मोक्ष
 गइ-गति
 नामधेयं-नामवाळुं

ठाणं-स्थानक, ठेकार्णुं.
 संपत्ताणं-पामेलाने
 जिअ-जितेला(ने)
 भयाणं-भयोने
 जे-जेओ
 अईआ-अतीतकाळ. गयो
 भविस्संति-थशे.
 णागए-अनागत, भविष्यकाळे
 काले-कालने विषे
 संपइ-संप्रति-हमणां
 वट्टमाणा-वर्तता.

॥ अथ नमुत्तुणं वा शक्रस्तव ॥

नमुत्तुणं, अरिहंताणं, जगवंताणं ॥१॥
 आइगराणं, तिहयराणं, सयंसं
 बुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहा
 णं, पुरिसवर पुंमरीआणं, पुरिसवर
 गंधहत्तीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोग ना
 हाणं, लोग हिआणं, लोग पई
 वाणं, लोग पज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
 अन्नय दयाणं, चरकु दयाणं, मग्ग

दयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं
 ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं,
 धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्म
 वरचानुरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अ
 प्पमिहय वर नाण दंसण धरा
 णं, विअट्ट ठउमाणं ॥७॥ जिणाणं जा
 वयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं
 बोहयाणं, मुत्ताणं मोअग्गाणं ॥८॥ स
 वन्नूणं, सब्ब दरसिणं, सिव मय
 ल मरुअ मणंत मखय मवावा
 ह, मपुण्णरावित्ति सिद्धिगई, नाम
 धेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणा
 णं, जिय न्जयाणं ॥९॥ जे अ अईअ
 सिद्धा ॥ जे अ न्जविस्संति णागए
 काले ॥ संपइअ वट्टमाणा ॥ स
 व्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥

अर्थः—नमुञ्जुणं के० नमोस्तु नमस्कार हो, एं ए वाक्यालंकारने वास्ते ठे. अरिहंताणं के० आठ कर्मरूप वैरीने हएया ते अरिहंतने तथा अरहंताणं के० चोशठ इंझनी करेली पूजाने योग्य तथा अरुहंताणं के० फरी संसारमां अवतरवुं नथी एवा जगवंताणं के० ज्ञानवंत जगवंत तेने नमस्कार थानु. एम एमां विवेकीने स्त ववा योग्य अरिहंत कह्या ते माटे ए बे पदनी प्रथम स्तोतव्य संपदा जाणवी. ॥ १ ॥

आइगराणं के० धर्मनी आदिना करनार श्रुत धर्म ने चारित्र धर्मनां दातारठे, तिष्ठयराणं के० चतुर्विध संघरूप तीर्थना करनार ठे. सयंसंबुद्धाणं के० स्वयमेव पोतानी मेले प्रतिबोध पाभ्या. ईहां धर्मनी आदिना करनार ते सामान्ये कह्या. ए त्रण पदनी उधहेतु संपदा बीजी जाणवी. ॥ २ ॥

पुरिसुत्तमाणं के० पुरुषमांहे उत्तम ठे वली सिंह जेम हस्तिनुं मर्दन करे ठे तेम जगवंत परदर्शनरूप वादीना मदरूप हस्तिनुं मर्दन करे ठे माटे पुरिससी-हाणं के० पुरुषमांहे सिंहसमान कह्या ठे. पुरिसवरपुंन-

रीआणं के० पुरुषमांहे वरप्रधान पुंररीक कमल स-
मान ठे केमके मातानुं रुधिर ने पितानुं वीर्य एने काम
रूप कादव कहियें तेमां परमेश्वर आवी उत्पन्न थया
अने पांचे इंद्रियना जोगरूप पाणिये करी वृद्धि पाम्या
बतां पण ते कामरूप कादवथी अने जोगरूप पाणीथी
कमलनीपेरे वेगला रह्या माटे. वली पुरिस वरगंधहठी-
णं के० पुरुषमांहे प्रधान गंधहस्ति समान ठे. जेम गंध
हस्तिना मदना गंधेकरी बीजा हस्तिना मद गली
जाय ठे तेम परमेश्वरथी सातईतिरूप हस्तिना उपड्व
रूप मद ते गली जायठे. ईहां पुरिसुत्तमाणं इत्या-
दिकमां पुरुषमांहे उत्तम ठे एम कह्युं ते माटे ए इत्वर
हेतु नामनी चार पदनी त्रीजी संपदा जाणवी.

लोगुत्तमाणं के० समस्त लोकमांहे उत्तम ठे. अने
ज्ञानादिक गुण अणपास्याने पमामे अने जे ज्ञव्य
जीवो ज्ञानादिक गुणने पाम्या होय तेनी रक्षा करे,
माटे; लोकनाहाणं के० लोकना नाथ ठे. ड्व्यथकी इह
लोकनी संपदा आपे अने ज्ञावथकी परलोकनां सुख
आपे माटे; लोगहियाणं के० लोकना हितना करनार

ठे. ज्ञव्य जीवोना समूहने मिथ्यात्व रूप अंधकारना टालवाथी लोग पर्झवाणं के० लोक प्रत्ये देशनादिक करवे करीने मिथ्यात्वरूप अंधकार टालवा माटे दीपक समान ठे. ज्ञव्यजीवोना समूहनेविषे ज्ञगवंत सूर्यनीपरे लुद्योतना करनार ठे जेम सूर्य सर्व वस्तुनो प्रकाश करे ठे तेम ज्ञगवंत जीवाऽजीवादिक पदार्थना प्रकाश करनार होवाथी लोगपञ्जोयगराणं के० लोकने विषे प्रद्योत एटले विशेष प्रकाशना करनार ठे. ईहां लोगुत्तमाणं इत्यादिके करी लोकमां उत्तम कहा. ए पांच पदे करी चोथी उपयोग हेतु संपदा जाएवी. ४

ज्ञगवंतना दर्शनथी ज्ञव्यजीवोने संसारमां ज्ञ मवारूप ज्ञयनो नाश शाय, माटे सर्व जीवोने अज्ञय दयाणं के० अज्ञयदानना देवावाला जाएवा. जेम आं खने विषे आवेला परुलोने वैद्य औषध लगाती साजां करे ठे, तेम ज्ञगवंत ज्ञव्यजीवोना मिथ्यात्वरूप परु लो उतारी सम्यक्त्वरूप चहुनी प्राप्ति करी देखता क रे ठे माटे; चरकुदयाणं के० ज्ञानरूप चहुना दातार ठे. जेम जूला परुला वटेमार्गुनुं धन चोर लोकोये लुंटीने तेने उन्मार्गे पारुयो होय, तेने कोइ सत्पुरुष

वस्त्र धन प्रमुख आपी खरो मार्ग देखामी तेना स्था
 नके पढोचामे, तेम जगवंत भिख्यात्व कषायरूप चो
 रोथी लुंटायला जनोने कुमार्गथी मूकावी ज्ञानादिक
 रत्नत्रयरूप लक्ष्मी आपी मोक्षमार्ग देखामे ठे माटे
 मग्गदयाणं के० मोक्षमार्गना दातार ठे. जेम वयरी
 थी बीक पामेला पुरुषने कोइ उत्तम पुरुष शरण राखे,
 तेम दुर्गतिथी बीक पामेला पुरुषने जगवंत शरणना
 देवावाला ठे; माटे सरणदयाणं कहिये. बोधबीज रूप
 सम्यक्त्वना दातार ठे; माटे बोहिदयाणं कहिये. ईहां
 अन्नदयाणं इत्यादिकमां जे वस्तु कहि ठे तेना दातार
 ठे ते माटे ए पांच पदनी तक्षेत्तु संपदा पांचमी
 जाणवी ॥ ५ ॥

धम्मदयाणं के० चारित्ररूप धर्मना आपनार ठे.
 धम्मदेसिआणं के० सर्वविरति देशविरतिरूप धर्मना उ
 पदेशक ठे. धम्मनायगाणं के० चतुर्विध संघना प्रवर्त्ताव
 नार माटे धर्मना नायक ठे. धम्मसारहीणं के० धर्मरू
 प स्थना सारथी ठे केमके जे धर्मथी चूके तेने पाठा
 मेघकुमारनी पेरे धर्ममां स्थिर करे, माटे सारथी ठे ध

स्मरचानुरंतचक्रवट्टीणं के० धर्मने विषे वरप्रधान ठे. चानुरंत एटले चार गतिना अंतनुं करनार एवं जे धर्म रूप चक्र तेणे करी धर्मनी आज्ञा प्रवर्त्तावनार ठे, अथवा धर्मने विषे प्रधान चार गतिना अंतना करनार चक्रवर्त्ति समान ठे. इहां धम्मदयाणं इत्यादिकमां धर्मनादेवावाला एम विशेषउपयोगे कह्युं ते माटे ए पांच पदनी सविशेष उपयोग हेतु नामा ठगी संपदा थइ ॥६॥

अप्पमिहयवरनाणदंसणधराणं के० अप्रतिहत वर प्रधान ज्ञान दर्शन एटले पर्वतादिके करी ज्ञेयुं जाय नही, लोकालोक सुधी विस्तारने पामे, एवा वर प्रधान केवल ज्ञान तथा केवल दर्शनना धरनार ठे. वि अट्टठनमाणं के० व्यावृत्त एटले गया ठे उच्च के० घनघा तीआं कर्म तथा कामक्रोधादिक ठ अंतरंग वयरी जेना; इहां अप्पमिहयवरनाण इत्यादिकमां अस्खलित प्रधान केवल ज्ञान तथा केवल दर्शनना धरनार कह्या ते माटे ए वे पदनी स्वरूपहेतु नामे सातमी संपदा थइ.

जिणाणं के० पोते रागद्वेषयी रहित जिन थया ठे, तथा ज्ञव्यजीवोना रागद्वेषरूप वयरीने जीपावे, माटे

जावयाणं कहिये. तिन्याणं के० पोते संसारसमुद्र थकी तस्या अने बीजाने तारयाणं के० संसारसमुद्र थकी तारवाने समर्थ ठे. बुद्धाणं के० सर्वतत्त्वना पोते जाण थया अने बोहयाणं के० परने तत्त्व समजाववाने समर्थ ठे. मुत्ताणं के० पोते आठ कर्मरूप बंधनथी मुकाणाअने बीजा ऋव्य जीवोने मोअगाणं के० आठ कर्मरूप शत्रुथी मुकाववाने समर्थ ठे. इहां जिणाणं इत्यादिकमां बी जाने पोता सरखा फलना आपनार कहा, ते माटे ए स्वतुल्य फलकारी चार पदनी आठमी संपदा अइ ॥७॥

सवन्नूणं के० लोकालोक सर्वने केवल ज्ञाने करी जाणे. सबदरिसीणं के० समस्त वस्तुननुं सामान्य स्वरूपकेवलदर्शने करी देखे. सिव के० उपस्वरहित. मयल के० अचल एटले जेने चलायमान थवुं नथी. मरुय के० अरुज, रोगरहित. मणंत के० अनंतज्ञान दर्शन सुख वीर्य सहित, मरुय के० अरुय. एटले जेनो हय नथी. भद्वाबाह के० अव्याबाध, बाधा पीना रहित, म पुणरावित्ति के० अपुनरावित्ति एटले ज्यां थकी फरी आ ववुं नथी. ए साते गुणेकरी सिद्धिगइ नामधेयं के० सि

धृति एवं ठे नाम जेहनुं. गणसंपत्ताणं के० एवा स्थान
कने संप्राप्त थयाठे एटले मोक्षनगरे पहुँच्या ठे. नमो
जिणाणं के० एवा जिनेश्वरने महारो नमस्कार हो
जो. जियजयाणं के० १ इहलोकजय ते मनुष्यने म
नुष्यनो जय. २ परलोकजय ते मनुष्यने देवतादिकनो
जय. ३ आदान जय ते रखेने महारू कोइ लेईले. ४
आजीविकाजय ते रखेने महारी आजीविका हणाइ
जाय. ५ अकस्मात् जय ते ज्ञात प्रमुख पन्थाने शब्दे
बीक राखे. ६ मरणजय ते रखेने मुज्जने मरण आवे
७ अपयज्ञजय, ८ सात जय जेणे जीत्या ठे. इहां सब
नूणं इत्यादिके करी मोक्षमां तेवुं स्वरूप ठे एम कहुं
ए त्रण पदे करी मोक्ष सिद्धावस्था नामे नवमी संप
दा अइ ॥ ए ॥

हवे त्रिकालवर्ति देव वांदवाने पूर्वाचार्य कृत गा
था कहे ठे जेअ अईआ सिद्धा के० जे अतीतकाले तीर्थकर
अइ सिद्धपर्यायपणुं पाम्या. जे अ जविस्संतिणागए का
ले के० जे अनागतकाले तीर्थकर पर्याय पामी सिद्ध
पणुं पामशे अने संपइ अ वट्टमाणा के० संप्रति ते ह
मणां वर्तमानकाले जे अरिहंत ठे, एटले वर्तमाने

जे महाविदेहमां तिर्थंकर विचरे षे ते. सवे के० स
र्व तीर्थंकर प्रते, तिविहेण के० मन वचन ने काया ए
त्रिविधे करी वंदामि के० हुं वांडुं बुं. ए सर्व मली नव संपदा
अइ. गाथा एक. पद तेत्रीस. गुरू अक्षर ३३ लघु अक्षर
१६४ सर्वाक्षर १९७ इति शक्रस्तव समाप्तः

जावंतीना ठुटा शब्दना अर्थ.

जावंति-जेटला

चेइआइं-चैत्य, जिनप्रतिमा

उढे-ऊर्ध्व (लोकमां)

अहे-अधो (लोकमां)

तिरिअ-तिच्छा

इह-अहीं

संतो-छतो. रहेलो थको

तथ-त्यां

संताइं-छली, रहेली

जावंत-जेटला

केवि-कोइ

भरह-भरत

एरवय-(पांच) ऐरव्रत

महाविदेहे-(पांच) महावि-
देहमां

सव्वेसिं-सर्वेने

तेसिं-तेमने

पणओ-नमस्कार थाओ

तिदंड-त्रण दंड [मन, वचन
अने कायाना]

विरयाणं-विराम पामेला, रहित.

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

जावंति चेइआइं ॥ उढेअ अहेअ

तिरिअ लोएअ ॥ सवाइं ताइं वंदे ॥

इह संतो तन्न संताइं ॥ १ ॥ इति ॥

(१२१)

अर्थ:—जावंति के० जेटला चेइआइं के० चैत्य अने प्रतिमां ठे, ते क्यां ठे नड्डेअ के० ऊर्द्धलोकने विषे, अहेअ के० अधोलोकने विषे, अने तिरिअलोएअ के० तिर्हालोकने विषे, ए त्रण लोकमां जे जिनचैत्य ठे, सद्वाइं ताइं वंदे के० ते सर्वने हुं वांडुं बुं. इह संतो के० हुं इहां रह्यो थको पण तह संताइ के० तीर्थकरोनां चैत्य त्यां रह्यां थकां ठे तो पण ते प्रत्ये हुं वांडुं बुं. पढी इच्छामिख मासमणो कही.

॥ अथ जावंत केविसाहु ॥

जावंत केवि साहु ॥ जरहेरवय म
हाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणणु ॥
तिविहेण तिदंम विरयाणं ॥१॥इति॥

अर्थ:—जावंतकेविसाहु के० जे कोइ साधु शुद्ध चारित्रना पालनार, चारित्रना खप करनार, जरहेरवयमहाविदेहे अ के० पांच जरत, पांच ऐरवत, पांच महाविदेह ए पन्नर कर्म जूमिने विषे ठे. सव्वेसिं तेसिं के० ते सर्व साधुजने हुं, पणणुके० पणमुंबुं, नमस्कार

करुं, तिविहेण केण मन, वचन अने काया ए त्रण
प्रकारे करी नमस्कार करुं तुं, ते साधु केवा ठे के
तिदंमविरयाणं केण मनोदंम, वचनदंम अने कायदंम ए
त्रण दंमथी विरम्या ठे. इति ॥ ॥

॥ अथ नमस्कार ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु

ज्यः ॥ इति ॥

अर्थः—अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने सर्व
साधुजने नमस्कार आउ.

उवसग्गहरंना तुटा शब्दना अर्थ.

उवसग्ग—उपसर्ग, दुःख संक-
टादिक

हरं—हरण करनार

पासं—१ पार्श्वनाथने २ पार्श्व
नामे यक्ष छे जेमने

३ आशा (तृष्णा) रहित.

कम्म—कर्मना

वण—समूहथी (ढगलाथी)

मुक्कं—मुकाएलाने

विसहर—विषधर, साप

विस—विष, झेर

नित्रासं—नाशकरनारने

मंगल—दुखनी निवृत्ति

कल्लाण—सुखनी वृद्धि

आवासं—घर

फुलिंग—फुलिंग नामनो

मंतं—मंत्रने

कंठे—कंठने विषे

धारेइ—धारण करे

जो—जे

सया-सदा-हमेशां
मणुओ-मनुष्य
गह-ग्रह (चंद्र सूर्य वगैरे नव
ग्रह)

रोग-रोग
मारी-मरकी.
दुष्ट-दुष्ट, निर्दय
जरा-ज्वरो, ताव
जंति-पामे छे
उवसामं-शांति, नाश
चिठ्ठउ-रहो
दूरे-दूर
मंतो-मंत्र
तुज्ज-तने, तारो
पणामो-प्रणाम
बहुफलो-घणा फलवालो
होइ-थाय छे
नर-पुरुष
तिरिएसु-तिर्यंचने विषे
जीवा-जीवो
पावंति-पामे छे
न-नहीं
दुःख-दुख

दोगचं-माठीगति, दरिद्रता
तुह-तमारा
सम्मत्ते-समत्तव
लद्धे-पामे छते
चिंतामणि-चिंतामणि रत्न
कप्पपायव-कल्पवृक्ष
अप्पहिण्-अधिक (वधारे)
अविग्घेण-विघ्नरहितपणे
अयरामरं-अजरामर, जरा
अने मरणरहित
संथुओ-स्तव्यो, स्तुति कर्यो
महायस-हे मोटा यशवाला
भक्ति-भक्ति
भर-समूह
निप्भरेण-पूर्ण भरेला
हिअएण-हैयावडे
ता-ते कारण माटे
देव-हे देव
दिज्ज-आपो
वोहिं-बोधि, समकित.
भवेभवे-भवोभव
पास-हे पार्श्वनाथ
जिणचंद-हे जिनचंद्र

॥ अथ नवसग्न हरं ॥

नवसग्नहरं पासं ॥ पासं वंदामि

(११४)

कम्म घण मुक्कं ॥ विसहर विस नि
त्रासं ॥ मंगल कद्धाण आवासं।१।

अर्थः—उवसग्गहरंपासं केण जेना शासनने विषे
उपसर्गनो हरनार पार्श्वनामा यक्क ठे एहवा अथवा उ
पसर्गना हरनार एवा अने पासं के० गइ ठे आशा ते
जेनी एवा एटले तृष्णा रहित एवा, पासंवंदामि के०
श्री पार्श्वनाथ स्वामीने हुं वांडुं बुं. पण ते श्री पार्श्व
नाथ केवा ठे कम्मघणमुक्कं केण आठ कर्मना घण जे
समूह, ते थकी मूकाणा ठे, मुक्त थया ठे, वली विस
हरविस के० विषधर जे सर्प एटले इव्य थकी तिर्यंच
जातिनो सर्प अने ज्ञावथकी मिथ्यात्वरूप सर्प तेनुं
जे विष तेने, नित्रासं के० नाशना करनार ठे. वली मं
गल केण वर्त्तमान सुख अने कद्धाण केण परंपराये जे
स्वर्गमोक्षादि सुख तेना आवासं केण स्थानक रूप ठे.

विसहर फुल्लिंग मंतं ॥ कंठे धारेइ
जोसयामणुउ ॥ तस्स गह रोग मा
री ॥ इठ जराजंति उवसामं ॥१॥

(११५)

अर्थः—विसहरफुलिंगमंतं के० विषधर स्फूलिंग
नामे मंत्र जे एजस्तोत्रमांथी निकले ठे, ते मंत्रने कंठे
धारेई जो सया मणुज के० जे मनुष्य सदैव कंठने वि
षे धारण करे, तस्स गह के० ते मनुष्यना ग्रह, रोग
मारी के० अनेक जातना रोग अने मरकीना विकार
तथा दुःखजरा के० दुष्ट एवा जे जरा के० ताव ते जंति
ब्रवसामं के० जाय नाशपामे, उपशांत थाय ॥ १ ॥

चिठज दूरे मंतो ॥ तुष्रप्पणामो वि ब
हुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जी
वा ॥ पावंति न दुःखदोगच्चं ॥ ३ ॥

अर्थः—चिठज दूरे मंतो के० ते पाठली गाथामां
कह्यो जे मंत्र तेतो चिठज एटले तिष्ठतु रहो दूरे अथवा
वेगलो रहो, पण तुष्रप्पणामोवि के० तुज्जने प्रणाम जे
नमस्कार करवो तेथी पण बहुफलो होइ के० घणां
एवां जे मोह प्रमुखनां फल तेनो देनार होय ठे. नर
तिरिएसु वि जीवा के० नर ते मनुष्यने विषे तथा ती
र्थचने विषे पण जीवा जे जीव ते पावंति न दुःखदो

गच्चं के० दुःख ते रोगनां तथा वल्लज्जना वियोगनां इ
त्यादिक दुःख जाणवां, अने दोगच्चं ते दरिड्पणुं ते न
पावंति एट्ठे न पामे.

तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणिकप्प
पायवप्पहिण्ण ॥ पावंति अविग्घेणां ॥
जीवा अयरामरं ठाणां ॥ ४ ॥

अर्थः—तुह के० ताहरा धर्मनी जे आस्था तेने
सम्मत्ते के० सम्यक्त्व कहिये, ते लद्धे के० पामे थके
ते ताहरुं सम्यक्त्व केवुं ठे चिंतामणिकप्पपायवप्पहि
ये के० चिंतामणिरत्न अने कल्लपपादप ते कल्लपवृत्त तेस्य
की पण अधिक ठे, एथी पावंति के० पामे अविग्घेणां
के० विघ्नरहितपणे जीवा के० ज्ञव्य जीव अयरामरंठाणां
के० अजरामर स्थानक जे मोक्ष स्थानक ते प्रते पामेठे. ४

इअ संयुज महायस ॥ जत्तिप्रर नि
प्ररेण हिअएणा ॥ ता देव दिज्ज बोहिं ॥
जवे जवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

अर्थः—इअ के० ए रीते संयुज के० संस्तव्यो, म

हायस के० त्रण जगतमां व्याप्त एवा महोटा यशनो
 धणी एवो जे श्री पार्श्वनाथ जगवंत ते प्रते केवी री
 ते स्तव्यो ते कहे ठेः—ज्जिजर के० ज्जिनो जर जे
 समुदाय तेणे करी निप्ररेण के० पूरीत एटले परिपूर्ण
 जरयुं एवुं जे हिअएण के० हृदय तेणेकरी स्तव्यो ता
 देव के० ते माटे हे देव ! हे जगवंत ! दिङ्ग बोहिं के० द्यो
 मुऊने, बोधबीज एटले धर्मनुं पामवुं ते, ज्वेज्वे के०
 ज्वज्वने विषे द्यो, पासजिणचंद्र के० हे पार्श्वनाथ
 सामान्य केवलीनुमां चंडमा समान ॥ ५ ॥ इति श्री
 ज्ज्वाहु स्वामिविरचितं नपसर्गहरस्तोत्रं समाप्तं. ए
 मां पद वीस, संपदा वीस, गुरु अक्षर वीस, लघुअक्षर
 एकसो पांसठ सर्वाक्षर १०५ ठे.

श्री स्तवनोना ठूटा शब्दना अर्थ.

जास-जेनी
 परे-पेठे
 तास-तेने
 नयन-आंख
 भृंग-भमरो
 उरग-साप
 प्रतिहत-हणाएलो-हारी गएलो

प्रस्वेद-परसेवो
 राग-प्रेम; लाल रंग
 चित्र-अजाएव जेवुं
 रुधिर-लोही
 आमिष-मांस
 सहोदर-जेवुं, सरखुं
 लोकोत्तर-असाधारण, आश्च-
 र्यकारक

निहार-झाडे फरबुं
चरमचक्षु-चामडानी आंख
अवदात-शुद्ध (गुण) आचरण
अतिशय-लोकोत्तर गुण

संकेत-वायदो
अनुसरीये-चालीए, पाळीए
भातपाणीनो-खावापीवानो
विच्छेद-वियोग-रोकबुं

श्री रुषन्नदेवनुं स्तवन.

प्रथम जिणोसर प्रणामीये, जास सुगंधी रे का
य ॥ कळपवृक्ष परे तास, इंझाणी नयन जे, जूंग परे
लपटाय ॥ १ ॥ रोग उरग तुज नवि नरे, अमृत जे
आस्वाद ॥ तेहथी प्रतिहत तेह, मानुं कोइ नवि क
रे, जगमां तुमशुं रे वाद ॥१॥ विगर धोइ तुज निरम
ली, काया कंचन वान ॥ नहिं प्रस्वेद लगार तारे तुं
तेहने, जे धरे ताहरुं रे ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुज
मनथकी, तेमां चित्र न कोइ ॥ रुधिर आमिषथी, रा
ग गयो तुज जनमथी, दूध सहोदर होय ॥४॥ श्वासो
द्वास कमल समो, तुज लोकोत्तर वात ॥ देखे न आ
हार निहार, चरम चक्षु धणी, एहवा तुज अवदाता॥
चार अतिशय मूलथी, नंगणीश देवना कीध ॥ कर्म
खप्याथी अग्यार, चोत्रीश एम अतिशया, समवायां
गे प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे

(૧૨૯)

નિજ અંગ ॥ પદ્મ વિજય કહે એહ સમય પ્રભુ પાલજો,
જિમ થાનં અચ્ચ અચ્ચંગ* ॥ ૭ ॥ ઇતિ ॥

પ્રથમ વ્રત પૂજાનું સ્વતન. ૨.

આવો આવો જશોદાના કંત, અમ ઘર આવોરે ॥

પ્રક્રિ વત્સલ પ્રગવંત, નાથ શે નાવો રે ॥ એમ ચંદનવા

* સ્તવન ૧ નો અર્થ.

પહેલા તીર્થકર ભગવાન જેમલું શરીર સુગંધમય છે. તેમને નમસ્કાર કરીએ. કલ્પવૃક્ષને ભમરાઓ સુગંધી લેવા આશ્રય કરે છે. તેમ તેમને નીરખવાને ઇંદ્રાણીઓના નેત્રો એક નજરે જોઈ રહે છે ! હે ભગવંત રોગરૂપી સર્પ તમને નહતા નથી, કેમકે તમને જન્મથી અમૃતનો આસ્વાદ છે. તે રોગરૂપી સર્પથી હારી ગણ્યા એવા અન્ય દેવો તમારી સાથે જગતમાં વાદ કરી શકતા નથી એમ હું માનું છું. ૨ વગર ધોણી એવી પણ તમારી કાયા મેલ રહીત અને સુવર્ણ વર્ણી છે. તેમાં લગાર માત્ર પણ પરસેવો થતો નથી એવા એવા અતિશયવંત આપનું જે ધ્યાન ધરે છે, તેને આપ તારો છો. ૩. તમારું મન રાગરાહિત છે, ઇદલુંજ નહીં પણ તમારાં રુધિર અને માંસમાંથી પણ જન્મથીજ રાગ (લાલ રંગ) ગયો છે, તેથી દૂધના જેવાં છે. ૪ તમારો શ્વાસોશ્વાસ કમલ જેવો છે. એવું તમારું લોકોત્તર ચરિત્ર છે. વઢી ચર્મચક્ષુવાલા પ્રાણી તમારો આહાર અને નિહાર જોઈ શકતા નથી-એ તમારા અતિશયનું મહાત્મ્ય છે. ૫. ચાર અતિશય મૂલથીજ હોય છે. તથા દેવતાના કરેલા ઓગણીશ તથા, જ્ઞાનાવરણી આદિ ચાર ઘન ઘાતીઆં કર્મ રૂપ્યાથી અગીઆર અતિશય એ રીતે વધા મઢીને ચોત્રીશ અતિશયો સમવાયાંગ સૂત્રમાં વર્ણવેલા છે. ૬ ઉત્તમ તીર્થકર ભગવાનના ગુણ ગાતાં આપણા અંગમાં ગુણ આવે. પદ્મ વિજયજી મહારાજ કહે છે કે આ વખતે હે પ્રભુ મને પાલજો, કે જેથી હું અચ્ચ અને અચ્ચંગ થાઉં અર્થાત્ મોક્ષ મેલું.

लाना बोलने, प्रभु आवीरे ॥ मुठी बाकुल माटे पाठा,
वलीने बोलावी रे* ॥ आ० ॥ १ ॥ संकेत करीने स्वा

* स्तवन २ ना अर्थ.

ज्यारे चंदनवाळाने घेरथी भगवान पोताना सर्व अभिग्रहमां
रुदन न देखावाथी पाळा वळया, त्यारे हे जसोदाना कंत ! मारे
घेर पधारो. हे भक्तवत्सल भगवंत, शा माटे तमे नथी आवता ? एवं
चंदनवाळानुं रुदन युक्त बोलवुं सांभळी पोताना सर्व अभिग्रह
पूरण थएला जोइ मुठी बाकळा माटे पाळा वळीने बोलावी. पळी
जाणे आज वखते तमे वायदो करी वनमां गया हो नहीं ! तेम जो
चंदन वाळाने पोते (आ मारी पहेली साधवी थशे एम) मनमां
राखी तो ज्यारे तमने केवळज्ञान थयुं त्यारे तमे दीक्षा आपी छे
वट केवळज्ञानी करी. हुं केसरना कीच करी पुजुंछुं तोपण पहेला
व्रतना अतिचार थकी हुं धुजुंछुं. २ वळी जीव हिंसाना पच्चखा
ण थूलथी करुंछुं. अने मन, वचन, अने कायाए करवुं नहीं, क
राववुं नहीं, ए छ कोटि पच्चखाण हमेशां पालुंछुं. वासी, बोळो,
विदल, रात्रीभोजन ए हिंसा टालुंछुं, अने सवाविश्वानी जीवदया
नित्य पालुंछुं. ३ वळी चुलापर (१) पाणीयारे (२) खांयणीयांपर
(३) घंटी उपर. (४) सुवाना ओरडामां (५) जमवाने ठेकाणे (६)
देरासरमां (७) पोषधशाळामां (८) नहावाने ठेकाणे (९) वलो
णा उपर. (१०) ए रीते दश ठेकाणे दश चंद्ररुआ बांधीनेरहुंछुं. अने
जीव जाय एवी वात कोइने कहेवी नहीं. ते व्रतना पांच अतिचार
कहे छे, वध के० मारवुं. (१) गाढे बंधने बांधवुं (२) छविछेद-व
ळदने नाथवो खांसी करवो वगेरे अंगनो छेद करवो. ३, अतिशय
गजा उपरांत भार भरवो. (४) तेने चारो पाणी न नीरवुं (५)
ए रीते पशुने पीडा न करवी. ४ लौकिक देवगत, गुरुगत ए
त्याशी भेदे मिथ्यात्व छे. ते तमारुं आगम सांभळतां आज तेनो
नाश थाय छे. वळी चोमासामां घणां कामोमां जतना पालुं अने

मी गया तुमे वनमां रे ॥ अइ केवली केवली कीध,
 धरी जो मनमां रे ॥ अमे केसर केरा कीच, करिने
 पूजुं रे ॥ तोहे पहले व्रत अतिचार, अकी हुं धूजुं रे ॥
 आप ॥ २ ॥ जीव हिंसानां पञ्चरक्षाण, शूलथी करियें
 रे ॥ दुविहं तिविहेणं पाठ, सदा अनुसरियें रे ॥ वासी
 बोलो विदल निशिज्जक, हिंसा टालुं रे ॥ सवा विश्वा
 केरी जीव, दया नित्य पालुं रे ॥ आप ॥ ३ ॥ दश चं
 दरुआ दश ठाण, बांधीने रहियें रे ॥ जीव जाये एह
 वी वात, केने न कहियें रे ॥ वध बंधनने ठविच्छेद, ज्ञा
 र न ज्ञरियें रे ॥ ज्ञात पाणीनो विच्छेद, पशुने न करि-
 यें रे ॥ आप ॥ ४ ॥ लौकिक देव गुरु मिथ्यात्व, त्र्या
 शी जेदे रे ॥ तुज आगम सुणतां आज, होय विच्छेदे
 रे ॥ चोमासे पण बहु काज, जयणा पालुं रे ॥ पगले
 पगले महाराज, व्रत अजुवालुं रे ॥ आप ॥ ५ ॥ एक

आ रीते डगले डगले मारा व्रतने निरमळ करुं. ५ एक श्वास
 लेउं तेदलामां सो वार तमने याद करुं अने विनंति करुंलुं के चं
 दनवाळानी पेटे अमने पण मोक्ष आपो, माळी हरिवळे एक मा
 छलानी दया पाळी तेथी तेने ए व्रत फळदाता थयुं, तेम हुं ए
 व्रत पालुं, अने शुभ वीर स्वामीना चरण कमळना पसायधी नि
 त्य मारे दीवाळी हो. ६

सास मांहे सो वार, समरुं तुमने रे ॥ चंदन बाला
ज्युं सार, आपो अमने रे ॥ माठी हरिबल फलदाय,
ए व्रत पाली रे ॥ शुभ्र वीर चरण सुपसाय, नित्य
दीवाली रे ॥ आप ॥ ६ ॥

जयवीयरायना तुटा शब्दना अर्थ.

जय-जयवंता वरुं
वीयराय-वीतराग
जग-जगत
गुरु-गुरु
होड-होजो
ममं-महारे
तुह-तारा
पभावओ-प्रभावधी
भयवं-हे भगवन्
भव-संसारनो
निव्वेओ-निर्वेद-उदासीपणुं
मग्गाणुसारिआ-मार्गानुसारि-
पणुं
इड्ड-इष्ट, इच्छित (वांछित)
फल-फल
सिद्धि-सिद्धि (प्राप्ति)
विरुद्ध-अवलुं; उलटुं.
आओ-त्याग
गुरुजण-मातापितादि वडेरा

पूआ-पूजा
परथ-बीजानो अर्थ
करणं-करवुं
सुह-सारा
तव्वयण-तेमनां वचन
सेवणा-सेवा
आभवं-महारे संसार होय त्य
सुधी

अखंडा-निरंतर-हमेशां
वारिज्जइ-वार्युं छे
जइवि-जोपण
निआण-नियाणा (नुं)
बंधणं-बांधवुं, करवुं.
समय-सिद्धांतने विषे
तह-तो
सेवा-भक्ति
तुम्ह-तमारा
चलणाणं-पगनी, चरणनी
दुखख-दुःख (नो)

खओ-क्षय
 कम्म-कर्म (नो)
 समाहि-समाधि
 मरणं-मरण
 बोहिलाभो-बोधिवीजनो लाभ
 संपज्जओ-थाओ
 मह-महारे
 एअं-ए (चार)
 नाह-नाथ
 पणाम-प्रणाम

सर्व-सर्व
 मंगल-मंगल
 मांगलयं-मांगलिक
 कारणं-कारण
 प्रधानं-मुख्य, उत्तम
 धर्माणां-धर्मोंमां
 जैनं-जिनदेवतुं
 जयति-जयवंतु वर्त्ते छे
 शासनं-शासन-हुकम

॥ अथ जयवीयराय ॥

जय वीयराय जगगुरु ॥ होउ ममं
 तुह पन्नावन जयवं ॥ जवनिवेन म
 ग्गा, णुसारिअ्या इठ फल सिद्धी ॥१॥

अर्थः—जय के० जयवंता वर्त्तो वीयराय के० श्री
 वीतराग राग छेषरहित, जगगुरु के० त्रण जगतना
 गुरु; ए जगवंतने आशीष दीधी. हवे पोताना मननो
 अन्निप्राय कहे ठे. होउममं के० होजो मुजने तुहप
 जनावन के० तमारा प्रजावथी जयवं के० हे जगवन्
 जवनिवेन के० जवनो निर्वेद एटले जवरूप बंदीखाना
 श्री विरक्तपणुं, मग्गाणुसारिया के० (कदाग्रहनो त्या

ग करी) ताहरा मार्गने अनुसारे चालवुं. तथा इष्टफल सिद्धि के० इष्टफल वांछित फलनी सिद्धि एटले प्राप्ति आन. ॥ १ ॥

लोगविरुद्ध ज्ञान ॥ गुरुजणपूआ
परञ्चकरणंच ॥ सुहगुरुजोगो तव
य ॥ एण सेवणा आज्ञवमखंमा ॥ १ ॥

अर्थः—लोगविरुद्ध के० लोक विरुद्ध कर्तव्य एवी जे परनिंदा, चोरी, परस्त्रीगमनादिक तेनो ज्ञान के० त्याग एटले गंभ्रवुं आन, वली गुरुजणपूआ के० मा तापिता तथा धर्मना दातार जे सजुरु तेमनी पूजा न क्ति करवी अने परञ्चकरणंच के० परोपकार करवो तथा परना अर्थनुं करवुं. सुहगुरुजोगो के० सजुरु जे शुद्ध प्ररूपक कालानुसारे शुद्ध क्रियाना खप करनारा गुरु तेनो जोग एटले समागम आन, अने तवयण सेवणा० तेज रुमा गुरुना वचननी सेवा एटलां वानां ते आज्ञ वमखंमा के० आज्ञव जे संसार एटले संसारावस्थाल गे ज्यांसुधी संसारमां रहुं त्यांसुधी मुऊने अखंमा के० अखंम परिपूर्ण होजो. ॥ १ ॥ ए प्रणिधान मननी स

(१३५)

माधिनी याचना करी. ए वे गाथा गणधरजीनी करे
ली ठे. हवे आगली त्रण गाथा पूर्वाचार्यकृत ठे. तेनो
अर्थ लखिये ठेये.

वारिज्जइ जइवि निआ, ए बंधणां वी
अराय तुह समए ॥ तहवि मम हुज्ज
सेवा ॥ नवे नवे तुम्ह चलणाणां ॥३॥

अर्थः—वारिज्जइ केण वार्युं ठे एटले निवारण क
र्युं ठे जइवि केण यद्यपि नियाणानुं बांधवुं, वीयराय
केण हे वीतराग तुहसमए केण ताहरा सिद्धांतने विषे,
एटले हे वीतराग तारा सिद्धांतोमां नियाणानुं बांधवुं
निषेध्युं ठे, तहवि केण तथापि एटले तोपण एटलुं मा
गुंतुं के मम केण मुऊने हुज्ज सेवा केण होजौ सेवा न
वेनवे केण नवनवने विषे तुम्हचलणाणां केण तमारा
चरणकमलनी सेवा ते मने नवनवमां होजौ एटलुं
मांगुंतुं. ॥ ३ ॥

उक्ककउ कम्मकउ ॥ समाहि मर
णांच बोहिलाजो अ ॥ संपज्जउ मह

एञ्चं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥४॥

अर्थः—डुस्करकउ केण मननां डुःख तथा शरीर संबंधी जे संसारादिक डुःख तेनो कय, कम्मरकउ केण अशुज्ज कर्मनो कय. समाहिमरणं च केण समाधि मरण, बोहिलाज्जो अ केण वली बोधबीजनो लाज्ज. ते ज्जवांतरे जिनधर्मनी प्राप्तिनुं थावुं ते संपज्जउ केण संपजो, प्रा स थान. मह केण मुज्जने एञ्चं केण ए पाठल कह्या जे बो ल ते, तुह केण तुज्जने नाह केण हे नाथ, पणामकरणेणं केण पणाम करवे करीने. ॥ ४ ॥

सर्व मंगल मांगल्यं ॥ सर्व कल्या
ण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणाम् ॥
जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥ इति ॥

अर्थः—हवे जिनशासनने मंगलिकने अर्थे संस्कृत श्लोके करी आशीर्वाद आपे ठे. सर्व मंगलमांगल्यं केण सर्व मंगलिकमां उत्कृष्ट मंगलिक, अने सर्व कल्याणनुं कारण ठे, अने जेमां जीव दयानी मुख्यता ठे माटे सर्व धर्मोमां प्रधान ठे, एवुं जिनेश्वरनुं शासन जयवंतु त्तो ॥५॥ एमां पद सौल, श्लोक एक, गुरु अक्षर वा

(१३७)

वीस, लघु अक्षर १४० सर्वाक्षर १६९.

अरिहंत चेइआणांना तुटा शब्दना अर्थ.

अरिहंत—अरिहंत प्रभु
चेइआणं—चैत्योनां
वंदण—नमस्कारना
वत्तिआए—फळने अर्थे
पूअण—पूजन
सक्कार—सत्कार
सम्माण—सन्मान

निरुवसग्ग—उपसर्ग रहीत
सद्धाए—श्रद्धा वडे
मेहाए—बुद्धि वडे
धीईए—धीरज वडे
धारणाए—धारणा वडे
अणुप्पेहाए—वारंवारसंभारवावडे.
वड्डमाणीए—वधवी

॥ अथ अरिहंतचेइआणं. ॥

अरिहंतचेइआणं ॥ करेमि काउस्स.
ग्गं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए ॥ पूअ
ण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए ॥
सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिल्लान्न व
त्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥
सद्धाए, मेहाए, धीईए ॥ धारणाए,
अणुप्पेहाए ॥ वड्डमाणीए, ठामि का
उस्सग्गं ॥ ३ ॥ इति ॥ अन्नवृण ॥

(१३७)

अर्थः—अरिहंत चेइआणं के० श्री अरिहंत तीर्थ
करनां जे चैत्य प्रतिमा ठे. ते निमित्ते, करेमि कानस्स
ग्गं के० हुं कानस्सग्गं करुं, ते वास्ते तेनां कारण क
हेठे. ईहां अरिहंत चैत्य वांदवा निमित्त कानस्सग्गं कर
शे. ते माटे अण्युपगम एटले अंगीकार संपदा वे प
दनी प्रथम संपदा अई.

वंदणवत्तिआए के० मनशुद्धे प्रणामनुं करवुं ते
निमित्ते एटले तीर्थकरना चैत्यने वांदतां जे फल होय
ते फल कानस्सग्गं कस्याथी अजो. पूअणवत्तिआए के०
फूलचंदनादिके करी पूजा कस्याथी जे फल होय तेने
अर्थे, सक्कारवत्तिआए के० वस्त्र आज़रणादिके करी स
त्कार करवाथी जे निर्झरा आय तेने अर्थे, सम्माणव
त्तिआए के० सन्मान ते स्तवन स्तोत्रादिक गुण वर्ण
व्याथी जे फल आय तेने अर्थे, बोहिलाज्जवत्तिआए के०
इहज्जवे तथा परज्जवे श्री जिनधर्मनी प्राप्ति सुखे आय
तेने अर्थे, निरुवसग्गवत्तिआए के० ज्यां जन्म जरा ने
मरणरूप उपसर्गनो नाश अइ गयो ठे एवुं जे मोह
ते पामवाने अर्थे कानस्सग्गं करुं, एमां वंदणवत्तिआए
इत्यादिक कानस्सग्गं करवानां निमित्त कहां ते माटे

(१३ए)

ए बीजी निमित्त संपदा ठ पदनी जाणवी.

हवे कानस्सग्ग जे रीते सफल आय ते रीत क हे ठे. ए कानस्सग्ग हुं सद्धाएकेण श्रद्धाये करी सहित, ज्ञावें करुं, पण कोईना बलात्कारे न करुं. मेहाएकेण मेधा ते रुमी बुद्धिये करी लाज्जालाज्ज जाणी करुं, पण माठी बुद्धिये नही करुं. धीईएकेण धृति ते मननी समाधिये करुं, पण राग द्वेषे करी करुं नही, धारणा एकेण अरिहंतना गुण हृदयमां धारण करतो ठतो कानस्सग्ग करुं. अणुप्पेहाएकेण अरिहंतना गुण मनने विषे वारंवार संज्जारतो थको कानस्सग्ग करुं. ए म वरुमाणीएकेण ए श्रद्धा, मेधा धृति, धारणा ने अनुप्रेक्षा ए पांच बोल वृद्धिवंत आय एम ज्ञावनी विशेषे वृद्धि कस्वाने अर्थे. गमि कानस्सग्गं केण हुं कानस्सग्ग करुं. ईहां श्रद्धादिक पांच बोल वृद्धिवंत थवाने अर्थे कानस्सग्ग करुं. ते माटे ए सात पदनी त्रीजी हेतु संपदा थई. बधां मली पद १५, संपदा ३, गुरुअक्षर १६, लघु अक्षर ७३, सर्वाक्षर ८९. ईहां अन्नठ उससिएणं इत्यादिक केहवुं तेना अर्थ आगल कहा ठे. तेनी पांच संपदा एनी साथे मेलवीये त्यारे

वधी मली आठ संपदा आय, ने तेतालीस पद आय
गुरुअक्षर १९ आय लघुअक्षर १०० आय. सर्वाक्षर
११९ आय.

विधिः—अरिहंत चेइआणं पठी अन्नथ नससि-
एणं कहेवुं पठी एक नवकारनो कानस्सग्ग करी पारी
नमोऽर्हत० कही एकओय कहेवी इति चैत्यवंदन विधि.

कद्धाण कंदंना तुटा शद्वना अर्थ.

कंदं—मूल
जिणंदं—जिनेंद्रने
तओ—ते पछी
मुणिंदं—मुनिओना इंद्रने
पयासं—प्रकाश करनारने
सुगुण—उत्तम गुण
ठाणं—स्थानकने
भत्तीइ—भक्तिये करीने
सिंरि—श्री
समुद्द—समुद्र
पत्ता—पाम्या
दिंतु—आपो
सुइ—थुचि. पवित्र
मारं—सारने
विंद—वृंद

वंदा—वांदवा योग्य
वल्लीण—वेलोना
विसाल—विशाळ—मोटा
निव्वाण—निर्वाण
जाण—रथ
कप्पं—जेवुं
पणासिय—नाश कर्याछे
असेस—समस्त
कुवाइ—कुवादि (पाखंडी)
दप्पं—दर्प (अहंकार)
मयं—मत
बुहाणं—पंडितोना
निच्चं—नित्य, हमेशां
जग—जगत्

प्पहाणं-प्रधान
 कुंद-मचकुंदनुं फुल
 इंदु-चंद्र
 गो-गाय
 खखीर-दूध
 तुसार-हिम
 वन्ना-वर्णवाळी
 सरोज-कमल
 हृध्या-हाथ वाली

कमले-कमलने विषे
 निसन्ना-बेटेली
 वा एसिरि-वागीश्वरी
 पुध्धय-पुस्तक
 वग-वर्ग (समूह)
 सुहाय-सुखने माटे
 सा-ते
 अम्ह-अमने
 पसध्या-उत्तम

॥ अथ कल्पाणकंदंती स्तुतिः ॥

कल्पाणकंदं पढमं जिणंदं ॥ संतिं
 तन्न नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पया
 सं सुगुणिक्कठाणं ॥ जत्तीइ वंदे सि
 रि वध्रमाणं ॥ १ ॥

अर्थः—कल्पाणकंदं के० मंगलिकना कंदं रूप एवा
 प्रथम जिनेंइ श्री रुषन्नदेव प्रत्ये तथा श्री शांतिनाथ
 तन्न के० तेवारपढी नेमिजिणंद मुनींइ प्रत्ये, वली श्री
 पार्श्वनाथ ते लोकालोकना पयासं के० प्रकाश करना
 र, तथा सुगुणिक्कठाणं के० ज्ञानाज्ञानादिक गुणना ए
 क अद्वितीय स्थानक ठे ते प्रत्ये, अने शासनाधीश्वर

(१४९)

श्री वर्द्धमानस्वामी प्रत्ये जत्तीश्वंदे केण जत्तिथे करी
ने वांडुवुं. ॥ १ ॥

अपार संसार समुद्धपारं ॥ पत्ता सि
वं दितु सुइक्सारं ॥ सव्वे जिणंदा
सुरविंदवंदा ॥ कल्ल्याण वल्ल्हीण वि
सालकंदा ॥ २ ॥

अर्थः—हवे समस्त तीर्थकरनी बीजी श्रोय कहे
ठे. अपार केण नथी जेहनो ठेमो एवो जे संसाररूप
समुद्ध तेना पारने पत्ता केण पाम्या ठे ते मुज प्रते सु
इक्सारं केण जलुं जे अनुष्ठाननुं एक अद्वितीय फलरू
प सिवं केण मोक्ष ठे ते दितु केण द्यो. सव्वेजिणंदा केण
ते समस्त जिनेंशे कहेवा ठे ? सुरविंदवंदा केण देवता
जना वृंद तेने वांदवा योग्य ठे, वली कल्ल्याणरूप वेली
ना विसाल केण महोटा कंद ठे. ॥ २ ॥

निव्वाणमग्गे वर जाण कप्पं ॥ पणा
सियासेसकुवाइदप्पं ॥ मयं जिणा
णं सराणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चं ति
जगप्पहाणं ॥ ३ ॥

अर्थः—हवे ज्ञान वर्णनरूप त्रीजी श्योय कहे ठे. जे निवाणमग्गे के० मोक्षमार्ग तेने विषे वर के० प्रधान, जाणकप्पं के० यानकल्प एटले रथ सदृश ठे अने जेणे पणासियासेसकुवाइदप्पं के० अशेष समस्त कुवादिक अन्यदर्शनीनो जे दर्प एटले अहंकार तेने पणासिय एटले नाश पमास्यो ठे. एवो मयं के० मत ए श्री सिद्धांत ते जिणाणं के० जिन श्रीवीतरागनो ज्ञापेवो ते सरणं बुहाणं के० पंढितोने आधारभूत अने तिजग के० त्रण जगतने विषे प्पहाणं के० प्रधान एवं जे ज्ञान तेने हुं निच्चं के० नित्यप्रत्ये सदैव नमामि के० नमस्कार करुंठुं. ॥ ३ ॥

कुंदिंडु गोस्कीर तुसार वन्ना ॥ सरो
ज हन्ना कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी
पुत्तय वग्ग हन्ना ॥ सुहाय सा अ
म्ह सया पसन्ना ॥ ४ ॥ इति ॥

अर्थः—हवे शासनना अधिष्टायक देव देवीना वर्णननी चोथी श्योय कहे ठे. कुंद के० मचकुंदनुं फूल, इंडु के० चंडमा, गोस्कीर के० गायनुं दुध अने तुसार के० हिम, एना सरखो जेना शरीरनो वन्ना के० वर्ण

हे. जेना हठा केण हाथने विषे सरोज केण कमल ठे,
 वली कमलेनिसत्रा केण कमलने विषे बिराजमान ठे.
 वली पुढ्यवग्ग हठा केण हाथने विषे पुस्तकोनो
 समुह ठे जेने एवी वाएसिरी के० वागीश्वरी नामे
 देवी ते अम्ह के० अमने सुहाय के० सुखने अर्थे सया
 के० सदा सर्वदा पसन्ना के० प्रशस्त ठे प्रधान ठे. इति
 पंचतीर्थिनी स्तुति समाप्त. ॥ ४ ॥

अथ—सिद्धचक्रनी थोय.

सिद्धचक्र नमी पूजी थूणीअें, अरिहंतादिक
 नव पद ज्ञणियें, श्रीपाल चरित्र सदा सूणी
 अें, विमलेश्वर वीर विघन हणियें ॥ १ ॥
 ॥ इति ॥ आ थोय चार वार कही शकाय ॥

अर्थः—सिद्धचक्रजीने नमी पूजीने स्तवना करीए
 अने अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, दर्शन
 ज्ञान, चरित्र अने तप ए नव पदनो जाप करीए अ
 हमेशां श्रीपाल चरित्र सांजळीए तो सिद्ध चक्र
 अधिष्ठायक श्री विमलेश्वर देव श्रीपाल अने मया
 सुंदरीनी पेठे विघ्ननो नाश करे अने सुख संपत्ति आ

संसारदावाना बुटा शब्दना अर्थ.

संसार-संसार
 दाव-वन (नो)
 अनल-अग्नि
 दाह-ताप
 नीरं-पाणी
 संमोह-मोह
 धूली-रज-धूल
 हरणे-काढवामां
 समीरं-वायरो
 माया-कपट
 रसा-पृथ्वी
 दारण-उखेडवाने
 सीरं-हल
 वीरं-महावीरने
 गिरिसार-मेरु पर्वत
 धीरं-धीर-अचल
 भाव-भाव
 अवनाम-नमवुं
 मानव-माणस (ना)
 न-स्वामी
 वूला-मुगट
 वलोल-देदीप्यमान
 गावलि-श्रेणी

मालितानि-पूजेला
 संपूरित-पूर्णा
 अभिनत-नमेला
 लोक-लोक (भक्तलोक)
 समीहितानि-मनोवांचित
 कायं-यथेच्छपणे
 पदानि-पग
 बोध-ज्ञान (वडे)
 अगाधं-गंभीर
 सुपद-सुंदर पद
 पदवीं-रचना
 पूर-समूह
 अभिराम-मनोहर
 जीव-जीव (नी)
 अहिंसा-दया, रक्षा.
 अविरल-अंतररहित
 लहरी-लेहेर, तरंग
 संगम-मलवे
 अगाह-अगाध, अपार
 देहं-शरीर
 चूला-चूलिका
 वेलं-वेली
 गुरु-मोटा

गम-सरखा पाठ
 मणि-रत्न
 संकुलं-भरेलुं
 दूर-छेटे
 पारं-पार
 आगम-सिद्धांत
 जलनिधि-समुद्र
 सादरं-आदरसहित
 साधु-रुडे प्रकारे
 सेवे-सेवुंछुं
 आमूल-मूलसुधी
 आलोल-चपल, डोलतुं.
 बहुल-घणा
 परिमल-सुगंध
 आलीढ-आसक्त
 लोल-चपल
 अलि-भमरो
 माला-श्रेणी

झंकार-गुंजार
 आराव-शब्द
 अमल-निर्मल
 दल-पांदडुं
 आगार-भुवन
 भूमि-जमीन
 निवासे-निवास (वसवुं)
 छाया-कांति
 संभार-समूह
 करे-हाथवाली
 तार-देदीप्यमान
 हार-हार
 वाणी-जिनवाणी
 संदोह-समूह
 देहे-देहवाली
 विरह-वियोग, विरह
 वरं-वरदान
 देहि-आप

॥ अथ संसारदावानी स्तुतिः ॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोह
 धूळीहरणे समीरम् ॥ माया
 रसादारणसारसीरं, नमामिवीरं

गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा
 वावनामसुरदानवमानवेन, चूलावि
 लोलकमलावलिभालितानि ॥ संप्र
 रिताञ्जिनतल्लोकसमीहितानि, का
 सं नमामि जिनराजपदानितानि ॥ १ ॥
 बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराञ्जि
 रामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंग
 मागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरुगम
 मणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागम
 जलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥
 आमूलालोलधूलीबहुलपरिमला
 लीढलोलालिमाला, ऊंकारारा
 वसारामलदलकमलागारञ्जुमीनि
 वासे ॥ बायासञ्चारसारे वरकम
 लकरे तारहाराञ्जिरामे, वाणीसंदो
 हदेहे जवविरहवरं देहि मे देवि

सारं ॥ ४ ॥ इति ॥

अर्थः—संसारदावानल के० संसाररूप वननो जे अग्नि. तेना तापने बुलववाने पाणी समान, अज्ञानरूप रजने हरवाने वायु समान, कपटरूप जे पृथ्वी तेने उखेववाने तीक्ष्ण हल समान अने मेरु पर्वतनी पेठे अचल, एवा श्री वीर जगवान प्रत्ये हुं नमस्कार करुवुं. ?

जावावनाम के० जावे करीने नम्या एवा जे सुर (वैमानिक अने ज्योतिषिक देवता), दानव (ज वनपति तथा व्यंतर देवता) अने मनुष्य, तेना जे इन के० स्वामी, तेना मुकुट उपर रहेली देदीप्यमान एवी जे कमलनी श्रेणिउ तेणे पूज्यां ठे एवां, वली त्रिकरण शुद्धि करी नमनार जव्यजीवोनां मनोवां- वित जेणे सम्यक् प्रकारे पूज्यां ठे एवां, ते श्री जिनराज नां चरणा प्रत्ये यथेष्टपणे हुं नमुवुं. ॥ ९ ॥

बोधागाधं के० ज्ञाने करीने गंज्जीर ठे, तथा मंगलमुक्किठं इत्यादि सुंदर पदोनी श्रेणी रचनारूप वाणी नो जे समूह, तेणे करीने मनोहर ठे एवा, तथा

(१४७)

जीवोनी रक्षारूप अंतर रहीत एवा जे तरंगो, तेना परस्पर मलवे करीने अपार ठे देहस्वरूप जेनुं एवो, तथा सिद्धांतनी चूलिकारूपिणी वेलो ठे जे समुद्रने विषे एवो, तथा मोटा एवा सरखा पाठरूप जे रत्नो तेणे करी जरेलो ठे एवो, तथा जेनो कांठो घणो दूरठे (एटले समुद्रनी पेठे सिद्धांतनो पार पामवो महा दुर्जज्ञ ठे. एटले संपूर्ण श्रुतज्ञानी अथवा केवलज्ञानी सिवाय वी जाथी जेनो पार पमाय नहीं) एवो, तथा प्रधान ठे, पूज्य ठे, एवो जे श्री वीरजिन संबंधी सिद्धांतरूप समुद्र ते प्रत्ये आदर सहित सम्यक् प्रकारे हुं सेवुंठुं. ॥ ३ ॥

आमूलालोकके मूललगे मोलतुं एवुं, वली मकरंद सुगंधना कणीया तेमां घणा सुगंधने विषे मग्न एवा चपल जमराजनी श्रेणीना गुंजार तेना शब्दोए करीने जे प्रधान ठे एवुं; तथा निर्मल पांढमांए करी सहित एवा कमलनी उपर घर ठे जेनुं, तेना मध्य जागनी जूमि ने विषे शय्या ठे, तेने विषे वसवुं ठे जेनुं एवी, (१) वली कांतिना समूहे करी प्रधान ठे एवी, (२) वली प्रधान कमल ठे जेना हाथने विषे एवी, (३) वली

दीप्यमान हारे करीने सुंदर ठे हृदय जेनुं अथवा जे
ना नेत्रनी कीकी सुरनरने हरावनारी ठे एवी, (४) त
था छादशांगी रूप वाणीनो समूह एज ठे शरीर जेनुं
एवी, (५) हे श्रुत देवि ? मुजने प्रधान एवं जे मोक्ष
ते संबंधी वरदान आप. ॥ ४ ॥

स्नातस्याना लुटा शब्दना अर्थ.

स्नातस्य-नवरावेला, नाहेला-ना

अप्रतिमस्य-निरूपम

शिखरे-शीखर उपर

शच्या-इंद्राणीए.

विभोः-प्रभुना

शैशवे-बालपणमां

रूप-रूप

आलोकन-जोवुं

विस्मय-आश्चर्य

आहत-भोगव्यो

रस-रस, पारो.

भ्रांत्या-भ्रांतिवडे

भ्रमत्-भ्रमती

चक्षुषा-आंखवडे

उन्मृष्ट-लूळ्युं

नयन-नेत्र, आंख

प्रभा-कांति

धवलितं-धोलुं करेलुं

क्षीर-क्षीरसमुद्र

उदक-पाणी

आशंकया-आशंकावडे

वक्त्रं-मुख

यस्य-जेनुं

पुनःपुनः-वारंवार

हंस-राजहंस

अंस-पांख, खभो.

आहत-उडाडी

पद्म-कमल

रेणु-रज

कपिश-रातुं पीळुं

अर्णव-समुद्र

अंभो-जल

भृतैः-भस्त्र्या
 कुम्भैः-कलशोए, घडाओए
 अप्सरसां-अप्सराओनां
 पयोधर-स्तन
 भर-समूह
 प्र-अति
 स्पर्द्धाभिः-स्पर्द्धा करनारा
 कांचनैः-सोनाना
 येषां-जेमना
 मंदररत्न-मेरु
 शैल-पर्वत
 जन्म-जन्म
 अभिषेक-अभिषेक
 कृतः-करेलो
 तेषां-तेमना
 नतोऽहं-नमेलो हुं
 क्रमान्-चरण कमलाने
 प्रसूतं-उत्पन्न थयुं
 गणधर-गणधरे
 रचितं-रच्युं, रचेलुं
 द्वादश-वार
 अंगं-अंग (सूत्र) } द्वादशांगी
 चित्रं-आश्चर्यकारक
 वह्मर्थ-घणा अर्थ (वडे)
 युक्तं-सहित

दृषभैः-नायकोए, धोरीओए
 धारितं-धारण करेलुं
 बुद्धिमद्भिः-बुद्धिवानोए
 अग्र-मुख्य
 द्वार-वारणुं
 भूतं-समान
 फलं-फल
 ज्ञेय-जाणवायोग्य
 भाव-भाव, पदार्थ.
 प्रदीपं-दीवो (तेने)
 भक्त्या-भक्तिये
 नित्यं-सदा, हमेशां.
 प्रपद्ये-अंगीकार करेलुं
 श्रुतं-सिद्धांत
 अहं-हुं
 अखिलं-समस्त, आखुं
 निष्पंक-वादलरहित
 व्योम-आकाश
 नील-श्याम
 द्युति-कांति
 अलस-मदघूर्णित
 दृशं-आंखवाला
 बाल-नानो (बीजनो)
 चंद्र-चंद्र, चांदो.
 आभ-कांतिवाला

दंष्ट्रं-दाढीवाला
मत्तं-मदोन्मत्त
घंट-घंट (जा)
रवेण-शब्द
प्रसृत-प्रसरतुं
मद-मद (नुं)
जलं-पाणी
पूरयंतं-पूरतो
समंतात्-सर्व ठेकाणे
आरूढो-उपर वेठेलो. चढेलो
दिव्य-दिव्य

नागं-हाथी (उपर)
विचरति-विचरे छे, चाले
गगने-आकाशमां
काम-इच्छा, मनोरथ.
दः-देनारो
कामरूपी-स्वेच्छाचारी
यक्षः--जक्ष
सर्वानुभूति-सर्वानुभूति(वि.)
दिशतु-वतावे, आपे
कार्येषु-कार्योमां

॥ अथ स्नातस्यानी स्तुति. ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे श
च्या विज्ञोः शैशवे, रूपालोकनवि
स्मयाहतरसत्रांत्या च्रमच्चक्षुषा ॥
जन्मृष्टं नयनप्रज्ञाधवलितं क्षीरोद
काशंकया, वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स
जयति श्री वर्धमानो जिनः ॥ १ ॥
हसांसाहतपद्मेरेणुकपिशक्षीराणां
वांज्ञोभृतैः, कुंजैरप्सरसां पयोधर

(१५३)

अरप्रस्पद्भिः कांचनैः ॥ येषां
मंदररत्नशैलशिखरे जन्मा ज्ञिषेकः
कृतः, सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां
नतोऽहं क्रमान् ॥ १ ॥ अर्हध्वक्र
प्रसूतं गणधरचितं द्वादशांगं वि
शालं, चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगण
वृषज्ञैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षा
ग्रन्थारज्जुतं व्रतचरणफलं ज्ञेयज्ञाव
प्रदीपं, ज्ञत्तया नित्यं प्रपद्ये श्रुत
महमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥३॥
निष्पंकव्योमनील द्युतिमलसदृशं
बालचंदाज्जदंष्ट्रं, मत्तं घंटारवेण प्रसृ
तमदजलं पूरयंतं समंतात् ॥ आ
रूढो दिव्यनागं विचरति गगने
कामदः कामरूपी, यद्गः सर्वानुज्जु
तिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु

(१५४)

सिद्धिम् ॥ ४ ॥ इति ॥

अर्थः—स्नातस्या के० इंद्राणीए मेरु पर्वतना शि
खर उपर न्हवराव्या एवा, अने उपमा नहीं आपी
शकाय एवा, प्रभु वीर जगवानना बालपणाने विषे,
तेमना रूपने जोवाथी उपजेलो जे आश्चर्य तडूप जो
गव्यो एवो जे रस तेनी आंतिथी जेनी आंखो जमी
रही ठे, एवी इंद्राणीए नेत्रनी कांतिथी उजलुं कर्णुं
एवुं जे प्रभुनुं मुख, ते क्षीर सागरना जलनी आशं-
काये करीने लुब्धुं होयनी एवुं लागे ठे एवा श्री वीर
जगवान वारंवार जयवंता वर्त्ते ठे ॥ १ ॥

हंसांसाहत के० राजहंसनी पांखोथी उमाफेली
कमलनी रजथी रातुं पीलुं अएलुं एवुं क्षीरसागरनुं
जल ते वने जरेला, अने अप्सराजना स्तनना समूहो
नी साथे स्पर्धा करनार एवा सोनाना कलशो वने मे
रु पर्वतना शिखर उपर जे तीर्थकरोना जन्मान्तिकेक
सुर असूरना इंद्रोना समूहोए करेलो ठे, ते सर्व तीर्थ
करोना चरणकमल प्रत्ये हुं नमेलो तुं. ॥ २ ॥

(१५५)

अर्हद्वक के० अरिहंत प्रज्जुना मुखशी प्रगट थ
युं, अने गणधरोए रचेलुं तथा आश्चर्यकारक अने घ
णा अर्थोए करी सहित, तथा बुद्धिमंत एवा साधुजना
समुदाय तेना नायकोए धारण कर्युं एवुं, अने मोक्ष
रूपी घरना मुख्य द्वार समान तथा व्रत अने चारित्र
नुं फल ठे जेमां एवुं, अने जाणवा योग्य जे ज्ञाव तेने
विषे दीवा समान एवुं, तथा सर्व लोकने विषे सारजूत
एवुं मोटुं द्वादशांग रूप समस्त सिद्धांत तेने ज्ञक्तिये
करीने निरंतर हुं अंगीकार करुवुं. ॥ ३ ॥

निष्पंकव्योम के० वादले रहित एवुं जे आका
श तेनी कांतिना जेवी श्याम ठे कांति जेनी एवो,
तथा मदघूर्णित ठे नेत्र जेनां, तथा बीजनाचंडमानी
कांति सरखी माढो ठे जेनी एवो, मदोन्मत अने घं
टना शब्दनी साथे प्रसरतुं एवुं जे मदवारि ते प्रत्ये
सर्व जगायें पूरतो एवो दिव्यस्वरूपी जे हाथी ते उपर
वेगो एवो स्वेच्छाचारी तथा मनोरथने आपनारो एवो
सर्वानुज्ञति नामा यद्व आकाशने विषे विचरे ठे ते म
ने निरंतर सर्व कायान विषे सिद्धि देखामो. ॥ ४ ॥

पुष्करवरदीवकृना लुटा शब्दना अर्थः

पुष्करवर-पुष्करवर
दीवकृ-अरधा द्वीपमां

धायङ्-धातकी

संडे-खंडमां

जंबुदीवे-जंबुद्वीपमां

विदेहे-महाविदेह क्षेत्रमां

धन्माङ्गरे-धर्मनी आदिना
करनारने

नमंतामि-नमस्कार करुंछुं

तम-अज्ञान (रूप)

तिमिर-अंधकार

पडल-समूह

विद्धंसणस्स-नाश करनारने

सुरगण-देवसमूह

नरिंद-चक्रवर्ती (ओए)

महिअस्स-पूजेलाने

सीमा-मर्यादाने

धरस्स-धारण करनारने

पप्फोडिअ-अत्यंत तोडी नाखी

मोहजालस्स-मोहजालने

जाइ-जन्म, जाति

सोग-शोक

पणासणस्स-नाश करनारने

पुष्कल-पुष्कल, वणुं.

विसाल-विशाल

आवहस्स-लावनार, करनारने.

को-कोण

दाणव-दानव

अच्चिअस्स-पूजेला

उवलम्भ-पामीने

करे-करे

पमायं-प्रमाद, आलस

सिद्धे-सिद्ध एवा

भो-हे (लोको)

पयओ-आदरवाळो

जिणमए-जिनमतने

नंदी-सन्तुद्धि

देवं-वैमानिक देवने

नाग-नागदेव

मुवन्न-ज्योतिषिदेव

किन्नर-व्यंतरदेव

स्सम्भूय-सद्भूत, सत्य

लोगो-लोक, प्रकाश, त्रिकालज्ञान

जथथ-ज्यां

पइठ्ठिओ-रहेलुं

जगमिणं-आ जगत

तेलुक्क-त्रण लोक
मच्च-मनुष्य
असुर-भवनपाति
बहुउ-दृष्टि पापो
सामओ-शाश्वत

विजयओ-विजयवंत थाओ
उत्तरं-प्रधान
सुअस्स-श्रुत सिद्धांतने
भगवओ-भगवंत

॥ अथ पुस्करवरदीवने लिख्यते ॥
पुस्करवरदीवडे, धायइसंमे अ जं
बुदीवेअ ॥ जरहेरवयविदेहे, धम्मा
इगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तप्ततिमिर
पम्लविद्धं, सणस्स सुरगण नरिं
दमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, प
प्फोमिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥
जाई जरामरणसोगपणासणस्स,
कह्वाणपुस्कल विसालसुहावह
स्स ॥ को देवदाणवनरिंदगणच्चि
अस्स, धम्मस्ससारमुवलप्प करे
पमायं ॥ ३ ॥ सिधे नोपयत्त णमो
जिणमए, नंदी सया संजये ॥ देवं

(१५७)

नाग सुवन्न किन्नरगण, सप्रूय ज्ञाव
त्रिए ॥ लोगो जह पइठिठ जगमि
णं, तेलुक मञ्चासुरं ॥ धम्मो वड्डु
सासु विजयु, धम्मसुत्तरं वड्डु
॥ ४ ॥ सुअस्स जगवु ॥ करेमि
कानुस्सग्गं वंदण वत्तिअप्राएण ॥

अर्थः—पुरस्करवर दीवहे केण अरधा पुष्करवरः द्वी
पने विषे वेवे, धातकि खंरुने विषे वेवे, तथा जंबु द्वीप
ने विषे एक एक ए रीते अढीद्वीपने विषे पांच जगत,
पांच अरवत, अने पांच महाविदेह क्षेत्र. सर्व मन्त्री
पंदर कर्मभूमि क्षेत्रने विषे धर्मनी आदिना करनार एवा
श्री तीर्थकर देवने हुं नमस्कार करुं तुं. ॥ १ ॥

तमतिमिर केण अज्ञान रूप जे अंधकार, तेनो स
मूह तेनो विनाश करनार एवो, वली देवताना समूह
अने राजाउ तेमणे पूज्यो एवो, अने मोहभिर्यात्व
रूप जालना स... नेणो फोड्यो ठे एवो,

(१५९)

अने नय निक्षेपादिक मर्यादानो धरनार. एवो जे सिद्धांत
ते प्रत्ये हं वांडु बुं. ॥ २ ॥

जाइ जरा के० जन्म, जरा, मरण अने शोग. ते
नो नाश करनार, वली मंगलिकनो करनार अने सं
पूर्ण विशाल एवा आनंदरूप मोह सुखनो करनार ठे.
वली वैमानिक अने पाताल वासी देवो तथा राजा ते
मना जे समूह तेमणे पूज्यो एवो जे श्री सिद्धांत, ते
नो रहस्यपामीने कोण ज्ञव्य जीव (विवेकी पुरुष)
प्रमाद करे. ॥ ३ ॥

सिद्धेजो के० हे ज्ञानवंत लोको उपर वर्णवेलो
एवो नयनिक्षेप प्रमाणादिके करी जे सिद्ध एटले नि
ष्पन्न करेलो एवो जिनमत एटले श्री तीर्थकरनो प्रका
शेलो जे सिद्धांत, ते जिनमतना प्रसादथी मारे चारि
त्रने विषे हमेशां सदा समृद्धि आनं. ते संयम केवुं ठे
के वैमानिक देवता, पाताल वासी नागेंड, जेनो सुव
र्ण जेवो वर्ण ठे एवा ज्योतषी, तथा व्यंतरना जे समूह,
तेमणे साचा ज्ञावे करीने पूज्यो एवो ठे. वली लोका

लोकनुं त्रिकाल विषयी ज्ञान, जे सिद्धांतने विषे रहुं
ठे एवो, त्रणे जग एटले उर्ध्व, अधो, अने तिर्गो ए
त्रण लोक मध्ये मनुष्य, देव, तिर्यंच, अने नारकी
इत्यादिकं आ जगमिणं के० आ सर्व जगत जे सिद्धां
तना वले करी जणाय ठे, एवो सिद्धांत रूप धर्म वृद्धि
ने पामो. ते श्रुत धर्म अर्थशी सदैव शाश्वतो ठे. पर
वादीनुने जीतवाशी विशेषपणे करी विजयवंतो ठे
वली जेम चारित्र धर्मने घणुं उत्तरोत्तर प्रधानपणुं
आय, तेम सिद्धांत वृद्धिने पामो. सुअस्स के० (१) व
ली ते श्रुतज्ञान केवुं ठे ? महिमावंत ठे. तेने आराध
वाने अर्थे कानस्सग्ग करुं तुं; (२) हे जगवंत श्रुत सि
द्धांतने आराधवा ज्ञणी कानस्सग्ग करुं तुं; (३) एवा
श्रुत सिद्धांत रूप जगवंतने आराधवाने अर्थे कान
स्सग्ग करुं तुं. ॥ ४ ॥

॥ सिद्धाणां बुद्धाणां ना बुटा शब्दना अर्थ ॥

गयाणं-गएलाने, पामेलाने
वरंपर-परंपराए
लोक-लोक (ना)

अग्गं-अग्रभागने
उवगयाणं-पामेलाने
देवाण-देवताओना

वि-पण
पंजलि-हाथ जोडीने
तं-तेने
देवदेव-देवताना राजा
महिअं-पूजेलाने
सिरसा-माथावडे
महावीर-महावीरस्वामीने
इकौ-एक
वसहस्त-वृषभ सरखाने
वद्धमाणस्त-वर्द्धमानस्वामीने
सागराओ-समुद्रथी
तारेइ-तारे छे
नरं-पुरुषं
व-वली
नारिं-नारीने, स्त्रीने.

उज्जित-गिरनार
सेल-पर्वतना
सिहरे-शिखर उपर
दिखा-दिक्षा
नाणं-केवल ज्ञान
निसीहिआ-मोक्ष कल्याणक
जस्त-जेमनुं
अरिठ्ठनेमि-अरिठ्ठनेमि
चत्तारि-चार
अठ्ठ-आठ
दो-वे
परमठ्ठ-परमार्थे करी
निठ्ठिअठ्ठा-सिद्ध थया छे अर्थ
जेमना
दिसंतु-आपो

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंप
रगयाणं ॥ लोअग्रग मुवगयाणं
नमो सया सबसिद्धाणं ॥ १ ॥
जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली
नमंसंति तं देवदेवमहिअं, सिरसा

(१६९)

वंदे महावीरं ॥ ५ ॥ इकोवि नमु
कारो, जिणवरवसहस्स वध्दमा
णस्स ॥ संसारसागरान्, तारेइ
नरं व नारीं वा ॥ ३ ॥ उज्झित से
लसिहरे, दिक्का नाणं निसीहि
आ जस्स ॥ तं धम्मवक्कवाट्ठिं, अरि
ठ्ठनेमिं नमंसासि ॥ ४ ॥ चत्तारि
अठ्ठ दस दो, अ वंदिआ जिणव
रा चण्डीसं ॥ परमठ्ठनिठ्ठिअठ्ठा,
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥

अर्थः—सिद्धाणं बुद्धाणं केण सिद्ध थया वे तेमने,
ज्ञान वने समस्त वस्तु तत्त्वना जाणानारा, संसार स
मुड्ढना पारने पामेला, पेहेला मिच्छयात्त्व गुणगणा
थी अनुक्रमे चौदमा गुणगणा सुधी चम्वुं अथवा
हपक श्रेणीथी शुद्ध, ज्ञान, दर्शन, चारित्र्येने ज्ञाने
पामवुं तेने परंपरा कहीए. ते परंपराए करी सिद्ध सं

या ठे, अने चौद राजलोकना अग्रजागने विषे एटले सिद्धशिलानी उपर योजनने चोवीसमे जागे पहोंच्या ठे. एवा सर्व सिद्धेने निरंतर नमस्कार होजो. ॥ १ ॥

जो देवाणवि देवो केण जे देवोना पण देव ठे, जेमने देवताळ हाथ जोमी नमस्कार करे ठे. ते देव तातुना इंड वने पूजाएला एवा श्री महावीर स्वामी ने हुं मस्तके करी वांडुं तुं. ॥ २ ॥

इकोवि केण जिणवर एटले सामान्य केवलीने विषे वृषज्ज समान एटले प्रधान एवा श्री वर्धमान स्वामीने एक पण नमस्कार जावे करीने कयों उतो संसार रूपी समुद्धी पुरुषोने, वली स्त्री प्रत्ये, उपलक्षणथी कृत्रिम नपुंसक प्रत्ये तारे ठे. अहींआं जे दिगंबरो कहे ठे के स्त्रीने मोक्ष नथी पण ते जूतुं ठे, के मके ज्ञान, दरशन, चारित्र आराधवा आश्री स्त्री पण पुरुषनी परेज ठे एम समजवुं. ॥ ३ ॥

उज्जित सेल सिहरे केण गिरनार पर्वतना शिखने विषे सहस्राश्रवनमांहे दिहा कडयाणक, तथा

ज्ञान कल्याणक अने निर्वाण कल्याणक ए त्रणे क
 ल्याणक जे स्वामीनां अयां ठे, ते धर्मने विषे चक्रव
 र्त्ती समान, एवा वावीसमा श्री अरिष्टनेमिनाथ जग
 वानने हुं नमस्कार करुं तुं. ॥ ४ ॥

चत्वारिअठ के० हवे अष्टापद तीर्थने विषे नम
 वाने अर्थे कहे ठे. अष्टापद पर्वतने विषे जरत चक्रव
 र्त्तिए जे चतुर्मुख प्रसाद कराव्यो ठे, तेने विषे थाप्या
 ठे दक्षिण दिशाए चार, पश्चिम दिशाए आठ, उत्तर
 दिशिने विषे दश, अने पूर्व दिशाने विषे वे, सर्व
 मली वर्त्तमान चोवीस तीर्थकरो ते परमार्थे करी नि
 ष्टितार्थ थया एवा रुषनादि चोवीस तीर्थकर जग
 ते मने मोक्ष थो. ॥ ५ ॥

ए गाथा जे प्रकारे श्री गौतम स्वामीए
 पद उपर देवनी वंदना करतां करी ठे, ते
 निबंधन अएली ठे आ सिद्धस्तवनी वधी मली
 गाथा, वीस पद, वीस संपदा, लघु अक्षर एकसो ए
 वन, अने गुरु अक्षर पचीस, मली कुल
 दोतेर अक्षरो ठे.

॥ वेङ्गावच्चगराणां तुटा शब्दना अर्थ ॥

वेयावच्च-वैआवच्च
गराणं-करनारने
संति-शांति

समादिष्टि-समकित दृष्टि
समाहि-चित्तनी समाधि

॥ अथ वेङ्गावच्चगराणं ॥

वेङ्गावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्म
द्विषिसमाहिगराणं, ॥ १ ॥ इति ॥
करेमि कानस्सग्गं अन्नहणं ॥

अर्थः-सवह उच्चिअ करणं एम जगवंते कहुं
ठे. ते माटे उचित करवा जणी श्री वीतरागना वै
आवच्च करनार देवताना प्रत्ययने अर्थे कानस्सग्ग क
रवा सारु आवी रीते कहेवुं, ते कहे ठे. वेङ्गावच्चगराणं
केण वीतरागना शासननी जक्ति करनार गोमुख यहु
आदे देइने रक्षारूप जे वेयावच्च सानिध्यना करनार,
तथा सर्व संघने शांतिना करनार तथा सम्यक् दृष्टि
जव्य जीवोने समाधिना करनार, ते देवोने आश्रयीने
तेने निमित्ते हुं कानस्सग्ग करुंहुं. अहीआं अन्नहणं नस
सिएणं कहीए, केमके देवता अविरति ठे, तेथी वांदवा

पूजवा योग्य नहीं. माटे.

विधि:—पञ्चकाण कर्या पठी खमासमण देइ इन्हाकारेण कही, वमेरा अथवा पोते चैत्यवंदन कहीने पठी जंकिंचि नमुहुणं कही उज्जा अइने अरिहंत चेइआणं कहीने एक नवकारनो कानुस्सग्ग करी नमोऽर्हत्तुणं कहीने प्रथम शोय कहेवी. पठी लोगस्स, सब्वलोए, अरिहंत चेइआणं कहीने एक नवकारनो कानुस्सग्ग पारीने बीजी शोय कहेवी. पठी पुस्करवरदी कही सु अस्स जगवत्तं करेमि कानुस्सग्गं वंदणं कही एक नवकारनो कानुस्सग्ग पारी त्रीजी शोय कहेवी. पठी सिद्धाणं बुद्धाणं कही वेयावच्चगराणं करेमि कानुस्सग्गं अन्नत्तुणं कही- एक नवकारनो कानुस्सग्ग पारी, नमोऽर्हत्तुणं कही चोथी शोय कहेवी. पठी वेसी हाथ जोमी नमुहुणं कहेवुं, पठी चार खमासमण देवा पूर्वक जगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु प्रत्ये शोत्त वंदन करीए. पठी इन्हा कारेण ॥ देवसि प्रतिक्रमणे ठाउं, एम कही जमणो हाथ चवला कटासणा उपर थापीने इत्तं सब्वसवि देवसिअणं कहेवुं.

देवसिञ्च पम्कमणे गानं ना तुटा शब्दना अर्थ.

सव्वस्स-सर्वने
दुच्चिंतिअ-माटुं चित्तेलुं
दुप्पासिअ-माटुं वोलेलुं

दुच्चिद्विअ-माठी चेष्टारूप
इच्छं-हुं इच्छुंलुं

॥ अथ देवसिञ्च प्रतिक्रमणे गानं ॥

इञ्जाकारेण संदिसह जगवन्

देवसिञ्च पम्कमणे गानं ॥

इञ्जं सव्वस्सवि, देवसिञ्च, दुच्चिंतिञ्च,
दुप्पासिञ्च, दुच्चिद्विञ्च, तस्स
मिञ्जामि इकमं ॥

अर्थः—इञ्जाकारेण केण आपनी इञ्जाए करीने हे
जगवन्त आदेश आपो के हुं देवसिञ्च पम्कमणामां
रहुं. एम कहे एटले गुरु आदेश आपे, त्यारे इञ्जं एम
कही चवत्ता कटासणापर जमणो हाथ आपी नीचो
नमी सव्वस्सवि कहे.

सव्वस्सवि केण दिवस संबंधी अतिचार ते दुच्चिं

तित जे दुष्ट काम तेने चिंतववाथी थयो, वली दुर्जा
 षित ते उपयोग रहित माठी ज्ञाषा बोलवा थकी थ
 यो होय ते, तथा दुश्चेष्टित जे उपयोग रहित हालवा
 चालवा थकी तथा कामासनादिक एवी कायानी दुष्ट
 चेष्टा रूप प्रवृत्ति करवा थकी थयो होय, ते सर्व पण
 अतिचारने मिथ्या दुष्कृत देनं वुं.

विधिः—पठी उच्चा अशने करेमिज्जंते कहेवुं पठी
 इहामि ठामि काजस्सग्गं जो मे देवसिन्नुं कहेवुं.

जो मे देवसिन्नुना वुटा शब्दना अर्थ.

जो-जे
 मे-महारे जीवे
 देवसिओ-दिवस संबंधी
 अइआरो-अतिचार
 कओ-कर्यो
 काईओ-काया संबंधी
 वाईओ-वचन संबंधी
 माणसिओ-मन संबंधी
 उस्सुत्तो-उत्सूत्र संबंधी
 उमग्गो-अवला मार्गथी
 अकप्पो-अविधिथी करेलुं
 अकरणिज्जो-नहीं करवायोग्य

दुज्जाओ-दुर्ध्यान
 दुविचिंतिओ-मातुंकार्यविचारुं
 अणायारो-अनाचार
 अण-नहीं
 इच्छियव्वो-इच्छवा योग्य
 अ-नहीं
 सावग-श्रावक
 पाउग्गो-प्रायोग्य, उचित.
 नाणे-ज्ञानने विपे
 दंसणे-दर्शनने विपे
 चरित्ताचरित्ते-देश विरति व
 रित्रने विपे

(१६९)

सुए-सूत्रने विषे
तिण्हं-त्रण(नुं)
गुत्तिणं-गुप्तिओना
चउण्हं-चार (ना, मां)
कसायाणं-कषायोनो
पंचण्हं-पांच(नो)
अणुव्वयाणं-अणुव्रतोनुं

गुणव्वयाणं-गुणव्रतोनुं
सिख्खा-शिक्षा
वारस-वार
विहस्स-प्रकारना
खंडियं-खंडयुं
विराहियं-विराध्युं

॥ अथ इहामि ठामि कान्हस्सग्गं जो मे देवसिउ ॥

इहामि ठामि कान्हस्सग्गं जो मे
देवसिउ अइयारो कउ काईउ
वाईउ माणसिउ उस्सुत्तो उम्मग्गो
अकप्पो अकरणिज्जो उज्जान उ
व्विचिंतिउ अणायारो अणिन्नि
अव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंस
णे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए
तिएहं गुत्तीणं चउएहं कसायाणं
पंचएहमाणुव्वयाणं तिएहं गुणव्व
याणं चउएहं सिक्कावयाणं वार

तित जे दुष्ट काम तेने चिंतववाथी थयो, वली दुर्जा
षित ते उपयोग रहित माठी ज्ञाषा बोलवा थकी थ
यो होय ते, तथा दुश्चेष्टित जे उपयोग रहित हालवा
चालवा थकी तथा कामासनादिक एवी कायानी दुष्ट
चेष्टा रूप प्रवृत्ति करवा थकी थयो होय, ते सर्व पण
अतिचारने मिथ्या दुष्कृत देनं बुं.

विधिः—पढी उज्जा थज्ञे करेमिज्जंते कहेवुं पढी
इहामि ठामि कान्दस्सगं जो मे देवसिद्धं कहेवुं.

जो मे देवसिद्धना तुटा शब्दना अर्थ.

जो-जे

मे-महारे जीवे

देवसिओ-दिवस संबंधी

अइआरो-अतिचार

कओ-करो

काईओ-काया संबंधी

वाईओ-वचन संबंधी

माणसिओ-मन संबंधी

उस्सुत्तो-उत्सूत्र संबंधी

उमगो-अवला मार्गथी

अकप्पो-अविधिथी करेलुं

अकरणिज्जो-नहीं करवायोग्य

दुज्जाओ-दुध्यान

दुविच्चित्तिओ-माहुंकार्यविचारुं

अणायारो-अनाचार

अण-नहीं

इच्छियव्वो-इच्छवा योग्य

अ-नहीं

सावग-श्रावक

पाउग्गो-प्रायोग्य, उचित्त.

नाणे-ज्ञानने विषे

दंसणे-दर्शनने विषे

चरित्ताचरिज्जे-देश विरति च

रित्रने विषे

(१६९)

सुए-सूत्रने विषे
तिण्हं-त्रण(नुं)
गुत्तिणं-गुप्तिओना
चउण्हं-चार (ना, मां)
कसायाणं-कषायोनो
पंचण्हं-पांच(नो)
अणुव्वयाणं-अणुव्रतोनुं

गुणव्वयाणं-गुणव्रतोनुं
सिख्खा-शिक्षा
वारस-वार
विहस्स-प्रकारना
खंडियं-खंडयुं
विराहियं-विराध्युं

॥ अथ इत्थामि ठामि कान्हस्सग्गं जो मे देवसिनु ॥

इत्थामि ठामि कान्हस्सग्गं जो मे
देवसिनु अईयारो कनु काईनु
वाईनु माणसिनु उरसुत्तो उम्मग्गो
अकप्पो अकरणिज्जो इज्जानु इ
विचिंतिनु अणायारो अणिन्धि
अवो असावगपाउग्गो नाणे दंस
णे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए
तिएहं गुत्तीणं चउएहं कसायाणं
पंचएहमाणुव्वयाणं तिएहं गुणव्व
याणं चउएहं सिक्खावयाणं वार

सविहस्स सावगधम्मस्स जं खंमि
अं जं विराहिअं तस्स मिच्चामि
डुक्कमं ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थः—जोमे देवसिउ के० जे में दिवस संबंधी
अतिचार कर्यो होय, ते अतिचार केवी रीते लाग्यो,
ते कहे ठे. काया संबंधी, वचन संबंधी, अने मन संबंधी,
ते अतिचार विगते करीने कहे ठे. जे कांइ सिद्धांत
विरुद्ध बोलायुं, तेणे करीने उत्पन्न अयुं जे उन्मार्गनुं प्र
वर्त्ताववुं, तेथी नीपनो जे अकल्प एटले अकल्पनीय
कार्य करवे करीने अकरणिज्जो एटले जे नहीं करवा
योग्य तेवा कार्यने करवे करीने जे अतिचार लाग्यो.
ते रीते काया अने वचन संबंधी अतिचारनुं स्वरूप
कह्युं. हवे मन संबंधी अतिचारनुं स्वरूप कहे ठे. उपर
कहेलुं नहीं करवा योग्य काम करवाथी दुध्यान ते चि
त्तनुं एकाग्रपणे आर्त्त, रौइ ध्याननुं ध्याववुं, जे माटे ड
ध्यान, ते माटेज डुर्विचिंतित एटले चल चित्तपणे करी
अशुभ कार्यने मनमां चिंतववुं, जे माटे ते डुर्विचिंतित,
ते माटेज अनाचार कहीए. एटले जे अकी व्रत्तादि

कनो सर्वथा जंग आय, जे माटे ते अनाचार, ते माटे ज इहवा वांढवा योग्य नथी; जे माटे ते वांढवा योग्य नथी ते माटे ज ते श्रावकने प्रायोग्य एटले उचित नथी, इति मन संबंधी अतिचार. ए सर्व अतिचार शाने विषे लगामथा होय ? ते कहे ठे.

नाणे के० वस्तुनुं यथार्थ जाणपणारूप जे ज्ञान तेने विषे, देवादिक त्रण तत्त्वनुं साचुं श्रद्धान रूप जे दरज्ञान तेने विषे, चरित्ताचरिते के० कांइ एक विरति रूप कांइ एक अविरतिरूप एवं जे देशविरतिरूप श्रावकनुं चारित्र तेने विषे, अथवा ज्ञानादिक निज गुण मांहे देश थकी जे स्थिरता, ते रूप जे चारित्रा चारित्र तेने विषे. सुए के० श्रुत सिद्धांतने विषे अकाले ज्ञणवाथी अतिचार लगाड्यो होय, सम्यक्त्वरूप सामायकने विषे जिन वचनमां शंकादिक अतिचार लगाड्यो होय, मनो गुप्ति, वचन गुप्ति, अने काय गुप्ति ए त्रण गुप्तिने अणपालवे करी, क्रोध, मान, माया, अने लोभ ए चार कषायने करवे करी, पांच अणुव्रतमां थी तथा त्रण गुणव्रतमांथी तथा चार शिक्षाव्रतमां

हेथी घणुं शुं कहीए ? ए पूर्वोक्त वार प्रकारना व्रत रूप, श्रावक संबधी जे धर्म ते मांहेथी मारे जीवे जे खंरुचुं एटले देश थकी जाग्युं, जे विराध्युं एटले सर्व थकी विराध्युं, तेनुं दुष्कृत एटले पाप जे मने लाग्युं होय ते मिच्छा केण मिछ्या आन एटले निष्फल आन.

विधिः—पढी तस्सनत्तरी, अन्नन्न नससिएणं कही अतिचारनी आठगाथानो कानस्सग्ग करवो ना आवरे तेणे आठ नवकारनो कानस्सग्ग करवो.

नाणंमि दंसणंमिअना बुटा शब्दना अर्थ.

नाणंमि—ज्ञानने विषे
 दंसणंमि—दर्शनने विषे
 चरणंमि—चारित्रने विषे
 तवंमि—तपने विषे
 तह—तेमज
 विरियंमि—वीर्यने विषे
 आयरणं—आचरण, व्यापार
 आयारो—आचार
 पंचहा—पांच प्रकारे
 भणिओ—कहो
 काले—काल
 विणये—विनय

बहुमाणे—बहुमाने
 उवहाणे—उपधान
 अनिन्हवणे—(गुरु)नहींओळववा
 वंजण—शुद्ध उच्चार
 अथ—अर्थ
 तदुभये—ते वे
 अट्टविहो—आठ प्रकार
 निस्संकिअ—शंकारहीत
 निक्कंखिअ—वांछारहीत
 निव्वित्तिगिच्छा—फलना संदे
 रहीत
 अमूढदिट्ठीअ—अमूढ द्रष्टि

उववूह-प्रशंसा करवी
 थिरीकरणे-स्थिर करवुं
 वच्छल-भक्तिभाव, मैत्रीभाव
 प्पभावणे-प्रभावना
 पणिहाण-प्रणिधान
 जोग-योग
 पंचहिं-पांचवडे
 समिईहिं-समितिवडे
 तिहिं-त्रणवडे
 गुत्तीहिं-गुप्तिओवडे
 चरित्तायारो-चारित्राचार
 नायव्वो-जाणवो
 वारस-वार
 विहंमि-प्रकारने विषे
 तवे-तपने विषे
 सभ्यंतर-अभ्यंतर साथे
 वाहिरे-वाह्याने विषे
 कुसल-तीर्थकरोए
 दिट्ठे-प्रकाश्युं
 अगिलाइ-दुगंछारहीत
 अणाजीवि-आजीविकारहीत
 सो-ते
 तवायारो-तपाचार

अणसणं-अनशन
 ऊणोवारिया-ऊणोदरी
 वित्ती-दृति, आजीविका
 संखेवणं-संक्षेप, संकोच
 रस-रस
 चाओ-साग
 किलेसो-क्लेश, दमयुं
 संलीणया-संलीनता
 वज्जो-वाह्य
 पायच्छित्तं-प्रायश्चित्त
 विणओ-विनय
 सज्झाओ-सज्झाय
 ज्ञाणं-ध्यान
 उस्सग्गो-काउस्सग्ग
 अण्णितरओ-अभ्यंतर
 अण्णिगूहिअ-अण्णदांकेलुं
 वल-वल
 पडिक्कमइ-उद्यम करे छे
 जहुत्तं-यथोक्त
 आउत्तो-सावधान धको
 जुंजइ-जोडे
 जहाथामं-यथाशक्ति

(१७४)

॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि त
वंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं
आयारो, इअ एसो पंचहा नणि
उ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे,
उवहाणे तह अनिएहवणे ॥ वंज
ण अठ तडुअए, अठविहो नाण
मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ नि
कंसिअ, निद्वितिगिह्वा असूढ दि
ठीअ ॥ उववूह थिरीकरणे, व
ठल प्पन्नावणे अठ ॥ ३ ॥ पणि
हाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं
तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो,
अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥
बारसविहंमि वि तवे, सप्रिंतर बा
हिरे कुसलदिठे ॥ अगिलाइ अ

णाजीवी, नायवो सो तवायारो ॥ ५ ॥
 अणसण मूणोयरिआ, वित्ती सं
 खेवणं रसञ्चान कायकिल्लेसो सं
 लि, णयाय बद्धो तवो होइ ॥ ६ ॥
 पायत्तितं विणु, वेयावच्चं तहेव
 सञ्चान ॥ ऊणं उस्सग्गो विअ,
 अप्पिंतरु तवो होइ ॥ ७ ॥ अ
 णिगूहिअ बल विरिनु, पम्किम
 इ जो जहुत्तमाउंतो ॥ जुंजइ अ
 जहायामं, नायवो वीरिआयारो ॥ ८ ॥

अर्थः—नाणंमि केण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप
 अने वीर्य ए पांचने विषे आचरवुं तेने आचार कहीए.
 एम ते आचार पांच प्रकारे ज्ञानीए कह्यो ठे. एटले ज्ञा
 नाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्या
 चार. ११। तेमां प्रथम ज्ञानाचार कहे ठे. काले विणए केण
 जे अवसरे जे ज्ञणवानुं होय तेज ज्ञणवुं तेने काल क
 हीए, विनय पूर्वक ज्ञान ज्ञणवुं, ज्ञान तथा ज्ञानीने विषे

अंतरंग प्रेम करवो तेने बहुमान कहीए, नवकारादि सूत्रोना तपो विशेष उपधान योगनुं वेहेवुं तेने उपधान कहीए, तेमज जणावनार गुरुने उलववो नहीं; सूत्रनो अक्षर शुद्ध जणवो, खोटुं न जणवुं, शुद्ध उच्चार करवो, अर्थ शुद्ध जणवो, सूत्र अने अर्थ ए बने शुद्ध जणवां, ए आठ प्रकारे ज्ञानना आचार जेम कहा ठे तेमज करीए, तेने ज्ञानाचार कहीए. अने तेथी विपरीत करीए ते वारे अतिचार लागे. ॥१॥ हवे दर्शनाचार कहेठे.

निस्संक्रिय केण जगवंते कहेलां जे तत्त्व तेने विषे शंका करवी नहीं, एकांते साचुं मानवुं ते पहेलो निःशंकित गुण. बीजो बीजा दर्शननी वांछा करवी नहीं, लगारेक तप, कृमादिकनो गुण देखी पर दर्शननो अजिलाष करवो नहीं, ए निकांक्षित गुण. जिनधर्मने विषे क्रियानुष्ठानादिकना फलने विषे संदेह करवो नहीं, अथवा साधु साधवीना मल मलीन शरीर तथा वस्त्र देखी निंदा करवी नहीं, ए त्रीजो निर्विजीगुप्सा गुण कहीए. चौथो अमूढ दृष्टिपणुं एटले मिथ्यात्वीना धर्मनो प्रज्ञाव देखीने आज धर्म साचो हशे एवुं मनमां

चिंतवन करवुं नही, एटले एवा मूढ दृष्टि न अरुं. पां
चमो उपवृंहणा एटले सम्यक्त्व धारी गुणवंतना थो
ना पण गुणानी प्रशंसा करवी. ठो स्थिरिकरण एट
ले जिनधर्मथी परुता प्राणीने सहाय आपी धर्मने
विषे स्थिर करवो ते. सातमो वात्सल्य एटले साधर्मी
नी उपर एकांतपणे हित अने नृक्ति करवी ते. आठमो
जेणे करी जिनशासन दीपे एवां काम करवाथी घणा
लोको बोधिबीज पामे, तेम करवुं, जे देखीने मिथ्या
त्वी पण पुण्य उपार्जे तेने प्रज्ञावना कहीए. ए आठ
प्रकारे दर्शनाचार जाणवो तेथी विपरीत चाले तो द
र्शनाचारना अतिचार लागे. ॥ ३ ॥

हवे चारित्राचार कहे ठे:-पणिहाण के० एकाग्र
सावधानपणे करी, मन वचन तथा कायाना योगयुक्त
एवो, पांच समिति अने त्रण गुप्तिए करी आठ प्रकारे
ए चारित्राचार आय ठे, एम जाणवुं. ए आठ बोले प्र
वर्ते त्यारे चारित्राचारना अतिचार न लागे, अने तेथी
विपरीत करे तो लागे. ते माटे साधुने निरंतर अने
श्रावकने सामायक पोसह लीधे अवश्य पांच समिति
अने त्रण गुप्ति पालवी ॥ ४ ॥

(१७८)

हवे तपाचार कहे ठे. बारस विहंमि वि तवे के
बार प्रकारनुं तप ठे. ठ जेदे अच्यंतर अने ठ जेदे
बाह्य तप बे मली बार प्रकारनुं तप तीर्थकरे कहेलुं
ठे. ते तप, ग्लानी जावे एटले डुगंठा जावे रहित करे,
आजीविकाने अर्थे तप करे नहीं, एटले जो हुं तप करूं
तो तपस्वी कहेवाउं पेट जराइ चाले, मने लोको त
पसी जाणी धन प्रमुखवने मारी नक्ति करे, एवी बु
द्धिी तप न करवुं, एम शुद्ध रीते करे तेने तपाचार
जाणवो, एथी विपरीतपणे प्रवर्त्ते तो अतिचार लागो।५।

हवे बाह्य तपना ठ जेद कहे ठे. अणसण के
पहेलुं अनशन ते, उपवासादि करवुं ते आहारनो त्या
ग थोमा वखत सुधी, अथवा जावजीव सुधी ते अणस
ण, बीजुं पांच सात कोलीआ नुंठा जमवा, वस्त्र पात्र
नुंठां राखवां वगेरे ते नणोदरि. त्रीजुं वोहोरवा जतां
साधु घरनी संख्या नकी करे, एटले पांच सात के आट
लांज घेरथी सूऊतो आहार मले तो लेवो नहीं तो उ
पवास करवो, तेने वृत्तिसंक्षेप कहीए, अने
तो सवारे पञ्चक्राण करतां दश के पंदर जेटलां
मोकलां राख्यां होय, तेनुमांथी वे अथवा त्रण के

धारे उठां करे तेने वृत्तिसंक्षेप कहीए. ठ विगयमांथी एक बे विगय तथा लीलोतरी प्रमुखना जे नियम लइए तेने रस त्याग तप कहीए, टाढ तथा तापनी आ तापना लेवी, लोच कराववो, उघामा पगे चालवुं, जू मि उपर सूवुं एम शरीरने कष्ट देवुं तेने कायक्लेश तप कहीए. कूकमीनी पेठे हाथ, पग, प्रमुख अंगो पांग संवरी राखवां, विषय कषायने उदीरवा नहीं, उ दय आवे तेने निष्फल करवा, तेने संलीनता तप कहीए, ए ठ प्रकारनुं बाह्य तप ठे. ॥ ६ ॥

हवे अभ्यंतर तपना ठ जेद कहे ठे. पायश्चित्तं केण गुरुनी पासै पाप अपराधनुं प्रकाशवुं, ते निवारण करवाने अर्थे गुरुनुं कहेलुं जे तप ते करवुं तेने प्रथम प्रायश्चित्त तप कहीए. बीजो विनयतप ते गुरुनो विनय आठ प्रकारे करवो, (१) गुरुने देखीने उज्जा थवुं, (२) गुरुने आवता देखी सामा जवुं, (३) गुरुने देखीने हाथ जोमी मस्तके चढावीए, (४) गुरुने बेसवाने आसन आपवुं अने पोते आसने बेसवानुं मूकी देवुं, (५) ज्यां सुधी गुरु उज्जा होय त्यां सुधी बेसवुं नहीं, (६) गुरुने वांदगां देवां, (७) गुरुनी पर्युपासना करवी, सेवा करवी,

विसामण करवा, (८) तथा गुरु जाय त्यारे तेमनी पा
श्रुत बोलाववा जवुं, ए आठ प्रकारे विनय तप कहीए.

वैयावृत्य तप ते आहारादिक आणी आपवां के
रु पग चांपवा प्रमुख आचार्यादिक दश पुरुषनी ज
क्ति करवी एटले आचार्य, ग्लान, बाल, वृद्ध, तप
स्वी, नवदीक्षित साधु, साधमीं, कुल (एक आचार्य
ना संतानने कुल कहे ठे), गह्व (घणा आचार्यना सं
तान एकठा थएला होय ते), अने संघ (साधु, सा
धवी, श्रावक, श्राविका). ए दशनुं जे वैयावच्च करवुं
तेने वैयावच्च तप कहीए.

तेमज वली सज्जाय तप पांच प्रकारे ठे. वांचना
(जणवुं) पृच्छना (संशय टालवाने पूठवुं), परावर्तना
(विसरेलुं संज्जारवुं), अनुप्रेक्षा, (तत्त्वचिंतवना करवी)
अने धर्मकथा, (गुणीजननी कथा करवी) ए पांच जेद
सज्जाय तपना जाणवा.

पांचमुं ध्यान तप तेना बे जेद ठे. आर्त
ध्यान निवारीए (१) धर्म ध्यान (२) गुरु ध्यान ए
शुभ्र ध्यान ध्याइए.

ठहुं कर्मना क्य निमित्ते कानुस्सग करवो.

कायोत्सर्ग तप. एठ प्रकारे अर्च्यंतर तप थायठे. ॥७॥

हवे वीर्याचार कहे ठे. अणिगुहिअ केण अणढां
केलुं एटले प्रगट ठे बल वीर्य जेनुं, वली जे मनमां उ
त्साह धरतो थको अने वचने धर्मव्याख्यान करतो
ठतो, खेद न पामे एवो ठतो, धर्मने विषे पराक्रमफो
रवतो वर्ते; जे अवसरे जे क्रिया करवानुं जेम जगवंते
कहुं ठे तेम करवाने उद्यमवंत थयो थको वर्ते, अने
वली जुंजइ केण जोमे जहाथामं केण बलने अनुसारे
यथाशक्ति धर्मने विषे मन वचन तथा कायानो व्या
पार प्रयुंजे, ए त्रण जेदे वीर्याचार जाणवो. एथी विप
रीत जो धर्मने विषे बलवीर्य गोपवे तो अतिचार लागे. ८

विधि:—कानस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही
बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पम्पिलेहवी. पठी
वांदणां बे देइने उज्जा थइने इच्छाण देवसिअं आलोउं
इहं आलोएमि जो मे देवसिउं कहेवा.

इच्छाकारेण संदिसह जगवन् देव
सिअं आलोउं ॥ इहं आलोए
मि जो मे देवसिउं अइअपारोण ॥

अर्थः—इच्छाकारेण के० पोतानी इच्छाए करी पण कोइना बलात्कारे नहीं. संदिसह जगवन् के० हे जग-वंत मने आदेश आपो. देवसिञ्जं आलोचं के० दिवस संबंधी जे अतिचार लाग्या होय ते प्रत्ये समस्तपणे करी प्रकाशुं ? ए रीते शिष्य कहे ते वारे गुरु कहेके आलोह एटले आलोचो प्रकाशो, पढी शिष्य कहे इञ्जं के० हुं पण इञ्जुं तुं, तमारुं वचन प्रमाण ठे, आलोएमि जो मे देवसिञ्जं के० हुं आलोचं तुं संपूर्ण ज्ञावे प्रकाशुं तुं जे मारे जीवे दिवस संबंधी वगेरे.

विधिः—ए संपूर्ण कह्या पढी सात लाख कहिने अठार पापस्थानक कहेवां.

सात लाखना ठुटा शब्दना अर्थ.

पृथिवीकाय—माटी पाषाणा-

दिकना जीव

अप्पकाय—पाणीनाजीव

तेउकाय—अग्निना जीव

वाउकाय—वायराना जीव

प्रत्येक—एक शरीरमां एक जी

ववाळी

साधारण—एक शरीरमां अनंत

जीववाळी

वनस्पतिकाय—शाक, भाजीपा

ला वीगरेना जीव

योनि—उत्पत्तिस्थान

हण्यो—मायों

हणाव्यो—मराव्यो

अनुमोद्यो—वखाण्यो

(१७३)

॥ अथ सात लाख ॥

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेनुकाय, सात लाख वाजुकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बैँडिय, बे लाख तेंडिय, बे लाख चौरिँडिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंडिय, चौद लाख मनुष्य, एवंकारे चोराशी लाख जीवायोनिमांहे महारे जीवे जे कोइ जीव हणयो होय, हणाव्यो होय, हणाता प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मने, वचनें, कायाये करी तस्स मिह्ठा मि उक्कमं ॥ इति ॥ एनो अर्थ सुगम ठे.

अठार पापस्थानकना तुटा शब्दना अर्थ.

प्राणातिपात-जीवाहिंसा
मृषावाद-जूठुं बोलवुं
अदत्तादान-चोरी
मैथुन-विषय सेववो
परिग्रह-धन, धान्य संघरवुं
क्रोध-गुस्तो
मान-अहंकार
माया-कपट
लोभ-तृष्णा
राग-हेत
द्वेष-तिरस्कार

कलह-कजीओ
अभ्याख्यान-आल चढाववुं
पैशुन्य-चाडी
रति-सुख
अरति-दुख
पर-पारकी
परिवाद-निंदा
श्मायामृषावाद-कपटसाथे जूठ
मिथ्यात्व-देवगुरु धर्मनी अ-
श्रद्धा
२शल्य-साल

॥ अथ अठार पापस्थानक ॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावा
द, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन
पांचमे परिग्रह, षष्ठे क्रोध, सातमे
मान, आठमे माया, नवमे लोभ,
दशमे राग, इगियारमे द्वेष, बारमे

१ अंतरमां बीजी वात होय अने बाहार मुखथी मीठुं बोलवुं
इत्यादिक अनेक प्रकारे करी लोकोने ठगवाना परिणाम.

२ पांच प्रकारे मिथ्यात्व सेववारूप परिणाम ते रूप साल.

कलह, तेरमे अज्याख्यान, चौद
मे पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति,
सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया
मृषावाद, अठारमे मिथ्यात्वशक्य,
ए अठार पापस्थानक मांहे महा
रे जीवे जे कोइ सेव्युं होय, सेव
राव्युं होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं
होय, ते सर्वे मनै, वचनै, कायाये
करी तस्स मिच्चामि डुक्कमं ॥इति॥
एनो अर्थ सुगम ठे ॥

विधिः—पढी सव्वस्सवि, देवसिअ, डुच्चिंतिअ डुप्पा
सिअ, डुच्चिठ्ठिअ, इच्चाकारेण संदिसह जगवन् इच्चं त
स्समिच्चामि डुक्कमं. एम कहीने बेसी जमणो पंग पूंजी
(उज्जो राखी) एक नवकार गणी करेमिज्जंते कही इ
च्चामि पन्निक्कमिज्जं जोमै देवसिज्जं कही वंदित्तु कहेवुं.

(१८६)

वंदिता सूत्रना लुटा शब्दना अर्थ
गाथा १ थी ५ सुधी.

वंदित्तु-वांदिने
सव्व-सर्व (सर्वज्ञ)
सिद्धे-सिद्धोने
धम्मायरिये-धर्माचार्य
अ-अने, वळी
अइआरस्स-अतिचारने
सुहुमो-सुक्ष्म
वायरो-वादर, मोटो
निंदे-निंदुल्लुं
दुविहे-बेप्रकारना
परिग्गहंमि-परिग्रहने विषे
सावज्जे-पापसहित, सावद्य
बहुविहेअ-घणा प्रकारना
आरंभे-आरंभने विषे
कारावणे-कराववाथी
करणे-करवाथी

पडिक्कमे-प्रतिक्रमुंछुं
देसिअं-दिवससंबंधी
वद्धं-वांध्युं होय
इंदिएहिं-इंद्रियोवडे
चउहिं-चार (वडे)
कसाएहिं-कषायोवडे
अप्पसथ्येहिं-माठाभावे करी
रागेण-रागे करीने
दोसेण-द्वेषे करीने
आगमणे-आवतां
निग्गमणे-जतां
ठाणे-स्थानके
चंक्रमणे-फरतां
अणाभोगे-अनुपयोगे
अभिओगे-आग्रहथी
निओगे-आज्ञाथी

॥ अथ वंदित्ता सूत्र ॥

वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ
सव्वसाहू अ ॥ इहामि पम्किमि

उं, सावगधम्माइअरस्स ॥ १ ॥

जो मे वयाइअरो, नाणे तह दंस

णे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो

वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥

इविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुवि

हे अ अरंत्ते ॥ कारावणे अ

करणे, पम्किमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥

जं बध्मिंदिण्हिं, चउहिं कसाण्हिं

अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसेण व,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥

आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंक्रम

णे अणान्नोगे ॥ अत्तिउगे अ नि

उगे, पम्किमे देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥

अर्थः—वंदित्तु सबसिद्धे केण सर्व तीर्थंकर, अने

सिद्ध जे मोक्षे पहुँच्यो ठे, तथा श्रुत चारित्ररूप धर्म

ना पालक, तथा धर्मना दातार ते धर्माचार्य, अने उ

पाध्याय, तथा मोक्षना साधक सर्व साधु ए पंचपरमे
ष्टिने वांद्दीने श्रावक धर्मने विषे जे अतिचार (आत्माना
गुणने मलीन करनार) लाग्या होय, तेथी पम्क्कमवा
ने हुं श्छुं तुं ॥ १ ॥

हवे सामान्य प्रकारे सर्व अतिचार पम्क्कमे ठे.
जोमे वयाश्चारो के० जे मुजने व्रत आश्री अतिचार
लाग्या होय, तेमज ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचा
र, अने अ के० च शब्द थकी तपाचार, वीर्याचार त
था संलेखना एटले मरणांत आराधना संबंधी नानो
अथवा मोटो अतिचार, ए सर्व एकसो चोवीस अतिचा
रो मांही नानो अथवा मोटो जे अतिचार लाग्यो होय, ते
प्रते आत्माना साखे निंडुं तुं, अने गुरुनी साखे गरहुं तुं. १

डुविहे परिग्गहंमि के० प्राये परिग्रहज पापनुं
मूल ठे, माटे प्रथम परिग्रह आश्रयी कहे ठे. ते बे प्र
कारनो ठे. एक सचित्त, (जानवर ते छीपदचतुष्पदरू
प) अने बीजो अचित्त, (इव्य, आन्नुषणादि) अथवा
एक अन्यंतर, (कषायादि चौद प्रकारे) अने बीजो वा
ह्य, (धनधान्यादि नव प्रकारे) जेनी उत्पत्तिने विषे पा
हित अनेक प्रकारे जीवहिंसादिक आरंज ठे एवा

आरंभ करतां, करावतां अने अनुमोदना करतां जे दिवस संबंधी अतिचार लाग्यो होय ते हुं पम्किमुं ॥३॥

हेवे ज्ञानाचारना अतिचार आलोवे ठे.

जंबझमिंदिण्हिं केण जे अशुभ कर्म पांच इंडि ये करीने तथा चार कषाये करी बांध्युं ते कषाय घणा माठा ठे तेणे करी तथा रागे करी अने द्वेष करी ज्ञानाचारना जे अतिचार रूप अशुभ कर्म बांध्युं होय, ते प्रत्ये हुं आत्माना साखे निंडुं तुं, वली गुरुनी साखे गरहुं तुं. ॥ ४ ॥

हेवे दर्शनाचारना अतिचार आलोवे ठे.

आगमणे निग्गमणे केण अणउपयोगथी, अथवा राजाना हुकमथी तथा घणा लोकना आयह वगेरे अन्नियोग आगारथी, वली पराधीन नोकरी करतां पोताना शेठनी आझाथी, मिष्ठ्या दष्टि संबंधी स्थयात्रा वगेरे कौतूक जोवाने जवुं आववुं करवुं परुथुं होय, तेथी, तथा मिष्ठ्यात्वीना ठेकाले उन्नां रहेतां आम तेम फरतां जे अतिचार रूप पाप बांध्युं होय ते दिवस संबंधी सर्व पापने हुं पम्किमुं तुं. ॥ ५ ॥

अर्हीआं सर्वत्र देसिअं सव्वं, कहेवुं एम कहुं ठे,

पण देवसिञ्चं सञ्चं एम कहुं नथी कारण के प्राकृत
 ज्ञापाना वज्ञाथकी वकारनो लोप थाय ठे माटे. अहींअ
 प्रज्ञातना पङ्क्तिमणमां राइयं सञ्चं कहेवुं, अने पखि
 पङ्क्तिमणमां पखिअं सञ्चं, तथा चउमासिए चउम्म
 सियं तथा संवञ्चरिए संवञ्चरियं सञ्चं एवा पाठ कहीए

गाथा ५ थी १० सुधीना तुटा शब्दना अर्थ

संका-संका
 कंख-कांक्षा, इच्छा
 विगिच्छा-फलनोसंदेह, दुगंच्छा
 पसंस-वखाण, प्रशंसा
 संथवो-स्तुति
 कुलिंगीसु-मिथ्यात्वीने विषे
 सम्मत्तस्स-समाकितना
 छक्काय-छ काय
 समारंभे-आरंभने विषे
 पयणे-संधवामां
 पयावणे-रंधावतां
 दोसा-दोषो
 अत्तट्ठा-पोताने अर्थे
 परट्ठा-पारकाने अर्थे
 उभयट्ठा-वेने अर्थे
 चेव-निश्चे
 थूलग-मोटा

अणुव्वयंमि-अणुव्रतने विषे
 पाणाइवाय-प्राणातिपात
 विरइओ-विरतिथी
 आयरिअं-उलंघवुं, आचर्युं
 अप्पसथ्थे-माठाभावे
 इथ्थ-अहींआं
 प्पसंगेणं-प्रसंगवडे
 वह-वध
 वंध-वांधवुं
 छवि-शरीरनां अंग
 च्छेए-छेदवाथी
 अइ-अति, घणां
 भारे-भारवडे
 भत्त-खोराक
 पाण-पाणी
 वुच्छेये-अंतराय
 वयस्स-व्रतना

(१९१)

संका कंख विगिह्वा, पसंस तह
संथवो कुलिगीसु ॥ सम्मत्तस्स इ
आरे, पम्किमे देसियं सव्वं ॥ ६ ॥
ठकाय ससारंजे, पयणे अ पयाव
णे अ जे दोसा ॥ अतथा य पर
ठा, उज्जयथा चेव तं निदे ॥ ७ ॥
पंचन्हमणुवयाणां, गुणवयाणां च
तिन्हमइयारे ॥ सिस्काणां च चउ
न्हं, पम्किमे देसिअं सव्वं ॥ ८ ॥
पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइ
वाय विरइउ ॥ आयरिअमप्पसत्ते,
इउ पमायप्पसंगेण ॥ ९ ॥ वह
बंध ठवि ठेए, अइत्तारे जत्तपा
ण वुत्तेए ॥ पढमवयस्स इआरे,
पम्किमे देसियं सव्वं ॥ १० ॥

अर्थ—संका कंख के० प्रथम जिन वचनने विषे सं

देह करवो तेने शंका कहीए, बीजो अन्य दर्शनीमां थो
कीक क्कमा, अहिंसादिक गुण देखी तेना पर अज्जिलाष
धरे तेने कंखा कहीए, त्रीजुं दानादिक धर्म कर्यानुं फ
ल ह्शे के नहीं एवो संदेह धरवो तथा साधु साधवी
नां शरीर बस्त्र मलीन देखी डुगंठा करे तेने विगिञ्जा क
हीए, चौथो मिथ्यात्वीनी प्रशंसा करे तेने प्रशंसा
कहीए, तथा पांचमो तेनो संस्तव परिचय करे तेने
संस्तव कहीए.

ए दर्शन मोहनीय कर्मना क्योपशामादिकपणा
थी उत्पन्न थयो जे जिनप्रणीत तत्त्वश्रद्धानरूप आत्मा
नो शुज्जपरिणाम. तेने सम्यक्त्व कहीए, तेना उपर क
ह्या ते पांच अतिचार ठे. ते आश्रयी जे दिवस संबंधी
पाप बांध्युं होय ते सर्व हुं पक्कमु तुं. ॥ ६ ॥

इवे चारित्राचारना अतिचार आलोवे ठे.

उकाय के० पृथ्वीकायादिक उ कायजीवनो सं
घट, परिताप, उपड्व, ते समारंज्ज कहीए ते पोताने अर्थे
तथा परने (बीजाने) अर्थे. तथा पोताना अने परनावे
उना अर्थे रांधतां, रंधावतां तथा रांधनारने अनुमोदन
करते निरर्थक राग द्वेषादिके करी जे दोष लाग्या होय

(१९३)

ते दोषने चेव के ० निश्चे हुं निंडुं तुं. ॥ ७ ॥

हेव वारे व्रतना अतिचार कहे ठे. पंचन्हमणुव
याणं के० पांच अणुव्रतने विषे, वली त्रण गुणव्रतने विषे,
तथा चार शिक्काव्रतने विषे, वली तप संलेषणादिक
ने विषे आ वार व्रत संबंधी जे अतिचार लाग्या होय
ते आश्रयी दिवस संबंधी सर्व पापने पम्किमुं तुं. ॥७॥

पढमे अणुव्रयंमि के० पहेला अणुव्रतने विषे मो
टा प्राणातिपातनी विरति थकी जे पांच प्रकारना प्र
मादना प्रसंगवने माग जावे उल्लंघन थयुं होय, अथ
वा माग जावे जे आचर्युं होय, ते अहींआं अतिचा
र जाणवो, ते आगली गाथामां पम्किमीश. ॥९॥

वहबंध के० कषायने वश थको छिपद चतुष्प
दादि जीवोने निर्दयपणे लाकमी पाटुं प्रमुखे करी मा
रे तेने वध कहीए, बीजो दोरनादिके करी बांधवुं, त्री
जो बलद समारवा, तथा नाक कानादि शरीरना अ
थवोने ठेदवा, चोथो लोत्तना वशथकी गजा उपरांत
तार नरवो, पांचमो ज्ञात पाणीनो अंतराय करवो, ए
ऽले वरावर वेलासर चारो पाणी न आपे, ए प्रथम व्र
तना पांच अतिचार आश्री जे कांइ दिवस संबंधी अ

तिचार लाग्यो होय ते सर्व पम्किसुं बुं निंडु बुं ॥१७॥

आ ठेकाणे कोइ शंका करे के. प्राणातिपात विरमण वालाने वधादिकनो अतिचार लागे नहि, कारण के प्राणातिपात शब्दे करी वधादिक आवी जता नथी, तेथी वधादिक करे तो पण पेहेला व्रतना अतिचार लागे नहीं. तेनो उत्तर के मुख्यताए तो प्राणातिपात बुंज पञ्चस्काण कर्युं ठे वधादिकनुं कर्युं नथी, तो पण परमार्थे करी वधादिकनुंज पञ्चस्काण जाणवुं; केमके ते वधादिक प्राणातिपातनुं कारण ठे, माटे ते करवाथी प्राणातिपात व्रतनो जंग आय ठे तेथी ते व्रत वालाने वधादिकनुं पञ्चस्काण करवुं योग्य ठे.

वंदित्तानी गाथा ११ थी १५ सुधी बुटा
शब्दना अर्थ.

वीए-बीजा (मां)

परि-समस्त प्रकारे, अतिशय

अलिय-जूठुं

वयण-वचन

सहस्ता-अणविचार्युं

रहस्त-छानुं

दारे-स्त्री

मोस-सृष्टा, जूठो

उवएसे-उपदेशे

कूड-जूठा

लेहे-लेखने विषे

तइए-त्रीजा (मां)

पर-पारकुं

दव्व-द्रव्य, धन.

(१७५)

तेन-चोरे

आहड-चोरी आणेनी

प्पओगे-प्रयोगे

तप्पडिरूव-तत्प्रतिरूप,तेनाजेवी

विरुद्ध-उलटुं

गमणे-आचरवामां

तुल-तोल

माणे-माप

चउथ्ये-चोथा (मां)

परदार-परस्त्री

हवे बीजुं अणुव्रत कहे ठे.

बीए अणुव्रयंमि, परिथूलग अ
लिअवयण विरईउ ॥ आयरिअ

मप्पसत्ते, इत्त पमायप्पसंगेणं

॥११॥ सहस्सा रहस्स दारे, मोसुव

एसे अ कूमलेहे अ॥बीअ वयस्स

इअारे, पमिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १२ ॥

तइए अणुव्रयंमि, थूलगपरदव्वह

रण विरईउ ॥ आयरिअमप्पस

त्ते, इत्त पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥

तेनाहमप्पउगे, तप्पमिरूवे विरुद्ध

गमाणे अ ॥ कूमतुलकूममाणे,

पमिक्कमे देसियं सव्वं ॥१४॥ चउठे

(१९६)

अणुवयंमि, निच्चं परदारगमण
विरईत ॥ आयरिअमप्पसत्ते,
इत्तपमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥

अर्थः—बीए अणुवयंमि के० एक कन्यालिक
एटले जे निर्दोष कन्याने सदोष कहे, एमां बेपगां संबंधी
जे जूतुं बोलवुं ते सर्व जाणी लेवुं. बीजुं गोवालिक
एटले श्रोमा डुधवाली गायने घणा डुधवाली कहेवी
अने घणा डुधवालीने श्रोमा डुधवाली कहेवी, एमां
कोइ पण चोपगा जानवर संबंधी जूतुं बोलवुं ते सर्व
जाणी लेवुं. त्रीजु नूम्यालिकते पारकी जमीनने पोता
नी कहेवी, तथा इव्यादिक संबंधी जे जूतुं बोलवुं ते
सर्वनो एमां समावेश आय ठे. चोश्रो न्यासापहार ए
टले पारकी आपण राखीने जूतुं बोलवुं जे में तो नथी
राखी. अने पांचमुं कूमी साख ते मत्सरने लीधे अ
थवा लांच लइने जूठी साह्नी आपे, तथा कुमाकरदा
काढे, तथा विश्वासघात करे, ए सर्व एमां आव्युं इत्या
दिक जेमां राजा दंमे, लोक जंमे, एवा अतिशये करी
मोटा अलिक वचन मृषावाद तेनी विरति ते थकी.

मादना प्रसंगे करी माठा जावे जे कांइ आचरण कर्तुं होय अथवा नुद्धंधन कर्तुं होय तेथी जे अतिचार लाग्यो होय, ते आगली गाथाए पम्किमीश ॥ ११ ॥

सहस्सा रहस्स केण सहसात्कारे अणविचार्युं को इने जूतुं आल देवुं एटले कलंक चढाववुं ते प्रथम स हसाज्याख्यान अतिचार. कोइने गानी वात करतां दे खीने कहे के तमे अमुक अमुक राज्य विरुद्ध विचार करो ठो ? ते बीजो रहस्याज्याख्यान नामे अ तिचार, पोतानी स्त्रीए अथवा मित्रादिके पोतानी कांइ गानी वात कही होय, ते वात बीजा आगल प्रगट करे एटले साचुं वचन पण परने पीमाकारी थवाथी जूतुं जाणवुं, ए त्रीजो स्वदारमंत्रज्ञेद अति चार, तथा मंत्र नुषधादिक वतावे अथवा कोइने क ष्टमां पामवा कूनी बुद्धि आपे, ए चोथो मृषानुपदेश अतिचार. तथा कूना लेख लखवा, खोटां खत करवां, इत्यादि सर्व मणिज्ञेद एमां आवे ठे, ते पांचमो कूट ले ख अतिचार कहीए. ते पांच बीजा व्रतना अतिचार आश्रयी जे मने अतिचार लाग्यो होय ते दिवस संवंधी सर्व अतिचार प्रत्ये हुं पम्किमुं वुं ॥ १२ ॥

(१९८)

तइए अणुव्यंमि केण जेथी राजा दंढे एवी चोरी, गांठ ठोरुवी, तालां तोरुवां, जमेली वस्तु धणी जाणी राखवी, मार्गे जताने लूटवो, ए रीते प्रमाद तथा कषायादिने वडाथका पारकुं धन हरण करवानी विरतिने बुद्धघवाथी त्रीजा अणुव्रतने विषे जे अतिचार आय ते आगली गाथाये कहे ठे ॥१३॥

तेनाहरूपपुणे केण चोरनी चोरेली वस्तु सोंधी जाणी लेवी, ते प्रथम स्तेनाहत अतिचार, तथा चोरने सहाय संबल आपवुं ते बीजो प्रयोगातिचार, तथा खोटी वस्तुने खरी करीने वेचवी, तथा सारी खोटी वस्तु जेल संजेल करीने साराना जावे वेचवी, जूनुं वस्त्र नीखरावी रंगावी नवाने मूले वेचे, सूत्र कपासा दिक पाणीए त्रीजावीने वेचे, लविंग जायफलादिक मांहे डुधनुं पोतुं दीए ए त्रीजो तत्प्रतिरूप अतिचार. तथा दाण चोरी, राजा दंढे एवुं राज्य विरुद्ध आचरवुं, ए चोथो विरुद्धगमन अतिचार, तथा पांचमो तोल तथा माप तुंठां वत्तां राखवां एटले वधारे लेवुं, तुंठुं आपवुं, ए क्रुतोलक्रुमाण अतिचार. ए त्रीजा व्रत ना पांच अतिचार आश्री जे कांइ दिवस संबंधी अ

तिचार लाग्यो होय ते सर्व हुं पक्किसुं हुं निंडुहुं ॥१४॥

चउठे अणुद्वयमि केण निरंतर बीजानी स्त्री सा
थे कामजोग जोगववानी विरति तेने प्रमादना प्रसंगे
करी तथा अशुभ जावे करी उद्ध्वंघन करवाथी चोथा
अणुव्रतने विषे जे अतिचार लाग्या होय ते आगदी
गाथामां नाम लेइने पक्किसुं ॥१५॥

गाथा १६ थी १० सुधी ठुटा शब्दना अर्थ.

अ-नही

परिगहिआ-परणेली, राखेली

इत्तर-इत्वर, थोडा काळने
वास्ते राखेली

अणंग-कामक्रीडा

विवाह-विवाह

तिव्व-तिव्र, आकरो

अणुरागे-अनुराग; अभिलाप

इत्तो-ए उपरांत

पंचमंमि-पांचमामां

अप्पसथंमि-माठा (मां)

परिमाण-परिमाण

परिच्छेए-ओलंगवाथी

धण-धन

धन्न-धान्य,

खित्त-खेतर

वथु-घर, हाट (वास्तु)

रुप्प-रुपुं

सुवन्ने-सोनुं

कुविअ-हलकी धातु

दुपये-वे पगवाळामां

चउप्पय-चार पगवाळा

गमणस्स-जवाना

उ-तो

दिसामु-दिशाओमां

उडुं-उंची

वुडुं-वुडुं, वधारो

सइ-स्मृति यादि

अंतरद्धा-मार्गमां

मज्जंमि-मदिरा, दारु (मां)

मंसमि-मांस (मां)
 पुष्पे-फूल,
 फले-फलमां
 गंध-सुगंधी पदार्थ

मल्ले-माला
 उवभोग-उपभोग
 परिभोग-परिभोग

अपरिग्गहित्र्या इत्तर, अणंग वी
 वाह तिब अणुरागे ॥ चउत्त वय
 स्स इत्तारे, पम्किमे देसियं सव्वं
 ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पं, चमंसि
 आयरिअ मप्पसत्तंसि ॥ परि
 माण परिह्वेए, इत्त पमायप्पसंगे
 णं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्तू
 रूप्प सुवत्तेअ कुविअ परिमाणे ॥
 दुपए चउप्पयंसि, पम्किमे देसियं
 सव्वं ॥ १८ ॥ गमाणस्स उ परिमाणे,
 दिसासु नमूं अहेअ तिरिअंच ॥
 वुम्हि सइ अंतरघ्वा, पढमंसि गुण
 व्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंसि अ

(३०१)

मंसंमि अत्र, पुष्पे अत्र फले अत्र गंध
मद्धे अत्र ॥ उवन्नोगपरिन्नोगे,
बीअंमि गुणद्वए निंदे ॥ २० ॥

अर्थः—अपरिगृहिता के० प्रथम अपरिगृहिता ते
कोइए परणेली न होय एटले कुमारिका अथवा विध
वा होय तेनी साथे मैथुन सेववुं तेमज श्राविका पण
कुंवारा अथवा रांमेला पुरुषनी वांठा करे तो पेहेलो
अतिचार लागे. बीजो इत्वर एटले कोइ पुरुषे वेदया
दिकने स्त्रीने स्थानके राखेली होय तेनी साथे मैथुन
सेववुं, तेमज स्त्री पोतानी शोक्यनो दिवस होय तेनुं
निवारण करी न्त्तारने सेवे तेने बीजो अतिचार ला
गे. त्रीजुं कामक्रीडा ते परस्त्रीनी साथे हास्य, कूतुह
ल करवां तथा तेनुं कुच मर्दन, मुखचुंबन, उष्टदशन
आलिंगनादिक कामनां चोरासी आसन सेववां, तथा
पुरुष चिन्ह टाली साथल अंगुष्ठादिके करी मैथुन से
ववुं ते त्रीजो. चोथो विवाहकरण ते पोतानां ठेरु
टाली पराया विवाह जोरुाववा. पांचमुं कामन्नोगने
विषे अति अज्जिलाषनुं करवुं, तथा काम दीपाववाने

माटे धातु पुष्टी पदार्थों (डूध, दही, घी त्रांबु, बंग) खावा, ए पांच चौथा व्रतना अतिचार आश्रयी जे मा रे अतिचार लाग्यो होय ते सर्व दिवस संबंधी अति चार हुं पद्मिकमुं बुं. ॥१६॥

इतो अणुव्रत केण ए चौथा व्रत उपरांत स्थूल परिग्रह परिमाण नामे पांचमुं अणुव्रत कहिए गीए. ए पांचमा धनधान्यादिक नव विध परिग्रहना परिमाण रूप अणुव्रतने विषे प्रमादने प्रसंगे करीने अशुभ जाव अये ठते जे अतिचार आचर्यो होय, ते आगली गाथा मां पद्मिकमीश ॥ १७ ॥

धन धन केण चार प्रकारनां धन ठे. प्रथम गणि म ते गणवारूप धन, नालीएरादिक जे गणीने बेचा यते. बीजुं धरिम एटले गोल, खांरूप तोलीने बेचा यते. त्रीजुं अये एटले कापरु, जमीन, तेल, डूध, वगेरे जे मापीने बेचाय ते. चौथुं परिठेद्य एटले सोनुं, रुपु, नाणुं, धन, रत्नादिक मोती प्रमुख कसीने तथा ठेदयी परीक्षा करी शकय ते जाणवां, ए चार प्रकारे धन. अने धान्य ते गहूं, चोखा, अरुद प्रमुख जाणवां. ए व्रे उ परिमाण उपरांत अयां देखीने ज्यां सुधी आगलुं

वेचायनहीं त्यां सुधी वीजाने घेर रखावे, अथवा कोठा कोठीनुं परिमाण कीधुं होय तो न्दानाने बदले महोटा बंधावे, ते प्रथम धनधान्य परिमाणातिक्रम अतिचार जाणवो.

बीजो खित के० क्षेत्र, ते त्रण प्रकारे ठे. एक रेंटना पाणीए नीपजे ते सेतु क्षेत्र. बीजुं वरसादना पाणीए नीपजे ते केतु क्षेत्र. त्रीजुं बेहुना पाणीथी नीपजे ते उन्नय क्षेत्र. ए त्रण प्रकारनां क्षेत्र जाणवां. वहु के० वास्तु ते, घर, हाट, वखार प्रमुखनी जूमि ते त्रण प्रकारे ठे. एक जमीन अंदर ज्ञोयरु करीए ते खात जूमि. बीजी मालियादिक जे उंचां चमावीए ते उच्चित जूमि. त्रीजी ज्यां ज्ञोयरु पण करीए अने उपर माल पण चणावीए. तेमां गामनगरादिक पण आवे ते खातोच्चित जूमि जाणवी. ए बेहुना परिमाणथी उलंघवुं ते आवी रीते के:-एक क्षेत्र मोकलुं होय ने बीजुं लेवरावे ते वखते नियम जंगना जयथी प्रथमना खेत रनी वारु ज्ञागी बेउनुं एक करावे तथा घर, हाट प्रमुखनुं पण तेज प्रमाणे वचमांती ज्ञींत अथवा मोत्र पानीने एक करी मूके. ए क्षेत्रवास्तुपरिमाणातिक्रम बीजो अतिचार जाणवो. त्रीजो रुपुं सोनुं ए वे

ना परिमाणथी जलंघवुं एटले रुपुं सोनुं अधिक थतुं देखी स्त्री पुत्र आदिना नामनुं करे, ते रूपसुवन्नपरिमाणातिक्रम नामा त्रीजो अतिचार जाणवो. वली आल कचोलां प्रमुख एटले सोना रुपा सिवायनी धातुनां वासण थाली, वारुका, खाटला, पाटला प्रमुख घरवाखरानी वस्तुनुं नियम उपरांत थतां देखी नानां जंगावी मोटां करावे अने संख्याए तेटलां राखे ते कुवियपरिमाणातिक्रम चोथो अतिचार जाणवो. पांचमो द्विपद ते दासी, दास, वाणोतर प्रमुख, अने चतुष्पद ते गाय, घोडा, जैस प्रमुख जाणवां. तेने नियम उपरांत थता देखी गर्ज ग्रहण घणुं मोरुं करावे, तथा वेचे ते पांचमो द्विपदचतुः पद परिमाणातिक्रम अतिचार जाणवो. ए पांचमा व्रतना पांच अतिचार आश्रयी माहारे जे कोइ अतिचार लाग्यो होय ते सर्व दिवस संबंधी अतिचार प्रते हुं पफिकमुं वुं. ॥ १० ॥

गमणस्स केण उर्ध्व दिशि, अधो दिशि अने पूर्व पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ए चार दिशि तथा चार विदिशि ए आठने तीर्णि दिशि कहीयें, तेने विषे अमुक जो जन सुधी जवानुं परिमाण करेलुं होय, ए रूप प्रथम

गुणव्रतने विषे तु शब्द थकी जे अतिचार लाग्यो हो
 य ते आगल निंदिये ठैए, प्रथम नंची दिशिना परिमा
 ण प्रते नलंघवुं, बीजुं अधो एटले नीची दिशिना प
 रिमाण प्रत्ये नलंघवुं, वली त्रीजुं तीर्हिं दिशिना परि
 माण प्रते नल्लंघवुं अथवा नियमन्नंगनी बीकथी वा
 णोतर प्रमुखने मोकलवो, चोथुं दिशिनने विषे जवा
 नुं जेटलुं परिमाण कीधुं होय तैथी कोइ कार्य पमे
 आधुं जवुं होय त्यारे एक तरफ नुंठी करी बीजी त
 रफ वधारे ते क्षेत्रवृद्धिनामा अतिचार जाणवो, पांच
 मो स्मृत्यंतर्हा एटले मार्गने विषे संदेहकारी विचार
 उपजे के आ दिशि मारे सो योजन मोकली राखी ठे?
 के पञ्चास जोजन मोकली राखी ठे? एवी शंका ठते
 पञ्चास जोजन उपरांत जवुं ए पांचमो अतिचार अने
 सो योजन उपरांत जवुं ए अनाचार व्रतन्नंग जाण
 वो, ए पांचमो स्मृत्यंतर्हा अतिचार जाणवो, ए प्रथम
 गुणव्रतने विषे उपर कहेला पांच अतिचार मांहेलो
 जे अतिचार लाग्यो होय ते हुं निंडुवुं. ॥ १ए ॥

मङ्गमि के० खान पान फूल विलेपन प्रमुख जे
 वस्तु मुखादिकमां तथा शरीरमां प्रवेश कराय एटले

एकवार सेवाय एवी वस्तु तेनो जोग ते उपजोग क
 हेवाय, तथा परि एटले बहारथी वारंवार सेविये ते
 परिजोग वस्तु ते वस्त्र, आचरण, घर, स्त्री प्रमुख
 जाणवां. ए उपजोग परिजोग परिमाणनामा बीजुं
 गुणव्रत वे प्रकारे ठे. एक जोजनथी; बीजुं कर्मथी.
 तेना वीश अतिचारने प्रथम सामान्यपणे निंदिये ठी
 ए. मज्जंमिअ केण मदिरा तथा मंसंमिअ केण मांस
 वीगेरे बीजां पण अजह जेवां के मध, मांखण, अनं
 तकाय प्रमुख. पुप्फे केण महुमादिकनां फूल तथा कुं
 शुआदिक त्रसकाय जीवे करीने सहित नागरवेलीनां
 पान प्रमुख जाणवां, तथा फले केण जांबू, बीलां, पी
 लूनां, पीचु, बोर, पाकां करमदां, ए अजहय वस्तु
 श्रावकने खावा पीवा योग्य नथी, ए खाधामां आवे
 माटे अंतर्जोगनी वस्तु कही. हवे बहारना जोगमां
 आवे ते वस्तु कहे ठे. गंध केण वरास, अत्तर, अवीर,
 कपूर, धूपादि जाणवां, तथा मद्धेअ केण फूलनी माला
 ए वगेरे जाणवी, तथा च शब्दथी बीजी सर्व जोग्य
 वस्तु जेवी के सचित्तकाय विगयादि वस्तु करेला प्र
 माणथी वधारे जोगवतां उपजोगपरिजोग नामे बी

जा गुण व्रतने विषे जे अतिचार लाग्यो होय ते सर्व
प्रत्ये निंडुबुं. ॥ १० ॥

गाथा ११ थी १५ सुधी ठुटा शब्दना अर्थ.

सच्चित्ते-सचित्त
पडिवद्धे-लागेली, वळगेली
अपोल-काची
दुप्पोलिअं-काचुंपाकुं
आहारे-भक्षण
तुच्छ-हलकी
ओसहि-औषधि
भरखणया-भक्षण
इंगालि-अंगार कर्म
वण-वनकर्म
साडी-शकटकर्म
भाडी-भाडुं खावुं
फोडी-जमीन फोडवी ते
सु-अत्यंत
वज्जए-छोडे
वाणिज्जं-वेपार
दंत-दांत
लखख-लाख
रस-रस
केश-वाल

विस-झेर
विसयं-शास्त्रादिकनो विषय
खु-निश्चे
जंत-यंत्र
पिल्लण-पीलवानुं
निल्लंछणं-निर्दयपणानां काम
दव-दव, अग्नि.
दाणं-आपवुं
सर-सरोवर
दह-धरा, द्रह
तलाय-तलाव
सोसं-शोषण करवुं
असई-असति
पोसं-पोषण
वज्जिजा-वर्जवुं
सथथ-शास्त्र
अग्गि-अग्नि
मुसल-सांवेळु
जंतग-यंत्र (घंटीप्रमुख)
तण-तरणां

कङ्क-काष्ठ

मंत-मंत्र

मूल-मूल, जडीबूटी

भेसज्जे-ओसड

दिन्ने-देवा थकी

दवाविए-अपाववामां

वा-अथवा

न्हाण-न्हावुं, स्नान.

उवट्टण-पीठीए मेल उतारवो

वन्नग-अलतो वगेरे

विलेवणे-विलेपन

सद्द-शब्द

वथथ-वत्त

आसण-आसन

सच्चित्ते पम्बिद्धे, अपोल डुप्पो
 लिअं च आहारे ॥ तुत्तोसहि न
 र्कणया, पम्बिक्रमे देसियं सव्वं ॥
 ॥ ११ ॥ इंगाली वण सामी, जामी
 फोमी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं
 चैव य दं, त लरक्क रस केस विस
 विसयं ॥ १२ ॥ एवं खु जंतपिद्ध
 ण, कम्मं निद्धंठणां च दवदाणां
 सरदह तलाय सोसं, असई पोसं
 च वज्जिजा ॥ १३ ॥ सव्वग्गिमु
 सल्लजंतग, तण कठेमंत मूल ने

(३०९)

सङ्गे ॥ दिन्ने दवाविण्वा, पम्कमे
देसियं सव्वं ॥ ३४ ॥ न्हाणुवट्टण
वन्नग, विलेवणे सहूरुवरसगंधे ॥
वन्नासण आन्नरणे, पम्कमे दे
सियं सव्वं ॥ ३५ ॥

अर्थः—सच्चित्ते केण सच्चित्तनो त्याग करीने अथ
वा सच्चित्तनुं परिमाण करीने प्रमादने वशे तेथी उप
रांत ते वस्तुनो आहार करे, ते प्रथम सच्चित्ताहार ना
मे अतिचार जाणवो. बीजो सच्चित्तप्रतिबद्ध ते सच्चि
त्तनी साथे बांधेली वस्तु एटले जोमे लागेलो गुंदर,
ठलिया सहित रायण, अने गोठली सहित केरी प्रमु
ख मुखमां घाले, तथा ऊरुमांथी गुंदर उखेनीने अ
च्चित्तनी बुद्धिये वापरे ते. त्रीजो अपोल केण अपक्वाहार
एटले रांध्या वगरनी होय एवी सच्चित्त मिश्रित काची
वस्तु जेवी के तुरतनो दलेलो तथा अणचालेलो
लोठ, ए विषे सिद्धांतमां कह्युं ठे के अणचाल्यो लोठ
श्रावण अने ज्ञादरवा महीनामां पांच दिवस मिश्र रहे,
आसो मासमां चार दिवस मिश्र रहे, कार्तिक मागश

र अने पोस मासमां त्रण दिवस मिश्र रहे, माहा अने
 फागणमां पांच पहोर, चैत्र वैशाखे चार पहोर, तथा
 जेठ अशामे त्रण पहोर मिश्र रहे, अने तयार पढी अ
 चित्त आय; ते लोटने अचित्त जाणी वापरे. इत्यादि
 सचित्त शंकित वस्तुनुं ऋक्षण करवुं ते अपक्वौषधि ऋ
 क्षण नामे त्रीजो अतिचार जाणवो. चौथो दुःपक्वौ
 षधिऋक्षण एटले अरधी काची अने अरधी पाकी ते
 उला, उंबी, पुंख, पापनी प्रमुख वस्तु खावी ते अ
 तिचार. पांचमो तुह्यौषधि ऋक्षण ते मग प्रमुखनी को
 मल शींग तथा बोर प्रमुख तुह्य एटले घणी खावाथी
 पण संतोष न आय, एवी वस्तुने अचित्त करी वापरे
 ते पांचमो अतिचार जाणवो, जेने सचित्त खावानो
 नियम होय तेने ए पांच अतिचार लागे. ए बीजा गुण
 व्रतना ज्ञोजन संबंधी पांच अतिचार ते आश्रयी दिवस
 संबंधी जे अतिचार लाग्यो होय ते सर्वने हुं पद्मिकमुं.
 हवे जे गृहस्थ आजीविकाने अर्थे कुव्यापार करे
 ते पण ज्ञोगोपज्ञोगेज कहीए ते पांच (इंगलादि) कर्म,
 पांच (दंतादि) वाणिज्य अने (यंत्रादि) पांच सामान्य,
 एम पंदर कर्मादान ठे तेने श्रावके जाणवां, पण आच

रवां नहीं. ते आश्रयी पंदर अतिचार बे गाथाए कहे ठे.

इंगाली के० प्रथम काष्ठ वाली अंगारा करी बे चवा, तथा सोनी, कुंजार, ज्ञानजुंजादिकनां जे अग्नि संबंधी कर्म ते अंगारकर्म; बीजुं वण के० वाली, वन, व नक्षपति नीपजाववां, तथा तेनां फल फुल बेचवां; तथा आखां वन बेचवां, तथा दांणा दलाववा ते वनकर्म; त्रीजुं शकटकर्म ते गाभां तथा तेनां अवयव धोंसरा, समोल, प्रमुख बनावीने बेचे बेचावे ते सामी के० शकट कर्म; चोथुं ज्ञानी के० बलद घोडा, घर, हाट प्रमुख राखी ने आजीविका निमित्ते ज्ञाने आपवानुं करे ते ज्ञा टिक कर्म; पांचसुं फोनी के० जव चणा तुवेर प्रमुख अनाजनो साथवो करवो तथा तेनी दाल करवी, तथा हांगर प्रमुखना चोखा काढवा, तथा जमीन फोरवी ते कूवा वाव तलाव विगेरे कराववां, तथा उरु, स लाट विगेरेनुं काम करवुं, तथा हल प्रमुखे करी जमी न खेरवी इत्यादि जेटलो पृथ्वीनो आरंज ते सर्व स्फोटिक कर्म जाणवुं. ए पांच सामान्य कर्म ते आ वक अत्यंतपणे वर्जे.

हवे पांच कुवाणिज्य कहे ठे:—प्रथम दांत, नख,

चामरुं, शिंगनादिकना व्यापार एटले हाथीदांत, चम
 री गायना वालना चमर, मत्स्यादिकना नख, शंख,
 मोती, तथा वाघ मृगादिनां चामरां, हिंग, हांस रु प्र
 मुख रोम इत्यादि त्रस जीवोना अंगनो जेमां वेपार
 आवे ठे, तेने जो देशांतर जइ वोहोरे तो तेमां घणो
 दोष लागे, तेने दंत कुवाणिज्य कहे ठे. बीजुं लाख,
 धावनीनां फुल, कसुंबो, हनुताल, गली तथा टंकण
 खारादिकनो व्यापार जे थकी बहारना जीवोनुं मृत्यु
 आय ते सर्व लस्क के० लाख कुवाणिज्य जाणवुं. त्रीजुं
 विगय महाविगय एटले घी, तेल, गोल, मद्य, दूध,
 बर्हीं विगेरेनो वेपार ते सर्व रसकुवाणिज्य जाणवुं.
 चोथुं द्विपद ते मोर, सूना, तथा मनुष्य प्रमुखना
 व्यापार अने गाय घोना प्रमुख चतुष्पदना वेपार ते
 केशकुवाणिज्य. पांचमुं अफीण, सोमल विगेरे जेरी
 चीज, तथा ठरी कटारी विगेरे शस्त्र, जेना बले करी
 घणा जीवोना संहार आय तथा हल कोदालादिक जे सर्व
 कुवस्तुनो वेपार ते विसविसय के० विस एटले जेर उप
 लक्षणथी शस्त्रादिकनो विसय के० विषय ठे जेमां, तेने
 विसविसय कुवाणिज्य कहीए; ए पांच कुवाणिज्यने

श्रावके वर्जवां. ॥११॥

एवं खु के० हवे पांच सामान्य कहे ठे. एवं खु के० एम निश्चे शिला, लोढी, उखल, मुसल, घंटी, चरखो आदि अनेक जातिनां यंत्र करी वेचे ते सर्व यंत्र कर्म, तथा सेलमी प्रमुख पीलवानांकोहलुं, घाणी प्रमुख यंत्रथी जे कर्म लागे तेने जंतपिद्धण के० यंत्रपीलन कर्म कहीए. वीजुं बालकनां नाक कान वींधाववा, नपुंसक करवा, जंट बलद घोडा प्रमुखनां नाक वींधवां, आंक पमाववा, समराववा, कर्ण कंबल पूठनां ठेदावे, इजारे गाम लेइ आकरा कर करे, कोटवालपणुं करवुं इत्यादि जेटलां निर्दयपणानां काम ठे तेने निर्लठन कर्म जाणवुं. त्रीजुं धरमनी बुद्धिए अथवा मोकली नूमिने विषे सुखथी सग्राम आय, अथवा स्वजावे अथवा तृणादिक वाव्या पढी नवा अंकुरा जगे तो गायो चरे, एवा हेतुथी वन जामी प्रमुखने दव लगामे, तथा कोइने अग्नि आपे तेने दवदान कर्म कहीए. चोशुं सरोवर खोदाया विना जे जग्यामां पाणी रहे तेवा ठेकाणाने सर कहे, ते सर तथा इह तथा तलाव कुवा वाव इत्यादि पाणीनां स्थानको शोषण करवां,

तेमांनुं पाणी जलेचावे, त्यां अनेक जलचर पंचेंडि जीवनी हिंसा आय ठे तथा नील फुल प्रमुख घणा जीवोनो विनाश आय ठे तेने सरदहतलायसोसण कर्म कहीए. पांचमुं असइ पोसं केण असती पोषण कर्म ते कुतरां, बिलारां, मोर, कूकडा, मेनां, सिंचाणा, सूना प्रमुख हिंसक जीवोनुं पोषण करवुं, अथवा व्यञ्जिचारिणी स्त्रीनुं, तथा दुष्ट पुत्रादिक, दुष्ट दास दासीनुं पोषण करवुं, तथा कसाइ, माठी, वाघरी, तेलीनी साथे वेपार करवो; ए वगेरे जे अधर्मी जीवोनुं पोषण करवुं तेने असती पोषण कर्म कहीए. ए पांच सामान्य कर्म कहां. एम सर्वे मलीने पन्नर कर्मादान जे ठे तेने निश्चे करी श्रावके वर्जवां. ए पंदर अतिचारमां जे कोइ अतिचार जाणतां अजाणतां लाग्यो होय ते सर्वेने हुं निंडुं वुं.

हवे अनर्थ दंरु विरमण नामा त्रीजुं गुणव्रत कहे ठे. जे अकी निरर्थक आत्मा दंराय, पाप लागे तेने अनर्थ दंरु कहीए. ते चार प्रकारे ठे; प्रथम अपध्याना चरित ते मनमां एवी चिंतवना करे के वैरीने वांधुं मारी नांखुं, अने राजा थाळं तो वैरीनां गाम वाली

नांखुं, विद्याधर थाळं तो स्वेच्छाए ज्यां ज्ञावे त्यां जानं,
मन मानती स्त्रीनी साथे विलास करुं, इत्यादिक जे
मातुं ध्यान घरे ते अपध्यानाचरित अनर्थ दंरु कहीए.
बीजो प्रमादाचरित अनर्थदंरु ते पापविक्रया करवी,
दूध, दहीं, तेल इत्यादि वस्तुने ठांकवानुं आलस करवुं
ते. त्रीजो हिंसप्रदान अनर्थदंरु ते घंटी, मूशल,
चाकु प्रमुख पाप अधिकरण कोइने आपवां ते हिंस
प्रदान अनर्थदंरुनो त्रीजो जेद. चोथो पापकर्माण
देशअनर्थदंरु ते न्हान, अग्नि जलावो, वस्त्र धोवो,
खेती करो, वाठमाने समरावो अमुकने कूटो, मारो,
वांधो, इत्यादिक उपदेश देवा ते चोथो जेद. तेमां
पोतानी नातनाने, गोत्रीने अर्थे पाप करवुं ते व्यवहा
रदृष्टिए अर्थदंरु ते; माटे अहींआं तेनो त्याग नथी,
एन अनर्थदंरुविरमण नामे त्रीजुं गुणव्रत कहीए. ११३।

सठगिमुसल केण शस्त्र, अग्नि, मुशल, घंटी,
सावरणी, लाकणी, मंत्र ते (साप खीलवा प्रमुखना)
नागदमणी प्रमुख जमी वूट्टी तथा गर्जपातन प्रमुख
जाणवा, तथा वे आदि वस्तुना मेलापथी जे वस्तु उ
पजे एटले गोळी, चूर्ण, तंत्रविद्या इत्यादिक उपद्रवका

री वस्तु जाणवी. इत्यादिक वस्तु दाक्षिणाता टाळी
बीजाने आपवाथी, अपाववाथी, आपनारने अनुमोद
वाथी जे अतिचार लाग्या होय ते सर्व दिवस संबंधी
अतिचार प्रत्ये हुं प्रतिक्रमुं बुं. ॥ १४ ॥

न्हाणुवट्टण के० स्नान ते अच्यंग करीने तेल
चोपनीने नाहीये, त्यां अजयणाए जीवाकूल जूमिका
ए न्हाय, अथवा अणगल पाणीए न्हाय तथा उवट्टण
के० पीठी प्रमुखे करी शरीरनो मेल उतारे. अवील,
गुलाल, केसर, चंदन, कंकु वगेरेनुं विलेपन जाणवुं,
तथा वांसली विणादिकना शब्द कौतुकें सांजलवा, त
था पहोर रात उपरांत उंचे शब्दे बोलवुं, रूप के० स्त्री
प्रमुखनां रूप जोवां, वेश्यादिकनां नाटक जोवां, रस
के० मीठो खाटो वगेरे रस, गंध के० वास एटले सुगंध
कपूर, कस्तूरी, प्रमुखना जाणवा. वल्ल के० वस्त्र आस
ण के० बेसवानां आसन तेने संबंधे शय्या पण जाण
वी. तथा आसन एटले कामशास्त्र, कोक, वात्स्यायना
दिक विषयज्ञोग संबंधी चोराशी आसन जाणवां. आ
ज्ञरण ते जूषण, मुकुट, कुंमल वगेरे तथा जूगटुं, म
दिरापान, हीचका खावा वगेरे दुष्ट काम करवां, जो

वां, एम अनेक उपज्ञोग परिज्ञोग वस्तुन संबंधी अ
जयणाए अण उपयोगे जे अतिचार मारे लाग्यो होय
ते सर्व दिवस संबंधी अतिचारप्रते हुं पक्कमुंहुं।१५॥

गाथा २६ थी ३० सुधीना तुटा

शब्दना अर्थ.

कंदप्पे-कंदर्प
कुकुइए-कुचेष्टा,
भांडचेष्टा.

मोहरि-वाचालपणुं
अहिगरण-घंटीप्रमु-
ख अधिकरण
भोग-भोगनी वस्तु
अइरित्ते-खपथीवधारे
दंडंमिअणट्टाए-अन-
र्थ दंडने विषे
दुप्पणिहाणे-दुःप्रणि-
धान, सावद्य वेपार
अणवट्टाणे - अनव-
स्थान, सामायक व-
रावर न पारवुं.
तहा-तथा

सइ-स्मृति, यादी
विहूणे-रहित
वितह-खोटुं
आणवणे-अणाववामां
पेसवणे-मोकलवामां
सहे-शब्द करवो
रूवे-रूप देखाडवुं
पुगल-पुद्गल
खखेवे-नांखवुं
देसावगासिअंमि-दे-
शावकासिकमां
संधार-शय्या वीगेरे
संधारो
उच्चार-झाडो पेसाव
परठववो
विहि-विधि

भोअण-भोजन
आभोए-चित्तववुं
पोसह-पोषध
विवरीए-विपरीते
निखिखवणे-मूकवुं
पिहिणे-टांकवुं
ववएस-व्यपदेशकरवो
फेरफार वोलवुं.
मच्छरे-मत्सर, इप्या
अइकम-आतिक्रम, ओ
लंघवुं
दाणे-दानने विषे

कंदप्पे कुकुइए, मोहरि अहिगर
 ण जोगअइरित्ते ॥ दंमि अण
 णए, तइअंमि गुणवए निंदे ॥ १६ ॥
 तिविहे डुप्पणिहाणे, अणवठाणे
 तहा सइविहूणे, सामाइअवितह
 कए, पढमे सिस्कावए निंदे ॥ १७ ॥
 आणवणे पेसवणे, सहे रूवे अ पु
 ग्गलस्केवे ॥ देसावगासिअंमि, बी
 ए सिस्कावए निंदे ॥ १८ ॥ संथा
 रुच्चारविहि, पमाय तह चेव जो
 अणाजोए पोसहविहि विवरीए,
 तइए सिस्कावए निंदे ॥ १९ ॥
 सच्चित्ते निस्किवणे, पिहिणे ववएस
 मत्तरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे,
 चउठ्ठे सिस्कावए निंदे ॥ २० ॥

कंदप्पे के० कंदर्प एटले जे थकी कामविकार

(११९)

जागे एवं बोलवुं ते प्रथम कंदर्प अतिचार जाणवो. कु
कुंइए के० ज्ञाननी पेरे शरीरना अवयवोनी कुचेष्टा
ए करीने लोकोने अत्यंत हसाववा तथा कोशना चाला
पामवा ते बीजो कौकुच्य अतिचार. विचार रहित घणुं
ववमवुं तथा अघटित वचन बोलवां ते त्रीजो मुखरी
अतिचार जाणवो. तथा अहिगरण के० शस्त्र, अग्नि,
मूशल, घंटी प्रमुख अधिकरण तैयार करी माग्यां
आपवां तेमज अग्निप्रमुख सौथी पेहेलां सलगाववां ते
चोथो अधिकरण अतिचार जाणवो. तथा उपजोग
परिजोगनी वस्तु अश्रित्ते के० खप करतां वधारे रा
खवी एटले जोगनी वस्तु जेवी के तेल, कंकोरी, पा
णी, प्रमुख वस्तु अधिक राखे जे देखीने वीजाने न्हा
वा प्रमुखनी वांठा थाय तेथी जोग वस्तुनो दोष लागे,
अने उपजोग वस्तु ते जो एक घरनो खप होय तो प
ए वे चार सामटां करावे तेथी उपजोग वस्तुनो अधि
क दोष लागे ते पांचमो जोगातिरिक्त अतिचार, एरी
ते अनर्थ दंमविरमण नामे त्रीजा गुणव्रतने विषे पुर्वो
क्त जे अतिचार लाग्यो होय ते प्रते हुं-निंडु हुं. ॥१६॥

तिविहे डुप्पणिहाणे के० त्रण प्रकारे सावध

व्यापार ठे तेना त्रण अतिचार जाणवा. तेमां प्रथम घर, हाट, प्रमुख संबंधी जे सावद्य व्यापारनुं मनमां चिंतवन करवुं ते मनोदुःप्रणिधान अतिचार जाणवो. तथा कर्कश एटले कठोर सावद्य जाणवो करी बोलवुं ते बीजो वचनदुःप्रणिधान अतिचार. त्रीजो अण उपयोगे कायाने जोया पूंज्या विना वे सवुं, उठवुं, उर्गीगवुं वगैरे पाप व्यापारमां प्रवर्त्ताववी, ते कायदुःप्रणिधान नामा त्रीजो अतिचार जाणवो. तथा जधन्य वे घमी सामायकनुं कालमान ठे तेटलो काल पूर्ण कर्या विना सामायिक पारवुं, तथा आदर रहितपणे सामायिक करवुं तथा पारवुं ते चोथो अनवस्थान अतिचार जाणवो. तथा निडादि प्रमादधी में सामायिक कर्युं के नधी कर्युं, एवं उपयोगनुं शुन्यपणुं ते पांचमो अतिचार, एरीते सामायिक प्रत्ये वितह केण जूहुं, कए नाम करे अके प्रथम सामायिक नामे शिक्ताव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचार मांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय ते प्रते हुं निंडुं तुं. ॥ १७ ॥

आणवणे पेसवणे केण हवे बीजा देशावकाशिक शिक्ताव्रतने विषे परिमाण कीधेली नूमिनी वाहा

(१११)

रथी कांइ वस्तु मंगाववी, ते आनयननामा पेहेलो अ
तिचार जाणवो. बीजो परिमाण उपरांतनी जूमिने
विषे चाकर प्रमुखने मोकलवो, वेचवा लेवा आदेश
आपवो, ते प्रेषवणनामा अतिचार जाणवो. तथा
कोइ कामपद्मे थके नीमेली जूमिकाथी बाहार रहेला
मनुष्यने खुंवारादिक शब्दे करी पोतानुं ठतापणुं
जणाववुं ते त्रीजो शब्दानुपातिनामा अतिचार
जाणवो. तथा नंचो थइ पोतानुं रूप देखामीने
बो ना पण जेने बोलाववुं होय तेनी नजरे पद्मे,
निथकी तेनी पासे जाय ए चोथो रूपानुपा
। अतिचार जाणवो. तथा नीमेली जूमिकाथी
रहेला पुरुषने कांकरादिक नांखी पोतानुं ठता
जाववुं, ते पांचमो पुज्जलोत्केपनामा अतिचार
जाणवो. ए पांच अतिचार मांहेथी देशावकाशिकना
। जा शिक्षाव्रतने विषे जे अतिचार लाग्यो होय,
। प्रत्ये हुं निंडुं बुं. ॥ १८ ॥

संधारुच्चारविही केण शय्या संधारो तथा वसी
नीति अने लघु नीतिना ठंफिल, एना प्रकारने विषे जे
प्रमाद करवो ते अतिचार चतुष्क जाणवो. तेने विवरी

ने कहे ठे, तेमां शय्या संधाराने न पम्हिलेहे, अथवा प
 म्हिलेहण करे, तो कांश्क करे कांश्क न करे ते पहेलो
 अप्पम्हिलेहिअडुप्पम्हिलेहिअसव्यासंधारे नामा अति
 चार जाणवो. तथा शय्या संधाराने न पूंजे प्रमार्जे,
 अथवा पूंजे तो कांश्क पूंजे कांश्क न पूंजे ते बीजो
 अप्पमच्चिअडुप्पमच्चिअशय्यासंधारे नामे बीजो अ
 तिचार जाणवो. तथा वनीनीति लघुनीति परठववानी
 नूमिने न पम्हिलेहेवी अथवा पम्हिलेहवी तो कांश्क प
 म्हिलेहवी कांश्क न पम्हिलेहवी. ते त्रीजो अप्पम्हिलेहि
 अडुप्पम्हिलेहिअनञ्चारपासवणनूमिनामा त्रीजो अ
 तिचार जाणवो, तेमज ते नूमिने न प्रमार्जवी, अथवा
 प्रमार्जवी तो कांश्क प्रमार्जवी अने कांश्क न प्रमार्ज
 वी, ए अप्पमच्चिअडुप्पच्चिअनञ्चारपासवणनूमिनामे
 चोथो अतिचार जाणवो. ए रीते शय्यासंधार तथा
 ठंमिलनूमि संबंधी अतिचार चतुष्क थयुं, तेमज नोअ
 णान्नोए केण पोसह लीधा पठी क्यारे पारणुं करीशुं
 अथवा पारणे अमुक न्नोजन करीशुं एवी चिंतवना
 करवी, ते पांचमो न्नोअणान्नोएनामा अतिचार जाण
 वो. आ पांच अतिचारोए करीने पोषधव्रतनी विधि विप

रीत करे अके पोषधोपवासव्रतनामा त्रीजा शिक्षाव्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्यो होय तेने हुं निंडुं।१९॥

सच्चित्ते निस्क्रिण्णे केण साधुने देवा योग्य नि दोष वस्तुने सचित्त उपर मूकवीते प्रथम सचित्त नि क्लेषण नामा अतिचार जाणवो, तथा तेवी वस्तुने स चित्त वस्तुए (कंद, पत्रे) करी ढांकवी, ते सचित्तपि हिए नामा बीजो अतिचार, तथा पोतानी वस्तुने अ ए देवानी बुद्धिए पारकी केहेवी तथा देवानी बुद्धिए पारकीने पोतानी केहेवी, ते व्यपदेश नामा त्रीजो अतिचार, तथा कोपजावे दान आपवुं, तथा पारकुं सारुं दान न जोइ शकवुं तथा परनी इष्यां करतां मा न धरतां मुनिने दान आपवुं ते मस्तरनामा चोथो अतिचार, तथा निश्चे गोचरीनो काल वीत्या पंठी मु निराजने तेरे केमके हवे मुनिराज वोहोरशे पए न हीं अने मारो नियम पए जंग नहीं आय, ते पांचमो कालातिक्रमदान अतिचार जाणवो ए अतिथिसंवि ज्ञागनामे चोथा शिक्षाव्रतने विषे जे अतिचार ला ग्यो होय ते प्रत्ये हुं निंडुं ॥ ३० ॥

(११४)

गाथा ३१ थी ३५ सुधीना तुटा

शब्दना अर्थ.

सुहिएसु-सुहित उपर, सुखीआ उपर	संविभागो-संविभाग, वोहोरावबुं	वाइअस्स-वचन सं- बंधी.
डुहिएसु-दुखीआ उ- पर	चरण-चरण सित्तरी करण-करण सित्तरी	मणसा-मनवडे क- रीने
जा-जे अ-नही	जुत्तेसु-सहित, वाळा. संते-छते	माणसिअस्स-मन सं- बंधी
स्सं-पोताने छंदे, रुडे प्रकारे	फासुअ-निर्दोष जीविअ-जीववामां	वय-व्रत गारवेसु-अहंकारने
जएसु-विचरता	मरणे-मरवामां	विषे
अस्संजएसु-गुरुनी आज्ञा प्रमाणे विच- रता, असंजती	आसंस-वांछा मा-नहीं	सन्ना-संज्ञा दंडेसु-दंडने विषे
अणुकंपा-दया साहूसु-साधुने विषे	मरणंते-मरणना अंते काइअस्स-काया सं- बंधी.	गुत्तिसु-(त्रण)गुत्तिमां समिईसु-(पांच) म- मितिमां

सुहिएसु अ डुहिएसु अ, जा मे
अस्संजएसु अणुकंपा ॥ रागेण व
दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि
॥३१॥ साहूसु संविज्ञागो, न कउ

(११५)

तव चरणकरणजुत्तेसु ॥ संते फासु
अ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि
॥३२॥ इह लोए परलोए, जी विअ
मरणे अ आसंसपणगे ॥ पंचविहो
अइअारो, मा मज्जं हुज्ज मरणंते
॥३३॥ काएण काइअस्स, पम्कि
मे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा मा
णसिअस्स, सवस्स वयाइअारस्स
॥३४॥ वंदण वय सिक्का गा, र्वेसु
सन्ना कसाय दंमेसु ॥ गुत्तीसु अ
सामईसु अ, जो अइअारो अ
तं निंदे ॥ ३५ ॥

सुहिएसु अ के० सम्यक् ज्ञान, दर्शन, अने चा
रित्रनुं जेमने सारी रीते हित ठे, तेमने सुहित कहीए,
वली दुःखित ते रोगे करीने पीमित, तपे करीने दु
र्बल, तुच्छ, जीर्ण, उपाधिये करीने दुखिया एवा, पोताना
बंदे विचरता नथी, पण गुरु आज्ञाए विचरे ठे एवा सु

साधु उपर पुत्रादिकना रागे करी एटले आ मारो पुत्र
 ठे के बाप ठे, एवा रागे करी दान दीधुं, पण गुणवंत
 नी बुद्धिए नहीं दीधुं, अथवा द्वेषे करीने एटले आ
 साधुने नातना लोकोए बहार काढ्यो ठे, ए झूरुयो ठे,
 ए बापदाने आपणे आहार पाणी आपवुं जोइए, नहीं
 आपीए तो ते झूखे मरइो एम द्वेषे करी एटले डुगंठा
 जावनी बुद्धिए करी मारे जीवे अन्नपानादिकना दाने करी
 दया प्रक्ति कीधी होय, ते प्रत्ये आत्म साखे हुं निंडुं
 अथवा गुरुनी साखे हुं विशेषे निंडुं. ए पेहेलो अर्थ थयो.

बीजो सुखी एटले वस्त्र पात्रादिके करी सुखीआ
 अने रोग प्रमुखे करी दुखीआ एवा असंयत एटले जे
 रुनो उद्यम नथी करता परंतु जीवहिंसादिक कर्म पा
 शमां पढवाना उद्यम करवावाला वेष विमंक्क, अ
 संयती, पासङ्गा, नसङ्गा वगेरेने, राग अथवा द्वेषे क
 रीने जे अनुकंपादान आप्युं होय, ते आत्म साखे
 निंडुं अने गुरुनी साखे गरहुं. त्रीजो जे असंयत ते
 ठकायना जीवनो आरंज करनार अथवा अन्य दर्शनी
 कुलिंगी, तेने रागे करीने जेमके आ मारा गामना रे
 नारा ठे तथा मारा जाइ ठे, मारी ओलखाणना ठे.

इत्यादि राग ज्ञावे करी दान दीधुं, तथा आ जिनशासननी हेतना करनारा ठे, द्वेषी ठे, निर्लज्ज ठे, जंरुक ठे, इत्यादि द्वेष उपन्यो, तो पण घेर आव्या माटे दान आप्युं इत्यादि मारे जीवे जे दया कीधी होय तेने हं निंडुबुं अथवा गुरुनी साखे गरहुं बुं ॥ ३१ ॥

साहसु संविज्ञागो केण तपे करीने तथा चरणसित्तरी अने करण सित्तरीये करीने सहित एवा सुसाधु, तेने विषे देवा योग्य फासु निर्दोष एवं अन्नपानादिकना दान ठते महारे जीवे जो संविज्ञाग न कीधी होय, तेथी जे अतिचार हुवो होय, ते प्रते हं आत्म साखे निंडुबुं वली ते प्रत्ये गुरुनी साखे गरहुं बुं. ए त्रण गाथाये करीने चोथुं शिक्षाव्रत थयुं ॥ ३२ ॥

हवे संलेखणाना पांच अतिचारनो परिहार करता ठता कहे ठे. इहलोए परलोए केण आ लोकने विषे आ धर्मना प्रज्ञावे शेठ, सेनापति, राजा प्रमुख रुद्धिवंत अवनो जे अजिलाष तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते इहलोकाशंस प्रयोग नामे पेहेलो अतिचार जाणवो. आ धर्मना प्रज्ञावे परलोक मध्ये देव देवेंड

थवानो अज्जिलाष तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते
 परलोकाशंसप्रयोग नामा बीजो अतिचार जाणवो.
 अनशनने लीधे सन्मान सत्कार देखी घणा काल
 जीववानी जे इडा तेनो प्रयोग जे मननो वेपार ते
 त्रीजो जीविआशंसप्रयोग अतिचार जाणवो. कठण
 क्षेत्रने विषे अनशन लेइने कोइ पूजा अर्चा न करता
 होय तेणे करी अथवा जूखादिके करी पीरुचां थकां
 उतावली मरणनी जे इडा तेनो प्रयोग जे मननो
 व्यापार ते मरणाशंसप्रयोग नामा चोथो अतिचार
 जाणवो. तथा अ केण च शब्द थकी आ धर्मने प्रजावे
 आवते जेव रुना शब्द, रूप, रसादिक जे कामजोग
 तेनो जे अज्जिलाष तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते
 पांचमो कामजोगाशंसप्रयोग नामा अतिचार जाणवो.
 ए रीते संक्षेपणा संबंधि ए पांचप्रकारना अतिचार म
 रणने अंते महारे न थान् ॥ ३३ ॥

काएण काइअस्स केण वधादिकारी एवा शरीरे
 करी करेला जे अतिचार ते अतिचारने कायोत्सर्गादि
 क तप अनुष्ठानादिक कायाना शुभ व्यापारे करी यु
 क्त एवा शरीरे करीने तथा सहसाज्याख्यानदानादि

(३३९)

रूप वाणीए करीने करचो एवो जे वचन संबंधी अतिचार तेने वचने करीने मिथ्याडुक्कर देवुं, जिनस्तवन करवुं, इत्यादिक जे शुभ वचननो व्यापार, तेणे करीने, तथा मानसिक एटले देवतत्त्वादिकने विषे मने करी शंकादिकने करवे करी करथा एवा जे अतिचार तेने मने करी अनित्य ज्ञावनादिक जे मनना शुभ व्यापार तेणे करीने, तथा “ हा ! में दुष्टकाम कर्युं ? ” इत्यादिक आत्मनिंदाए करीने, एम सर्व व्रतना अतिचार प्रत्ये त्रिकरण शुद्धे करीने हुं पम्किमुहुं निवर्त्तुं ॥३४॥

वंदणवय के वंदण बे प्रकारे ठे; एक देववंदन, बीजुं गुरुवंदन. बीजुं श्रावकनां स्थूल प्राणातिपात विरमणादिक व्रत वार प्रकारे ठे. त्रीजी शिक्षा बे जेदे ठे. त्यां श्रावकने सामायिक सूत्रार्थनुं ग्रहण, तेने ग्रहण शिक्षा कहीए. ते जघन्य नवकारथी मांसीने अष्ट प्रवचन माता गुरु पासैथी जणे अने उत्कृष्टो दशवै कालिक सूत्रना पांचमा ठज्जिवणिया अध्ययन पर्यंत सूत्र ने अर्थ बेहु जणे, ग्रहे, धारे, शीखे, त्यां लगे प्रथम ग्रहणशिक्षा जाणवी; अने जे अर्थ सहित नमुकारसहियं प्रमुख दिनकृत्य एवी श्रावक संबंधि क्रि

या अनुष्ठाननी जे समाचारी ठे, एटले पहेलो नवकार गणतो थकोज उठे, पढी पोतानुं स्वरूप विचारे जे हुं श्रावकबुं, मारे केटलां व्रत ठे, इत्यादि श्राद्धदिन कृत्य प्रकरण तथा श्राद्धविधिमां जे समाचारी कही ठे ते सर्व जाणे, आचरे, आसेवे, ते बीजी आसेवना शिक्षा कहीए. हवे रुद्धिगारव रसगारव अने शातागारव ए त्रण प्रकारना गारव ठे; तेमां पहेलो धन, सगां संबधी परिवार घणो देखीने मनमां अहंकार आणे ते रुद्धिगारव, अने जे सारुं खावापीवाने लोलुपी थाय ते रसगारव, तथा जे वस्त्र घर प्रमुखने मोहने लीधे ठोनी शके नहीं तेने शाता गारव कहीए. ए त्रण प्रकारना गारवनुं सेवन करवाथी, तथा पांचमो सत्रा केण आहार, ज्ञय, मैथुन अने परिग्रह, ए चार संज्ञा नुं; बीजी क्रोध, मान माया, लोभ, लोक, उध, एठ संज्ञानुं, ते एकेंडियादि सर्व जीवोने होयठे, तथा ठो कसाय केण क्रोधादि चार कषाय, तथा सातमो दंभे सुकेण धर्म धनथी जेणे करी आत्मा दंभाय ते दंभ, अ शुभ्र मनादिक त्रण जेदे ठे. आठमो गुत्तीसु अकेण मनादिक त्रण गुत्ति, नवमो समिर्इसु केण ईर्यादिक पांच

समिति, अने अ के० च शब्दशी श्रावकनी अगिआर
परिमा. ए नव बोल मध्ये जे बोल निषेध करवा यो
ग्य ठे तेना करवाशी अने जे बोल करवा योग्य
ठे तेना न करवाशी जे अतिचार मने लाग्यो होय.
ते प्रत्ये हुं निंडुं. ॥ ३५ ॥

गाथा ३६ थी ४० शुधीना बुटा शब्दोना अर्थ.

हु-तो पण
समायरइ-समाचरे,
करे.
किंचि-थोडुं
अप्यो-अल्प, थोडुं.
सि-तेने
बंधो-बंध
जेण-जे माटे
निद्धंधसं-निर्दयपणे
कुणइ-करे
तंपि-ते पण
सपडिक्कमणं-पडिक्क-
मण सहित
सपरिआवं-परिताप

सहित, पश्चात्ताप स-
हित
सउत्तरगुणं-उत्तर गु-
ण सहित
खिप्पं-क्षिप्र, उतावळो
उवसामेइ-उपशमावे,
टाळे.
वाहि-व्याधि
व्व-जेम
सुसिखिखओ-सारो
शीखेलो
विज्जो-वैद्य
कुट्टगयं-कोठामां ग-
येलुं.

विसारया-विशारद,
जाणनार.
हणंति-हणे छे, दूर
करे.
मंतोहि-मंत्रोण करीने
तो-सारे
निव्विसं-विष रहित
समज्जिअं-मेळवेलुं
आलोअंतो-आलोव-
तो
निंदतो-निंदतो
सु-सारो
कयपावो-पाप कर-
नारो

मणुस्सो-माणस	होइ-थाय	भरु-भार
आलोइअ-आलोइने	अइरेग-अतिरेक, घणो	भार-वोज, भार.
निंदिअ-निंदिने	लहुओ-हळवो	वहो-वेहेनार, लेइ ज-
सगासे-समीपे, पासे	ओहारिअ-उतारीने	नार.

सम्मदिठ्ठी जीवो, जइवि हु पावं
समायरइ किंचि ॥ अण्पो सि होइ
बंधो, जेण न निद्धंघसं कुणइ ॥ ३६ ॥
तंपि हु सपम्किमणां, सप्परिअ्रावं
सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेई,
वाहि व सुसिख्किउ विज्जो ॥ ३७ ॥
जहा विसं कुठगयं, मंत मूल वि
सारया ॥ विद्या हणंति मंतेहिं, तो
तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अ
ठविहं कम्मं, रागदोससमच्चिअं ॥
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं ह
णइ सुसावन ॥ ३९ ॥ कयपावोवि
माणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरु

(१३३)

सगासे ॥ होइ अइरेग लहुन, उह
रिअ नरुव नारवहो ॥ ४० ॥

सम्मद्विष्टी के० जो पण सम्यक्दृष्टि एटले यथा
अवस्थित स्वरूपनो जाण एवो जीव ते थोमा खेती
प्रमुख आरंभरूप पाप गुजरान चलाववाने माटे करे
ठे, तो पण ते सम्यक्दृष्टि जीवने अल्प ते पूर्व गुण
ठाणानी अपेक्षाये करी थोमो कर्मनो बंध होय; जे
कारण माटे, सम्यक्दृष्टि जे श्रावक ठे ते निर्दयपणे
पाप व्यापार न करे, अने करे तो पण शंका राखीने
करे, वली मनमां विचारे के धिक्कार पमो आ गृह
स्थाश्रमने के जेने विषे केटलां पाप करवां पमे ठे ?
एवी बीक राखीने करे, पण निर्दय परिणाम राखीने
न करे तेथी तेने पाप थोमुं लागे ठे. ॥३६॥

अहींआं कोइ आशंका करे के, जेम थोमुं पण
विष खावाथी जीव जाय ठे, तेम थोमुं पण पाप कर
वाथी दुर्गतिनी प्राप्ति न थाय ? आ आशंकानो उत्तर
आगली गाथाये आपे ठे.

तंपि हु सपत्तिक्रमणं के० प्रतिक्रमण जे ठ आवश्यक

क तेणे करी सहित थको, एटले प्रतिक्रमण करवे करी
 ने, वली परित्ताप सहित थको, एटले पश्चात्ताप करवे
 करी वली उत्तरगुणे सहित थको, एटले गुरुए दीधुं
 जे प्रायश्चित्त तप, ते तप करवे करी युक्त, एवो श्रावक
 निश्चे ते थोमा कर्मना बंधने पण उतावलो उपशमा
 वे ठे, टाले ठे. कोनी पेरे? तो के सारो शीखेलो वैद
 जेम रोगोने तरत टाले ठे तेम ए पण जाणवुं. ॥३७॥

वली जहाविसं केण जेम मंत्र मूलमां प्रवीण
 एवा जे वैद्य ते शरीरने विषे व्यापेला सर्पादिकना जे
 रने मंत्रवरुने दूर करे ठे ते वारे ते शरीर विषरहित
 आय ठे. जो के विषे पीमाएलो पुरुष सर्पनी मणि मं
 त्राकर औषधिना प्रज्ञाव जाणतो नथी तो पण तेमनो
 प्रज्ञाव अचिंत्य ठे तेथी तेनुं विष निवृत्त आय ठे, तेम
 अर्ही पण श्रावकने गुरुवाक्यना अनुसारे ते अकरना
 सांजलवाथी दाज्ज आय ठे. ॥३७॥

एवं अठविहं केण एरीते गुरु पासे पोतानां पाप
 आलोवतो तथा निंदतो थको, साचा मनथी मिच्छामि
 दुक्कमं देतो थको, जलो श्रावक जे ठे, ते रागद्वेषे करीने
 बांधेलुं आठ प्रकारनुं कर्म, तेने तरत द्देषे ठे. ॥ ३८ ॥

(३३५)

कय पावोविकेण पापनो करनार एवो पण मनुष्य.

गुरु पासे करेवा पापने प्रकाश करतो थको, तथा पापनी निंदा करतो थको, एटले मिहामि डुकरु देतो थको, घणा पापथी हलवो थाय. जेम नार लेइ जनार पुरुष नार उतारीने हलवो थाय ठे तेम ते प पा कर्मरूप नारे करीने हलवो थाय ठे. ॥ ४० ॥

गाथा ४१ थी ४५ सुधीना बुटा

शब्दना अर्थ.

आवस्सएण-आवश्य
के करीने
एएण-एणे करी
बहुरओ-बहुरजवालो,
घणा पाप वाळो.
दुरुखाणं-दुखोनी
अंतकिरिअं- अंतकि-
या, नाशक्रिया.
काही-करशे

अचिरेण-थोडा
कालेण-काले करी
आलोअणा-आलोच
ना, आलोयण.
न-न
य-वळी
संभरिआ-सांभरी
मूलगुण-मूळ गुण
पन्नत्तस-कहेलो, भा-

खेलो
अप्पुट्टिओमि-उठयो
हुं
आराहणाए-आराध-
नाने माटे
विरओमि-निवत्तयोहुं
पडिकंतो-पाप थकी
निवत्तयो.

आवस्सएणा एएण, सावउ जइवि
बहुरउ होइ ॥ डुस्काणमंतकिरि

(१३६)

अं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥
आलोअणा बहुविहा, न य संन
रिआ पम्किमणकाले ॥ मूलगु
णउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहा
मि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केव
लिपन्नत्तस्स ॥ अप्पुठ्ठिमि आरा
हणाए विरुमि विराहणाए ॥ ति
विहेण पम्किंतो, वंदामि जिणे
चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआ
इं, उड्डेअ अहे अ तिरिअ लो
ए अ ॥ सवाइं ताइं वंदे, इह सं
तो तन्न संताइ ॥ ४४ ॥ जावंत के
वि साहू, नरहेरवयमहाविदेहे अ ॥
सवेसिं तेसिं पणन, तिविहेण ति
दंमविरयाणं ॥ ४५ ॥

आवस्सएण केण जो पण श्रावक घणो कर्म वं

रूप रजवालो एटले आरंज परियहे करी घणा पाप सहित होय तो पण ए पम्कमणादि आवश्यक करीने शारीरिक तथा मानसिक दुःखोनो थोडा कालमां विनाश करशे. ॥ ४१ ॥

आलोचना के० आलोचना एटले गुरु आगल पाप प्रमाद आलोचवानी रीत ते घणा प्रकारनी ठे, ते मारा पम्कमणा करवाना अवसरे न सांजरी होय ते न सांजरवाथी सम्यकत्व पूर्वक पांच अणुव्रत तेने विषे, तथा त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत तेने विषे, जे अतिचार लाग्यो होय, तेने हुं आत्म साखेनिंडुं, वली ते प्रत्ये गुरु साखे गरहुं ॥ ४२ ॥

एबेतालीस गाथांन बेगं कहेवी पढी तस्स धम्मस्स एम कहेतो उज्जो अइ बे हाथ जोमीने आगली मंग लगन्तित आठ गाथाओ कहे. तस्स धम्मस्स के० ते गुरु पासेथी मलेलो एवो अने केवली ज्ञापित एवो श्रावक धर्म तेनी आराधनाने माटे हुं सारी रीते पालन करवाने उठयोहुं. ते धर्मनी विराधना थकी हुं निवर्त्यो हुं. त्रिविधे करी एटले मन, वचन, अने कायाए करी अतिचार पाप थकी निवर्त्यो थको चोवीश

जिनने हुं वांडुबुं ॥ ४३ ॥

जावंति चेइआइंकेण उर्ध्वलोकने विषे वली अ
घो लोकने विषे वली तिर्हा लोकने विषे जेटलां चै
त्य एटले जिनबिंब ठे ते सर्वने अर्हीआं रह्यो थको हुं
वांडुबुं. ॥ ४४ ॥

जावंत केविसाहू केण पांच ज्जरतक्षेत्रने विषे, पां
च ऐरव्रत क्षेत्रने विषे, तथा पांच महाविदेह क्षेत्रने वि
षे, अने च शब्दथी अकर्मजूमि क्षेत्रादिकने विषे ज
बन्य बे हजार कोमी अने उत्कृष्टा नव हजार कोमी
साधुज ठे ते सर्व साधु प्रते त्रिविधे एटले मन, वचन
अने कायाए करी हुं प्रणसुंबुं. ते सर्व साधु केवा ठे तो
के त्रण दंम थकी एटले अशुज मन, वचन अने का
याना व्यापारथी विराम पामेला ठे. ॥ ४५ ॥

गाथा ४६ थी ५० सुधीना बुटा

शब्दना अर्थ.

चिर-घणा कालनां	सय-सो	कहाइं-कथाओ
संचिय-एकठां करेलां	सहस्स-हजार	बोलेतु-जाओ
पणासणीइ-नाश क-	महणीए-मथनारी	दिअहा-दिवसो
रनारी	विणिग्गय-नीकळेली	पाडिसिद्धाणं-निषेध

(२३ए)

करेलुं
किञ्चाणं-करवा जोग
अकरणे-नहीं करवा-
थी
असद्वहणे-अश्रद्धामां
परूवणाए-प्ररूपणाए

खामेमि खमावुं छुं
खमंतु-खमो
मे-मने
मिच्ची-मैत्रीभावे
भूएसु-प्राणीओमां
वेरं-वेरभाव

केणइ-कोइनी साथे
गरहिअ-गुरुनी साथे
निंदीने
दुगंछिअ-घणुं खोटुं
जाण्युं.
सम्मं-सम्यक्प्रकारे

चिरसंचियपावपणासणीइ, जवस
यसहस्समहणीए ॥ चउवीस जि
णाविणिग्गय कहाइं, वोळंतु मे
दिअ्रहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरि
हंता, सिद्धा साहू सुअ्रं च धम्मो
अ ॥ सम्मद्धिठी देवा, दिंतु समा
हिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पणिसिद्धा
णं करणे, किञ्चाणमकरणे पणि
कमणं ॥ असद्वहणे अ तहा,
विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥
खामेमि सब जीवे, सबे जीवा ख

मंतु मे ॥ मित्ती मे सवन्नूएसु, वेरं
 मद्यंनकेणश॥४ए॥एवमहं आलो
 इअ, निदिअ गरहिअ डुगंठिअं
 सम्मं ॥ तिविहेण पम्किंतो, वंदा
 मि जिणे चउवीसं ॥५०॥ इति॥

अर्थः—चिर संचिय केण घणा कालनां एकठां क
 रेल्लां जे पापो तेने विनाश करनारी एवी, संसारना
 लक्ष जव जे करवा तेने हणनारी एवी, चोवीश तीर्थ
 करोथी नीकली जे जिनगुणोनी कथा, ते करवे करीने
 मारा दिवसो जान. ए प्रार्थना करी ठे. ॥ ४६ ॥

मम मंगलमरिहंता केण एक श्री अरिहंत, बीजा
 सिद्ध जगवान्, वली त्रीजा साधु मुनिराज, चोथो
 श्रुत धर्म, ते अंगोपांगादिक आगम, वली चारित्र
 धर्म पण लेवो; ए श्रुत धर्म अने चारित्र धर्म ए
 म वे प्रकारे केवलीए प्ररूप्यो जे धर्म ते; ए चार वा
 नां मारे मंगलिक ठे. अ शब्द थकी ए चारवानां लो
 कने विषे उत्तम ठे, शरणजत ठे, वली पण एम प्रा

र्धना करीए ठीए जे सम्यक् दृष्टि देवताउ जे ठे, ते मुजने शुभ कार्यने विषे जे चित्तनी स्थिरता ते प्रत्ये वली बोधि प्रत्ये एटले परजवे श्री जिनधर्मनी प्राप्ति प्रत्ये आपो. ॥ ४७ ॥

पद्मसिद्धाणं—के० प्रतिषेध करेलां एटले निषेधे लां काम ते समकित अने अणुव्रत वगैरेने मलिन करवानां हेतु एवां शंका वधादिक अठार पापस्थानादिक अशुभ कार्य करवे करी, तथा बीजो विधि एटले कखा योग्य कामो जेवां के, देवपूजा, सामायक, विनय, दानादिक अरिहंतनी जक्ति प्रमुख जे शुभ कार्य ठे ते शुभ कार्यने नहीं करवा थकी, वली त्रीजा अश्रद्धाने विषे एटले निगोदादि सूक्ष्म विचारने नहीं सर्वहवे करी, वली तेमज चोथो विपरीत प्ररूपणा के तां जिनागमथी बुलटी प्ररूपणा करवे करीने एटले उत्सूत्र बोलवे करीने, आ जे विपरीत प्ररूपणा ठे ते अत्यंत जवन्नमणुं कारण रूप ठे, ते विपरीत प्ररूपणा तो अनाज्ञोगादिके कर्ये ठेते पण प्रतिक्रमण कराय ठे, तेथी ए चार प्रकारे करीने जे पाप लाग्युं होय, अतिचार थयो होय, ते पाप ढर करवाने अर्थे प

(३५९)

सीलंगधारा ॥ अस्त्रक्यायारचरि
ता, ते सबे सिरसा मणसा मढ
एणा वंदामि ॥ ५ ॥ इति ॥

अर्थः—अद्वाइजेसु के० अढी द्वीप, वे समुद्र सं
बंधी जे पंदर कर्मजुमि क्षेत्रने विषे जेटला कोइ पण
साधु, रजोहरण एटले नुघो, अने गुडो ते पातरानी
जोली उपरनुं उपकरण, अने पात्रुं, इत्यादि धर्मोप
करणना धारण करनारा ठे. ॥ १ ॥

ए साधुनो वेष कह्यो, हवे गुण कहे ठे. ते साधु
केवा ठे ? तो के पांच महाव्रतना धरनार ठे. वली अ
ठार हजार शीलनां (चारित्रनां) जे अंग तेना धरनार.

ए ठे, अने मित्रामि डुकरु ठे. ॥ ४७ ॥

खामेमि सब जीवे केण सर्व जीवो प्रत्ये हुं खमा
 वुं वुं, एटले अनंत ज्ञवोने विषे पण अज्ञानने मोहधी
 आवृत अवा अकी, जीवोने जे पीडा कीधी होय, ते
 खमावुं वुं, अने ते सर्व जीवो म्हारा अपराधने खमो
 (माफ करो), केम के सर्व जीवोने विषे मारे मैत्री
 ज्ञाव ठे, कोइ जीवनी साथे मारे वैरज्ञाव नथी ॥४८॥

एवमहं आलोइअ केण ए प्रकारे में सम्यक् प्र
 कारे आलोच्युं, सम्यक् प्रकारे अत्यंत खोटुं जाण्युं,
 आत्म साखे निंद्युं, सम्यक् प्रकारे गर्ह्युं, अने सम्यक्
 प्रकारे डुगंढ्युं, ते माटे त्रिविधे करी एटले मन वचन
 अने कायाए करी अतिचारादिक पाप धकी पाठो फ
 रतो अको एटले पापने पम्किमत्तो एवो जे हुं ते चो
 वीस जिनने वांडुं वुं. ॥ ५० ॥ इति वंदिता सूत्र ॥

विधिः—पठी वे वांढणां देइने गुरुने अपराध ख
 माववाने आ रीते कहे.

अप्पुठिठमिना तुटा शब्दना अर्थ.

अप्पुठिठमि-हुं	उ-	अपत्तिअं-अप्रीति उ	परपत्तिअं-विशेष अ
ठ्यो हुं		पजावी	प्रीति उपजावी

(२४३)

आलावे-एकवार वो लाववे	अंतर भासाए-वच्चे बोलतां	सुहुमं-सूक्ष्म वायरं-मोडुं
संलावे-वारंवार वो लाववे	उवरिभासाए-कहेली वात फरीने विशेष	तुप्पे-तमे जाणह-जाणो छो
उच्च-उंचा सम-सरखा	पणे कहेवार्थी परिहीणं-रहित	याणामि-जाणुंछुं

॥ अथ अप्पुठ्ठिमि गुरुखामणां ॥

इच्चाकारेण संदिसह जगवन् अप्पुठ्ठिमि अप्पिंतर देवसिअं खा
मेनुंण॥इच्चंण॥ खामेमि देवसिअं॥
जं किंचि, अपत्तिअं, परपत्तिअं,
जत्ते पाणे विणए वेअ्रावच्चे आ
लावे संलावे उच्चासणे समासणे
अंतरजासाए उवरिजासाए जंकिं
चि मप्प विणयपरिहीणं सुहुमं
वा वायरं वा तुप्पे जाणह अहं न

याणामि तस्स मिञ्चामि इकमं

॥ १ ॥ इति ॥

अर्थः—इञ्चाकारेण के० हे जगवन ! दिवस मांहे कीधेला अपराध खमाववाने हुं उज्जो अयो तुं, ते खमाववानो सुजने तमारी इञ्चाए करी आदेश आपो. ते वारे गुरु कहे, खामेह (खमावो); ते वारे शिष्य कहे इञ्चं, एटले एज इञ्चुं तुं. दीवस संबंधी अपराध प्रत्ये खामुं तुं. पढी पंचांगे प्रणाम करी, मुखे मुहपत्ति राखी एम कहे के जं किंचि के० जे कांइ अप्रीति उपजावी होय, विशेषथी अप्रीति उपजावी होय, शाने विषे ? तो के ज्ञातपाणीने विषे, विनयने विषे, (गुरु आवे उज्जा अयुं, गुरुने वेसवा आसन आपवुं तेने विनय कहीए) वेआवच्च (औपधपथ्य आणी विसामणां प्रमुख ते)ने विषे, एक वार बोलाववुं, वारंवार बोलाववुं तेने विषे, विनय चुक्यो होउं, वली गुरुथी उंचे आसने वेसतां, वली गुरुनी पासे सरखा तथा वरावर आसने वेसतां, वली गुरुना वात करतां, बोलतां, वचमां बोली उठ्याथी, वली गुरु वात करी

रह्या पढी तेज वात पोतानी चतुराइ देखामवाने विशेष
 पपणे कहेवाथी इत्यादि जे कांइ में विनय रहितपणे
 कीधुं होय, एटले जे कांइ नानो अथवा मोटो अविनय,
 अपराध, माराथी अयो होय, ते सर्व हे ज्ञानवंत ! त
 मे ज्ञाने करी जाणो गे अने हुं नथी जाणतो, ते मा
 रुं सर्व पाप मिळ्या श्रांत. ए अपराध विधि पूर्वक
 खमावतां चंडरौडाचार्यादिक अनेक जीवोने केवल
 ज्ञान नपज्युं गे. ॥ इति ॥

विधि:-ए रीते अप्रुष्ठिनमि खामीने वांदणा वे
 देवां, पढी नज्जा अइने आयरिअ उवद्याए कहे ते
 लखीए ठीए.

आयरिय उवद्याएना बुटा शब्दना अर्थ.

सीसे-शिष्यने विषे	समण-श्रमण, साधु	अहयंपि-हुं पण
साहार्मिण-सार्धमिक	संघस्त-संघने [डडुं	रासिस्त-समूहने
ने विषे [शिष्य	अंजलि-वे हाथनुं जो	भावओ-भावथी
कुल-एक आचार्यना	सीसे-मस्तके	निहिय-स्थाप्युं छे
गणे-घणा आचार्यना	खमावइत्ता-खमावीने	निय-निज, पोतानुं
परिवार		चित्तो-चित, मन

(१४६)

॥ अथ आयरिय उवद्याए ॥

आयरिय उवद्याए, सीसे साह
म्मिए कुलगाणे अ ॥ जे मे केइ
कसाया, सबे तिविहेण खामेमि
॥ १ ॥ सबस्स समणसंघस्स, न
गवण अंजलिं करिय सीसे ॥ स
वं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अ
हयंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासि
स्स, ज्ञावण धम्म निहिय नियचि
तो ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि स
बस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

अर्थः—आयरिअ के० आचार्य, उपाध्याय, शिष्य,
साधर्मिक, (पोताना सरखा धर्म पालनारा तेने साव
र्मिक कहीए) कुल (एक आचार्यना संतान), अने
गण (गण, घणा आचार्योनी परिवार), एठने विषे
जे कांइ मारे जीवे क्रोधादि कपाय कीधा होय ते

सर्वे मन, वचन, अने कायाए करी खमावुं तुं. ॥१॥

सबस्स समण संघस्स केण सर्व श्रमण संघरूप
जगवंतना कीधा जे अपराध, ते सर्व अपराध प्रत्ये
वे हाथ जोमी मस्तके चन्दावीने खमावुं तुं अने ते
सर्वना करेला अपराध प्रत्ये हुं पण खमुं तुं. ॥ २ ॥

सबस्स जीव रासिस्स केण सर्व जीवना समूहनो
जे अपराध में कीधो ते ज्ञावे करी धर्मेने विषे पो-
तानुं चित्त आप्युं ठे एवो हुं ते सर्व अपराध खमा
वुं तुं अने हुं पण तेमना अपराध प्रत्ये खमुं तुं. ॥३॥

विधिः—पढी करेमि जंतंते कही इत्थामिठामि का
उस्सग्गं जोमे देवसिउण कही तस्स उत्तरी कही अन्न
ठ उससिएणं कही, वे लोगस्स अथवा आठ नवका
रनो कानुस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स केहेवो. पढी
सबलोए अरिहंत चेइआणं, वंदण वत्तिआएण कही,
एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो कानुस्सग्ग करी
पारी पुरकरवरदीण सुअस्स जगवणुण करेमिण वंदणण
कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो कानुस्स
ग्ग करी पारीने, सिद्धाणं बुद्धाणं कही सुअदेवयाए
करेमिकानुस्सग्गं अन्नत्तं कही एक नवकारनो कानु

स्सग्ग करी पारी नमोऽर्हत्तुं कही पुरुषे सुअदेवया
नी पेहेली थोय कहेवी अने स्त्रीए कमलदलनी पेहे
ली थोय कहेवी. पठी खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं
अन्नत्त, कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी
नमोऽर्हत्तुं कही क्षेत्र देवतानी बीजी थोय पुरुषे
जीसे खित्ते साहूनी कहेवी अने वाइत्तए यस्थाः
क्षेत्रंणी थोय कहेवी.

॥ अथ सुअदेवयादि थोयोना बुटा शब्दना अर्थ ॥

सुअ-श्रुत	जीसे-जेना	दल-पांखडी
देवयाए-देवताने अर्थे	खित्ते-क्षेत्रमां	विपुल-विशाल
देवया-देवता	नाणोहिं-ज्ञाने करीने	नयना-आंखवाली
भगवई-भगवती	चरण-चारित्र	मुखी-म्होंवाली
नाणावरणीय-ज्ञाना	सहिणहिं-सहित एवां	गर्भ-गर्भ
वरणीय	साहांति-साधे छे	सम-सरखी
संघायं-समूह	मुखख-मोक्ष	गौरी-गोरावर्णवाली
तेसिं-तेमनां	मग्गं-मार्ग	स्थिता-रहेली
खवेउ-खपावो	सा-ते	भगवती-भाग्यशाली
सययं-निरंतर	देवी-देवी	युतानां-वालाने
सायरे-सागरमां	हरउ-हरो	
धात्ति-भक्ति	दुरियाइ-पापोने	

(५४ए)

स्वाध्याय-सज्जाय
संयम-चारित्र
रतानां-रागी
विदधातु-करो
मुवन-घरनी

यस्याः-जेणीना
क्षेत्रं-क्षेत्रने
सं-सम्यक् प्रकारे
आश्रित्य-आश्रयीने
साधुभिः-साधुओए

साध्यते-सघाय छे
क्रिया-क्रिया
भूयाव-हो
नः-अमने
दायिनी-आपनारी

अथ श्रुत देवतानी थोय.

सुअदेवयाए करेमि कानुस्सग्गं
॥ सुअदेवया जगवई, नाणावर
णीय कम्म संघायं ॥ तेसिं खवे
उ सययं, जेसिं सुय सायरे जत्ति
॥ १ ॥ इति ॥

अर्थ-श्रुतदेवताने आराधवा अर्थे हुं कानुस्सग्ग
करु तुं. सुअदेवया केण ज्ञव्य पुरुषोनी निरंतर श्रुत सा
गरने विषे जत्ति ठे, तेमना ज्ञानावरणीय कर्मना स
मूहने जगवती एवी श्रुत देवता अथवा सरस्वती
खपावो. ॥ १ ॥

अथ क्षेत्रदेवतानी थोय.

जीसे जित्ते साहू, दंसण नाणेहिं

(३५०)

चरण सहिएहिं ॥ साहंति मुस्क म
गंग, सा देवी हरज डुरियाइ ॥२॥

अर्थः—जीसे खिते केण जे देवीना क्षेत्रने विषे
चारित्र सहित एवां दर्शन अने ज्ञाने करीने, साधु मु
निराज मोक्षना मार्गने साधे ठे ते देवी पापने दूर करो.
॥ १ ॥ आ बे श्रोयो पुरुषने कहेवानी ठे.

॥ अथ कमलदलनी श्रोय. ॥

कमलदलविपुलनयना, कमलमु
खी कमलगर्जसमगौरी ॥ कमले
स्थिता जगवती, ददातु श्रुतदेव
ता सिद्धिम्. ॥ १ ॥

अर्थः—कमलदल विपुलनयना केण कमलनी पां
खनी जेवां विशाल नेत्रवाली, तथा कमलना जेवा
सुशोन्नित मुखवाली, तथा कमलना मध्यजागना ग
र्ज जेनी गौरवर्णवाली, तथा कमलने विषे रहेली,
एवी ठकुराइ प्रमुख गुणनी धरनारी, एवी जे सिवांत
नी अधिष्ठायिका श्रुतदेवी ते अमने सिद्धि प्रत्ये आपो ॥१॥

(१५१)

॥ अथ यस्याः क्षेत्रं नी शोय ॥

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः
साध्यते क्रिया ॥ सा क्षेत्रदेवता नि
त्यं, नूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥ इति ॥

अर्थः—यस्याः क्षेत्रं के० जेना क्षेत्रने अंगीकार क
रीने साधुनुश्री धर्मक्रिया सधाय ठे, ते क्षेत्रदेवी अमने
निरंतर सुखनी देवावाली हो. ॥ १ ॥ इति ॥ आ वे
शोयो स्त्रीने कहेवानी ठे.

अथ नूवनदेवतानी शोय.

नूवणदेवयाए करेमि कानुस्सग्गं०
॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वा
ध्यायसंयमरतानां ॥ विदधातु नूव
नदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनां ॥१॥

अर्थः—नूवनदेवताने आराधवा अर्थे कानुस्सग्ग
करुं बुं: ज्ञानादिगुणयुतानां के० ज्ञानादि गुणे करीने
सहित तथा निरंतर स्वाध्याय अने संयमने विषे रागी
एवा सर्व साधुने नूवन देवी हमेशां कळयाए करो

॥१॥इति॥ आ थोय अने यस्याःक्षेत्रंनी थोय पाखी पन्नि कमणामां सुअदेवयानी वे थोयने बदले कहेवाय ठे.

विधिः--पठी प्रगट नवकार गणी वेसीने, ठा आवश्यकनी मुहपत्ती पन्निहेही, वांदणांवे दीजे, पठी सामायिक चउविसठो, वंदनक, पन्निक्कमणुं, काउस्स ग्ग, पच्चस्काण कर्युं ठे जी एम कही पठी इहामो अ णुसठिं नमो खमासमणाणं कहीं नमोऽर्हत्तु कहीने पुरुष नमोस्तु वर्द्धमानाय कहे, अने स्त्रीउ संसारदा वानी त्रण गाथा कहे.

॥ नमोस्तु वर्द्धमानायना बुटा शब्दना अर्थ ॥

इच्छामो-अमे इच्छि	तव-ते (नी)	राज्या-श्रेणीवढे
ये छीए	जय-जीत (थी)	ज्यायः-व्धारे सारु
अणुसठिं-शिक्षा, शि	अवाप्त मोक्षाय-मोक्षने	क्रम-पग
खामण	पामेलाने	दधत्या-धारण करती
नमः-नमस्कार	परोक्षाय-दृष्टिथी दूर	सदृशैः-सरस्वानी साथे
अस्तु-हो	कुतीर्थिनां-मिथ्यादृष्टि	इति-ए प्रकारे
वर्द्धमानाय-वीरस्वा	ओनी-ने	संगतं-येलाप [एक
मीने.	येपां-जेमना	प्रशस्यं-वखाणवा ला
स्पर्द्धमानाय-इर्ण्या	विकच-विकस्वर	काथितं-कथुं ठे
करनारने	अरविंद-कमल	संतु-थाओ

शिवाय-मोक्षने अर्थे	यो-जे	वृष्टि-वरसाद
ते-तेओ [डाएला	जैनमुख-जिननुंमुख	सन्निभो-सरस्वो
नापार्दित-तामथी पी	अंबुद-मेघ	दवातु-करो
जंतु-प्राणीओने	उद्गतः-नीकलेखुं	तुष्टि-संतोष
निवृत्ति-मुख	शुक्रमास-जेठ महिनो	मायि-मारे विपे
करोति-करे छे	उद्भव-उपजेला	विस्तरो-विस्तार
		गिरां-बाणीओने

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

इहामो अणुसठिं ॥ नमो खमा
समणाणं ॥ नमोऽर्हत्तु नमोऽस्तु
वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कु
तीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विक
चारविंदराज्या, ज्यायःक्रमकमत्ता
वद्धिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संग
तं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते
जिनैद्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दित
जंतु निवृत्तिं, करोति यो जैनमुखां

बुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि
संनिज्जो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरौ
गिरां ॥ ३ ॥ इति ॥

अर्थः--इहामो अणुसष्टिं के० अमो शिक्षा प्रत्ये
वंडीए ठीए, कृमा श्रमणोने नमस्कार. नमोस्तु वर्द्ध
मानाय के० जे कर्मोनी साथे इर्ष्या करनार ठे एवा,
वली ते कर्मोने जीतीने मोक्ष पास्या ठे एवा, वली
मिथ्या दृष्टि जीवोने दृष्टिथी जे दूर ठे एवा, श्री व
र्द्धमान स्वामीने नमस्कार थानु. ॥ १ ॥

येषां विकचारविंद के० ते जिनेंझे मोक्षने अर्थे
थानु. ते जिनेंझे केवा ठे ? तो के जेमना ज्यायः--के०
अतिप्रशंसवा योग्य एवा चरण कमलनी श्रेणीने धार
ण करती एवी, विकचारविंदराज्या के० विकस्वर ए
वा देवोए रचेला अरविंद नामे कमल तेनी श्रेणीए क
रीने सरखानी साथे मलवुं ते प्रशंसा करवा योग्य ठे.
इति के० ए प्रकारे कथितं के० कह्युं ठे एटले सरखे
सरखा मले ते शोन्ने माटे ते सुवर्णमय नव कमल
अने प्रचुना चरणकमल ए वंनेना मलवाथी अ

त्यंत शोभा अह. ॥ ३ ॥

कषायतापादित केण जे वाणीउनो विस्तार कषाय रूप तापे पीमित एवा प्राणीउने शांति समाधि प्रत्ये करे ठे. वली जे जिनराजना मुखरूप मेघथी न पज्यो ठे, वली जेठ मासथी उपज्या एवा वरसाद जेवो ठे, ते सिद्धांतरूप वाणीउनो विस्तार मारे विषे संतोष करो. ॥ ३ ॥ इति ॥

विधिः—पठी नमुहुणं कही, खमासमणुं देइ
इडाकारेण स्तवन जणुं एम कही स्तवन कहेवुं.
॥ स्तवनना बुटा शब्दना अर्थ ॥

पंचम-पांचमा
सुरलोक-देवलोक
वासी-रहेनार
लोकांतिक-नाम छे
सु-घणा
विलासी-सुखी
राशी-ढगलो
उद्धार-रक्षण
संवत्सरि-वरसी
दारिद्र-गरीवाइ

भव्यत्व-भव्यपणुं
सुरपति-इंद्र
रयण-रत्न
सोवन-सोनु
तीर्थ-तीरथनां
उदक-पाणीना
कुंभा-घडा
ठावे-थापे
आभरण-घरेणां
उवारे-उवारणां ले

मद-गर्व
मोडी-काढीने
मृगशिर-मागशर
आली-श्रेणी
वर्या-पाम्या
संयम-चारित्र
वधु-वहु
रेह-रेख, रजे.

॥ अथ स्तवन ॥

सखी आवी देवदीवालीरे ॥ ए देशी ॥ पंचम
 सुरलोकना वासीरे, नव लोकांतिक सुविलासीरे, करे
 विनति गुणनी राशी ॥ १ ॥ मद्धिजिन नाथजी व्रत
 लीजेरे ॥ नवि जीवने शिवसुख दीजे ॥ मद्धिजिनण ॥
 ए आंकणी ॥ तुमे करुणा रस नंमाररे, पाम्या ठो
 नवजल पाररे, सेवकनो करो नद्वार ॥ मद्धिण ॥ २ ॥
 नविण ॥ प्रचु दान संवत्सरी आपेरे, जगनां दारिद्र दुःख
 कापेरे, नव्यत्वपणे तस ठापे ॥ मद्धिण ॥ ३ ॥ न
 विण ॥ सुरपति सधला मलि आवेरे, मणि रयण सो
 वन वरसावेरे, प्रचुचरणे शीश नमावे ॥ मद्धिण ॥ ४ ॥
 नविण ॥ तीर्थोदक कुंजा लावेरे, प्रचुने सिंहासन ठा
 वेरे, सुरपति नक्ते नवरावे ॥ मद्धिण ॥ ५ ॥ नविण ॥
 वस्त्रान्तरणे शणगारेरे, फूल माला हृदय पर धारेरे,
 दुःखनां इंझाणी नवारे ॥ मद्धिण ॥ ६ ॥ नविण ॥ म
 द्या सुरनर कोमा कोमीरे, प्रचु आगे रह्या कर जो
 मीरे, करे नक्ति युक्ति मद मोमी ॥ मद्धिण ॥ ७ ॥
 नविण ॥ मृगशिर शुद्धिनी अजुवालीरे, एकादशी गु

(१५७)

एनी आलीरे, वर्या संयम वधु लटकाली ॥ मल्लि० ॥
॥ ७ ॥ न्रवि० ॥ दिक्का कळयाणक एहरे, गातां दुःख
न रहे रेहरे, लहे रूपविजय जस नेह ॥ मल्लि० ॥ ए॥
न्रवि० ॥ इतिश्री मल्लि जिन स्तवनम् ॥

विधिः—पठी वरकनक कही न्रगवान् आदे वां
दवा. पठी जमणो हाथ चवला नपर श्यापी अद्दाइ
जेसु कहेवुं.

॥ वरकनकना तुटा शब्दना अर्थ ॥

कनक—सोनं
शंख—शंख
विद्रुम—परवालां
मरकत—पानां
घन—मेघ

सन्निभं—मरखुं [हित
विगत मोहं—मोहयी र
[तिर
सप्ततिशतं—एकसोसी—
जिनानां—जिनोनं

सर्व्व—सर्व
अमर—देवता
पूजितं पृजायेलुं

॥ अथ वरकनक ॥

वरकनक शंखविद्रुम, मरकतघन
सन्निभं विगतमोहं ॥ सप्ततिशतं
जिनानां, सर्वांमर पूजितं वेदा॥१॥

(१५८)

अर्थः—वरकनक के० जिनेंझे संबंधि सप्ततिशत एटले एकसो सीत्तेरना समूह एटले एकसो सीत्तेर जिनेंझेने हुं वांडुं; ते सप्ततिशत केवुं ठे ? तो के प्रधान एवं सुवर्ण, शंख, प्रवालां, पानां, तथा सजल मेघ तेना जेवुं पांच वर्णवाळुं ठे, वली मोहादिके रहित ठे. वली सर्व देवता जेने पूजे ठे एवं ठे.

॥ अद्वाइजेसुना ठुटा शब्दना अर्थ ॥

अद्वाइजेसु—अदीमां	मिमां	सीलंग—शीयळनां अंग
दीव—द्वीप	रयहरण—रजोहरण	अखखय—संपूर्ण
समुद्देसु—समुद्रोमां	गुच्छ—गुच्छो	सिरसा—ललाटे (कपा-
पनरससु—पंदर(मां)	पडिगह—पात्रुं	ले) करी
कम्मभूमिसु—कर्मभू-	धारा—धारण करनार	मणसा—मनवडे करीने

॥ अथ अद्वाइजेसु ॥

अद्वाइजेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु
कम्मचूमीसु ॥ जावंत केवि साहू,
रयहरण गुठ पडिगहधारा ॥१॥
पंचमहवयधारा, अठारस सहस्स

(१५९)

सीलंगधारा ॥ अस्वयायारचरि
ता, ते सवे सिरसा मणसा मन्त्र
एण वंदामि ॥ ५ ॥ इति ॥

अर्थः—अद्वाइजेसु के० अढी छीप, वे समुद्र सं
बंधी जे पंदर कर्मजुमि क्षेत्रने विषे जेटला कोइ पण
साधु, रजोहरण एटले नघो, अने गुहो ते पातरानी
जोली नपरनुं नपकरण, अने पात्रुं, इत्यादि धर्मोप
करणना धारण करनारा ठे. ॥ १ ॥

ए साधुनो वेष कह्यो, हवे गुण कहे ठे. ते साधु
केवा ठे ? तो के पांच महाव्रतना धरनार ठे. वली अ
ठार हजार शीलनां (चारित्रनां) जे अंग तेना धरनार.
वली संपूर्ण आचार रूप चारित्र तेना धरनार ठे. ते स
र्वने ललाटे तथा मने तथा मस्तके करीने हुं वांडुं वुं
अथवा पंचांग प्रणामे करी वांडुं वुं. ॥ १ ॥

विधिः—इच्चाकारेण संदिसह जगवन् देवसिअ
पायञ्चित्त विसोहणत्थं कानस्सग्ग करुं ? इच्चं करेमि
कानस्सग्गं; अन्नत्तण- कही, चार लोगस्तनो अथवा सो

ल नवकारनो कानुस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स
 कहेवो, पठी खमासमण देइ इत्थाकारेण संदिसह न
 गवन् सज्जाय संदिसाहु ? इत्थं. खमासमण देइ इत्था
 का० सज्जाय करुं ? इत्थं कही एक नवकार गणी स
 ज्जाय. कहेवी.

॥ सज्जायना ठुटा शब्दना अर्थ ॥

रयवाडी-वनक्रीडा(रे वाडी)	परिघल-घणुं पूरे-संपूर्ण	चरचीया-चोपड्या उपशमे-मटे
पेखीयो-जोयो	समाधी-सुख	अणगार-साधु
विरतंत-हकीकत	गोरडी-स्त्री	पुढतो-पढोच्यो
अनाथी-नाथविनाना	कोरडी-कोरी	गणि-गच्छनाअधि- पति
निग्रंथ-मुनि	मोरडी-मारी	
पंथ-रस्तो	सार-संभार	

अथ श्री अनार्थी मुनिनी सज्जाय.

श्रेणिक रयवामी चढ्यो, पेखियो मुनि एकांत॥
 वररूप कांते मोहीउ, राय पूठेरे कहेने विरतंत
 ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुंरे अनार्थी निग्रंथ ॥ तिणे मं
 लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रेण ॥ ए आंकणी ॥ इण

(२६१)

कोसंबी नयरी वसेरै, मुज पिता परिघल धन ॥
परिवार पूरे परिवयों, हुं हुं तेनोरे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥
॥२॥ एक दिवस मुज वेदना, उपनी ते में न खमाया ॥
मातपिता जुरी मरे, पिण समाधि किये नवि थाया ॥
श्रे० ॥३॥ गोरमी गुण मणी नुरमी, चोरमी अबला नारा ॥
कोरमी पीना में सही, न कोणे कीधी मोरमी सार ॥
श्रे० ॥४॥ बहु राजे वैद्य बोलावीया, कीधला क्रोरु
उपाय ॥ बावनाचंदन चरचीया, तो ए पिणरे समाधि न
थाया ॥ श्रे० ॥५॥ जगमांहि को केहनो नहिरे, ते जणी हुं
रे अनाथ ॥ वीतरागना धर्म सारीखो, नहीं कोइ बीजो
रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥६॥ वेदना जो मुज उपशमे
तो, लेज संजम नार ॥ इम चिंतवतां वेदन गइ, व्रत
लीधो में हर्ष अपार ॥ श्रे० ॥७॥ करजोमी राजा गुण
स्तवे, धन धन एह अणगार ॥ श्रेणिक समकित पामी
यो, वांदी पुहतोरे नगर मोजार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनि
अनाथी गावतां, तुटे कर्मनी कोरु ॥ गणि समय सुंदर ते
हना, पाय वंदे रे वे कर जोरु ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

एनो अर्थ सुगम ठे.

विधिः—पठी नवकार गणी खमासमण देइ इ
 चाका० डुरककठ कम्मरकठ निमित्तं कानुस्सग्ग करुं ?
 इच्चं करेमि कानुस्सग्गं, अन्नत्त० कही चार लोगस्स सं
 पूर्ण अथवा सोल नवकारनो कानुस्सग्ग करी पारी न
 मोऽर्हत्त० कही लघुशांति कहेवी.

लघुशांतिना गाथा ? श्री ५ सुधीना वुटा शब्दना अर्थ.

शांति—शांतिनाथने

शांति—शांति

निशांत—घर

शांत—रागद्वेष रहित

शांत—शांत पामेला

अशिवं—उपद्रव

नमस्कृत्य—नमस्कार

करिने

स्तोतुः—स्तुतिकरनारना

निमित्तं—हेतु

मंत्र—मंत्रो(नां)

पदैः—पदोवडे

शांतये—शांतिने (माटे)

स्तौमि—स्तुति करुंछुं

ॐ—रक्षण करवुं; हा.

इति—ए प्रकारे

निश्चित-निश्चय करेलुं

वचसे—वचनवाला

नमो—नमस्कार थाओ

भगवते—भगवानने

अर्हते—योग्यने

पूजां—पूजाने

जिनाय—जिनने

जयवते जयवंतने

यशस्विने—जशवंतने

स्वामिने—नाथने

दामिनां—मुनिओनां

सकल—सबळा

अनिशेषक—अतिशय

संपत्ति—संपदा

समन्विताय—सहित

शस्याय—प्रशंसवायोग्य

त्रैलोक्य त्रणलोके

पूजिताय—पूजेला

देवाय—देवने

ससमूह—समूह सहित

स्वामिक—स्वामि (ओण)

सं—सम्यक् प्रकारे

निजिताय—नहीं जी-

तायेला

भुवन—त्रण भुवन

जन—लोक

पालन—पालवामां

उद्यततमाय—वणा मा

बधान(ने)

(२६३)

सततं-नित्य
तस्मै-तेने
दुरित-पाप
ओघ-समूह
नाशन-नाश

कराय-करनारने
प्र-प्रकर्षे करी
प्रशमनाय-शमावनार
दुष्ट-दुष्ट
ग्रह-ग्रह

भूत-भूत
पिशाच-राक्षस[ओने
शाकिनीनां-शाकणी
प्रमथनाय-अत्यंत ना-
श करनार, मटाडनार

॥ अथ लघुशांतिस्तव प्रारंभ ॥

शांतिंशांतिनिशांतं, शांतं शांताशि
वं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनि
मित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि॥१॥
उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो
ऋगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जि
नाय जयवते, यशस्विने स्वामिने
दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेष
कमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्या
य ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो
नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वाम्
रससमूह, स्वामिकसंपूजिताय नि

विधिः—पढी नवकार गणी खमासमण देइ इ
 चाका० डुरकस्कन कम्मस्कन निमित्तं कानस्सग्ग करुं?
 इच्चं करेमि कानस्सग्गं. अन्नत्तं० कही चार लोगस्स सं
 पूर्ण अथवा सोल नवकारनो कानस्सग्ग करी पारी न
 मोऽहत्तं० कही लघुशांति कहेवी.

लघुशांतिना गाथा ? थी ५ सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

शांतिं—शांतिनाथने	इति—ए प्रकारे	समन्विताय—सहित
शांति—शांति	निश्चित—निश्चय करेलुं	शस्याय—प्रशंसवायोग्य
निशांतं—घर	वचसे—वचनवाला	त्रैलोक्य त्रणलोके
शांतं—रागद्वेष रहित	नमो—नमस्कार थाओ	पूजिताय—पूजेला
शांत—शांत पामेला	भगवते—भगवानने	देवाय—देवने
अशिवं—उपद्रव	अर्हते—योग्यने	ससमूह—समूह सहित
नमस्कृत्य—नमस्कार	पूजां—पूजाने	स्वामिक—स्वामि(ओए)
करीने	जिनाय—जिनने	सं—सम्यक् प्रकारे
स्तोतुः—स्तुतिकरनारना	जयवते जयवंतने	निजिताय—नहींजी-
निमित्तं—हेतु	यशस्विने—जशवंतने	तायेला
मंत्र—मंत्रो(नां)	स्वामिने—नाथने	भुवन—त्रण भुवन
पदैः—पदोवडे	दामिनां—मुनिओनां	जन—लोक
शांतये—शांतिने (माटे)	सकल—सघळा	पालन—पाळवामां
स्तौमि—स्तुति करुंछुं	अतिशेपक—अतिशय	उद्यततमाय—घणा सा
ॐ—रक्षण करवुं; हा.	संपत्ति—संपदा	वधान(ने)

सततं-नित्य
तस्मै-तेने
दुरित-पाप
औघ-समूह
नाशन-नाश

कराय-करनारने
प्र-प्रकर्षे करी
प्रशमनाय-शमावनार
दुष्ट-दुष्ट
ग्रह-ग्रह

भूत-भूत
पिशाच-राक्षस[ओने
शाकिनीनां-शाकणी
प्रमथनाय-अत्यंत ना-
श करनार, मटाडनार

॥ अथ लघुशांतिस्तव प्रारंभ ॥

शांतिंशांतिनिशांतं, शांतं शांताशि
वं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनि
मित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि॥१॥
उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो
ऋगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जि
नाय जयवते, यशस्विने स्वामिने
दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेष
कमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्या
य ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो
नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वाम
रससमूह, स्वामिकसंपूजिताय नि

जिताय ॥ ज्ञुवनजनपालनोद्यत, त
माय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्व
दुर्तौघनाशन, कराय सर्वाऽशिव
प्रशमनाय ॥ दुष्टग्रहज्ञूतपिशाच,
शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥

अर्थः—शांतिं शांतिनिशांतं के० शांतिना घर
अथवा स्थानक रूप एवा तथा रागद्वेष रहित एवा, व
ली अरिष्ट उपद्रवो जेनाथी उपशमने पाम्या ठे एवा,
श्रीशांति जिन प्रत्ये नमस्कार करीने, स्तुतिना करना
रने शांतिना हेतु एवा शांतिनाथने अक्षर गर्जित मंत्रो
नां पदोये करीने उपसर्गनी शांतिने माटे स्तुति करुं तुं.

उमिति के० रक्षण करे ठे तेने नुँ कहीए अने
नुँ एटले परम ज्योति ए रीते निश्चित वचनवाला एवा
अने पूजाने योग्य एवा जगवंत वली जेने रागादि परा
जव करी शकता नथी माटे जयवंत, वली प्रसिद्ध ज
श ठे जेमनो माटे यशस्वी एवा, वली दमिनां के० इं
द्रियोने दमी ठे वश करी ठे जेमणे एवा जे मुनिउ,

तेमना स्वामिने के० नायक एवा श्रीशांतिनाथने नम
स्कार थानुं, नमस्कार थानुं. ॥ २ ॥

सकलातिशेषक के० समस्त चोत्रीस अतिशय
रूप मोटी संपदाये करीने सहित एवा तथा वखा
एवा योग्य एवा, वली स्वर्ग मृत्यु अने पाताल रूप
त्रण लोक तेणे पूजित एवा श्री शांतिदेव प्रत्ये नम
स्कार थानुं. ॥ ३ ॥

सर्वामर ससमूह के० सपरिवार एवा सर्व देवता
नुना स्वामी जे चोसठ इंजे ठे, तेमणे सम्यक् प्रकारे
पूजेला तथा कोश्यी नहीं जीतायेला एवा तथा त्रण
नुवनना लोकोनुं पालन करवाने अत्यंत सावधान एवा
ते शांतिनाथजीने निरंतर मारो नमस्कार थानुं. ॥४॥

सर्व दुरितौघनाशन के० सर्व पापनो जे समूह
तेनो नाश करनार, वली सर्व उपड्वने शमावनार,
वली आकरा एवा जे ग्रह, नूत, राक्षस तथा शाकि
नी ए सर्व(थी अता उपड्वो)ने प्रमथनाय एटले अ
तिशे नाश करनार ठे अथात् मटारुनार ठे, तेमने
नमस्कार थानुं. ॥ ५ ॥

॥ गाथा ६ थी १० सुधी बुटा शब्दना अर्थ ॥

यस्य-जेनुं	अजिते-नहीं जीताय	निर्वाण-मोक्ष
इति-ए रीति	एवी	जननि-करनारी
नाममंत्र-नामरूपी मंत्र	अपराजिते-हे देवी	सत्वानां-भव्यजीवोने
प्रधान-उत्तम	जगत्यां-जगतमां	अभय-निर्भयपणुं
वाक्य-वचन	जयावहे-हे जयावहा	प्रदान-अतिशे देवुं
उपयोग-यादी	भवाते-हे तमे	निरते-तत्पर
कृत-करेलो	सर्वस्य-सर्वने	स्वस्ति-कल्याण
तोषा-संतोष	अपि-पण	तुभ्यं-तने
विजया-विजयादेवी	संघस्य-संघने	भक्तानां-भक्तोने
कुरुते-करे छे	भद्र-सुख	जंतूनां जीवोने
हितं-सुखने	प्रददे-हे देनारी	शुभावहे-शुभ पमाड-
नुता-स्तवेली	सु-सारी	नारने
नमत-नमो	तुष्टि-शांति	नित्यं-हमेशां
भवतु-थाओ	पुष्टि-पुष्टि	उद्यते-सावधान
नमः-नमस्कार	प्रदे-देनारी	सम्यग्दृष्टि-समाकित
ते-तने	जीयाः-तुं जयवंती हो	दृष्टिओने
विजये-हे विजया	भव्यानां-भव्योने	धृति-धीरज
सुजये-हे सुजया	कृत-करी छे	रति-प्रीति
पर-मोटा	सिद्धे-सिद्धि जणे	प्रदानाय-आपवाने
अपर-बीजा देवोए	निवृत्ति-चित्त समाधि	

(३६७)

यस्येति नाममंत्र, प्रधानवाक्योप
योगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जन
हित, मिति च नुता नमत तं शां
तिं ॥ ६ ॥ न्नवतु नमस्ते न्नगव
ति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥
अपराजिते जगत्यां, जयतीति
जयावहे न्नवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि
च संघस्य, न्नङ्कल्याणमंगलप्र
ददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ न्नव्या
नां कृतसिद्धे, निवृत्तिनिर्वाणज
ननि सत्त्वानां ॥ अन्नयप्रदाननि
रते, नमोऽस्तु स्वस्ति प्रदे तुभ्यं
॥ ९ ॥ न्नक्तानां जतूनां, शुन्नावहे
नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्यग् दृष्टीना

(३६७)

धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥१०॥

अर्थः—यस्येतिनाम मंत्र के० हे ऋग्व्यजनो ! त
मे ते शांतिजिनने प्रणाम करो. कया शांतिजिन ?
तो के जे शांतिजिननो ए पूर्वोक्त नाम रूप महा मंत्र
तेणे करीने सर्वोत्तम पवित्र एवं जे वचन तेना उप
योग एटले यादीवने करीने जेणे चितने विषे संतोष
क्यों ठे, एवी विजया नामे जे देवी ठे, ते शांतिजि
ननुं स्मरण करनारा मनुष्यनुं हित करे ठे. वली ते
विजयादेवी केवी ठे ? तो के पूर्वे कहेला प्रकारे करी
ने शांतिनाथने नमेली ठे. स्तुति करेली ठे. ॥ ६ ॥

ऋवतु नमस्ते ऋगवति के० हे ऋगवति ! वि
जयोदवि ! सुजयादेवि ! मोटा एवा बीजादेवोए नहीं
जीतायेली एवी अजिता देवि ! तथा कोइ ठेकाणे प
राज्जव नहीं पामेली एवी हे अपराजिता देवि ! पृथ्वी
ने विषे जयवंति वत्तो. एम स्तुति करनारने जयनी
लावनारी हे दरेक देवी ? तमने नमस्कार थान ॥७॥

सर्वस्यापि च संघस्य के० चतुर्विध एवा सर्व

(१६९)

क्षण संघने सुख, कल्याण तथा मंगलने आपनार हे देवि ! वली मुनिजने सदा निरुपड्वपणुं, सारी चित्तनी शांति तथा धर्मनी वृद्धिने देनारी एवी हे देवि ! तुं जयवंती हो. ॥ ८ ॥

ज्ञानानां कृत सिद्धे के० ज्ञव्य जीवोने सर्व कार्योंनी निर्विघ्नपणे सिद्धि करी आपी ठे जेणे एवी, वली सत्वानां के० ज्ञव्य प्राणीजने चित्त समाधि तथा मोक्षने उत्पन्न करनारी तथा अज्ञयपणुं देवाने विषे तत्पर एवी तथा कल्याणने देनारी एवी, ए सर्व गुण युक्त हे देवि ! तने नमस्कार हो. ॥ ९ ॥

ज्ञानानां जंतूनां के० ज्ञक्तिवंत एवा जीवोने सर्व प्रकारे शुद्धनी आपनारी, तथा वली सम्यक् दृष्टि जीवोने संतोष, प्रीति, मतिके० ज्ञविष्यकालने जाणनारी बुद्धि, तथा बुद्धि के० वर्तमानकालना विषयने जाणनारी बुद्धि, ते प्रत्ये अतिशयपणे देवाने निरंतर सावधान, हे देवि ! तमे गो. ॥ १० ॥

॥ गाथा ११ थी १४ सुधी बुटा शब्दना अर्थ ॥

निरतानां-रागवंत	अनल-अग्नि	श्वापद-शीकारी पशु
नतानां नमेलाने	विषधर-सर्प	आदिभ्यः-वगेरेथी
जगति-जगतमां [योने	दुष्ट-माठा	अथ-हवे
जनतानां-जनसमुदा-	ग्रह-ग्रह	रक्ष-रक्षण कर
श्री-लक्ष्मी	राज-राजा	सु-अतिशय
संपत्-ऋद्धि	रण-संग्राम	शिवं-कल्याण
कीर्त्ति-कीर्त्ति	भयतः-भयथी	कुरु-कर
यश-जश	रिपु-वैरी	सदेति-सदा एम
वर्द्धनि-वधारनार	गण-समूह	गुणवति-गुणवाली
विजयस्व-विजयपामो	मारी-मरकी	स्वस्ति-क्षेम
सलिल-पाणी	चौर-चोर	इह-अहींआं

जिनशासननिरतानां, शांतिनता
नां च जगति जनतानाम् ॥ श्री
संपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनि जय देवि
विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल
विषविषधर, दुष्टग्रहराजरोगरण
जयतः ॥ राक्षसरिपुगणमारी, चौर
रेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ

(२७१)

रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं
च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु
पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु
त्वं ॥१३॥ जगवति गुणवति शिव
शां, तितुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु
जनानां ॥ नमिति नमोनमो ज्ञाँ, ङ्गी,
ङ्गँ ङ्गः यः ङ्गः ङ्गीं फुट् फुट् स्वाहा ॥

अर्थः—जिनशासन के० श्रीवीतरागना शासनेने
विषे रागवंत एवा, वली श्री शांतिनाथने नमेला ए
वा, जगतने विषे जे जनसमुदायो ठे, तेमने लक्ष्मी,
रुद्रिविस्तार, एक दिशा व्यापि कीर्त्ति अने सर्व दिशा
व्यापि जज्ञ, तेने वधारनारी एवी हे जयानामा देवि !
तुं जय पाम, विजय पाम. ॥ ११ ॥

सलिलानलविषविषधर के० पाणीना, अग्निना,
जेरना, सर्पना, कठण ग्रहना, दुष्ट राजाना, रोगना
अने रण संग्रामना, ए सर्व जयथी रक्षण कर, रक्ष
ण कर, वली राक्षस, शत्रुना समूह, मरकी

व, चोरना, सात ईतिना ज्ञय, हाथी, सिंहादि दुष्ट जीवो, वगैरे सर्वना ज्ञयथी रक्षण कर, रक्षण कर.

अथ रक्षरक्ष सुशिवं के० ए उपर कहेला एवा ज्ञय थकी हे विजया माता ! तुं रक्षण कर, रक्षण कर. वली रुमा एवा निरुपड्वपणाने कर वली निरंतर शांतिने कर कर. ए प्रकारे वली संतोषपणाने कर कर, तथा पुष्टि एटले शरीरनी पुष्टि कर कर, तथा कड्या ए प्रत्ये कर कर. ॥ १३ ॥

जगवति के० हे जगवति ! हे गुणवति ! एवी हे देवि ! तुं आ पृथ्वीने विषे सर्व लोकोने, कड्याण, रोगनी शांति, मननो संतोष, शरिरादिकनी वृद्धि, दृढपणुं, हेम ते कड्याण, तेने आ जगतने विषे कर, कर. हवे मंत्राकरे करीने विजयादेविने स्तवेठे. ज्योतिः स्वरूपिणी एवी हे देवी ! तने नमस्कार थानुं; तथा ॐ ॐ ॐ ॐ यः कः ॐ फुट् फुट् स्वाहा, ए प्रकारना मंत्र स्वरूपिणी एवी हे देवि ! तने नमस्कार थानुं. अहीं फुट् फुट् ए जे शब्द लख्या ठे ते विघ्नना शक मंत्राकर ठे अने आ ॐ ॐ इत्यादि अकरो जे ठे ते शांतिनो मूलमंत्र जाणवो. ॥ १४ ॥

(१७३)

॥ गाथा १५ श्री १ए सुधी टुटा शब्दना अर्थ ॥

यत्-जेना

नामाक्षर-नामाक्षरमंत्र

पुरस्सरं-पूर्वक

संस्तुता-स्तवेली

नमतां-नमताने

निमित्तं-हेतुने

शांतये-शांतिनाथने

तस्मै-तेने

पूर्व-पेहेलांना

सूरि-आचार्य

दर्शित-वतावेला

विदाभिंतः-रचेलो

स्तवः-स्तोत्र

शांतेः-शांतिनाथनो

आदि-वगेरे

भय-वीक

विनाशी-नाशकरनार

करः-करनारो

भक्तिमतां-भक्ताने

यः-जे

एनं-एने

पठति-भणे छे

भृणोति-सांभले छे

भावयति-भावे छे

वा-अथवा

यथायोगम्-योगने

नही ओलंघीने

हि-निश्चे

शांति-शांतिनुं

पदं-ठेकाणुं

यायात्-पामे

मानदेवः-मानदेव(ना

म छे)

रूपसर्गाः-कष्टो

क्षयं-नाशने

यांति-पामे छे

च्छिद्यंते-छेदाय छे

विघ्न-अहचण

वल्लयः-वेलीयो

मनः-मन

प्रसन्नता-प्रसन्नपणाने

एति-पामे छे

पूज्यमाने-पूजे छेने

एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता
जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां,
(पाठांतरे कुरुते शांति निमित्तं) न
मोनमः शांतये तस्मै ॥१५॥ इति
पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदाभिंतः

स्तवः शांतेः ॥ सखिलादित्रयवि
नाशी, शांत्यादिकरश्च त्रिक्रिमता
म् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा,
शृणोति ज्ञावयति वा यथायोगं
॥ स हि शांतिपदं यायात्, (पा
ठांतरे शिवशांतिपदं यायात्) सू
रिश्चीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपस
र्गाः ह्यं यांति, च्छिद्यंते विघ्नव
द्भयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्य
माने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल
मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ॥
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति
शासनं ॥ १९ ॥

एवं यन्नामाहर के० ते शांतिनाथने फरी फरी
नमस्कार थाउ, ते कया शांतिनाथने? तो के ए पूर्वोक्त
प्रकारे जेना नामाहरमंत्र पूर्वक स्तुति करेदी एवी

जयानामा देवी, ते शांतिनाथ प्रत्ये नमस्कार करना-
रा ज्ञव्य जीवोने शांति करे ठे. पाठांतरे शांति जे
सर्वोपड्व निवृत्ति रूप तेना हेतुने उत्पन्न करे ठे. ॥१५॥

अर्थः—इति पूर्वसूरिदर्शित के० ए श्रीशांतिनाथ
जीनुं स्तव अथवा स्तोत्र ज्ञक्तिमान प्राणीने समुद्र,
वगेरे पाणीना जय, दुष्ट हाथी, सिंह, संग्राम, शत्रु,
चोर, शाकिनी, जूत, प्रेत, पिशाच, रोग, शोकादिक
एवा जयनुं विनाश करनारुं, वली शांति, सुख, सौ
भाग्य, रुद्धि, वृद्धि कल्याण अने जय ए सर्वने करना
रुं आउ. वली ते केवुं ठे ? तो के आ प्रकारे पूर्वाचार्ये
उपदेश करेलां एवां मंत्र पदवने रचेलुं ठे. ॥ १६ ॥

यश्चैनं पठति सदा के० जे पुरुष योगने उलंघन
नहीं करीने आ स्तोत्रने हमेशां जणे, सांजले अथवा
जावे तो ते निश्चे शांतिना स्थान प्रत्ये पामे. वली श्री
मानदेवसूरि पण शांति पदने पामे आ पदे करीने
स्तोत्र कर्ताए पोतानुं नाम पण सूचव्युं ठे पाठांतरे
शीवशांतिपदं यायात् के० शिव जे कल्याण, शांति जे
सर्वोपड्व वगेरेनी निवृत्ति तेनुं स्थानक पामे. ॥१७॥

उपगर्गाः क्वयं यांति के० श्रीजिनेश्वरने पूजे ठते
देवादिकृत उपसर्गो नाश पामे ठे, अने विघ्ननी वेलो
ते ठेदाय ठे; तथा मन प्रसन्नताने पामे ठे. ॥ १७ ॥

सर्व मंगल मांगल्यं के० सर्व मंगल मांहे मांग
लिक तथा सर्व कल्याणनुं कारण, तथा सर्व धर्मोमां
प्रधान एवं जिन शासन जयवंतुं वर्त्ते ठे. ॥ १८ ॥
॥ इति शांतिना अर्थ ॥

विधिः—पढी लोगस्स कही खमासमणुं देइ
इरियावही, तस्सउत्तरी अन्नउ० कही, एक लोगस्स
अथवा चार नवकारनो कानस्सग्ग करी पारी प्रगट
लोगस्स कहेवो. पढी चउकसाय कहेवा.

॥ चउकसायना वुटा शब्दना अर्थ ॥

पडिमल्ल-वेरी

उल्लूरणुं-उछेदनार

दुज्झय-दुर्जय

मयण-मदन (ना)

वाण-वाण

मुसुमूरणुं-भागनार

सरस-रसवालो

पिअंशु-रायण

वन्नु-वर्ण, रंग

गय-हाथी

गामिड-गतिवाला

जयउ-जय पामो

पासु-पार्श्वनाथ

भुवण-भुवन

त्तय-त्रण

सामिउ-स्वाधी

जमु-जेना

तणु-शरीर

कंति-कांति

कडप्प-समूह

सिणिद्धउ-स्निग्ध

सोहइ-शोभे छे

फणि-फेणनुं

मणि-मणि (रत्न)

आलिद्धउ-सहित

नं-प्रशंसनीय

नव-नवो

जलहर-मेघ
तडित्-विजली
लय-लता

लंछित-सहित
सो-ते
जिणु-जिन

पासु-पार्श्व
पयच्छउ-आपो
वंछित-वांछित

॥ अथ चउकसाय ॥

चउकसाय पम्मिद्धुद्धुराणु, उद्य
यमयाणवाणमुसुमूराणु ॥ सरस
पिअंगु वन्नु गयगामिन, जयउ
पासु जुवणत्तय सामिन ॥ १ ॥
जसु तणु कंति कम्प सिणिद्ध
उ, सोहइफणिमणि किरणादिद्ध
उ ॥ नं नवजलहर तम्मिद्धयलं
ठिन, सो जीणु पासु पयच्छउ
वंठिन ॥ २ ॥ इति ॥

अर्थः—चउकसाय पम्मिद्धुद्धुराणु केण त्रण जु
वनना स्वामी श्रीपार्श्वनाथ जयवंता वत्तो ते पार्श्व
नाथ केवा ठे तो के चार कपाय रूप वेरीना उठेदना

ठे, तथा दुखे जीताय एवो मदन जे कामदेव तेना बाएने ज्ञागनार ठे, तथा रसवालो लीलो एवो राय एनो बृह तेना जेवा वर्णवाला ठे. तथा हाथीना जे वी गति वाला ठे. ॥ १ ॥

अर्थः—जसु तणु कंति के० जेना शरीरनी कांतिनो समूह चीकाश सहित ठे तेवा पार्श्वजिन महारा वांठित प्रत्ये आपो, ते केवा ठे? तो के नागेंडनी फणी उपरना मणी रत्न तेना किरणोए करी सहित ठे; तथा नवा भेधनी विजलीनी लताए लंठित एवा ठे. ॥१॥

विधिः—नमुहुणं जावंति वे कही नवसग्गहरं, जयवीयराय कही मुहपत्ती पम्बिदेहवी पठी खमास मण देइ इच्छा० सामायक पारुं, यथाशक्ति; पठी खमास मण देइ इच्छा० सामायिक पार्थुं, तद्वत्ति कही, जमणो हाथ उपधी उपर थापी एक नवकार गणीने सा माइअवयजुत्तो केहेवो. पठी आपना होय तो एक नवकार गणी जुठे ए देवसि प्रतिक्रमणनो विधि क ह्यो. बाकी अंतर विधि वनेराथी समजवो.

॥ अथ राइपनिक्कमण प्रारंज ॥

विधिः—प्रथम पूर्वली रीते सामायिक लइ यावत् सज्जाय करुं एवो आदेश भागी त्रण नवकार गणीए त्यां सुधी कहेवुं, पढी इच्छा० कही कुसुमिण डुसुमिण उद्भावणार्थं राइप्रायश्चित्तविसोहणहं कानस्सग्ग करुं ? इच्छं, करेमि कानस्सग्गं कही जो खराव स्वप्न आव्युं होय तो चारलोगस्सनो कानस्सग्ग सागरवर गंज्जीरा सुधी करवो, नहीं तो चंदेसु निम्मत्तयरा सुधी करवो; पढी कानस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कही एक खमासभण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंद न करुं एम कही जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन कहे.

॥ अथ जगचिंतामणिना ठुटा शब्दना अर्थ ॥

जग-जगत	अट्ठावय-अष्टापद	अप्पडिहय-हणाय न
नाह-नाथ	संठविय-स्थापेलां	हीं तेहुं
रखखण-रखवाल	रूव-रूप, प्रतिमा.	सासन-शासन
बंधव-भाइ	कम्मठ-आठ कर्म	संघयणि-संघयण
सथ्थदाह-सार्थदाह	विणासन-नाश कर	उक्कोसय-उत्कृष्ट पदं
विअखखण-विचक्षण,	नार	सत्तरि-सीत्तर
दाहा	जयंतुं-जयवंता वत्तो	सय-सो

जिणवराण-जिनव
रोना
विहरंत-विचारता
लप्भइ-लाभे
कोडि-क्रोड
केवलण-केवल ज्ञा
नीओनी
सहस्स-हजार
गम्भइ-जाणिये
मुणि-मुनि
विहुं-वे
समणह-साधु
दुअ-वे
थुणिजिअ-स्तविये
निच्च-नित्य
विहाणि-वहाणामां
सामी-स्वामी

रिसह-ऋषभ
सचुंजि-शेत्रुंजय उपर
पहु-प्रभु
नेमि-नेमिनाथ
सच्चउरी-सत्यपुरी
मडण-आभूषण
भरुअच्छहिं-भरुच
नगरमां
मुहारि-मुहारि (शाम)
दुह-दुख
दुरिय-पाप
खंडण-नाश करनार
अवर-बीजा
विदेहिं-महाविदेहमां
चिहुं-चारे
दिसि-दिशाओमां
जि-जे

केवि-कोइ पण
तीअ-अतीतकाल
अणागय-अनागत
सत्ताणवइ-सताणुं
लख्खा-लाख
छप्पन्न-छप्पन
वत्तीस-वत्तीसें
वासिआइं-व्याशी
चेइए-चैत्योने
पनरस-पन्नर
सयाइं-सेकडा
वायाल-वेतालीस
अडवन्ना-अट्टावन
असिई-एंशी
सासय-शाश्वतां
पणमामि-प्रणमुं लुं

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

इच्छाकारेण संदिसह जगवन् चै
त्यवंदन करुं ॥ इच्छं ॥ जग चिं
तामणि जगनाह, जगगुरु जगर

(१७१)

स्फण ॥ जगबंधव जगसन्धवाह, ज
गन्नावविअस्फण ॥ अघावय सं
ठविय, ह्रव कम्मठ विणासण ॥
चउवीसंपि जिणवर, जयंतु अ
प्पमिहयसासण ॥ १ ॥ कम्मजू
मिहिं कम्मजूमिहिं ॥ पढम संघ
यणि ॥ उक्कोसय सत्तरि सय ॥
जिणवराण विहरंत लप्पइ ॥ नव
कोमिहिंकेवलिण ॥ कोमि सह
स्स नवसाहु गम्मइ ॥ संपइजिण
वर वीसमुणि ॥ बिहुं कोमिहिं
वरणाण ॥ समाणह कोमिसहस
उअ ॥ थुणिजिअ निअविहाणि
॥ २ ॥ जयउ सामी जयउ सामी
॥ रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जित पहु ने
मिजिण ॥ जयउ वीर सअउरि

(१८९)

मंमण ॥ नरुअचहिं मुणिसुवय ॥
मुहरि पास डुह डुरिअ खंमण ॥
अवरविदेहिं तिन्नयरा ॥ चिहुं दिसि
विदिसि जिं केवि ॥ तीआणागय
संपडअ, वंडु जिणसवेवि ॥ ३ ॥
सत्ताणवइ सहस्सा, लस्का ठप्पन्न
अठ कोमील ॥ बत्तीस बासिआ
इं ॥ पाठांतरं ॥ बत्तीसय बासि
आइं, तिअ लोए वेइए वंदे ॥ प
नरस कोमि सयाइं, कोमी बायाल
लस्कअमवन्ना ॥ ठत्तीस सहस अ
सिई ॥ पाठांतरं ॥ असिआइं,
सासयबिंबाईं पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥

अर्थः—इहा कारेण केण इहाए करीने हे जगवन्
चैत्यवंदन करवानो आदेश आपो. इहं केण प्रमाण. ज
गचिंतामणि केण श्रीवीतराग देव केवा ठे ? तो के

ज्ञव्यजीवोने चिंतामणि रत्नसमान मनोरथ पूरनार
 ठे, वली निकट ज्ञव्य जीवोना नाथ ठे, वली सधला
 लोकमां सोटाठे, वली ठ जीव निकायना रक्षकठे, वली
 सर्व जीवोना ज्ञाइनी पेरे ज्ञाइ ठे, वली मोक्षाजिला
 पी जीवोना सोटा सार्थवाह ठे, वली षट् इव्य तथा
 जीवादिक नव पदार्थना ज्ञाव दशर्विवाने विचक्षणठे,
 माह्या ठे; वली अष्टापद पर्वतनी उपर नरतेश्वरे स्था
 प्यां ठे विंब जेमनां, वली आठ कर्मोनी विनाश कीधो
 ठे जेमणे, कोइथी हणाय रोकाय नहीं एवुं जेमनुं शा
 सन ठे, एवा चोवीश जिनवर निश्चे जयवंता वत्तो॥१॥

कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं के० असि, मपी, अ
 ने कृषि रूप कर्म वसे करी ज्यां आजिवीका चाले
 ठे, तेने कर्मजूमिका कहीए. ते कर्मजूमिनां पंदर क्षेत्र
 ने विषे प्रथम संघयण जे वज्जकपन्ननाराच तेना ध
 णी एवा उत्कृष्टपदे सप्ततिशत एटले एकसोने सीत्तेर
 तीर्थकरोनी समुदाय विचरतो लान्ने, ते श्री अजितना
 थने वारे एटला लान्ने, वली केवलज्ञानी जगवाननी
 नवकोटि होय तथा नव सहस्र कोनी साधु जिनाग

मथी जाणीये अने वर्तमानकाले वीश जिनवर विचरता पामीए, तथा बे क्रोरु मुनि प्रधान केवलज्ञानना धरनार, वली बे सहस्र कोमि साधु विचरे ठे, ते सर्व ने नित्ये प्रज्ञाते थुणीये स्तविये. ॥ २ ॥

जयउ सामी जयउ सामी के० श्री शत्रुंजय तीर्थ नपर श्री ऋषभ स्वामी जयवंता वर्तो, वली श्री गिरनारजी नपर प्रभु श्री नेमिजिनेश्वर स्वामी जयवंता वर्तो, वली सत्यपुरी एटले साचोर नगरना आ जूषण रूप श्री महावीर स्वामी जयवंता वर्तो, वली जूरुच नगरने विषे श्री मुनिसुव्रत स्वामी, अने मुहरि गामना नायक श्री पार्श्वनाथ; ए जिन पंचक केवुं ठे ? तो के दुःख अने पापनुं विनाश करनां ठे. वी जां पांच महा विदेहने विषे जे तीर्थकर ठे, चार दिशि अने चार विदिशिने विषे जे कोइ पण अतीत अनागत अने वर्तमान काल संबंधी सर्वे जिनेश्वर, ते प्रत्ये पण हुं वांडुं तुं. ॥ ३ ॥

सताणवइ सहस्सा के० आठ क्रोरु ठप्पन लाख सत्ताणुं हजार बत्रीसिंने व्याशी, एटलां त्रण लोक

ने विषे जिन प्रासाद ठे, ते सर्व प्रत्ये हुं वांडुं वुं ॥४॥

पनरस कोरि सयाइ केण पंदर अबज वेंतालीस
क्रोम, अठावन लाख ठत्रीश हजार अने उपर एंशी
(१५४९५८३६०८०) एटला पूर्वोक्त जिन प्रासादने विषे
शाश्वतां जिन विंब ठे. ते सर्व प्रत्ये हुं प्रणमुं वुं ॥५॥

विधिःपढी जंकिचि, नमुहुणं कही, जावंति वे
कही, नवसगहरं कही, जयवीयराय केहेवा; पढी
चार खमासमण देइ जगवान्, आचार्य, नपाध्याय अ
ने सर्व साधुने वांदवा; पढी खमासमण देइ इच्छाण स
ज्जाय संदिसाहु, इच्छं. पढी खमासमण देइ इच्छाण स
ज्जाय करुं; एम कही एक नवकार गणी जरहेस
रनी सज्जाय केहवी.

॥ अथ जरहेसरनी सज्जायना बुटा शब्दना अर्थ ॥

भरहेसर-भरतेश्वर

वाहुवली-वाहुवल

कुमारो-कुमार

सिरिओ-श्रीयक, स

रैओ

आणयाउत्तो-अनि

कापुत्र

अइमुत्तो-अतिमुक्त

नागदत्तो-नागदत्त

मेअज्ज-मेतार्यमुनि

धूलिभदो-धूलिभद्र

वयररिसी-वज्ररूप

नंदिसेण-नंदिपेण

सीहगिरी-सिंहगिरि

कयवन्नो-कृतवर्णकु

मार

पुंडरिओ-पुंडरिकजी

केसि-केशिकुमार

हल्ल-हल्यकुमार	उदायगो-उदायी	मूह
विहल्ल-विहल्यकुमार	राजा	विलय-विनाश
सुदंसण-सुदर्शनशेठ	मणगो-मनकपुत्र	जंति-पामे छे
सालिभदो-शालिभद्र	कालयसूरि-कालका	मणोरमा-मनोरमा
भदो-भद्रवाहु सामी	चार्य	मयणरेहा-मदनरेखा
दसन्नभदो-दशार्णभद्र	संवो-सांवकुमार	नमया-नर्मदा
पसन्नचंदो-प्रसन्नचंद्र	पज्जुन्नो-प्रद्युन्नकु	सीया-सीता
राजर्षि	मार	नंदा-नंदा
जसभदो-यशोभद्रसूरि	मूलदेवो-मूलदेवराजा	भदा-भद्रा
जंबुपहु-जंबुप्रभुस्वामी	पभवो-प्रभव स्वामी	सुभदा-सुभद्रा
वंकचूलो-वंकचूल	विन्हु-विष्णु	रायमइ-राजेमति
सुकुमालो-सुकुमार	अइ-आर्द्र	रिसिदत्ता-ऋषिदत्ता
धन्नो-धन्नाशा	दढप्पहारी-द्रढप्रहारी	पऊभावइ-पन्नावती
इलाइ-इलाची	सिज्जंस-श्रेयांसकुमार	अंजणा-अंजना
पुत्तो-पुत्र	मेह-मेध	सिरीदेवी-श्रीदेवी
चिलाइ-चिलाती	एमाइ-इत्यादि	जिठ-ज्येष्ठा
वाहुमुणि-युगवाहु	महा-मोटा	सुजिठ-सुज्येष्ठा
मुनि	सत्ता-सता	मिगावइ-मृगावती
अज्ज-आर्य	सुहँ-शुभ, सुख	पभावइ-प्रभावती
गिरि-महागिरि	गणेहिं-समूहवडे	चिल्लणा-चेलणा
रखिखअ-रक्षित	ग्गहणे-ग्रहणकरवाथी	वंभी-वाह्मी
सुहथी-सुहस्ती	पावपवंधा-पापना स	सुंदरी-सुंदरी

रुप्पिणि-रुक्मिणि	सच्चभामा-सत्यभामा	सइओ-सतीओ
रेवइ-रेवती	कन्ह-श्रीकृष्ण	अकलंक-निर्मल
सिवा-शिवा	अट्ट-आठ	सील-शीयल
देवइ-देवकी	महिर्सीओ-पटराणी	कलिआओ-सहीत
दोवइ-द्रौपदी	ओ	अज्जवि-आजपण
कलावई-कलावती	जरुखा-जक्षा	वज्जइ-वाजे छे
पुप्फचूला-पुप्फचूला	जरुखदिन्ना-यक्षादिन्ना	जासि-जेमनो
गोरी-गौरी	भूआ-भूता	जस-जज्ञ
गंधारी-गांधारी	भूआदिन्ना-भूतदिन्ना	पइहो-ढोल
लखमणा-लक्षमणा	भयणीओ-वेनो	तिहूअणे-त्रणभुवने
जंबुवइ-जंबुवती	इच्चाइ-इत्यादि	सयले-सकल

॥ अथ नरहेसरनी सज्जाय. ॥

नरहेसर बाहुबली, अन्नय कुमा
रो अ ठंढणकुमारो ॥ सिरिठ
अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदतो
अ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूदिचहो, व
यररिसी नंदिसेण सीहगिरी ॥
कयवन्नो अ सुकोसल, पुंमरिठके
सि करकंमु ॥ २ ॥ हह्व विहह्व

सुंदसण, साल महासाल सालि
जहो अ ॥ जहो दसनजहो, पस
न्नचंदो अ जसजहो ॥ ३ ॥ जंबु
पहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अ
वांतसुकुमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो
चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥४ ॥
अऊगिरि अऊरखिअ, अऊ
सुहठी उदायगो मणगो ॥ कालय
सूरि संबो, पऊन्नो मूलदेवो अ
॥ ५ ॥ पन्नवो विन्दुकुमारो, अह
कुमारो अ दहप्पहारी अ ॥
सिऊंस कूरगळूअ, सिऊंनव मे
हकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा
सत्ता दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजु
त्ता जोसिं नामग्गहणे, पावपबंधा
विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंद

(३७७)

नवाला, मणोरमा मयाणरेहा दम
यंती ॥ नमयासुंदरी सीया, नंदा
नदा सुनदा य ॥ ७ ॥ रायमई
रिसिदत्ता, पञ्जमावइ अंजणा सि
री देवी ॥ जिठ सुजिठ मिगाव
ई, पञ्जावई चिह्नणा देवी ॥ ८ ॥
बंजी सुंदरी रुपिणि, रेवइ कुंती
सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ
धारणी, कलावई पुष्पचूला या ॥ ९ ॥
पञ्जमावई य गौरी, गंधारी ल
स्कमणा सुसीमा य ॥ जंबुवइ स
चञ्जामा, रुपिणि कन्हठमहिसीन
॥ १० ॥ जस्का य जस्कादिना, नूत्रा
तह चैव नूत्रदिना य ॥ सेणा वे
णा रेणा, नयणीन थूलिनदस्स

(१७०)

॥ १२ ॥ इच्छाद् महासंज्ञ, जयंति
अकलंकसील कलिआण ॥ अ
ऊवि वऊड जासिं, जस पमहो ति
हुअणो सयले ॥ १३ ॥ इति नर
हेसरनी सजाय ॥

अर्थः—नरहेसर बाहुवली के० श्री नरतेश्वर पेहेला
चक्रवर्ती श्री रुषन्नदेवना पुत्र, बीजा बाहुवली ते पण
रुषन्नदेवना पुत्र, नरतेश्वर करतां पण वधारे बलवान,
त्रीजा अन्नय कुमार, श्रेणिक राजाना पुत्र, वली चो
आ ठंढण कुमार ते श्री कृष्णजीना पुत्र, पांचमा श्री
क, (सरैयो) ते श्री शूलिन्नइजीना नानाज्जाइ, ठठा
अन्निका पुत्र आचार्य, जे गंगा नदी उतरतां केवलज्ञा
ने पाण्या, सातमा अतिमुक्तकुमार, जेणे ठ वरसनी
उमरे श्री वीर पासेशी दिक्ता लीधी, वली आठमाना
गदत्त, श्रेष्ठी पुत्र, अदत्तादानना त्यागी जाणवा. ॥१॥

मेअऊ शूलिन्नदो के० नवमा मेतार्य मुनि, जेने
माथे सोनीए वाधर एटले आलां चांवमां वीट्यां, दश

(३९)

श्री शूलिन्नः मुनि जेणे कोश्या वेश्याने घेर चो
कर्षु, अने वेश्याने श्राविका कीधी, अगीआर
ज्जस्वामी, वारमा नंदिशेणजी, जेणे वेश्याने घेर
ने वार वर्ष पर्यंत रोज दश दश जणाने प्रतिबोध्या,
मा श्री सिंहगिरिजी महाराज ते वज्रस्वामीना
३, चौदमा कृतवर्ण कुमार ए श्रेष्ठी पुत्र, वली पंढर
। सुकोसल मुनि, जेमनुं शरीर वाघणीए न्हण की
, सोलमा श्री पुंनरिकजी, श्री प्रथम तीर्थकरना
अम गणधर, सत्तरमा केशी कुमार, ते प्रदेशी राजा
। गुरु, अठारमा करकंठु, प्रत्येक बुद्ध मुनि जे घरमा
। लद प्रत्ये जोशने साधु थया. ॥ ९ ॥

हल्लविहल्ल केण नंगणीसमा हल्लय कुमार, ची
समा विहल्लय कुमार, ए वे श्रेणिक राजाना पुत्र; एक
वीसमा सुदर्शन शैठ, जेना शीलने प्रजावे शूलिमां
श्री सिंहासन थयुं; वावीसमा सालमुनि, तेवीसमा
महासाल मुनि, ए वे श्री गौतम स्वामीजीए प्रति
बोव्या; चोवीसमा शालिन्नः प्रसिद्धनोगी, श्रेष्ठीपुत्र;
पच्चीसमा न्जवाहु स्वामी चौदपूर्वना जाण, ठवीस

(१९४)

जे पूर्वजन्मे संयम विराधनाथी अनार्य देशमां उपन्या
अने अजय कुमारे गोकलेली जिन प्रतिमा देखीने
जेने पूर्वजन्म सांजख्यो, साधु अथा, उगणपञ्चासमा
दृढप्रहारी चोर, चार हत्याना करनार, मुनि अशने
मोढे गया; वली पचासमा श्रेयांसकुमार, जेणे श्री
ऋषज्जदेवने सेलनीना रसनं दान दीधुं, एकावनमा
कूरगरू साधु, जेणे गुरुना थुंक साथे खीचनी खातां
केवल ज्ञान नुपाज्युं, बावनमा सिद्धंजव आचार्य, जे
णे पूर्व अकी श्रीदशवैकालिक सूत्र उद्धर्युं, त्रेपन
मा मेघकुमार, श्रेणिक राजाना पुत्र, जेने वीर प्रभु
जीए हाथीनो पूर्वलो जव संजलावीने संयममां
स्थिर कर्या. ॥ ६ ॥

ए माइ महासत्ता केण इत्यादि बीजा पण खंध
कुमार, खंधक मुनि, कपिल मुनि, हरिकेशी मुनि,
संयत मुनि, दमदंत मुनीश्वर, दमसार मुनीश्वर प्रमु
ख महा सत्त्वना धरनार केटलाक ते जन्मेज मोढे ग
या, केटलाक आगल मोढे जशे, ते सर्वे मने शिव
ते आपो, ते महासत्ता केवा ठे ? तो के ज्ञा

(११५)

नादि गुणोना समूहे करीने संयुक्त ठे, वली केवा ठे ?
तो के जेना नाम ग्रहण करवा थकी पापना समूह
विनाश पामे ठे. ॥ ७ ॥

सुलसाचंदन वाला केण एक सुलसा, श्री वीर
स्वामीनी मुख्य श्राविका, वीजीचंदनवाला, श्री वीर
स्वामीनी प्रथम साधवी, त्रीजी मनोरमा, सुदर्शन
शेठनी स्त्री, चौथी मदनरेखा, नमिराजर्षिनी माता,
पांचमी दमयंति नलराजानी राणी, जेतुं मस्तक दी
वानी पेरे प्रकाशकारी थतुं हतुं, ठठी नर्मदासुंदरी,
सातमी सीता सती, आठमी नंदा, अन्नय कुमारनी
माता, तथा नवमी वज्रस्वामीनी माता पण नंदा
जाणवी, दशमी नज्ञ शेठणी, शालिनज्ञनी माता,
अर्णीयारमी अवंतिसुकुमारनी माता पण नज्ञ जा
णवी, चारमी सुन्नज्ञ जेणे काचे तांतणे चारणी वां
धी कूवामांथ्री जल काढी चंपानगरीनी पोल उधा
नी, तथा तेरमी श्री कृष्णजीनी उरमान नगिनी
पण सुन्नज्ञ जाणवी. ॥ ८ ॥

रायमईरिसिद्धता केण चौदमी राजेमति, जेणे

(१६)

गिरि गुफामांहे संयमथकी परुता रथनेमिने प्रतिवो
धी स्थिर कीधा. पंदरमी रुषिदत्ता सती, सोलमी प
द्मावती, करकंजुजीनी माता, सत्तरमी अंजना सुंदरी,
हनुमंत वीरनी माता, अठारमी श्री देवी, अतिमुक्त
कुमारनी माता, उगणीसमी ज्येष्ठा, वीसमी सुज्ये
ष्ठा, एकवीसमी मृगावती, बावीसमी प्रजावती, त्रेवी
समी चेलणाराणी, ए पांचे चेमा महाराजानी
पुत्रीन जाणवी. ॥ ए ॥

बंजी सुंदरी रुषिणि केण चोवीसमी ब्राह्मी, न
रतनी बेन, पच्चीशमी सुंदरी ते बाहुवलनी बेन, ष्ठी
शमी रुक्मिणी, जेणे वज्रस्वामीनी पासे कुमारिका
पणामां दिक्ता लीधी, सत्तावीशमी रेवती श्राविका, जे
णे जगवानने कोलापाक वोहोराव्यो, अठावीशमी कुं
ती, पांरवोनी माता, उगणत्रीसमी शीवा, ते चेमा
राजानी पुत्री, त्रीसमी जयंति, श्री वीर स्वामीनी
श्राविका, एकत्रीसमी देवकी, श्री कृष्णजीनी माता,
बत्रीसमी शैपदी, पांरवोनी राणी, तेत्रीसमी धारणी
माता, चोत्रीसमी मेघकुमारनी मा

ता पण धारणी जाणवी, पांत्रीसमी जंबु कुमारनी
माता पण धारणी जाणवी, ठत्रीसमी कलावती, शी
लना प्रजावे जेना कापेला हाथ नवपद्मव थया, वली
साम्त्रीसमी पुष्पचूला नामे साधवी, अन्निकापुत्र
आचार्यनी ज्ञक्तिना उद्धासथी जेने केवलज्ञान उप
ज्युं, जे वर्षाद वरसते आहार लावी. ॥ १० ॥

पञ्चमावईय गोरी के० आम्त्रीसमी पद्मावती,
उगणचालीसमी गौरी, चालीसमी गांधारी, एकताली
समी लक्ष्मणा, वेहंतालीसमी सुसीमा, वली त्रेताली
समी जांबुवती, चुम्मालीसमी सत्यनामा, पीस्ताली
समी रुक्मिणी ए आठ कृष्णनी पटराणी. ॥ ११ ॥

जस्क्याय जस्कदिना के० वेंतालीसमी यक्षा, सु
रतालीसमी यक्षदिना, अरतालीसमी जूता, उगण
पञ्चासमी जूतदिना, पञ्चासमी सेना, एकावनमी वेणा.
बावनमी रेणा, ए सात थूलीज्जनी वेनो जाणवी. १२

इच्चाइ महासइउ के० इत्यादिक बीजी पण क
मलावती, लीलावती, मानवती, मृगांकलेखा, चंड
लेखा, मयणासुंदरी, कौशळ्या प्रमुख जे महोटी स

(१६८)

तीयो ते सर्वे जयवन्ती ठे, एटले सर्व स्त्रीयोमां प्रधान
थती हवी. केवी होती हवी ? तो के निर्मल शील गुणे
करीने सहित होती हवी. वली जेनो जसनो परुहो
सकल त्रिजुवनने विषे आजे पण वाजे ठे. ॥ १३ ॥

विधि:—पढी एक नवकार गणी इच्छकार सुह
राइनो पाठ कहेवो.

॥ इच्छाकार सुहराइना बुटा शब्दना अर्थ ॥

इच्छकार-इच्छाकरुं	सुख-सुखे	संजम-चारित्र (रूप)
सुह-सुखे	तप-तप	जात्रा-जात्रा (मां)
राइ-रात	शरिर-शरीर	निर्वहो-प्रवर्त्तो
देवसि-दिवस	निराबाध-रोगरहित	शाता-सुख

इच्छकार सुहराइ, (सुहदेवसि) सु
खतप, शरीर निराबाध, सुख सं
जम जात्रा, निर्वहो ठो जी, स्वामी
शाता ठे जी, ज्ञात पाणीनो ला
न देजो जी ॥ इति ॥

अर्थ:—इच्छा करुं तुं सुखे रात्रि, सुखे दिवस, सु
तपमां, शरीरना रोग रहितपणामां, सुखे संजम

(१९९)

जात्रामां प्रवर्त्तो ठो जी, स्वामी शाता ठेजी ॥ दीव
सना बार वागतां सुधी गुरुजीने वांदतां सुहराइनो
पाठ बोलवो अने ते पढी वांदतां सांजे सुहदेवसि
नो पाठ बोलवो.

विधि:—पढी इच्छा० राइ प्रतिक्रमणे ठानं ? क
हीने जमणो हाथ चरवला उपर स्थापीने इहं सवस
वि राइय डुच्चिंतिय० कही, नमुबुणं कही उजा थइ
करेमिज्जंते कही इच्छामि ठामि कानस्सग्गं जोमे राइयो०
कही तस्सउत्तरी अन्नत्त० कही, एक लोगस्स अथवा चार
नवकारनो कानस्सग्ग कही पारी प्रगट लोगस्स कही
सवलोए अरिहंत० कही, एक लोगस्स अथवा चार
नवकारनो कानस्सग्ग करी पारी, पुस्कर वरदी० सु
अस्स० वंदण० कही अतिचारनी आठ गाथानो अथवा
गाथा ना आवरे तेणे आठ नवकारनो कानस्सग्ग करी
पारी सिद्धाणं बुद्धाणं कहीने वेसी त्रीजा आवश्यक
नी सुहपत्ति पस्सिलेही वांदणां वे देवां त्यांथी ते अप्पुच्छि
खामी वांदणां वे दीजे त्यां सुधी देवसिनी रीत प्रमाणे
करवुं, पण जे ठेकाणे देवसिअं आवे ते ठेकाणे राइयं

कहेवुं, पढी आयरिअ उवझाएण करेमिज्जंतेण इहामि
ठामि कानस्सग्गं तस्सउत्तरी कही तपचिंतामणी का
नुस्सग्ग करतां ना आवमे तो चार लोगस्स अथवा
सोल नवकारनो कानस्सग्ग करवो, ते पारी प्रगट लो
गस्स कही, बेसी ठठा आवश्यकनी मुहपति पणिलेही
वांदणां बे देवां पढी तीर्थवंदन करवुं.

॥ तीर्थवंदनाना ठुटा शब्दना अर्थ ॥

चैत्य-देरासर
निशि-रात
दीस-दहाडो
अड-आठ

सहस-हजार
प्रासाद-देरासर
शत-सो
शाश्वता-हमेशांस्थायी

विहरमान-विचरता
धार-धरनार
सार-सारी
सायर-समुद्र

॥ तीर्थ वंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोड्य, जिनवरनामैं मंगल
कोड्य ॥ पेहेले स्वर्गे लाख वत्रीस, जिनवर चैत्य नमुं
निशि दीस ॥ १ ॥ बीजे लाख अठावीश कक्षां, त्री
जे वार लाख सदह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अरुलख धार, पां
चमे वंदू लाखज चार ॥ २ ॥ ठठे स्वर्गे सहस पञ्चा
स, सातमे चालिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे ८

हजार, नव दशमे वंदू शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार वार
 मे त्रणसैं सार, नव त्रैवेयके त्रणसैं अठार ॥ पांच अ
 नुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिकांवली ॥ ४ ॥
 सहस सत्ताणुं त्रैविश सार, जिनवर जुवन तणो अ
 धिकार ॥ लांबां शो जोजन विस्तार, पचास उंचां व
 होंतेर धार ॥ ५ ॥ एकशो एंशी विंव प्रमाण, सत्ता
 सहित एक चैत्ये जाण ॥ शो कोरु बावन कोरु सं
 जाल, लाख चोराणुं सहस चौआल ॥ ६ ॥ सातसैं
 उपर साठ विशाल, सबी विंव प्रणमुं त्रण काल ॥
 सात कोरुने बहोंतेर लाख, जुवनपतिमां देवलज्जा
 ख ॥ ७ ॥ एकशो एंशी विंव प्रमाण, एक एक चैत्यें
 संख्या जाण ॥ तेरशें कोरु नव्याशी कोरु, शाठ लाख
 वंदू करजोरु ॥ ८ ॥ वत्रीशेंने उगणशाठ तीर्था लोक
 मां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशें
 वीश ते विंव जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर जयोत्तिपीमां व
 लि जेह, शाश्वता जिन वंदूं तेह ॥ रूपन्न चंशनन वा
 रिषेण, वर्द्धमान नामे गुण सेण ॥ १० ॥ समेतशि
 खर वंदूं जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥ विमला
 चलने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥

संखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार ॥
अंतरिक वरकाणो पास, जीरावलोने थंजण पास
॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य
नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदूं जिन वीश, सिद्धअनंत
नमुं निशदीस ॥ १३ अढी द्वीपमां जे अणगार, अ
ठार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत समितिसा
र, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अच्यंतर तप
उजमाल, ते मुनि वंदूं गुण मणिमाल ॥ नित नित
उठी कीर्ति करूं, जीव कहे जवसायर तरूं ॥ १५ ॥
इति ॥ एनो अर्थ सुगम ठे.

विधिः—इच्छकारि जगवन् पसाय करी पञ्चस्का
एनी आश देजोजी एम कही पठी यथाशक्ति नव
कारसि आदी पञ्चस्काण करवुं.

पञ्चस्काणाना तुटा शब्दना अर्थ.

उगए—उगछते	पच्छन्न—ढंकाएला	पुरिमढूं—पेहेलोअरधो
सूरे—सूर्य	कालेणं—वखत वडे	(दिवस) वे सहोर
नमुकार—नवकार	साढ—दोढ	अवढूं—त्रणपहोरसुधी
सहिअं—सहित	दिसा—दिशा (ना)	विगइ—विगय(घी, दुध
मुट्टे—मुठि [सुधी	मोहेणं—मोहवडे	वगेरे)
पोरिसिं—पहोरदिवस	वयणेणं—वचने	

(३३७)

सोदराः-सरस्वी
चेतो-चित

नैर्मल्य-निर्मलपणुं
हेतवः-हेतु

करामलकवद्विश्वं, कलयन् केव
लश्रिया॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधिः
सुविधिर्वोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥ स
त्त्वानां परमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः
॥ स्याद्वादाभृतनिस्यंदी, शीतलः
पातु वो जिनः ॥ १२ ॥ ज्वरोगा
र्तजंतूना, भगदंकारदर्शनः ॥ निः
श्रेयसश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽ
स्तु वः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीञ्चू
त, तीर्थकृत्कर्मनिर्मातः ॥ सुरा
ऽसुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु
वः ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो वा
चः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयंत
त्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥

अर्थः-करामलकवद्विश्वं के० श्री सुविधिनाथ

तमोने सम्यक्त्वने अर्थे थानु. ते सुविधिनाथ केवाठे ? तो के हाथने विषे रहेला निर्मल पाणीनी पेठे सर्व प्राणीनुने केवल ज्ञान रूप लक्ष्मीए करी जाणता एवा तथा न चिंतवीशकवा योग्य एवं जे मोहोटापणुं तेना निधान ठे. ॥ ११ ॥

सत्त्वानां परमानंद के० प्राणीनुने उत्कृष्ट आनंद ना अंकुरने प्रगट थवामां नवा मेघ सरखा तथा अने कांत शासनरूप अमृत रसना ऊरनारा, एवा शीतल नाथनामा जिन तमोने रक्षण करो ॥ १२ ॥

ज्वरोगार्त्तजंतनां के० संसाररूप रोगे करी पी माएला प्राणीनुने. वैद्यसमान ठे सम्यक्त्व दर्शन जे मनुं एवा, अथवा दर्शन एटले देखवुं जेमनुं एवा, तथा मोक्ष रूप लक्ष्मीना स्वामी एवा श्रेयांसनामा जिन तमारा कळयाएने अर्थे थानु. ॥ १३ ॥

विश्वोपकारकीज्जुत के० श्रीवासुपूज्यनामा जि न तमोने पवित्र करो. ते वासुपूज्य केवा ठे ? तो के विश्वना उपकार ज्ञत तीर्थकरनामकर्मनी निष्पत्ति करी ठे जेमणे, वली वैमानिक, ज्वनपति आदि देवता तथा मनुष्य तेमणे पूजवा योग्य ठे. ॥ १४ ॥

विमलस्वामिनो वाचः के० श्री विमलस्वामीनी
वाणीं जयवन्ती वर्त्ते ठ; ते वाणीं केवी ठे ? तो के
कतकफलना चूर्ण सरखी ठे. तथा त्रण जगतना चि
त्तरूप जलने निर्मल करवाना हेतु (कारण) ठे. ॥१५॥

गाथा १६ थी १० सुधीना ठुटा शब्दना अर्थ

स्वयंभूरमण-सौधी	प्र.प्तौ-प्राप्तिमां	मृग-मृग, हरण.
मोटो समुद्र	शरीरिणां-देह धारी	लक्ष्मा-लक्षण, चिन्ह
स्पर्द्धि-वरोवरी कर	ओने	सनाथ-सहित
नारा	चतुर्द्धा-चारप्रकारनो	अतिशयार्द्धिभिः-अ
करुणा-दया	देष्टारं-देखाडनार	तिशय रूपकृद्धिवडे
वारिणा-पाणीवडे	उपासमहे-उपासना	नृ-मनुष्य
अनंतजित्-अनंतनाथ	करीए छीए	चतुर्थार-चोथो आगे
अनंतां-अंतनहीं एवी	सुधा-अमृत	नमः-आज्ञाश(मां)
प्रयच्छतु-आपो	वाक्-वाणी	रवि-सूर्य
कल्पद्रुम-कल्पवृक्ष	ज्योत्स्ना-चांदनी	विद्यामं-सुखने
इष्ट-वांछित	दिङ्-दिग्वाती	वितनोतु-विस्तारो

स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवा
रिणा ॥ अनंतजित् अनंतां वः, प्रय
च्छतु सुखश्रियस्य ॥ १६ ॥ कल्प

दुमसधर्माण, मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम्
 ॥ चतुर्धा धर्म देष्टारं, धर्मनाथमुपा
 स्महे ॥ १७ ॥ सुधासौदरवाग्ज्यो
 त्स्ना, निर्मलीकृतदिङ्मुखः ॥ मृग
 लक्ष्मा तमःशांत्यै, शांतिनाथजि
 नौ ऽस्तु वः ॥ १८ ॥ श्रीकुंधुना
 थो जगवान्, सनाथोऽतिशयर्द्धि
 जिः ॥ सुरासुरनृनाथाना, मेकना
 थोऽस्तु वः श्रिये ॥ १९ ॥ अ
 रनाथस्तु जगवां, श्वतुर्थारनजोर
 विः ॥ चतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासं
 वितनोतु वः ॥ २० ॥

अर्थः—स्वयंजूरमणस्पर्द्धि के० अंतिमसमुद्रनी
 स्पर्द्धा करे एवं करुणारसरूप जे जल, तेणे करी युक्त
 एवा श्री अंततनाथ परमेश्वर, जेनो अंत नथी एवी मो
 क सुख रूप लक्ष्मीने आपो. ॥ १६ ॥

(३४१)

कल्पद्रुमसधर्माण के० धर्मनाथ जिनने अमे सेविये
गीए ते धर्मनाथ जिन केवा ठे ? तो के शरीरधारी
प्राणीजने वांछित फलनी प्राप्तिने विषे कल्पद्रुम समा
न ठे धर्म जेमनो एवा ठे, तथा दान, शीयल, तप त
था ज्ञावरूप चार प्रकारना धर्मने देखाऊनारा ठे । १७।

सुधासोदरवाग् ज्योत्स्ना के० अमृत सरखी वा
णीरूप चंडिकाए करी, दिग्वासी जनोनां मुख जेम
णे निर्मल कर्यां ठे एवा, तथा मृगनुं चिन्ह ठे जेमने
एवा श्री शान्तिनाथनामा जिन तमारी अज्ञाननी शां
तिने अर्थे थानु. ॥ १८ ॥

श्री कुंशुनाथो जगवान् के० श्री कुंशुनाथ जग
वान तमोने कल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थे थानु. ते कुंशु
नाथ जगवान केवा ठे ? तो के चोत्रीस अतिशयरूप
रुद्धिए करी सहित ठे. वली वैमानिक तथा जवनपत्या
दिक देवता अने मनुष्य तेमना स्वामी जे इंद्र तथा च
क्रवर्त्यादिक तेमना एक नाथ ठे. ॥ १९ ॥

अरनाथस्तु जगवां के० परमेश्वरने घटित एवा
जग शब्दना वार अर्थे करी सहित एवा अरनाथ ना
मा जिन ते तमोने चोथो पुरुषार्थ जे मोक्ष तेनी ल

हमीना जोग विदासने विस्तारो. ते अरनाथ जगवान
केवा ठे ? तो के चोथा आरारूप आकाशने विषे सू
र्य समान ठे. ॥ १० ॥

गाथा ११ थी १५ सुधीना तुटा शब्दना अर्थ

अधीश-इंद्र

मयूर-भोर

वारिदं-मेघ

दु-झाड

उन्मूलने-उखेडवाने

हस्तिमल्ल-औरावतहाथी

अभिष्टुमः-स्तवना क

रीए छीए

जगत्-जगत(नी)

निद्रा-उंघ

प्रत्यूष-अभात

समय-वखत

उपमं-उपमा (वाली)

देशना-उपदेश

वचनं-वचनने

स्तुमः-स्तवीएछीए

लुटंतः-लोटता

मूर्ध्नि-मस्तकने विषे

कारणं-हेतु

वारि-पाणी

प्लवा-प्रवाह

इव-पेटे

अंशवः-किरणो

यदुवंश-यादव वंश

इंदु-चंद्र

कक्ष-वनखंड

हुताशन-अग्नि

अरिष्ट-नामछे; उपद्रव

कमठे-कमठ उपर

धरणेंद्रे-धरणेंद्रउपर

उचित-योग्य

कुर्वति-करता

तुल्य-सरस्वी

सुराऽसुरनराधीश, मयूर नववारि

दम् ॥ कर्मउन्मूलने हस्ति, मल्लं

मल्लिमभिष्टुमः ॥ ११ ॥ जगन्म

हामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमम् ॥

मुनिमुद्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तु

(३४३)

मः ॥ २२ ॥ लुठंतो नमतां मूर्ध्नि,
निर्मलीकारकारणम् ॥ वारिप्ल
वा इव नमेः, पांतु पाद नखांशवः
॥ २३ ॥ यडवंशसमुद्धेः, कर्मक
कहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्जगवान्,
ज्ञूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥ क
मठे धरणे च, स्वोचितं कर्म कु
र्वति ॥ प्रच्युस्तुल्यमनोवृत्तिः, पा
र्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥

अर्थः—सुराऽसुरनराधीश के० हमे श्री मद्धिनाथ
प्रत्ये स्तवना करीए ठीए. ते मद्धिजिन केवा ठे? तो
के वैमानिक तथा जवनपति आदि देवता तथा मनु
ष्य, तेना इंद्र, उषेन्द्र अने चक्रवर्त्यादिकरूप मोरने उ
द्घास करवाने नवीन श्यारुना मेघ समान ठे; बली
कर्मरूप वृद्धने उखेनी नांखवाने हस्ती समान ठे ॥२॥

जगन्महामोहनिज्ञ के० मुनिसुव्रतनाथना धर्मोप
देशने अमे स्तविये ठीए, ते देशना वचनकेवुं ठे? तो के

जगतने विषे रहेला एवा जे प्राणीनु तेनो जे महामोह ते रूप जे निडा, तेने दूर करवाने प्रजात कालनी उप मा ठे जेने एवुं ठे. ॥ ११ ॥

लुठंतो नमतां मूर्ध्नि के० नमिनाथना चरणना नखनां जे कीरणो ठे ते तमारुं रक्षण करो. ते किरणो केवां ठे ? तो के नमस्कार करनार जे प्राणीनु तेना मस्तक ने विषे लुठायमान ठे, तथा पाणीना प्रवाहनी पेठे निर्मल एटले पापरहित करवानां हेतुचूत ठे. ॥१३॥

यदुवंशसमुद्भूः यादववंश रूप समुद्भने उद्धास पमारुवाने चंद्रमासमान एवा, तथा कर्मरूप जे वनखं रु तेने बालवाने अग्नि समान एवा, अरिष्टनेमिनामा जगवान् ते तमारा उपड्वने नाश करनारा थानुं॥१४॥

कमठे धरणेंडे च के० श्री पार्श्वनाथ ते तमारी ज्ञानादि लक्ष्मीने अर्थे थानुं. ते पार्श्वनाथ केवा ठे ? तो के पोतपोतानुं उचित्त कर्म करे ठे एवा कमठ अने धर णेंडे ए वेना उपर वरावरमननी वृत्ति ठे जेमनी एवा समदृष्टिवाला ठे. एटले कमठ उपसर्ग करे ठे अने धरणेंडे ते निवारे ठे, तो पण श्री पार्श्वनाथजी समर्थ ठतां पण वनेनी उपर समदृष्टिवाला ठे. ॥ १५ ॥

गाथा १६ थी १९ सुधी बुटा शब्दना अर्थ

श्रीमते-केवलज्ञानरू
 पलक्ष्मीवान(ने)
 सनाथ-सहित
 अद्भुत-नवाइ जेवुं
 श्रिया-लक्ष्मीवडे
 सरो-सरोवर(मां)
 राजमरालाय-राजहं
 स(ने)
 विजित-जीतेला
 तेजाः-कांति
 सेवितः-सेवाएला
 विमल-निर्मल
 चूडामणि-मुकुट
 महितो-पूजाएला

बुधाः-पंडितो
 संश्रिता-आश्रय करी
 रक्षा
 वीरेण-वीरस्वामीए
 अधिहतः-दृण्यो
 निचयः-समुदाय
 वीराय-वीरस्वामीने
 वीरात्-वीरथी
 प्रवृत्त-चाल्युं
 अतुलं-निरूपम
 वीरस्य-वीरनुं
 घोरं-कठण
 तपो-तप
 वीरे-वीरमां

दिश-आपो, वतावो
 अवांन-पृथ्वी
 तल-सपाटी
 गतानां-रहेला
 कृत्रिम-करेलां
 अशाश्वतां
 अकृत्रिमानां-नर्दी क
 रेलां, शाश्वतः
 कृतानां-करायेलां
 अर्चितानां-पूजाएल
 ओनां
 भावतः-भावथी

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथाया
 द्युतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, म
 राद्यायार्हते नमः ॥ १६ ॥ जय
 ति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधी .

श सेवितः श्रीमान् ॥ विमलस्त्रा
सविरहित, स्त्रिञ्जुवन चूमामणि
र्जगवान् ॥ १७ ॥ वीरः सर्वसुरा
सुरेण्महितो वीरं बुधाः संश्रिताः;
वीरेणाग्निहतः स्वकर्मनिचयो, वी
राय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं
प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वी
रेश्री धृतिकीर्त्तिकांतिनिचयःश्री
वीर ज्ञं दिश ॥१७॥ अवनितल
गतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां, वरञ्जुव
नगतानां दिव्य वैमानिकानाम् ॥ इ
ह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवर च्जुवनानां ज्ञावतोऽहं न
मामि ॥ २९ ॥

अर्थः—श्रीमते वीरनाथाय के० केवलज्ञानरूप ल
क्ष्मी ठे जेमने एवा तथा आठ महाप्रातिहार्य तथा

चोत्रीश अतिशयादि अद्भुत लक्ष्मीये करीने सहित ठे, तथा महानंदरूप सरोवरने विषे क्रीडा करवाने राज हंस नामा पक्षीनी समान ठे एवा अरिहंतश्री महा वीर स्वामीने नमस्कार थाउं ॥ ९६ ॥

जयति विजितान्यतेजाः केण जेमणे वीजाउनुं तेज विशेषे करीने जीत्युं ठे, तथा जेमने सुर असुरना इंद्रोए सेवेला ठे, तथा जे केवलज्ञानरूप लक्ष्मीवंत ठे, वली निर्मल ठे, वली सात प्रकारना ज्ञयश्री वि शेषे करी रहितठे, वली त्रण ज्ञुवनने विषे मुकुट स मान एवा प्रभु जयवंता वर्त्ते ठे ॥ ९७ ॥

वीरः सर्व सुराऽसुरेण्ड केण श्री वीर स्वामी जे सर्वे वैमानिक तथा ज्ञुवनपत्यादिक देवताउना इंद्रोए पूजाएला ठे, जे वीर स्वामीप्रत्ये पंढितो आश्रय करी रहेला ठे तथा जे वीरस्वामीए पोताना कर्मनो समु दाय समस्त प्रकारेहण्यो ठे, एवा वीर स्वामीने निरंतर नमस्कार थाउं. तथा जेने उपमा नश्री एवुं चतुर्विध संघरूप तीर्थ, जे वीर शक्री प्रवर्त्युं ठे, तथा जे वीरघ्न गवाननुं तप घणुं कठण ठे तथा जे श्री वीरस्वामीने

विषे केवलज्ञानरूप लक्ष्मी, धैर्य, कीर्ति तथा अद्भुत रूप तेनो समूह वर्ते षे. एवा हे श्री वीरस्वामिन् ! त मो कल्याणप्रत्ये देखामो अर्थात् आपो ॥ ३७ ॥

अवनितलगतानां के० पृथ्वीना तलने विषे रहे लां अशाश्वतां अने शाश्वतां एवां जे चैत्य तथा न्नुव नपति अने व्यंतरादिक देवोना न्नुवनोने विषे रह्यां एवां तथा दिव्य वैमानिकोनां (विमानोमांना) तथा आ मनुष्य लोकेने विषे मनुष्य एटले न्नुवतादिक राजानां करावेलां एवां, अने जेमने देवताना राजा एटले इंडो तेमणे पूज्यां एवां, सामान्य केवलीने विषे प्रधान एवा जे श्री तीर्थकर तेमनां न्नुवन एटले चैत्यो षे तेमने ज्ञावथी हुं नमस्कार करुंबुं ॥ ३८ ॥

गाथा ३० थी ३२ सुधीना तुटा शब्दना अर्थ

वेवसां-पंडितोना(मां)	सिद्धिवधू-मोक्षरूपस्त्री	घटा-घटा
आद्यं-पेहेला(ने)	हृदय-अंतःकरण	निर्भेद-भेदवाने
सर्वज्ञ-केवली(ने)	अलंकार-शणगार	पंचाननो-केसरीसिंह
अजित-मेलवेला	उपमः-उपमावालो	ख्यातः-प्रख्यात
अजित-घणां आकरां	अष्टादश-अठार	अष्टापद । पर्वतोनां
प्रदीप-वालवाने	सिंधुर-हाथी	गजपदः । नामढे

(३४ए)

सम्मेतशैल-समेतशि	वेभार-वैभार पर्वत	तत्र-तेषां
खर	कनकाचल-मेरु(पर्वत)	कुर्वतु-करो
अभिधः-नामवालो	अर्बुद-आबु [पर्वत	
रवतकः-गिरनार	चित्रकूट-चीतोडनो	

सर्वेषां वेधसामाद्य, मादिमं परमे
 छिनम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्री
 वीरं प्रणिदध्महे ॥ ३० ॥ देवोऽने
 क ज्ञवार्जितोर्जित महापापप्रदी
 पानलो, देवः सिद्धिवधूविशालह
 दयाऽलंकार हारोपमः ॥ देवोऽष्टा
 दशदोषसिंधुरघटा निर्जेद पंचान
 नो, ज्ञव्यानां विदधातु वां वितफलं
 श्रीवीतरागोजिनः ॥ ३१ ॥ ख्या
 तोऽष्टापदपर्वतोगजपदः सम्मेतशै
 लान्निधः, श्रीमान्, रैवतकः प्र
 सिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंमपः ॥

(३५०)

वैज्जारःकनकाचलोऽर्बुदगिरिःश्री
चित्रकूटादय, स्तत्र श्रीरुषज्ञादयो
जिनवराः कुर्वंतु वो मंगलम् ॥३५॥

अर्थः—सर्वेषां वेधसामाद्यं के० सर्व ज्ञाता पुरुषो
मां प्रथम सुख्य एवा, तथा आदिम परमेष्ठिरूप तथा
देवतानुना देव जे इंइ तेना पण देव एवा, तथा सर्व
पदार्थने जाणनारा एवा, श्री वीरजगवाननुं प्रकर्ष
करी ध्यान धरीए ठीए ॥ ३० ॥

देवोऽनेक के० श्री वीतरागजिन ते ज्ञव्य जीवो
ने वांछित फलने आपो. ते वीतराग देव केवा ठे ? तो
के अनेक ज्ञवने विषे संचेलां घणां आकरां मोटां पा
प तेने प्रकर्षे करी बालवाने अग्नि समान ठे, वली जे
देव मोक्षरूप स्त्रीना विशाल हृदयने विषे अलंकार ए
टले हारनी उपमा ठे जेमने एवा ठे, वली देव केवा ठे ?
तो के अठार दोषरूप हाथीनी घटाने जेदवाने केसरी
सिंह समान ठे ॥ ३१ ॥

ख्यातोऽष्टापद के० प्रख्यात एवो अष्टापद पर्वत
न्या गजपद पर्वत, वली सम्मेतशिखर नामा पर्वत,

तथा लक्ष्मीवंत एवो गिरनार पर्वत, तथा प्रसिद्ध ठे
महिमा जेनो एवो सिद्धगिरि पर्वतरूप मंरुप, वली वैज्जा
र पर्वत, तथा मेरुपर्वत, तथा आबु पर्वत, तथा श्री
चित्रकूटादिक पर्वतो ठे तेमने विषे जे श्रीऋषिज्ञादिक
जिनवरो ठे, ते तमारुं कट्याण करो ॥ ३१ ॥

विधि:- वंदिता पठी खमासमण देइने इच्छाकारेण
संदिसह जगवन् देवसिद्धं^१ आलोइअ पस्किंता इच्छाकारे
ण सदिसह जगवन् पस्किमुहपत्ति पस्किहेहुं एम कही मुह
पत्ति पस्किहेहि ए पठी वांइणां वेदीजे पठी इच्छाकारेण.
संबुद्धाखामणेणं अप्पुठिन्हं अप्पिंतर पस्किअं खामेउं; इहं
खामेमि पस्किअं. (पंचांग नमस्कार पूर्वक चरवला उ
पर जयणो हाथ स्थापी) पन्नरस दिवसाणं पन्नरस
राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं^० कही इच्छाकारेण^० कही
पस्किअं आलोएमि इहं आलोएमि जोमे पस्किउ अइ
आरो कउ कही इच्छाका^० कही पस्किअतिचार आलोउं
एम कहीने अतिचार कहीए.



१ दिवस संवाधि अतिचार आलोइने पापयो पाछो ओसरलो.

॥ अथ श्री श्रावकपाक्षिकादि संक्षिप्ता
अतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य
विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा ञ्णि
उ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपा
घार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे
कोइ अतिचार, पक्क दिवसमांहे सूद्धम, वादरजाणतां,
अजाणतां, हुउ हुइ, ते सविहुं मन, वचन, कायार्य
करी तस्स मिच्छामि उक्कमं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणएव
हुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अठ तउज्ज
ए, अठविहो नाणमायारो ॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलायें ञ
एयो, गणयो विनयहीन, बहुमानहीन, योग उपधान
हीन, अनेरा कन्हें ञणी, अनेरो गुरु कह्यो. देववंदन
वांदणे, पम्पिक्कमणे, सञ्चाय करतां, ञणतां गुणतां, कू
मो अकर, कान्हा, मात्रें, आगलो उठो ञणयो. सूत्र
अर्थ विहुं कूमां कह्यां. साधु तणे धर्म काजो मांमो, अ
णपम्पिलेह्यां, काजो अण उहरिठ, असञ्चाइ अणोज्जा

मांदि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत ज्ञेयो, गुण्यो,
 श्रावकतणै धर्मे अविरावति, पम्कमणासूत्र, उपदेश
 माला प्रमुख कालवेला काजो अणउहरिये पढियो.
 ज्ञानइव्य ज्ञकित, उपेक्षित प्रज्ञापराध विणासियो,
 विणासतां उवेखियो, सार संज्ञाल न कीधी, तथा ज्ञा
 नोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली,
 सांपना, सांपनी, दस्तरी, वही, उदिया प्रत्ये पग ला
 गो, शूके करी अक्षर मांज्यो, कन्हें ठते आहार निहार
 कीधी. ज्ञानवंत प्रत्ये छेप, मत्सर, अंतराय, अवज्ञा
 कीधी. आपणा जाणवा तणो गर्व चिंतव्यो ॥ ज्ञाना
 चारवत विषइउ अनेरो जे कोई अतिचार पक ॥१॥

दंसणाचार आठ अतिचार ॥ निस्तंकिय निर्दंस्कि
 य, निद्वितिगिञ्जा अमूढ दिठी अ ॥ उवबूह शिरीकरणे,
 वञ्जलप्पजावणे अठ ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्मतणे विषे निः
 शंकपणुं न कीधुं तथा एकांत निश्चय न कीधी. धर्म
 संबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि करी नहीं, त
 पोधन, तपोधनी प्रत्ये मलमलिन गात्र देखी इगंगा
 कीधी. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रज्ञावना देखी सुदृष्टि

पणुं कीधुं, तथा संघमांहि गुणवंत तणी अनुपवृंहणा
 कीधी अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अजक्ति
 कीधी, तथा देवड्य, गुरुड्य, साधारण ड्य, जक्ति
 त, उपेक्षित, प्रज्ञापराध विणास्यो, विणासतो नवेख्यो;
 उती शक्तिए सार, संज्ञाल न कीधी, तथा साधर्मिक
 शुं कलहकर्म बंध कीधो, अधोती अष्टपट मुखकोश
 पाखें देवपूजा कीधी. वासकूपी धूपघाणुं कलशतणो
 ठवको लागो. देहरा पोसालमांहि मल श्लेष्म लूह्यां.
 हास्य, केलि^१, कुतूहल कीधां. जिनचुवनें चोराशी आ
 शातना, गुरुप्रत्ये तेत्रीश आशातना, ठवणहारी हाथ
 अकुं पदचुं, पदिलेहचुं विसारचुं. गुरुवचन तहत्ति^२ क
 री ३पदिवज्युं नहीं ॥ दंसणाचार व्रत विषइयो अनेरो
 जे कोई अतिचार पदण ॥ ९ ॥

चारित्राचार आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोग
 जुत्तो, पंचहिं समिइहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्ता
 यारो, अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥ इयासमिति, ज्ञा
 आसमिति, एपणासमिति, आदानज्ञान निश्केवणासमि

ति, पारिष्ठावणियासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, काय
गुप्ति, ए अष्टप्रवचन माता, साधु तणे धर्म सदैव, आ
वक तणे धर्म सामायिक पोसह लीधे, रुही पेरे चिं
तव्युं नहीं. खंरुण, विराधना कीधी ॥ चारित्राधारव्र
त विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्म सम्यक्त्व मूल चारव्रत
सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संका कंखविगिघ्नाण ॥
संकाः—श्री अरिहंत तणां वद, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी,
गांज्नीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चा
रित्र, जिनवचनतणो संदेह कीधो ॥ ? ॥ आकांक्षाः—
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आलपाल पादर
देवता, गोत्र देवता, देवदेहरानो प्रज्ञाव देखी रोग आवे,
इह लोक परलोकार्थे पूज्या, मान्या, बौद्ध, सांख्य, लंन्या
सी, ज्जरुा, जगत, लिंगीया, योगी, दरवेश, अनेरा
ए दर्शनीयानुं कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जा
एया विण नूट्या व्यासोह्या, कुशाख्त्र शीख्यां सांज्जट्या,
श्राद्ध, संवत्सरी, होली, बलेव, माही पूनम, अजा प
रुवो, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विषायगचोध, नागपं

जीह्मणाठवी, शीयलसप्तमी, ध्रुवअष्टमी, नोलीनव
मी, अहवदशमी, व्रतइग्यारसी, वत्सवारसी, धनतेर
सी, अनंतचौदसी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तराय
न, नैवेद्य, याग, जोग, मान्या. फींपले पाणी रेऊयां,
रेमाव्यां; घर, बाहिर, कूड, तलाव, नदी, इह, कुंभ,
वाव्य, समुडे पुण्य हेतु स्नान कीधां ॥ १ ॥ वितिगि
ज्ञाः—धर्म संबंधीयां फलतणो संदेह कीधो. जिनअरि
हंत धर्मना आगार, विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गना
दातार, इस्या गुण ज्ञानी पूज्या नहि. इहलोक परलो
क संबंधीया जोगवंठित पूजा कीधी रोग आतंककष्ट
आवे खीण वचन याग मान्या, महात्माना ज्ञात, पा
णी, मल शोभातणी निंच्या कीधी ॥३॥ प्रीति मांसी
॥ ४ ॥ तेहनी दाक्षिण लगे, तेहनो धर्म मान्यो ॥५॥
श्री. सम्यक्त्व व्रत विषयो अनेरो जे कोइ अ० प० ॥४॥

पहेले स्थूल प्राणातिपातविरमण व्रते पांच अ
तिचार ॥ वहबंध ठविठेए० ॥ छिपद चतुष्पद प्रत्ये
रीशवशे गाढो घाय घाल्यो. गाढ बंधण वांध्युं, घषे
जारे पीर्यो. निह्लंठण कर्म कीधुं. चारापाणी तणी

वेलाये सार संज्ञाल न कीधी, लेणे, देणे कुणहने न
 ढ्युं, लंघाव्युं, तेणे झूखे आपण जम्या, शब्दयां धान्य
 रूमी पेरे जोयां नहीं, पाणी गलतां ढोळ्युं, जीवाणी
 शूकव्युं. गलतां जालक नांखी, गलणुं रुं न कीधुं.
 इंधण, ठाणां, अणशोध्यां वाढ्यां. तें मांही साप, ख
 जूरा, विंठी, सरोला, मांकरु, जूवा, गिंगोमा, साहतां
 मूत्रा, दूहव्या, रूमे स्थानके न मूक्या. कीनी, मंको
 नी, उधेही, धीमेल, कातरा, चूमेल, पतंगीया, देरु
 कां, अलसीयां, इयल प्रमुख जे कोइ जीव विणठा, वि
 णसतां उवेख्या, चांप्या, दूहव्या, इलावतां, चलावतां
 पाणी गंटतां, अनेराइ कामकाज करतां, १निध्वंसपणुं
 कीधुं. जीवरक्षा रूमी न कीधी ॥ पहेले स्थूल प्राणा
 तिपात व्रत विपश्च अनेरो जे कोइ अतिचार पण॥५॥

वीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रते पांच अतिचा
 र ॥ सहस्सा रहस्सदारेण ॥ सहसात्कारें कुणहप्रत्ये
 अयुक्त आल दीधुं. २स्वदारा मंत्रज्ञेद कीधो. अनेराइ
 कुणहनो मंत्र आलोच मर्मप्रकाश्यो. कुणहने ३अपाय
 पारुवा कूमी बुद्धि धरी. कूमो लेख लख्यो, जूठी सा

१ निर्दयपणुं, घातकीपणुं. २ पोतानी खी. ३ कष्टमां.

ख जरी, आपण मोसो कीधो. कन्या, ढोर, जूमि सं
बंधिया लेहेणे, देहेणे, वाद वढवारु करतां मोटकुं जू
तुं बोड्या ॥ बीजे स्थूलमृषावाद्ब्रत विषइयो अनेरो
जे कोइण ॥ पद्दडिण ॥ ६ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमणव्रतें पांच अतिचा
र ॥ तेनाहरुप्पल्लगेण ॥ घर बाहिर, खेत्रे खले, परायुं
अण मोकळ्युं लीधुं, दावरथुं. चोराइ वस्तु लीधी, चोर
प्रत्ये संवल दीधुं, विरुइ राज्यादि कर्म कीधुं. कूमा
मान, मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र कलत्र,
श्वंची कुणहने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. नवा जुनास
रस, नीरस वस्तु तणा जेल संजेल कीधा ॥ त्रीजे अ
दत्तादानव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पद्दण॥७॥

चोणे स्वदारासंतोप परस्त्री विरमणव्रतें पांच अ
तिचार ॥ अपरिगृहीया इत्तरण ॥ अपरिगृहीतागमन
कीधुं, अनंगक्रीडा कीधी, विवाह कारण कीधुं, काम
जोगतणे विषे अति अजित्ताप कीधो, दृष्टिविपर्यास
कीधो, आठम, चनदशी तणा नियम लइ चांग्या. अ

तिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहृणे स्वप्नो
तरे हूआ ॥ चोथे मैथुनविरमणव्रत विपश्यो अनेरो जे
कोइ अतिचार पक्ष दिवस ॥ ७ ॥

पांचमे स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रते पांच अतिचा
र ॥ धण धन्न खित्तवत्तू ॥ धण धन्ननुं परिमाण उपरुं
रखाव्युं. सोनुं, रुपुं, नवविध परिग्रह प्रमाण लीधुं न
हीं. पठवुं विसार्युं ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत वि
पश्यो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस ॥ ८ ॥

ठठे दिग्‌विरमणव्रते पांच अतिचार ॥ गमणस्स
य परिमाणे ॥ उरुदिशें, अहोदिशें, तिर्यग्‌दिशें, जावा
आववा तणा नियम लेइ ज्ञांग्या. एक दिशि संक्षेपी,
बीजी दिशि वधारी. १ विस्मृत लगे अधिक ज्ञूमि गया.
२ पाठवणी आधी मोकली. वाहाण व्यवसाय कीधो.
वर्षाकाले ३ गामंतरुं कीधुं ॥ ठठे दिग्‌विरमणव्रत विप
श्यो अनेरो जे कोइ अतिचार प ॥ १० ॥

सातमे ज्ञोगोपज्ञोगव्रते पांच अतिचार ॥ सञ्चिते
पनिब्रहे ॥ सञ्चित आहारें, सञ्चित प्रतिवळ आहारें,
अप्पोलसहिन्नकरणया, उप्पोलसहिन्नकरणया, तुठो

सहिज्जरकणया, सच्चित्तज्जरकणया, अपक्काहारे, दुः
काहारे तुञ्ज्यौषधि कुली आंवली, नंदा, नंबी, पंहुंक.
पापनीतणां ज्जरकण कीधां, अनंतकाय, अथाणां तण
ज्जरकण कीधां, तथा रिंगण, विंगण, पीलू, पीचू, पं
पोटा, महूमां, वरुबोर, प्रसुख बहुबीज तणां ज्जरकण
कीधां ॥ गाथा ॥ सच्चित्त दध्व विगइ, वाणह तंबोल वञ्ज
कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, वंज दिस्सी न्हाण
ज्जत्तेसु ॥१॥ ए चउद नियम दिनप्रत्ये लीधानहीं. लेइ सं
क्षेप्या नहीं. सच्चित्त, ड्य, विगय, खासमां, वाहन, तंबो
ल, फोफल, बेसण, शयन, पाणी, अंधोलण, फल फू
ल, ज्ञोजन, आछादनें, जे कोइ नियम लेइ ज्ञांग्या.
बावीश अज्जक्य, वत्रीश अनंतकाय मांहि आदू, मूला
गाजर, पिंरु, पिंरालु, कचूरो, सूरण, खिलोमां, मो
रमा, सेलरां, कुली आंवली, वाधरमां, गिरमर, नीली
गलो. वाळ्होल खाधी. वाशी कठोल, पोली, रोटली,
त्रण दिवसना नंदन, मधु, महूमां, विप, हिम, करहा,
घोलवमां, अजाण्यां फल, टींवरुं, गुंदां, वोर, अथाणुं,
काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंवमां खाधां. लगज्ज

ग वेलायें वालू कीधां. दिन उग्याविण शीराव्या. जे कोइ अनेरो अतिचार हुनु होय ॥ तथा कर्मतः इंगाल कम्मे, वणकम्मे, सामीकम्मे, ज्ञामीकम्मे, फोमीकम्मे ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिज्य, लस्कवाणिज्य, रसवाणिज्य, विषवाणिज्य, केशवाणिज्य, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिच्छणकम्मे, निद्धंठणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरद्धतलायसोसणया, असइपोसणया ॥ ए पांच सामान्य, ए पन्नर कर्मादानमांहि कीधां, कराव्यां, अनुमोधां, अनेरां कांइ सावद्य कर्म समाचख्यां होय ॥ सातमे जोगोपजोग व्रतविषइयो अनेरो ॥ ५० ॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंरुव्रते पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइएण ॥ अनर्थदंरु जे कहियें, कामकाज पाखें मुधा पाप लाग्यां. मुखहास्य, खेल, कुतूहल, अंगकुचेष्टा कीधी. निरर्थक लोकने कर्पण, गामां वाही, ग्रामां तरे कमावानी बुद्धि दीधी. कण, वस्तु, ढोर लेवराव्यां अनेराइ पापोपदेश दीधा. कोश, कूहाम्ना, रथ, नखल, मूशाल, घर, घंटी प्रमुख सख करी मेढ्यां. माग्यां

१ फोगट. २ खेंती. ३ चलावी. ४ खांयणीओ, खांयणी. ५ सांघेलें, मुशली. ६ तैयार.

आप्या. अंधोल नाहणे, पग धोयणे, खालें पाणी हो
 ल्यां अथवा जीलणां जील्यां. जूवटुं रम्या. नाटक १पे
 खणां जोयां. पुरुष स्त्रीनारूप, शृंगार वखाण्या. राज
 कथा, देशकथा, ज्ञानकथा, स्त्रीकथा, पराई तांत कीधी.
 २कर्मका वचन बोल्या, ३संज्ञेना लगाव्या. ४शरज्ज,
 कूकना, प्रसुख ५जुजता जोया. कलह करता जोया,
 लोकतणी उपार्जना कीधी, सुख कीर्ति देश लइ चिं
 तवी. लूण, पाणी, माटी, कण, कपाशिया, काजविए
 चांप्या. ते उपर वेठा, ६आली वनस्पति चूंटी, अंगी
 ठा काष्ठवणिज कीधां. ठाश, पाणी, घी, तेल, गोल,
 आम्बवेतस, वेरंजातणां ज्ञानन उघासां मेहेल्यां ते
 मांहे कीमी, अंकोमी, कुंशुआ, बुदेही, घीमेल, गिरो
 ली प्रसुख जे कोइ जीव ७विषाठा. शूमा. सालही,
 क्रीडाहेतु पांजरे घाल्या ॥ अनेराइ जीवने रागेंठप ल
 गें एकने ऋद्धि परिवार वांठी. एकने मृत्यु हाणी वां
 ठी ॥ आठमे अनर्धदंमव्रत विपश्यो अनेरो जे कोइ अ
 तिचार पक्ष ॥ १९ ॥

१ जोवानां. २ आकरां, कठोर, ३ साचांजुयां करी लडाववां.

४ हाथी, अष्टपद. ५ लडता. ६ फोकट, कामवगर. ७ नाश पाप्या.

नवमे सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिविद्वे
 दुप्पणिहाणे ॥ सामायिकमांहि मन आहट्ट दोहट्ट
 चिंतव्युं, वचन सावद्य बोळ्युं, शरीर अणपणिलेहुं
 हलाव्युं, उती शक्तिए सामायिक लीधुं नहीं, उघामे
 मुखें बोळया, सामायिकमांहि उंघ आवी, १बीज दीवा
 तणी २उजेही लागी, विकथा कीधी. कण, कपाशि
 या, माटी, पाणी तणा संघट्ट हुआ. मुहपत्ती संघट्टी,
 सामायिक अण पूगे पारखुं, पारखुं विसारखुं ॥ नवमे
 सामायिकव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार ॥ पण ॥

दशमे देशावगाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आ
 एवणे पेसवणे ॥ आणवणप्पणुगे, पेसवणप्पणुगे, स
 दाणुवाइ, रुवाणुवाइ, वहियापुग्गलक्केवे ॥ नीमीचू
 भिकासांहिणी वाहिर अणाव्युं, आपण कन्हेणी वाई
 र मोकल्युं. शब्द संजलावी, रूप देखानी, कांकरो नां
 खयो. आपणपणुं उतुं जणाव्युं. पुट्टगलतणो अण्णप की
 थो ॥ दशमे देशावगाशिकव्रत विषइयो अनेरो ॥ पण

अग्यारमे पोपधोपदासव्रतें पांच अतिचार ॥ सं

धारुञ्चारविहिण् ॥ पोसह लीधे संधारातणी जूमि वा
हिरलां थंमिलां संदीसे रूमां शोध्यां नहीं, पमिलेह्यां
नहीं, थंमिल वावरतां, मात्रुं परठवतां, चिंतवणी न
कीधी, 'अणुजाणहजस्सगो' न कह्यो, परठव्यां पूठें
वार त्रण वोसिरे वोसिरे न कह्युं, देहरा पोसालमांहे
पेसतां, निसरतां, निसीहि आवस्सहि कहेवी विसारी,
पुढवी, अप्प, तेज, वान, वनस्पति, त्रसकायतणा संघ
ट्ट, परिताप, उपड्व कीधा, संधारापोरिसीतणो विधि
जणवो विसाख्यो, अविधियें संधास्या, पारणादिक त
णी चिंता निपजावी, कालवेलाये देव न वांध्या, पोस
ह असूरो लीधो, सवारों पाख्यो, पर्वतिथें पोसह ली
धो नहीं ॥ अग्यारमे पोषधोपवासव्रत विपइयो अने
रो जे कोइ अतिचार ॥ ५० ॥ १५ ॥

वारमे अतिप्रिसंविज्ञागव्रतें पांच अतिचार ॥ स
च्चित्ते निस्क्रवणेण ॥ सचित्त वस्तु देगं उपर ठतां अ
सूजतुं दान दीधुं, वहोरवा वेला टली रह्या, मत्सरख
गें दान दीधुं, देवातणी बुद्धें पराइ वस्तु धणीने अण
कहे दीधी, अथवा आपणी करी दीधी, अणोदेवा तणी

बुद्धे सूजतुं फेदी, असूजतुं कीधुं, गुणवंत आवे जक्ति
न साचवी, अनेराइ धर्मक्षेत्र सीदातां वती इक्तं उठ
ख्यां नहीं, दीन, खीन प्रत्ये अनुर्कपा दान दीधुं नहीं.
देतां वास्युं ॥ वारमे अतिश्रिसंविज्ञाग व्रत विपइयो
अनेरो जे कोइ अतिचारण पण ॥ १६ ॥

संक्षेपणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलो
एण ॥ इहलोगासंसप्पज्जे, परलोगासंसप्पज्जे, जी
वियासंसप्पज्जे, मरणासंसप्पज्जे, कामजोगासंस
प्पज्जे. इह लोके धर्मतणा प्रज्ञाव लगे राजकृदिजो
ग वांठ्या, पर लोकें देव, देवइ चक्रवर्ती तणी पदवी
वांठी. सुख आवे जीववातणी वांठा कीधी. दुःख आ
वे मरवातणी वांठा कीधी. काम जोगतणी वांठा की
धी. ॥ संक्षेपणा व्रत विपइयो अनेरो जे कोइ अ
तिचार ॥ पण ॥ १७ ॥

तपाचार वार जेद ॥ ठ चाह्य, ठ अच्यंतर ॥
अणसणमूणोअरिया० ॥ अणसण ज्ञणी उपवासादि
क पर्वतिश्रि तप न कीधुं. उणोदरी वे चार कवल उणा
न उठ्या. इअ ज्ञणी सर्व वस्तु तणो संक्षेप^१ न की

धो. रस त्याग न कीधो. कायक्लेश—लोचादि कष्ट कस्या नहीं. संलीणता—अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं. पञ्च स्काण ज्ञांग्यां, पाटलो रुगतो फेरुयो नहीं, गंठसही पञ्चस्काण ज्ञांग्युं. उपवास, आंबील, नीवि कीधे मुखें सचित्त पाणी धाल्युं. विमन हुल ॥ बाह्य तपव्रत विष इयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १८ ॥

अज्यंतर तप ॥ पायञ्चित्तं विणलु० ॥ सूधुं प्राय श्रित्त पन्निवज्युं नहीं, आलोयण तणी सूधि टीप की धी नहीं, सूधो तप पहोंचारुयो नहीं, साते जेदें विनय न कीधो, दश जेदें वैयावञ्च न कीधो, पंचविध सज्जा य न कीधो, कषाय वोसरुव्यो नहीं, दुस्करकय कम्म रकय निमित्त कानुस्सग्ग न कीधो, शुक्लध्यान, धर्म ध्यान, ध्यायां नहीं. आर्त्त, रौड, ध्यान ध्यायां ॥ अज्यं तर तपव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० दिवसमांहि ॥ १९ ॥

वीर्याचार त्रण अतिचार ॥ अणिगूहिय बलविरि यो० ॥ मनोवीर्य, धर्म ध्यान तणे विषे उदयस न की धो, पन्निक्कमणें देवपूजा, धर्मानुष्ठान, दान, शील, तप

जावना, ठती शक्तियें गोपवी, आलसें उद्यम न की
घो. वेठां पम्किमणुं कीधुं. रुतां खमालमण न दीधां
॥ वीर्याचार विषयइल अनेरो ॥ २० ॥

पम्सिष्ठाणं करणे ॥ प्रतिषेध, अन्नद्वय, अनं
तकाय, महापरिग्रह, जे कोइ प्राणातिपात मृषावाद,
अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ,
राग, द्वेष, कलह, अन्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति,
परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशाल्य, ए अद्वार
पाप स्थानक सांहे कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय ते
सविहुं मन, वचन कायायें करी मिठासि डुकुमं ॥२१॥

॥ अथ श्रावकपाह्निकादि विस्तारातिचार
प्रारंभः ॥

॥ नासांमि दंससांमिअ, चरणांमि तवंमि तद्व य
विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणि
लु ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तथाचा
र, वीर्याचार, ए पंचविध आचार सांहे अनेरो जे कोइ
अतिचार, पढ दिवस सांहे सूक्ष्म, वादर, जाणतां, अ
जाणतां हुड होय, ते सविहुं मन, वचन, कायायें करी

तस्मिन् मिच्छामि दुःखम् ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणए व
हुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजणअठ तडुज
ए, अठविहो नाणमायारो ॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलामांहे
जणित्त गुणीत्त नहीं. अकाले जणयो, विनयहीन, व
हुमानहीन, योग उपधानहीन, अनेरा कन्हे जणी अ
नेरो गुरु कह्यो, देव गुरु वांदणे, पम्किम्मणें सच्चाय
करतां, जणतां, गुणतां, कूमो अकर, कान्हे, मात्रं अ
धिक जंगो जणयो, सूत्र कूमुं कह्युं, अर्थ कूमो कह्यो,
तडुजय कूमं कहां, जणीने विसाख्यां, साधु तणे धर्म
काजे, काजो अणउद्धरयें, मांमो अणपम्किलेहे, वस्ती
अणशोधे, अणपवेसे, असच्चाय, अणोजा मांहे श्री द
शवैकालिक प्रमुख सिद्धांत जणयो, गुणयो, श्रावकतणे
धर्मे अविरावदि, पम्किम्मणासूत्र, उपदेशमाला, प्रमुख
सिद्धांत जणयो गुणयो. कालवेला काजो अणउद्धखे पठि
यो. ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकर
वाली, सांपमा, सांपनी, दस्तरी, वही, बुलिया प्रमुख
प्रत्यें पण लाग्यो. थूंक लाग्युं, थूंकें करी अकर मांज्यो.
जशीशें धख्यो. कन्हे उतां आहार ? निहार कीधो, ज्ञा

नञ्ज्य १ नृतां, २ ज्येष्ठा कीधी. ३ प्रज्ञापराधे ४ विणस
तो ५ विणास्यो. विणासतो नवेख्यो. उती शक्तिये सार
संज्ञाव न कीधी. ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष मत्सर चिंतव्यो.
अवज्ञा, आशातना कीधी. कौंशप्रत्ये ज्ञातां, गणतां,
अंतराय कीधी. आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो.
मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, के
वलज्ञान, ए पंचविध ज्ञानतणी ६ असद्वहणा कीधी.
कोइ तोतमो, वोवमो हस्यो, ७ वितकर्या; अन्यथा
प्ररूपणा कीधी ॥ ज्ञानाचारव्रत विपइउ अनेरो जे को
इ अतिचार पद ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संक्रिय निक्कं
खिय, निव्वितिगिन्ना अमूढदिठीअ ॥ नववूहधिरीकर
णे, वड्डलपपजावणे अठ ॥ ३ ॥ देव, गुरु, धर्म तणे
विषे ८ निःशंकपणुं न कीधुं. तथा एकांत निश्चय न की
धो. धर्म संबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी
नहिं. साधु, साधवीनां मल मलिन गात्र देखी दुगं
हा निपजावी. कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर

१ खातां, २ अखाडा. ३ बुद्धिना द्वेष, द्वेष बुद्धिये. ४ नाश,
पामतो. ५ नाश पमाइयो. ६ अध्रहा. ७ खोटो तर्क कर्या. ८
बहेम रहीतपणुं.

अज्ञाव हुन्न. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रज्ञावना देखी
 १ मूढदृष्टिपणुं कीधुं. तथा संघमांहे गुणवंत तणी २ अनु
 पबंहणा कीधी. अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति,
 अज्ञक्ति निपजावी. अबहुमान कीधो. तथा देवड्य,
 गुरुड्य, ज्ञानड्य. साधारण ड्य, ज्ञहित, उपेहि
 त, प्रज्ञापराधें विणाइधुं. विशसतां उवेख्युं. उती श
 क्तियें सार, संज्ञाल न कीधी; तथा ३ साधमिक साधें
 कलह कर्म बंध कीधो. ४ अधोती, अष्टपट मुखकोश
 पारखें देवपूजा कीधी. ५ बिंब प्रत्यें ६ वासकूपी, धूपघाणुं,
 कलशतणो ठवको लाग्यो. बिंब हाथथकी पार्युं.
 ७ बुद्धवास, ८ निःश्वास लाग्यो. देहरे, उपासरे, ९ मलश्ले
 ष्मादिक लोह्युं. देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूह
 ल, आहार, निहार कीधो. पान सोपारी १० निवेदित्रां,
 खाधां, ११ ठवणहारि हाथथकी पाद्री पदिलेहवुं विसार्युं
 जिननुवनें चोराशी आशातना गुरु, गुरुणी प्रत्यें ते

१ सुरखपणुं. सुरखनी पेटे तेमने गुरु मानवा. २ निंदा. ३
 एकज धर्मना, सरखा धर्मवाला. ४ धोया विनाना आठ पडवाला.
 ५ प्रतिमाजी. ६ वासखेपनी दावडी. ७ उंचो श्वास. ८. नीचो
 श्वास. ९ कान जगेरेनो मेल, शलेखम. १० नीवेदनी चीजो. ११
 स्थापनाचार्य.

त्रीश आशातना कीधी होय. गुरु वचन तद्वत्ति क
री २पनिवज्युं बहिं ॥ दर्शनाचार व्रत विषइत अने
रो जे कोइ अति० ॥ ९ ॥

चारित्र्याचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजु
तो, पंचहिं समिइहिं तिहिंगुत्तिहिं ॥ एत चरिचाया
रो, अठविहो होइ नायबो ॥ ४ ॥ इर्यासमिति ते अ
णजोए हिंरुया. ज्ञाप्तासमिति, ते ३सावच्यवचन बोळ्या.
एषणा समिति, ते ४तृण, ५रुगद, अन्न, पाणी असूऊतुं
लीधुं. ६आदानजंमसत्त ७निर्वेवणासमिति, ते अशन, श
यन, उपगरण, मातरुं प्रसुख अणपूंजी जीवाकुल नृ
मिकायें सूक्युं, लीधुं. पारिष्ठापनिकासमिति, ते मल.
सूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजी जीवाकुलनृमिकायें परठ
व्युं. मनोगुप्ति, मनसां आर्त्त, रौड, ध्यान ध्यायां. वच
नगुप्ति, सावच्यवचन बोळ्या. कायगुप्ति, शरीर अणप
निवेहुं हलाव्युं, अणपूंजे वेठा. ए अष्ट प्रवचन माता.
ते साधुतणोधर्मे ८सदैव अने श्रावकतणे धर्मे सामा

१ प्रमाण तेमज २ अंगीकार कर्युं. ३ पापवाळुं. आरंभवाळुं.

४ तरणां. ५ डगळां. ६ मातरुं (पेसाद). ७ मुकडुं. ८ निरंतरब,

हमेशांज.

धिक पोसह लीधे, रूमी परें पाढ्यां नहीं. १खंरणा वि
राधना हुइ॥ चारित्राचार व्रत विषइनुअनेरो जे कोइ.

विशेषतः श्रावकतणे धर्मै श्रीसम्यक्त्वमूल बार
व्रत सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संका कंखविगि
ज्ञाण ॥ संकाः—श्री अरिहंत तणां बल, अतिशय ज्ञान
लक्ष्मी, २गांन्नीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारि
त्रियानां चारित्र, श्री जिनवचन तणो संदेह कीधो.
आकांक्षाः—ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, ३गोगो,
४आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, ५विना
यक, हनुमंत, सुग्रीव, वालीनाह, इत्येवमादिक देश,
नगर, गाम, गोत्र, नगरी, जूजूवा देव देहेरांना प्रजा
व देखी, रोग ६आतंक कष्ट आवे, इह लोक परलोका
र्थे पूज्या; मान्या. सिद्ध, विनायक, ७जीराबलाने मा
न्युं; इन्द्रयुं. बौध सांख्यादिक, संन्यासी, ज्ञरमा, ज्ञग
त, लिंगीया, जोगिया, जोगि, ८दरवेश, ९अनेरा दर्श

-
- १ तोडभांग. २ गंभीरता वीगेरे. ३ सापने उतारवानो देव.
४ अदशाना रक्षक देवता जे दिक्पाल ए नामथी ओलखाय छे.
५ गणपति. ६ मंदवाड, पांडा. ७ जीराबला पार्श्वनाथ. ८ फकीर.
९ बांजा.

नियम तणो कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जा
 एया विना नूढ्या, व्यामोह्या. कुशास्त्र शिख्यां; सांज्ञ
 द्यां. श्राद्ध, संवत्सरी, होली, बलेव, माहिपूनेम, अजा
 परुवो, प्रेत वीज, गौरी त्रीज, विनायक चौथ, नाग
 पांचमी, जिलणा ठी, शील सातमी, ध्रुव आठमी,
 नौली नोमी, अहवा दशमी, व्रत इग्यास्सी, वत्स वा
 रसी, धनतेरसी, अनंत चतुदशी अने अमावास्या, आ
 दित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य कीधां, नवोदकयाग, ज्ञो
 ग, उत्तराणां कीधां, कराव्यां. अनुसोद्यां. पिंगले पाणी
 घाढ्यां, घलाव्यां. घर वाहिर क्षेत्रे, खदे, कूवे, तला
 वे, नदीये, इहे, वावीये, समुडे, कुंमे, पुण्यहेतु स्नान
 कीधां, कराव्यां, अनुसोद्यां, दान दीधां ॥ ग्रहण, श
 निश्वर, माहासासें, नवरात्री नाहाया. अजाणनां आ
 प्यां ॥ अनेराइ व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां ॥ विति
 गिन्नाः—धर्म संबंधीआ फल तणे विषे संदेइ कीधो.
 जिनअरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकारसागर, मो
 क्त मार्गना दातार, इस्या गुण ज्ञणी न मान्या, न पू
 १ नवां जलाशय करतां करेलां होम. २ खाण. ३ सघला
 उपकारना समुद्र.

ज्या. महासती माहात्माना इह लोक, परलोक संबं
धिया जोगवांबित पूजा कीधी. रोग, आतंक, कष्ट आ
वे, खिन्न वचन जोग मान्या. महात्माना ज्ञात, पाणी
मलशोभा तणी निंदा कीधी. कुचारित्रिया देखी चा
रित्रिया उपर कुजाव हुन्न. मिष्टयात्वी तणी पूजा, प्र
जावना देखी प्रशंसा कीधी. प्रीति मांकी. १ दक्षिण
लगें तेहनो धर्म मान्यो; कीधो ॥ श्री सम्यक्त्व व्रत
विषय २ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि
हुवो हुइ ॥ ४ ॥

पेहेले ३ स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अति
चार ॥ वह बंध उदिछेए ॥ ४ छिपद, चतुष्पद प्रत्ये
रीशवशें, गाढो घाव घाडयो. गाढे बंधने बांध्यां. अधिक
ज्जार घाडयो. निर्लाडन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी
वेलायें सार, संजाल न कीधी. लेहणे, देहेणे, किराही
प्रत्ये लंघाव्यो. तेषें चूर्खें आपण जम्या. कन्हें रही
मराव्यो. बंधीखाने घलाव्यो. शड्यां धान्य स्तावके ना
ख्यां. दलाव्यां, जरमाव्यां, शोधी न वावख्यां, इंधण,

गणां, अणशोध्यां, वाढ्यां. ते मांहे साप, विंठी, ख
जूरा, सरवलां, मांकरु, जूआ, गिंगोसा, साहतां मुआ.
डुहव्या. रूमे स्त्रानके न मूक्या. कीनी, मंकोनीनां इं
मां विठोह्यां. लीख, फोदी. उदेही, कीनी, मंकोनी,
धीमेल, कातरां, चुमेल, पतंगिया, देरुकां, अलसीयां,
इअल, कुंता, रुंस, सला, वगतारा, मांखी, तीरु प्र
मुख जीव १ विणठ्या. माला हलावतां, चलावतां, पं
खी, चरुकलां तथा काम तसां इंसां फोसयां, अनेरा
एकेंडियादिक जीव विणार्या, चांप्या, डुहव्या. कांड
हलावतां, चलावतां, पासी ठांटतां, अनेरा कांड काम
काज करतां २ निर्दयपणुं कीधुं. जीवरुता रूमी न की
धी. संखारो गूकव्यो. रूमुं गलणुं न कीधुं. अणगल पा
सी वावरथुं. रूमी जयणा न कीधी. अणगल पासीयें
जीडया, लूगनां धोयां. खाटदा लावने नाख्या. जाट
क्या. ३ जीवाकूलचूमि लींपी. वादी गार राखी. दल
णे, खांरुणे, लींपणे, रूमी जयणा न कीधी. आवम
चउदशना नियम चांग्या. धूली करावी ॥ पेहेले स्थू
लप्राणातिरात विरमणव्रत विपडुं अनेरो जे कोड अ

तिचार पक्ष दिवस मांहे सूक्तमण ॥ ५ ॥

बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रते पांच अतिचार ॥ सहस्सा रहस्सदारेण ॥ सहसात्कारे कुणही प्रत्ये अजुगतुं आल, अज्याख्यान दीधुं. १स्वदारामंत्रने द कीधो. अनेरा कुणहीनो मंत्र २आलोच, मर्म प्रकाशयो. कुणहीने अनर्थमां पारुवा कूनी बुद्धि दीधी. कूनी लेख लखाव्यो. कूनी साख जरी. थापणमोसो कीधो. कन्या, ३गौ, जूमि संबंधी लेहेणें, देहेणें, व्यवसाय वाद वढवारु करतां मोटकुं जूतुं बोड्या. हाथ, पग तणी गाल दीधी. करुकरा मोरुया. मर्म वचन बोड्यां ॥ बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइळ अनेण

त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रते पांच अतिचार ॥ तेना हरुप्पण्णेण ॥ घर, बाहिर, खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी, वावरी. चोराइ वस्तु वोहोरी. चोर धारु प्रत्ये संकेत कीधो. तेने ४संबल दीधुं. तेहनी वस्तु लीधी. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो. नवा, ५पूराणा सरस, विरस, सजीव, निर्जी

१ पोतानी खीनी छानी वात कही दीधी. २ विचार. ३ गाय.

४ भातु. ५ जुना.

व वस्तुना ज्ञेय संज्ञेय कीधा. कूमे काटले, तोले, मा
ने, मापें, बोहोख्यां. दाण चोरी कीधी, कुणहीने ले
खे वरांस्यो, साटे लांच लीधी. कूमो करहो काढ्यो
विश्वासघात कीधो. परवंचना कीधी; ४पासंग कू
मा कीधा. मांमी चढावी. लहके, त्रहके, कूमां काट
लां, मानमापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, कलत्र वंची
कोझे दीधुं. जूदी गांठ कीधी. आपण डलवी. कुण
हीने लेखे पलेखे जोळव्युं. पनी वस्तु डलवी लीधी ॥
त्रीजे स्थूल अदत्तादान वि० ॥ ७ ॥

चोथे स्वदारासंतोप परस्त्रीगमन विरमणव्रतें पां
च अतिचार ॥ अपरिगृहीतागमन ॥ अपरिगृहीताग
मन ॥ इत्वर परिगृहीतागमन कीधुं. विधवा, वेद्या,
परस्त्री, कुलांगना स्वदाराशोकतणे विपे दृष्टिविपर्यास
कीधो. सराग वचन बोळयां. आठम चउदश, अनेरायें
पर्दतिथें नियम जांग्या. घर घरेणां कीधां. कराव्यां.
वर वहु वखाण्यां. कुविकल्प चिंतव्यो. ५अनंग क्रीमा
कीधी. स्त्रीनां अंगोपांग निरह्यां. पराया विवाह जो

१ हिंसावमां हेतयो. २ करज, देयुं. ३ बीजाने टगडुं. ४
धडो ५ कामक्रोडा.

मया. ढिंगला, ढिंगली परणाव्यां. कामन्नोगतणे विषे तीव्र अजिलाख कीधो. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार सुहणे स्वप्नांतरे हुवा. कुस्वप्न लाघां. नट, विट, स्त्रीसुं हांसुं कीधुं ॥ चोया स्वदारासंतोषत्र त विषइलु अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष ॥ ८ ॥

पांचमे स्थूलपरिग्रह परिमाणत्रते पांच अतिचार ॥ धणधन्न खित्तवहुण ॥ धन, धान्य, खेअ, स्वास्तु, ३रुप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुःपद, नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी, मूर्छा लगे संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्री तणे लेखे कीधो. परिग्रह परिमाण लीधुं नही. लेइने पढीअं नहिं. पढवुं विसारयुं. अलीधुं मेळयुं. नियम विसास्वा ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणत्रत विषइलु अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष ॥ ९ ॥

ठठे दिक्परिमाणत्रते पांच अतिचार ॥ गमण स्तय परिमाणेण ॥ उर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशि ये जावा, आववा तणा नियम लइ ज्ञांग्या. अनाज्ञो

गे विस्मृत लगे अधिक झूमि गया. पाठवणी आ
 धी पाठो मोकली. बहाण व्यवसाय कीधो. वर्षाकाले
 गामतरुं कीधुं. झूमिका एक गमां संक्षेपी. बीजी
 गमां बधारी ॥ ठठे दिग्परिष्ठाणव्रत विषइनु अनेरो
 जे कोइ अति ॥ १० ॥

सातमे जोगोपजोग विरमणव्रते जोजन आश्री
 पांच अतिचार अने कर्म हुंती पंढर, एवं बीश अति
 चार ॥ सच्चित्ते पद्विब्रहेण ॥ सच्चित्त नियम लीधे अदि
 क सच्चित्त लीधुं. ३अपक्वाहार, ४दुःपक्वाहार, ५तु
 ह्योषधि तणुं जक्षण कीधुं. उदा, उंबी, पोंक, पापनी,
 कीधां ॥ सच्चित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वड कुलुमे
 सु ॥ वाहण सयण विलेवण, वंज दिली न्हाण जने
 सु ॥ ए चौद नियम दिनगत रात्रिगत लीधा नहीं. ले
 इने ज्ञांग्या. बाबीश अजदय, वत्रीश अनंतकायमां
 हि आहुं, मूदा, गाजर, पिंरु, पिंरालु, कचूरो, सूरण,
 कुली आंवली, गलो तथा वाघरसां, खाधां. वाशी क

१ ज्यां सुधी भूल्यो त्यां सुधी. २ ओछी करी. ३ काचुं स-
 धवा नहीं चडेलुं. ४ काचुं पाहुं. ५ खावाहुं थोइं तथा नांसी
 देवानुं घणुं जेवां के वार शेरडो वगेरे.

गोल, पोली, रोटली, त्रण दिवसनं उदन लीधुं. म
 धु, महुनां, माखण, माटी, वेंगण, पीचु, पंपोटा, वि
 ष, हिम, करहा, घोलवनां, अजाण्यां फल, टिंबरु,
 गुदां, महोर, अथाणुं, आमण बोर, काचुं मीठुं, तिल,
 खसखस तथा कोठिंबनां खाधां. रात्रिभोजन कीधां.
 लगजग वेलायें वालु कीधुं. दिवस विण जगे शीराव्य,
 तथा कर्मतः पन्नर कर्मादान ॥ इंगालकम्मे, वणकम्मे,
 सामीकम्मे, ज्ञामीकम्मे, फोमीकम्मे, ए पांच कर्म ॥
 दंतवाणिजे, लस्कवाणिजे, रसवाणिजे, केसवाणिजे, वि
 सवाणिजे ए पांच वाणिज्ज ॥ जतंपिह्वणकम्मे, निह्वं
 ढणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरहहतलायसोसणया,
 असइपोसणया, ए पांच सामान्य, ए पांच कर्म, पांच
 वाणिज्ज, पांच सामान्य, एवं पन्नर कर्मादान, बहु सावद्य
 महारंज, रांगणी, लीहाला कराव्या. इंट, निंजामा प
 चाव्या. धाणी चणा, पकवान करी वेच्यां. वाशी माखण
 तपाव्यां. तिल वोहोख्या. फागुण मास उपरांत राख्या.
 दलीदो कीधो. अंगीठा कराव्या. श्वान, बीलामां, शूना.
 सालहि, रेपोश्या. अनेरा जे कांइ बहु सावद्य खरकर्मा

दिक समाचर्यां. वाशी गार राखी. लींपणे, घूपणें, म
 हारंज कीधो. अणशोध्या चूला संधूक्या. घी, तेल, गो
 ल तथा ठाश तणां ज्ञाजन उघासां मूक्यां. ते मांदि
 माखी, कुंती, नंदर, के गिरोली पनी. कीनी चनी. ते
 नी जयणा न कीधी ॥ सातमे जोगोपजोग विरमण
 व्रत विषइनु ॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंन विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥
 कंदप्पे कुक्कुइण ॥ कंदर्पलगे विटचेष्टा, हास्य, खेल,
 कुतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हाव, ज्ञाव, रूप, उंगार,
 विषयरस वखाण्या. राजकथा, ज्ञत्तकथा, देशकथा,
 स्त्रीकथा कीधी. पराइ तांत कीधी. तथा पैशूःयपणुं
 कीधुं. आर्त्त रौइ ध्यान ध्यायां. खांसां, कटार, कोश,
 कूहासा, रथ, उखल, मूहाल, अग्नि, घंटी, निसाह,
 दातरसां प्रमुख १अधिकरण सेली, दाहिण लगे मा
 ग्यां आप्यां. पापोपदेश दीधी. अष्टमी, चतुर्दशीए खां
 रुवा, दलवा तणा नियम ज्ञांग्या. मूरखपणालगे अ
 संबंध वाक्य वोळ्या. प्रमादाचरण सेव्यां. २अंधोले.
 नाहाणे, दातणे, पगघोअणे, खेलपाणी तेल ठांट्यां.

जोलणे जील्या. जूवटे रम्या. हिंचोले हिंच्या. नाट
 क प्रेक्षणाक जोयां. कण, कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां. क
 केश वचन बोळ्या. आक्रीश कीधा. अवोला लीधा.
 करकना मोरुया. मत्सर धर्यो. संज्ञेना लगाव्या. श
 राप दीधा. जेंसा, सांढ, डुरु, कूकना, श्वानादिक जू
 जास्थां; जूजतां जोया. खादि लगे अदेखाइ चिंतवी.
 माटी, मीतुं, कण, कपाशिया काज विस चांप्या. ते
 उपर बेग. आली वनस्पति खूंदी. सूइ शस्त्रादिक
 निषजाव्यां, घणी निडा कीधी. राग, द्वेष लगे एकने
 ऋद्धि परिवार वांठी. एकने मृत्यु हानि वांठी ॥ एआ
 ठमे अनर्थदंभ विरमणव्रत विषइलु अने ॥ १२ ॥

नवमे सामायिक व्रते पांच अतिचार ॥ तिविहे
 दुष्पणिहाणे ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट दोहट्ट
 चिंतव्युं. सावद्य वचन बोळ्या. शरीर अणपमिलेहुं
 हलाव्युं. उती वेलायें इत्थमायिक न लीधो. सामायिक
 लेइ लघामे मुखे बेहना. नंध आवी. वात. विकथा,
 घर तणी चिंता कीधी. वीज दीवा तणी नजेहि हुइ.
 कण, कपाशिया, माटी, मीतुं, खनी, धावनी, अरणे

टो प्राणायाम प्रमुख चांप्या. पाणी, नील, फूल, सेवाल
हरिकाय, वीयकाय, इत्यादिक आज्ञाक्यां. स्त्री, तिर्यं
च तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ. सुहृत्पत्नीयो संघ
द्वी. सामायिक अणुपूज्युं पारयुं, पारयुं विसारयुं ॥ न
वमे सामायिकव्रत विषडलु अनेरो जे कोइ अतिचार
पक्ष दिवस ॥ १३ ॥

दशमे देशावगाशिकव्रते पांच अतिचार ॥ आण
वणे पेशवणे ॥ आणवणप्पलुगे, पेशवणप्पलुगे, तदा
णुवाइ, रुवाणुवाइ, वहिया पुग्गल पस्केवे ॥ नियमित
जूमिकामांहि वाहेरथी कांइ अणुव्युं, आपण कन्देश
की वाहेर कांइ भोकळ्युं, अथवा रूप देखाणी, कांइरो
नाखी, साइ करी, आपणपणुं ठतुं जणुव्युं ॥ दशमे
देशावगाशिक व्रतविषडलु अनेरो जे कोइ अति ॥ १४ ॥

अग्वारमे पोषधोपवासव्रते पांच अतिचार ॥ सं
थारुञ्चारुविहि ॥ अप्पमिलेहिय, उप्पमिलेहिय, सथा
संथारण ॥ अप्पमिलेहिय, उप्पमिलेहिय, उच्चार पास
वणजूमि ॥ पोसह लीधे संथारातणी जूमि न पूंजी.
वाहिरलां लहुमां, वमां स्थंमिल, दिवसे, शोव्यां नदीं.
पमिलेह्यां नहीं. मातरुं अणुपूज्युं हदाव्युं. अणुपूंजी

जूमिकाय परठव्युं. परठवतां अणुजाणह जस्सग्गो,
 न कह्यो. परठव्या पूंठे वार त्रण वोसिरे वोसिरे न क
 ह्यो. पोसइसालामांहि पेसतां निसहि, निसरतां आव
 सहि, वार त्रण जणी नहीं. पुढवी, अप्प, तेउ, वान,
 वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट, परिताप उपड्व हुआ
 संथारा पोरिसीतणो विधि जणवो विसाख्यो. पोरिसि
 मांहे उंघ्या. अविधे संथारो पाथरयुं. पारणादिक त
 णी चिंता कीधी. कालवेलायें देव न वांद्या. पन्निक्कम
 णुं न कीधुं. पोसइ असूरो लीधो. सवेरो पाढ्यो. पर्व
 तिथें पोसइ लीधो नहीं ॥ इग्यारमें पोषधोपवासव्रत
 विषइल अनेरो जे कोइ अतिचार पकण ॥ १५ ॥

बारमे अतिधिसंविज्जागव्रतें पांच अतिचार ॥ स
 चित्ते निस्किवणेण ॥ सचित्त वस्तु हेठे उपर ठतां म
 हात्मा महासती प्रत्ये असूजतुं दान दीधुं. देवानी बुद्धे
 असूजतुं फेनी सूजतुं कीधुं. देवानी बुद्धे परायुं फेनी
 आपणुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धे सूजतुं फेनी असूजतुं
 कीधुं. अणदेवानी बुद्धे आपणुं फेनी परायुं कीधुं. वो
 होरवा वेला टली रह्यां. असूरें करी महात्मा तेरुया.
 मत्सर धरी दान दीधुं. गुणवंत आवे जक्ति न साचवी

(३८५)

ठती शक्तें स्वाभिवात्सल्य न कीधुं. अनेराइ धर्मक्षेत्र
सीदातां ठती शक्तिथें उदर्या नहि. २दीन, ३की
ए प्रत्यें अनुकंपादान न दीधुं ॥ वारमेअतिशिसंविज्ञा
गत्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक दिवसमां
हि हुवो हुइ ॥ १६ ॥

संलेशणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलो
ए ॥ इहलोया संसप्पजुगे, परलोगासंसप्पजुगे, जीवि
या संसप्पजुगे, मरणा संसप्पजुगे, कामजोगा संसप्प
जुगे ॥ इहलोकें धर्मना प्रज्ञाव लगे राजऋषि, सुख,
सौजाग्य, परिवार, वांठयो. परलोकें देव, देवइ, विद्या
धर, चक्रवर्ती तणी पदवी वांठी. सुख आवे जीवित
व्य वांठ्युं. दुःख आवे मरण वांठ्युं. कामजोगतणी
वांठा कीधी. संलेशणात्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अति
चार पक दिवस मांहि हुवो हुइ ॥ १७ ॥

तपाचारना वार जेद; ठ वाह्य, ठ अन्तर ॥ अ
णसणमणोयसिआण ॥ अणसण जणी उपवास विशेष
प पर्वतिथें ठती शक्तें कीधो नहीं. उणोदरी व्रत को

लिया पांच, सात, उणा रहा नहिं. वृत्तिसंक्षेप, ते इ
 व्य ज्ञानी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहिं. रसत्याग
 तथा विगय त्याग न कीधो. कायक्लेश, लोचादिक
 कष्ट कस्यां नहीं. संलीनता ते अंगोपांग संकोचि रा
 ख्यां नहिं, पञ्चस्काण ज्ञाग्यां. पाटलो रुगतो फेरुचो^१
 नहिं. गंठसी पोरिसी, साठ पोरिसी, पुरिमद्ध, एका
 सणुं, बेआसणुं, नीवि, आंबिल प्रमुख पञ्चस्काण पा
 रबुं विसारचुं. बेसतां नोकार न ज्ञायो उठतां पञ्च
 स्काण करबुं विसारचुं, गंठसीनं ज्ञाग्युं. नीवि, आंबि
 ल, उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं. वमन
 हुन ॥ बाह्यतप विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार प
 ढ दिवस मांहे ॥ १८ ॥

अत्र्यंतर तप ॥ पायञ्चित्तं विणन ॥ मनशुद्धे
 गुरुकन्हें आलोयणा लीधी नहिं. गुरुदत्त^२ प्रायश्चित्त
 तप, लेखाशुद्धे पहुंचाम्युं नहिं. देव, गुरु, संघ, साह
 मी प्रत्ये विनय साचव्यो नहिं. बाल, वृद्ध, ग्लान, त
 पस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च न कीधुं. वांचना, स्पृहना,

१परावर्तना, २अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पंचविध स्वा
ध्याय न कीधो. धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्यायां. आ
र्त्तध्यान तथा रौद्रध्यान ध्यायां. कर्मक्षय निमित्तं लो
गस्स दश वीशनो कालस्सग्ग न कीधो॥अन्यंतरतप
विषइत्त अनेरो जे कोइ अतिचार पक्क दिवसमांण॥१९॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणिगूहिअ वल
विरिनुं ॥ पठवे, गणवे, विनय, वैयावच्च, देवपूजा,
सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, ज्ञावनादिक ध
र्मकृत्यने विषे मन, वचन, काया तणुं ठतुं वल, वीर्य,
३गोपव्युं. रूमां पंचांग खआत्मण न दीधां. वांदणात
णा आवर्त्त विधि साचव्या नदिं. अन्यचित्त निरादरपणे
वेठा. नतावलुं देववंदन, पत्तिकमणुं कीधुं ॥ वीर्याचा
र विषइत्त अनेरो जे कोइ अतिचार पक्क दिवसमां दे
हुवो होय ते सण ॥ २० ॥

नाणाइ अठ पइवय, समसंलेइण पत्तर कम्मं
सु ॥ वारस तव विरिअ तिगं, चनवीसं सय अइयारा
॥ १ ॥ पत्तिशिद्धाणंकरणं:-प्रतिपेय, अत्तदप, अनंत

काय, बहुबीज प्रकृष्ट, महारंज परिग्रहादिक कीधा. जीवा जीवादिक सूक्ष्म विचार संसर्द्ध्या नहिं. आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररुपणा कीधी. तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह अत्र्याख्यान, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, माया मृषावाद, मिथ्यात्व शल्य, ए अठार पापस्थानक कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय. दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावञ्चन कीधां. अनेरुं जे कांइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय. ए चिहुं प्रकार मांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुज होय, ते सवि हुं मनै, वचनें, कायार्ये करी तस्स मिन्नामि डुकुमं ॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्री समकितमूल वारव्रत, एक शो चोवीश अतिचार मांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां, हुज होय, ते सवि हुं मनै, वचनें, कायार्ये

(३७ए)

करी तस्स मिञ्चामि डुक्कं ॥ इतिश्री श्रावक परकी
चनमासी संवत्सरि अतिचाराः ॥

अथश्री पाह्लिकादि श्रावकना अतिचार.

नालंमि दंसलंमिय ॥ चरणंसि तवंमि तहय वि
रियंमि ॥ आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा ज्ञणि
नु ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपा
चार, विर्याचार, ए पंचविध आचार मांहि अनेरो जे
को अतिचार पक्क दिवसमांहि सूद्धम वादर जाणतां
अजाणतां हुन होय ते सविहं मन वचन कायाए करी
मिञ्चामि डुक्कं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणए
बहुमाणे ॥ उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अन्न त
उत्तये ॥ अठविहो नाण सायारो ॥ २ ॥ ज्ञान काल वे
लाये ज्ञणयो गुणयो ॥ विनयहीन, बहु मानहीन, योग
उपधानहीन ॥ अनेरा कन्हे ज्ञणी अनेरो गुरु कह्यो ॥
देववंदन वांदणे पम्पिकमणे सप्राय करतां ज्ञणतां गु
णतां कूमो अहर काना मात्रे आगदो उठो ज्ञणयो
सूत्र अर्थ विहु कुमां कहां ॥ साधु तणे धम्म काजो मां

(३९०)

नो अणपमिलेह्यो, काजो अण उधरे, १असजाइ, २अ
णोजा मांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत जणयो गु
णयो ॥ श्रावकतणे धर्मे शिविरावली, पम्किमणासूत्र,
उपदेशमाला प्रमुख, कालवेला काजो अणउधरिये प
ढियो ॥ ज्ञानउच्य ज्ञहित उपेक्षित प्रज्ञापराध विणा
सियो, विणसतां नवेखीयो, सार संज्ञाल न कीधी ॥
तथा ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नो
कारवाली, सांपना, सांपनी, दस्तरी वही, उलीया
प्रत्ये पग लाग्यो शुंक लाग्यो शुंके करी अकर मांज्यो,
कन्हे उतां आहार नीहार कीधी ॥ ज्ञानवंत प्रत्ये छेप
मस्तर अंतराय अवज्ञा कीधी ॥ आपणा जाणवा त
णो गर्व चिंतव्यो ॥ ज्ञानाचारव्रत विषइल अनेरो जे

१ असज्ञाइना दीनः— कारतक शुदी १४ ना मध्यानथी कारतक
वदी २ ना सवार सुधी दीवस २॥, फागण शुदी १४ ना मध्या
नथी फागण वदी २ ना सवार सुधी दिवस २॥ असाड शुद १४
ना मध्यानथी असाड वदी २ ना सवार सुदी दिवस २॥, चइतर
शुदी ५ ना मध्यानथी चइतर वदी २ ना सवार पर्यंत १२॥ दि
वस, आसो शुदी ५ ना मध्यानथी आसो वदी २ ना सवार सुधी
१२॥ दिवस, आसो शुदी १० थी सांडीने आदरा न देते त्यां सुधी
मां चरसादना छांटा थाय तो असज्ञाइ. जे दीवसे छांटा थाय ते
दिवस असज्ञाइ. २ जे गाममां जे दिवसो अणोजाना गणाता होय
अणोजा.

को अतिचार पक्ष ॥ ? ॥

दंडसणाचार आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कं
 खिय, निव्वितिगिन्ना अमूढ दिठ्ठिअ ॥ उववूह थिरीकर
 णे, वञ्जलप्पजावणे अठ ॥ ३ ॥ देवगुरु धर्मतणे विषे
 निःशंकपणुं न कीधुं ॥ धर्म संबंधिया फल तणे विषे
 निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं ॥ तपोधन तपोधनी प्रत्ये
 मल मलीन गात्र देखी दुगंठा कीधी ॥ मिश्यात्वी
 तणी पूजा प्रजावना देखी मूढ दृष्टिपणुं कीधुं ॥ तथा
 संघमांदि गुणवंत तणी अनूपवृहणा कीधी ॥ अस्त्रि
 रीकरण, अवाठलय, अप्रीति, अजक्ति कीधी ॥ तथा
 देवइव्य, गुरुइव्य, साधारण इव्य, ज्ञहित उपेहित
 प्रज्ञापराध विणास्यो, विणसतां उवेखयो, ठती शक्तिये
 सार संजाल न कीधी ॥ तथा साधर्मीकस्युं कलह
 कर्मबंध कीधो ॥ अधोती अष्टपट मुखकोश पाखे देव
 पूजा कीधी, वासकूपी, धूपघाणुं, कलश तणो ठवको
 लाग्यो, देहरा पोसालमांदि मलश्लेष्म दुह्यां हास्य,
 केली, कूतुहल कीधां, जिनज्जुवने चोरासी आसातना ॥
 गुरु प्रत्ये तेत्रीस आसातना ॥ ठवणहारी द्वाअशकुं प
 रुथुं, पणिलेहवो विस्तार्यो ॥ गुरु वचन तद्वत्ति करी प

निवर्ज्युं नहीं ॥ दंडनाचारव्रत विषइलु अनेरो जे को
इ अतिचार पहण ॥ २ ॥

चारित्राचार आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोग
जुतो ॥ पंचहिं समिइहिं तिहिंगुत्तीहिं ॥ एस चरित्ता
यारो ॥ अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥ इर्या सुमति,
जाषा सुमति, एषणा सुमति, आदानजांरुनिखेवणा
सुमति, पारीठावणिका सुमति ॥ मनोगुप्ति, वचन
गुप्ति, कायगुप्ति ॥ ए अष्टप्रवचन माता तणे धर्मे स
दैव साधु, श्रावकतणे धर्मे सामायक पोसह लीधे, रू
मीपेरे चिंतव्युं नहीं, खंरुण विराधना कीधी ॥ चारि
त्राचारव्रत विषइलु ॥ अनेरो जे को अतिचार पहण ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे ॥ सम्यक्त्व मूल वार
व्रत ॥ सम्यक्त्वतणा पांच अतिचार ॥ संका कंख

१ समकितना अतिचार तो कहेवाय के पोताना देव गुरु
धर्मनी पक्की आस्ता छतां कोइ देवी देवलांनी मानता पूजना बगरे
करे छे तेने अतिचार कहे छे.

चार व्रतोमां पोतानुं व्रत जालवतां छतां एण व्रत राखघानी
बुद्धिए जे कोइ व्रतमां दुषण लगाववा जेवुं दोष सेवे छे तेने अ-
तिचार कहेवाय छे. तेम जो न होय तो अनाचार थइ जाय. ए
विषे अर्थदीपिकामां जावुं.

(३९३)

विगिन्ना ॥ संका श्रीअरिहंत तणा वल अतिशय ॥ झा
नलक्ष्मी गंजीर्यादिक गुण शाश्वति प्रतिमा चारित्री
यानां चारित्र, जिन वचन तणो संदेह कीधो ॥ आ
कांका बह्मा, विष्णुं, महेश्वर क्षेत्रपाल, योगो, आसपा
ल, पादरदेवती, गोत्रदेवती, देव देहेरांनो प्रजाव दे
खी रोग आवे इहलोक परलोकार्थे पूज्या, मान्या, बोद्ध
सांख्य, संन्यासी, ज्ञरमा, जगत, लिंगिया, योगी, द
रवेश, अनेराइ दर्शनीयानो कष्ट संत्र चमत्कार देखी
परमार्थ जाणया विण जूड्या, व्यामोह्या, कुशास्त्रशी
ख्या, सांजड्यां श्राद्ध, संवत्तरी, होली, वलेव, माहि
पूनेम, अजापरुवे, प्रेतवीज, गुरित्रीज, विनायकचोथ,
नागपंचमी, जीलणाठठी, शीयलसातमी, डोआठमी,
नोलीनुमी, अहवादशमी, व्रतइग्यारसी, बहवारसी,
धनतेरसी, अनंतचौदशी, अमावास्या, आदितवार, न
तरायन, नैवेद, याग, जोग मान्या, पींपले णाली रे
रुचां रेखाव्यां, घर बाहिर, कूइ, तलाव, नदी, इह, कुं
रु, वाव्य, समुद्र पुन्यहेतु स्नान कीधां, वितिगिन्ना
धर्म संबंधिया फल तणो संदेह कीधो, जिन अरिहंत
धर्मना आगार विश्वोपकार सागर मोक्षमार्गना दातार

इस्यागुण ज्ञानी पूज्या नहीं, इहलोक परलोक संबंधि
या जोगवांछित पूजा कीधी. रोग आतंक कष्ट आवे
खीण वचन याग मान्या, महात्माना ज्ञातपाणी मल
शोभा तणी निया कीधी, प्रीति मांसी, तेहनी बाहि
ण लगे तेहनो धर्म मान्यो, श्री सम्यक्त्व व्रत विषइ
उ अनेरो जे कोइ अतिचार पकू ॥ ४ ॥

पहेले थूलप्राणातिपात विरमणव्रत पांचअतिचा
र ॥ वहबंध ठविहेए ॥ छीपद चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे
गाढो घाय घाट्यो, गाढि बंधण बांध्युं, घणे ज्ञारे पी
र्युं, निह्लंबण कर्म कीधुं. चारे पाणी तणी वेलाये
सार संज्ञाल न कीधी, लेहणे देणे कुणहने लढ्युं, लं
घाव्युं, तेने जूखे आपण जम्या, सढ्यां धान रूमी पेरे
जोयां नहीं, पाणी गलतां ढोढ्युं. जीवाणी सूकव्युं. ग
लतां जालक नांखी. गलणुं रूकुं न कीधुं. इंधण ठाणां
अणशोध्यं बाढ्यां. ते मांही साप, खजुरा, वींठि सरो
ला, मांकरण, जुआ, गींगोला, साहतां मुआ दूहव्या.
रूमे स्थानके ना भूक्या. कीमी मंकोमी उदेही, धीमे
ल, कातरा, चुकेल, पतंगीआ, देरुकां, अलसियां, इअ
ल, प्रमुख, जे कोइ जीव विणगा, विणसतां उवेख्या,

(३९५)

चांप्या. बूहव्या, इलावतां चलावतां पाणी ठांटतां अ
नेराइ कामकाज करतां निध्वंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा
रूमी न कीधी पहेले शूलप्राणातिपात व्रत विपइउ अ
नेरो जे कोइ अतिचार पकण ॥ ५ ॥

बीजे शूलमृषावाद विरमणव्रत ॥ पांच अतिचा
र ॥ सहस्सा रहस्सदारे ॥ सहसात्कारे कुणह प्रत्ये
अयुक्त आल दीधुं, स्वदारामंत्र जेद कीधो. अनेरा कु
णहनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, कुणहने अपाय पा
रुवा कुमी बुद्धि धरी, कूमो लेख लखयो, जूठी साख
जरी, थांपण मोसो कीधो, कन्या ढोर जूमि संबंधि
या लेहणे देहणे वाद वढवारु करतां मोटकुं जूठुं वो
ढ्या. बीजे शूल मृषावाद व्रत विपइउ अनेरो जे
कोइ अतिचार पकण ॥ ६ ॥

त्रीजे शूल अदत्तादान विरमणव्रत पांच अतिचा
र ॥ तेनाहरुप्पनुगे ॥ घर, बाहिर, खेत्रखले, परायु
अण मोकळ्युं लीधुं वावर्युं, चोरान वस्तु लीधी. चोर
प्रत्ये संबल दीधां. विरुद्ध राज्यादिक कर्म कीधुं. कूमां
मान मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र

(३९६)

वंची कुणहने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. नवां जूनां सरस नीरस वस्तुतणुं ज़ेल संज़ेल कीधुं. त्रीजे अदत्ता दान व्रत विषइल अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़ण॥७॥

चोथे स्वदारा संतोष परस्त्री विरमणव्रत पांच अतिचार ॥ अपरिग्रहिया इत्तर ॥ अपरगृहिता गमन कीधुं ॥ अनंग क्रीडा कीधी, वीवाह कारण कीधुं, कामजोग तणे विषे अति अजिलाष कीधो, दृष्टि विपर्यास कीधो, आठिम चन्द्रसी तणा नेम लेइ जाग्यां ॥ अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे सुपनांतरे हुआ. चोथे मैथुन विरमणव्रत विषइल अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़ण ॥ ८ ॥

पांचमे शूल परिग्रह परिमाणव्रत पांच अतिचार ॥ धण धन्न खेतवहू ॥ धण धन्ननुं परिमाण उपरुं रखाव्युं ॥ सोनुं, रुपुं नव वीध परिग्रह प्रमाण लीधुं नहीं, पढवुं विस्मारयुं. पांचमे परिग्रह परिमाणव्रतं विषइल अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़ण ॥ ९ ॥

ठेठे दिग्द्विरमणव्रत पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे ॥ उहदिशे, अहोदिशे, तिर्यग्दिशे, जावा आववा तणा नेम लेइ जाग्या. एकदिशी संकेपी वी

जी दिशी वधारी. विस्मृत लगे अधिक जूमि गया.
पाठवंगी आधी मोकली. वहाण व्यवसाय कीधुं, व
र्गकाले गामतरुं कीधुं ॥ ठेठे दिगूविरमएव्रत विपइउ
अनेरो जे कोइ अतिचार पकू ॥ १० ॥

सातमे जोगोपजोगव्रत पांचअतिचार ॥ सचित्ते
पनिवडे ॥ सचित्त आहारे ॥ सचित्त प्रतिवडे आहारे ॥
अप्पोलसहि ज्ञरक्षणया, दुप्पोलसहि ज्ञरक्षणया, तुच्चोल
हि ज्ञरक्षणया, सचित्त ज्ञरक्षणया ॥ अपक आहारे, इपक
आहारे, तुच्चउपधी, कुली, आंवली, उला, उंवी, पुहुंक,
पापनी तणां ज्ञरक्षण कीधां. अनंतकाय, अश्राणां तणां
ज्ञरक्षण कीधां, तथा रींगण, वींगण, पीलू, पीनू, पंपो
टा, महुकां, वरुवोर प्रमुख बहुवीज तणां ज्ञरक्षण की
धां ॥ गाथा ॥ सचित्त दद्विगइ, वाहण तंवोलवउ कु
सुमेसु ॥ वाणही सयण विलेवण, वंजदिसि नाण ज्ञ
तेसु ॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनप्रती लीधा नहीं, लेइ सं
खेप्या नहीं ॥ सचित्त, इव्य विगय, खासम, वाहण, तं
वोल, फोफल, वेसण, सयन, पाली, अंधोलणि, फल,
फूल, ज्ञोजन, आठादनि जे कोइ नेम लेइ ज्ञाग्यां ॥

(३९८)

बावीस अन्नक, बत्रीस अनंतकायमांहि आडुं, मूला,
गाजर, पिंरु, पिंरालू, कचूरो, सूरण, खीलोकां, मो
रनी, सेलरां, कुंली, आंबली, वाघरमां, गीरमर, नी
लीगलो, वाडहोल खाधी, वासी कठोल, पोली रोटली,
त्रण दिवसना नुदन, मधु, महुमां, विस, हेम, करहा,
घोलवमां, अजाण्यां फल, टींबरुं, गुदां, बोर, अघ्राणुं,
काचुमीतुं, तील, खसखस, कोठंबमां खाधां, लगजग
वेलाये वालू कीधां, दिन जग्या विण सिराव्यां, जे को
इ अनेरो अतिचार हुळ होय ॥ तथा कर्मतः ॥ इंगा
लकम्मे, वन्नकम्मे, सामीकम्मे, ज्ञामीकम्मे, फोमीक
म्मे, ए पंचकर्म ॥ दंतवाणिज्य, लस्कवाणिज्य, रसवा
णिज्य, विषवाणिज्य, केसवाणिज्य, ए पांच वाणि
ज्य ॥ जंतपिद्धणकम्मे, निद्धंठणकम्मे, दवग्गिदावण
या, सरदह तलाय सोसणया, असइपोसणया, ए पां
च सामान्य ॥ ए पंनर कर्मादान मांहि कीधां करा
व्यां अनुसोद्यां, अनेराइ कांइ सावद्य कर्म समाचख्यां
होय ॥ सातमे जोगोपजोगव्रत विषइळ अनेरो जे कोइ
अतिचार पकू ॥ ११ ॥

आठमे अनर्धदंरु व्रत पांच अतिचार ॥ कंदप्पे

(३९९)

कुक्कुड़ ॥ अनर्थदंभ जे कहीए, कांसकाज पाखे मु
हीयां पाप लाग्यां, मुखहास्यखेल, कुतुहल, अंगकुचे
काष्टा कीधी. निरर्थक लोकने करसण गानां वाही
गामांतरे कमावानी बुद्धि दीधी. कणवस्तु, ढोर लेव
राव्यां अनेराइ पापोपदशे दीधा. कोसि, कुहासा, रथ
उखल, मुशल, घर, घंटी, प्रमुख सज्ज करी मेढ्यां,
माग्यां आप्यां. अंधोल, नाहणे, पग धोयण, खाले
पाणी ढोढ्यां. अथवा ज्जीलणांज्जीढ्यां, जूवहुं रज्या,
नाटिक पेखणां जोयां. पुरुष स्त्रीना रूप शृंगार वखा
एया, राजकथा, देशकथा, ज्ञक्तकथा, स्त्रीकथा पराइ
तात कीधी. कर्कस वचन वोढ्या, संज्ञेना लगाम्या.
सरज, कुकना प्रमुख जुज्जतां जोया, कलह करतां
जोया, लोकतणी उपार्जना कीधी, सुख कीर्ति देश
लेइ चिंतवी. लुण, पाणी, माटी, कण, कपासिया
काजविण चांप्यां, ते उपर वेठा, आदि वनस्पति
चुंटी अंगीठा काष्ट वणिज्ज कीधा. वास, पाणी, घी,
तेल, गोल, आम्ल, वेतल, वेरंजा तणां ज्ञाजन उवा
नां मेढ्यां, ते मांदि कीमी, मंकोमी, कंधुया, उधेही,
धीमेल, गिरोली प्रमुख जे कोइ जीव विणठा, सुना,

सालही क्रीडा हेतु पांजरे घाट्या, अनेराइ जीवने राग द्वेष लगे, एकनी ऋद्धि परिवार वंठी, एकनी मृत्यु हानी वंठी. आठमे अनर्थदंरुव्रत विषइलु अनेरो जे कोइ अतिचार पद० ॥ १२ ॥

नवमे सामायकव्रत पांच अतिचार ॥ तिविहे दुष्पणिहाणे ॥ सामायक मांहि मन आहट दोहट चिंत व्युं. वचन सावद्य बोड्युं, शरीर अणपमिलेहुं हलाव्युं ठती शक्ति सामायक लीधुं नहीं. उघामे मुखे बोड्या, सामायिक मांहि उंघ आवी, बीज दीवा तणी नजेही लागी, विकथा कीधी, कण कपासीया, माटी, पाणी तणा संघट हुआ, सुहपत्ति संघटी, सामायक अणपूगे पार्युं, पारवुं विसार्युं. नवमे सामायकव्रत विषइलु अनेरो जे कोइ अतिचार पद० ॥ १३ ॥

दशमे दिशावगाशिक व्रत पांच अतिचार ॥ आणवणे पेंसवणे ॥ आणवणपयोगे, पेंसवणपयोगे, सदा गुंघए, रुवागुंघए, बीयापुग्गलखेवे, नीमी जूमिका मांहिथी बाहिर अणाव्युं, आपण कन्हेथी बाहिर मो कळ्युं, शब्द संजलावी, रूप देखामी, कांकरुं नांख्युं, आपणपणुं ठतुं जणाव्युं, पुद्गल तणो संक्षेप की

(४०१)

धो. दशमे देशावगासिकव्रत विषइत्त अनेरो जे कोइ
अतिचार पक्ष ॥ १४ ॥

इग्यारमे पौषधोपवासव्रत पांच अतिचार ॥ सं
आरुच्चार विहि ॥ पोसह लीधे संशारा तणी चूमि, वा
हिरलां शंभिलां संदिसे रूमां सोध्यां नहीं, पन्दिह्यां
नहीं, शंभिल वावरतां; माश्रू परठवतां चिंतवणी न
कीधी, अणुजाणह जस्सगो न कह्यो. परठव्या पुंठे वार
त्रण वोसिरे वोसिरे न कह्यो. देहरा पोसाळमांहि पेसतां
नीसरतां निसिही आवस्सही कहेवी विसारी, पुढवी,
अप, तेज, वाज, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट परि
ताप उपड्व कीधा. संशारा पोरिसी तणो विधि ज्ञण
वो विसाख्यो, अविधि संशाल्या, पारणादिक तणी चिं
ता नीपजावी, काल वेलाये देव न वांध्या, पोसह अ
सुरो लीधो, सवारो पाख्यो, पर्वतिथे पोसह लीधो न
ही. इग्यारमे पौषधोपवासव्रत विषइत्त अनेरो जे कोइ
अतिचार पक्ष ॥ १५ ॥

वारमे अतिथि संविज्ञागव्रत पांच अतिचार ॥
सचित्ते निरिक्कवणे ॥ सचित्त वस्तु हेठां उपर ठतां अ

सुऊतु दान दीधुं, वहोरवा वेला टली रह्या, मत्सर
लगे दान दीधां, देवा तणी बुद्धिं पराइ वस्तु धरणीने
अण कहे दीधी अथवा आपणी करी दीधी. अणदेवा
तणी बुद्धि सुऊतुं फेदी असुऊतुं कीधुं. गुणवंत आवे
जक्ति न साचवी. अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदातां गती
शक्तिये नुहस्यां नहीं, दीन खीन प्रत्ये अनुकंपादान
दीधुं नहीं, देतां वारयुं, वारमे अतिथिसंविज्ञागत्रत वि
षइनु अनेरो जे कोइ अतिचार पकण ॥ १६ ॥

संक्षेपणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलो
ए ॥ इहलोकासंस्सपणुगे परलोकासंस्सपणुगे, जीवि
यासंस्सपयोगे, मरणासंस्सपणुगे ॥ इहलोके धर्मना
प्रज्ञाव लगे राजकृद्धि जोग वांठ्या, परलोके देवदेवेंड
चक्रवर्तीतणी पदवी वंठी, सुख आवे जीववातणी वांठा
कीधी, दुःख आवे मरवातणी वांठा कीधी, कायजो
ग तणी वांठा कीधी, संक्षेपणात्रत विषइनु अनेरो जे
कोइ अतिचार पकण ॥ १७ ॥

तपाचार बार जेद ॥ ठ वाह्य जेद, ठ अच्यंत
र ॥ अससणसुषोअरिया ॥ अणलण जणी उपवा

सादिक पर्व तिथि तप न क्रीधो. उषोदरी ते वे चार
 कवल उषा न उठ्या, ङ्य जणी सर्व वस्तु तणो
 संक्षेप न क्रीधो. रसत्याग न क्रीधो. कायक्लेज लो
 चादिक कष्ट सहन कस्यां नहीं. संलीणता अंगोपांग
 संकोची राख्यां नहीं, पञ्चस्काण चांग्यां, पाटलो मय
 तो फेरुयो नहीं, गंठसही पञ्चस्काण चांग्युं, उपवास,
 आंबिल, नीवी क्रीधे सुखे सचित पाणी घाट्युं, री
 मन हुं, बाह्य तपव्रत विपद् अनेरो जे कोइ अति
 चार पद् ॥ १८ ॥

अन्यंतर तप ॥ प्रायश्चितं विणल ॥ सुखे प्राय
 श्चित्त पस्विज्युं नहीं, आलोयण तणी सुखी टीथ क्री
 धी नहीं, सुखे तप पसाख्यो नहीं. नाति जेदे विवाय
 न क्रीधो. दस जेदे वैयावज्ज न क्रीधो, पंचविध सखा
 य न क्रीधो, कमाय दोतराव्यो नहीं, दुःखहाय कर्ष
 हय निमित्त काडस्तग्न न क्रीधो, शुक्लध्यान धर्म
 ध्यान ध्याया नहीं, आर्त्त रोइ ध्यान ध्यायां, अन्यंतर
 तपव्रत विपद् अनेरो जे कोइ अतिचार पद् ॥ १९ ॥

वीर्याचार तप अतिचार ॥ अग्निगुहिय वलधी

रियो ॥ मनवीर्य धर्मध्यान तणे विषे उद्यम न कीधो,
 पम्किमणे, देवपूजा, धर्मानुष्ठान, दान, शील, तप,
 ज्ञावना, ठती शक्ति गोपवी. आलसे उद्यम न कीधो.
 वेठां पम्किमणुं कीधुं. रूमां खमासमण न दीधां. वी
 र्याचार व्रत विषइउअनेरो जे कोइ अतिचार पक्षणरण

पम्सिद्धाणं करणेण ॥ प्रतिषेध, अज्जह अन्त
 काय, महापरिग्रह जे कोइ प्राणातिपात, मृषावाद,
 अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लो
 ज्ञ, राग, द्वेष, कलह, अज्ञ्याख्यान, पैशुन्य, रति, अ
 रति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशब्द, ए
 अठार पापस्थानक मांहे कीधां कराव्यां अनुमोद्यां
 होयते सविहुं मन वचन कायाये करी मिञ्चामि उक्कमं ॥

एवंकारे श्रावक तणे धर्मे सस्यकत्वमूल वार
 व्रत एकसो चौवीस अतिचार पक्ष दिवस मांहे सूद्धम
 वादर जाणतां अजाणतां हुउ होय ते सविहुं मन व
 चन कायाए करी मिञ्चामि उक्कमं ॥ इति समाप्तम् ॥

विधिः—पठी सव्वस्सवि, पस्किअ, उच्चिंतिअ, उ
 प्रासिअ, उच्चिठिअ, इञ्चाकारेण संदिसह जगवन्, त

एतन्मिच्छामि बुद्धम्. इच्छकारि जगवन् पसान् करी प
 रिक तप प्रसाद करोजी. एम उच्चार करीने आवी रीते
 कहीए. चतुष्टेणं एक उपवास, वे आयंविज, त्रण नि
 वि, चार एकासणां, आठ वियासणां, वे हजार सजा
 य, यथाशक्ति तप करी प्रवेश कर्यो होय तो पइछीउ
 कहीए, अने करवो होय तो तद्धति कहीए. तथा न
 करवो होय तो अणवोढया रहीए. पठी वांदणां वे
 दीजे. पठी इच्छाण पत्तेय खामणेणं अप्पुच्छिउहं अप्पिंतर
 पस्किअं खामेणं इहं खामेमि पस्किअं. पन्नरस दिवसा
 णं पन्नरस राइआणं जं किंचि अपत्तिअं कही वांद
 णां वे दीजे, पठी देवसिअं आलोइअ पम्किंता इच्छा
 कारेण संदिसह जगवन्, पस्किअं पम्किमुं. समं पम्कि
 कमामि इहं; एम कही करेमिज्जंते सामाइयं कही, इ
 च्छामि पम्किमिउं जोमे पस्किउं कद्या पठी खमासम
 ण देइ इच्छाकारेण कही पस्किसूत्र पढुं एम कही त्रण
 नवकार गणी साधु होय तो पस्किसूत्र कहे. अने सा
 धु न होय तो त्रण नवकार गणीने आवकवंदिउं कहे,
 पठी प्रथम सुअ देवयानी थोय कहेवी, पठी देवा वे
 सी जमणो ठीचण उच्चो राखी एक नवकार गणी

करेमिजंते इच्छामि पश्चिमिजं कही, वंदित्तु कहेवुं प
ठी करेमिजंते, इच्छामि ठामि कानुस्सग्गं, जोमे पश्चि
जु, तस्स उत्तरी, अन्नञ्जण कहीने वार लोगस्सनो अ
थवा अरुतालीस नवकारनो कानुस्सग्ग करवो ते लो
गस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवा. ते पारीने प्रगट
लोगस्स कहेवो. पठी सुहपत्ति पस्सिलेहीने, वांदणां वे
दीजे. पठी इच्छाण समाप्त खामणेणं अप्रुष्ठिनहं अप्पिं
तर पश्चिअं खामेजु इच्छं खामेमि पश्चिअं एक पस्सा
णं पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्ति
अंण कही पठी खमासमण देइने इच्छाण कही, पश्चि
खामणां खामु. एअ कहीने चार खामणां खामवां प
ठी देवसि प्रतिक्रमणासां वंदित्तुं कह्या पठी वांदणां वे
देइने त्यांशी सामायक पारीए त्यांसुधी देवसिनी पेठे
जाणवुं. पण सुअ देवयानी ओयोने ठेकाणे ज्ञानादि
कनी ओयो कहेवी, स्तवन अजित शांतिनुं कहेवुं, स
व्यायने ठेकाणे उवस्सग्गहरं तथा संसारदावानी चा
र ओयो कहेवी, अने लघु शांतिने ठेकाणे मोटी शां
ति कहेवी ॥ इति ॥

अजितशांति स्तवनना ठुटा शब्दना अर्थ.

गाथा १ थी ५ सुधीना.

अजिअं-अजितनाथ	निन्मल-निर्यल	कित्तणं-कीर्त्तन
जिअ-जीत्या छे	सहावे-स्वभाव	मइ-मति
भयं-भयने	निरुपम-निरुपम	मागहिआ-मागधिका
पसंत-उपशांत थयाछे	प्पभावे-प्रभाव	छंद
गय-रोग	थोसाभि-स्तुतिकरीश	किरिआ-क्रिया
करे-करनारने	सु-छडे प्रकारे	किलेस-कपाय
पाणिवयायिं-नमस्कार	दिट्ट-दीटा छे	विगुरुवयरं-विशेष
करुंछुं	सप्भावे-छता भावो	जे सृकावतारा
गाहा-गाथा छंद	प्पसंतीणं-प्रशांति थ	निचिअं-व्यापेला
वदगय-गयो छे	इ छे	गयं-गया, पासया
संगुल-माठो	अजिअ-नहीं जीताए	मुणिणो-मुनिअंने
ते-ते वे तीर्थकरोने	ल, अजितनाथ	निच्युइ-निच्युत्ति
(अ)हं-हुं	संतिणं-शांतिवाला,	नमंसणयं-नमस्कार
विउल-विशाल	शांतिनाथ	आळिगणयं-आळिग
तव-तप	प्पवत्तणं-प्रवर्त्तन कर	नका छंद
	नासं	

॥ अथ श्री अजितशांति स्तवन ॥

अजिअं जिअ सव जयं, संति
च पसंत सव गय पावं ॥ जय गुरु
संतिगुण करे, दोवि जिणवरे पाणिव

शामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल
जावे, तेहं विजल तव निम्मल स
हावे ॥ निरुवम महप्पजावे, थोसा
मि सुदिठ सप्पावे ॥ २ ॥ गाहा ॥
सव्व डुक्क प्पसंतीणां, सव्व पावप्प
संतिणां ॥ सया अजिय संतीणां,
नमो अजिय संतिणां ॥३॥ सिलो
गो ॥ अजिय जिण सुह प्पवत्तणां,
तव पुरिसुत्तम नाम कित्तणां ॥ तह
य धिइ मइ प्पवत्तणां, तव य जि
णुत्तम संति कित्तणां ॥४॥ मागहि
या ॥ किरिअ्या विहि संचिअक
म्म किल्लेस विमुक्कयरं, अजिअं
निचिअं च गुणेहिं महामुणि सि
द्धि गयं ॥ अजिअस्सय संति म
हामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं

मम निवृद्ध कारणयं च नमंसण
यं ॥ ५ ॥ आर्लिङ्गणयं ॥

अर्थः—अजिअं जिअ के० सर्व ज्ञयने जीतनारा
एवा बीजा तीर्थकर अजितनाथ, वली अपुनर्त्तावे क
रीने सर्व रोग अने पाप निवृत्त अयां ठे जेमनां एवा
सोलया तीर्थकर श्री शांतिनाथ, ते वे पण जिनवर
ने नमस्कार करुंठुं. ते वे जिनवर केवा ठे ? तो के
जयगुरु के० जगतना गुरु ठे. अथवा जयगुरुशांति गु
ण करे के० जगतनी मोटी शांतिना तथा ज्ञानादि
गुणने करनारा ठे. ॥ १ ॥ आ गाथा ठंठे ठे ॥

ववगय मंगुल ज्ञावे के० गयो ठे माठो ज्ञावजे
मनो एवा, वली विस्तीर्ण एवा वार प्रकारना तपवरे
करीने निर्मल अयो ठे स्वज्ञाव जेमनो एवा, निरुपम,
अने मोहोठो ठे प्रज्ञाव एटले शक्ति जेमनी एवा, व
ली केवलज्ञान अने केवलदर्शने करी रुमे प्रकारे दी
ठा ठे जीवाऽजीवादिक ठता ज्ञावो ते जेमणे एवा ते
वे तीर्थकर श्री अजितनाथ अने श्री शांतिनाथ जग
वान प्रत्ये हं नंदिप्रेणनामासूरि स्तुति करीश ॥ २ ॥
आ गाथा ठंठे ठे ॥

सब दुःखकल्पसंतिणं के० जन्म, जरा, अने मरण विगेरेयी अतां सर्व दुःखनी अतिशये करी शांति अइ ठे जेमने एवा, तथा सर्व योग्य जीवोना दुःखनी अतिशये करी शांति करी ठे जेमणे एवा, तथा सर्व पापोनी अतिशये करी शांति अइ ठे जेमने एवा, तथा नहीं जीताय एवो उपशम ठे जेमनो एवा श्री अजितनाथजी तथा श्री शांतिनाथजीने सदा नमस्कार आन ॥ ३ ॥ ए श्लोक ठंढ ठे ॥

अजिअ जिण के० हे अजित जिन ! तथा हे पुरुषोत्तम ! तमारा नामनुं जे कीर्तन, ते मोह सुखनुं प्रवर्त्तन करनारुं वर्त्ते ठे, तथा वली चित्तनी समाधि, बुद्धि तेनुं अतिशये करी वर्त्तन करनारुं ठे. तथा सामान्य केवलीने विषे श्रेष्ठ एवा हे श्री शांतिनाथ ! वली तमारा नामनुं जे कीर्तन ठे ते पूर्वोक्त गुणयुक्त ठे ॥४॥ आ भागधिका ठंढ ठे ॥

किरिआविहि के० पचीश क्रियाना जेदे करी एकठां करेलां एवां जे ज्ञानावरणादि आठ कर्म, तथा कषायश्री विशेषपणे मूकावनारा ठे, तथा अजित ठे; तथा चारित्रादिक गुणे करीने प्राप्त एवा ठे, तथा मो

होटा मुनिउनी आठ अणिमादिक सिद्धिने प्राप्त अ
या एवा ठे, एवा अजितनाथने अने शांतिनाथ जे महा
मुनिउने शांतिना करनार तेमने, जे विशिष्ट प्रणमन
करवुं ते मुजने निरंतर शांति करवानुं अने वली मो
क्ष सुखनुं कारण हो॥५॥आ आलिंगनकनामा ठंदे॥

गाथा ६ थी १० सुधीना ठुटा शब्दना अर्थ.

पुरिसा-मनुष्यो
वारणं-वारवुं
विमग्गह-शोधोछो
अभय-निर्भय
करे-करनारा
एवज्जहा-प्राप्त थाओ
अरइ-अरति, दुःख
रइ-रति, समाधि
विरहिअं-विरहित
उवरय-नाश पामे छे
जर-घडपण
अरणं-बुद्ध रहित
गरुल-१. सुवर्णकुमार
२. ज्योतिषिदेव
भुयग-१. नागकुमार
व्यंतरदेव

वइ-पति, स्वामी
पयय-रूडे प्रकारे, शु
द्धताए
पणिवइअं-नमस्कार
अविय-वली पण
सु-सुंदर नैगमादिक
नय
नय-निश्चय
निउण-निपुण, डाह्या
उवसरिअ-पामीने
भुवि-पृथ्वी उपर
दिवि-देवलोकमां
ज-उत्पन्न थएला
उवणमे-समीपे नम
स्कार करुंछुं

संगययं-संगतक छंद
नित्तम-अज्ञानरहित,
अंधकाररहित, इच्छा
राहित.
सत्त-सत्र, यज्ञ
धरं-धारण करनारा
अज्जव-आर्जव
मद्व-मार्दव
खंति-क्षमा
विमुत्ति-निर्लोभता
निहिं-निधि, भंडार
दम-दमन.
दिसउ-आपो
सोवाणयं-सोपानक
नाम छंद.

सावधिथ-श्रावस्ति
 पुव्व-पहेलां
 पधिथवं-राजा
 हधिथ-हाथी
 मधथय-मस्तक
 विच्छिन्न-विस्तीर्ण
 सांथिअं-संस्थान
 थिर-स्थिर
 सारिच्छ-सरखुं
 वच्छं-हृदय, छातो
 मयगल-मदोन्मत
 लीलायमाण-लीला
 करतो
 पधथाण-प्रस्थान
 पधिथअं-नीकलवुं

संथवारिहं-वर्णन कर
 वा योग्य
 बाहु-हाथ, बाहु
 भंत-धमेळुं
 कणग-सोनुं
 रुअग-वासण, घरेणुं
 निरुवहय-निष्कलंक
 पिंजर-पीलुं
 पवर-श्रेष्ठ
 लखण-लक्षण
 उवचिय-सहित
 सोम-सौम्य
 चारु-मनोहर
 सुइ-कान
 परम-असंत

रमणिज्ज-रमणिक
 दुंदुहि-दुंदुभि
 निनाय-शब्द
 महुर-मधुर
 यर-वधारे
 गिरं-वाणी
 वेहुओ-वेष्टक छंद
 जिअ-जिसा छे
 अरि-शत्रु
 भवोह-भवना सखुह
 रिउ-रिपु, वेरी
 पयओ-प्रयत्नथी
 पसमेउ-अतिशय श
 मावो
 भयवं-भगवंत

पुरिसा जइ डुरकवारणां, जइअ वि
 मग्गह सुककारणां ॥ अजिअं
 संतिं च ज्ञावउ, अजयकरे सर
 णां पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिअ्या ॥
 अरइ रइ तिमिर विरहिअ्य सुवर

(४१३)

यजरमरणां, सुरअसुर गरुल न्यु
गवइ पयय पणिवइअं॥अजिअ
महमविअ सुनयनय निउण म
अयकरं, सरण सुवसरिअ न्युवि
दिविज महिअं सययमुवाणमे॥७॥
संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम
नित्तम सत्तधरं, अऊव महव खंति
विमुत्ति समाहि निहिं॥ संतिकरं
पणमामि दमुत्तम तिउयरं, संति
मुणी मम संति समाहि वरं दिस
उ ॥ ७ ॥ सोवाणयं ॥ सावन्नि
पुव पन्निवं च वर हन्ति मन्थय प
सन्नि विन्निन्न संथियं, थिरसरिन्नि
वन्नि मयगल लीलायमाण वर गं
धहन्नि पन्नाण पन्थियं संथवारिहं॥
हन्निहन्नि बाहु धंत कणग रुअप्रग

निरुवहय पिंजरं पवर लक्ष्मणो व
 चिय सोमचाररुवं, सुइ सुहमणा
 जिराम परमरमणिश्च वरदेव डुंडु
 हि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ एण ॥
 वेह्वु ॥ अजिअं जिअ्राग्गिणं,
 जिअ सव्वज्जयं जवोहरिणं ॥ पण
 मामिअहं पयणु, पावं पसमेण मे
 जयवं ॥ १० ॥ रासाखुधु ॥ युग्मम् ॥

अर्थः—पुरिसा जइ दुक्खवारणं केण हे मनुष्यो !
 जो तमे दुःखनुं निवारण करवानुं अने जो सुखनुं का
 रण ए वे शोधो ठो तो अजितनाथनुं तथा शांतिनाथ
 नुं जे शरण तेने ज्ञावणी करीने मेलवो. ए वेहु तीर्थ
 कर निर्जय करे एवा ठे. ॥ ६ ॥ आ मागधिका ठंढ ॥

अरइरइतिमिर केण अरति, रति, तथा अज्ञाने
 करी विरहित एवा, तथा जेनां जरा अने मरण नाश
 पाण्यां ठे एवा, वली वैमानिक देवो, जवनपति, सुव
 कुमार, नागकुमार, तथा वीजा पण देवोना इंदोए

रूपे प्रकारे जेम आयतेम नमस्कार कर्यो ठे जेमने एवा, अथवा बीजी रीते वैमानिक, जवनपति, ज्योतिषि तथा व्यंतर तेमना स्वामी एटले इंडोए शुद्धताए करीने नमस्कार कर्यो ठे जेमने एवा ठे. वली केवा ठे ? तो के सर्व समीचीन एवां अन्य विशेषणोये युक्त एवां, तथा सुंदर एवा अनेकांत रूप नैगमादिक जे नय तेमनी प्रतीतिने विषे माह्या ठे तथा निर्जयपणाना करना र अथवा जयरहित सुखना आपनारा, तथा मनुष्योए अने देवोए पूजित एवा श्री अजितनाथ जगवाननुं शरण पामीने निरंतर हुं समीपे रहीने नमस्कार करहुं ॥ ७ ॥ आ संगतक ठंद ठे ॥

तंच जिणुत्तम सुत्तम के० ते श्री शांतिनामे जे सुनि तेने श्रद्धापूर्वक प्रणाम करहुं, ते शांतिमुनि के वा ठे ? तो के सामान्य केवलीने विषे श्रेष्ठ ठे, अने प्रधान, अने अज्ञानरहित एवा जाव यज्ञने धारण करनार ठे, वली आर्जव, (सरलपणुं) मार्दव (अहंकाररहितपणुं) कृपा, निर्दोषता, तथा समाधि तेना जंमार ठे. तथा शांतिना करनार ठे. वली जे इंडिउने दसन करवामां प्रधान ठे, एवा ते तीर्थकर सुजने शां

ति अने प्रधान समाधि तेने आपो ॥ ७ ॥ आ सो
पानक ठंड ठे ॥

सावन्निपुत्र केण श्रावस्ति एटले अयोध्या नगरी
ने विषे दिक्षा लीधा पेहेलां राजा हता तथा श्रेष्ठ वन
हस्तीना मस्तक सरखुं प्रशंसा करवा योग्य अने दि
स्तीर्ण एवं ठे शरीरनुं शुन्न संस्थान जेमनुं, तथा क
ठिन अने सरखुं ठे हृदय जेमनुं, अथवा निश्चल श्रीव
त्सनामा लक्षण वक्षस्थलने विषे ठे जेमने एवा, तथा
मदोन्मत्त अने लीला करता एवा प्रधान गंध हस्तीना
गमननी पेरे गति ठे जेमनी एवा, तथा स्तुति करवा
ने योग्य तथा हाथीनी सुंठ जेवा सरल तथा लांबा
ठे हाथ जेमना एवा, तथा धमेला सोनाना रुचक केण
जाजन अथवा आन्नरण विशेष तेना जेवो निष्कलंक
पीलो ठे वर्ण जेमनो एवा, तथा श्रेष्ठ एवा (शंख, च
क्र, अकुंशादिक) लक्षणोए करीने सहित एवा, तथा
सौम्याकार एवं, देखनाराने मनोहर सुखदायक ठे रूप
जेमनुं एवा, तथा कानने सुखनी दायक, तथा मनने
मनोहर, अत्यंत रमणिक अथवा पर केण उत्कृष्ट ठे
केण लक्ष्मी जेने एवा राजा अने पर केण डुर ठे

मा के० लक्ष्मी जेने एवा रंक जनो, ते बेहुने संतोष
पमारुनार तथा श्रेष्ठ एवी देवडुंडुजि तेना शब्दसरखी
घणी मधुर अने कट्याणकारी ठे वाणी जेमनी एवा
ठे ॥ ए ॥ आ वेष्टकनामा ठंड ठे ॥

अजिअं जिआरिगणं के० अष्ट कर्मरूप शत्रुना
समूह जेणे जीत्या ठे, तथा जिअ सद्यजयं के० सर्व
जय जेणे जीत्या ठे एवा अथवा बीजी रीते पंचेंद्रि
जीवने सांजलवा योग्य ठे ज्ञान्य जेमनुं एवा, तथा
संसार समूहना शत्रु एवा श्री अजितनाथ प्रत्ये मन,
वचन कायाए करी उपयुक्त एवो बलो हुं प्रणाम करुं
हुं, अने ते जगवान् मारा पापने प्रकर्षे करी शमावो
॥ १० ॥ आ रासाखुब्धक ठंड ठे ॥

गाथा ११ थी १६ सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

डुरु-नाम छे	महप्पभावो-महिमा,	रायवर-श्रेष्ठराजा
जणवय-देश	मोटो प्रभाव	अणुयाय-अनुसराए
हथिणउर-हस्तिना	बावत्तरि-बोतेर	लो
पुर	पुरवर-नगर	मग्गो-मार्ग
नरिसरो-मोटो राजा	नगर-नगर	चउदस-चउद
भोए-राज्यने विषे	बत्तीसा-बत्तीस	रयण-रत्न

चउसट्टि-चोसट
 जुवईण-स्त्रीओना
 सुंदरवइ-सरस पति
 चुलसी-चोरासी
 हय-घोडा
 गय-हाथी
 रह-रथ
 छणवइ-छल्लु
 गाम-गाम
 आसिज्जो-होताहवा
 भारहम्मि-भरतक्षेत्रमां
 थुणाभि-स्तुति करंछुं
 वेहेउ-करवाने अर्थे
 इख्खाग-इक्ष्वाकु
 विदेह-देशनुं नाम छे
 वसहा-वृषभ (श्रेष्ठ)
 नव-नवौ
 सारय-शरदरुतुनो
 ससि-चंद्रमा
 सकल-शोभावंत, क
 लाओए सहित
 आणण-मुख
 वे छे

तमा-अंधारु, अज्ञान
 तेअ-तेज
 आमिअ-अमित, नहीं
 मापी शकाय एवुं.
 बला-बलवाला
 विउल-विपुल
 कुला-कुल
 मूरण-भागनार
 मम-मार्ह
 अमम-ममत्वरहित
 चित्तलेहा-चित्रलेखा
 दाणविंद-दानवानो
 इंद्रो
 वंद-वांदवालायक
 हठ-आरोग्यवंत, ह
 रखीत
 तुठ-प्रमोदवंत, तुष्टमान
 जिठ्ठ-सौथी वधारे,
 प्रशंसवा योग्य
 परम-अखंत
 लठ्ठ-कांतिवालुं
 पट्ट-पाटो
 सेय-घन

निद्ध-स्निग्ध
 धवल-उज्ज्वल
 दंत-दांत
 पंति-पंक्ति
 सात्ति-शक्ति
 मुत्ति-मुक्ति
 जुत्ति-युक्ति
 दित्त-दिप्त
 वंद-वांदवायोग्य
 धेय-ध्यानकरवायोग्य
 भाविय-भावित
 णेअ-जाणवायोग्य
 पइस-आपो
 कला-कला
 अइरेअ-अधिक
 सूरकर-सूर्यनां किरण
 तिअस-देवता
 धरणिधर-पर्वतो
 सारं-धैर्य
 कुसुमलया-कुसुमल
 ता छंद

(४१ए)

कुरु जणवय हन्निणाउर, नरी
सरो पढमं तउ महा चक्कवट्टि जो
ए महप्पजावो, जो बावत्तरि पुर
वर सहस्स वर नगर निगम जण
वयवई, वत्तीसा राय वर सहसा
णुपाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण
नव महानिहि चउसठि सहस्स
पवर जुवईण सुंदरवइ, चुलसी
हय गय रह सय सहस्स सामी,
ठसुवइ गाम कोमि सामी आसि
जो चारहम्मि ज्ञयवं ॥ ११ ॥ वे
हुउ ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिं सव
जया, संतिं थुणामि जिणं, संतिं
वेहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदियं ॥
युग्मम ॥ इस्काग विदेह नरीसर
नर वसहा मुणि वसहा ॥ नवसा

रय ससि सकलाणण विगय त
 मा विहुअरया ॥ अजि उत्तम ते
 अ गुणेहिं, महामुणि अमिअ
 बला विजल कुला ॥ पणाममि
 ते जवजय मूरण, जगसरणा मम
 सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलोहा ॥ देव
 दाणविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जि
 ठ परम ॥ लठरुव धंत रूप्य पट्ट
 सेय सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंत पंति
 संति सति किति मुत्ति जुत्ति गु
 ति पवर ॥ दित्त तेअ वंद धेअ
 सब लोअ जाविअ प्पजावणे
 अ पड समे समाहिं ॥ १४ ॥ ना
 रायण ॥ विमल ससि कलाइरेअ
 सोमं, वितिमिर सूर कराइरेअ
 तेअं ॥ तिअस वड गणाइरेअ

(४१)

रूवं, धरणिधर प्यवराइरेअ सारं

॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥

अर्थः—कुरु जणवय हठिणा नर केण कुरु माझे देशने विषे हस्तिनापुर नगर तेना प्रथम ते राजा थ या, त्यांपढी मोटा चक्रवर्तीना राज्यने विषे जेमने महोटी महिमा ठे एवा चक्रवर्ती थया, वली केवा ठे? तो के जे बहोतेर हजार एवां पुरवर (धरोए करीने श्रेष्ठ शेहेस्) अने जेमां कर नहीं एवां श्रेष्ठ गजपुरा दि नगर, अने ज्यां मोहोटा रुड्विंत बेपारीलनी डु कानो होय तेवां शेहेरो, तथा देशविदेशाना स्वामी एवा, अने बत्रीस हजार सुकुटबद्ध राजा जेनी पढवा मे चालनारा ठे एवा, तथा वली जेने चौद श्रेष्ठ रत्न ठे एवा, तथा जेने नव मोटा निधि एटले जंभार अ खुट ठे एवा, तथा चोसठ हजार श्रेष्ठ एवी स्त्रीलना जे सुंदर नरथार ठे, वली चोरासी लाख घोमा तथा चोरासी लाख हाथी तथा चोरासी लाख रथ तेना स्वामी तथा वली बन्नुक्रोरु गामना स्वामी एवा जग वान् नरतक्षेत्रने विषे होता हवा ॥११॥ आवेष्टक ठंदठे.

(४९९)

तं संतिं संतिकरं के० ते पूर्वोक्त मूर्त्तिमान् उप
शामरूप एवा तथा पोताना समीप मोक्ष लक्षण तेने
आपनार एवा, अने रूपे प्रकारे जे थकी सर्व मृत्यु न
य तरे ठे एवा श्री शांतिनाथ तीर्थकर तेमने हुं स्तु
ति करुं. शा माटे ? तो के मारा उपसर्गनी शांति
करवाने अर्थे करुं ॥ १२ ॥ आ रासानंदित ठंद ठे ॥

इस्काग विदेह के० हे इक्ष्वाकु कुल वासी ! त
था हे विदेह देशना नरेश्वर, तथा हे (मनुष्योमां श्रेष्ठ
माटे हे) नरवृषज, तथा (मुनिधर्ममां धोरी माटे
हे) हे मुनिवृषज ! तथा नवा शरद ऋतुना चंद्रमानी
पेरे सकल कलाए संपूर्ण एवा मुखवादा, बली जेना
थी अज्ञानरूप अंधकार गयुं ठे. माटे हे विगततमः !
तथा जेणे कर्मरूप रजने काढी नांखी ठे माटे विधुत
रज ! तथा रागादिके न जीताय माटे हे अजित !
तथा गुणोए करी श्रेष्ठ ठे तेज जेमनुं माटे हे उत्तम
तेज ! तथा जे ओटा मुनिन ठे तेजुथी पण प्रमाण
न अइ शके एवुं जेनुं अपरिमित बल ठे माटे हे महा
मन्यमितबल, तथा विस्तीर्ण ठे वंश जेमनो माटे हे

विपुलकुल ! तथा संसारना त्रय ज्ञागनार माटे हे ज
 वन्नयमूरण ! तथा जगतूना रक्षण करनार माटे हे ज
 गन्नरण ! तमे मारा पण रक्षण करनार ठो अथवा मम
 त्वरहित ठो माटे हे अमम ॥ १३ ॥ आ चित्रलेखा
 ठंद ठे ॥

देव दाणविंद चंद के० सुर असुरना इंद्र तथा चं
 दमा अने सूर्य तेमने वंदन करवा योग्य, तथा आरोग्य
 वंत, प्रसोदवंत, तथा सौथी वधारे प्रशंसवा योग्य अने
 अत्यंत कांतिवालुं ठे रूप जेमनुं तथा धमेला रुपाना
 पाटानी पेर घन, निर्मल, स्निग्ध अने बुज्जवल ठे दां
 तनी पंक्ति जेमनी, तथा शक्ति, कीर्ति, मुक्ति (निर्लो
 जता), युक्ति (न्यायवालुं वचन) अने गुप्ति तेणे करी
 श्रेष्ठ ठे, तथा दीप्त ठे तेजनुं वृंद जेमनुं, अथवा सुरेंद्रा
 दिके वांदवा योग्य ठे. तथा प्रकारांतरे वांदवा योग्य
 जे महा सुनिष्ठ तेमने ध्यान करवा योग्य ठे एवा,
 तथा सर्व लोके जाणेलो ठे प्रजाव जेमनो तेणे करी
 जाणवा योग्य एवा हे श्री शांतिनाथ ! तमे मने स
 माधि देखामो एटले आपो ॥१४॥ आ नाराचक ठंदठे॥

विमल ससि कलाशरेअ सोमं के० निर्मल एवी

चंद्रमानी कलाधी अधिक ठे सौम्यता जेनी, तथा वा दलना अंधकारधी रहित एवां सूर्यनां किरणोधी पण अधिक ठे तेज जेनुं एवा ठे. तथा देवताना पति इंद्रोना समूहधी पण अधिक ठे रूप जेनुं (एटले सर्व देवतानुं रूप जगवाननी टचली आंगलीना रूप पासे सुके तो पण सोना अने त्रांबा जेटलो फेर देखाय) एवा ठे, तथा पर्वतो मांहे श्रेष्ठ जे मेरुपर्वत तेथी पण अधिक ठे सार के० धैर्य जेमनुं एवा ठे ॥ १५ ॥ आ कुसुमलता नामे बंद जाणवो ॥ आ गाथानो संबंध आगली गाथा-जोमे ठे.

गाथा १६ थी १० सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

सत्ते अ-सत्त्वमां वली
सारीरे-शरीरसंबंधी
एस-आ
पावड-पामे
सरय-शरद ऋतुनो
रवी-सूर्य
तिअस-देवता
तिथ्यवर-उत्तम तीर्थ
व -प्रवर्तक

रहिअं-रहित
धीर-डाह्या
थुअ-स्तुतिकर्या
आच्चिअं-पूज्या
चुअ-छांडयुं
कलि-वेर
कलुसं-पाप
संति-मोक्ष
ति-त्रण

गरण-करण
उवणमे जाउंठुं
ललिअयं-ललितक
विणओ-विनयेकरी
णय-नम्या
सिरि-मरतकमां
रइ-रची, जोडी
रिसि-ऋषिओ
संथुअं-स्तवाएला

(४१५)

थिमिअं-निश्चल
विबुह-देवता
अहिव-अधिप (इंद्रो)
युअ-स्तव्या
अइर-थोडा बखतमां
उगय-उगेलो
दिवायर-सूर्य
समाहिय-अधिक

सप्पभं-पोतानी कांति
तवसा-तपे करीने
गयणंगण-आकाश
वियरण-चालवुं
समुइअ-एकठा थएला
चारण-चारणमुनि
किसलयमाला-किस
लयमाला छंद

परिवंदिअं-समस्त प
कारे वंदाएला
उरग-व्यंतर देव
णमांसिअं-नमस्कार
कराएला
समणसंघ-साधुओनो
संघ, चतुर्विध संघ,
सुमुहं-सुमुत्त छंद

सत्ते अ सया अजिअं, सारिरे अ
बद्धे अजिअं, तव संजमे अ अ
जिअं, एस थुणामि जिणं अजि
अं ॥ १६ ॥ सुअग परिरंगिअं ॥
सोम गुणेहिं पावइ न तं, नव स
इय ससी ॥ तेअ गुणेहिं पावइ
न तं, नव सरय रवी ॥ रूव गुणे
हिं पावइ न तं, तिअस गण व
इ ॥ सार गुणेहिं पावइ न तं ॥
धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयां ॥

(४२६)

तिष्ठवर पवत्तयं तमरय रहिञ्चं,
धीरजण थुञ्च चिञ्चं चुञ्च कलि
कल्लुसं ॥ संति सुह प्पवत्तयं ति
गरण पयत्तं, संति महं महामुणिं
सरण सुवण्णमे ॥ १७ ॥ ललिञ्च
यं ॥ विण्णत्तणय सिरि रइ अञ्ज
लि रिसिगण संथुञ्चं थिमिञ्चं ॥
विबुहाहिव धणवइ नरवइ थुय
महिञ्च चिञ्चं बहुसो ॥ अइरुग्गय
सरय दिवायर समंहिञ्च सप्पत्तं
तवसा ॥ गयणंगण वियरण समु
इञ्च चारण वंदिञ्चं सिरसा ॥ १८ ॥
किसल्लयमाला ॥ असुर गरुल
परिवंदिञ्चं, किंनरोरग णमंसिञ्चं ॥
देवकोप्पिसय संथुञ्चं, समणसंघ
परिवंदिञ्चं ॥ १९ ॥ सुमुहं ॥

अ सया अजिअं के० तथा सत्त्वने
जित ठे, तथा वली शरीरना बलने विषे
ठे, तथा बार प्रकारना तप अने सत्तर
संयमने विषे पण बीजा पुरुषोथी जीताय
श्री अजितनाथ जिनवरनी आ हुं नंदिषे
वार स्तुति करुं ॥ १६ ॥ आ ज्ञुजंगपरिरंगित
मा ठंद ठे ॥

सोम गुणेहिं पावइ न तं के० सौम्य एटले शां
ते गुणे करीने नवो शरद ऋतुनो चंडमा पण श्री अ
जितनाथनी सौम्यता प्रत्ये पामी न शके, तथा तेज
(कांति)ना गुणे करीने नवो शरद ऋतुनो सूर्य पण
श्री अजितनाथना तेज गुणने पामी न शके, तथा
रूप गुणे करीने देवताना जे समूह तेना पति इंद्र पण
अजितनाथना रूप गुणनी तुलना प्रत्ये पामी न शके,
तथा स्थिरता गुणोए करीने पर्वतनो पति जे मेरु प
र्वत ते पण जगवंतना स्थिरता गुण प्रत्ये पामी न शके
॥ १७ ॥ आ खिज्जितक ठंद ठे ॥

तिष्ठवर पवत्तयं के० श्रेष्ठ तीर्थ जे चतुर्विध संघ

अथवा प्रथम गणधर तेना प्रवर्तक अथवा तीर्थमांश्रे
 ष्ट एवो जे धर्म तेने तिठवर कहीए ते धर्मरूप तीर्थना
 प्रवर्तक एवा, तथा अज्ञान, रज एटले बंधातां कर्म
 तेथी रहित एवा, तथा साह्या पुरुषोए वाणीए करी
 स्तव्या अने फुले करी पूज्या एवा, तथा जेणे वैर अ
 थवा कजीआनुं पाप ठांरुं ठे एवा, तथा मोक्ष सुख
 ने अर्थे प्रवर्तता एवा जे साधुनुं तेने पालन करनार
 अथवा मोक्ष सुखना करनार एवा, ओटा मुनि जे
 शांतिनाथजी ते प्रत्ये त्रण करण के० मन वचन अने
 कायाए करी पवित्र एवो बतो हुं शरण प्रत्ये जाउंठुं
 ॥ १८ ॥ आ ललितक नामा ठंढ ठे ॥

विणलुणय सिरिरइ के० विनये करी लम्ब्या एवा
 मस्तकने विषे रची ठे करनी अंजली जेमणे एवा,
 ऋषिभना समूह तेमणे रूढे प्रकारे स्तुति करी ठे जे
 मनी एवा, तथा (कर्मकृत लंचनीचपणाना अज्ञाव
 धी तरंग रहित समुझनी पेठे) निश्चल एवा, तथा दे
 वताना अधिप जे इंद्रो अने धनपति (धनद, कुबेर,
 लोकपालजे) तेमणे तथा राजालु अने चक्रवर्तीए घ

शीवार स्तव्या, पूज्या, अर्च्या एवा, तथा तपे करीने तरतना बगेला शरद ऋतुना सूर्यशी पण अधिक ठे पोतांनी कांति जेमनी एवा तथा आकाशने विषे विच रवे करीने एकठा अएला एवा जंघाचारणादिक सुनि लए मस्तके करीने वंदन कर्णुं ठे जेमने एवाठो ॥१९॥ आ किललयमाला ठंद ठे ॥

असुर गरुड परिवंदिअं के० वली केवा ठे ? तो के असुरकुमार, सुवर्ण कुमार तथा बीजा पण सर्व दे वोए समस्त प्रकारे वंदन कर्णुं एवा, तथा किन्नर अ ने व्यंतर विशेष एमणे नमस्कार कर्णुं ठे जेमने ए वा, तथा वैमानिक देवोना संकटा गमे कोटिलए स्तु ति करी ठे जेमनी एवा, तथा चतुर्विध संघे चोतरफ जावे करीने वंदन कर्णुं ठे जेमने एवा ठे ॥ १० ॥ आ सुमुख नामा ठंद जाणवो ॥

गाथा ११ थी १५ सुधीना तुटा शब्दना अर्थ.

अणहं-पापरहित

अरयं-मैथुन रहित

अरुयं-रोगरहित

पयओ-आदर सहित

पणमे-मणाअ करुंछुं

विज्जुविलसितं-वि

द्युद्विलसित छंद

आगया-आव्या

विमाण-विमान

दिव्य-मनोहर

तुरय-घोडा

पहकर-समूह

सएहि-सकेंडोएकरीने
हुलिअं-उतावले
ससंभम-सत्वर
उअरण-उतरवुं
खखुभिअ-धुभिअ
लुलिअ-अरहांपरहां
चल-चपल [हालतां
कुंडल-काननांकुंडल
अंगय-बाजुबंध
तिरीड-मुकुट
सोहंत-शोभती
मउलीमाला-मस्तक
नी माला
संधा-समूहो
स-साथे
असुर-भुवनपाति वगे
रे देवो
वेर-वेर
विउत्ता-रहित
भक्ति-भक्ति
सुजुत्ता-सहित

आयर-आदर
भूसिय-शोभित
संभम-उतावले
पिंडिअ-एकठामलेला
सुहु-सारी रीते
सुविम्हिअ-सुविस्मित
बलोघा-लशकरनो स
मूह
परूविअ-घणारूप
वाला
भासूर-जलहलता
भुसण-आभरण
भासूरिय-देदीप्यमान
अंगा-अंग
गाय-गात्र,शरीर
समोणय-सम्यक् प्र
कारे नमेल
वस-वशे
आगय-आवेला
पेसिय-करेलो
पणामा-नमस्कार

रयणमाला-रत्नमाला
वंदिउण-वांदीने
थोऊण-स्तुति करीने
तिगुणं-त्रणवार
एव--जे
पुणो--फरीने
पयाहिणं--भदक्षिणा
पणामिउण--प्रणाम
करीने
पमुइआ-हरखीत
थएला
सभवणाई-पोताना
स्थानक प्रत्ये
तो-त्यांथी
गया-गया
मोह-अज्ञान
वज्जिअं-दर्जित
खित्तयं--क्षिप्तक छंद

(४३१)

अन्नयं अणहं, अरयं अरुयं ॥
अजियं अजिअं, पयञ्च पणामे
॥ ११ ॥ विङ्गुविलसिअं ॥ आग
या वर विमाण दिव्व कणग रह
तुरय पहकर सण्हिं हुलिअं ॥ स
संजमो अरण, खुज्जिअ बुलि
अ चल् कुमलं गय तिरीरु सोहं
त मण्डलिमाला ॥ १२ ॥ वेह्वण ॥
जं सुरसंधा सासुरसंधा वेर विज
त्ता जति सुजुत्ता ॥ आयर नूसि
अ संजम पिंदिअ, सुवु सुविम्हि
अ सव्व बलोधा ॥ उत्तम कंचण
रण पुरुविअ, ज्ञासुर नूसण
ज्ञासुरिअंग्गा ॥ गाय समोणय ज
त्ति वसागय, पंजलि पेसिअ सी
स पणामा ॥ १३ ॥ रणमाला ॥

वंदिकृण थोऊण तो जिणं, तिगुण
 मेव य पुणो पयाहिणं ॥ पणमि
 कृण य जिणं सुरासुरा, पसुइअ
 सन्नवणाइं तो गया ॥ १४ ॥ खि
 त्तयं ॥ तं महासुणि महंपि पंज
 ली, राग दोस ज्ञय मोह वज्जि
 अं ॥ देव दाणव नरिंद वंदिअं,
 संति सुत्तम महातवं नमे ॥ १५ ॥
 खित्तयं ॥

अर्थ:—बली केवा ठे ? तो के अन्नयं अणहं केण
 सात प्रकारना ज्ञये करी रहित एवा, तथा पापरहित
 एवा, तथा विषय (मैथुन) रहित एवा, तथा रोगरहि
 त एवा, तथा कोइथी नहीं जीताएला एवा, श्री अ
 जितनाथ तेमने सादरपणे हुं नमस्कार करुं ॥२१॥
 आ विद्युद्विललित उद ठे ॥

आगया वर विमाण केण आव्या ठे देवताना त
 सुदाय श्री शांतिनाथनी समीपे ते केवी रीते ? तो के

श्रेष्ठ विमान, मनोहर सोनामय रथ तथा घोड़ाना स
मूहना सेंकरोए करीने उतावला वेगे, तथा सत्वर आ
काशायी उतरवुं तेणे करीने खलजलवायी अरहां परहां
हालतां चंचल एवां काननां कुंरुल तथा बाजुबंध तथा
सुकुटे कगी शोजायमान अइ एवी ठे मस्तकनी माला
जेमनी एवा देवो ठे ॥११॥ आ वेष्टकनामा ठंद ठे.

जं सुरसंधा सासुरसंधा के० जे जगवंतने समी
पे वैमानिक देवसमूह आव्या ठे ते केवा ठे ? तो के
जवनपति आदिक देवना समूहे करी सहित एवा ठे,
तथा वेररहित ठे, तथा सदृजक्तिये करीने सहित अ
ने आदरे करी शोजित तथा उतावले करी एकठा म
ट्या एवा रूनी रीते अतिहाये करी सुविस्मितज जेम
होय तेम सर्व हाथी घोडा वगेरे लइकरना समूहवा
ला, तथा श्रेष्ठ एवा सोने तथा रत्ने करीने प्रकृष्ट रूप
युक्त कर्षां एवां जलहलतां आजरखे करी देदीप्यमान
ठे अंगो जेमनां एवा, तथा शरीरे करीने सम्यक् प्र
कारे नमेला तथा जक्तिने वडो आवेला एवा, तथा बे
हाथ जोडी कपादे लगाऊने कर्षो ठे मस्तके करीने

प्रणाम जेसणे एवा ठे ॥ २३ ॥ आ रत्नमाला उंद ठे.

वंदिकण थोऊणतो जिणं के० एवी रीते वंदन करीने तेवार पठी वली त्रणवारज प्रदक्षिणा करी ठे जेने, अर्थात् त्रण प्रदक्षिणा करीने नपासित एवा देवो ते श्री शांति जिन ते प्रत्ये वली स्तुति करीने फरी ने पोताने स्थानके जवाना अवसरे श्री शांतिजिन प्रत्ये प्रणाम करीने सुर असुर जे देवो ठे ते हर्षित थ या अका पोताना जवन प्रत्ये ते स्थानकयी जाता ह वा ॥ २४ ॥ आ क्षिप्तकनामा उंद ठे.

तं महासुणिमहंषि पंजली के० ते शांति जिनने हुं पण जोरया ठे हाथ जेणे एवो उतो नमस्कार क हुं. ते शांतिजिन केवा ठे? तोके मोटा मुनिल ठे शिष्य जेसना एवा ठे, तथा राग के० माया अने लोजरूप राग तथा दोस के० क्रोध अने मानरूप द्वेष, जय, अने मोह के० अज्ञाने करी वर्जित ठे, अथवा देवदानव अने नरेंडोवमे वंदित ठे अथवा देवदानव अने नरेंड तथा तेना आश्रित लोकोने वंदि के० वंदिखानारूप संसार तेने अं के० दं एटले खंमन करे एवा ठे, तथा प्र

धान एवं मोहोदुं ठे तप जेमनुं एवा ठे ॥ १५ ॥ आ
हितक नामा छंद ठे ॥

गाथा ५६ थी ३० सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

अंबर-आकाश	गायलआहिं-शरीर	चित्तरुखरा-चित्रा
अंतर-अंदर, वचमां	वाली	क्षर
विआरणिआहिं-वि	पसिठिल-घणी ढीली	पाय-किरण, पग
चरवावालावडे	मेइल-मेखला	वंदिआहिं-समूहवा
ललिय-रमणिक	सोहिअ-शोभित	ला, नमेला
हंसवहु-हंसी	तडाहिं-भागवल्ली	जस्स-जेना
गामिणिआहिं-जला	खिखिणि-किंकिणी	ते-ते वे
री वडे	नेउर-नेपुर	सुविलया-अतिशे प
पीण-पुष्ट	स-रुडुं	राक्रमवाला, रुडी
सोणि-केहेडनो भाग	तिलय-तिलक	गति वाला
थण-स्तन	वलय-कंकण	अप्पणो-पोतालां
सालिणिआहिं-शो	भूसणिआहिं-शोभा	निहालएहिं-ललाट
भती	वाली	वडे
लोअणिआहिं-आं	रइकर-प्रीतिकरनार	मंडण-आभूषण
खोवाली	चउर-चतुर	उहुण-रचना
दीवयं-दीपक छंद	मणोहर-मन हरनारी	पगारएहिं-प्रकारो
भर-भार	दंसणिआहिं-दर्शन	वडे
विणमिअ-वधारेनमेला	वाली	केहिं केहिंवि-केवाकेवा

अवंग-अपांग(वे आं खोना अंतरमां अथ वा वच्चेना भागमां पत्तलेह-पत्र लेख (क स्तुरीनां टपकां वगरे) नामएहिं-नामवाला चिल्लएहिं-देदीप्यमा न शणमारनी रचनाए संगय-सहित अंगआहिं-अंगवाली तन्निविह-व्याप्त	आगयाहिं-आवेलीओ पुणोपुणो-वारंवार नारायओ-नाराचक धुअ-खंखेरी काढी नांखेलो किलेसं-कलेश वंदिअस्सा-वंदन करे ला एवा जस्स-जेथी देववहुहिं-देवांगनाओ पणमिअस्सा-प्रणाम करेला एवा	सासणयस्सा-शासन वाला पिडिअआहिं-एकठी थएली देववर-नर्त्तक वादक देवो ज्जरसा-अप्सराओ बहुयाहिं-घणीओए पांडियआहिं-डाहीओ वहे भासुरयं-भासुरक
---	---	---

अंबरंतर विअारणिआहिं, ललि
अ हंसवहु गामिणिआहिं ॥ पी
ण सोणि यण साळिणिआहिं,
सकल कमल दल लोअणिआ
हिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरं
तर यणजर विणमिअ गायलआ
हिं ॥ मणि कंचण पसिठिल महे

ल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वर
खिखिणि नेजर सतिलय वलय
विजूसणिआहिं ॥ रडकर चजर
मणोहरसुंदर दंसणिआहिं ॥१७॥
चित्करा ॥ देव सुदरीहिं पाय
वंदिआहिं वंदिया य जस्स ते सु
विक्रमा कमा अप्पणो निमालए
हिं मंमणोद्धण पगारएहिं केहिं
केहिंवि अप्वंग तिलय पत्तलोह ना
मएहिं विद्धएहिं संगयंगयाहिं न
त्ति संनिविठ वंदणागयाहिं हुंति
ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ १८ ॥
नारायण ॥ तमहं जिणचंदं, अ
जिअं जिअ मोहं ॥ धुय सब
किलेसं, पयउ पाणामामि ॥१९॥

नंदित्रयं ॥ थुत्र वंदित्रस्सा रिसी
 गण देवगणोहिं, तो देववहूहिं पय
 न पणमित्रस्सा ॥ जस्स जगुत्तम
 सासण यस्सा, जत्ति वसागय
 पिंमित्रयाहिं ॥ देव वर च्चरसा व
 हुयाहिं, सुरवररइगुण पंमियत्रा
 हिं ॥ ३० ॥ ज्ञासुरयं ॥

अर्थः—अंबरंतर विआरणिआहिं केण्आ आगलनी
 गाथामां कहेशे एवा प्रकारनी देवांगनाले जेमना
 चरणाकमलमां वंदन करयुं ठे, तेम ठतां पण जेमनुं
 मन किंचित् पण विकारने पास्युं नहीं, एवा श्री अ
 जितनाथ जगवानले हुं नमस्कार करुंठुं. ते देवांगना
 ले केवी ठे ? तो के आकाश मार्गने विषे विचरवानुं
 ठे शील जेमनुं एवी, तथा रमणिय एवी हंसीउनी
 पेरे गमन करवानुं ठे शील जेमनुं एवी, तथा पुष्ट ए
 वा केहेरुना ज्ञाग अने स्तने करी शोचती एवी त
 था संपूर्ण कमलनां पत्र समान ठे लोचन जेमनां ए

વી છે ॥ ૨૬ ॥ આ દીપક ઠંદ છે.

પીણ નિરંતર અણગ્નર કેળ વલી તે દેવાંગનાલ કેવી છે ? તો કે મોહોટા અને કામી પુરુષના હૃદયને આલ્હાદકારી એવા અને નિબિરુ ગાઠ એવા સ્તનોના ઝારે કરીને વિશેષે કરી નમેલાં છે ગાત્રો જેમનાં એવી, તથા મણિ અને સુવર્ણની કરેલી એવી અને પ્રકર્ષે કરી શિથિલ એવી મેઘલાલે કરી સુશોભિત છે કેહેરુ નો પ્રદેશ જેમનો એવી, તથા શ્રેષ્ઠ એવી કિંકિણી અને નેપુર વલી મનોહર તિલક તથા કંકણ એવાં આઝૂ ષણે કરીને વધારે સુશોભિત એવી, તથા પ્રીતિ કરનાર એવું અને ચતુર પુરુષના મનને હરણ કરનારું એવું સુંદર છે દર્શન જેમનું એવી, તે દેવીનું છે ॥ ૨૭ ॥ આ ચિત્રાક્રમ ઠંદ છે ॥

દેવ સુંદરીહિં પાથવંદિઆહિં કેળ પોતાના શરીરને વિષે પહેરેલાં ઝૂંપણોના અગ્રવા શરીરના કિરણોનાં સમૂહ છે જેમને એવી દેવાંગનાલ છે તેમણે વંદન કર્યાં, તે શું વંદન કર્યાં ? તો કે જે જગવંતનાં તે પ્રસિદ્ધ અગ્રવા રૂઠી છે ગતિ જેમની એવાં, અને રૂઠું છે પરાક્ર

म जेमनुं एवां चरणार्विंद तेने वंदन कर्यो; ते शोणे क
री वंदन कर्यो ? तो के पोताना ललाटोए करी. ते दे
वीलु केवी ठे ? तो के जेमना शरीरने विषे आच्युष
एानी रचनाना प्रकारो, ते केवा केवा अपूर्व प्रकारो ?
ते कहे ठे. अपांग जे नेत्रना प्रांतने विषे जे अंजननी
रचना तथा टीलां तथा शरीरने विषे कस्तुरी वगेरेए
करेलां टवकां इत्यादिक नाम ठे जेनां एवा, देदीप्यमा
न मंरुननी रचनाये करी सहित ठे शरीरनां अवय
व जेमनां एवी देवांगनालु ते ज्ञक्रिये करी व्याप्त थ
की वंदनने माटे आवेली एवी ठे, ते देवांगनालु ते पू
र्वोक्त तमारां चरणार्विंदने अतिशय श्रद्धाए करी वारं
वार वंदन करे ठे ॥ १८ ॥ आ नारायक ठंद ठे ॥

तमहं जिणचंद्रं केण ए पूर्वोक्त सामान्य केवली
ने विषे चंद्रमा समान एवा, तथा जीत्यो ठे मोह ए
टले अज्ञान जेमणे एवा, तथा टाळ्या ठे शारीरिक
अने मानसिक सर्व क्लेशं जेमणे एवा श्री अजित
नाथ नामा बीजा तीर्थकर तेमने प्रयत्ने (मन, वचन,
अने कायाना उद्यमे) करी युक्त थको एवो हुं नम

स्कार करुं ॥ ३९ ॥ आ नंदितक नामा ठंद ठे ॥

थुअ वंदिअस्सा केण ऋषिअना समूह तथा देव
तालना समूह तेणे स्तुति करेला अने वंदन करेला ए
वा, अने ते पठी देव वधुए प्रणाम करेला एवा, तथा
जे अकी जगत् सुक्ति पामवाने शक्तिमान थाय ठे
साटे उत्तम ठे शासन जेमनुं एवा श्री शांतिनाथ जे
तेमनां चरणार्विंदने देव नर्त्तकिल जे ठे तेणे नाच क
री वंदन कर्यां, तेने हुं पण नमस्कार करुं. हवे ते देव
नर्त्तकिल केवी ठे ? तो के जक्ति वझे करी देवलोकथी
आवीने एकठी मलेली एवी, अने नर्त्तकबादक देवो अने
नाचमां कुशल एवी अस्सराळ तेमना घणालेण मलेली
एवी, अने देवतालने जे अकी प्रीति थाय एवा गुणाने
विषे दाही एवील ठे ॥ ३० ॥ आ ज्ञासुरक ठंद ठे ॥

गाथा ३१ थी ३५ सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

वंस-वांस

तंति-बीणा

ताल-चपटी, पडह

मेलिए-मलेछते

तिउरुखर-त्रिपुष्कर

वाजिन

मिसए-मिश्रित

समाणणे-समान क-

रवामां

सज्ज-बहुज, अधिक
गुणवाळुं
गीय-गीत
जाल-जाल
घांटेआहिं-घुमरीओ
कलाव-अलंकार
देवनहिआहिं-देवन
टिओ वडे
हाव-बहु कामविकार
भाव-अल्पविकार
विभ्रम-विलास
नञ्जिऊण-नाचीने
हारएहिं-विक्षेपेकरिने
तयं-ते
तिलोय-त्रिभुवन
कारयं-करनार
पसंत-प्रशांत थया छे
एत हं-आ हुं
छस-छप्र
चामर-चामर
पहाग-पताका(धजा)

जूव-यूप(यग्ननो स्थं
भ)
जव-जव
मंडिया-सुशोभित
झयवर-श्रेष्ठ ध्वज
मगर-मगरमच्छ
सिरिवच्छ-श्रीवत्स
सुलंछणा-सारालंछन
मंदर-मेरुपर्वत [वाला
दिसागय-दिग्गज
सथियअ-साथीआ
चक्र-चक्र
अंकिया-आंकेला
लढा-शोभायमान
सम-सरस्वी रीते
प्पइहा-रहेला
असम-निरुपम
प्पइहा-प्रतिष्ठा
दुह-दुष्ट
जिहा-भोटा
पसाय-प्रसाद

सिहा-श्रेष्ठ
तवेण-तपेकरी
पुहा-पुष्ट
सिरीहिं-रुक्षी वडे
इहा-इष्ट
रिसीहिं-ऋषिओए
जुहा-सेवाएला
बाणवासिआ-वनघा
सिका छंद
पावया-पाप, पमाड
नारा
सं-सुखने माटे, सम्य
क प्रकारे
थुया-स्तवाएला
हुंतु-थाओ
सुहाण-सुखना
दायया-देनारा
अपरांतिका-अपरां
तिका छंद
जुअलं-जुगल, जोडळुं
गइं-गति
सासयं-शाश्वती

वंस सह तंति ताल मेळिए तिळ

श्कराजिराम सह मिसए कए
 अ सुइ समाणणे अ सुघ सज्ज
 गीअ पायजाल घंटाआहिं ॥ व
 लय मेहला कलाव नेउराजिराम
 सह मिसए कए अ देव नद्विआ
 हिं हाव नाव विप्रम प्पगारणहिं ॥
 नच्चिऊण अंग हारणहिं वंदिआ
 य जस्स ते सुविक्रमा कमा तयं
 तिलोय सच्च सत्त सांत कारयं ॥
 पसंत सच्च पाव दोसमेसहं नमामि
 संति सुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारा
 यण ॥ उत्त चामर पद्माग जूव ज
 व मंदिआ, ऊयवर भगर तुरय
 सिरिह सुलंठणा ॥ दीव समु
 ह मंदर दिसागय सोहिआ, सत्ति
 अ वसह सीह रहचक वरंकिया

॥ पाठांतर सिखिह्न सुखंढणा

॥ ३२ ॥ ललित्रयं ॥ सहाव लघ

समप्पइघा, अदोस डघा गुणेहिं

जिघा ॥ पसाय सिघा तवेण पु

घा, सिरीहिं इघा रिसीहिं जुघा

॥ ३३ ॥ वाणवासिअ ॥ ते तवे

ण धुअ सव पावया, सव लोअ

हिअ मूल पावया संधुअ अजि

अ संति पायया, हुंतु मे सिव सु

हाण दायया ॥ ३४ ॥ अपरांति

का ॥ एवं तव बल विजलं, युअं

मए अजिअ संति जिण जुअलं

॥ ववगय कम्म रय मलं, गइं ग

यं सासयं विजलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥

अर्थः—वंस सह तंति केण इवे ते देव नत्तकिअए

केवा प्रकारना गीत नृत्यथी प्रचुना चरणनुं वंदन क

र्थु ? ते कहे ठे. वांसनो शब्द, वीणा, चपटी अथवा
 परुहादिक मले ठले एटले एकाकार थये ठते, वली
 त्रिपुष्करनामा वाजित्र विशेष तेना मनोहर शब्दे क
 रीने मिश्रित करे ठते, वली ते सांजलवाने कान स
 मान करे थके शुद्ध प्ररूज ते मोर केका वगेरेना श
 ब्दे करीने, अथवा सज्ज एटले अधिक गुणवाला एवा
 गीते करी सहित एवी जे पमने विषे जालना आकार
 वाली घुघरीनुए करी उपलक्षित ठते, तथा सोनानुं कं
 कण, केरना कंधोरा, कलाव अलंकार विशेष, जांऊरना
 मनोहर शब्दे करी मिश्रित करे ठते, वली हाव, ज्ञाव,
 विभ्रम एटले विलास, तेमना प्रकारे ठे जेने विषे ए
 वा जला अंगना विक्षेपे करीने देवनर्तकिनु जे देवां
 गना तेमणे पूर्वोक्त प्रकारे नाच करीने, उत्तम पराक्रम
 वाला शांतिनाथजीना ते पराक्रमे करी सहित एवा
 चरणोने वंदन कर्यां ठे एवा, ते त्रिजुवनना सर्वे प्रा
 णीनुने शांतिना करनार एवा, अने प्रशांत (घणा शांत)
 थया ठे सर्व पाप तथा रागादिक दोष जेथी, एवा उ
 त्तम शांतिजिन प्रत्ये आ प्रत्यक्ष हुं नमस्कार करुं तुं
 ॥ ३१ ॥ आ नाराचक उंद जाणवो ॥

उत्तचामर पद्मग के० उत्र, चामर, पताका, (धजा) यूप, जव एवं लक्षणोए करीनेमंकित (सुशो जित) एवा, तथा सिंहादि रूपना लक्षणवाला ध्वजवर, मगरमच्छ, घोडा, श्रीवत्स, ते उत्तम पुरुषोना बहस्थल मां होय ठे अने पगमां पण अवानो संजव ठे. ते सर्व शोजायमान ठे लांठन जेमने एवा, तथा द्वीप समुद्र मेरू पर्वत, प्रधान हस्ती एवा लक्षणो करी शोजित एवा ठे. तथा श्रेष्ठ एवा साधित्रा, वृषज, सिंह, रथ अने चक्र तेणे करी अंकित एवा, पाठांतरे लक्ष्मी, वृक्ष (कल्पवृक्षा दिक) तेनां जलां लांठनो ठे जे श्री शांतिनाथना हाथ पगादि अंगोने विषे एवा ठे॥३९॥आ ललितक ठंड ठे॥

सहाव लछा सम प्पइछा के० वली केवा ठे ? तो के स्वजावे करीने शोजायमान ठे तथा निरूपम ठे प्रतिष्ठा जेमनी एवा, अथवा सरस्वी ज्मुमिने विषे रहे ला एवा ठे, तथा रागादि दोषे करी अडुष्ट एटले वि कारे रहित ठे, तथा गुणे करीने मोहोटा ठे, तथा प्र सादे (रागादिकना क्षयणी निर्मलपणे) करी श्रेष्ठ ठे,

तथा तपे करीने पुष्ट ठे तथा लक्ष्मीए करीने एइ ठे, अथवा लक्ष्मी देवीए जेने पूज्या एवा ठे, तथा मुजिल्लए जेमने निरंतर सेव्या एवा ठे ॥३३॥ आ वनवासिका उंद ठे ॥

ते तवेण धुय सब केण ते पूर्वे कहा एवा, तथा तपे करीने टाळ्युं ठे कर्मरूप सर्व पाप जेमणे एवा, वली केवा ठे ? तो के सर्व लोकने हितकारक जे मोह तेनुं मूल कारण जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र तेने पमाननारा ठे, तथा सुखने अर्थे स्तवन कर्युं ठे जे मनुं एवा, जे श्री अजित शांति पूज्यपाद, ते मने शीव सुखना देनारा थाले ॥३४॥ आ अपरांतिका उंद ठे ॥

एवं तव बल विजलं केण ए प्रकारे तपोबले करीने विशाल एवं, अने गयुं ठे कर्मरूप रज अने मल जेमने एवं, तथा शाश्वती एवी अने विस्तीर्ण सुख ठे जेने विषे एवी जे गति, तेने प्राप्त घयुं एवं अजित शांति जिन युगल एटले बीजा अने सोलसा तीर्थकरनुं युगल तेने सें स्तुति कर्युं ठे ॥३५॥ आ गाथानामक उंद ठे ॥

गाथा ३६ थी ४० सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

मुख-मोक्ष
 सुहेण-सुखवडे
 परमेण-उत्कृष्ट [हित
 अविसायं-विषाद र
 नासेउ-नाश करी
 कुणउ-करो
 परिता-सभा
 वि-पण
 पसायं-प्रसाद
 मोएउ-हरख आपो
 नंदि-समाधि
 पावेउ-प्राप्त करो
 नंदिसेण-नंदिषेणकावि
 अभिनंदि-सर्व प्रका
 रना आगंदने
 सुहनंदि-सुख वृद्धि
 परिखअ-पाखीपडि
 क्कमणामां

चाउम्मासे-चोमासी
 पडिक्कमणामां
 संवच्छरिए-संवच्छरि
 पडिक्कमणामां
 अवस्स-निश्चे
 भणिअव्वो-भणवो
 सोअव्वो-सांभलवो
 सव्वेहिं-सर्व संघे
 निवारणो-निवारण
 करनार
 पढइ-भणे
 निसुणइ-निरंतर सां
 भले
 उभओ-वे
 काले-वखत
 थअं-स्तवनने
 न-नथी

हु-निश्चे
 पुव्व-पूर्वना
 उप्पत्ता-उत्पन्नथएला
 विनासंति-नाश पा
 मे छे
 इच्छह-इच्छोछो
 परमपयं-मोक्षपद
 अहवा-अथवा
 कीर्त्ति-कीर्त्ति
 सुविधथडं-अतिविस्ता
 र पायेली
 भुवणे-जगतमां
 उद्धरणे-उद्धार कर
 नार
 वयणे-वचने
 आयरं-आदर
 कुणह-करो

तं बहु गुणप्पसायं, सुस्सु सुहेण
 परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे वि

(४४ए)

सायं कुण्ड अ परिसा वि अ
पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोए
उ अ नदिं, पावेउ अ नदिसेण
मज्जिनदिं परिसा वि अ सुह
नदिं, मम य दिसउ संजमे नदिं
॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पस्किअ चाउ
म्मासिय, संवठरिए, अवस्स न
णिअधो ॥ सो अधो सवोहिं, उ
वसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥
गाहा ॥ जो पठइ जो अ निसुणइ,
उत्तन काळंपि अजिअ संति
थयं ॥ न हु इति तस्स रोगा, पुट्टु
प्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥
जइ इत्तह परमपयं, अहवा की
तिं सुविठ्ठं जुवणे ॥ ता तेत्तुकु
धरणे, जिण वयणे आयरं कुण

ह ॥ ४० ॥ गाथा ॥

अर्थः—तं बहु गुणप्पसायं केण वली ते पूर्वोक्त
जिनयुगल केवुं ठे? तोके अनेक गुणोना प्रसाद ठे जे
मने एवं, तथा परम उत्कृष्ट एवा मोक्ष सुख जे तेणे
करी नथी विषाद जेमने एवं जिनयुगल ते मारा वि
षादने नाश करो. वली आ प्रस्तुत स्तव सांजलनारी
जे विद्वानोनी सज्जा ते पण महारी उपर प्रसाद करो
॥ ३६ ॥ आ गाथा ठंद जाणवो ॥

तं मोएण अ नंदिं केण ते अजितशांतियुगल म
ने हर्ष आपो अने सर्व लोकोने समाधिने प्राप्त करो व
ली आ स्तवन करनार नंदिषेण कवि तेने सर्व प्रकारे
सानंद समृद्धिने पमाप्सो, तथा आ स्तवन सांजलनार
जे श्रोताजननी पर्वदा तेने पण सुख वृद्धि आपो. व
ली मने सत्तर प्रकारनो जे संयम तेने विषे आनंदने
आपो ॥ ३७ ॥ आ गाथा ठंद ठे ॥

पस्सिअ चाजम्मासे केण पाखी पस्सिक्कमणाने
विषे तथा चोमासी पस्सिक्कमणाने विषे तथा सांवत्स
री पस्सिक्कमणानी रात्रीने विषे निश्चे जणवो ते एक ज
णे कहेलो एवो जे आ स्तव तेने सर्व संघे सांजलवो

(४५१)
कारणके ए स्तव जे ठे ते विघ्न निवारण करनार ठे
॥ ३७ ॥ गाथा ॥

जो पढइ केण जे कोइ पुरुष अजितशांतिना
स्तवनने बे कालने विषे जणे ठे, तथा जे वदी निरंत
र सांजले ठे, तो ते जणनार अने सांजलनार पुरुषने
रोग निश्चे होता नथी अने पूर्वे उत्पन्न अएला रोग प
ए विशेषे करीने नाश पामे ठे ॥३८॥ आ गाथा उंद ॥

जइ इच्छा परमपर्यं केण जो मोहनी इच्छा क
रो गो. अथवा त्रण जुवनने विषे विस्तार पामेली ए
वी कीर्त्तिनी इच्छा करो गो तो त्रण लोकना उद्धार क
रनारां एवां जिन वचनोने विषे आदरसत्कार करो
॥ ४० ॥ गाथा उंद ॥

॥ अथ श्री बृहत्तान्ति स्तवना बुटा
शब्दना अथ ॥

भो भो-हे, अरे
शृणुत-सांभलो
वचन-वचनने

प्रस्तुत-अवसर योग्य

सर्व-सबलुं

एतत्-आ

ये-जे

यात्रायां-जात्रामां

गुरोः-गुरु (नी)

आर्हतां-वितराग

भाजः-भजनारा

तेषां-तेमनी

भवतां-आप (नी)
अर्हद्-अरिहंत
प्रभावात्-प्रभावथी
आरोग्य-रोगरहित
पणुं

करी-करनारी
विध्वंस-नाश
हि-जे माटे
संभवानां-उत्पन्न थ
एला (नी)

तीर्थकृतां-तीर्थकरना
जन्मनि-जन्म वखते
प्रकंप-कांपवुं
अनंतरं-पछी
अवधिना-अवधिज्ञाने
विज्ञाय-जाणीने
सौधर्म-पेहेला देवलो
क (नो)

अधिपतिः-इंद्र
सुघोषा-सुघोषा
घंटा-घंट
चालन-वगाड्या
सह-साथे

समागत्य-आवीने
भट्टारक-भट्टारक(ने)
कनकाद्रि-मेरु पर्वत
(ना)

शृंगे-शिखर उपर
विहित-करेल
उद्धोषयति-उद्धोष
णा करे छे, जाहेर,
पोकारे छे

यथा-जेम
ततः-तेम
कृत-करेली
अनुकार-नकल
महाजनः-देवसमूह
गतः-प्रवर्यो, गयो
सः-ते
पंथाः-मार्ग
समेस-आवीने
स्नात्र-न्हवण,न्हवा
डवुं

पीठे-आसनपर
उद्धोषयामि-जाहेर
करुं छुं

तत्-ते, तेथी
महोत्सव-मोटो ओ
छव

इति-एम
कृत्वा-करीने
करणं-कान
दत्वा-देइने
निशम्यतां-सांभलो
पुण्याहं-पवित्र दिवस
प्रीयंतां-खुशी थाओ

भगवंतः-भगवंत
अर्हन्तः-अरिहंतो
सर्वज्ञ-सर्व जाणनार
दर्शिनः-देखनार
त्रि-त्रण
लोक-जगत्
नाथा-स्वामीओ
महिता-पूजाएला
लोकेश्वरा-जगतना
इश्वर

उद्योत्कराः-उद्योत
ना करनारा

॥ अथ बृहत्ताति ॥

ओ ओ ऋव्याः शृणुत वचनं, प्र
स्तुतं सर्वमेतत्; येयात्रायां त्रिन्नु
वनगुरोरार्हतां ऋक्तिन्नाजः ॥ तेषां
शांतिर्नवतु ऋवतामर्हदादिप्रजा
वा; दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्ले
शविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ गद्यं ॥ ओ
ओ ऋव्यलोका इह हि ऋरतैरा
वत विदेह संऋवानां समस्ततीर्थ
कृतां जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमव
धिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सु
घोषाघंटाचालनानंतरं सकलसुरा
सुरैर्दैः सह समागत्य सविनयमर्ह
द्भृष्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकादि
शृंगे विहित जन्मान्निषेकः शांति

मुद्घोषयति यथा ततोऽहं कृतानु
कारमिति कृत्वा महाजनो येन
गतः स पंथाः इति ऋव्य जनैः
सह समेत्य स्नात्र पीठे स्नात्रं वि
धाय शांतिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजा
यात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति
कृत्वा कर्णदत्त्वा निशम्यतां निश
म्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं, पु
ण्याहं, प्रीयंतां, प्रीयंतां, ऋगवंतो
हंतः, सर्वज्ञाः, सर्व दर्शिनस्त्रिलो
कनाथास्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोक
पूज्यास्त्रिलोकेश्वरा स्त्रिलोकोद्यो
त्कराः ॥

अर्थः--ऋग्वेदो ऋव्या के० हे ऋव्य प्राणीन ? तमे
अवसरने योग्य एवं अने साद्यंत एवं तथा आ समीप
तरबर्त्ति एवं वचन जे ठे तेने सांज्ञलो ! ते समीपतर

वर्ति एवं कथुं वचन ? तोके वीतराग ते ठे देव जेम
 ने एवा प्रसिद्ध तमे, ते तमारी शांति हो. ते शांति
 शोणे करीने थाय तो के अर्हत्, सिद्ध, आचार्य उपा
 ध्याय, साधु, तेमना प्रज्ञाव थकी, वली ते केवा ज्ञ
 व्यप्राणीत् ? तोके त्रण ज्ञुवनना गुरु जे जगवान ते
 मनी यात्राने विषे ज्ञक्तिना ज्ञजनारा ठे. ते ज्ञव्यप्रा
 णीत्तने शांति थाय. ते केवी शांति ? तो के आरोग्य ल
 द्दमी, धीरज अने बुद्धि ए चार वानाने करनारी तथा
 क्लेशना नाशनी कारण ज्ञूत एवी ठे ॥ १ ॥

ज्ञो ज्ञो ज्ञव्यलोकाः केण हे ज्ञव्यलोको जे कार
 ण माटे आ ज्ञरत, अरौवत अने महाविदेहने विषे उ
 त्पन्न थया एवा सधदा तीर्थकरोना जन्मने वखते सौ
 धर्माधिपतिनुं आसन कंपायमान थयुं ते पढी ते सौ
 धर्मेण अवधिज्ञाने करीने जिन जन्मने जाणीने सुयोषा
 घंटाना वगारुया पढी सर्व देवता तथा पातालवासी
 देवोना इंझेनी साथे त्यां आवीने स्तुतिये करीने अर्ह
 त् रूप ज्ञद्वारक तेने ग्रहण करीने मेरुपवतना शिखर
 उपर जइने निर्माण कयो ठे स्नात्र महोत्सव जेणे ए
 वो ठतो ते स्नात्रनी समाप्ति थये ठते मोटा शब्दे

शांतिने पठन करे ठे. ते माटे हुं पण तेवीज नकल जेस आय ए प्रकारे करीने तथा इंद्रादिक देव समूह जे मार्गे प्रवर्त्यो, तेज मार्गने आपणे पण अनुसरवुं एम विचारीने ज्ञव्य प्राणीनु जिनालयने विषे रूमि रीते एकठा मखीने स्नात्र पीठने विषे श्रीजिनने स्नात्र करावीने शांतिना पाठने हुं जे मोटा शब्दे ज्ञणुं (उद्घोषणा करुं). ते तेमनी पूजा यात्रा, स्नात्रादि, महोत्सवानंतर ए प्रकारे करीने ते उद्घोषणा कान देइ (सावधान अइ) सांजलो सांजलो. स्वाहा ए मंत्राकर ठे उँकार पंच परमेष्टि वाचक ठे. तेने उच्चार करीने कहे ठे, के हे ज्ञव्य प्राणीनु! आज पुण्यनो दिवस ठे, पुण्यनो दिवस ठे, (तथा) जगवंत तीर्थकरो ते अति संतुष्ट आनु, अति संतुष्ट थानु, ते अर्हत जगवान् केहे वा ठे ? तो के सर्वज्ञ ठे. केवलदर्शने करीने सर्वने जुए ठे तथा त्रणलोकना नाथ एवा तथा त्रणलोके पुष्पादिके करी अर्चित एवा, अने वली त्रण लोकने पूजन करवा योग्य एवा, तथा त्रण लोकोना स्वामी एवा, तथा त्रणलोकना प्रकाशकारक ठे ॥

तुटा शब्दना अर्थ

अंताः-अंतमां जेषते	करनारा	मार्गेषु-मार्गमां
एवा	मुनयः-साधुओ	रक्षंतु-रक्षणकरो
जिनाः-तीर्थकरो	प्रवरा-श्रेष्ठ	कांतारेषु-वनोष्मां
शांताः-शांत थएला	दुर्मिक्ष-दुकाल	
शांतिकराः-शांतिना	दुर्ग-विकट	

ॐ ऋषज्ञ अजित संज्ञव अग्नि
 नंदन सुमति पद्मप्रज्ञ सुपार्श्व चंञ
 प्रज्ञ सुविधि शीतल श्रेयांस वा
 सुपूज्य विमल अनंत धर्म शांति
 कुंथु अर महि मुनिसुव्रत नमि ने
 मि पार्श्व वर्धमानांता जिनाःशांताः
 शांतिकरा ज्वंतु स्वाहा ॐ मुन
 यो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्जिह्व
 कांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नि
 त्यं स्वाहा ॥

अर्थः-ॐ ऋषज्ञ अजित के० वली ते केवा ठे ?

तो के शांतिने पामेला तथा श्री ऋषभदेवजी जेमां
आदि ठे अने श्री वीरस्वामी अंतमां ठे, एवा चोवीश
तीर्थकरो शांतिना करनारा हो. लुँ कार मंगलार्थज्ञान
वो. तथा मुनियोने विषे श्रेष्ठ साधुज जेने शत्रुनो क
रेलो पराजव तथा दुष्काल तथा चोर कांटादिके नग
रा मार्गने विषे, तथा अरण्य मार्गने विषे तमोने निरं
तर रक्षण करो ॥

बुटा शब्दना अर्थ

मेधा-धारण करवा	निवेशनेषु-मुकाम	ग्रहित-लीधेलुं
नी बुद्धि	(करवा)मां	नामानः-नामवाला
प्रवेशन-गृह प्रवेश	सु-रुडं	

लुँ ह्रीं श्री धृति मति कीर्ति कां
ति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्यासाध
न प्रवेशननिवेशनेषु सुगृहीतनामा
नो जयंतु तेजिनैः ॥

अर्थः-लुँ ह्रीं श्री के० लुँ कार परमात्मा वाचक
प्रणवबीज ठे ह्रीं कार मायाबीज ते वश करनार ठे.
श्री कार लक्ष्मीबीज ते इव्यागमन कारण ठे. धैर्य,

(४५९)

मति, यश, शोभा, बुद्धि, संपत्ति, धारण करवानी
बुद्धि, चौद विद्यानुं साधन, तथा गृह प्रवेश तथा
सुकामने विषे रूढुं ग्रहवा योग्य नाम ठे जेमनुं एवा
ते पूर्वोक्त तीर्थकरो ते सदैव जयवंता वर्तो ॥

तुटा शब्दना अर्थ

रोहिणी१-देवीनुं नाम छे
षोडस-शोल
प्रभृति-विगेरे

चातुर्वर्ण्यस्य-चार प्रकारना
श्रमण-साधु

ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशंखला व
ज्जांकुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता का
ली महाकाली गौरी गांधारी स
र्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरुट्या
अक्षुप्ता मानसी महामानसी षो
डश विद्या देव्यो रक्षंतु वो नित्यं
स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृ

१ रोहिणीथी महामानसी सुधी सोल देवीयोनां नाम छे.

ति चातुर्वर्ण्यस्य श्री श्रमण संघ

स्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु॥

अर्थः--ॐ रोहिणी के० वली रोहिणीश्री आरंजी

ने मूलभां लखेली एवी महामानसी देवीपर्यंत शोल
विद्याधिष्ठात्री देवीयो तमोने निरंतर रहण करो. ए

ठेकाणे स्वाहा जणवुं. कोइ ठेकाणे ॐ स्वाहा एवो पण
पाठ ठे. अहीआं ॐ कार ते मंगलार्थ जाणवो. पढी आचा

र्यने उपाध्याय प्रमुख चार प्रकारवाला सुशोभित एवा
श्रमण (जे श्री वीर जगवान् तेमनो आचार्य उपाध्या

य, साधु अने साध्वी ए रूप) संघने शांति हो, तुष्टि
आलं धर्मनी पुष्टि आलं ॥

बूटा शब्दना अर्थ

अहाः-नवग्रहो
 अंगारक-मंगल
 बुध-बुध
 बृहस्पति-गुरु
 शुक्र-शुक्र
 शनैश्वर-शनि
 राहु-राहु

केतु-केतु
 सहिताः-परस्परमल्या
 लोकपाला-लोकपाल
 साथे
 सोभ,)
 यम)
 वरुण)
 कुवेर)

वासव-इंद्र
 आदिस-सूर्य
 स्कंद-स्कंद देव
 विनायक-गणेश
 उपेताः-सहीत
 अन्येऽपि-बीजा पण
 ग्राम-गाम

देवतादय-देवता वि	अक्षीण-अखुट	कोष्ठागारा-कोठार
गेरे	कोश-भंडार	नरपतयः-राजाओ

ॐ ग्रहाश्वंङ् सूर्यांगारक बुध बृह
 स्पति शुक्र शनैश्वर राहु केतु स
 हिताः सलोकपालाः सोम यम
 वरुण कुबेर वासवादित्य स्कंद वि
 नायकोपेताः ये चान्येऽपि ग्राम न
 गर क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां
 प्रीयंतां अक्षीण कोश कोष्ठागा
 रा नरपतयश्च ज्वंतु स्वाहा ॥

अर्थः--ॐ ग्रहाश्वंङ् के० हवे पूर्वाक्त संघने चंड,
 सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्वर, राहु अनेकेतु
 ए नवग्रहो, परस्पर मढ्या तेवा, सोम, यम, वरुण, अने
 कुबेर ए चार लोकपाले सहित तथा इंड वार प्रकारना
 सूर्य, स्कंद अने गणेश तेणे करी मढ्या एवा सर्व देव
 तानुवली बीजा पण गाम, नगर, तथा क्षेत्रना देवतादिक
 जे ठे. ते सर्वे प्रसन्न थान प्रसन्न थान; तथा राजान न

श्री कृपया पाम्या जंमार जेमना तथा धान्यनां घर जे
मनां एवा थाल ! स्वाहानो अर्थ पूर्वनीपेरे जाणवो ॥

बुटा शब्दना अर्थ

भ्रातृ-भाइ	भूमंडल-पृथ्वीमंडल	धया
कलत्र-स्त्री	आयतन-ठेकाणुं	पापानि-पापो
सुहृद्-गोठीआ	निवासि-वसनारा	शाम्यंतु--शांतिने
संबंधि-सासरीआं	दुर्भिक्ष-दुकाल	दुरितानि--अशुभ
बंधुवर्ग-गोत्रीया	दौर्मनस्य-दुर्मनपणुं	शत्रवः--वेरीओ
आमोद-हर्ष	उपशमनाय-उपशमने	पराङ्--अवला
प्रमोद-चित्तप्रसन्नता	माटे	सुखाः--मुखवाला
अस्मिन्-आ (मां)	प्रादुर्भूतानि-उत्पन्न	

ॐ पुत्रमित्र भ्रातृ कलत्र सुहृद्
स्वजन संबंधि बंधु वर्गसहिता नि
त्यं चामोद प्रमोदकारिणः अस्मिँ
श्च जूमंमल्लायतननिवासिसाधुसा
ध्वी श्रावकश्राविकाणां रोगोपस
र्गव्याधि दुःखदुर्निद्रदौर्मनस्योप
शमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि

(४६३)

पुष्टि ऋद्धि वृद्धि मांगल्योत्सवाः,
सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यं
तु, दुरितानि शत्रवः पराङ् मुखा
ज्वंतु स्वाहा ॥

अर्थः--ॐ पुत्र मित्र के० पुत्र, मित्र, ज्ञान, स्त्री,
सरस्वी नमर वाला, ज्ञाति वाला, सासरीयां कुटुंबी
ए व्राते सर्व निरंतर वली हर्ष अने चित्त प्रसन्नता तेने
करनारा हो, तथा आ मृत्यु लोकने विषे पृथिवीमां
पोताना स्थानकोने विषे निवास करनारा एवा साधु,
साध्वी, श्रावक अने श्राविका तेमना रोग, उपसर्ग,
व्याधि, दुःख, दुर्जिह्व अने दुर्मनपणुं तेमना उपशम
ने अर्थे शांति जे ठे ते हो. ॥

ॐ तुष्टि पुष्टि के० ॐकार मंगलार्थ ठे. संतोष, पु
ष्टि, संपत्ति परिवारनो विस्तार, कल्याण अने महो
त्सव ते सर्व शान्त तथा निरंतर उत्पन्न अयां एवा जे
पापो दुरितो ते शांतिने पामो अने तमारा वेरीजु जे
ठे ते सर्व अवलुं ठे सुख जेमनुं एवा शान्त, स्वाहा शु
भ सूचक ठे. ॥

(४६४)

बुटा शब्दना अर्थ

विधायिने-करनारने
अमराधीश-इंद्रो
अभ्यर्चित-पूजित
दुःस्वप्न-खोटुं स्वप्न

निमित्त-कारण
संपादित-संपादन करी छे
हितसंपत्त-हितनीसंपत्ति

श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांति
विधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधी
श, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शां
तिः शांतिकरःश्रीमान, शांतिं दि
शतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव सदा ते
षां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥
बन्धुष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदु
र्निमित्तादि ॥ संपादितहित संप,
न्नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥
श्री संघजगज्जनपद, राजाधिपरा
जसन्निवेशानाम् ॥ गोष्टिकपुर

मुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेत्वांतिम् ॥

अर्थः--श्रीमते शांतिनाथाय के० शांतिनाथ
नमस्कार आन ते शांतिनाथ केवा ठे ? तो के सम
सरणादि ऋद्धि वाला ठे तथा शांतिने करनारा ए
ठे ते शांति कोने करनारा ? तो के त्रण लोकने, तथ
वली केवा ठे ? तो के चोसठ इंझेना सुकुट तेमणे
जित ठे चरण जेमना एवा ठे. ॥ १ ॥

शांतिः शांतिकरः के० शांतिना करनार एव
शांतिनाथ मने शांतिने आपो. कारण के जेमना घ
ने विषे यथार्थ उपदेशना करनार सुशोभित एवा श्री
शांतिनाथनामा जिननुं पूजन थाय ठे तेमना घरने वि
षे निरंतर शांतिज थाय ठे. ॥ २ ॥

उन्मृष्टरिष्ट दुष्ट के० श्री शांतिनाथनुं नाम ग्रह
ण पण उत्कृष्ट वर्त्ते ठे ते नाम ग्रहण केवुं ठे ? तो के
उपड्व तथा दुष्ट ग्रहनी गतिने दूर करनारुं ठे तथा
खोटं स्वप्न जे दुःखोनां कारण ठे तेने दूर करनारुं ठे.
तथा हितनी संपत्ति संपादन करनारुं ठे ॥ ३ ॥

श्री संघजगज्जनपदके० श्रीसंघजगज्जनपद के०

जगतना देश, राजाधिपराज्य सन्निवेशानां के
राजात् तथा अधिपतिन्, राज्यना मुकामो ए सर्वना
नाम ग्रहणे करीने, तथा नगरना मुख्य पुरुषना पण
नाम ग्रहणे करीने (ए सौनां नाम लेइने) शांतिने
नुंचे स्वरे करीने बुद्धोषणा करे ॥ ४ ॥

बुटा शब्दना अर्थ.

पौर-शेहेरी	ब्रह्मलोकस्य-ब्रह्मलो	वपुः-शरीर
जनपदा-देश	कनी	पुष्प-फूल
अधिपानां-अधिपतिनां	ॐ स्वाहा-मंगलवा	चंदन-केसर
सन्निवेश-मुकाम	च्य वचन	आभरण-शणगारथी
गोष्ठकानां-कंपनी	अवसानेषु-अंतने विषे	अलंकृतः-शोभतो
ओनां	चतुष्किकायां-मंडप	पानीयं-पाणीने
मुख्याणां-मुख्य पुरु	मां, चौकीमां	दातव्यं-आपवुं, देवुं,
षोनां	समेत-सहित	मुकवुं
	शुचि-पवित्र	

श्री श्रमणासंघस्य शांतिर्नवतु, श्री
पौरजनस्य शांतिर्नवतु, श्री जन
पदानां शांतिर्नवतु, श्री राजाधि

(४६७)

पानां शांतिर्भवतु, श्री राजसन्निवे
शानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्टिकानां
शांतिर्भवतु, श्रीपुर मुख्याणां शां
तिर्भवतु, श्री ब्रह्मलोकस्य शांति
र्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री
पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शा
तिप्रतिष्ठा यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु
शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदन
कर्पूरागरु धूपवासकुसुमांजलि स
मेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्री संघ
समेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्र चं
दनाञ्जरणालंकृतः पुष्पमालां कंठे
कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपा
नीयं मस्तके दातव्यमिति ॥

अर्थः--श्री श्रमणसंघस्य के० सुशोभित एवा
श्रमण संघनी शांति थान, तथा पुरमां वसनारा लो

कनी शांति थानु. तथा देशनी शांति थानु तथा राजा अने अधिपति तेमनी शांति थानु. तथा राजाना मुकामनां स्थानक जे सन्निवेश, तेनी शांति थानु, तथा धर्मसन्नास्थ जनो एटले न्याय सन्ना तेमनी शांति थानु तथा पुरना मुख्य माणसोनी शांति थानु, तथा ब्रह्मलोकनी शांति थानु. पहेली वखतनुं लँ स्वाहा पद मंगलार्थ ठे, तथा बीजीवारनुं लँ स्वाहा ए पद ते रूमे प्रकारे देवोने कहे ठे. तथा धूप दीपादिक पूजानां उपकरण श्री पार्श्वनाथने संतोषने माटे थानु ॥

एषा शांतिप्रतिष्ठा केण आ शांतिपाठ ते प्रतिष्ठाना तथा यात्राना तथा स्नात्रना अंतने विप्रे ज्ञावो तथा पाहिक, सांवत्सरिक प्रतिक्रमणना अंतमां अवश्य पाठ करवो, तथा बीजां पण धर्मकार्योनी समाप्तिमां पण अवश्य उद्घोषण करवा योग्य ठे. हवे 'ते केवी रीते उद्घोषण करवुं ? ते कहे ठे. कोइपण विशिष्ट गुणवान् श्रावक उज्जो अइने शांतिने माटे शांति कलशने जावा हाथे पकरीने, तेना उपर जमणो हाथ स्थापन करीने, कुंकुम, चंदन, कर्पूर, अगरु, धूप, वास, कुसुमांजली, तेणे सहित स्नात्र

(४६९)

मंरुपमां चतुर्विध संघयुक्त ठतो मेल रहित पवित्र ठे
शरीर जेनुं एवो पुष्प, वस्त्र, चंदन तथा आन्नरणे सु
शोन्नित ठतो पुष्पनी जे माला तेने पोताना कंठने वि
षे धारण करीने, मोटा शब्दे शांतिनो उद्घोष करी
ने पढी ते महान् पुरुष तथा बीजानुये शांति कलश
ना जलने मस्तकने विषे ह्येपन करवुं. इति के० एसमा
प्तिना अर्थमां ठे

ढुटा शब्दना अर्थ.

नृत्यंति-नाचे छे	हि-निश्चे	सर्वत्र-सर्व ठेकाणे
मणि-रत्न	परहित-पारकुं भलुं	तिथ्ययर-तीर्थकर
वर्ष-वरसाद, वृष्टि	करवामां	माया-माता
सृजंति-करे छे	निरता-प्रीतिवाला,	सिवादेवी-नेमिनाथ
गायंति-गाय छे	सावधान	नी माता
मंगलानि-मंगलगीतोले	भूतगणाः-प्राणीऔं	नयर-नगर
स्तोत्राणि-स्तोत्रने	ना समूह	आसिव-उपद्रव, अ
गोत्राणि-वंशोने	दोषाः-दोषो	कल्याण
पठंति-भणे छे	प्रयांतु-पामो	उवसमं-उपशम
मंत्रान्-मंत्रोने	नाशं-नाशप्रते	

नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजं

ति गायति च मंगलानि ॥ स्तोत्रा
 णि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्, कल्या
 णज्ञाजो हि जिनान्निषेके ॥ १ ॥
 शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिर
 ता न्वन्तु नूतगणाः ॥ दोषाः प्रयां
 तु नाशं, सर्वत्र सुखी न्वन्तु लो
 काः ॥ २ ॥ अहं तिष्ठय रमाया,
 सिवा देवी तुम्ह नयर निवासि
 नी ॥ अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, अ
 सिवो वसमं सिवं न्वन्तु ॥ स्वाहा
 ॥ ३ ॥ नपसर्गाः क्लयंयांति, द्विद्यं
 ते विघ्न वल्लयः ॥ मनः प्रसन्नता
 मेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ स
 र्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण
 कारणं ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जै
 नं जयति शासनं ॥ ५ ॥

અર્થ:--નૃત્યંતિ નિત્યં કે૦ જિનના અન્નિષેકને વિષે જે જ્ઞવ્યજનો નિરંતર નાચે છે, રત્ન, મોતી અને પાંચ વર્ણનાં ફૂલોની વૃષ્ટિ કરે છે, વલી મંગલ એવાં ગીત અને ધવલ તેને ગાન કરે છે, તથા સ્તોત્રને તથા તેમના વંશને પઠન કરે છે, વલી મંત્ર ગર્જિત એવા પાઠો ને જ્ઞણે છે, અને ઉપલક્ષણથી બીજા જનોયે પઠન કરેલા મંત્રોને સાંજ્ઞલે છે. તે જ્ઞવ્ય જીવો નિશ્ચે કલ્યાણ ને જ્ઞજનારા એવા થાય છે.

શિવમસ્તુ સર્વ જગતઃ કે૦ સર્વ જગતનું કલ્યાણ થાન. તથા પ્રાણી સમૂહ પારકું હિત કરવામાં સાવ ધ્યાન થાન, તથા દોષ જે તે નાશને પામો તથા સર્વ સ્થાનકને વિષે સર્વ લોક સુખી થાન ॥૧૧॥

અહં તિહ્યર માયા કે૦ હું, તીર્થંકર શ્રી નેમિ નાથની માતા જે શિવાદેવી હું તે કેવી હું ! તો કે ત મારા નગરને વિષે નિવાસ કરનારી હું એટલે સાનિધ્ય કારી હું. એ કારણ માટે અમારું કલ્યાણ હો અને ના મોચ્ચાર માત્રે કરી તમારું કલ્યાણ હો. અશિવનો હ પ્રશમ છે જેમાં એવું કલ્યાણ હો. સ્વાહા એ પદનો અ

र्थ पूर्वनी पेरे जाणवो ॥ ३ ॥

उपसर्गाः क्यंयांति के० जिनेश्वर ते पूज्ये ठते वि
घ्न वद्धियो जे ठे ते ठेदाय ठे अने मन प्रसन्नताने पामे
ठे अने उपसर्गो क्यने पामे ठे ॥ ४ ॥

सर्व मंगल मांगल्यं के० सर्व मंगलने विषे मं
गल करनारुं तथा संपूर्ण आरोग्यतानुं कारण सर्व ध
र्मोने विषे श्रेष्ठ एवुं जिन संबंधि शासन ते सर्वोत्कृष्ट
वर्त्ते ठे ॥ ॥ इति बृहद्भांति स्तव ॥

संतिकर स्तोत्रना गाथा १ थी ७ सुधीना

ठुटा शब्दना अर्थ.

दायारं-दातारने	स-सहित	मंतेण-मंत्रेकरी
समरामि-स्मरुंछुं	वि-विष्टा	असिव-उपद्रव
भक्त-भक्त	प्प-लघुनीति	हरणाणं-हरण कर
पालग-पालनार	ओसहि-औषधि	नाराने
निव्वाणी-निर्वाणी	पत्ताणं-प्राप्त थया	
देवी	संतिसामि-शांतिस्वा	खेल-श्लेष्य
गरुड-यक्षनुं नाम छे	मी	लद्धि-लब्धि
कय-करेली छे	पायाणं-पादने [ज छे	सौंहीँ-मंत्रवीज
सेवं-सेवा (जेनी)	शौंस्वाहा-ए मंत्रवी	देइ-आपो

वाणी-वाग्देवता	पन्नती-प्रज्ञप्ति(नामछे)	महामाणसिआ-महा
सामिणि-स्वामिनी	वज्जशिखला-वज्रशृं	मानसिका
जख्ख-जक्ष	खला	गोमुह-गोमुख
राय-राजा	वज्जंकुसि-वज्रंकुशी	महजख्ख-महायक्ष
गणिपिडगा-गणिपी	चक्केसरि-चक्केश्वरी	तिमुह-त्रिमुख
टक यक्ष	नरदत्ता-नरदत्ता	तुंबरू-तुंबरू
ग्रह-ग्रह	गोरी-गौरी	कुसुमो-कुसुम
दिसिपाल-दिकूपाल	गंधारी-गांधारी	मायंगो-मातंग
इंदा-इंद्र	महजाला-महाज्वाला	विजय-विजय
रख्खंतु-रक्षण करो	माणवी-मानवी	अजिय-अजित
भक्ते-भक्तोंने	वइरुट्टा-वैरुट्ट्या	वंभो-ब्रह्म
रोहिणी-नाम छे	माणसिआ-मानसिका	मणुओ-मनुज
		सुरकुमारो-सुरकुमार

॥ अथ संतिकरस्तोत्र ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसराणं ज
यसिरिइ दायारं ॥ समरामि जत्त
पालग, निव्वाणी गरुमकयसेवं ॥१॥
ॐ सनमो विप्पोसहि, पत्ताणं सं
तिसामि पायाणं ॥ ॐ स्वाहा मं
तेणं, सवासिव इरिअ हरणाणं

(४७४)

॥ १ ॥ नै संति नमुक्कारो, खेलो
सहिमाइ लक्ष्मिपत्ताणं ॥ सौं झी
नमो सव्वो, सहि पत्ताणं च देइ
सिरिं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअणसा
मिणि, सिरिदेवी जस्कराय गणि
पिम्मा ॥ गह दिसिपाल सुरिंदा,
सयावि रस्कंतु जिणज्जते ॥ ४ ॥
रस्कंतु मम रोहिणी, पन्नती वज्ज
सिखला य सया ॥ वज्जंकुसि च
केसरि, नरदत्ता कालि महाका
ली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी, म
हजाला माणवी अ वइरुटा ॥
अहुत्ता माणसिअ्या, महामाण
सिअ्याउ देवीउ ॥ ६ ॥ जस्का
गोमुह महज, ख तिमुह जस्केस

तुंबरु कुसुमो ॥ मायंगो विजया
जिय, बंजो मणुड सुरकुमारो॥७॥

अर्थः—संतिकरं संतिजिणं के० हुं शांतिनाथने
मनमां समरुंबुं, ते केवा ठे ? तो के शांतिना करना
रा ठे, तथा जगतना लोकने शरण ज्ञय निवारण क
रनार ठे, वली जय अने लक्ष्मीना दातार ठे, वली
ज्ञकोने पालन करनारा ठे, वली निर्वाणी नामे देवी
तथा गरुड नामे यक्ष ए बेहुए जेमनी सेवा करेली ठे
एवा ठे ॥ १ ॥

ॐ सनमो विष्णोसहि के० श्री शांति स्वामीना
पादने ॐकारे सहित नमस्कार आनु ते शांतिस्वामी
पाद केवा ठे ? तो के जेनां विष्टा अने लघुनीति ते
औषधिरूप ठे, वली केवा ठे ? तो के ॐ स्वाहा ए
मंत्र बीजे करी युक्त ठे. वली ॐ नमो विष्णोसहिप
त्ताणं ॐ स्वाहा एवा मंत्रपदे करीने सकल जगत्तना
मरकी आदि उपद्रवो तथा पापने हरण करनार ठे॥१॥

ॐ संति नमुकारो के० ॐ एटले शोच्चायमान
एवा, शांतिस्वामी पादने नमस्कार आनु. ते शांतिस्वा

मीपाद केवा ठे ? तो के सलेखम कफ ते आदि पर म औषधिपणाये करीने प्राप्त अयां ठे जेमने एवा ठे वली तेने सौँ ङ्गी सहित नमस्कार हो. वली केवा ठे ? तो के जेमना दांत केश वगेरे सर्वे अंग औषधि पणाने पाम्यां ठे जेमने एवा ठे, अने तेउने करेलो जे नमस्कार ठे ते ज्ञव्योने लक्ष्मी आपो आंहिं “ नुँ ङ्गी नमो खेलोसहि लक्ष्मिपत्ताणं तथा नुँ ङ्गी नमो सवोस हि पत्ताणं” ए बे मंत्रो सर्व उपड्व नाशकारक ठे॥३॥

वाणी तिहुअणसामिणि केण वाणी जे श्रुत अधि ष्टायिका देवी ठे ते त्रण जुवननी स्वामिनी, अने पद्मइ ह निवासिनी व्यंतर जातिवाली लक्ष्मीनामा देवी, अ ने यक्षराज, अने गणिपीटक नामे द्वादशांगीनो अधि ष्टायक तथा सूर्यादि नव ग्रह तथा दश दिक्पाल तथा देवताना चोसठ इंझे ते सर्वे निरंतर श्री तीर्थकरोना जक्तजनोनुं रक्षण करो ॥ ४ ॥

रस्कंतु मम रोहिणी केण मने तथा बीजा जी वोने पण सर्वोपड्वथी निरंतर रक्षण करो. हवे तेको ए रक्षण करो ? ते कहे ठे. एक पुण्यरूप बीजने उ त्यन्न करनारी रोहिणीनामा देवी, बीजी वली अति

ज्ञानवंत प्रकृति, त्रीजी वज्र जेवी शांकल धारण क
रनारी वज्रशृंखला, चौथी वज्र तथा अंकुश धारण
करनारी वज्रांकुशी, पांचमी चक्र धारण करनारी च
क्केसरि, षठी मनुष्यने वरदान आपनारी नरदत्ता, सा
तमी श्यामवर्णवाली काली, आठमी विशेष श्यामव
र्णवाली महाकाली ॥ ५ ॥

गोरी तहगंधारी के० नवमी गौरवर्णवाली गोरी,
दशमी गायना वाहनवाली गांधारी, अगीआरमी मो
टी ज्वालावाली महाजाला, बारमी माणसनी माता
तुल्य मानवी, तेरमी वेर शमावनारी वैरुट्या, चौदमी
पापनो जेने स्पर्श नथी ते अबुत्ता, पंदरमी मनने सा
निध्यकारी मानसिका, तथा तेवीज सोलमी पल मा
नसिका ए शोल देवील जे ठे ते रक्षण करो, विद्या प्र
धानपणाने लीधे ए शोले विद्या देवील कहेवाय ठे ॥६॥

हवे चोवीस तीर्थकरोना यक्षोनां नाम अनुक्रमे
कहे ठे. जरका गोमुह के० प्रथम गोमुखनामा यक्ष, बी
जो महायक्ष, त्रीजो त्रिमुख, चौथो इश्वर, पांचमो
तुमरु, षठो कुसुम, सातमो मातंग, आठमो विजय,

नवमो अजित, दशमो ब्रह्म, अगीआरमो मनुज, वार
मो सुरकुमार नामे यह ठे ॥ ७ ॥

गाथा ८ थी १४ सुधीना ठुटा शब्दना अर्थ.

छम्सुह-षण्मुख	सिरिवच्छा-श्रीवत्सा	रखव-रक्षा
पयाल-पाताल	चंडा-चंडा	सुदिष्टि-सम्यक्दृष्टि
किन्नर-किन्नर	विजया-विजया	सहिओ-सहित
गरुडो-गरुड	अंकुसि-अंकुशी	मज्जवि-मनेपण
गंधव्व-गंधर्व	पन्नइति-पन्नगा	मुणिसुंदर-नाम छे
जखिखदो-यक्षेद्र	निव्वाणि-निर्वाणी	महिमा-माहात्म्य
कूवर-कूवर	अच्चुआ-अच्युत्ता	सरइ-स्मरण करे छे
वरुणो-वरुण	धरणी-धारिणी	उवदव-उपद्रव
भिउडी-भृकुटी	वइरुइ-वैरोध्या	रहिओ-रहित
गोमेहो-गोमेध	अछुत्त-अछुत्ता	स-ते
पास-पार्श्व	अंब-अंबा	लहइ-पामे छे
अजिआ-अजिता	सिद्धा-सिद्धादेवी	संपय-संपत्
दुरिआरि-दुरितारि	तिथथ-तीर्थ	तवगच्छ-तपोगच्छ
अच्चुअ-अच्युत	रखवण-रक्षण	गयण-गगन
संता-शांता	रया-तत्पर	दिणयर-दिनकर
जाला-ज्वाला	अन्नै-अन्य (वीजा)	जुगवर-युगप्रधान
सुतारया-सुतारा	जोइणि-योगिनी	सिरि-श्री
असोय-अशोका	कुणंतु-करो	सोमसुंदर-नाम छे

(४७९)

गुरुण-गुरुना
लद्ध-प्राप्त थइ

गणहर-गणधर
विज्जा-विद्या

भणइ-भणे छे
सीसो-शिष्य

ठम्मुह पयाल किन्नर, गरुमो गंध
व तहय जरिंदो ॥ कूबर वरुणो
जिनमी, गोमेहो पासमायंगो ॥७॥
देवीन चक्रेसरि, अजिआ इरि
आरि काली महाकाली ॥ अ
चुअ संता जाला, सुतारयासोय
सिखिन्हा ॥ ९ ॥ चंमा विजयं
कुसि, पन्नइति निवाणि अचुआ
धरणी ॥ वइरुद तुत्तगंधा, रि अं
व पनुमावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ
तिठ रक्काण रया, अन्नेवि सुरासु
रि चउहावि ॥ वंतर जोइणि पमु
हा, कुणंतु रक्कं सया अम्हां ॥११॥
एवं सुदिठि सुरगणा, सहिन संघ

स्स संति जिणचंदो ॥ मज्झवि क
रेण रक्कं, मुणिसुंदरसुरिथुअम
हिमा ॥ १२ ॥ इअ संति नाह
सम्म, दिठ्ठि रक्कं सरइ तिकालं
जो ॥ सच्चोवद्वरहिउ, स लहइ
सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥ तवगह
गयण दिणयर, जुगवर सिरि सो
मसुंदरगुरूणं ॥ सुपसाय लद्धगण
हर, विद्यासिद्धिं जणइ सीसो
॥ ४ ॥ इति ॥

ठम्मुह पयाल के० तेरमो षण्णमुख नामा यद्द, चौ
दमो पाताल, पन्नरमो किन्नर, सोलमो गरुड, सत्तरमो
गंधर्व, तथा बली अठारमो यहेँड, उगणीसमो कूव
रनामा यद्द, वीशमो वरुण, एकवीसमो ऋकुटी, वा
वीसमो गोमेध, त्रेवीसमो पार्श्व अने चोवीसमो मातं
गनामा यद्द ठे. ए प्रमाणे प्रत्येक तीर्थंकरनो प्रत्येक

यद् अनुक्रमे जाणवो तेमनां वाहन अने सविस्तर वर्णन प्रवचन सारोद्धारथी जाणवुं ॥ ७ ॥

देवीन चक्रेसरि के० हवे चोवीस तीर्थकरनी चो वीस देवीनुनां नाम कहे ठे प्रथम चक्रेश्वरी नामादेवी, बीजी अजिता नामादेवी, त्रीजी डुरितारि, चोथी काली, पांचमी महाकाली, षठी अच्युत नामा देवी, सातमी शांता, आठमी ज्वाला, नवमी सुतारा, दशमी अशोका, अगीआरमी श्रीवत्सा ए श्री तीर्थकरनी देवीनु ठे ॥ ८ ॥

चंद्रा विजयंकुसि के० वारमी चंद्रा नामा देवी, तेरमी विजया, चौदमी अंकुशा, पन्नरमी पन्नगा, सोलमी निर्वाणी सत्तरमी अच्युता, अठारमी धारिणी, नुगणीसमी वैरोट्या नामादेवी, बीशमी अबुत्ता नामा देवी, एकवीसमी गांधारि नामादेवी, बावीसमी अंबा नामा देवी, त्रेवीसमी पद्मावती नामा देवी, चोवीसमी सिद्धा नामादेवी ए प्रकारे चोवीस देवीनु अनुक्रमे चो वीस तीर्थकरनी जाणवी, तेमनां वर्ण, वाहन, आयुधादि प्रवचन सारोद्धारथी जाणवां ॥ १० ॥

इअ तिष्ठ रक्षया रया के० ए प्रकारे यद्, य

हिणी तमे सकल संघरूप तीर्थनुं पालण करवाने त
त्पर थान, तथा बीजा पण चार निकायना जवनप
त्यादिक देवता, देवीनुं, व्यंतर, तथा ज्ञाकाली प्रमुख
चोसठ योगिनी ते अमोने निरंतर रक्षा प्रत्ये करो ॥११॥

एवं सुदिदि सुरगण केण एम पूर्वोक्त सम्यक्दृष्टि
देवताना समूह सहित एवा संघने सामान्य केवलीने
विषे आढहादकारी माटे जिनचंड कहीए एवा श्री
शांतिजिनचंड, तमे मने पण रक्षा प्रत्ये करो, ए
शांतिजिनचंड केवा ठे? तो के मुनिने विषे प्रधान ए
वा जे श्रुतकेवली, मनः पर्यवज्ञानीनुं तेमणे तथा
पंढितोए स्तुति कर्युं ठे माहात्म्य जेमनुं एवा ठे. अ
थवा श्रीमुणिसुंदरसूरि जे आ स्तोत्रना कर्ता ठे ते
मणे स्तव्यो ठे महिमा जेमनो एवा ठे ॥ १२ ॥

इअ संति नाह सम्म, केण ए प्रकारे रूमी दृष्टि
वालो जे कोइ मनुष्य श्री शांतिनाथ तेमनी रक्षा जे
ठे ते सवारवपोर अने सांजे ए त्रणेकाले स्मरण करेठे,
ते मनुष्य सर्वोपडवरहित आयठे अने ते मनुष्य स
र्वोत्कृष्ट एवी सुखसंपदाने पामे ठे. ॥ १३ ॥

तवगह्व गयण के० श्रीतपोगह्व रूप गगनने विषे
सूर्यसमान युगप्रधान श्री सोमसुंदर नामना गुरु, ते
मना सुप्रसादे करीने प्राप्त थइ एवी गणधर विद्या
सिद्धिने शिष्य जे मुनिसुंदरसूरि ते ज्ञणे ठे॥१४॥इति॥

तिजय पहुत्तना ठुटा शब्दना अर्थ

गाथा १ थी ८ सुधीना.

जय-जगत्	भविआणं-भविक जी	पणतीसां-पांत्रीस
पहुत्त-प्रभुपणुं	वोना	सट्ठी-साठ
पाडिहेर-प्रातिहार्य	वीसा-वीस	वाहि-व्याधि
समय-काल	पणयाला-पीस्तालीस	जलण-अग्नि
खित्त-क्षेत्र	तीसा-त्रीस	हरि-वाघ, सिंह
ठिआणं-वर्त्तता(ना)	पन्नत्तरी-पंचोतेर	करि-हाथी
सरोमि-ध्यान करुंछुं	जिणवरिंदा-जिनवरेंद्रे	पणपन्ना-पंचावन
चक्कं-चक्र(ने)	भूअ-व्यंतर, भूत	दसेव-दश
जिणंदाणं-जिनेंद्रोना	रख्ख-राक्षस	पन्नट्ठी-पांसठ
पणवीसा-पचीस	साइणि-शाकिनी	चालीसा-चालीस
असिआ-एंशी	घोर-मोटा	पणमिआ-प्रणामकर्या
पन्नास-पचास	पणासंतु-नाश करो	हरहुंहः-बीजअक्षर छे
नासेउ-नाश करो	सित्तिरि-सित्तेर	सरसुंसः-बीजअक्षर

आलिहिय-समस्त प्र कारे लख्युं गर्भं-मध्य भागमां	किर-निश्चे सव्वओभदं-सर्वतो भद्र	सव्वओ-सर्व प्रकारे भदं-कल्याण
--	---------------------------------------	----------------------------------

॥ अथ तिजयपहुत्त नामा चोथुं स्मरण ॥

तिजय पहुत्त पयासय, अथ महा
पामिहेरजुत्ताणं ॥ समयस्सित्त ठि
आणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं
॥ १ ॥ पणवीसा य असिआ,
पन्नरस पन्नास जिणवर समूहो ॥
नासेन सयल्ल डुरिअं, ज्विआणं
जत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पण
याल्लाविय, तीसा पन्नत्तरी जिण
वरिंदा ॥ गह जूअ रक्क साइणि,
घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सि
त्तिरि पणतीसाविय, सठी पंचेव
जिणगणो एसो ॥ वाहिजल्ल जल्लण

(४७५)

हरि, करि चोरारिमहाज्ञयं हरज

॥ ४ ॥ पणपन्नाय दसेव य, पन्नठि

तहय चेव चालीसा ॥ रस्कंतु मे

सरीरं, देवासुरपणमिया सिद्धा ॥ ५ ॥

ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह

चेव सरसुंसः ॥ आलिहिय नाम

गप्रं, चक्रं किर सवज नदं ॥ ६ ॥

ॐ रोहिणि पन्नत्ती, वज्जसिखला

तह य वज्जअंकुसिया ॥ चक्रेसरी

नरदत्ता, कालि महाकालि तह

गोरि ॥ ७ ॥ गंधारि महजाला,

माणवि वडरुद्ध तह य अचुत्ता ॥

माणसि महमाणसिआ, विद्या

देविण रस्कंतु ॥ ८ ॥

अर्थः--तिजयपहुत्त केण त्रण जगतना प्रचुत्वना

प्रकाशना करनार, आठ महा प्रातिहार्ये करी युक्त अ

ने समय के० रात दिवस रूप काल ठे प्रधान जेमां ए
वा अढी छीप प्रमाण क्षेत्रमां रहेला एवा जिनेंझेनो च
कं के० चक्र एटले समूह अथवा चक्रं एटले यंत्रने हुं
समरुं बुं, ध्यान करुं बुं ॥ १ ॥

उत्कृष्ट कालमां ज्यारे पंदर कर्मजूमि क्षेत्रमां
कोइ पण क्षेत्रने विषे तीर्थकरनो विरह नथी होतो त्या
रे समकाले एकसो सीत्तेर तीर्थकर उत्कृष्टा वर्ते ठे.
ते तीर्थकरोनुं एकसो सीत्तेरना आंकवालुं अने म्होटुं
ठे महात्म्य जेनुं एबुं महा यंत्र ठे. ते यंत्ररचना सात
गाथाए करी देखामे ठे.

ए यंत्रमां पांच कोठा आत्मा अने पांच कोठा उ
जा काढवा त्यारे ते पचीस थाय तेमां वचला पांच
आत्मा कोठामां “ क्षिपुँँ स्वाहा ” ए पांच अक्षरमां
नो एकेक अक्षर एकेक खानामां लखवो तेमज उजा
वचलां पांच खानांमां पण लखवा. तेमां क्षि ए पृथ्वी
बीज ठे. ष ए अणु बीज ठे ँँ ए तेजो बीज ठे. स्वा
ए वायु बीज ठे. हा ए आकाश बीज ठे. हवे ते यंत्र
नी शुरुआतमां जे आत्मी पंक्तिनां पांच खानां ठे ते मां

हे लखवा योग्य अंको नीचली गाथाए बतावे ठे.

पणवीसाय असिआ के० ते यंत्रनी आनी बुल
नां जे पांच खानां ठे तेना प्रथम खानामां पच्चीश
नो अंक लखवो तथा बीजा खानामां एंशीनो अंक
लखवो तथा त्रीजा खानामां तो द्वि अक्षर लखेलोज
ठे, तथा चोथा खानामां पंदर अने पांचमामां पच्चा
सनो अंक लखवो, ए प्रमाणे सामान्य केवलीमां श्रेष्ठ
एवा तीर्थकरोना समुदायनो यंत्र ते ज्ञक्रिये करी यु
क्त एवा ज्ञव्य जीवोनां सघलां पाप कर्मने नाश करो।१।

वीसा पणयालाविअ के० हवे ए यंत्रनी बीजी
आनी बुलना पेहेला खानामां वीसनो अंक लखवो
तथा बीजा खानामां पीस्तालीसनो अंक लखवो अने
त्रीजा खानामां तो प लखेलोज ठे तथा चोथा खाना
मां तीसनो अने पांचमामां पंचोतेरनो अंक लखवो. ए
प्रमाणे सरवे मली एकसो सित्तेर तीर्थकरो अथा, ते
ग्रह, व्यंतर, राहस, शाकिनी ए सर्वथी अता घोर ल
पसर्गाने नाश पमानो ॥ ३ ॥

सित्तिरि पणतीसाविअ के० हवे ए यंत्रना त्रीजी

(४८८)

आम्ही जुलना पांचे खानामां द्विपञ्चस्वाहा ए पांच अक्षरो लखेला ठे. तेशी चोथी आम्ही जुलना पेहेला खानामां सित्तेरनो अने बीजामां पांत्रीसनो अंक लखवो त्रीजामां स्वा लखेलो ठे. चोथामां साठ, अने पांचमामां पांचनो आंक लखवो, ए प्रमाणे ए तीर्थंकरनो समूह ते व्याधि जल केण पाणीना अथवा जर केण ताव सन्निपातादिक, जलण केण अग्नि वगेरेना, वाघना, दुष्ट हाथीना, चोरना, अने शत्रुना जे मोहोटा ज्ञय तेने हरण करो. ॥ ४ ॥

पणपन्ना य दसेव य केण एयंत्रनी पांचमी आम्ही जुलना पेहेला खानामां पंचावन्न अने बीजामां दसनो आंक लखवो वली त्रीजामां हा अक्षर लखेलोज ठे चोथामां पांसठ अने पांचमामां निश्वे चालीसनो अंक लखवो. सर्वे अंकोना मली सरवाले एकसोसित्तेरजिनो ते महारा शरीरने रक्ता करो. ते जिनो केवाठे? तो के देवता अने असुरे प्रणाम कर्यो ठे जेमने एवा ठे तथा जे सिद्ध थया एवा ठे. ॥ ५ ॥

ॐ हरहुंहः सरसुंसः के० हरहुंहः ए चार बीजाक्षरो जे ठे तेणे करी पद्मा, जया, विजया अने अपरा

जिता ए चार देवीजनां नाम अनुक्रमे प्रत्येक बीजे जाणवां, तथा सरसुंसः ए चार बीजाक्षरो जे ठे ते मोहोटा प्रज्ञाववाला तथा व्यंतरादिक दुष्ट देवोए करे ला नपसर्गोना निवारण अर्थे ठे. तथा वली प्रथम ल खेला हरहुंहः ए चार बीजाक्षरोने विषे ह अक्षर सूर्य बीज ठे ते दुरितनो नाश करनार ठे, तथा र अक्षर अग्निबीज ठे ते पापने बालनार ठे, तथा हुं अक्षर जे ठे ते क्रोधबीज ठे, तथा कवच (बखतर) पण ठे ते जूतादि त्रासक ठे अने कवच (बखतर) पणाथी आत्मरक्षक पण ठे, तथा ह अक्षर संपुटित ठे. पढी सरसुंसः ए चार बीजाक्षरो जे ठे तेमां स अक्षर चं डबीज ठे, तथा र अक्षर अग्निबीज ठे, सुं अक्षर शां मक बीज एटले सर्व दुरितने शांत करनारुं ठे, वली सः अक्षर संपुटित ठे. तथा आरंजमां नुं शब्द ठे ते पंच परमेष्ठि वाचक ठे. हवे ए आठ बीजाक्षरो खानामां कये कये ठेकाणे लखवा ते कहे ठे.

नुं शब्दनो उच्चार करीने यंत्रनी आम्ही पंक्तिमां ज्यां १५-८०-१५-५० अंको जरेला ठे ते खानामांते

(४९०)

अंको नीचे अनुक्रमे ह, र, हुं, हः, ए चार बीजो ल
खवां, तथा बीजी पंक्तिमां १०--४५--३०--७५ ए अंको
नीचे अनुक्रमे स, र, सुं, सः, ए चार बीजो लखवां,
त्रीजी पंक्तिमां क्षिपुं स्वाहा लखेलुंज ठे, चौथी पं
क्तिमां ७०--३५--६०--५ ए अंको नीचे वली बीजी
वार अनुक्रमे ह, र, हुं, हः, ए चार बीजो लखवां, त
था पांचमी पंक्तिमां ५५--१०--६५--४० ए अंको नीचे
अनुक्रमे स, र, सुं, सः, ए चार बीजो लखवां, अने व
ली समस्त प्रकारे करीने लख्युं ठे साधन करनार पु
रुषनुं नाम नुंकार सहित, जे यंत्रना मध्यज्ञागना म
ध्य खानाने विषे एवो निश्चे सर्वतोऽङ्ग एटले उन्नी
लीटीनी गणनाए, तथा आमी लीटीनी गणनाए, तथा
तीर्छिं पंक्तिनी गणनाए, तथा खुणानी पंक्तिनी गण
नाए ए पंक्तिना सर्व प्रकारे अंको गणतां १७० आय ठे
ते माटे सर्वतोऽङ्ग एवं नाम ठे जेनुं एवो ते यंत्र जा
णवो, तथा वली सर्व प्रकारे कट्याण आय ठे माटे
सर्वतोऽङ्गनाम जाणवुं ॥ ६ ॥

हवे ते यंत्रना चारे तरफना पार्श्व प्रवेशोने दि

(४९)

षे रक्षां एवां जे शोल खानां तेने विषे सोल विद्यादेवी
उनां नाम लखवां ते कहे ठे.

ॐ रोहिणि पन्नति के० अर्हीं सोल विद्या देवीउनां
नाम ते ॐ (प्रणवबीज) ॐ (मायाबीज) श्री (ल
क्ष्मीबीज) एवां त्रण बीज सहित लखवां. तथा अं
तमां नमः षड् पण लखवुं; जेमके प्रथम ॐ ॐ श्री
रोहिण्यै नमः, तेमज बीजी प्रज्ञस्यै नमः, त्रीजी वज्र
शंखलायै नमः, तथा वलीचोथी वज्रांकुशयै नमः पां
चमी चक्रेश्वर्यै नमः, ठठी नरदत्तायै नमः, सातमी
काल्यै नमः, आठमी महाकाल्यै नमः, नवमी गौर्यै
नमः, दशमी गांधार्यै नमः, अगिआरमी महाज्वालायै
नमः, बारमी मानव्यै नमः, तेरमी वैरुट्यायै नमः,
चौदमी अबुप्तायै नमः, पंदरमी मानस्यै नमः, सोल
मी महामहामानस्यै नमः, एवी हे विद्यादेवीनु तमे
रक्षण करो ॥ ७ ॥ ७ ॥

(४९२)

॥ सर्वतोन्नयंत्र ॥

२५ ह ॐ श्रीरो हिएयै नमः	८० र ॐ श्रीप्र ज्ञह्यै नमः	हि	१५ हुं ॐ श्रीवज्र शृंखलायै नमः	५० हः ॐ श्रीव जांकुश्यायै नमः
२० स ॐ श्रीच केश्वर्यै नमः	४५ र ॐ श्रीनर दत्तायै नमः	प	३० सुं ॐ श्रीका ट्यै नमः	७५ सः ॐ श्रीमहा काल्यै नमः
हि	प	ॐ	स्वा	हा
७० ह ॐ श्रीगौ र्यै नमः	३५ र ॐ श्रीगां धार्यै नमः	स्वा	६० हुं ॐ श्रीमहा ज्वालायै नमः	५ हः ॐ श्रीमान व्यै नमः
५५ स ॐ श्रीवैरु ट्यायै नमः	१० र ॐ श्रीअ ब्रुतायै नमः	हा	६५ सुं ॐ श्रीमान स्यै नमः	४० सः ॐ श्रीमहा मानस्यै नमः

(४९३)

भूमिसु-भूमिमां	कणय-सोनं	लिहिऊण-लखीने
उप्पन्न-उत्पन्न थयुं	विद्दुम-परवालां	खालिअं-धोइने
विविह-विविध	मरणय-मरकतमणि	पीयं-पीधो होय
रयणाइ-रत्नादि	घण-मेघ	एगंतर-एकांतरीओ
वन्न-वर्ण	सन्निहं-सरखो	मुग्गं-मोगक (रोग)
उव-अति	पूइअं-पूजित	पणासेइ-नाश करे छे
सोहिअं-शोभितुं	वाणवंतर-वाणव्यंतर	जंतं-यंत्र
चउतीस-चोत्रीस	जोइस-ज्योतिषि	दुवारि-द्वारमां
अइसय-अतिशय	वासी-वसनारा	पडिलिहियं-प्रतिलेख
जुआ-युक्त	विमाण-विमान	न करेलो
कय-करी	उवसमंतु-उपशांत था	विजयवंतं-विजय क
सोहा-शोभा	ओ	रतो
झाएअव्वा-ध्यान ध	चंदण-चंदन	निम्भंतं-निःसंदेह
रवा योग्य	कप्पूरेणं-कपूरे करी	अच्चेह-अर्चन करो
पयत्तेणं-प्रयत्ने करीने	फलए-पाटीआमां	

पंचदस कम्मजूमिसु, उप्पन्नं स
त्तरिं जिणाण सयं ॥ विविह रय
णाइवन्नो, वसोहिअं हरउ डुरि
आइं ॥ ए ॥ चउतीसअइसयजु
आ, अठमहापामिहेर कयसोहा ॥

(४९४)

तिष्ठयरा गयमोहा, ऊाएअथा प
यत्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वरकणाय सं
खविहुम, मरगयघण सन्निहं विग
यमोहं ॥ सत्तरिसयं जिणाणं, स
वामरपूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥
ॐ नवणावइ वाणावंतर, जोइसवा
सी विमाणवासी अ ॥ जे केवि
डुठ देवा, ते सबे नवसमंतु ममा॥
स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं,
फलए लिहिऊण खालिअं पी
अं ॥ एगंतराइ गह नू, अ सा
इणि मुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ
सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं डुवारि
पमिलिहिअं ॥ डुरिअारि विज
यवंतं, निप्रंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥

(४९५)

पंचदस कर्मजूमिसुके० अढीघीपमां पंदर कर्मजूमि
(पांचजरत, पांचअरव्रत, अने पांच महाविदेह)ने
विषे उत्पन्न अएला एवा एकसो सीत्तेर तीर्थकर, विविध
रत्नादिकना वर्णश्री उपशोन्नित, ते अमारा डुरितोनो
नाश करो. ए रीते उत्कृष्टकालने विषे पांचजरतने वि
षे पांच तीर्थकर, पांच अरवतने विषे पांच तीर्थकर, तथा
एक महाविदेहने विषे बत्रीस विजयो एवां पांच महा
विदेहनां एकसोसाठ विजय, ते दरेक विजये एकेक ती
र्थकर आय ठे. एटले सर्व मली एकसो सीत्तेर तीर्थ
कर आय. एम जेवारे कोइपण क्षेत्रने विषे तीर्थकर
नो विरह न आय तेवारे उत्कृष्टा एकसो सीत्तेर तीर्थ
कर आय ठे, ते काल श्री अजितनाथ तीर्थकरना सम
यने विषे अयो ॥ ए ॥

चनतीस अइसयजुआके० चोत्रीस अतिशयोये
करी युक्त, तथा वली केवा ठे ? तो के आठ महाप्राति
हार्योये करी ठे शोन्ना जेमनी एवा, वली केवा ठे ?
तो के गयो ठे मोह जेमनो एवा तीर्थकरो प्रयत्ने करी
ने ध्यान करवा योग्य ठे ॥ १० ॥

ॐ वरकणयसंख विद्दुम के० केटलाक तीर्थकरो

नो श्रेष्ठ सोना जेवो पीलो, केटलाकनो शंख जेवो
 घोलो, केटलाकनो प्रवालां जेवो रातो, केटलाकनो म
 रकत मणीना जेवो लीलो, तथा केटलाक तीर्थकरो
 नो मेघना जेवो श्याम वर्ण ठे तथा गयो ठे मोह जे
 थकी तेने विगत मोह कहिए; अर्थात् आ गाथामां क
 हेला विविध वर्णवाला जिनोनुं सप्तत्यधिकशत ते के
 वुं ठे? तो के सर्व देवताले पूजेवुं ठे तेने हुं पण वंद
 न करुं ठे अने स्वाहा के० सु एटले रूहुं अने आह ना
 म कहे ठे तेने स्वाहा कहिए. अर्थात् ए जिनेश्वरोने
 नमस्कार करवाथी शोचन सुखादिक आय ठे. अथवा
 बीजो अर्थ एम के:--“स्वाहा देवहविर्दाने ” एम कहे
 लुं ठे ए शब्द देवोने होम आपवाना दानने विपे प्रव
 र्त्ते ठे. ते आपवा वरु करीने देवो संतुष्ट आय ठे ॥१॥

लुं ऋणवश् वाणवंतर के० लुं ते पंच परमेष्ठि
 वाचक पद जाणवुं जे कोइ पण मिथ्यादृष्टि दुष्ट देवो
 ठे, ते सर्वे आ स्तवनना प्रज्ञावथी उपज्ञांत हो. ते क
 या दुष्ट देवो? तो के ऋणपति, वाणव्यंतर, ज्योतिष्क
 वासी, तथा विमानवासी देवो ठे ते स्वाहाना अर्थ पू

र्व प्रमाणे जाणवो ॥ १२ ॥

चंदनकप्पूरेणं के० चंदन, अग्ररु, कुंकुम तथा कर्पूरादिके करी लाकमाना पाटीआने विषे लखीने, तथा कोइक पुरुषो कहे ठे के पवित्र कांसाना आलादिने विषे कर्पूर, गोरोचन, चंदन, अग्ररु, कस्तूरी वगेरे नो कर्दम करीने, तेनावने सात वखत लेपन करीने गायामां सूकवीने तेनी उपर ए यंत्रने लखी, पुष्प धूप पादिके पूजन करीने प्रातःकालमां धोइने पीधो होय, तेमना एकांतरीआदि ताव तथा अशुभ ग्रह तथा झूत, व्यंतर, शाकिनी, मोगक वगेरे रोग, झूत प्रेतादि आवेश तथा कामण आदिने नाश करे ठे ॥ १३ ॥

इअसत्तरिसयं के० आ एकसो सित्तेरिया यंत्रने रूमे प्रकारे निःसंदेहे करीने हे ज्ञव्य जीवो ! निरंतर अर्चन करो. ते यंत्र केवो ठे ? तो के बारणाने विषे वा शुद्ध स्थानकने विषे पूर्वोक्त रीते प्रतिलेखन करेलो ठे, वली कष्टो अने शत्रुउने जीतनारो ठे. केटलाक एम कहे ठे के ए यंत्रने रूपाना पत्रामां अथवा ताम्रपत्रमां लखीने घरने विषे पूजन करवुं, अने काम पने त्यारे

शुद्ध जलथी तेने धोइने ते धोवण पी जवुं ॥ १४ ॥

अथ श्री नमिऊणना ठुटा शब्दना अर्थ.

गाथा १ थी ५ सुधीना.

नमिऊण-नमीने

पणय-प्रणमेला

चूडा-मुकुट

मणि-मणिओ

रंजिअं-रंजित

चलण-चरण

जुअलं-युगल, जोडुं.

संथवं-संस्तव

बुच्छं-कहीश [हेलां

सडिय-सडेलां, को-

नह-नख

निव्वुड्डु-वेठेली

नासा-नाशिका

विवन्न-विनष्ट

लायन्ना-लावण्य

कुट्ट-कोड रोग

अनल-देवता [णखा

फुलिंग-अंगाराना त

निदह-वाल्यां

सव्वंगा-सर्व अंग

आराहण-आराधन

बुद्धिय-वृद्धि पामेला

च्छाया-शोभा

उच्छाहा-उत्साह

दह्वा-दाझेला

पायव-झाड

पत्ता-पाम्या

लच्छिं-लक्ष्मीने

दुव्वाय-दुष्ट पवन

[मणा

उप्पड-उदार-वीहा

कल्लोल-लेहेरो

भीसण-भयंकर

संभंत-संभ्रांत

विसंडुल-विव्हल

निज्जामय-खलासीअं

मुक्क-मूक्यो

वावारे-व्यापार जेम

अ-नहीं

विदालिय-भाग्युं

जाणवत्ता-वहाण

खणेण-क्षणमां

इच्छिअं-इच्छित

कूलं-कांठो

नमांति-नमेछे

नरा-पुरुषो

॥ अथ नमिऊण स्तोत्र ॥

नमिऊण पणयसुरगण, चूमामणि

(४९९)

किरणरंजित्प्रं मुणिलो ॥ चलण
जुत्प्रलं महाज्ञय, पणासणं संथ
वं बुद्धं ॥ १ ॥ सम्यकरचरण न
ह मुह, निबुद्ध नासा विवन्न लाय
न्ना ॥ कुठमहारोगानल, फुलिंग
निदहसवंगा ॥ २ ॥ ते तुह चल
णाराहण, सलिलंजलि सेय बु
द्धियज्ञाया ॥ (उच्चाहा) ॥ वण दव
दह्वा गिरिपा, यव व पत्ता पुणो ल
त्ति ॥ ३ ॥ उवायखुप्रिअजलनि
हि, उप्पम कल्लोलनीसणारावे ॥
संजंतन्नयविसंठुल, निद्वामय मु
क्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलित्प्र जा
णवत्ता, खणेण पावंति इत्तिअं
कूलं ॥ पासजिणचलण जुत्प्रलं,
निच्चं चित्प्र जे नमंति नरा ॥५॥

अर्थः--नमिञ्जणपणयसुरगण के० नमस्कार कर नारा देवताउना समूह, तेना मस्तकने विषे रहेला जे सुगट, तेने विषे रहेली जे मणिउ तेना किरणोए करी ने रंजित एवं, तथा रोग, जल, वगेरेना मोटा ज्ञयने प्रकर्षे करीने नाश करनारुं एवं, जे पार्श्वनाथ मुनिनुं चरण युगल, तेने नमस्कार करीने हुं आ प्रकारनासं स्तवने कहीश ॥ १ ॥

सक्रियकरचरणनहमुह के० सकी गयां ठे हाथ, प ग, नख, अने मुख जेमनां एवा, तथा वेशी गएली ठे नाशिका जेमनी एवा, तथा विनष्ट अयुं ठे लावण्य जेमनुं एवा, कोरु रूप महान् रोगना अंगाराना अग्नि समान तणखाए करी बाढ्यां ठे सर्व अंग जेमनां एवा।श

ते तुह चलणा राहण के० तेवा प्राणीउ पण हे पार्श्व नाथ ! तमारा चरणोनुं सेवन ते रूप पाणीनी अंज लिना सेचने करी वधी ठे शोभा जेमनी एवा ठता, फुरीने लक्ष्मीने प्राप्त थाय ठे, जेम वनना अग्निएकरी बलेलां पर्वतनां वृद्धो ठे, ते जेम वृद्धि पामी ठे शो

ज्ञा जेमनी, एवां आय ठे; वली वृद्धि उन्हाहा एवो पण
पाठ ठे तेनो अर्थ एम जाणवो जे, दवथी दाऊलां
वृद्धो वरसादना जले करी नवपल्लव आय ठे; तेम
कुष्टादि महारोगी तमारा चरणाराधान रूप अमृते सीं
घाएला उता पाठा कामदेवना जेवा रूपने पामे ठे ॥३॥

डुव्वाय खुप्रिय के० दुष्ट पदने क्षोभित करेला
समुझना उदार एवा कल्लोलना ज्ञयंकर ठे शब्दो जेने
विषे एवा, तथा हवे शुं करवुं जोइए ? एवा विचार क
रवाने विषे मूढ अएला, तथा ज्ञयथी विव्हल अया ए
वा खलासीउं, तेणे मूक्या ठे व्यापार जेने विषे ॥४॥

अविदलिअ जाणवत्ता के० उपर कह्या तेवा स
मुझमां नथी ज्ञाग्युं वहाण जेमनुं एवा उता कृणे क
रीने इच्छित एवा कांठाने पामे ठे ते कया जनो ? तो
के पार्श्वजिनना चरण कमलने निरंतर नमन करे ठे,
अथवा पूजे ठे, अने नमस्कार करे ठे ते जनो समुझ
ना पारने पामे ठे ॥ ५ ॥

गाथा ६ थी ११ सुधी लुटा शब्दना अर्थ.

खर-आकरो

पवण-पवन

उद्धुअ-सलगावेलो

मिलिय-मलेली

हुम-झाड

गहणे-गहन जेने वि
पे

डज्झंत-दाजती

मुद्ध-मुग्ध

मयन्नहु-मृगवधु (ह
रणी)

रव-भाक्रंद

वणे-वनमां

निव्वाविअ-होलव्यो

आभोअं-आभोग (पिं
ड)

संभरंति-स्मरणकरेछे

मणुआ-मनुष्यो

जलणो-दावाग्नि

विलसंत-सुशोभित

भोग-फणा, देह

फुरिअ--चपल

अरुण-आरक्त

तरल-चंचल

जीहालं-जभि

उग्ग-उग्र

भुअंगं-भयंकर सर्प

सथ्थहं-सरखो

आयारं-आकार, चाल

मन्नंति-माने छे

कीड-कीडो

सरिसं-सरखो

परिच्छेद-समस्तप्रका
रे टाल्यो छे

विसम-आकरो

वेगा-वेग

नामखर-नामाक्षर

फुड-प्रगट

गुरुआ-भोटा

अडवीसु-अटवीओमां

भिल्ल-भिछ

तकर-चोर

पुलिंद-वनचर

सहुल-सिंह शार्दूल

भीमासु-भयंकर

विहुर-विव्हल

बुन्न-दुःखित

अकायर-भील

उल्लूरिअ-लंठ्या

पहिअ-पंथीओना

सथ्यासु-साथो(जेमां)

विलुत्त-चोरुं

विहव-विभव, धन

सार-उत्तम

मत्त-मात्र

ववगय-गया

विग्धा-विघ्न

सिग्धं-शिघ्र (उ
वलो)

हिभ-हृदयमां

इच्छिअं-इच्छित

टाणं-स्थानकने

खरपवणुधुअवणदव, जालावलि
मिलिय सयलडुमगहणे ॥ मप्रंत
मुद्ध मय बहु, नीसणारव नीसणं
मि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कम
जुअलं, निवाविअ सयल तिहु
अणाओअं ॥ जे संजरंति मणु
आ, न कुणइ जलणो जयं तेसिं
॥ ७ ॥ विलसंत जोग नीसण,
फुरिआरुण नयण तरल जीहा
लं ॥ उग्गजुअंगं नवजल, य स
हहं नीसणायारं ॥ ८ ॥ मत्रं
ति कीरु सरिसं, दूर परिहूढ वि
सम विसवेगा ॥ तुह नामस्कर फु
रु सि, ध्रमंत गुरुआ नरा लोए
॥ ९ ॥ अमवीसु जिह्वतकर,
पुलिंदसहुलसह नीमासु ॥ जय

(५०४)

विहुरवुन्नकायर, उल्लूरिअ प
हिअसन्नासु ॥ १० ॥ अविदुत्त
विहव सारा, तुह नाह पणाम
मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं,
पत्ताहिय इत्थियं ठाणं ॥ ११ ॥

अर्थः--खरपवणुअ केण प्रचरं एवा वायुए क
री उल्लत एवो जे वननो अग्नि तेनी ज्वालानी श्रेणी
ए करीने परस्पर एकाकारे थया ठे समग्र वृद्धोना ग
हन जेने विषे तथा दाऊती एवी जे मुग्घहरणीउ
तेना ज्ञयंकर आक्रंद शब्दे करीने ज्ञयंकर थएला वन
ने विषे अग्नि ज्ञय करतो नथी ॥ ६ ॥

जग गुरुणो केण जगत्गुरु पार्श्वनाथ स्वामी
नुं चरण युगल ते चरण युगल केवुं ठे ? तोके सुखी
उ कर्यो ठे त्रण जुवनना विस्तारने जेणे एवुं ठे. एवा
चरण कमलने जे मनुष्यो स्मरण करेठे, ते जनोने
प्रथम कहेलो दावाग्नि ज्ञय नथी करतो ॥ ७ ॥

वली बीजो अर्थ एवो ठे के दहन थवा योग्य

एवं जे वन, तेनो अंत ठे जेमां एवा दावानलनी सर
ल ज्वालाना आकुलितपणाए करीने सुढ एवा वन
ना पशुजना घणा ज्ञयंकर आक्रंदे करीने ज्ञयजित थ
एला एवा वनसां ॥ ६ ॥ जगगुरुणो के० पोतानासा
मर्ष्यथी थएला जगतना गुरु जे पार्श्वनाथ स्वामीनुं
चरणयुगल के जेणे आपत्तिना तापने समावीने सु
खी कर्युं ठे परिपूर्ण त्रण जुवन एवं जे ठे, ते एवा
चरणयुगलने जे मनुष्यो संजारे ठे, तेमने पूर्वोक्त दा
वाग्नि ज्ञय करतो नथी ॥ ७ ॥

विलसंत जोग जिसण के० सुशोभित फणा ठे
जेनी एवो, तथा ज्ञयंकर चपल अने रातां ठे नेत्र जे
नां एवो, तथा चंचल ठे जीव्हा जेनी एवो ज्ञयंकर
सर्प, वली ते सर्प केवो ठे ? तोके नवीन मेघना जे
वो श्याम वर्ण ठे ॥ ८ ॥

मंत्रंति कीरु सरिसं के० एवा सर्पने कीमा सह
श माने ठे. कोण माने ठे ? तोके दूर कर्यो ठे चारे त
रफ टाढ्यो ठे, आकरो एवो विषनो वेग जेनुए, तेको
णो टाढ्यो ठे ? तो के हे श्री पार्श्वनाथ ! तमारुं ना
माकर तेज स्फुट ठे प्रज्ञाव जेनो, तेणे करीने सिद्ध

अथेवो एवो एटले पार्श्व ए वे अरुरोए करीने सिद्ध अ
एला एवा गारुमादिक मंत्रे करीने मोटा एवा मनु
ष्यो, जे लोकने विषे ठे, तेज पूर्वोक्त सर्पने कीमा समा
न माने ठे. ॥ ए ॥

अरुवीसु जिह्वतकर के० जे अटवीलमां जील तथा
चोर लोक, वनचर जीवो अने सिंहोनामारो, हणोऽ
त्यादि शब्दोश्री वीहामणी तथा ज्ञये करीने विव्दल
तथा दुःखित एवा पुरुषोने जिह्व लोकोयें लूट्या ठे
वटेमार्गुना साथो जेने विषे एवी अटवील ठे ॥१०॥

अविलुत्तविहवसारा के० एवी सर्व अटवीलमां
पण हे श्री पार्श्वनाथ ! नश्री चोर्युं उत्कृष्ट धन जेनुं ते
कया पुरुषनुं धन नश्री चोर्युं ? तोके हे नाथ ! तमोने
प्रणाम मात्र करवानो व्यापार ठे जेमने, तेमना उता
वला विघ्न समूह विशेषे करीने गया ठे जे अकी एवा
पुरुष, पोताना हृदयने विषे इच्छित एवां पोतानां नग
रादिक अश्रवा गाम वगेरे स्थानकने पामे ठे ॥ ११ ॥

गाथा १२ थी १५ सुधी तुटा शब्दना अर्थ.

पज्जलिअ-प्रज्वालित	कुलिस-वज्र	गइंद-हाथी
वियारिय-फाडयुंछे	पाय-वात	[दिले] कुंभस्थल-कुंभस्थल
र-मुख	विअलिय-विशेषे भे	भाभोभं-विस्तार

पणय-नमता
ससंभम-एकाएक
पथिव-राजा
पडिय-पडयुंछे
पडिमस्त-प्रतिविंबजेने
पहरण-रास्र
सीहं-सींहने
कुद्धं-क्रोधायमान

गणंति-गणे छे
धवल-धोलुं
दंत-दांत
मुसल-सांवेळुं
दीह-दीर्घ
कर-सुंढ
उल्लाल-उल्लालवुं
वाहि-वादि

महु-मध
पिंग-पीलां [क
अच्चासनं-अति नजी
तुंगं-उंचुं
समल्लीणा-सम्यक् री
ते आश्रय करेलो
छे जेमणे एवा

पङ्कलिअनलनयणां, डुरवियारि
यमुहं महाकायं ॥ नहकुलिसघा
यविअलिअ, गइंदकुंजतुला
नोअं ॥ १२ ॥ पणयससंजम प
त्तिव, नहमणिमाणिक पन्निअ प
मिमस्सा॥तुह वयणपहरणधरा, सी
हं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ स
सिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लाल
वाहि ज्जाहं ॥ महुपिंगनयणजुअ
लं, ससलिलनवजलहरारावं॥१४॥

(५०८)

त्रीमं महागण्डं, अच्चासत्रंपि ते
न विगणंति ॥ जे तुम्ह चक्षण
जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा
॥ १५ ॥

पङ्कलिआनलनयणं के० प्रज्वलित एवा अ
ग्निना जेवां नेत्रवालो, तथा खावाने माटे दूरथी जे
णे मुख फारुचुं ठे एवो तथा मोटा देहवालो, तथा
नखरूप वज्रना प्रहारे करी विशेषे जिन कर्या ठे हा
थीनां कुंजस्थलना विस्तार जेणे एवो ॥ १५ ॥

पणयससंज्ञमपण्वि के० पूर्वे कह्यो ए प्रकारनो
क्रोधायमान थयो एवो पण सिंह जे ठे, तेने नथी ग
णता. कोण नथी गणता ? तो के आदर सहित नमे
दा एवा जे राजाउ तेनुं प्रचुना नखरूप मणि माणि
क्यने विषे पणुचुं ठे प्रतिबिंब जेमने एवा तमे ठो, ते
तमारा वचने करी जे नाम ग्रहण करवुं, ते रूप श
स्त्रोने धारण करनार एवा जनो पूर्वोक्त सिंहेने गणता
॥ अर्थात् तेनाथी रुरता नथी ॥ १६ ॥

ससि धवलदंतमुसलं के० हे मुनिपते ! ते नरो
 अतिशये करीने ठूकना एवा पण मोटा हाथीने नथी
 गणाता, ते गजेंडू केवो ठे ? तो के बीहामणो तथा चं
 ड्मा सरखा धोला ठे दांत रूप मुशल जेने एवो, अ
 ने लांबा झुंढादंमना नंचा उमाकवे करी बध्यो ठे उ
 त्साह जेनो एवो, तथा मधु एटले मधना जेवां रातां
 ने पीलां ठे नेत्र जेनां एवो तथा जले करी पूर्ण एवा न
 वीन मेघनी गर्जना जेवो ठे शब्द जेनो एवो ठे, वली
 ते नरो केवा ठे ! तो के तमारा चरणयुगल प्रत्ये आ
 श्रय करीने रक्षा एवा ठे, ते तमारुं चरणयुगल सर्व
 श्री गुणोए करी उन्नत एवुं ठे, सर्वनो ज्ञावार्थ एके त
 मारा चरणाश्रितनरोने उषर कहेलुं हाथीनुं जय हो
 तुं नथी ॥ १४--१५ ॥

॥ गाथा १६ थी ११ सुधी बुटा शब्दना अर्थ ॥

समरम्मि--संग्राममां
 तिख्व-तिक्षण
 खग्गा-खडग
 अभिगधाय-प्रहारे
 पाविद्ध-विधावाथी

उद्धुय--नाचतां [धड
 कबंधे-मस्तकविनानां
 कुंत-भाला [दिलां
 विणिभिन्न-विशेषेभे
 कलह-जुवान हाथी

सिक्कार--सीत्कार
 पउरम्मि-अतिशय
 निज्जिय-जीत्याछे
 दप्प-दर्प (अहंकार)
 उद्धर-धरनारा

रिउ-शत्रु	उभारं-उदार	पथे-मार्गमां
निवहा-समूह	भविय-भव्य	उवसग्गे-उपसर्गमां
भडा-सुभटो	जण-जन [रनारु	रयणीसु-रातने विषे
जसं-जश	आणंदयरं-आनंदक	ताणं-ते वेनुं
पसामिण-समावनार	निहाणं-निदान	कइणो-कर्त्तानुं
प्पभावेण-प्रभावे	कुसुमिण-कुस्वप्न	माणतुंगस्स-मानतुंग
मइंद-सिंह	दुस्सउण-खोटाशुकन	आचार्यनुं
रण-संग्राम	रिख्व-अशुभ ग्रह	अच्चिअ-अर्चित, पू
भयाइं-भयो	पीडासु-पीडामां	जित
संकित्तणेण-कीर्त्तनवडे	संज्ञासु-संध्यामां	
पसमंति-शांतिपामेछे	दोसु-वे (मां)	

समरंस्मि तिक्खवग्गा, जिग्घाय
पविद्धज्जुयकबंधे ॥ कुंत विणि
जिन्न करि कलह, मुक्क सिक्कार
पन्नरंमि ॥ १६ ॥ निज्जियदप्पुद्धर
रिउ, नरिंद निवहा ज्जमा जसं ध
वलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पा
स जिण तुह प्पज्जावेण ॥ १७ ॥

(५११)

रोग जल जलण विसहर, चोरा
रि मइंद गय रण नयाइं ॥ पास
जिण नाम संकि, तणेण पसमं
ति सव्वाइं ॥ १७ ॥ एवं महान्न
यहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआ
रं ॥ न्नविय जणाणंदयरं, कद्धा
ण परंपर निहाणं ॥ १८ ॥ राय
न्नय जस्क रस्कस, कुसुमिण ड
स्सनण रिस्क पीमासु संजासु दो
सु पंथे, नवसग्गे तहय रयणीसु
॥ १७ ॥ जो पढइ जो अ नि सु
णइ, ताणं कइणो य माणतुंग
स्स ॥ पासो पावं पसमेण, सयल
नुवणच्चिअ चलणो ॥ १९ ॥

अर्थः--समरन्ध्रि तिरक्खग्गा केण तीक्ष्ण खड्ग
ना प्रहारे करी कपाएत्तां आम तेम नाचवा लाग्यां

ठे मस्तक विनानां धरु जेने विषे एवा, तथा ज्ञावाथी
विशेषे करीने जेनां अंग जेदाएलां ठे एवा जुवान हा
थीना मुकेला अतिशय सीत्कारे करी प्रचुर एवा सं
ग्रामने विषे ॥ १६ ॥

निजिअ दप्पुहर केण जीत्या ठे अहंकारमां मदे
न्मत्त थएला शत्रु राजाजना समूह जेमणे एवा सुन्न
टो जे ते, पापना प्रकर्षे करी शमावनार हे पार्श्वजिन!
तमारा प्रजावथी नुज्ज्वल एवा जशने पामे ठे ॥१७॥

रोग जल जलण विसहर केण रोग, पाणी, अ
ग्नि, चोर, सर्प, शत्रु, सिंह, हस्ती, संग्राम तेना सर्व
जय ते पार्श्वजिनना श्रद्धा पूर्वक नामनुं कीर्तन करवा
थी प्रकर्षे करी शांतिने पामे ठे, ते एवी रीते के फरी
उत्पन्न थाय नहीं. आ ठेकाणे मंत्र कहे ठे ते जेमके:-
“ नुं नमिऊण पास विसहर वसह जिण फुलिंगं ङ्गी
रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गयरण जया
इं ॥ पासजिण नाम सकित्तणेण. पसमंति ममस्वाहा”
आ महामंत्र ठे ते आ स्तोत्रना वेराएला अरुरोए क
री उत्पन्न करेलो ठे ॥ १८ ॥

एवं महाज्ञय हरं के० ए पूर्वोक्त कहुं एवं पार्श्व
 जिनेडनुं स्तवन केवुं ठे ? तोके मोहोटुं एवं जे ज्ञय
 तेने हरनारुं ठे, आ पदे करी आ स्तोत्रनुं नाम ज्ञयह
 र जाणवुं. वली केवुं ठे ? तोके अर्थ अने शब्दथी उ
 दार ठे, वली ज्ञव्य जनने आनंद करनारुं ठे, तथा क
 द्याणनी संततिनुं कारण रूप ठे. तथा बीजी रीते ए
 वो अर्थ आय ठे के ज्ञविक जनोने कद्याणनुं एक स्था
 न एवं ठे; वली शत्रुनुना कपट तथा उच्चाटनादिने
 बांधनारुं ठे अर्थात् प्रकारांतरे करी एम जाणवुं जे
 हुइ कर्मोने बंधन करनारुं ठे. ॥ १ए ॥

रायज्ञयजरक ररकस के० राजज्ञय, यज्ञज्ञय, रा
 कस ज्ञय, कुस्वप्न ज्ञय, तथा दुःशुकेंन ज्ञय, तथा अ
 शुज्ज ग्रह ते सर्वनी पीमानुंने विषे, तथा बे संभ्याने
 विषे, तथा मार्गने विषे, तथा उपसर्गोने विषे, तथा रा
 त्रिनुंने विषे ॥ १० ॥

जो पढइ जो अ निसुणइ के० जे कोइ जनआ
 पार्श्वनाथनुं स्तवन ज्ञणे ठे, तथा जे उपयोग पूर्वक
 सांजले ठे, ते बेहु जननुं तथा आ प्रस्तुत स्तोत्रना

कर्ता एवा मानतुंगसूरिनुं, प्रजु जे पार्श्वजिन ते, पाप
विनाश करो. ते पार्श्वजिन केवा ठे ? तोके सर्व ज
गत्ना जनोए पूजेवां ठे चरण जेमनां एवा ठे ॥११॥

गाथा ११ थी १४ सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

उवसगंगते-उपसर्ग	मद्भयारे-मध्यमां	समरण-स्मरण
कारक	अखखरोहिं-अक्षरोधे	संतुष्ट-संतुष्ट [आठ-
कमठासुरम्मि-कम	जाणइ-जाणे छे	अहुत्तरसय-एकसो
ठासुर छते	सो-ते	वाहि-व्याधि
झाणाओ-ध्यानथी	झायइ-ध्यान करे छे	नासइ-नासे छे
संचलिथो-चलावाया	पयथ्यं-पदस्थ	दूरेण-दूरे
जुवइहिं-युवतिओए	फुडं-स्वरूपे	
एअस्स-एना(आना)	पासह-पार्श्वनाथनुं	

उवसगंगते कमठा, सुरम्मि जाणा
उ जो न संचलिउ ॥ सुरनर कि
नर जुवइहिं, संथुउ जयउ पास
जिणो ॥ ११ ॥ एअस्स मद्भयारे,
अधारस अकरेहिं जो मंतो ॥ जो
जाणइ सो जायइ, परम पयथ्यं

फुलं पासं ॥ १३ ॥ पासह समर
ण जो कुण्ड, संतुष्टे हिययेण ॥
अधुत्तर सय वाहि जय, नासइ
तस्स दूरेण ॥ १४ ॥

उवसग्गंते कमठा केण उपसर्ग करनार एवा
कमठासुर ठते पण जे जगवान ध्यानशी चलायमान
थया नहीं; वली केवा ठे ? तोके देव, मनुष्य, किन्नर,
अने ते सर्वनी स्त्रीजए रुमे प्रकारे स्तुति करेला एवा
श्री पार्श्वजिन, ते जय वृद्धिने पामो ॥ १२ ॥

एअस्समप्यारे केण आ स्तोत्रना मध्यने विषे
वेरेला अहरोए करी “नमिऊणपासविसहरवसहजि
णफुलिंगं ” ए अहार अहरोये करीने जे चिंतामणि
नामा गुप्त मंत्र ठे, तेने जे गुरु उपदेशशी जाणे ठे, त
था तेवा मंत्रे करी पार्श्वनाथने ध्यान करे ठे: ते पार्श्व
नाथ केवा ठे ? तोके स्वरूपे उत्तम एवा स्थानकने
विषे रहेनारा ठे ॥ १३ ॥

पासह समरण जो कुण्ड केण जे जीव संतुष्ट
हृदये करीने, पार्श्वनाथने स्मरण करे ठे ते जीवोना

एकसोने आठ एवा व्याधि संबंधि जे ज्ञय ते दूर ना
से ठे ॥ २४ ॥ इति ॥

जक्तामरना बुटा शब्दना अर्थ. गाथा

१ थी ५ सुधीना.

भक्त-भक्तिमंत

प्रणत-नमेलो

मौलि-मुकुट

प्रभाणां-कांतिओने

उद्योतकं-प्रकाश क

रनाहं

दलित-दल्युं छे

तमो-अंधारानो, अ

ज्ञाननो

वितानं-समूह

युगादौ-युगनी आ

दिमां

आलंवनं-आधार

पततां-पडेलाने

वाङ्मय-शास्त्रनुं

-रहस्य

बोधात्-जाणवाथी

उद्भूत-उत्पन्न थइ

पटुभिः-कुशल वडे

हरैः-हरण करनारां

उदारै-उदार

स्तोष्ये-स्तवीश

किल-निश्चै

बुद्ध्या-बुद्धिए

विना-रहित

विबुध-देव

पीठ-आसन

स्तोतुं-स्तुति करवा

ने माटे

समुद्यत-उद्यमवाली

वि-विशेषे

गत-गइ छे

त्रपो-लाजवालो

बालं-बालक

विहाय-विना

स्थितं-रहेलुं

इंदु-चंद्रमा

अन्य-बीजो

इच्छति-इच्छा करेछे

सहसा-ततकाल

ग्रहीतुं-पकडवाने

वक्तुं-कहेवाने

गुणान्-गुणोने

शशांक-चंद्रमा

कांतान्-मनोहर

कः-कयो

ते-तमारां

क्षमः-समर्थ

सुरगुरु-वृहस्पति
प्रतिम-जेवा
कल्पांत-प्रलयकाल
उद्धत-उछलता
नक्रचक्रं-मगरमच्छ
तरितुं-तरवानै
अंबुनिधि-समुद्र

भुजाभ्यां-वे हाथे
वशात्-वशथी
कर्तुं-करवाने
प्रीत्या-प्रीतिए करीने
आत्म-आत्मा
अविचार्य-अणवि
चारीने

सृगेंद्रं-सिंहने
अभ्येति-सामो धाय
किं-शुं
शिशोः-बालकना
परिपालन-रक्षण
अर्थ-अर्थे

अथ ऋक्तामर स्तोत्र.

ऋक्तामर प्रणत मौलि मणि प्रजा
णा, मुद्योतकं दलितपापतमोवि
तानं ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन
पादयुगं युगादा, वालंबनं ऋवजले
पततां जनानाम् ॥ १ यः संस्तुतः
सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, उद्भूत
बुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तो
त्रैर्जगत्रितय चित्तहरै रुदारैः, स्तो
ष्ये किलाहमपितं प्रथमं जिनैः

(५१८)

म् ॥ १ ॥ बुध्या विनापि विबु
धार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतम
तिविगतत्रपोऽहं ॥ बालं विहाय
जलसंस्थितमिंद्रुविंब, मन्यः क इ
च्छति जनः सहसा ग्रहीतुं ॥३॥ व
क्तुं गुणान् गुणसमुद् शशांककां
तान्, कस्ते क्लमः सुरगुरुप्रतिमोऽ
पि बुध्या ॥ कल्पांतकालपवनो
ध्रतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमंबु
निधिं नृजान्यां ॥४॥ सोऽहं तथा
पि तव न्निक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं
स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृतः ॥ प्री
त्यात्म वीर्यमविचार्य मृगो मृगें
डं, नाज्येति किं निजशिशोः प
रिपालनार्थं ॥ ५ ॥

अर्थः—ऋक्तामरप्रणतमौलि के० ऋक्तिमंत एवा
 देवताना नमेला जे सुगट तेने विषे रहेला जे मणिल
 तेनी कांतिजने प्रकाश करनारुं एवुं, तथा दृष्टयो ठे
 पापरूप अंधकारनो समूह जेणे एवुं, तथा संसाररू
 पी समुद्रमां पहेला ऋव्यजनोने युगनी आदिमां एटले
 त्रीजा आराना अंतमां आधारभूत एवुं श्री तीर्थकरनुं पा
 द युगल तेने रुढे प्रकारे नमस्कार करीने ॥ १ ॥

यःसंस्तुतः सकलवाङ्मय के० जे ऋगवान,
 सर्व शास्त्रना रहस्यने जाणवा थकी उत्पन्न थएली
 निपुण बुद्धिए करी कुशल एवा, देवलोकना नाथ जे
 इंद्रो, तेणे त्रण जगतनां प्राणीनां चित्तने हरण करना
 रां तथा अर्घ्यी नुदार एवां स्तोत्रोए करीने स्तुति क
 रायेला ठे, तेवा चोवीश जिननी अपेक्षाए सर्वजिनोमां
 पहेला जिनेंइ श्री ऋषभ स्वामीने हुं पण निश्चे करी
 स्तवीश ॥ २ ॥

बुद्ध्याविनापि के० देवताल अथवा पंक्तितोए पू
 जन करेलुं एवुं ठे पग राखवानुं आसन जेमनुं, तेना
 संबोधनने विषे हे विबुधार्चित पादपीठ ! बुद्धि विना

पण विशेषे करीने गइ ठे लज्जा जेनी एवो ठतो स्तुति करवानी रूमे प्रकारे प्रयत्नवती करेली ठे बुद्धि जेनी एवो हुं बुं. जेमके पाणीने विषे पमेलुं चंडमानुं प्रतिबिंब तेने तरत पकरवाने बालक विना बीजो कथो मनुष्य इच्छा करे ठे ? अर्थात् कोइ नहीं. तेम हुं पण तमारुं स्तोत्र करवाने अशक्य ठतो पण स्तुति करवाने अजिलाष करुं बुं. माटे मने गतलज्जा बालकज जाणवो ॥ ३ ॥

वक्तुंगुणान् के० हे गुणसमुद् ! तमारा चंडमाना जेवा नज्वल जे गुणो ठे तेने कहेवाने बुद्धिये करीने बृहस्पति समान एवो पण कयो पुरुष समर्थ थाय ठे ? अर्थात् कोइ नहीं. जेम प्रलयकालना पवने करीने जेने विषे मगरमच्छना समूह उठली रह्या ठे, एवा समुद्ने बे हाथे करीने परिपूर्ण तरवाने कोण समर्थ थाय ? अर्थात् कोइ न थाय. तेम तमारी स्तुति करवाने बृहस्पति समान पुरुष पण समर्थ थाय नहीं ॥४॥

सोऽहं तथापि के० हे मुनीश ! हुं तमारुं स्तोत्र करवाने असमर्थ बुं, तो पण ज्ञक्तिना वश थकी,

शक्ति रहित एवो पण हुं मानतुंग नामा आचार्य
तमारी स्तुति करवाने प्रवृत्त अयोळुं; जेम हरण स्नेहे क
रीने पोताना बलने अणविचारीने पोताना बालकनुं र
क्षण करवाने अर्थे सिंह प्रत्ये शुं युद्ध माटे न जाय?॥५॥

गाथा ६ थी १० सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

परिहास-हांसी मश्करी	क्षणव-घडीना छद्वा	वालाए
धाम-ठेकाणुं	भागमां, क्षणमां.	प्रभावाव-प्रभावधी
त्वव-तमारी	क्षयं-क्षयने	हरिष्यति-हरशे
मुखरी कुरुते-वाचा	उपैति-पापे छे	सतां-संतपुरुषोनां
ल करे छे	भाजां-भजनाराना	नलिनी-कमल
बलाव-बलात्कारथी,	आक्रांत-व्यापेलो	दलेषु-पत्रमां
जोरथी	अशेषं-सघळुं	ननु-निश्चे
कोकिल-कोयल	आशु-उतावळे	उद-पाणी (नुं)
किल-सत्य	सूर्य-सूरज	विदु-टपकुं
मधौ-चैत्र मासमां	अंशु-किरण	आस्तां-दूर रहो
विरोति-बोले छे	शार्करं-रातनुं	अस्त-नाश पाम्याळे
चारु-मनोहर	मत्वा-मानीने	दुरितानि-पाप (ने)
चूत-आंवा	मया-में	हंति-हणे छे
कलिका-मोहर, कली	इदं-आ	प्रभा-कांति
निकर-समूह	आरभ्यते-आरंभ क	आकरेषु-समूहमां
संतति-परंपरा	राय छे	पद्माकरेषु-सरोवरोमां
सन्निवद्धं-बंधायेळुं	तनुधिया-मंदबुद्धि	जलजानि-कमलोने

विकाश-विकस्वरपुणं
भांजि-भजनारा
भूतैः-साचा
भुवि-जगतमां

धर्वतं-तमोने
अभिष्टुवंत-स्तुति क
रनारा
भूत्या-संपत्तिये

आत्म-पोतानी
समं-बरावर

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्मां॥
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं वि
रौति, तच्चारु चूत कलिकानिकरै
कहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन नव
संततिसन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमु
पैति शरीरजाजां ॥ आक्रांत लो
कमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुनि
न्नमिव शार्वरसंधकारम् ॥ ७ ॥ म
त्वेत्ति नाथ तव संस्तवनं मयेद,
मारज्यते तनुधियापि तव प्रजा
वात् ॥चेतो हरिष्यति सतां नलि

(५२३)

नीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननु
दबिंदुः ॥ ७ ॥ आस्तां तव स्तव
नमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सह
स्रकिरणः कुरुते प्रज्ञैव, पद्माकरे
षु जलजानि विकाशजांजि ॥ ८ ॥
नात्यद्भुतं ज्ञुवनज्ञूषणज्ञूतनाथ, ज्ञू
तैर्गुणैर्जुवि ज्वंतमज्जिष्टुवंतः ॥
तुल्या ज्वंति ज्वतो ननु ते न
किं वा, ज्ञूत्याश्रितं य इह नात्म
समं करोति ॥ १० ॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां केण श्रुतज्ञानवंत एवा पुरुषोने हा
स्य करवाना स्थानक रूप एवा श्रोता ज्ञानवादा मने,
तज्जारी ज्ञक्ति बलात्कारथी स्तोत्र करवाने वाचाल करे
वे. त्यां दृष्टांत कहे वे; जे माटे चैत्र मासमां कोयल
मधुर स्वर बोले वे ते बोलवाने खरेखर

ना मोरनो समूह तेज एक कारण ठे; तेम मने बौला
ववाने तमारी जक्तिज एक कारण ठे ॥ ६ ॥

त्वत्संस्तवेन के० हे जिन ! देहधारी जीवोनुं
जवरूप संसारनी परंपराए करी बंधाएलुं पाप ते, त
मारा रूमा संस्तवने करी घनीना ठाजागे क्यने पा
मे ठे. कोनी पेठे ? तोके लोकमां व्यापी रहेलो एवो
अने जमराना जेवो कालो तथा अंधारी रातथी उत्प
न्न थयो एवो अंधकार, ते सूर्यना किरणना प्रकाशथी
तरत नाश पामे ठे तेनी पेठे जाणी लेवुं ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ तव के० हे नाथ एम मानीने
मंद बुद्धिवालो एवो पण हुं जे हुं, तेणे तमारुं
आ स्तवन जे ठे, ते करवाने आरंज कराय ठे;
ते, तमारा प्रज्ञाव थकी, संत पुरुषोनां चित्तने हरण
करसे, परंतु खल पुरुषोनां चित्तने हरण नहीं करे;
एवी सूचना करवाने अर्थे “ सतां ” ए पदग्रहण कथुं
ठे. तीहां उपमान कहे ठे केः—कमल पत्रने विषे परे
लो एवो जे पाणीनो बिंडु ते कमलना प्रज्ञावे करी
मोतीनी कांतिना जेवी शोचाने निश्चे पामे ठे ॥८॥

(५३५)

आस्तां तव स्तवनं के० हे देव ! नाश पाभ्या
बे समग्र दोष जे थकी एवं तमारुं स्तवन जे ठे ते
दूर रहो ! परंतु तमारी कथा मात्र करवी, ते पण ज
गत्वासी लोकोनां पापने हणे ठे; तीहां उपमा कहे
ठे; सूर्य जे ठे ते तो दूर रहो ! परंतु तेनी प्रजा जे ठे,
तेज कमलना समूहवालां सरोवरने विषे रहेलां कम
लोने विकस्वर करे ठे ॥ ए ॥

नात्यद्भुतं ज्ञुवनज्ञूषणज्ञूत नाथ के० हे जगतने
विषे ज्ञूषणरूप ! सत्य एवा तमारा गुणोए करीने
जगतने विषे तमोने स्तुति करनारा जनो, रूपे तथा
गुणे करीने तमारी बरोबर आय ठे, तेमां अति आ
श्चर्य नथी, प्रश्नमां हे नाथ ! जे कोइ धनवान स्वामी
आ लोकने विषे पोतानो आश्रय करीने रह्यो एवो जे
सेवक तेने महत्त्वे करीने पोतानी बराबर नहीं करे,
तो ते स्वामीए करीने शुं ? ॥ १० ॥

गाथा ११ थी १५ सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

दृष्ट्वा-जोइने	ललामभूत-तिलकस	लंघयंति-उल्लंघन करेछे
अनिमेष-एकी नजरे	मान	तान्-तेमने
विलोकनीयं-जोवा	तावंत-तैटला	निवारयति-निवारण
योग्य	खलु-निश्चय	करे छे
तोषं-संतोषने	अणवः-परमाणुओं	संचरतः-विचरता
पीत्वा-पीने	पृथिव्यां-पृथ्वीमां	यथेष्टं-पोतानी इच्छाये
पयःपाणी	अपरं-बीजुं कोइ	चित्रं-आश्चर्य
कर-किरणो	अस्ति-छे	अत्र-ए ठेकाणे
दुग्धसिंधोः-क्षीरसमु	क्व-क्यां	यदि-जो
द्रना	हारि-हरण करनार	त्रिदश-देवताओं(नी)
क्षारं-खारु	निःशेष-समस्त	अंगनाभिः-स्त्रीओए
अशितुं-पीवाने	निशाकरस्य-चंद्रमानुं	नीतं-पमाड्युं
इच्छेत्-इच्छा करे	वासरे-दीवसमां	मनाग्-किंचित्, लगाए
रुचिभिः--छायावाला	षांडु-पीलुं	मरुता-वायरावडै
परमाणुभिः-परमाणुए	पलाश-खाखरानुंझाड	चलित--चलान्या
निर्मापितः-निर्माण	कलाप-समूह	अचलेन--पर्वत जेणे
करेला	शुभ्रा-उजला	कदाचित्--क्यारे पण

दृष्ट्वा ज्वंतमनिमेष विलोकनीयं,

नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य च

हुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति
दुग्धसिंधोः ह्यारं जलं जलनिधे
रशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शां
तरागरुचिन्निः परमाणुन्निस्त्वं, नि
र्मापितस्त्रिजुवनैकललामन्भूत ॥
तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति
॥१२ ॥ वक्रं क ते सुरनरोगने
त्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्रितयो
पमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व
निशाकरस्य, यद्वासरे ज्वति पांडु
पलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमं
मलशशांककलाकलाप, शुद्धा
गुणास्त्रिजुवनं तव लंघयंति ॥ ये
संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, क

(५१८)

स्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्
॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रि
दशांगनाग्नि, नीतं मनागपिमनो
न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतका
लमरुता चलिताचलेन, किं मंदरा
द्विशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

अर्थः—दृष्ट्वा ज्वंतमनिमेष के० मिषोन्मिष रदि
तपणे करीने जोवा लायक एवा तमोने जोशने ते जो
नारा लोकोनी आंखो बीजा देवोने विषे संतोष न पा
मे; जेम चंडमाना किरणनी कांति जेवी उज्ज्वल कां
तिवाला क्षीर समुद्रनुं पाणी पीने कयो पुरुष लवण
समुद्रनुं खारुं पाणी पीवानी इच्छा करे ? ॥ ११ ॥

यैः शांतरागरुचिभिः के० त्रण ज्ञुवनने विषे ए
कज तीलक समान माटे हे त्रिज्ञुवनैकललाम ज्ञूत !
जे शांत रसना जावनी ठाया ठे जेमने विषे, एवा प
रमाणुए करीने निर्माण करेला शरीरवाला तमे ठो,
अने ते परमाणुज जगतमां तेटलाज ठे; कारण के पृ

(५१७)

छवीने विषे तमारा सरखुं बीजुं कोइ रूप नथी ॥११॥

वक्रं क्व ते केण हे नाथ ! देवताउ, मनुष्यो तथा
नागकुमार प्रमुख देवताउना चक्षुने हरण करवानुं ठे
शील जेवुं एवुं, वली समस्त त्रण जुवनने विषे जे
नी उपमा देवाय (एवां कमल, चंद्र, दर्पण) एवा पदार्थ
ना सौंदर्यने जीत्युं ठे जेणे एवुं तमारुं मुख ते कयां ?
अने कलंके करी मेळुं, अने दिवसे खाखराना जाऊना
पांढना जेवुं पीळुं अइ जाय एवुं चंद्रमानुं बिंब कयां ? अ
र्थात् तमारा मुखने चंद्रमानुं उपमान घटतुं नथी. ॥११॥

संपूर्ण मंरुल केण हे त्रण जगतना ईश्वर ! सं
पूर्ण मंरुलवाला (पूनमना) चंद्रमानी कलानो समू
ह तेना सरखा लज्जवल एवा तमारा गुणो ते त्रण जु
वनने उल्लंघन करे ठे, एटले तमारा ज्ञान, दर्शन, चा
रित्रादि गुणो ठे ते त्रण जुवनथी उपरांत ठे. वली जे
गुणो, एक एवा अने त्रण जुवनना स्वामी एवा, जग
वंतने आश्रय करी रहेला ठे, ते पोतानी इच्छाए विच
रता एवा गुणोने कोण निवारण करी शके ? ॥१४॥

चित्रं किमत्र यदि केण हे प्रजो ! उद्यस्थ अ

वस्थाए विचरता एवा तमे, तेमनुं मन जो देवतानुनी
 स्त्रीनुए किंचित् मात्र पण विकारना स्थानकने न प
 माण्युं, एटले तमारा मनने लगार मात्र होज न प
 माण्यो; तो ए ठेकाणे आश्चर्य हुं ? अर्थात् कांइ नहीं.
 केसके मोटा पर्वताने चलायमान कर्या ठे जेणे एवा
 प्रलय कालना वायुए करीने क्यारे पण मेरुपर्वतनुं
 शिखर चलायमान आय ? अर्थात् ते वायुए बीजा पर्व
 ताने चलायमान कर्या परंतु मेरुपर्वतने न कर्योतेम ते
 देवतानो स्त्रीनु तमोने चलायमान करी शके नहीं. ।१५।

गाथा १६ थी १० सुधीना लुटा शब्दना अर्थ

निर्-गयेलो, रहित.

द्धम-धूमाडो

बर्त्ति-दीवट

अपवर्जित-वर्जित थ

एलुं, रहित.

तेल-तेल

पुरः-पूरवुं

कृत्स्नं-समग्र

प्रकटी-प्रगट

करोपि-करो छो

गम्यः-जवा योग्य

जातु-क्यारे पण

दीपः-दीवो

अपर-बीजो

असि-छो

स्पष्टिकरोपि-स्पष्ट क

रोछो

सहसा-एक दम

युगपत्-समकाले

अभोधर-मेव

उदर-मध्यभाग

निरुद्ध-रोकायो

वदनस्य-मुखने

वारिदानां-मेघोना

विभ्राजते-शोभे ठे

अवजं-कमल

विद्योतयत्-प्रकाश

करतुं

अपूर्व-अपूर्व

शर्वरीषु-रात्रिओमा

अहि-दिवसे
विवस्वता-सूर्य वडे
युष्मत्-तमारा
इंदु-चंद्रमा
दलितेषु-दले छते
तमस्तु-अंयकारो(ने)
निष्पन्न-पाकेला
शालि-डांगेर
शालिनि-शोभायमा

न (मां)
कार्य-प्रयोजन
क्रियत्-थुं, केटलुं
जलधरै-मेघवडे
नत्रैः-नयेला
त्वाये-तमारामां
यथा-जेवी रीते
विभाति-शोभे छे
अवकाशं-अवकाश

हरि-कृष्ण
हरादिषु-शिववगेरेमां
स्फुरत्-देदीप्यमान
याति-पामे छे
महत्त्वं-मोटाइ
शकले-ककडामां
किरणाकुलोपि-किरणौ
ए सहितने दिषे पण,
कांतियाळामां पण.

निर्धुनवर्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृ
त्नं जगन्नयमिदं प्रकटीकरोषि ॥
गम्यो न जातु मरुता चलताचला
नां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जग
त्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचि
दुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरो
षि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांजो
धरोदर निरुद्धमहाप्रज्ञावः, सूर्याति
शायिमहिमासि मुनींश्च लोके

॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहम
हांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न
वारिदानां ॥ विद्मजते तव मुखा
ज्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्व
शशांकविंबम् ॥ १७ ॥ किं शर्व
रीषु शशिनाब्धि विवस्वता वा, यु
ष्मन्मुखेंडु दलितेषु तमस्सु नाथ ॥
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीव
लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलजा
रनम्रैः ॥ १८ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि
विज्ञाति कृतावकाशं, नैवं तथा
हरिहरदिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फु
रन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं
तु काचशकले किरणाकुलेपि १७ ॥

अर्थः—निर्दुमवर्तिरपवर्जित के० हे नाथ ! तमे
जगत्प्रकाशक रूप बीजा दीवा गो. ते केवी रीते

(५३३)

त्यां कहे ठे. के गयो ठे द्वेषरूप धुमानो अने कामवशा
तारूप दीवट जे अकी एवा अपूर्व दीपक तमे गो. व
ली केवा गो ? तो के गयुं ठे स्नेह प्रकाशरूप तेलनुं पूर
बुं जे अकी, एटले बीजा दीवानुंमां तो तेल पूरबुं प
रुं ठे, पण तमे ते रहित गो. वली केवा दीपक गो ?
तो के आ समग्र त्रण जगतने प्रगट करो गो एटले के
वल ज्ञानरूप उद्योते करीने प्रकाश करो गो. वली के
वागे ? तो के पर्वतोने चलायमान करनार वायराए क
रीने क्यारे पण जावा योग्य नथी अर्थात् उलवाता नथी;
अने लौकिकदीपकतो पवनथी उलवाइ जाय ठे. ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि के० हे मुनीन्ड ! तमे ज
गतने विषे सूर्यअकी घणा महिमावाला गो, केमके सू
र्य तो अस्त पासि ठे अने तमे कदापि पण अस्त पा
सता नथी; वली सूर्य राहुअस्त आय ठे एटले तेनुं अ
हण आय ठे पण तमे राहुअस्त अता नथी; वली सू
र्य तो एक जंबुद्वीपने प्रकाश करे ठे, अने तमे तो
त्रण जगतने साधेज प्रकाश करो गो; वली सूर्य तो वा
दलथी ठंकाएलो ठे अने तमे तो ज्ञानावरणादिक पां
च आवरणरूप मेघ तेना मध्य जागथी रोकायो नथी

मोटो महिमा जेनो एवा ठो. ॥ १७ ॥

नित्योदयं दलित मोह के० हे नाथ ! तमारुं
मुखरूप कमल अपूर्व चंडमाना विंब जेवुं शोजे ठे ते
केवी रीते ? तो के तमारुं मुखरूप कमल तो निरंतर
उदय पामेलुं ठे अने चंड विंब तो निरंतर उदय थवा
वालुं नथी. वली तमारुं मुख अज्ञानरूप मोटा अंध
कारने दली नांखयो ठे जेणे एवुं ठे अने चंडविंब ते
वा गुणवालुं नथी. तथा वली चंडमा तो राहुना
मुखने प्रसवा योग्य ठे अने तमारुं मुख तेवुं
नथी. तथा वली चंडविंब तो क्यारेक पण अल्प
कांति वालुं आय ठे, अने तमारुं मुख तेस थतुं न
थी. तथा वली मेघ चंडविंबने आछादन करवाने श
क्तिमान् ठे, अने तमारा मुखने आछादन करवाने अ
शक्य ठे. वली चंडविंब तो एक जंबुद्धीपनेज प्रकाश
करे ठे अने तमारुं मुख तो त्रण जगतने प्रकाशित करे
ठे माटे हे प्रभु ! अपूर्व शशांकविंबपणुं ते तमारा
मुखकमलने योग्यज ठे. ॥१७॥

किं शर्वरिषु शशिनाहि के० हे नाथ ! तमारा
मुख रूप चंडमाए अज्ञानरूप अंधकारोने वलन करे

(५३५)

उते पत्नी रात्रिनुने विषे (जगनारा) चंडमाए करीने
अप्रवा दिवसे (जगनारा) सूर्य वने शु कार्य घवानुं ठे ?
कांइ नहीं. त्यां दृष्टांत कहे ठे के जेम पाकेला शाखिना
वने करी शोभायमान अएला एवा मृत्यु लोकने विषे
जलना नारे करी नमेला एवा मेघो तेमणे करी शुं
प्रयोजन ? अर्थात् कांइ नही. ॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विज्ञाति केण हे नाथ ! अनंत
पर्यायात्मक जे पदार्थो तेने विषे कयो ठे अवकाश एट
ले प्रकाश जेणे एवुं केवलज्ञान ते जेवी रीते तमारे
विषे शोभे ठे, तेवी रीते पोतपोताना शासनना स्वा
मी एवा हरिहरादिक जे देवो ठे तेने विषे ए प्रकारनुं
नथी शोभतुं. त्यां दृष्टांत कहे ठे के, जेवी रीते प्रका
श देदीप्यमान मणिलुने विषे गौरवताने पामे ठे, ते
वी रीते ते चक्रकता एवा पण काचना कटकाने विषे
गौरवताने नथी पामतो. अर्थात् जेवुं तमारे विषे ज्ञान
ठे तेवुं अन्य देवोमां नथी. ॥ १० ॥

गाथा ११ थी १५ सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

मन्ये-हुं मानुंहुं
दृष्टा-दीठा

दृष्टेषु-दीठे छते
तोषं-संतोषने

एति-पामे छे
वीक्षितेन-देखेला

भुवि-पृथ्वीमां
 येन-जे कारणे
 भवता-तमोए
 कश्चित्-कोइ
 भवांतरेऽपि-बीजा भ
 वमां पण
 शतानि-सैंकडो
 शतशः-सैंकडो गमे
 जनयति-जन्म आपेछे
 त्वदुपमं-तमाराजेवा
 प्रसूता-जन्म आप्यो
 दधति-धारण करेछे
 भानि-नक्षत्रो
 रश्मि-किरण
 प्राची-पूर्व
 जनयाति-उत्पन्न करेछे

स्फुरत्-प्रकाशमान
 अंधु-किरण
 जालं-समुह
 त्वां-तमोने
 आमनांति-कहेछे
 परमं-मोटा
 पुमांसं-पुरुष
 परस्तात्-आगल
 उपलभ्य-मेलवनिने
 पंथाः-मार्ग
 अव्ययं-क्षय रहित,
 फेरफार नहीं थ
 इ शके तेवुं.
 असंख्यं-संख्यारहित
 ब्रह्माणं-ब्रह्माने

ईश्वरं-ईश्वरने
 अनंतं-अंतरहित
 अनंग-कामदेव
 केतुम्-बूछडीओतारो
 विदित-जाण्यो
 प्रवदंति-कहेछे
 बुद्धः-बुद्धदेव.
 बोधात्-बोधयी.
 शंकरोसि-तुं शंकरहुं
 धाता-विधाता
 विधेः-विधिना
 विधानात्-करवायी
 व्यक्तं-प्रगटपणे
 पुरुषोत्तम-नारायण
 उत्तम पुरुष.

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु
 येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं
 वीक्षितेन ज्वता जुवि येन नान्यः,
 कश्चिन्मनो हरति नाथ ज्वांतरे
 पि ॥ ५१ ॥ स्त्रीणां शतानि शत

(५३४)

शो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं
त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वा दि
शो दधति ज्ञानि सहस्ररश्मिं, प्रा
च्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजाल
म् ॥ ११ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः
परमं पुमांस, मादित्यवर्णममलं
तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगु
पलभ्य जयन्ति सृष्ट्युं, नान्यः शि
वः शिवपदस्य मुनींश्च पंथाः ॥ १३ ॥
त्वामव्ययं विभुमचित्त्यमसंख्यमा
द्यं, ब्रह्माण्मीश्वरभनंतमनंगकेदुम्
॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपसमलं प्रवदन्ति संतः
॥ १४ ॥ बुधस्त्वमेव विबुधार्चित
बुधिवोधात्, त्वं शंकरोसि भुवन

त्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धी
र शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं
त्वमेव जगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ १५ ॥

अर्थः—मन्ये वरं हरिहरादय के० हं विचार करुं
के हरिहरादिक देवो दीठा तेज सारुं थयुं. केमके ते
मने दीठे ठते थारुं चित्त ते तयारे विषे संतोषने पा
मे ठे; अने देखेला एवा तमोये करीने गुं ? तो
के हे नाथ ! जे तमारा दर्शने करीने पृथ्वीने विषे
कोइ बीजो देव ज्ञवांतरने विषे पण मारुं मन हरण
करतो नथी अर्थात् मने गमतो नथी ॥ ११ ॥

स्त्रीणां शतानि के० हे नाथ ! लोकने विषे सेंकनो
स्त्रीयो सेंकनो गमे पुत्रोने जन्म आपे ठे खरी, परंतु
ते बीजी माता तमारी नपमा देवाय एवा पुत्रने ज
न्म आपती न हवी. त्यां दृष्टांत कहेंठेके, सर्व दिशांत
नक्षत्रोने धारण करेठे, परंतु एक पूर्व दिशाज देदीप्य
मान किरणना समूहवाला अने हजार ठे किरण जे
नां एवा सूर्यने उत्पन्न करेठे. अर्थात् जेम एक पूर्व
दिशा सूर्यनी जननी ठे तेम एक तमारी माताज त

(५३ए)

मारा सरखा सुपुत्रनी जननी ठे. ॥ ११ ॥

त्वामामनंति मुनयः के० हे मुनींड़ ! जे साधु जनो
ठे ते तमने अंधकाररूप डुरितनी आगल सूर्यना सर
खा कांतिवाला एवा अने रागद्वेष रहित अवाधी नि
र्मल अने उत्तम पुरुष एटले निःकर्मा सिद्ध एवा कहे
ठे; तथा तमोनेज रूपे प्रकारे पाप्मीने ते मुनिल मृत्यु
ने जीते ठे, माटे बीजो कोइ निरूपडव एवो मोक्षनो
मार्ग नथी. ॥ १३ ॥

त्वामव्ययं विष्णुमर्चित्य के० हे प्रभु ! तमोने
संत पुरुषो कहे ठे जे तमे हय रहित ठो, वली
परमेश्वर ठो, वली चिंतवन नहीं अइ शके एवा
महिमावंत ठो, वली गुणोनी संख्या रहित ठो,
वली पेहेला तीर्थकर ठो, अथवा लोक सृष्टीना
हेतुपणाथी सर्वनी आदिमां ठो, अथवा पंच प
रमेष्टीमां पेहेला ठो, वली ब्रह्म (निवृत्तिरूप) ठो,
वली सर्व देवना ईश्वर ठो, वली अंत रहित ठो,
वली कामदेवने नाश करवाने माटे केतु समान ठो, व
ली योगी (सामान्य केवली) तेमना ईश्वर ठो, वली
ज्ञानीपुरुषोए अष्टविध योग तमाराथी जाण्यो ठे ए

या ओ, तथा ज्ञाने करी अनेक ओ, सर्व जाणकार हो
वाथी सर्व व्यापक ओ माटे पर्यायथी अनेक ओ, वली
तमाराथी बीजुं कोइ उत्तम नथी माटे एक ओ अथवा
जीवद्वयनी अपेक्षायें द्वयथी एक ओ, द्वायिक स्वरूपी
ओ, अठार दोषरूप पापमल रहित माटे निर्मल ओ ॥१४॥

बुद्धत्वमेवविबुधार्चित के० हे नाथ ! देवतानुए
पूजित कर्यो ते केवलज्ञाननो बोध जेमनो एवा माटे
तमेज बुद्ध देव ओ, तथा त्रण जुवनने सुखना करनार
होवाथी तमेज शंकर देव ओ, तथा हे धीर ! तमेज
मोक्ष मार्ग तेनो विधि जे ज्ञान दर्शन चारित्ररूप
रत्नत्रय तेना निष्पादन करवाथी विधाता (ब्रह्मा)
ओ, वली हे जगवंत ! तमेज प्रगटपणे पुरुषोत्तम ते
नारायण देव ओ ॥ १५ ॥

गाथा १६ थी ३० सुधीना लुटा शब्दना अर्थ

आर्त्ति-पीडा	भूषणाय-अलंकारने	को-शो, श्रुं
हराय-हरनारने	उदधि-महासागर	विस्मय-आश्चर्य
क्षितितल-पृथ्वीनी स	शोषणाय-शोषण क	अत्र-अहीं, एमां
पाटी	रनार (ने)	निरवकाशतया-निरं

तरपणे

उपात्त-ग्रहण करेलुं
विविध-जूदा जूदा
प्रकारना

जात-उत्पन्न थया
गर्वैः-गर्ववडे

स्वप्नांतरे-स्वप्नमां
ईक्षितो-जोयेलो

उच्चैः-उंचा

अशोकतरु-अशोकवृक्ष

उन्-उंचा

मयूख-किरणो

आभाति-शोभेछे

नितांतं-अत्यंत.

वितानं-समूह

रथेः-सूर्य(नुं)

पयोधर-मेघ [थकुं

पार्श्ववर्ति-पासे रहुं

शिखा-पंक्तिओ

वपुः-शरीर

अवदातं-मनोज्ञ

वियत्-आकाश.

विलसत्-प्रकाशता

लता-शाखाओ

तुंग-उंचो

शिरसि-माथाउपर

सहस्ररश्मेः-सूर्यना

कुंद-मोगरानां फुल

अवदात-उज्ज्वल

चामर-चामर

कलधौत-सुवर्ण

शुचि-निर्मल

निर्झर-झरण

वारि-पाणी.

धारं-धारा.

तट-शिखर

शातकौभं-सोनुं

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,

तुभ्यं नमः क्षितितत्वामल्लक्ष्मणा

य ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतःपरमेश्वरा

य, तुभ्यं नमो जिन नवोदधिषो

षण्णाय ॥ १६ ॥ कोविस्मयोऽत्र यदि

नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निर

(५४७)

वकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्त
विविधाश्रयजात गर्वैः, स्वप्रांतरे
पि न कदाविदपीहितोसि ॥५७॥
उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखं, मा
जातिरूपममलं ज्वतो नितांतम् ॥
स्पष्टोद्धसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिंबं रवेरिव पयोधर पार्श्ववर्ति
॥५८॥सिंहासने मणिमयूख शिखा
विचित्रे, विन्नाजते तव वपुः कन
कावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदं
शुलतावितानं, तुंगोदयाद्दि शिर
सीव सहस्ररश्मेः ॥ ५९ ॥ कुंदा
वदातचलचायरचारुशोचं, विन्नाज
ते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उच्य
न्नुशांकशुचिनिर्जरवारिधार, मुञ्चे

स्तटं सुरगिरिखिशातकौञ्जम् ॥३०॥

अर्थ—सुन्दरं नक्षत्रिभुवनातिहराय नाश्रकेण हे नाश्र
त्रया भुवननी पीना हरनार एवा तमोने नमस्कारहो,
तथा पृथ्वीतलने विषे निर्मल अलंकार रूप एवा त
मोने नमस्कार हो, अथवा पृथ्वीतल एटले पाताल
अने अमल केण स्वर्ग तेना भूषण रूप एवा तमोने
नमस्कार धानु, तथा त्रया जगतना प्रभु एवा तमोने
नमस्कार हो, तथा हे श्री वीतराग, संसार रूप तसु
इने शोषण करनारा एवा तमोने नमस्कार हो ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि के० हे मुनिजना ईश्वर !
जो तमे समग्र गुणोए निरंतरपणे रूपा प्रकारे आश्रय
कराएला ठो तो एने विषे शुं आश्चर्य ? कांइ नहीं.
अने ग्रहण करेला एवा जे विविध आश्रयो तेणे करी
ने उत्पन्न अथा एवा गर्वरूप जे अवगुण तेना दोषे
करिने सहित एवा जनोये तमो स्वप्नांतरने विषे परा
क्यारे परा जोयाएला नथी ॥२७॥

उच्चैरशोकतरु के० हे जिन ! अशोकवृक्ष नी
चे वेठेलाठो ते समये उचां ठे किरणो जेना एवं तमारुं

शरीर ते अत्यंत निर्मल शोभे ठे. जेम के प्रगट उंचां गएलां ठे किरणो जेनां एवुं सूर्यविंव जे ठे ते मेघना पासे रह्युं अकुं जेम होय नहीं? एटले सूर्य पोतानां किरणो वने करीने अंधकारना समूहने अस्त करी नांखीने एटले नाश करीने शोभाने पामे ठे, तेम तमे अशोकवृक्ष नीचे बेठा अका शोभाने पामोठे. ॥१७॥

सिंहासने मणिमयूख केण हे देव ! मणिउना किरणोनी पंक्तिउए करीने चित्र विचित्र एवा सिंहासनने विषे सुवर्णना सरखुं मनोहर एवुं तमारुं विचित्र शरीर ते विशेषे करीने शोभे ठे. त्यां दृष्टांत कहेठे:-
उंचा एवा उदयाचल पर्वतना शिखर उपर जे आकाश तेने विषे उद्योतमान किरणोनी शाखानना समूह ठे जेने एवा सूर्यनुं विंव ते जेम शोभाने पामे ठे. तेम प्रज्जुनुं शरीर सिंहासन उपर शोभा पामेठे ॥१७॥

कुंदावदातचलचामर केण हे नाथ ! मोघराना फुल जेवा उज्ज्वल अने चंचल एटले इंद्रादिके वीजे ला एवा बे चामरोए करीने मनोहर शोभावाळुं अने सुवर्णना सरखुं मनोहर एवुं तमारुं शरीर ते विशेषे

(५४५)

करिने शोन्ने ठे. त्यां दृष्टांत कहे ठे के उदय पामेल
चंडमा सरखुं निर्मल, अने निऊरणाना पाणीनी जल
धारा जेने विषे वही रही ठे एवुं सुवर्णमय, जे मेरुप
वतनुं उंचुं शिखर जेम शोन्ने ठे, तेम तमारुं शरीरप
ण शोन्ने ठे ॥ ३० ॥

गाथा ३१ थी ३५ सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

विभाति-विशेषेशोभेछे

स्थितं-रहेलुं

स्थगित-ढांक्यो छे

मुक्ताफल-मोती

प्रकर-समूह

जाल-रचना

दृढ़-दृढ़िपामेली छे

शोभं-शोभा जेनी

प्रख्यापयत्-प्रख्यात
करतुं

उन्नित-विकसित

हैम-सोनुं

पुंज-ढगलो

पर्युल्लसत्-चारे तर

३५

फ उछलतुं

पदानि-पगलां

धत्तः-मूके छे

पत्रानि-कमलोने

परिकल्पयंति-रचना
करे छे

इत्थं-एवी रीते

विभूतिः-अतिशयनी
संपदा

अभूत्-थइ

परस्य-वीजानी

यादृक्-जेवी

दिनकृतः-सूर्यनी

हत-हण्यो

तादृक्-तेवी

कुतः-क्यांथी

श्रयोतव-झरतो

आविल-कलुष थए
लुं एहुं

कपोलमूल-गंडस्थल

अमर-भमराना

नाद-शब्द

कोपं-कोप

औरावृत्त-हाथी

आभं-कांति

इभं-हाथी

आपतंतं-सामो आ
वतो

गलत्-नीचे पडया

शोणिताक्त-लोही

थी खरडाएला

भूषित-शोभाव्यो

वद्ध-बांधेली छे

क्रम-फाल

क्रम-पग

गतं-गएलु

हरिण-हरण

अधिप-राजा

नाक्रामति-दवावतो

नयी

तत्रत्रयं तव विज्ञाति शशांककांत,
 मुञ्चैः स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रता
 पम् ॥ सुक्ताफलप्रकरजालविवृद्ध
 शोचं, प्रख्यापयत्रिजगतः परमेश्व
 रत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निष्हेमनवपंक
 जपुंजकांति, पर्युद्धसन्नखमथुखशि
 खान्निरामौ ॥ पादौ पदानि तव
 यत्र जिनेष् धत्तः, पद्मानि तत्र वि
 बुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इ
 त्त्वं यथा तव विज्ञूतिरज्ञूज्जिनेष्, ध
 र्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥
 यादृक्प्रज्ञा दिनकृतः प्रहतांधका

रा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशि
नोपि ॥ ३३ ॥ श्रयोतन्मदाविल
विलोलकपोलमूल, मत्तत्रमद्त्रम
रनाद विवृद्धकोपम् ॥ अत्रैरा
वतात्रमिन्नमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा त्रयं
त्रवति नो त्रवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥
त्रिन्नेत्रकुंजगलडुज्ज्वलशोणिता
क्त, सुक्ताफलप्रकर त्रूषितत्रूमिन्ना
गः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधि
पोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसं
श्रितं ते ॥ ३५ ॥

अर्थः—उत्रत्रयं त्वं विज्ञाति केण्हे प्रज्ञो ! चंडमाना
सरखुं मनोहर एवं तमारा उपर रहुं अने ठांकी दी
घो ठे सूर्यना किरणोनो प्रताप जेणे एवं, तथा यो
तीना समूहनी रचनाए करीने विशेषे करी वृद्धि पा
मी ठे शोजा जेनी एवं, तथा जगतनुं परमेश्वरपणुं

तेने प्रकर्षे करीने जणावनाहं एवं, तमाहं उत्रत्रय जे
 ठे ते शोत्रे ठे; एटले तमोने एक उपर एक एम त्रण
 उत्र धराय ठे, ते त्रण जगतनुं स्वामिपणुं जाहेर करे
 ठे. तेमां एक उत्रे पाताल लोकनुं स्वामीपणुं, बीजा
 उत्रे मृत्युलोकनुं स्वामीपणुं अने त्रीजा उत्रे करी दे
 वलोकनुं स्वामीपणुं सूचवाय ठे ॥ ३१ ॥

उन्निश्हेमनवपंकज के० हे जिनेड ! प्रफुल्लित
 सोनानां नव के० नव संख्या ठे जेनी अथवा नवके०
 नवीन एवां कमलना समूहनी कांतिए करीने चारे
 तरफ उठलतां एवां परमेश्वरना पगना नखनां किर
 णोनी प्रकाशपंक्ति जेनी चारे तरफना जागमां फेली
 रही ठे, तेणे करीने मनोहर एवां तमारां चरणो ते
 जे जूमिने विषे पगलां मूके ठे त्यां देवतानुं कमलो
 नी रचना करे ठे; एटले वे कमल पगलांनी नीचे अने
 सात कमल मार्गमां रचे ठे. अहींआं चरणकमलना
 नखनी कांति दर्पण जेवी ठे अने देवतानुंए रचलां
 सोनानां कमलनी कांति पीली ठे, ते वेना मलवाश्री
 चरणोनो विचित्र वर्ण अयो ॥ ३२ ॥

(५४ए)

इत्तं यथा तव के० हे जिनेन्द्र ! दुर्गतिए परमता
प्राणीने धारी राखे एवो जे श्रुत चारित्र लक्षण धर्म,
तेना उपदेश विधिने विषे, ए पूर्वे कही एवी तमारी
अतिशयनी संपदा ते जे प्रकारे थती हवी, तेवी बीजा
जे हरिहरादिक देवो ठे, तेनी न थइ. त्यां दृष्टांत कहे
ठे के जेम प्रकर्षे करी हणयो ठे अंधकार जेणे एवी
सूर्यनी जेवी कांति ठे तेवी कांति प्रकाशित थयेला
एवा ग्रहोना समूहनी क्यांथी होय ? एटले सर्व
था प्रकारे नज होय. एटले आठ महा प्रातिहार्य त
था चोत्रीस अतिशयवाली तमारी समृद्धि जेवी हरि
हरादिक देवोनी समृद्धि क्यांथी होय ? कारणके ते स
रागी ठे अने तेमनां कर्म क्य थयां नथी अने तमारां
घातीआं कर्मक्य गयां ठे तेथी उत्तमोत्तमताना प्रजा
वथी प्रातिहार्यादिक समृद्धि प्राप्त थइ ठे ॥ ३३ ॥

श्रयोतन्मदाविलविलोल के० हे नाथ ! ऊरता
मदे करी कलुष थएला अने चंचल एवा गंमस्थलना
प्रदेशे करी मदोन्मत्त थएलो एवो अने अहीं तहीं ब्रम
ण करनारा एवा जमराजना ऊंकार शब्दे करीने वृद्धि

(५५०)

पाम्यो ठे क्रोध जेनो एवो, अने शैरावण हाथीना सर
खी कांति ठे जेनी एवो, अने अंकुशादिक शस्त्रोने
नहीं गणतो एवो जे हाथी तेने सन्मुख आवता एवा
जे जोइने तमारा आश्रय करीने रहेला एवा (जक्त)
जनोने ज्ञय नथी अतुं ॥ ३४ ॥

जिनेजकुंज केण जेदन करेला एवा हाथीना कुं
जस्थल अकी नीचे परुया एवा उज्ज्वल वर्णयुक्त ए
वा लोहीथी खरनाएला मोतीना समूहे करी शोभा
व्यो ठे पृथ्वीनो ज्ञाय जेणे तथा कीलित ठे पग जेना
एवो हरिणोनो अधिप जे सिंह ते पण तमारा चरण
युगरूप पर्वत तेने आश्रय करीने रह्यो एवो पुरुष जो
ते सिंहनी फाल तेने विषे प्राप्त अएलो होय, तोपण ते
ने ते सिंह प्रहार करवाने दोरतो नथी; एटले हे प्रभु!
तमारा आश्रित जनोने पूर्वे कहेलो एवो सिंह पण प
राजव करतो नथी ॥ ३५ ॥

गाथा ३६ थी ४० सुधीना तुटा शब्दना अर्थ

वन्धि-आग्ने
कल्प-सरखो
ज्वलित-सलगेलुं

उत्फुल्लिगं-उंचा ग
या छे तणखा जेना
जिघत्सु-खाइ जवा

नी इच्छावा
संमुख-सन्मुख
आपतंतं-अ

शमयति-शांत करेछे
रक्तेक्षणं-राती आं
खवालुं

समद-मदोन्मत्त
नीलं-कालुं, श्याम.
फणिर्न-सर्प

उत्फणं-उंची फणा
वालो

आक्रामति-उल्लंघन
करेछे

निरस्तशंक-शंका र-
हित

नागदमनी-औषधीछे

हृदि-हृदयमां

पुंसः-पुरुषना

वल्गव-युद्ध करता

तुरंग-घोडा

गर्जित-गर्जनाए

आजौ-संग्राममां

वलं-सैन्य

वलवतां-वलवान्

भूपतीनां-राजानां

दीवाकर-सूर्य

अपविद्धं-भेदाएलुं

कीर्त्तनात्-कीर्त्तनथी

आशु-उतावले

भिदां-भेदनने

वाह-प्रवाह

वेगावतार-उतावले

तरण-तरवाने

योध-सुभट

युद्धे-संग्राममां

विजित-जीत्या

जेयपक्षा-शत्रुनां वर्ग

लभंते-प्राप्ते छे

अभोनिधौ-समुद्रमां

पाठीनपीठ-मच्छवि-

शेष

भयद-भय करनारो

उल्वण-मोटो, भारे

वाडवाग्नौ-वडवानल

रंगत्-उछलता [जिमनां

यानपात्राः-वहाण छे

त्रासं-भयने

विहाय-त्याग करीने

व्रजंति-पामे छे

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुल्लिं
गम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुख
मापतंतं, त्वन्नामकीर्त्तन जलं शम

यत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं सम
 दकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं
 फणिनमुत्फणामापतंतं ॥ आक्राम
 ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नाम
 नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥
 वल्गतुरंगगजगर्जितन्नीमनाद, मा
 जौ बलं बलवतामपि नूपतीनां ॥
 उद्यद्विवाकर मयूखशिखापविधं,
 त्वत्कीर्तनात्तमश्वाशु त्रिदामुपैति
 ॥ ३८ ॥ कुंताग्रन्निन्नगजशोणित
 वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोध
 न्नीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजे
 यपक्षा, स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो
 लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अंजोनिधौ हु
 न्जितन्नीषण नक्रचक्र, पाठीनपीठ

जयदोष्टवणावाहवाग्नौ ॥ रंगतरंग
शिखर स्थितयानपात्रा, स्वासं वि
हाय ज्वतः स्मरणाद्ब्रजंति ॥४०॥

अर्थः—कल्पान्तकाल पवनोद्धत के० प्रलयकालनो जे
वायरो तेनी सहायताथी जोरमां आवी गएलो एवो
जे अग्नि तेना जेवो, अने जाज्वल्यमान थएलो, उज
लो, अने उंचा गया ठे तएखा जेना एवो, तथा सघला
जगतने गली जवानी जाणे इहा करतो होय नहीं ए
वो, जे वनमां लागेलो अग्नि ते अचानक सामो आवी
प्राप्त थयो तेने, तमारा नामनुं किर्त्तनरूप पाणी ते नि
रवशेष एवा अग्निने शांत करी मूके ठे ॥ ३६ ॥

रक्तेक्षणं समद के० रातां ठे नेत्र जेनां एवो अ
ने मदोन्मत्त एवो तथा कोयलनां कंठ जेवो काला रं
गवालो अने क्रोधे करीने उद्धत थएलो तथा उंची कं
री ठे फण जेणे एवो जे सर्प ते उतावलो सामो आ
वतो होय तेने पण शंकारहित थयो थको पोताना च
रण युगले करीने उद्धंधन करे ठे ते कयो पुरुष उद्धंध
न करे ठे ? तो के जे पुरुषना हृदयने विषे तमारा ना

मरूप जे नागदमनी नामे औषधी ठे, ते औषधीए करीने उग्र सर्पना ज्ञयथी पण निःशंक आयठे ॥३७॥

वल्गचुरंग गजगर्जित के० संग्रामने विषे युद्ध करता एवा घोसा जेने विषे दोस्ती रह्या ठे, अने हाथीनी गर्जनाए करी ज्ञयंकर शब्दो ठे जेने विषे एवुं, अतिशय बलवान राजानु तेनुं पण सैन्य ते, तमारा कीर्तनथी शीघ्र (उतावले) जेदनने पामे ठे एटले तरत नाशी जाय ठे. ते कोनी पेठे ? तो के उगता सूर्यनां किरणोनी शिखाए करीने जेदन पामेलो एवो अंधकार जेम होय नहीं अर्थात् जेम सूर्यना किरणोथी अंधकार नाश पामे ठे तेम तमारा नामना प्रजावथी संग्राममां शत्रुनुं सैन्य नाशी जाय ठे ॥ ३७ ॥

कुंताप्रजिन्न के० वरठीनी अणीथी जेदेलो एवा हाथीना लोहीरूप जलना प्रवाहने विषे उतावळुं प्रवेश एवुं एटले ते रुधिररूप पाणीमां तणाइ जवाने ते यार अएला तेमांथी फरी पाठा तरी नीकलवाने आतुर अएला एवा जे सुजटो तेणे करीने ज्ञयंकर देखा एवुं युद्ध तेने विषे पण तमारां चरणारविंद ते रूप

जे कमलवन तेने आश्रय करीने रहेला पुरुषो, ते न
हीं जीताय एवा जे शत्रुना वर्गो ते जेमणे जीत्या ठे
एवा ठता जयने पामे ठे ॥ ३९ ॥

अंजोनिधौ हुजित के० होज पमारुचा ठे महा
जयंकर एवा नक्रचक्र अने पाठीनपीठ एटले मत्स्य
विशेष जीव जेने विषे एवा तथा जय उत्पन्न करना
रो एवो जयंकर ठे वरुवानल अग्नि जेने विषे एवा स
मुझे विषे उबलता एवा तरंगो तेना शृंगोनी उपर
रहुं ठे वहाण जेमनुं एवा पुरुषो जे ठे ते तमारा स्म
रणथी त्रासने त्याग करीने समुझपारने पामे ठे एटले
इहेला द्वीपने विषे पहोंचे ठे ॥ ४० ॥

गाथा ४१ थी ४४ सुधी लुटा शब्दना अर्थ.

मुग्धाः-वांका

शोच्यां-शोचनीय

दशां-दशाने

उपगताः-प्राप्त थया

च्युत-छोडी छे

जीवित-जीववानी

दिग्ध-लेपाएळुं

मर्त्या-माणसो

मकरध्वज-कामदेव

आपाद कंठं-पगथी

गला सुधी

वेष्टित-वीटाएळुं

गाढं-अत्यंत

वृहन्-मोटी

निगड-वेडी

कोटि-झीणी अणी

निवृष्ट-घसाएली

जंघा-जंघाओ

अनिशं-निरंतर

द्विपेंद्र-मोहोदो हाथी

मृगराज-सिंह

अहि-सर्प	मतिमान्-बुद्धिमान्	कंठगतां-कंठयां र
महोदर-जलोदर	अधीते-भण्णे छे	हेली
उथं-उपन्युं	स्रजं-माला	अजस्रं-निरंतर
भिया-बीके करीने	मया-हुं जे तेणे	मानतुंगम्-मानतुंगने,
तावकं-तमारुं	रुचिर-मनोहर	उंचा मानने
इमं-आ	वर्ण-अक्षर, रंग	अवशा-स्वतंत्र

उद्धृतत्रीषणजलोदरजारजुग्राः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविता
शाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्ध
देहा, मर्त्यां ज्वंति मकरध्वज तु
द्वयरूपाः ॥ ४१ ॥ त्रापादकंठमु
रुशंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निग
म् कोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्र
मनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्व
यं विगतबंधज्ञया ज्वंति ॥ ४२ ॥
मत्तद्विपेंडुसृगराजदवानलाहि, सं
ग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्तं ॥ त

स्याशु नाशमुपयाति ज्ञयं ज्ञियेव,
 यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते
 ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र
 गुणोर्निबद्धां, ज्ञक्त्यामयारुचिरवर्णा
 विचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह
 कंठगतामजस्रं, तं मानबुंगमवशा
 समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति॥

अर्थः—उद्धृत ज्ञीषण जलोदर के० हे जगन्नाथ! उत्प
 न्न अथा एवा, ज्ञयंकर जलोदर रोगना चारे करीने वां
 का अथा एवा अने जीववानी आशा जेमणे ठोमी ठे
 एवा, अने शोक करवा योग्य एवी दशाने प्राप्त अथा
 एवा, मनुष्यो तमारां चरणकमलनुं जेरजते रूप अमृ
 ते करी खरनाएलां ठे अंग जेमनां एवा ठता
 कामदेव समान ठे रूप जेमनुं एवा आय ठे ॥ ४१ ॥

आपादकंठमुरुशृंखल के० हे कर्मबंधनरहित !
 जेना पगथी मांठी गला सुधी मोटी शृंखलानुं (सां
 कलोए) करी निबद्ध (वींटाएलां) ठे सर्व अंगो जेमनां

एवा अने अत्यंत मोटी बेसीयो तेनी कौटियो जे जी
ली अलीयो तेणे करीने निःशेषपणाए घसाती ठे जं
घानुं जेमनी एवा दुःखित अयेला पुरुषो ठतां, तमारा
नामरूप मंत्रने रात्र दिवस स्मरण करता एवा मनुष्यो
ते तरत पोतानी मेले विशेषे करीने गयुं ठे बंधन न
य जेमनुं एवा आय ठे ॥ ४२ ॥

मत्तछिपेंडमृगराज केण हे प्रज्ञो ! जे बुद्धिमान
पुरुष तमारा आ स्तवनने ज्ञणे ठे ते पुरुषने मदीन्म
त्त एवा अहान हस्ती अने सिंह, तथा वनाग्नि, तथा
सर्प, अने संध्याम, तथा ससुड, तथा जलोदरादिरोग,
अने बंधीखानुं ए आठवानां अकी उत्पन्न थएलुं एवुं
जे ज्ञय ते बीके करीनेज जेम होय नहीं ? तेम न
तावलुं नाशने पामे ठे. अर्थात् आ तमारा स्तोत्रना
पाठ करनारने पूर्वोक्त आठ प्रकारना ज्ञयनो नाश
आय ठे ॥ ४३ ॥

स्तोत्रस्रजं तव केण हे जिनें ! तमारी आ लो
कने विषे जे पुरुष, स्तोत्ररूप फुलनी मालाने पोता
ना कंठने विषे निरंतर धारण करे ठे ते चित्तनी उन्न

(५५९)

ति ए करीने अत्यंत उन्नत अएलो एवो पुरुष अथवा
स्तोत्रना कर्ताश्री मानतुंगाचार्य ठे ते अस्वतंत्र एवी
जे स्वर्गापवर्ग अने सत्काव्यरूप (मोक्ष) लक्ष्मीने
पामे ठे. हवे ते स्तोत्ररूप माला केवी ठे? तोके मान
तुंगाचार्य नामक एवो हुं जे तेणे जक्ति जे श्रद्धा, अथ
वा पुष्पमाला पहे जक्ति जे विचित्र रचना तेणे करी
ने अने प्रजुना गुणे करीने अथवा पुष्पमाला पहे गु
ण जे सूत्र तेणे करीने बांधेली ठे, गुंथेली ठे. वली
केवी ठे? तोके मनोहर एवा बावन अक्षर तेज ठे चि
त्र विचित्र पुष्पो जेने विषे, अने पुष्पमाला पहे मांसा
नोहर ठे वर्ण जेनां एवां विचित्र पुष्पो ठे जेमां एवी
ठे ॥ इति जक्तामर स्तोत्र ॥

॥ अथ श्री कल्याण मंदिर ॥

॥ गाथा १ थी ५ सुधीना बुटाशब्दना अर्थ ॥

मंदिरं-घर
उदार-मोटुं, उदार
अवद्य-पाप
भेदि-भेदभारुं

भीत-भय पामेला
प्रदं-आपनारुं
अनिंदितं-नहींनिंदा
एलुं

निमज्जव-बूडता
अशेष-समस्त
पोतायमान-वहाण
जेवुं

अभिनम्य-नमस्कार
करीने

जिनेश्वरस्य-जिनेश्व
रना

गरिमा-माहिमा

अंबुराशेः-समुद्रतुं

सु-अतिशय

विस्तृत-विस्तार पा
मेली

विभुः-समर्थ शक्ति
वान

विधातुं-करवाने

तीर्थेश्वरस्य-तीर्थकरतुं

स्मय-अहंकार

धूमकेतोः-पूछडीआ
तारानुं

किल-निश्चे

कारिष्ये-करीश

वर्णयितुं-वर्णन कर
वाने

अस्मादृशा-अमारा
जेवा

कथं-केम
अधीश-हे स्वामी !

अधीशाः-समर्थ

घृष्ट-धीठो

कौशिक-घूड

शिशुः-बालक

यदिवा-जो पण

दिवांधो-दिवसे आं
धलो

प्ररूपयति-कहे

घर्मरश्मेः-सूर्यना

क्षयात्-क्षयथी

अनुभवं-अनुभववालो

मर्त्यः-मनुष्य

नूनं-निश्चे

गणयितुं-गणवाने

क्षमेत-समर्थ थाय

वांत-वमेलुं

पयस-जल

प्रकटो-प्रगट

यस्मात्-जे माटे

मीयेत-मापी शकाय

केन-कोना वडे

जलधेः-समुद्रतुं

ननु-आशंकाने विपे

राशिः-ढगलो

अभ्युद्यतः-उद्यमवालो,
सावधान

अस्मि-हुंहुं

जड-मूरख

आशय-अभिप्राय

लसत्-देदीप्यमान

आकरस्य-खाणतुं

वितत्य-विस्तारिने

स्वधिया-पोतानी तु
द्विये

(५६१)

॥ अथश्री कल्याणमंदिर ॥

॥ वसंत तिलकावृतम् ॥

कल्याणमंदिरमुदारमवद्यज्ञेदि, न्नी
ताज्ञयप्रदमनिंदितमंघ्रिपद्यं ॥ सं
सारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोता
यमानमज्जिनस्य जिनेश्वरस्य ॥१॥
यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विच्युर्विधा
तुं ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूम
केतो, स्तस्याहमेष किल संस्तव
नं करिष्ये ॥ १ ॥ युग्मम् ॥ सा
मान्यतोऽपि तत्र वर्णयितुं स्वरू
प, मस्मादृशाः कथमधीश ज्ञवं
त्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशि
शुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपय

ति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥
 मोहहृयादनुन्नवन्नपि नाथ मर्त्यो,
 नूनं गुणान् गणयितुं न तव ह्यमे
 त ॥ कल्पान्तवांतपयसः प्रकटोऽ
 पि यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्न
 नु रत्नराशिः ॥४॥ अच्युद्यतोऽस्मि
 तव नाथ जमाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं
 लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि
 किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्ती
 ण्णातां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥५॥

अर्थः—कल्याणमंदिरमुदारमवद्यजेदि केण आ प्र
 त्यह मूर्ख एवो हुं सिद्धसेन दिवाकर नामा आचार्यते
 श्री पार्श्वनाथ एवा, तीर्थ जे चतुर्विध संघ तेना ईश्वरनुं
 निश्चे स्तवन करीज्ञ. हवे ते श्रीपार्श्वनाथ तीर्थेश्वर के
 वा ठे ? तो के कसठनामा दैत्यना अहंकारनो नाश
 करवाने विषे पूंठमीआ तारा सरखा ठे, बली केवा ठे ?

तो के विस्तार पामी ठे बुद्धि जेनी एवो बृहस्पति पोते
 पण जे श्रीपार्श्वनाथना महिमाना समुच्चुं जे स्तवन
 तेने करवाने समर्थ अतो नथी. तो हुं क्यांशी आनं ! त
 आपि स्तवना करुंहुं; ते शुं करीने स्तवना करुंहुं ? तो
 के ते श्री जिनेश्वरना चरणकमलने नमस्कार करीने
 स्तवना करुंहुं. हवे ते चरणकमल केवुं ठे ? तो के मां
 गलिकनुं घर ठे, तथा नदर केण मोटुं ठे अथवा नदा
 र केण ज्वय जीवोना मनोवांगित अर्थ देवाने नदर
 ठे, तथा असत्य जे पाप तेने जेदनां ठे. वली संसार
 जये त्रास पामता जीवोने प्रकर्षे करी मोक्षने देनां
 ठे, तथा निंदारहित ठे, तथा संसाररूप समुच्चने विषे
 ब्रुता सघला प्राणीनुने वाहाण सरखुं एवं श्रीजिने
 श्वरनुं चरणकमल ठे. आ बे श्लोकनो अर्थ एकठो ठे।।१।।

सामान्यतोऽपि के० हे स्वामिन् ! अमारा
 सरखा मंद बुद्धिवाला पुरुषो जे ठे ते सामान्यपणे प
 ण तमारा स्वरूपने वर्णन करवाने केम समर्थ आय ?
 अर्थात् यता नथी. त्यां दृष्टांतकहे ठे. जेमके:-जो पण
 घूरुनो बालक सूर्यना स्वरूपने खरेखर शुं कही शके ?
 अर्थात् नथी कही शकतो. हवे ते घूरुनो बाल

क केवो ठे, तोके दृढ हृदय पणाये करीने प्रगळ्ळठे तो
पण दिवसने विषे अंध ठे ॥ ३ ॥

मोहक्यादनुज्ञवन्नपि के० हे नाथ ! मोहनीयादि
क कर्मना क्य थकी तमारा गुणोने अनुज्ञव करतो
एटले जाणतो ठतोपण मनुष्य अर्थात् केवली जे ठे ते
निश्चे तमारा गुणोने गणवाने समर्थ न थाय, त्यां दृष्टांत
कहे ठे, जे माटे प्रलय कालने विषे विक्रिस्र थयुं ठे ज
ल जेने विषे एवो समुद्र जे ठे तेनो प्रत्यक्ष एवो पण
रत्ननो समूह ते, ननु ए आशंकाने विषे, कोण पुरुषे
मापी शकाय ? अर्थात् कोश्यी पण प्रमाण करी श
काय नही ॥ ४ ॥

अत्र्युद्यतोस्मि तव नाथ के० हे नाथ ! हुं जर
अंतःकरणवालो ठुं, तो पण तमारुं स्तवन जे ठे तेने
करवाने उद्यमवंत थयो ठुं, एटले सावधान थयो ठुं
ते तमे केवा ठो ? तो के देदीप्यमान एवा अनंत गु
णोना निधान रूप ठो, तेज अर्थ दृष्टांते करी दृढ करे
ठे; जेमके बालक पण पोताना वे हाथने विस्तारीने पो
तानी बुद्धिये करीने समुद्रनी विस्तारता जे ठे तेने शुं
की केहतो ? अर्थात् कहेठेज. ॥ ५ ॥

गाथा ६ थी १० सुधी तुटा शब्दना अर्थ.

योगिनां-योगीओने
 यांति-जाय छे
 अवकाशः-बोलवानी
 शक्ति
 जाता-थइ
 असमीक्षित-अविचारी
 कारिता-काम
 जल्पंति-बोल छे
 पक्षिणो-पक्षियो
 पाति-रक्षण करे छे
 भवतः-तमारु
 भवतः-संसारथी
 जगंति-त्रण जगतने
 तीव्र-आकरो
 आतप-तडको
 उपहत-हणाणा
 पांथ-पंथी
 निदाघे-ग्रीष्मकालमां
 प्रीणाति-खुशी करेछे
 पद्म-पद्म
 सरसः-सरोवरनो

सरसः-ठंडा पाणीना
 कणीआवालो
 अनिलो-वायरो
 हृद्गतिनि-हृदयमां व
 तत्ते छते
 त्वयि-तमे
 शिथिली-शिथिल
 जंतोः-प्राणीना
 क्षणेन-क्षणमात्रे
 निविडा-दृढ
 बंधाः-बंध
 भुजंगममया-साप म
 य एवा
 अभ्यागते-आवे छते
 शिखंडिनि-मयूर
 चंदनस्य-चंदनना
 मुच्यंत-मुकाइ जाय
 रौद्रैः-भयानक वडे
 शतैः-सैंकडो वडे
 वीक्षिते-जाये छते
 गो-किरणो, पृथ्वी

स्फुरित-देदिप्यमान
 तेजसि-तेज वालो
 दृष्टमात्रे-जोवाये
 चौरैः-चोरोथी
 पशवः-पशुओ
 पलायमानैः-नासता
 तारकः-तारक
 भविनां-भवीओनां
 त एव-तेओज
 त्वां-तमोने
 उद्वहंति-वहन करेछे
 उत्तरंतः-उतरता.
 यद्वा-युक्त छे
 दितिः-मसक
 तरति-तरे छे
 अंतर्गतस्य-अंदर
 रहेला
 मरुतः-पवननो
 अनुभावः-प्रभाव

ये योगिनामपि न यांति गुणास्त
वेश, वक्तुं कथं ज्ञवति तेषु ममाव
काशः ॥ जाता तदेवमसमीक्षित
कारितेयं, जल्पन्ति वा निजगिरा
ननु पङ्क्तिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्ता
मचित्यमहिमा जिन संस्तवस्ते, ना
मापि पाति ज्ञवतो ज्ञवतो जगन्ति
॥ तीव्रातपोपहतपांथजनाङ्घ्रिदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोनिद्रोऽ
पि ॥ ७ ॥ हृष्टिनि त्वयि विज्ञो
शिथिलीज्वन्ति, जंतोः क्षणेन नि
विम्ना अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो नु
जंगममया इव मध्यज्ञाग, मच्या
गते वनशिखंभिनि चंदनस्य ॥८॥
मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनैश्च,

रौडैरुपड्वशतैस्त्वयि वीक्षितेपि ॥
गोस्वामिनि स्फुरितेतेजसि दृष्ट
मात्रे, चौरैश्वाशु पशवः प्रपलाय
मानैः ॥ ए ॥ त्वं तारको जिन क
यं ज्विनां त एव, त्वामुद्धंति इ
दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति
यद्वा नृमेष नून, मंतर्गतस्य मरुतः
स किलानुजावः ॥ १० ॥

ये योगिनामपि के० हे स्वामिन् ! जे तमारा गु
णो ठे ते योगीजने पण कहेवामां आवी शकता नथी तो
ते गुणोने विषे महारी बोलवानी शक्ति केम होय ?
ते कारण माटे ए प्रकारे आ अविचार्युं काम अयुं
केमके अनवकाशने विषे जे स्तुति करवी ते
अविचार्युं काम कहेवाय. अहीं दृष्टांत कहे ठे, अथ
वा निश्चे पक्षियो पण यद्यपि मनुष्य वाणीए करी
बोलवाने असमर्थ ठे, तो पण पोतानी वाणीयें करीने
नथी बोलता शुं ? अर्थात् बोलेज ठे, तेम हुं पण स्तु

ति करवाने प्रवर्ष्यो बुं ॥ ६ ॥

आस्तामचिंत्यमहिमा के० हे जिनेश्वर ! नश्री
चिंतन करवा योग्य महिमा जेनो एवो तमारो स्तव
जे ठे ते तो दूर रहो ! परंतु तमारुं नाम पण संसार
थकी त्रण जगतने रक्षण करेठे. त्यां दृष्टांत कहे ठे के
पद्म सरोवरनुं जे पाणी ते तो दूर रहो, परंतु तेनो
सुंदर ठंमा पाणीना कणीआवालो एवो वायरो पण उ
नालाने विषे आकरा एवा तमुकाए करीने हणाणा
एवा पंथी जनोने संतोषित करे ठे. ॥ ७ ॥

हृद्वर्त्तिनि त्वयि के० हे स्वामिन् ! तमो हृदयने
विषे वर्त्तते ठते प्राणीना दृढ एवा कर्मना बंध पण
रक्षणमात्रे करीने शिथिल थइ जाय ठे. अहीं दृष्टांत क
हे ठे:—जेमके वननो मोर ते वनना मध्यज्जाग प्रत्ये
आवे ठते चंदननां जाफनां जे सर्पमय बंधन जे ठे ते
ज जेम तत्काल शिथिल थइ जाय ठे तेनी पेरे तमे
पण प्राणीना हृदय मध्ये आवे ठते तेनां दृढ कर्मबंध पण
शिथिल थइ जाय ठे ॥ ७ ॥

मुच्यंत एव मनुजाः के० हे जिनेंइ ! तमने जो

(५६ए)

ये ठते पण मनुष्य शीघ्रपणे (उतावले) बीहामणा
एवा उपड्वना सैंकमाथी मुकाइ जाय ठेज. अहीं दृष्टां
त कहे ठे:—जेमके देदीप्यमान तेज ठे जेनुं एवो गो
केण किरणो तेनो स्वामी जे सूर्य अथवा गोके० पृथ्वी
तेनो स्वामी जे राजा अथवा गोकेण पशुनु तेनो स्वा
मी जे गोवालीनु ते पण स्फुरित ठे तेज जेनुं एवो ठे,
एवा ए त्रण जण ते दृष्टमात्रे एटले जोवाए थके नासता
एवा चोरोथी जेम पशुनु उतावलथी मूकाय ठे तेम
जीवो पण तेमो जोवाये थके सैंकरो उपड्वोथी मू
काय ठे ॥ ए ॥

त्वं तारकोजिन कथं केण हे जिनेश्वर ! तमे सं
सारी जीवोना केम तारक ठो ? जे कारण माटे जल
टा ते संसारी जीवोज संसार समुड्ने उतरता गता
हृदये करीने तेमोने वहन करे ठे. कारण के वाह्य वा
हकमां वाह्यने तारकपणानो असंज्ञव ठे; जेम वहा
ए ठे ते पोताना मध्यमां रहेला पुरुषने तारे ठे परंतु
पुरुषो वाहाणने तारता नथी तेम ज्ञव्य जीवो पण त
मने पोताना हृदयमां राखीने तारे ठे, परंतु तमे तेज

ति करवाने प्रवर्ष्यो ऽं ॥ ६ ॥

आस्तामचिंत्यमहिमा के० हे जिनेश्वर ! नथी
चिंतन करवा योग्य महिमा जेनो एवो तमारो स्तव
जे ठे ते तो दूर रहो ! परंतु तमारुं नाम पण संसार
थकी त्रण जगतने रक्षण करेठे. त्यां दृष्टांत कहे ठे के
पद्म सरोवरनुं जे पाणी ते तो दूर रहो, परंतु तेनो
सुंदर ठंमा पाणीना कणीआवालो एवो वायरो पण उ
नालाने विषे आकरा एवा तमुकाए करीने हणाणा
एवा पंथी जनोने संतोषित करे ठे. ॥ ७ ॥

हृत्तिनि त्वयि के० हे स्वामिन् ! तमो हृदयने
विषे वर्तते ठते प्राणीना दृढ एवा कर्मना बंध पण
क्षणमात्रे करीने शिथिल थइ जाय ठे. अहीं दृष्टांत क
हे ठे:—जेमके वननो मोर ते वनना मध्यजाग प्रत्ये
आवे ठते चंदननां जामनां जे सर्पमय बंधन जे ठे ते
ज जेम तत्काल शिथिल थइ जाय ठे तेनी पेरे तमे
पण प्राणीना हृदय मध्ये आवे ठते तेनां दृढ कर्मबंध पण
शिथिल थइ जाय ठे ॥ ७ ॥

मुच्यंत एव मनुजाः के० हे जिनेंइ ! तमने जो

(५६ए)

ये ठते पण मनुष्य शीघ्रपणे (उतावले) वीहामणा
एवा उपड्वना सेंकनाथी मुकाइ जाय ठेज. अहीं दृष्टां
त कहे ठे:—जेमके देदीप्यमान तेज ठे जेनुं एवो गो
केण किरणो तेनो स्वामी जे सूर्य अथवा गोके० पृथ्वी
तेनो स्वामी जे राजा अथवा गोकेण पशुनु तेनो स्वा
मी जे गोवालीनु ते पण स्फुरित ठे तेज जेनुं एवो ठे,
एवा ए त्रण जण ते दृष्टमात्रे एटले जोवाए थके नासता
एवा चोरोथी जेम पशुनु उतावलथी मूकाय ठे तेम
जीवो पण तमो जोवाये थके सेंकनो उपड्वोथी मू
काय ठे ॥ ए ॥

त्वं तारकोजिन कथं केण हे जिनेश्वर ! तमे सं
सारी जीवोना केस तारक ठो ? जे कारण माटे जल
टा ते संसारी जीवोज संसार समुडने उतरता गता
हृदये करीने तमोने वहन करे ठे. कारण के वाह्य वा
हकमां वाह्यने तारकपणानो असंज्ञव ठे; जेम वहा
ण ठे ते पोताना मध्यमां रहेला पुरुषने तारे ठे परंतु
पुरुषो वाहाणने तारता नथी तेम ज्ञव्य जीवो पण त
मने पोताना हृदयमां राखीने तारे ठे, परंतु तमे तेज

व्य जीवोने तारो ए तो मोटुं आश्चर्य ठे ! हवे आ तर्कनुं
समाधान करे ठे. हे प्रभु ! तमेज ज्ञव्यजीवोने तारो
ठो ते युक्तज ठे. अहीं दृष्टांत कहे ठे; जे कारण माटे
जेम चामकानी मशक ते निश्चय नदी वगेरेना पाणी
मां तरे ठे ते आ अंदर रहेला पवननोज खरेखर प्रजा
व जाणवो, तेम ज्ञव्यजीवोना हृदयमां तमे गो, माटे
तमेज ज्ञव्यजोना तारक ठो एमां कांइ आश्चर्य नथी. १०

गाया ११ थी १५ सुधीना तुटा शब्दना अर्थ.

यस्मिन्-जेमां

हर-शिव

प्रभृतयः-वगेरे

रतिपतिः-कामदेव

क्षपितः-क्षय पमाडयो

विध्यापिता-बुझाव्या

दुतभुजः-अग्निओ

पयसा-पाणीवडे

पीतं-पीधुं

दुर्द्धर-दुस्तह

बाढवेन-वडवानले

अनल्प-घणुं

गरिमाणं-मोहोटाइने

प्रपन्नाः-पाम्या

जंतवः-प्राणीओ

अहो-अरे

दधाना-धारण करता

जन्मोर्दीध-भवसमुद्र

लघु-शीघ्रपणे

तरन्ति-तरे छे

लाघवेन-हलकापणा

वडे

हंत-निश्चे

महतां-मोटानो

यदिवा-अथवा तो

निरस्तः-दूर कयों

ध्वस्ताः-हण्या

वत-आश्चर्य

चौराः-चोर

प्लोषति-बालेछे

अमुत्र-आ लोकमां

शिशिरा-शीतल

नील-काला

दुमाणि-वृक्षवालां	रुचेः-कांतिवालानी	अनलात्-अग्निथकी
विपिनानि-वनो	अक्षस्य-कमलबीजनी	उपलभावं-पथ्थरप
हिमानी-बरफनो जथो	संभवि-संभवे	णाने
परमात्मरूप-सिद्धस्व	कर्णिकायाः-कर्णिका	अपास्य-त्यागकरीने
रूप	थी	चामीकरत्वं-सोनाप
अन्वेषयन्ति-खोले छे	ध्यानात्-ध्यानथी	णाने
अंबुज-कमल	भविनः-भव्यप्राणीओ	अचिरात्-थोडा व-
कोश-डोडो, कली	देहं-शरीरने	खतमां
देशे-मध्यभागमां	दशां-अवस्थाने	धातुभेदाः-भेगवाली
पूतस्य-पवित्र	व्रजन्ति-पामे छे	धातु

यस्मिन् हरप्रचृतयोऽपि हतप्रजा
वाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्वपि
तः क्लृप्तेन ॥ विध्यापिता हुतचु
जःपयसाथ येन, पीतं न किं तदपि
दुर्धरवाक्त्वेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्नन
ल्पगश्मिणामपि प्रपन्ना, स्त्वां जं
तवः कथमहो हृदये दधानाः॥ ज
न्मोदीधिं लघु तरन्त्यतिलाधवेन,
चित्त्यो न हंत महतां यदि वा प्र

ज्ञावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि
 विज्ञो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा
 बत कथं किल कर्मचौराः॥प्लोष
 त्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
 नीलघुमाणि विपिनानि न किं
 हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो
 जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयं
 ति हृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्य
 निर्मलरूचेर्यदि वा किमन्य, दह
 स्य संज्ञवि पदं ननु कर्णिकायाः
 ॥ १४ ॥ ध्यानाङ्गिनेश ज्ञवतो ज्ञ
 विनः क्णोन, देहं विहाय परमा
 त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलाडुपल
 ज्ञावमपास्य लोके, चामीकरत्वम
 चिरादिव धातुज्ञेदाः ॥ १५ ॥

यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि केण जे कामदेवने विषे

हरहरि प्रमुख पण, हणायो ठे प्रजाव जेमनो एवा
 थया ठे, ते कामदेव पण तमोये क्कणमात्रे करीने क्क
 य पमारुचो ठे, त्यां दृष्टांत कहे ठे जेमकेः--जे पाणी
 ए अग्निउ बुजावी दीघा, ते पाणी पण दुस्सह वरु
 वानले शुं न पीधुं? अर्थात् पीधुंज, एटले अग्निउ बुजा
 वनारुं जल वरुवानले पीधुं तेमज जे हरिहरादिकने
 जीतनार कामदेव तेने तमोए जीत्यो ठे. आ श्लोक क
 रवेशी पार्श्वनाथनी मूर्ति प्रगट अइ ते सर्वत्र प्रसिद्धे. ११

स्वामिन्नलपगरिमाणमपि केण हे स्वामिन् त
 मोने हृदयने विषे धारण करता अका अहो इति आ
 श्चर्ये! थोमा पण ज्ञारना अज्ञावे करीने जव समुडने उ
 तावले जेम होय तेम प्राणीनुकेम तरे ठे? एटले घणा
 ज्ञारे युक्त एवा तमोने हृदयमां धारण करीने थोमा ज्ञार
 नी पेठे संसार समुड केम तरे ठे? तोके उत्तम पुरु
 षोनो ए महिमाज ठे. माटे तेमां विचारवा योग्य कां
 इ पण नथी ॥ ११ ॥

क्रोधस्त्वया यदि केण हे स्वामिन् तमोये ज्यारे क्रोध
 प्रथमज दूर कीधो त्यारे पठी आश्चर्य ठे के किल केण नि

श्व कर्मरूप चोरो केवी रीते हएया ? तो तेना समाधानमां
आ लोकमां शीतल एवा बरफनो समूह नीलां जास
वाला वनने शुं नथी बालतो ? अर्थात् बाले ठे. तेम
क्रोध रहित एवा तमे पण कर्म चोरोने हणोठो ॥१३॥

त्वां योगिनो जिन सदा केण हे जिन ! मोटा रु
षिन् जे ठे ते हृदयरूप जे कमल तेनी कलीना मध्य
ज्जागमां सिद्ध स्वरूप एवा तमोने निरंतर ज्ञान चहु
ए करीने जोवे ठे, अथवा जेम निश्चे निर्मल ठे कांति
जेनी एवं अने पवित्र एवं कमलनुं बीज जे ठे, तेनुं
कर्णिकाशकी बीजुं एटले कमल मध्य प्रदेश टालीने
बीजुं स्थानक शुं संजवे ठे ? ना नथी संजवतु, त्यारे
शुं संजवे ठे ? तोके कमलनी कर्णिकाज संजवे ठे, तेम
तमे पण निर्मल रुचियुक्त तथा सकल कर्ममलना
जवाधी पवित्र अएला एवा ठो, तेथी योगिंजना हृदय
कमलनी कर्णिकाना विषेज तमारुं रहेवुं धाय ठे ते
योग्यज ठे. ॥ १४ ॥

ध्यानाज्जिनेश केण हे जिनेश ! ज्ञव्यप्राणीउ त
मारा ध्यानथी एक कृणामाने करीने शरीरने त्याग

करीने सिद्धावस्थाने पामे ठे. ते जेमके लोकने विषे जेगवालुं सोनुं जे ठे ते प्रबल अग्निधी पाषाण जाव जे ठे तेने टालीने थोळा समयमां सुवर्णपणानेज जेम पामे ठे, तेम प्राणीयो जे ठे ते तमारा ध्यानधी देहने त्याग करीने सिद्धावस्थाने पामे ठे, एटले वीतरागनुं ध्यान करतो ठतो जीव वीतराग रूप थाय ठे. जेम जमरीधी बीक पामती इयल ते तेना ध्यानधी जमरी थाय ठे. ॥ १५ ॥

गाथा १६ थी १० सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

अंतः-हृदयमां	अयं-आ	परवादिनो-पर ती-
विभाव्यसे-विचारा-	ध्यातः-ध्यानकरायो	धिओ
ओछो	पानीयम्-पाणी	प्रपन्नाः-आश्रय क
नाशयसे-नाशकरोछो	अनुचित्यमानं-चित-	री रहेला, पास्या.
मध्यविवर्त्तिनः-मध्य	न कराएलुं	काच कामलिभिः-
स्थ पुरुषनुं	नो-नहीं	कमलानारोगीओए
प्रज्ञमयंति-उपज्ञमा-	विकारं-विकारने	सितः-धोलो
वे छे	अपाकरोति-दूर क-	गृह्यते-ग्रहणकरायछे
हि-निश्चे	रेछे	विपर्ययेण-विपर्यास
अनुभावाः-प्रभाव	वीत-रहित	बडे, परावर्त्ते करीने
मनीषिभिः-पंडितोए	तमसं-अज्ञान	सविध-समीपना

अशोक-शोक रहित,
 आसोपालव
 अभ्युद्गते-उदयपामे
 छते
 दिनपतौ-सूर्य
 स-साहित
 समहीरुहो-वृक्षोऽस
 हित

विवोधं-विकाश प-
 णाने
 अवाह-नीचुं
 बृंतं-बाँटु
 विश्वक्-चारे तरफ
 अविरला-निरंतर
 सुरपुष्पवृष्टिः-देवना
 फुलनी वृष्टि

त्वद्गोचरे-तमारी
 समस्त
 सुमनसां-फुलोनां,
 भविजीवोनां
 गच्छीत-जाय छे
 अध एव-नीचेज
 बंधनानि-बंधन

अंतःसदैव जिन यस्य विज्ञाव्य
 से त्वं, ज्ञव्यैः कथं तदपि नाश
 यसे शरीरं ॥ एतत्स्वरूपमथ म
 ध्यविवर्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशम
 यंति महानुज्ञावाः ॥ १६ ॥ आ
 त्मा मनीषिज्जिरयं त्वदज्ञेदबुद्ध्या,
 ध्यातो जिनैश्च ज्ञवतीह ज्ञवत्प्र
 ज्ञावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिं
 त्यमानं, किं नाम नो विषविका

रमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वी
 ततमसं परवादिनोपि, नूनं विज्ञो !
 हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ॥ किं
 काचकामलिन्निरीश ! सितोपिशं
 खो, नो गृह्यते विविधवर्णाविपर्य
 येण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये स
 विधानुज्जावा, दास्तां जनो ज्वति
 ते तरुरप्यशोकः ॥ अच्युद्गते
 दिनपतौ समहीरुहोपि, किंवा वि
 बोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥
 चित्रं विज्ञो ! कथमवाङ्मुखवृत्तमे
 व, विष्वक् पतत्यविरला सुरपु
 ष्पवृष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां य
 दि वा मुनीश, गच्छन्ति नूनमध एव
 हि बंधनानि ॥ २० ॥

अर्थः—अंतःसदैवजिन के० हे जिन ! ज्ञव्य प्राणीन जे ठे तेमणे देह तेना मध्य जाग एटले हृदय ने विषे निरंतर तमो विशेषे करी चिंतवन करानु गो ते पण ते ज्ञव्यना शरीरने तमे केम नाश करो गो ? अर्थात् ते ज्ञव्यजीवोने मुक्ति पन्नामीने शरीर रहित करोठो माटे जे स्थानमां ज्ञव्य जीव तमने चिंतवन करे ठे, ते स्थान तमारे नाश करवुं घटे नहीं. ते निराकरणने अर्थे अहीं दृष्टांत कहे ठेः—हवे आ मोटा प्रजाववाला मध्यस्थ पुरुषोनुं एवुं स्वरूप एटले स्वप्नाव ठे के, मांडो मांडे शता क्लेशने उपशमावे ठे; तेस तमे पण शरीर अने जीवनो परस्पर विग्रह टालवाने शरीरनो नाश करो गो, ते निश्चे युक्तजठे॥१६॥

आत्मा मनीषिजिरयं के० हे जिनेंड ! पंढितो जे ठे तेमणे आ जीव ते तमारी साथे अज्ञेद बुद्धिये करीने ध्यान कख्यो ठतो तमारा सरखा महिमावालो आ संसारने विषे आय ठे. अहीं दृष्टांत कहे ठे जे म केः—(नाम शब्द कोमल आमंत्रणमां ठे अथवा प्रसिद्ध अर्थमां ठे.) पाणी जे ठे ते पण अमृत ठे ए

(५७ए)

प्रकारे चिंतन करयुं ठतुं अथवा मणिमंत्रादिके स्कारित कर्युं ठतुं विषना विकारने शुं नथी दूर करतुं ? अर्थात् एवुं जल पण अमृत तुदय यइने विष विकारने टालेज ठे ॥ १७ ॥

त्वामेव वीततमसं केण हे स्वामिन् ! निश्चे अन्यदर्शनी (शैव, सांख्य, नैयायिकादिको) पण ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरादिकनी बुद्धिए करी तमोनेज आश्रय करी रहेला ठे, अर्थात् तेनु नामांतर परावर्ते करीने तमारुंज आराधन करे ठे. ते तमो केवा ठो ? तो के अज्ञान रहित ठो. अहीं दृष्टांत कहे ठे, जेम के:-हे ईश ! कमलाना रोगवाला पुरुषोए धोलो एवो शंख पण, लीला पीलादि विविध प्रकारना रंग परावर्ते करीने शुं नथी ग्रहण करातो ? अर्थात् कराय ठे, तेम अन्य दर्शनीनुए पण तमे हरिहरादि एवी बुद्धिए करी आराधन करानु ठो ॥ १८ ॥

धर्मोपदेशसमये केण हे स्वामिन् ! धर्म देशनाना वखते तमारा समीपना प्रज्ञावथी लोकजेठे ते तो दूर रहो ! परंतु जाऊ पण शोक रहित थायठे; अ

अथा जेम सूर्य उगवाथी जामे करी सहित एवो प
 ण जीवलोक (समस्त जगत्) विकाशपणाने शुंन
 पामे ? अर्थात् पामे ठे; एटले सूर्योदयथी एकलो लो
 कज निज्ञानो त्याग करीने विबोध पामे ठे एटलुंज
 नही, पण वनस्पति पण निज्ञानो त्याग करी जागृत
 पणाने पामे ठे, तेम तमारा समीपथी जाम पण अ
 शोक थाय ठे. ए रीते प्रथम अशोकवृक्षनामा प्राति
 हार्य वर्णव्यो ॥ १ए ॥

चित्रं विज्ञो कथमवाङ्के० हे स्वामिन् ! निरं
 तर देवतानुए करेली जे पुष्पवृष्टि ते चारे तरफ नीचुं
 ठे मुख जेनुं एवुं जे बीट (बंधन) ते जेम होय ते
 मज केम आकाश थकी जूमिने विषे पमे ठे ? ए आ
 श्वर्य ठे; हवे एनुं दृष्टांते करी समाधान करे ठे. अथवा
 हे मुनीश ! तमो प्रत्यक्ष ठतां तमारा समीपने विषे
 शोजायमान ठे मन जेमनां एवा ज्ञव्यजनो तथा दे
 वतानुनां बंधन ते नीश्वे जे कारण माटे नीचेज जाय
 ठे, अर्थात् तमारा समीपे सुमनस् जे फुल तेनां बीट
 जे बंधन ते अधोमुख थाय ठे अने सुमनस जे ज्ञव्य

जीव तेनां बाह्य अने अन्तर बंधन ते नीचां जाय ठे
एटले पाप नाश थाय ठे. (आ सुरपुष्पवृष्टि नामा
बीजो प्रातिहार्य वर्णव्यो) ॥ १० ॥

गाथा. ११ थी १५ सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

स्थाने-युक्त, ठेकाणे
गभीर-गंभीर
संभवाया:-उपनेली
(नी)

पयिषतां-अमृतपणुं
गिर:-वाणीओ
समुदीरयांति-कहेछे
संमद-हर्ष
संग-संयोग
तरसा-उतावले
सुदूरं-अखंतपणे

अवनम्य-नीचानमीने
समुत्पतंत:-उंचा उछ
लता

शुचय:-पवित्र
नातिं-नमस्कारने
विदधते-करेछे

पुंगवाय-प्रधानने, श्रे
ष्टने
उर्द्धगतय:-उंचीगति
वाला

श्यामं-श्याम
स्थं-रहेलाने
आलोकयांति-जोवेछे
रभसेन-उत्सुकपणाये
नदंतं-गर्जना करतो
चामीकराद्रि-मेरुप
र्वत

शिरसि-शिखरमां
नव-नवा
अंबुवाहम्--मेघने
उद्गच्छता-उंचा जता
शिति-श्याम
मंडलेन-मंडलबडे

लुप्त-लोपाणी छे
च्छद-पांदडा
च्छवि:-छवी, कांति
बभूव-थयो

सान्निध्यत:-सान्निध्य-
थी

नीरागतां-वैराग्यता
अवधूय-त्याग करीने
भजध्वं-भजो
निर्घृतिपुरिं-मोक्षपुरि
सार्थवाहम्--सार्थवा-

हने
निवेदयाति-निवेदन
करेछे

नदन्-नाद करतुं
अभिनभ:-आकाशने
व्यापीने

(५८९)

स्थाने गङ्गीरहृदयोदधिसंज्ञवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति॥
पीत्वा यतः परम संमद संगन्नाजो,
न्नव्या ब्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वं
॥ ११ ॥ स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य
समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सु
रचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विद
धते मुनिपुंगवाय, ते नूनसूर्धगतयः
खलु शुद्धजावाः ॥ १२ ॥ श्यामं
गङ्गीरगिरमुज्वल हेम रत्न, सिं
हासनस्थमिह न्नव्यशिखंमिनि
स्त्वां ॥ आलोकयन्ति रत्नसेन न
दंतमुच्चै, श्वामीकराद्रिशिरसीव
नवांबुवाहम् ॥ १३ ॥ उद्गच्छता त
व शितियुतिमंमलेन, लुप्तच्छदच्छ

विरशोकतरुर्वन्नूव ॥ सान्निध्यतो
 ऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरा
 गतां व्रजति को न सचेतनोऽपि
 ॥ १४ ॥ ज्ञोज्ञोः प्रमादमवधूय न्न
 जध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रति
 सार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव
 जगत्रयाय, मन्ये नदन्नजिनन्नः सु
 रडुंडुजिस्ते ॥ १५ ॥

अर्थः--स्थाने गन्तीरहृदयो के० हे स्वामिन् ! ग
 न्तीर एवा हृदयरूप समुद्राणी नपनी एवी जे तमारी
 वाणी तेना अमृतपणाने श्रोतानु कहे ठे ते युक्तजबे
 कारण के अमृतनी उत्पत्ति तो समुद्र थकीज ठे अने
 आ वाणीरूप अमृतनी उत्पत्ति तो तमारा हृदयरूप
 समुद्र थकी आय ठे. हवे ए वाणीमां अमृतपणुं केम
 घटे ? ते कहे ठे, के जे कारण माटे दर्पना संयोगना
 न्नजनार एवा न्नव्य प्राणीनु जे ठे ते तमारी वाणीने पीने

एटले आदरसहित सांजलीने उतावले पण अजराम
रणाने पामे ठे. अर्थात् जेम अमृत पीनार अजराम
आय ठे, तेम तमारी वाणी सांजलवाधी पण अज
रामरणुं आय ठे, माटे तमारी वाणीने अमृतपणुं
कह्युं ते युक्तज ठे. आ दिव्यघनि नामा त्रीजो प्राति
हार्य वर्णव्यो ! ॥ १० ॥

स्वामिन् सुदूरमवनम्य केण हे स्वामिन्! हुं एम मा
नुंहुं जे पवित्र एवा, देवतानुए वीजेला चामरोना समूह ते
अत्यंतपणे नीचा नमीने फरी उंचा उठलता उतां आ प्र
कारे कहे ठे, के जे मनुष्यो आ प्रत्यक्ष मुनिउने विषे
प्रधान जे श्री पार्श्वनाथ स्वामी तेमने नमस्कारने करे
ठे ते मनुष्यो निश्चे उंची गति वाला आय ठे तथा शुद्ध
ज्ञाववाला थाय ठे. अर्थात् चामरो जाणे एम कहे
ता होय नहीं के अमे जगवाननी आगल नीचा न
मीने उंचा जइए ठीए तेम तमे पण जगवानने नम
स्कार करवाधी उंची गतिने पामशो. आ चामरनामा
चोथो प्रातिहार्य वर्णव्यो ॥ ११ ॥

(६७५)

श्यामंगत्रीर के० हे स्वामिन् ! आ संसार के
त्रने विषे जव्यरूप मोर ठे ते आ समवसरणने विषे
तमोने निर्मल देदीप्यमान सुवर्ण तथा रत्ने मिश्रित
एवा सिंहासनने विषे बेठा अका अने श्यामवर्णवाला
अने गंग्नीरवाणीवाला तमोने उत्सुकपणाये करीने
जोवे ठे, ते केवी रीते जोवे ठे ? तो के मेरु पर्वतना
शिखरने विषे उंचे स्वरे करी शब्द करता एवा नवीन
मेघनेज जेम जोता होयनी. एटले मेरुपर्वतने ठेकाणे
सिंहासन जाणवुं अने मेघने स्थानके प्रज्जुनुं श्याम शरी
र जाणवुं तथा गर्जनाने ठेकाणे प्रज्जुनी वाणी जाणवी
आ सिंहासन नामा पांचमो प्रातिहार्य वर्णव्यो॥१३॥

उद्गच्छता तव के० हे स्वामिन् ! तमारु उंचुं
जातुं एटले प्रसरतुं एवुं श्याम प्रज्ञानुं जे मंमल अ
र्थात् ज्ञामंमले करी ढंकाणी ठे पानमानी ठवी एट
ले कांति अर्थात् रक्तता जेनी एवो अशोक वृक्ष ते हो
तो हवो. ते अर्थ युक्तज ठे केमके हे वीतराग ! तमा
रा सान्निध्यथी पण चेतना सहित जे होय ते पण

कोण वैराग्यने न पामे ? अर्थात् तमारा सान्निध्यशी
जीव अवश्य नीरागी प्रायज. आ ज्ञामंस्त नामा ठ
हो प्रातिहार्य वर्णव्यो ॥ २४ ॥

जो जो: प्रमादमवधूय के० हे देव ! हुं एम मानुं
हुं के तमारो देव इंद्रुजि जे ठ ते आकाशने व्यापी
ने शब्द करतो थको त्रण जगतने आ प्रकारे निवेदन
करे ठे:-हे जगत्त्रयजनो ? तमे आत्मसने त्याग करी
ने आवीने ए जे पार्श्व प्रभु तेने जजो. ते केवा पार्श्व
प्रभु ? तो के मोक्ष पुरि प्रत्ये सार्थवाह समान ठे. अ
र्थात् ते देव इंद्रुजि एम कहे ठे के तमे प्रमाद मूकीने
मोक्ष आपनार एवा श्री पार्श्व प्रभुने जजो. ॥१५॥

गाथा. ५६ थी ३० सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

उद्योतितेषु भुवनेषु--त्र
ण भुवन प्रकाशित
करे छते
तारान्वितः--तारामंड
ल सहित
विधुः--चंद्रमा
-आ

सुक्ता-मोती
उच्छ्वसित-उल्लसित
आतपत्र-छत्र
व्याजाव-मीशथी
त्रिधा-त्रण प्रकारे
धृत-धारण कर्युं छे
ध्रुवं-निश्चे

अभ्युपेतः--नजीक
आव्यो
स्वेन-पोतानां
पिंडितेन-पिंडीभूत थ
इ रत्ना
यशसां-यशाना
संचयेन-संचय वदे

रजत-रूपं
निर्मितेन-करेला
सालत्रयेण-त्रण गढ
वडे
अभितः-चारेपासे
दिव्यसृजः--मनोहर
मालाओ
नमत्-नमता
त्रिदशाधिपानां-इं-
द्रना
उत्सृज्य-छोडीने
मौलिवंधान्-मुकुटो
परत्र-बीजे ठेकाणे
सुमनसः-पंडित, दे-

वता.
रमंत-रमेछे.
तारयसि-तारोछो
असुमतः-प्राणीओने
लग्नान्-बलगेला
पार्थिव-माटीनुं, पृ-
थ्वीनो
निपस्य-घडाने, रा-
जाने
सतः-संत.
तवैव-तमारोज
विपाक-फल
शून्यः-रहित
दुर्गतः-दरिद्री, दुखे

जाणवा योग्य
अक्षर-मोक्ष, अक्षर
निश्चल
प्रकृति--स्वभाव
आलिपिः-लिपिरहित,
कर्मलेप रहित
अज्ञानवति--अज्ञान-
वाला
अज्ञान-अजाणोने
अवति--बोधकरे छते.
कथंचित्--केमज
स्फुरति--स्फुरेछे

ब्रह्मोतितेषु ज्वता ज्वनेषु नाथ,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिका
रः ॥ मुक्ताकक्षापकलितोच्चसि
तातपत्र, व्याजात्रिधा धृततनुर्ध्रुव
मन्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरित

जगन्नयपिंमितेन, कांतिप्रतापयश
सामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेम
रजतप्रविनिमितेन, सालत्रयेण न
गवन्नजितो विज्ञासि ॥ ५७ ॥ दि
व्यसृजो जिन! नमत्रिदशाधिपाना,
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौल्लिबं
धान् ॥ पादौ श्रयंति नवतो यदि
वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमं
त एव ॥ ५८ ॥ त्वं नाथ! जन्मज
लधेर्विपराडःमुखोपि, यत्तारयस्यसु
मतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि
पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं वि
जो यदसि कर्मविपाकशून्यः
॥ ५९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक
दुर्गतस्त्वं, किं वाह्यरप्रकृतिरप्यलि

पिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदै
व कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति
विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥

अर्थ—नद्योतितेषु ज्वता के० हे स्वामिन् ! आ
तमारा उपर जे त्रण ठत्र ठे, ते त्रण ठत्र नथी परंतु
शुं ठे ? तो के मोतीना समूहे करी सहित अने उच्च
सित एवां जे त्रण ठत्र तेना मीशे करीने तारा मंम
ल सहित ठतो, निश्चयथी त्रण प्रकारनुं धारण करयुं
ठे शरीर जेणे एवो चंडमा जे ठे ते तमारी सेवा कर
वाने अर्थे जाणे तमारी पासे आव्यो होय नहीं !
ते चंडमा केवो अको आव्यो ठे, तो के विशेषे करी ह
णाणो ठे जगतने विषे अजवालुं करवारूप व्यापार
जेनो एवो ठे; केमके तमोए त्रण ज्ञुवनने प्रकाशित
कर्यां, तेथी चंडमानो ते अधिकार मिथ्या थयो. ॥३६॥

स्वेन प्रपूरित के० हे जगवन् ! तमे चारे पासे
नील रत्न अने सुवर्ण तथा रूपा वस्त्रे प्रकर्षे करीने
निर्मित करेला एवा त्रीगुणा गढे करीने शोभो ठो.

एटले एक गढ रत्ननो, बीजो सोनानो, त्रीजो रूपानो
ए रीते त्रण गढे करीने तमे शोन्नोगो. ते कोनी पे
शोन्नोगो ? तेनी उपर कवि उत्प्रेक्षा करे ठे, के पो
एटले प्रभुए प्रकर्षे करी पूर्युं ठे त्रण जगत ते
करी पिंकीन्नूत थइ रहेलां एवां, शरीरनो रंग प्रता
तथा यश, तेमना संचये करीनेज जाणे होय नई
अर्थात् कांति, प्रतापने यश तेना समूहज जाणे शं
जेठे: केमके नीलरत्नना गढने प्रभुना श्याम वर्णन
सदृशता ठे, तथा सोनाना गढने प्रभुना प्रतापनी स
दृशता ठे, तथा रूपाना गढने जगवानना यशनी स
दृशता ठे. माटे ए उत्प्रेक्षा करी ते योग्यज ठे ॥१७॥

दिव्यसृजो जिन केण हे जिन ! मनोहर फुलनी
मालाजु जे ठे ते तमारा चरणने नमेला देवेडोना र
त्नोए रचेला एवा पण मुकुटोने त्याग करी तमारा
चरणारविंदने आश्रय करे ठे. अहीं दृष्टांत कहे ठे के, सु
मनस केण पंडित अथवा देवताजु जे ठे ते तमारा सं
गम ठेते बीजे स्थानके नशीज-रमता, कारण के ते आ

(५९१)

तमारा संग ठतेज आनंद पामे ठे, तेमनुं तथा फुलनुं
नाम पण सुमनस ठे. माटे फुलनी मावाले जे तमा
रा चरणारविंदनो आश्रय कर्यो ते युक्तज ठे ॥ २७ ॥

त्वं नाथ जन्मजलधेः केण हे स्वामिन् ! तमे ज
व समुद्र अकी विशेषे करी पराङ्मुख (अवला मुख
वाला) अया उता पण तमारी पोतानी वांसे वलगे
ला एवा प्राणीनुने जे कारण माटे तारो ठो, ते विश्व
ना स्वामी अने सुज्ञ एवा तमनेज निश्चे युक्त ठे. अहीं
दृष्टांत कहे ठे, के पार्थिव केण पृथ्वीनी जे माटी ते
नाथी उत्पन्न थएवो एवो निप केण घमो जे ठे, ते पा
णी उपर रह्यो ठतो तेनी पीठे वलगेला जनोने तारे
ठे, तेम तमे पण पार्थिवनिप ठो माटे तमारी पूठे वल
गेला जनोने संसारसमुद्धी तारो ठो, ते युक्तज ठे परं
तु अहीं एक आश्चर्य ठे, ते ए के जे कारण माटे हे
स्वामिन् तमो ज्ञानावस्थादि आठ कर्मना विपाकथी
रहित ठो, अने माटीनो घमो तो कुंजारादिके करेली
पकाववादिकनी क्रियाए करी युक्त ठे तेथी ते कर्म वि

पाक शून्य नथी अने तमे ठो, ए आश्चर्य ठे ॥ १९ ॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक केण हे जनपालक !
 तमे विश्वना ईश्वर ठो तो पण दुर्गत केण दरिडी ठो ए
 विरोधनो परिहार करे ठे के तमे विश्वेश्वर ठो तो पण
 दुर्गत केण दुखे जाणवा योग्यठो अथवा “ जनपालक
 दुर्गत ” ए शब्दनो बीजो अर्थ एवो ठे के जनप केण हे
 जनप ! तमे अलककेण केश तेणे करी दरिडी ठो एटले
 तमारे दिक्षा ग्रहण पठी केश वृद्धिनो अज्ञाव ठे अथवा
 पक्षांतरे तमे हे स्वामिन् ! अक्षर एटले मोक्षस्वज्ञावी
 ठो, तो पण लिपिएकरी रहित वत्तो ठो, एटले जे अक्षर
 स्वज्ञावी होय, तेतो लिपिरूप होय. ए पण विरोध ठे
 तेनो परिहार करे ठे के, स्थिर ठे स्वज्ञाव जेमनो ते
 अक्षरप्रकृति कहीए अर्थात् शाश्वतरूप ठो, अथवा
 अक्षर जे मोक्ष तेज ठे प्रकृति एटले स्वज्ञाव जे
 नो एवा तथा नथी कर्मरूप लेप जेने एवा तमे ठो; त
 था अज्ञानवाला एवा पण तमारे विषे निश्चय थकी
 विश्वने प्रकाश करवानुं हेतुनूत एवुं जे ज्ञान ते निरं
 तर निश्चे स्फुरे ठे ? एटले जे अज्ञानवान होय तेने

ज्ञान स्फुरे नहीं, ए विरोध ठे. तेना परिहार अर्थे कहे
ठे के, अज्ञान् अने अवति ए बे पद जूदां करिने अ
र्थ करवो त्यारे अज्ञान् के० ज्ञानरहित एवा मूर्खजन
तेने अवति के० सम्यक् बोध करता एवा त्वयिके० तस्मा
रे विषे ज्ञान स्फुरे ठे ॥ ३० ॥

गाथा ३१ थी ३५ सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

प्राग्भार-अधिक भा-
र वडे

अमीभिः-आ वडे

चारहुं

संभृत-भरेलां

दुरात्मा-दुष्ट आत्मा-
वालो

दध्रे-कधिं

नभांसि-आकाश

उर्जित-घणो बलवंत

तेनैव-ते वडेज

रजांसि-रजो

घनौघं-मेघना समूह-

कृत्यं-काम

रोषात्-कोपधी

अदभ्र-घणुं [वालुं]

विकृताकृति-विरूप

उत्थापितानि--उडा-
डेला

भ्रश्यत्-पडती

आकृतिओ वाला.

शठेन-मूर्खें

मांसल-पुष्ट

मर्त्य-माणसना

यानि-जे

घोर-वीहामणी

मुंड-मार्था

छाया-कांति

धारं-धारावालुं

प्रालंब-झुलतुं झुमणुं

तैः-तेओ वडे

दुस्तर-असह्य, दुखै त-
रवा योग्य

भृत्-धारण करेछे

हताशः-निराश थअलो

वारि-पाणी

द-देनारां

ग्रस्तः-व्याप्त थयो

दुस्तरवारि-मुंडी तर-

विनिर्यत्-निकलतो

प्रेत-द्वैत्य

त्रजः-समूह

(५९४)

प्राति-प्रत्ये

ईरितः-प्रेयो

अभवत्-होतो हवो

प्रतिभवं-भवोभवमां

धन्याः-धन्य

त एव-तेओज

त्रिसंध्यं-त्रण काले

आराधयन्ति-आराधेछे

विधिवत्-विधिपूर्वक

विधुत-विशेषे टाल्या

छे

पुलक-रोमाञ्च

पक्ष्मल-व्याप्त

देशाः-भाग

पादद्वयं-वे पग

जन्मभाजः-भव्यजनो

श्रवण-कान

गोचरतां-गोचरपणा

प्रत्ये

गतः-प्राप्त थएला

आकर्णिते-सांभलेउं

विपत्-आपदा

विषधरी-सर्पिणी

सविधं-समीप

समेति-आवे ?

प्राग्ज्ञारसञ्चृतनज्ञांसि रजांसि शे
 षा, दुष्ठापितानि कमठेन शठेन
 यानि ॥ ढायापि तैस्तव न नाथ
 हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीज्जिरयमे
 व परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्ज्जुड
 ज्जितघनौघमदञ्जनीमं, अश्यत्तदि
 न्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन
 मुक्तमथ दुस्तरवारि दधे, तेनैव त
 स्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३१॥

(५९५)

ध्वस्तोर्ध्वकेश विकृताकृतिमर्त्यमुम्,
प्राखंबजृद्भयदवक्रविनिर्यदग्निः

॥ प्रेतव्रजः प्रतिन्नवंतमपीरितो
यः, सोऽस्याऽन्नवत्प्रतिन्नवं न्नव
दुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त

एव न्नुवनाधिप ये त्रिसंध्य, मारा
धयंति विधिवद्विधुतान्य कृत्याः ॥
न्नक्तयोद्धसत्पुलकपद्मलदेहदेशाः

पादघ्नं तव विन्नो न्नुवि जन्मन्ना
जः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारन्नववा
रिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रव

णगोचरतां गतोऽसि ॥ आकारिणि
ते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा
विपद्विषधरी सविधं समेति ॥३५॥

अर्थः—प्राग्ग्नारसंनृतनन्नांसि केण हे नाथ ? क

मगसुरे कोपथी जे रजो तमारा उद्देशे करीने उमा
नी, ते रजोए करीने तमारी शरीरनी कांति पण न
हणाणी. ते रजो केवी ठे ? तो के अधिकपणाए करी
ने ज्ञर्यां ठे आकाशो जेणे एवी ठे. हवे ते कमगसुर
केवो ठे ? तो के मूर्ख एवो ठे, परंतु हणाणी ठे आ
शा जेनी एवो, दुष्ट ठे आत्मा जेनो एवो, एज कमग
सुर ते पोतेज एज रजोये करीने व्याप्त थयो. अर्थात्
रज एटले पापरूप कर्मथी पोतेज व्याप्त थयो ॥३१॥

यद्गर्जुडुर्जित के० हे जिन ! कमगसुरे डुखे
तरवा योग्य एवं पाणी ते जे कारणे उपसर्ग कर
वाने माटे तमारा उपर वरसाव्युं, एटलाथी पठी हवे
तेज पाणीए ते कमगसुरने जुंमी तरवारनुं काम की
धुं; एटले माठी तरवारे करी जेम ठेदन जेदन थाय,
तेम संसारने विषे ठेदन जेदनादिक जे कार्य ते कर्युं;
अर्थात् तमारा उपर जल वरसाव्युं ते संसारीक डुख
नुं हेतु ठे माटे डुस्तर तरवारनी पेठे ते कमगसुरने
ज ठेदन जेदन वधादिकनुं हेतु थयुं. हवे ते डुस्तर
पाणी वरसाव्युं ते केवुं ठे ? तो के गर्जना करतो अने

(५९७)

प्रबल बलवंत एवो ठे मेघनो समूह जेने विषे एवं
ठे तथा वली केवुं ठे ? तो के आकाश थकी पमती
एवी वीजली ठे जेने विषे एवं ठे, वली मुसलना स
रखी पुष्ट अने बीहामणी ज्ञयंकर एवी ठे धारा जेने
विषे एवं ठे ॥ ३१ ॥

ध्वस्तोर्ध्व के० हे स्वामिन् ! कमठे जे दैत्यनो
समूह तमारी प्रत्ये प्रेर्यो, ते दैत्य समूह पण ए कम
ठासुरनेज ज्ञवज्ञवने विषे संसारनां जे दुख तेनुं का
रण थतो हवो. ते दैत्य समूह केवो ठे ? तो के नीचे प
रुया एवा जे नपरना केश तेणे करीने विरूप थइ ठे
आकृति जेनी, एवां जे मनुष्यनां माथां तेनुं जुलतुं
एटले हृदय पर्यंत लटकतुं एवं जे जुमणुं तेने धारण
करे ठे एवो प्रेतव्रज ठे, वली ज्ञय देनारां मुखथी नी
कलेल ठे अग्नि जेमने एवो प्रेतव्रज ठे ॥ ३३ ॥

धन्यास्त एव के० हे त्रण जगत्ना अधिपति !

था हे स्वामिन् ! तेज जनो धन्य ठे के जे ज्ञव्य
जनो पृथ्वीने विषे विधि पूर्वक त्रण काले तमारा च

रणयुगलने आराधन करे ठे, ते जन धन्य जाणवा, ते केवा जनो ठे ? तो के विशेषे करी टाळ्यां ठे बीजां का र्यो जेमणे एवा ठे, वली केवा ठे तो के नक्तिये करी उद्धास पामतो एवो जे रोमांच तेणे करी व्याप्त ठे शरीरना जाग जेमना एवा ठे ॥ ३४ ॥

अस्मिन्नपारज्व केण हे सुनीश ? हुं एम मानुं तुं के आ अपार एवो जे संसार समुद्र तेने विषे तमे मारा कानना विषय ते प्रत्ये न प्राप्त थएला एवा ठे एटले में आ संसार समुद्रने विषे तमोने कोइ वारे सां ज्ञड्या नथी. एज वात दृढ करे ठे, ते जेमके:-तमारा नाम रूप जे पवित्र मंत्र ते सांज्ञले ठते पण आपदा रूप जे सर्पिणी ठे ते शुं समीप आवे ? अर्थात् तमारुं नाम सांज्ञड्या पठी तो आपदा आवे नहीं अने मने तो आ संसाररूप आपत्तिनु आवेली ठे, तेथी एम मानुंतुं के में पूर्व जवोने विषे क्यारे पण तमारुं नाम सांज्ञड्युं नथी ॥ ३५ ॥

गाथा ३६ थी ४० सुधीना तुटा शब्दना अर्थ

ईहित-वांछित
दक्षम-चतुर

जन्मनि-जन्मने विषे	निकेतन-घर
पराभवानां-पराभवोनुं	मथित-मथन करेठुं

आशयानां-अभिप्रा
यानुं

आवृत-ढंकाएलुं

लोचनेन-आंखवडे

प्रविलोकित-जोयेला

मर्मा-मर्म स्थानने

विधः-भेदनारा

विधुरयंति-पीडेछे

मां-मने

अनर्थाः-अनर्थो

प्रबंध-कर्म संताति

गतयः-प्राप्ति

अन्यथा-वीजी रीते

एते-आ

चेतसि-चित्तने विषे

विधृतो-धारण करेलो

प्रतिफलंति-विशेष

रीते फले छे

वत्सल-कृपावाला

कारुण्य-दयापणुं

वसति-स्थानक

वशिनां-जितेंद्रियोना

वरेण्य-श्रेष्ठ [जेणे एवा

नते-नमस्कार कर्योछे

ययि-मारे विषे

दयां-दया

विधाय-करीने

उद्वलन-खंडन

तत्परतां-तत्परपणुं

विधोहि-करो

आसाद्य-पामीने

सादित-नाश करेला

प्रथित-प्रसिद्ध

प्राणिधान-ध्यान

बंध्यः-वांझिओ

बंध्यः-हणवायोग्य

चेत्-जो

पावन-पावित्र

जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, स
न्ये मया महितमीहितदानदहम्॥
तेनेह जन्मनि मुनीश पराज्वानां
जातो निकेतनमहं मथिताशयाना
म् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरा
वृतलोचनेन, पूर्वं विज्ञो सकृदपि

प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो वि
धुरयंति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंध
गतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आ
कर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षि
तोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृ
तोऽसि ज्ञक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन
जनबांधव दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः
प्रतिफलंति न ज्ञावशून्याः ॥ ३८ ॥
त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हेशरण्य,
कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥
ज्ञक्त्या नते मयि महेश दयां वि
धाय, दुःखांकुरोद्धलन तत्परतां वि
धेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसार शरणं
शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरि
पुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पाद पंक

(६०१)

जमपि प्रणिधानबंध्यो, वध्योऽस्मि
चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ! ॥४०॥

अर्थः—जन्मांतरेपि तव के० हे देव हूं मानुं तुंके
जन्मांतरने विषे पण तमारुं चरणयुगल जे ठे तेने में
नथी पूज्युं, ते चरणयुगल केवुं ठे ? तो के वांछित ते
नुं जे देवुं तेने विषे चतुर एवुं ठे, हवे तेज कहे ठे.
जे हे मुनीश ! ते कारण माटे हूं आ जन्मने विषे म
अन कर्यो ठे चित्तनो आशय जेमणे एवा पराज्जवोनुं
स्थानक अयो, अर्थात् तमारा चरणारविंदनो पूज
नार तो पराज्जवनुं स्थानक होतो नथी, परंतु में
पूर्व जेवे तमारां चरणकमल क्यारे पूज्यां नथी एम
जासे ठे ॥ ३६ ॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन के० हे स्वामि
न् ! निश्चे में प्रथम एक वार पण तमो जोयेला नथी,
ते हूं केवोतुं ? तो के मोहरूप तिमिर जे अंधकार ते
णे आवृत अयां ठे नेत्र जेनां एवो तुं. शा माटे नथी
जोया ? तो के जे कारण माटे जो तमारुं दरशन कर्युं

होत तो अनर्थ रूप कष्टो मुजने केम पीने ? अर्थात्
पूर्वे जो तमारुं दरशन अयुं होत तो आ अनर्थो मुजने
पीरत नहीं. ते अनर्थो केवा ठे ? तो के मर्मस्थानने
जेदनारा ठे, वली प्रकर्षे करी प्राप्त अइ ठे सविस्तर
कर्म प्रबंध तेनी प्रवृत्ति जेने एवा ठे ॥ ३७ ॥

आकर्णितोऽपि केण हे जन बांधव ! एटले हे जो
कना हित कर्त्ता ! मैं पूर्वे तमने सांजल्या पण खरा, त
या पूज्या पण खरा, तथा दीगा पण खरा, परंतु नि
श्चे ज्ञक्तिये करीने चित्तने विषे धारण करेला नथी; ते
कारण माटे हुं दुःखनुं पात्र अयो हुं. जे कारण माटे
जावे करी रहित क्रियातु विशिष्ट फल आपनारी अती
नथी ॥ ३८ ॥

त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल केण हे नाथ ! दुःखी
जनोपर दया लावनार ! वली हे शरण आवेला प्राणी
ने हित करनार ! तथा हे दयाना पवित्र स्थानक !
अथवा हे दया धर्मना घर ! तथा हे जितेंद्रिय पुरुषोमां
श्रेष्ठ ! तथा हे मोटा ईश्वर ! ज्ञक्तिये करीने नमस्कार
कर्यो ठे जेणे एवा मारे विषे कृपा करीने दुःखनो अं

कुर जे उत्पत्ति स्थानक तेना खंनने विषे तत्पर
 पणुं कर ॥ ३ए ॥

(६०३)

निःसंख्यसारशरणं के० हे स्वामिन् ! तथा हे
 त्रण जगतने पवित्र करनार ! तमारा चरणारविंदना
 शरणने पामीने पण तमारुं ध्यान करवुं तेणे करीने
 वांजिउं अथो एटले शून्य अथो, एवो जो हुं उं तो रा
 गादिक शत्रुए करी हखावा योग्य उं, ए कारण माटे हा
 इति खेदे, उदैवे मारेखो उं. हवे तमारुं चरणकमल
 केवुं ठे ? तो के अनंत बलनुं घर एवुं ठे तथा शरण
 करवा योग्य ठे, बली हय पमाख्या ठे रागादिक वैरी
 जेणे तेणे करीने प्रसिद्ध ठे प्रजाव जेनो एवुं ठे ॥४ण॥

गाथा ४१ थी ४४ सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

विदित-जाण्यो छे
 अखिल-समग्र
 त्रायस्व-रक्षणकरो
 इद-द्रह, सरोवर.
 नीहि-पवित्र कर
 सीदतं-सीदातो

अथ-आज
 भक्तेः-भक्तिनुं
 संचितायाः-संचेली
 त्वदेक-तमारुं एक
 भूयाः-थाओ
 समाहित-समाधिका-

ली, ध्यान युक्त
 धियः-बुद्धियो
 सांद्र-आकरो
 उल्लसव-उल्लास पा-
 मतो
 कंचुकित-कंचुके सदि-

भागाः—भागो
चङ्गलक्षा—बांध्युंछे
ध्यान जेयणे एवा
कुमुदचंद्र—सिद्धसेन
दिवाकर
कुमुदचंद्र—चंद्रविका-

शि कमलमां चंद्रस-
मान
प्रभास्वराः—अत्यंत
देदीप्यमान
भुक्त्वा—भोगवीने
गलित—गलेलो

निचयाः—समूह
अचिरात्—थोडा व-
खतमां
प्रपद्यंते—पामे छे

देवेऽवंद्य विदिताखिलवस्तुसार,
संसारतारक विज्ञोऽनुवनाधिनाथ॥
त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनी
हि, सीदंतमद्य न्नयदव्यसनांबुरां
शेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ न्नवंद
घ्निसरोरुहाणां, न्नक्तेः फलं किमपि
संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशर
णस्य शरण्य न्नूयाः, स्वामी त्व
मेव न्नवनेऽत्र न्नवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥
इत्वं समाहितधियो विधिवज्जि
नंश्च, सांशोद्धसत्पुलककंचुकितांग

(६७५)

ज्ञागाः ॥ त्वद्धिंबनिर्मलमुखांबुज
बध्नलक्षा, ये संस्तवं तव विन्नो
रचयंति ज्ञव्याः ॥ ४३ ॥ जननय
नकुमुदचंद्र, प्रज्ञास्वराः स्वर्गसंप
दो नुत्त्वा ॥ ते विगलितमलनि
चया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥४४॥
युग्मम् ॥ इति श्रीकल्याणमंदिर
नामकं अष्टमस्मरणं समाप्तम् ॥

अर्थः--देवेंद्रवंद्य केण देवताना इंझेए वंदवा यो
व्य माटे हे देवेंद्रवंद्य! वली जाण्युं ठे सधली वस्तुनुं
रहस्य जेणे माटे हे विदिताखिलवस्तुसार! तथा
हे संसार समुद्रकी तारनार! हे समर्थ! तथा हे
त्रिभुवन नाथ! तथा हे देव! तथा हे करुणाना इह!
आज सीदाता एवा मने ज्ञय देनारो एवो व्यसननो
जे समुद्र तेथी रक्षण करो अने (पापनो नाश करी)
पवित्र करो ॥ ४१ ॥

यद्यस्ति नाथ के० हे नाथ ! जो तमारां चरण कमलनी ज्ञक्तिनुं कांइ पण फल ठे तो हे शरणागत वत्सल ! जेने तमारुंज एक शरण ठे एवा मने आ लोकने विषे, तथा ज्ञवांतरने विषे तमेज स्वामी थान. हवे पूर्वोक्त ज्ञक्ति केवी ठे ? तो के निरंतर संताननी परंपराए संचेली एटले वृद्धिगत अइ एवी ठे ॥ ४९ ॥

इठं समाहितधियो के० हे जिनैइ ! तथा हे स्वामिन् ! तथा मनुष्यना नेत्ररूप जे चंद्रविकाशि कमल, तेने विषे चंद्रमा समान माटे हे जननयनकु मुदचंद्र ! अहिं अत्यंतरमां कविये, श्री सिद्धसेन दि वाकराचार्ये, दीक्षा समयमां गुरुए दीधेला कुमुदचंद्र एवा पोताना नामनुं पण सूचवन कर्तुं ठे. जे ज्ञव्यप्रा णीउ आ रीते एटले पूर्वोक्त प्रकारे विधि पूर्वक तमारा स्तोत्रने रचे ठे ते ज्ञव्य प्राणीउ थोनाएक कालमां मोहने पामे ठे. शुं करीने पामे ठे ? तो के देवलोक नी संपदाना सुखने जोगवीने ते केवी स्वर्ग संपदा ? तो के अत्यंत देदीप्यमान एवी. तथा ते ज्ञव्यो केवा ठे ? तो के समाधिवाली बुद्धि ठे जेमनी एवा ठे, वली

आकरो उच्चास पामतो एवो रोमांच तेणे कंचुके क
री सहित ठे शरीरनो देश जेमनो एवा, वली केवा
ठे ? तो के तमारा प्रतिबिंबनुं निर्मल एवं जे मुख
कमल तेने विषे बांध्युं ठे ध्यान जेमणे एवा ठे. तथा
वली केवा ठे ? तो के विशेषे करीने गली गयो ठे कर्म
रजरूपी मलनो समूह जेमनो एवा ठे. अर्थात् आ प्र
कारना कहेला एवा जे ज्ञव्य प्राणीत तमारुं स्तवन
करे ठे. ते स्वर्गनां सुख जोगवी मनुष्य जव पामीने
थोका कालमां मोक्षे जाय ठे ॥ ४३—४४ ॥

इति श्री कल्याण मंदिर नामकं अष्टमं स्मरणं
संपूर्णम् ॥

अथ संथारापोरिसीना बुटा शब्दना अर्थ

गाथा. १ थी ४ सुधीना

गोयमाईणं—गौतमा-	मंडिअ—शोभित	वाहुवहाणेण—हाथना
दिकोने	शरीरा—शरीरवाला	ओशीका बडे
आईण—आदिक	बहुपण्डिपुत्रा—घणी प-	वाम—डावु
जिद्विज्जा—दुद्धसाधुओ	रिपूर्ण	पासेण—पासाए
द्विज्जा—बैसो	संथारए—संथारामां	कुकुडि—कुकडी
रयणेहिं—रत्नोए करी.	संथारं—संथारा प्रत्ये	पसारण—पसारीने

अंतरंत-असमर्थपणा-
थी न रहेवाय तो
पमज्जए-पूजे
संकोइअ-संकोचे
संडासा-साथल संधी
उव्वट्टंते-पासु फेरवे

पडीलेहा-पूजीने
दव्वाइ-द्रव्यादिक
उवओगं-उपयोग
निरुंभण-रुधुं, रोकडुं
आलोए-जुए
पमाओ-प्रमाद

इमस्स-आना
देहस्स-देहना
इमाइ-आ
रयणिए-रात्रीने विपे
उव्वहि-उपधि
वोसिरिअं-वोसिराडुं

निसिही, निसिही, निसिही, न
मो खमासमणाणं गोयमाईणं म
हामुणीणं ॥ आटलो पाठ तथा
नवकार तथा करेमिज्जंते सामाइ
यं ए सर्व पाठ त्रण वार कहीने
पठी ॥ अणुजाणह जिठिजा,
ठिजा ॥ अणुजाणह परम गुरु ॥
गुरु गुणरयणेहिं मंमिअसरीरा ॥
बहुपमिपुत्रा पोरिसि, राइअ सं
थारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह
संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं

(६७७)

॥ कुकुम्पिपाय पसारण, अंतरंत
पमज्जए नूमिं ॥ १ ॥ संकोइअ
संमासा, उवटंते य काय पमिले
हा ॥ दवाई उवज्जंगं, ऊसास नि
रुंजणा लोए ॥ ३ ॥ जइ मे हु
ज्ज पमान, इमस्स देहस्सिमाइ र
याणीए ॥ आहारमुवहिदेहं, सबं
तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

अर्थः—अहीआं साधु तथा श्रावक पम्पिकमणुं
करीने पढी सज्जाय करे, पढी पोरिसि थये ठते आ
चार्य समीपे आवे. त्यां खमासमण देइने इञ्जाकारेण
संदिसह जगवन् “ बहुपम्पिपुत्रा पोरिसि राइय सं
थारए ठामि ” एनो अर्थ लखीए ठीए. हे जगवन् !
तमे पोतानी इञ्जाए करी मने आदेश आपो. घणी
प्रतिपूर्णा एवी पोरिसि थइ, माटे रात्री संबंधिसंधारा
प्रत्ये हुं करुं ? गुरु आदेश आपे पढी इरियावहि पूर्व
क चैत्यवंदन करे. पढी शरीर चिंता लघुशंकादिक

कार्य सर्व करे, पढी यत्नाए करी संधारो करे, पढी
 ऋावो पग संधारानी साथे राखीने मुहपत्ति पढिलेहे,
 पढी त्रणवार निसिही कहे. निसिही के० पाप व्यापा
 रनो निषेध करीने मोहोटा सुनीश्वर एवा गौतमादि
 क ऋमाश्रमण जे ठे ते प्रत्ये नमस्कार थानु. पढी
 हे ज्येष्ठार्या ? (वृद्ध साधुनु) तमे मने आझा आपो,
 ए प्रकारे कहेतो अको संधारानी उपर रह्यो अको न
 मस्कार पूर्वक सामायक पाठ त्रणवार जणो, पढी आ
 वी रीते कहे, ते कहे ठे. गुरुगुणखणोहिं के० मोटा
 गुणरूप रत्नोये करी शोजित ठे शरीर जेमनुं एवा हे
 परमगुरु ? तमे मुजने आदेश आपो. घणी एवी पोरि
 सि अइ, माटे रात्री संधारकनी उपर विश्राम करुं॥१॥

अणुजाणह संधारं के० हे जगवन् तमे मने सं
 धारानी आझा आपो. पढी गुरु आझा आपे ते वारे
 बाहु के० हाथनुं उशीकुं करी ऋावे पासो सूवे, ते पण
 शी रीते सूवे ? तो के कुकरीनी पेठे आकाशने विषे
 पग पत्तारीने सूवे, जो ए रीते असमर्थ अकां नही
 रही शकाय तो शुं करे ? ते कहीए ठीए. जूमि प्रत्ये

(६११)
पूजीने त्यां पग स्थापे ॥ १ ॥

संकोचत्र संतासा के० ज्यारे पग संकोचवो हो
य त्यारे साथल पूंजीने संकोचे, अने ज्यारे पासुं फे
रवुं होय त्यारे शरीर प्रत्ये पूंजीने पासुं फेरवे. हवे
जागवानो प्रकार लखीए ठीए. ज्यारे लघुशंकादिकने
अर्थे नठे ते वारे इव्यादिकनो उपयोग करे एटले ते
विचार करे जे इव्यथी हुं कोण हुं ? अने खेत्र अकी
एम विचारे के हुं नपर हुं के नीचे हुं, के कोइ बीजे
ठेकाणे हुं; कालथी विचारे के हमणां रात्रि ठे के दि
वस ठे. जो रात्रि ठे तो केटली रात्री बाकी हशे ? ए
म विचार करे ने उपयोग आपे, अने जावथी तो आ
म विचारे के मारे लघुशंकादिकनी बाधा ठे ? किंवा न
थी ? एवा चार प्रकारे उपयोग करतां जो निज्ञ न जा
य तो उच्चास निःश्वास रुंधीने एटले नासिका दवावी
ने निज्ञ दूर करे. निज्ञ दूर अथा पठी आलोक प्रत्ये
जूए एटले बहार नीकलवानां वारणां प्रत्ये देखे, त्यां
जइ लघुशंकादिक करीने पठी धर्मध्यानमां प्रवर्त्ते ॥३॥

जइ मे हुज्जपमान के० हवे सुइ रहेवायी प्रथम
 शुं करवुं ? ते कहे ठे एह रात्रिने विषे जो मारे आ
 देह संबंधि प्रमाद एटले मरवुं आय तो अशनादिक
 चार प्रकारना आहार प्रत्ये, उपधि (वस्त्र, पात्रादिक)
 प्रत्ये, तथा शरीर प्रत्ये, अथवा नवहिदेहं के० शरीर
 संबंधि उपधि प्रत्ये, बीजा पण सर्व प्रत्ये त्रिविधे ए
 टले मन वचन कायाए करी हुं वोसिरावुं तुं, त्याग
 करुं तुं ॥ ४ ॥

गाथा. ५ थी १० सुधीना तुटा शब्दना अर्थ.

पन्नतो-प्ररूपेलो
 पवज्जाभि-अंगीकार
 करुछुं

चोरिकं-चोरि
 मेहुणं-मैथुन
 दविण-द्रव्यनुं
 मुच्छं-मूर्च्छा
 क्रोहं-क्रोध
 माणं-मान
 मायं-कपट
 लोहं-लोभ

पिज्जं-प्रेम, रागने
 दोसं-द्वेष
 कलहं-क्लेश
 अप्परुखाणं-अभ्या
 ख्यान
 पेसुन्नं-चाडी
 समाउत्तं-सहित
 परपरिवायं-परपरि
 वाद
 मायामोसं-माया मू
 पावाद

मिच्छत्तसल्लं-मिथ्या
 त्वशल्य
 वोसिरिसु-त्याग क
 विग्घ भूआइं-विघ्न
 भूत
 दुग्गइ-दुर्गति
 निबंधणाइं-कारण
 पावठाणाइं-पाप
 स्थानक

(६१३)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं,
सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केव
लिपन्नतो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥

चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंता लो
गुत्तमा, सिद्धा लो
गुत्तमा, साहु लो
गुत्तमा, केवलिपन्नतो धम्मो लो
गुत्तमो ॥ ६ ॥ चत्तारि सराणं पव
ज्जामि, अरिहंते सराणं पवज्जामि,
सिद्धे सराणं पवज्जामि, साहु सर
ाणं पवज्जामि, केवलिपन्नतं धम्मं
सराणं पवज्जामि ॥ ७ ॥ पाणाइ
वायमल्लियं, चोरिक्कं मेहुणं दविण
मुत्तं ॥ कोहं माणं मायं, लोत्तं
पिज्जं तहा दोसं ॥८॥ कलहं अ
प्रक्काणं, पेसुत्तं रइ अरइ समा

उत्तं ॥ परपरिवायं माया, मोस
मिच्चत्तसद्धं च ॥ ए ॥ वोसिरिसु
इमाइं सु, स्कमग्ग संसग्ग विग्घ
नूअ्याइं॥ दुग्गइ निबंधणाइं, अ
ठारस पावठाणाइं॥ १० ॥

चत्तारि मंगलं केण चार मंगलिक ठे. तेमां एक
तो अरिहंत, बीजा सिद्ध, त्रीजा साधु, अने चोथो के
वली जगवंते प्ररूप्यो एवो जे धर्म ते मंगलिक ठे॥५॥

चत्तारि लोगुत्तमा केण चार लोकमांहे उत्तम ठे.
एक अरिहंत, बीजा सिद्ध ठे ते लोकमां उत्तम ठे, त्रीजा
साधु ते लोकमां उत्तम ठे, वली चोथो केवलीए प्ररूप्यो
जे धर्म ते लोकमां उत्तम ठे ॥ ६ ॥

चत्तारि सरणं केण चार शरण प्रत्ये अंगिकार
करुं तुं. एक तो श्री अरिहंत शरण प्रत्ये हुं अंगिकार
करुं तुं. बीजुं सिद्ध शरण प्रत्ये हुं अंगिकार करुं तुं, त्री
जुं साधु शरण प्रत्ये हुं अंगिकार करुं तुं, चोथुं केवली
प्ररूप्यो एवो जे धर्म तेना शरण प्रत्ये हुं अंगिकार

करुं तुं ॥ ७ ॥

पाणाइवायमलियं के० पेहेलुं प्राणातिपात, वी
जुं अलिक एटले मृषावाद, त्रीजुं चोरी, चोशुं मैथुन,
पांचमुं डव्यने विषे मूर्छा एटले परिग्रह, ठठो क्रोध,
सातमुं मान, आठमी माया, नवमो लोभ, दशमो प्रे
म (राग), तथा अगिआरमो छेष ॥ ७ ॥

कलहं अप्रस्काणं के० बारमो क्लेश, तेरमो अ
ज्याख्यान (आल देवुं,) चौदसुं पैशुन्य (चामी करवी,)
पंदरमे रतिअरति, सोलमो परपरिवाद, सत्तरमुं माया
मृषा अठारमुं मिथ्यात्व शब्द ॥ ८ ॥

वोसिरिसु इमाइं के० ए प्रत्यह अठार पापस्था
नक जे ठे, ते प्रत्ये रे जीव ! तुं त्याग कर. ते अठार
पापस्थानक केवां ठे ? तो के मोक्ष मार्गने विषे गमन
करता जीवोने विघ्नजून ठे तथा दुर्गतिनां कारणठे। १०
गाथा. ११ थी १७ सुधीना तुटा शब्दना अर्थ.

एगो हं-हुं एकलो
नाथिथ-नथी
अन्नस्स-बीजानो

कस्सइ-कोइनो
अदीणमणसो-अदी
न मन थको

अप्पाणं-आत्माने
अणुसासई-शीखाम
ण आपे

संजुओ-सहित
सेसा-शेष
बाहिरा-बाह्य
संजोग-संयोग
मूला-मूल
जीवेण-जीवे

परंपरा-श्रेणी
तम्हा-ते माटे
मह-मारा
जावज्जिवं-ज्यां सु
धी जीवुं सां सुधी
तत्तं-तत्त्व

गहिअं-ग्रहं
खमिअ-खामीने
खमाविअ-खमावीने
मुज्जह-मारे
खमंत-खमे

एगो हं नत्ति मे कोई, नाह मन्न
स्स कस्स ई ॥ एवं अदीणमण
सो, अप्पाणमणुसासई ॥ ११ ॥ ए
गो मे सासण अप्पा, नाणदंसण
संजुण ॥ सेसा मे बाहिरा जावा,
सव्वे संजोग लक्खणा ॥ १२ ॥ सं
जोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्कपरं
परा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं
तिविहेण वोसिरियं ॥ १३ ॥ अ
रिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसा
हुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नतं तत्तं,

(६१७)

इय सम्मतं मए गहियं ॥ १४ ॥

खमिअ खमाविअ मइ खमिय,

सव्वह जीवनिकाय ॥ सिद्धह सा

ख आलोयणह, मुज्जह वइर न

जाव ॥ १५ ॥ सव्वे जीवा कम्म

वस, चण्डह राज जमंत ॥ ते मे

सव्व खमाविआ, मुज्जवि तेह ख

मंत ॥ १६ ॥ जं जं मणेण वधं,

जं जं वाएण ज्ञासिअं पावं ॥ जं

जं काएण कयं, मिहामि डुक्कं

तस्स ॥ १७ ॥

एगोहं नडि केण हुं एक तुं मारो कोइ नथी, अने
अन्य कोइनो हुं नथी. एम अदीनमनश्चको आत्मा प्र
त्ये शीखामण आपे ॥ ११ ॥

एगो मे सासल के० ज्ञानदर्शने करी सहित एवो
शाश्वतो सदा नित्य एवो रागादिक परजावथी रहित

(६१८)

एकज मारो आत्मा ठे, शेष बाकी रहा जे, इव्य थकी, तन धन कुटुंबादि संयोग मेलाप रूप, अने जाव थकी, विषयकषायादिरूप संयोग मेलाप, एवा जाव जे ठे ते सर्व माहारा स्वरूप थकी बाह्य एटले जूदा ठे ॥१२॥

संजोगमूला जीवेण केण तन, धन कूटुंब ममत्वा दि रूपनो संयोग एटले मेलाप तेहीज मूल कारण ठे जेनुं एवी दुखनी श्रेणी ते जीवे पामी, ते कारण माटे पूर्वोक्त जे संयोग संबंध ठे ते सर्व प्रत्ये त्रिविधे करी हुं वोसिरावुं हुं ॥ १३ ॥

अरिहंतो मह देवो केण अरिहंत अने सिद्ध जग वंत ते महारा देव ठे. ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी सुसाधु मारा गुरु ठे तथा ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी जिनेश्वर देवोये ज्ञांख्युं एवुं जे दयामूल तथा विनयमूल तत्त्व अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपरूप तत्त्व, ते मारो धर्म ठे, जाव जीव सुधी ए प्रकारे सम्यक्त्व माहारे जीवे अंगिकार कीधुं. ॥ १४ ॥

खमिय खमाविय केण खम्या, खमाव्या, मारे विषे

(६१ए)

जीवनिकाय खमजो, सिद्धनी साखे आलोयण करुं तुं,
मारे कोइनी साथे वैरजाव नथी. ॥ १५ ॥

सबे जीवा के० सर्व जीवो कर्म वज्ञ थया थका
चौदे राजलोकमां जमे ठे ते में सर्व खभाव्या अने
तेउ मने खमजो. ॥ १६ ॥

जं जं मणेण के० जे जे (कर्म) मनवने बांध्युं,
जे जे वचनवने पाप बोड्यो, जे जे कायावने कर्युं,
ते ते पापनुं मने मिहामि डुकरुं हजो. ॥ १७ ॥

अथ पोसह पारवानी

गाथाना तुटा शब्दना अर्थ

सागरचंदो-सागरचं	धनो-धन्य छे	वा लायक
द शेट	पडिमा-अभिग्रह	आणंद-आणंद श्रा
कामो-कामदेव	अखंडिआ-अखंडित	वक
चंदवडिसो-चंद्रावतं	जीवीअंते वि-मरणां	कामदेवा-कामदेव
सराजा	त सुधी	पसंसइ-प्रशंसा करेछे
सुदंसणो-सुदर्शन	सलाहणिज्जा-वखाण	दढव्वयं-दढ व्रतवाला

सागरचंदो कामो ॥ चंदवडिसो सु
दंसणो धनो ॥ जेसिं पोसह पदि

(६१०)

मा ॥ अखंमित्रा जीविअंतेवि
॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिजा ॥ सु
लसा आणंद कामदेवा य ॥ जे
सिं पसंसइ जयवं ॥ दढव्यंतं म
हावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधें लीधो
॥ विधें पारिनु, विधि करतां ॥ जे
कांइ अविधिहुन होय ते सविहुं
मन वचन कायाए करी ॥ मिह्ना
मि डुकमं ॥

अर्थ—सागरचंदोकामोके० जीवितनो अंत थाते,
आयुनो विनाश थाते, मरणांत नपसर्ग थाते अके पण
जेनी पोषध प्रतिमा अखंमित रही, संपूर्ण रही, ते
श्रावकने धन्य ठे! ते केवा श्रावको ? सागरचंद अने
कामदेव नामे श्रावक तथा चंडावत्तंस राजा, वली
सुदर्शन शैठ.

धन्ना सलाहणिजा के० एक सुलसा श्राविका,

बीजा आणंद श्रावक, त्रीजा कामदेव श्रावक, ए त्रणे
धन्य ठे श्लाघनीय ठे, एटले वखाण करवा योग्य
ठे. ते प्रत्यरूपणे जेना दृढव्रत प्रत्ये जगवान् श्री मा
हावीर स्वामी पोते श्रीमुखे प्रशंसे ठे, वखाण करे
ठे, माटे ते धन्य कृतपुण्य जाणवा ॥ १ ॥

॥ पोसहना पञ्चस्काणाना तुटा शब्दना अर्थ ॥

पोसहं-पोषध	सव्वओ-सर्वथी	अहो-दिवस
देसओ-देशथी	अव्वावार-अव्यापार	रत्तं-रात

करेमि जंते पोसहं, आहार पोस
हं देसज्ज, सव्वज्ज, ॥ सरीर सक्कार
पोसहं सव्वज्ज ॥ बंज्जचेर पोसहं स
व्वज्ज ॥ अद्वावार पोसहं सव्वज्ज ॥
चज्जविहे पोसहं ठामि ॥ जावदि व
सं अहोरत्तं पज्जुवासामि इविहं
तिविहेणं मणेणं वायाए काए
णं न करेमि नकारवेमि तस्स जं

ते पम्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति॥

अर्थः—करेमि जन्ते केण हे जगवन् ! अगिआ
मा पोषधव्रतने अथवा जे धर्मनी पुष्टि करे तेने पोष
ध कहीए, ते पोषध प्रत्ये हुं करुंहुं, ते चार प्रकारे ठे
प्रथम अशनादिक आहार निषेध पोसह, ते वली वे
प्रकारे ठे, एक देश अकी निषेध ते त्रिविध आहार
त्यागरूप त्रिविहार तथा विगय त्याग, आयंवल, ए
कासण पञ्चस्काणथी करवो ते देशअकी आहार त्याग
पोसह कहीए; अने बीजो सर्व अकी चारे आहारनो
त्याग करवो ते सर्व अकी आहार त्याग पोसह कही
ए. प्रथम आहार त्याग पोसहना वे जेद कहा; हवे
बीजो शरीर संबंधि नाहावुं, पीठी चोलवी, विलेपन,
वस्त्राञ्जरणादिक शोचानो नियम तथा नख, केश, रो
मनुं समारवुं इत्यादि शरीरसत्कार निषेध नामे ए बी
जो पोसह, ते सर्व अकी जाणवो. बीजो ब्रह्म
चर्य पाले, सर्व प्रकारे स्त्री सेवन न करे, चोथो अ

(६१३)

व्यापारनी पुष्टिरूप ते सर्वथी जाणवो, एटले खेती, सेवा, वाणिज्य, पशुपालन प्रमुखना जे वेपार तेनो सर्वथा निषेध करे, ए चार प्रकारना पोषधने विषे हुं रुहुं, अंगिकार करुं. ज्यां सुधी दिवस अने रात्रि मली आठ पहोर पोषध प्रत्ये, अथवा ज्यां सुधी दिवस प्रत्ये क्रमण ठे त्यां सुधी चार पोहोर पोषध व्रत प्रत्ये, अथवा ज्यां सुधी रात्री प्रत्ये क्रमण ठे त्यां सुधी चार पोहोर पोषधव्रत प्रत्ये, हुं पर्युपासु, सेवुं, त्यां सुधी. अने शोकोक दिवस होय ते वारे रात्रिपोसह जो लीये तो " जाव दिवसं रत्तं पज्जुवासासि " एवो पाठ कहे, ज्यां सुधी शोको दिवस होय, त्यांथी लइने आखी रात्रि सुधि पोसह निरतिचार पावुं, डविध, त्रिविधे करी इत्यादिनो अर्थ सुगम ठे ॥

॥ अथ पम्ब्लेहण करवानो विधि ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावहि पम्बिकम्मी स्थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहेवुं पठी त स्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो

कानुस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स कही उत्ते पगे वेसी
 मुहपत्ती, कटासणुं, चवलो, उत्तरासण, धोतीनुं, कंदो
 रो आदि पन्निहेहवां, पढी काजो काढी जीव कलेवर स
 चित्त आदे जोवुं, पढी काजो कहामनार आपनाजी
 सन्मुख उत्तो रही इरियावहि पन्निक्कमे, पढी काजो
 परठववा जग्या शोधी त्रण वार अणुजाणह जस्स
 गो कही काजो परठवे. पढी त्रण वार वोसिरे कहे
 ॥ इति पन्निहेहण विधि.

॥ अथ देववांदवानो विधि ॥

प्रथम इरियावहि पन्निक्कमवाथी मांणीने यावत्
 लोगस्स कही पढी उत्तरासण नांखीने चैत्यवंदन क
 री नमुहुणं कही. आज्ञवमखंमा सुधी अर्द्ध जयवी
 अराय कहे वली बीजुं चैत्यवंदन करी नमुहुणं कही
 जावत् चार ओयो कहीये वली नमुहुणं कही जावत्
 वोजी चार ओयो कहीए त्यां सुधी वधुं कहेवुं. पढी
 नमुहुणं तथा वे जावंति कही उवसग्गहरं अथवा स्त
 वन कही अर्द्ध जयवीअराय आज्ञवमखंमा सुधी ॥

(६१५)

ही पत्नी चैत्यवन्दन कही नसुबुलं कही संपूर्ण जयवी
अराय कहेवा. प्रजाते देव वांदवा तेमां मन्ह जिणाणं
नी सज्जाय कहेवी अने मध्यान्हे तथा सांजे देव वां
दे तेमां सज्जाय न कहेवी ॥ इति.

॥ अथ मन्ह जिणाणं ना बुटा शब्दना अर्थ ॥

मन्ह-मानवी

आणं-आज्ञा

मिच्छं-मिथ्यात्वनो

रिहर-त्याग करो

सम्मत्तं-सम्यक्त्व

आवसयंभि-आवश्य

कसां

उज्जुतो-उच्चमवंत

इदिवसं-प्रतिदिवस

वेसु-पर्वदिवसोमां

शो-भावना

सज्जाय-भणवुं गणवुं

परोवयारो-परोपकार

जयणा-जतना

पूआ-पूजा

थुणिणं-स्तुति करवी

साहम्मिआण-साध

मिओनुं

वत्सलं-वात्सल्य

ववहारस्त-व्यवहारनी

सुद्धि-शुद्धि

रहजुत्ता-रथयात्रा

तित्थजुत्ता-तीर्थ यात्रा

उवसम-क्षमा उपशम

संवर-आश्रवने रो

कवुं

भासासमिइ-भाषास

मिति

धम्मिअ-धार्मिक

संसग्गो-सोवत

करण-इंद्रिओ

दमो-दमन करवुं

चरिण-चारित्रता

परिणामो-परिणाम

संघोवरि-संघनी उपर

वहुमाणो-वहुगान

लिहणं-लखवुं लखा

वडुं

सद्वण-श्रावकना

किच्च-कृत

वएसेणं-उपदेशथी

मन्ह जिणाणं आणं, मिच्छं परिह

रह धर सम्मत्तं ॥ ठविह आव
सयंमि, उज्जुतो होइ पइदिवसं
॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सी
लं तवो अ ज्ञावोअ ॥ सव्वाय न
मुक्काशे, परोवयारो अ जयणा
अ ॥ २ ॥ जिण पूअ्या जिणथु
णिणं, गुरुथुअ साहम्मिआण
वच्चलं ॥ ववहारस य सुद्धि, रह
जुत्ता तिब्जुत्ता य ॥ ३ ॥ उवस
म विवेकसंवर, ज्ञासा समिई ठ
जीवकरुणा य ॥ धम्मिअ जण
संसग्गो, करणदमो चरिण परि
णामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहुमाणो,
पुण्यलिहणं पन्नवणा तिठे ॥ स
ढ्ढाण किच्च मेअं, निच्चं सुगुरु
वएसेणं ॥ ५ ॥ इति

(६१७)

अर्थः—मन्ह जिणाणं आपणं केण श्री जिनेश्वर
नी आज्ञा मानवी तथा मिथ्यात्वनो त्याग करवो,
अने सन्न्यक्त्वने धारण करवुं, सामायिकादिक ढ. प्र
कारना आवश्यकने विषे प्रतिदिवस उद्यमवंत होवुं ?
पव्वेसु पोसहवयं के० आठम चौदश वीगेरे पर्वो
ना दिवसोमां पौषधव्रत करवुं अने सुपात्रने दान देवुं,
शील पाळवुं, तप करवुं, वली ज्ञावनाजु ज्ञाववी, व
ली वांचना पृच्छनादि पांच प्रकारनो स्वाध्याय करवो,
नमस्कारनो पाठ करवो, परोपकार करवो, वली ज
ननाए प्रवर्त्तवुं ॥ १ ॥

जिणपूआ जिण शुणिसं केण श्री जिनेश्वरनी
पूजा जक्ति करवी, श्री जिनेश्वरनी स्तुति करवी, गु
रुनी स्तुति करवी अने साधर्मिंतनी कत्सलता करवी,
अने व्यवहारनी शुद्धिने रथ यात्रा अने तीर्थ यात्रा स
हित करवी ॥ ३ ॥

उवसम विवेक संवर केण क्कमा धारण करवी,
तथा विवेक अने संवर ज्ञाव राखवो, ज्ञापा समिति

अने पृथिव्यादिक ठ प्रकारना जीव उपर दया राख
वी, रक्षा करवी; तथा धार्मिक जनोनी साथे संसर्ग
करवो, तथा पांच इंद्रिजने दमन करवुं अने चारित्र
ना परिणाम राखवा ॥ ४ ॥

संघोवरि बहुमाणो केण श्री संधनी उपर बहुमान
राखवुं, तथा पुस्तक लखवां लखाववां अने तीर्थमां
प्रज्ञावना करवी; श्रावकनां नित्य करवा योग्य कार्य
ए ठे, ते सुगुरुना उपदेशे करी जाणी लेवां ॥५॥ इति
पोसहमां चोवीस मांमलां करवां तेनां नाम.

॥ प्रथम संथारा पासेनी जग्याए ॥

१ आघामे^१ आसन्ने^२, उच्चारे^३ पासवणे^४, अणहियासे^५;
२ आघामे आसन्ने, पासवणे, अणहियासे; ३ आघामे
मज्जे^६, उच्चारे पासवणे, अणहियासे; ४ आघामे मज्जे, पा
सवणे, अणहियासे; ५ आघामे दूरे^७, उच्चारे पासवणे,
अणहियासे; ६ आघामे दूरे, पासवणे, अणहियासे.

१ रोगादिक घाड कारणे. २ संथारानी कल्पेली जमीन न
जाकि. ३ थंडिल, झाडो. ४ माहुं के पेसाव. ५ न सहन थद शक
तेवा कारणे. ६ संथारानी जमीनना मध्य भागमां. ७ संथारानी जमी

(६१९)

हवे उपाश्रयना वारणांना माहिनी तरफना.

१ आघामे आसने, उच्चारे पासवणे, अहियासे; २ आघामे आसने, पासवणे, अहियासे; ३ आघामे मजे, उच्चारे पासवणे, अहियासे; ४ आघामे मजे, पासवणे, अहियासे; ५ आघामे दूरे, उच्चारे पासवणे, अहियासे; ६ आघामे दूरे, पासवणे, अहियासे.

हवे उपाश्रयनां वारणां बाहिर
नजीक रहीने करे.

१ अणाघामे आसने, उच्चारे पासवणे, अणहिया
यासे; २ अणाघामे आसने, पासवणे, अणहियासे; ३ अणा
घामे मजे, उच्चारे पासवणे, अणहियासे; ४ अणाघामे मजे,
पासवणे, अणहियासे; ५ अणाघामे दूरे, उच्चारे पासवणे,
अणहियासे; ६ अणाघामे दूरे, पासवणे, अणहियासे.

हवे उपाश्रयथी सो हाथ आशरे दूर
रहेते करवां.

१ अणाघामे आसने, उच्चारे पासवणे, अहियासे;

१ सहन थइ शके तेवा कारणे.

३ अणाघामे आसने, पासवणे, अहियासे; ३ अणाघामे मजे, उच्चारे पासवणे, अहियासे; ४ अणाघामे मजे, पासवणे, अहियासे; ५ अणाघामे दूरे, उच्चारे पासवणे, अहियासे; ६ अणाघामे दूरे, पावसणे, अहियासे. ॥ इति ॥

पोषधविधि.

पोसह करवाने इच्छनारे प्रजातमां वहेला उठी ने राइपनिक्कमणुं जरुर करवुं जोइए. विधिना जाण आवको तो पनिलेहण अने देववंदन पण ते साथेज करेठे. त्यार पठी जिनमंदिरनी जोगवाइ होय तो जिने श्वरनी पूजा करी पठी उपाश्रये आवी, गुरु समक पोसह उचरवौ.

प्रथम खमासमण देइ इरियावहि पनिकमी प्र गट लोगस्स केहवो, पठी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् पोसह मुहपति पनिलेहुं ? एम क ही गुरु आदेश आपे एटले इच्छं कहीने मुहपति पनिलेहवी. पठी खमाण इच्छाण पोसह संदिसाहु ? इच्छं कही खमा० इच्छाण पोसह ठानं ? पठी इच्छं कही वे हाथ जोनी नवकार गणी इच्छकारी जगवन् पसाय क

री पोसह दंरुक उचरावोजी; एम कही, करेमि जंते
 पोसहंण ए पाठ कहेवो. पढी खमाण देइ इच्छाण सामा
 यक मुहपत्ति पन्निहें ? इच्छं. कही मुहपत्ति पन्निहें
 पढी खमाण देइ इच्छा० सामायक संदिसाहु ? इच्छं क
 ही, पढी खमाण देइ इच्छा० सामायक ठाळं ? इच्छं कही
 वे हाथ जोनी नवकार गणी, इच्छकारी जगवन् पस
 य करी सामायक दंरुक उचरावोजी; त्यां गुरु करेमि
 जंते समाइयंनो पाठ कहे. गुरु न होय तो वन्निह कहे.
 तेमां जाव नियमंने ठेकाणे जाव पोसहं कहेवुं. पढी
 खमाण इच्छाण बेसणे संदिसाहुं ? इच्छं. खमाण इच्छाण
 बेसणे ठाळं ? इच्छं. पढी खमाण इच्छाण सज्जाय संदिसा
 हुं ? इच्छं. खमाण इच्छाण सज्जाय करुं ? इच्छं, कही त्रण
 नवकार गणावा. पढी खमाण इच्छाण बहुवेळ संदिसाहुं ?
 इच्छं. खमाण इच्छा० बहुवेळ करणुं. इच्छं. खमाण इच्छाण
 पन्निहण करुं ? इच्छं. कहीने मुहपत्ति वगेरे पांच वा
 नां पन्निहवां (मुहपत्ति ५० बोलथी, चरवलो १० बो
 लथी, कटासणुं पचीस बोलथी, सुत्रनो कंदोरो १०
 बोलथी अने धोतीजं ३५ बोलथी पन्निहवुं. ते बोल
 मुहपत्तिना पचास बोल जे आगळ लख्यां ठे, ते ले

वा अने जे उठा कहेवाना होय ते प्रथमश्री ग्रहण कर
 वा). पढी खमासमण देइ इच्छकारी जगवन् पसाय
 करी पन्डितेहणा पन्डितेहावोजी एम कही आचार्यजी
 पन्डितेहवा. आचार्यजी न होय तो वन्डिलनुं एक अण
 पन्डितेहुं वस्त्र (उत्तरासन) पन्डितेहेवुं. पढी खमाण
 इच्छाण उपधि मुहपत्ति पन्डितेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति
 पन्डितेहवी. पढी खमाण इच्छाण उपधि संदिसाहुं ? इच्छं
 कही, खमाण इच्छाण उपधि पन्डितेहुं ? इच्छं कही, वाकी
 रहेलां उत्तरासन, मात्रीयुं, कामली वगेरे पचीस वो
 लथी पन्डितेहवां. पढी एक जणे मंसासण याची तेने
 पन्डितेही इरियावहि पन्डिक्रमी काजो लेवो. काजोत
 पासिने स्थापनाचार्य सन्मुख उन्नरुक बेसीने इरिया
 वहि पन्डिक्रमवा पढी काजो यथा योग्य स्थानके अ
 णुजाणह जस्तगो कहीने परठववो. परठव्या पढीत्र
 ण वार वोसिरे कहेवुं. कदापि कोइथी राइ पन्डिक्रमण
 न वन्थुं होय तो देव वांध्या अगाउ प्रतिक्रमण करवुं.
 तेसां प्रथम इरियावहि पन्डिक्रमीने खमासमण देइ
 आदेश मागी कुसुमिण डसुमिणनो काउस्तग कर

वो, अने सात लाख अठार पाप स्थानकने बदले इच्छा
गमणागमणे आलोउ ? इच्छं कही गमणागमणे कहेवा.

गमणा गमणे.

इर्यासमिति, ज्ञाप्तासमिति, एषणासमिति, आ
दान जंरुमत्त निखेवणा समिति, पारिष्ठापनिका समि
ति, मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए पांच समिति
त्रण गुप्ति, ए आठ प्रवचन माता श्रावकतणे धर्मे सामा
यक पोसह लीधे रुमीपेरे पाली नहीं खंमन विराध
ना अइ होय, ते सविहुं मन वचन कायाए करो मिठ्ठा
मि डुकमं.

पठी ठेवटे जगवानादि वंदन कर्या अगान ख
माण इच्छाण बहुवेल संदिसाहुं ? इच्छं. कही खमाण इ
च्छाण बहुवेल करशुं इच्छं. कही जगवानादि वांदीने अ
ह्वाइजेसु कहेवुं. ए रीते पम्किमण करवुं. पठी देववं
दन करी सज्जायनो आदेश मागी उज्जमक वेसी म
न्हजिणाणंणी सज्जाय कहेवी. सांजे तथा वपोरे न
कहेवी.

पढी ठ घनी दिवस चमया पढी पोरसि
 ववी तेनी विधि. प्रथम खमाण इच्छाण बहु पा
 पोरसि ? कही खमाण देइ इरियावहि पन्तिकमवा
 ढी खमाण देइ इच्छाण पन्तिकेहण करुं ? इच्छं कही मु
 हपत्ति पन्तिकेहवी. पढी जेणे गुरु समह राइ पन्तिक
 ण न कर्युं होय तेणे राइमुहपत्ति आ प्रमाणे पन्तिकेहवी.

खमाण देइ इरियावहि पन्तिकमी खमाण देइ इ
 च्छाण राइमुहपत्ति पन्तिकेहूं ? इच्छं कही मुहपत्ति पन्तिके
 हवी. पढी वांदणां वे देवां. पढी इच्छाण राइयं आलोमं ?
 इच्छं कही. तेनो पाठ कहेवा पढी सब्वस्सवि राइयं
 कही पन्त्यास होयतो वे वांदणां देवां, पन्त्यास न होय
 तो एक खमासभणुंज देवुं पढी इच्छकार सुह राइ
 कहीने अणुठिठहं खमावळुं. पढी वे वांदणां देवां. पढी
 इच्छकारी जगवन् पसाय करी पच्चस्काणनो आदेश
 देजो जी. एम कहीने पच्चस्काण लेवुं. पढी सर्व मुनि
 ने वे खमासभण तथा अणुठिठहंना पाठ सहित वंदन
 करवुं. पढी कुंमी पुंजणी तथा अचित्त जलनी याच
 ना करवी. पढी जिनमंदिरे दरशन करवा यथाविधि

होय तो मध्यानना देव वांद्या अ
काजो लेइ देव वांदवा, पठी चत्रवि
होय तेणे नीचे प्रमाणे पञ्चस्का

खमा० देइ इरियावहि पदिक्रमी, जगचिंतामणी
चैत्यवंदन जयत्रीयराय सुधी कहेवुं. स्तवन बुवलग्न
हनुं कहेवुं. पठी खमा० देइ इच्छाण सज्जाय करुं कही
नवकार गणी अन्ह जिणासंनि सज्जाय केहेवी. पठी
सामाजिक नवपत्ति पदिलेहुं कही सुहपत्ति पदिलेहवी.

३ ॥ कर० ॥ सा. पञ्चस्काण पारुं? यथाशक्ति, खमा० देइ
यिवार जाल जे तहत्ति कही जमणो हाथ नीचे
वकर्म निवारी (पा. ३१४ मां लख्या प्रमाणे) पञ्च
जीवने ली. नवकार गराचो पठी पाणी पीवुं
ए. एकासणुं करनारे जतना पूर्वक घेर
गल कही पूंजी कटासणुं नांखी स्थापना
शरयावही पदिक्रमी खमा० देइ गमणागमणे
गाववा. पठी काजो लेइ पाटलो, आली वगेरे ज्ञा
जन तथा मुख पुंजीने यथा संज्ञवे अतिथि संविज्ञा

यिवार जाल जे तहत्ति कही जमणो हाथ नीचे
वकर्म निवारी (पा. ३१४ मां लख्या प्रमाणे) पञ्च
जीवने ली. नवकार गराचो पठी पाणी पीवुं
ए. एकासणुं करनारे जतना पूर्वक घेर
गल कही पूंजी कटासणुं नांखी स्थापना
शरयावही पदिक्रमी खमा० देइ गमणागमणे
गाववा. पठी काजो लेइ पाटलो, आली वगेरे ज्ञा
जन तथा मुख पुंजीने यथा संज्ञवे अतिथि संविज्ञा

ग फरसीने निश्चल आसने, मौनपणे आहार करवो. लीधेली वस्तुमांथ्री बीलकुल पाबुं मुकी शकाय नहीं.

जेने घेर जवुं न होय ते पोसहशालाए पूर्वप्रै रित पुत्रादिके आणेलो आहार करे. ते प्रथम जग्या प्रमार्जीने कटासणापर बेसी ज्ञाजन, मुख, वगेरे प्र मार्जी, स्थापना स्थापीने इरियावहि पम्किमे अने निश्चल आसने मौनपणे आहार करे. तथा प्रकारना कारण विना स्वादिष्ट मोदक अने लविंगादिक तांबुल ग्रहण न करे. पढी मुख शुद्ध करीने दिवसचरिम तिविहारनुं पञ्चस्काण^१ करे. त्यार पढी घेर जनार पोषहशालाए आवीने अने पोषधशाला वाला आहार कर्यानी जग्याए अथवा मूल स्थानके इरियावहि पम्किमीने जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय पर्यंत करे.

पोसहमां मध्यानना देव वांच्या अगाउ पञ्चस्काण पारी शकाय नहीं.

पढी बीजी वारनी पडिलेहण त्रीजा पहोर पढी मुनिराजे स्थापनाचार्यनी^२ पडिलेहणा करी होय

१ पोसह विना एकासणुं वीगेरे करनारे पण ते करीने उठ्या पहेलां दिवस चरिम तिविहारनुं पञ्चस्काण करवुं जोइय

२ स्थापनाचार्यनी पडिलेहणा कर्या अगाउ पडिलेहण न थाय.

तेनी समझ करवी, तेनी विधि आ प्रमाणे.

प्रथम खमाण देइ इच्छाण बहु पन्निपुत्रा पोरिसि
कही खमाण इच्छाण इरियावहि पन्निक्कमवा पठी ख
माण इच्छाण गमणागमणे आलोउं? इच्छं कही गमणा
गमणे आलोववा पठी खमाण इच्छाण पन्निहेहण करुं?
इच्छं कही, खमा० इच्छाण पोषध शाला प्रमार्जुं? कही
इच्छं कही, उपवास वालाए मुहपत्ति, कटासणुं, ने चरव
लो पन्निहेहवां, अने जमनारे कंदोरो, धोतीउं सुधां
पांच वानां पन्निहेहवां पठी खमाण इच्छकारी जगवान
पसाय करी पन्निहेहणा पन्निहेहावोजी. एम कहीने
वनीलनुं एक वस्त्र पन्निहेहवुं. पठी खमाण इच्छा० उ
पधिमुहपत्ति पन्निहेहं ? इच्छं कही मुहपत्ति पन्निहेहीने
खमाण इच्छाण सज्जाय करुं ? इच्छं कही नवकार गणीने
मन्ह जिणाणंनी सज्जाय उन्नरुक वेसीने कहेवी. पठी
खाधुं होय ते वांदणां देइने पाणहारनुं पञ्चखाण क
रे अने तिबिहार उपवास वाला खमासमण देइ इच्छ
कारी जगवन् पसाय करी पञ्चखाणनो आदेश देजो

जी कही पाणहारनुं पञ्चस्काणं करे (चञ्चविहार
 नपवास वालाने पञ्चस्काण करवानुं नथी, पण प्रजाते
 तिविहार नपवासनुं पञ्चस्काण लीधुं होय ने पाणी न
 पीधुं होय तो आ वखते चञ्चविहार नपवासनुं पञ्चस्का
 ण करे). पठी खमा० इच्छा० नपधि संदिसाहु? इच्छं,
 खमा० इच्छा० नपधि पमिलेहुं? इच्छं कही प्रथम पमि
 लेहतां बाकी रहेलां वस्त्रोनी पमिलेहणा करे तेमां
 रात्री पोसह करनार प्रथम कामली पमिलेहे. पमिले
 हेण थइ रहे एटले सर्व देव वांढे (विधि पूर्ववत्).
 पठी अवसरे देवसि अथवा पाहिकादिं प्रतिक्रमण क
 रे. तेमां प्रथम मात्र इरियावहि पमिक्रमी खमा० दे
 ने चैत्यवंदन करे. सात लाख अठार पापस्थानकने व
 दले गमणा गमणे आलोवे. करेमिजंतेमां सघले ठेका
 णे जाव नियमं ने ठेकाणे जाव पोसहं कहे. प्रतिक्रमण
 करी रह्या पठी दिवसना पोसहवाला नीचे प्रमाणे को.

१ जो पाणी चांपरवानी जरूर जेहुं होय तो शुद्धि सधियंनुं
 पञ्चस्काणं करे अने पाडिलेहण कर्या पछी मुठी वाली अण नय
 कार गणी पाणी चापरे ते पाणहारनुं पञ्चस्काण पाडिक्रमणा व
 ते करे; पण देव वांढ्या पछी पाणी चापरी शकाय नहीं.

(६३ए)

खमाण देइ इरियावही पन्किमी चउकसायथ्री
जय वीयराय सुधी कहीने प्रथम याचेलीं मंदासण
कुंसी वगेरे गृहस्थने (आ तमने जले ठे एम) जलावी
कुंसी वगेरे गृहस्थने (आ तमने जले ठे एम) जलावी
देवां. पढी खमाण इच्छाण पोसह पारुं, यथा शक्ति.
खमाणइच्छाण पोसह पार्यो, तहत्ति. कही नवकार गणी
चरवला पर जमणो हाथ थापी सागरचंदो कहे.

पढी खमा० इच्छा० सुहपत्ति पन्किलेहुं ? इच्छं
कही सुहपत्ति पन्किलेही सामायक पारवानी विधि प्र
माणे सामायक पारे.

हवे सवारे जेणे आठ पहोरनोज पोसह लीधो
होय तेणे सांजना देव वांध्या पढी, कुंरुल न लीधां
होय तो लेइने मंदासण तथा चुनो नांखेलुं अचित्त पा
णी जाचीने पढी खमा० इरियावही पन्किमीने ख
मा० देइ इच्छा० स्थंमिल पन्किलेहुं ? इच्छं कही चोवीस
मांरुलां करे. पढी इरियावही पन्किमीने पन्कि
क्रमण करे.

मात्र रात्रीना चार पहोरनोज पोसह करवो होय तेणे पन्डिलेहण देववंदन वगेरे विधि दिवस उतांक रवानी होवाथी वहेला आववुं जोइए, अने ते दिवसे उठामां उठो एकासणानो तप करेलो होवो जोइए तेणे करवानी विधि आ प्रमाणे.

प्रथम खमाण देइ इरियावहि पन्डिकमवाथी मां र्नीने यावत् बहुवेळ करशुं पर्यंत सवारना पोसह लेवानी विधि प्रमाणे विधि करे अने तयार पठी सांजनी पन्डिलेहणमां खमाण देइ पन्डिलेहण करुं ? आदेश मागवानो ठे त्यांथी उपधि पन्डिलेहुं ? नो आदेश मागवा पर्यंत ते प्रमाणे विधि करे. ए प्रमाणे कर्षा पठी देव वांढे, मांरुलां करे, अने पन्डिकमण करे.

जेणे सवारे चार पहोरनो पोसह उचर्यो ठे ते नोज विचार आठ पहोरनो पोसह लेवानो धाय तो तेणे सांजनी पन्डिलेहणा करती वखते इरियावही पन्डिकमी, खमासमण देइ गमणागमणे आलोवीने पठी इरियावही पन्डिकमवाथी मांरुनीने बहुवेळ करशुं

ए आदेश पर्यंत सवारना पोसह लेवानी विधि प्रमा
णे सर्व विधि करवी तेमां “ सज्जाय करुं ” एने बदले
“ सज्जायमां बुं ” कहेवुं अने त्रण नवकारने बदले एक
नवकार गणवो. त्यार पढी सांजनी पम्बिलेहणमां ख
मा० देइ पम्बिलेहण करुं ? ए आदेश मागवानो ठे त्यां
थी सघली विधि पूर्वक पम्बिलेहण करे, देव वांदे, मां
मलां करे, अने प्रतिक्रमण पूर्ववत् करे.

इवे रात्री पोसह वाळा पहोर रात्री सुधी सज्जा
य ध्यान करे, पढी खमा० इच्छा० बहु पम्बिपुत्रा पोरि
सि ! कही खमा० इरियावहि पम्बिक्रमे, पढी खमा०
इच्छा० बहु पम्बिपुत्रा पोरिसि राइय संथारए ठां ?
(ठाइशुं) एम कहीने चउकसायनुं चैत्यवंदन जय
वीयराय पर्यंत कहे; पढी खमा० इच्छा० संथारा विधि
त्रणवा मुहपत्ति पम्बिलेहुं ? इहं कही मुहपत्ति पम्बि
लेहीने संथारा पोरिसीनो पाठ कहे.

संथारा पोरिसि कह्या पढी सज्जाय ध्यान करे,
अने निंझापीमित थाय त्यारे मात्रु वगेरेनी बाधा टा
लीने दिवसे पम्बिलेहेली जग्याए संथारो करे. तेमां प्र

अम जमीन पन्डितेहीने कामली पाथरे तेनी उपर कटालाणुं पाथरीने एकवसो जुठाम पाथरे, मुहपत्ति के हेने जरावे, चरवलो परुखे मुके अने मातरीयुं पेहेरी ने नावे परुखे हाथनुं लुत्तीकुं करीने सुए. रात्रीए चा लवुं परे तो मंसासण वसे पन्डितेहतां चालवुं.

पाठली रात्रे जागीने नवकार संजारी जावना जावी मात्रानी बाधा टाली आवे, पढी इरियावही पन्डिकमी कुसुमिण डुसुमिणानो कानुस्सग करी राइ पन्डिकमणुं करे; तयार पढी स्थापनाचार्य पन्डितेहा पढी तेमनी सन्मुख पन्डितेहण करे ते आ प्रमाणे:-

इरियावही पन्डिकमी खमा० देइ इच्छा० पन्डिते हण करुं? इच्छं कही पूर्वोक्त पांच वानां पन्डितेहे, पढी खमा० देइ इच्छकारी० पन्डितेहणा पन्डितेहावोजी क ही वनीलनुं एक वस्त्र पन्डितेहे पढी खमा० देइ इच्छा० उपधि मुहपत्ति पन्डितेहु? इच्छं, कही मुहपत्ति पन्डितेही

१ अभातमां पोसह लीधा पछी राइ पन्डिकमणामां जे फेरफा र करवानुं लखेलुं छे ते प्रमाणे करवुं.

(६४३)

खमाण इच्छाण उपधि संदिसाहु ? इच्छं. कही खमाण इ
च्छा० उपधि पन्निहेहु ? इच्छं, कही बाकीनां सर्व वस्त्र प
न्निहेहवां. पढी इरियावही पन्निक्कमी काजोले (पूर्व प्र
माणे); पढी देव वांदी सज्जाय कही याचेली वस्तुज
गृहस्थने ज्ञलावे. पढी इरिया वही पन्निक्कमी पोसह
पारवानी विधि प्रमाणे पोसह? पारे.

स्थंमिल जवानी विधि.

पोसहमां कदी स्थंमिल जवुं पढे तो मातरियुं

पेहेरी कालनो वखत होय तो माथे कटासणुं नांखी

कामली उढी मुहपत्ति कहेमे राखी चरवलो काखमां

राखी लोटादि नानुं पात्र लइने जाय, त्यां निर्जीव

जग्या जोइ बाधा टाले. उठती वखते त्रण वार वोसिरे

रहे. पढी पोषधशालाए हाथ पग धोइ वस्त्र बदली

स्थापनाजी पासे इरियावही पन्निक्कमे, पढी खमाण

इच्छाण गमणागमणे आलोचं ? इच्छं कही गमणागमणे

आलोववा. जतां आवस्सही ने आवतां निस्सीहि केहवी.

१ प्रथम दिवसना चार पहोरनो पोसह पारवानी विधिमां च

उक्कस्सायनुं चैत्यवंदन जयवीरराय पर्यंत करवानुं लखेलुं छे ते

आठ पहोर वालाने करवानुं नथी.

(६४४)

मांथे कामली नांखवा संबंधी काल.

असाम शुदी १५ थी, कारतक शुदी १४ सुधी
सवारे ने सांजे ठ ठ घनी, कारतक शुदी १५ थी फाग
ण शुदी १४ सुधी बंने टंक चार घनी. फागण शुदी
१५ थी असाम शुदी १४ सुधी बंने वखत बवे घनी.

अचित्त पाणीनो काल.

असाम शुदी १५ थी कारतक शुदी १४ सुधी
चुलेशी उत्तर्या पढी त्रण पहोरनो, कारतक शुदी १५
थी फागण शुदी १४ सुधी चार पहोरनो, फागण शु
दी १५ थी. असाम शुदी १४ सुधी पांच पहोरनो.

आ प्रमाणे काल उपरांत रहेलुं पाणी पावुं स
चित्त आय ठे. पण पावुं काल पुर्ण थया अगाउ ते
मां कलीचुनो नांखवाथी २४ पहोर सुधी अचित्त रदे
पण जो चुनो नांखवो चुली जाय तो उपवासनी
आलोयण आवे.

(६४५)

परचुराण समजुती.

वखत मोमो थइ जवाना नयधी पोतानी मेले
एकला पोसह उचरी ले तो फरीने तेमणे गुरु समक
पोसह उचरवो. तेमां उपधी पफिलहुं? पर्यंत वधा
आदेश मागवा (आ विधि राइ मुहपत्ति पफिलेह्या अ
गाउ करवी.).

पफिलेहण करनारे उन्नरुक बेसी मौनपणे पफि
लेहणा करवी. जीव जंतु बराबर तपासवो अने उत्तरा
सण पेहेरवुं नहीं.

काजो लेनारने एक आंबिल तपनुं विशेष फल
मले, माटे काजो उपयोग पूर्वक बराबर लेवो.

पोसहमां १८ दोष, पांच अतिचार तथा सामा
यकना बत्रीस दोष टालवानो खप करवो.

पोसहना १८ दोष.

- १ पोसहमां व्रती विनाना बीजा श्रावकनुं आणेलुं
- पाणी न पीवुं.
- २ पोसह निमित्ते सरस आहार लेवो नहीं.

- ३ उत्तरवारणने दिवसे विविध प्रकारनी आहारनी सामग्री मेलववी नहीं.
- ४ पोसहमां अथवा पोसह निमित्ते विष्णुषा (शो जा) करवी नहीं.
- ५ पोसह निमित्ते वस्त्र धोवराववां नहीं.
- ६ पोसह निमित्ते आञ्जुषण घमाववां नहीं, अने पोसहमां आञ्जुषणो पहेरवां नहीं.
- ७ पोसह निमित्ते वस्त्र रंगाववां नहीं.
- ८ पोसहमां शरीर उपरथी मेल नुतारवो नहीं.
- ९ पोसहमां अकाले शयन करवुं नहीं, उंघवुं नहीं, रात्रीने बीजे पहोरे संथारा पोरसी जणा वीने निज्ञ लेवी.
- १० पोसहमां सारी के नठारी स्त्री संवंधी कथा करवी नहीं.
- ११ पोसहमां आहारने सारो नठारो कहेवो नहीं.
- १२ पोसहमां सारी या नठारी राज कथा के युद्ध कथा करवी नहीं.

(६४७)

१३ पोसहमां देश कथा करवी नहीं.

१४ पोसहमां पूंज्या पम्हिलेह्या विना लघुनिति व
नीनिति परठववी नहीं.

१५ पोसहमां कोइनी निंदा करवी नहीं.

१६ पोसहमां (वगर पोसाती) माता, पिता, पु
त्र, ज्ञाइ, स्त्री वगरे संबंधीउ साथे वार्त्तालाप
करवो नहीं.

१७ पोसहमां चोर संबंधी वार्त्ता करवी नहीं.

१८ पोसहमां स्त्रीनां अंगोपांग नीरखीने जोवां नहीं.

श्री ज्ञान पंचमी स्तुतिना ठुटा शब्दना अर्थ.

प्राज्य-मोटो

चंचव-दीपतुं

पंचाक्ष-पांच इंद्रियो

द्विरद-हस्ती, हाथी.

मदाभिदा-मदभेदवे

करी

पंचवक्र-सिंह

पंच देह्या-पांच श

रीरवाला

प्रास्त-प्रकर्ष करी

टालेला

प्रपंच:-विस्तार

सत्तपसि-सारा तपमां

वितनुतां-विस्तारो

पंचम ज्ञानवान्-केव

ल ज्ञान वाला

संप्रीणन्-खुशी क

रतो

सचकोरान्-उत्तम

चकोरने

तिलकसमः-तिलक

समान

कौशिक-धूड

पुण्याब्धि-पुण्यनो

समुद्र

प्रीतिदायी-प्रीतिने

देनार

(६४८)

सितरुचिः-चंद्रमा
स्वीय-पोताना
गोभिः-किरण वडे
तमांसि-अंधकारोने
सांद्राणि-घाढ
ध्वंसमानः-नाश क
रतो
कुवलय-चंद्रविकाशी
कमल, पृथ्वी वलय
उल्लास-विकसितपणा
ने, हर्षने
उच्चैः-अत्यंत
चकार-करतो हवो
पुष्यात्-पुष्टी करो
वासरस्य-दिवसना

अभिध-नाम
यास्यंति-पामशे
जग्मुः-पामता हवा
यस्मात्-जेथी
अमरतां-अजरामरप
णाने
निर्व्वर्णपुय्यां-मोक्ष
नगरीमां
यात्वा-पामीने, जइने
दशम-दशमो
सुधाकुंडं-अमृतकुंड
पंचम्याः-पांचमना
तपसि-तपमां
विशदधियां-निर्मल
बुद्धिवालाने

भाविनां-भव्य जी
वोने
अस्तु-हो
हुंकार-हुंकारो
दूरिकृत-दूर करेला
सुकृत-सुकृत करना
त्रात-समूह
प्रचाराः-विस्तार
भृंगी-भमरी
पंचम्यह-पंचमीना
दिवसना
तपोर्थ-तपने अर्थ
वितरतु-विस्तारो
धीमतां-बुद्धिवालाना
सावधाना-सावधान

अथ ज्ञान पंचमी स्तुति प्रारंभः

॥ श्रीनेमिः पंचरूपत्रिदशपतिकृ
त प्राज्य जन्मान्निषेक, श्वंचत्पंचा
हमत्तद्विरदमदन्निदा पंचवक्रोप

(६४ए)

पमानः ॥ निर्मुक्तः पंचदेह्याः परम
सुखमयप्रास्तकर्मप्रपंचः, कल्या
णं पंचमीसत्तपसि वितनुतां पंचम
ज्ञानवान् वः ॥ १ ॥ संप्रीणन्
सच्चकोरान् शिवतिलकसमः कौ
शिकानंद मूर्तिः, पुण्याब्धिप्रीति
दायी सितरुचिरिवि यः स्वीयगोत्रि
स्तमांसि ॥ सांज्ञाणि ध्वंसमानः
सकलकुवलयोद्भ्रासमुच्चैश्वकार,
ज्ञानं पुष्याज्जिनौधः स तपसि न्न
विनां पंचमीवासरस्य ॥ २ ॥ पी
त्वा नानान्निधार्थामृतरसमसमं यां
ति यास्यंति जग्मु, ऊर्जावा यस्माद
नेके विधिवदमरतां प्राज्यनिर्वाण
पुर्याम् ॥ यात्वा देवाधिदेवागम द

(६५०)

शमसुधाकुंभमानंद हेतु, स्तत्पंच
म्यास्तपस्युद्यतविशदधियां जावि
नामस्तु नित्यं ॥ ३ ॥ स्वर्णालंका
रवट्गन्मणि किरणगणध्वस्तनि
त्यांधकारा, हुंकारारावदूरीकृतसु
कृतजनव्रातविघ्नप्रचारा ॥ देवीश्री
अंबिकाख्या जिनवरचरणांज्जो
ज्जंगीसमाना, पंचम्यहस्तपोथ्यवितर
तु कुशलं धीमतां सावधाना ॥४॥

अर्थः—श्रीनेमिः पंचरूप के० श्रीनेमिनाथ जग
वान् ते तमारा पंचमीना सारा तपने विषे निर्विघ्न
प्रत्ये विस्तारो. हवे ते नेमिनाथ जगवान केवा ठे?
तो के पांच रूपे करीने देवतानो पति एवो जे ई
तेणे कर्यो ठे मोटो अने उत्तम जन्माज्जिपेक जेमने
एवा, वली ते केवा ठे? तो के दीपता एवा पांच ई
योरूप दाथीना मद जेदेवे करीने सिद्धनुं उपमाने

जेमने एवा, वली ते केवा ठे ? तो के औदारिकादिक पांच शरीर तेथी मुकाणा एवा ठे. वली केवा ठे ? तो के उत्कृष्ट एवा सुखे करी सहित ठे. वली केवा ठे ? तो के प्रकर्षे करी टाळ्या ठे कर्मना विस्तार जेमणे एवा ठे. वली केवा ठे ? तो के पांचसुं ज्ञान जे केव लज्ञान तेषो करी युक्त ठे ॥ १ ॥

संप्रीणन् सच्चकोरान् के० हवे जिनसमुदायने चंडनी समानतारूपे स्तवे ठे. चंडमा सदृश एवो तथा मोक्षने विषे तिलक समान एवो जे जिनसमुदाय ठे, ते ज्ञव्य जनोना पंचमीना दिवसना रूमा तपने विषे ज्ञानने पुष्टि करो. हवे ते जिनसमुदायने चंड तु ल्यता केवी रीते ठे ? ते सर्व विशेषणोए करीने कहे ठे. जेम चंड उत्तम चकोरने रूमे प्रकारे आनंद करे ठे तेम ए श्री जिनसमुदाय पण सत्पुरुषरूप चकोरने सम्यक् प्रकारे हर्ष करे ठे. वली जेम चंड घूरुने आनंद दायक ठे मूर्ति जेनी एवो ठे, तेम ए जिनसमुदाय पण इंडने आनंदरूप ठे मूर्ति जेनी एवो ठे. तथा जे म चंड पुण्यकारक समुद्धने प्रीतिदायक ठे, तेम जिनौ

घ पण पुण्यरूप जे समुद्र तेने प्रीतिनो देनारो ठे, तथा जेम चंद्र पोतानां किरणोए करी गाढ अंधकारोने नाश करनारो ठे, तेम जिनौघ पण गाढ एवां जीवोनां अज्ञानने नाश करनारो ठे. तथा जेम चंद्र समग्र कुवलय के० चंद्र विकाशी कमलोने विकसितपणाने अत्यंत करतो हवो, तेम ए जिनौघ पण कुवलयके० पृथ्वीवलयने हर्षने करतो हवो एवो ठे, माटे तेने चंद्र मानी उपमा योग्य ठे ॥ १ ॥

पीत्वा नानान्निधार्थां के० श्री वीतराग देवनो सिद्धांतरूप दशमो एवो अमृतकुंरु जे ठे, ते ज्ञानपंचमीना तपने विषे उजमाल तथा निर्मल ठे बुद्धि जेमनी एवा ज्ञान्य जीवोने आनंदनो कारणभूत निरंतर श्राव, हवे ते जिनागमरूप दशम सुधाकुंरु केवो ठे ? तोके नाना प्रकारनां ठे नाम जेमनां एवा जे अर्थो, ते रूप अमृतरस ठे जेमां एवो ठे, तेने विधि प्रमाणे पान करीने निरुपम एवा सुखने पामशे, पामे ठे, अने पामता हवा; जेनुं पान करवा थकी अनेक एवा जीवो जे ठे, ते मोटी एवी मोक्ष नगरीने विषे अजरामरपणाने पा

मीने स्वस्थ थाय ठे ॥ ३ ॥

स्वर्णालिंकार के० श्री अंबिका ठे नाम जेनुं ए
वी देवी, ते सावधान ठती बुद्धिमान एवा ज्ञविक जी
वना पंचमीना दिवसना तपने माटे कुशल जे ठे ते
ने विस्तारो. ते देवी केवी ठे ? तो के सोनाना अलं
कारने विषे वलगेला मणिनां किरणोना समूहे करी
टाढ्यो ठे निरंतर अंधकार जेणे एवी ठे; वली ते देवी
केवी ठे ? तो के हुंकारना शब्दे करी दूर कर्या ठे, सु
कृतनो करनारो एवो जे जनसमूह, तेना विघ्न प्रचार
जेणे एवी ठे; वली ते देवी केवी ठे ? तो के वीतरा
गनां चरणरूप कमलने विषे जमरी समान ठे. ॥४॥

॥ अथ चैत्यवंदनो ॥

॥ अथ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

डुविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चोथा अग्निंदन
॥ बीजे जन्म्या ते प्रभु, जव दुःख निःकंदन ॥ १ ॥
डुविध ध्यान तुम्हें परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥
एम प्रकाश्यं सुमति जिने, ते चविया बीज दिन ॥१॥

दोय बंधन राग द्वेष, तेहने ज्ञवि तजीए ॥ मुज परे
शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव ज्ञजीए ॥ ३ ॥
जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीजदिने
वासुपूज्य परे; लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय
व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहीये ॥ अरजिन बीज दिने
चवी, एम जिन आगल कहीए ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चो
वीशीये, एम जिन कळयाण ॥ बीजदिन केइ पामी
या, प्रज्ञूनाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीये
ए, हुआं बहु कळयाण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नम
तां होय सुख खाण ॥ ७ ॥

॥ अथ ज्ञान पांचमनुं चैत्यवंदन ॥

त्रिगणे वेठा वीर जिन, ज्ञांखे ज्ञविजन आणे
॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन राणे
॥ १ ॥ आराहो ज्ञवि ज्ञातसें, पांचम अजुवाली ॥
ज्ञान आराधवा कारणे; एहज तीर्थि निहाली ॥ २ ॥
ज्ञानविना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार ॥ ज्ञान
आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान

रहित क्रीया कही, कास कुसुम उपमान; ॥ लोका
लोक प्रकाश कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी
श्वासोश्वासमां, करे कर्मनो ठेह ॥ पुर्व कोमि वरसां
लगे, अज्ञानी करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक कहि
क्रीया, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घ
णो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंच
मी, जावजीव उत्कष्टी; पंच वरस पंच मासनी, पं
चमि करो शुज दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए,
काजस्सग्ग लोगस केरो ॥ नजमणुं करो जावशुं, टाले
जव फेरो ॥ ८ ॥ एणी पेरे पंचमि आराहिए, आणी
जाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रंग विजय
लहो सार ॥ ए ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ माहाशुदि आठमने दिने, विजया सुत जा
यो ॥ तेम फागण शुदि आठमे, संजव चवी आयो
॥ १ ॥ चैत्रवदिनी आठमे, जनम्या रुषज्ज जिणंद ॥
दिक्का पण ए दिन लहि, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥
माधव शुदि आठम दिने, आठ कर्म कख्यां दूर ॥ अ

जिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एदि
 ज आठम उजलि, जनम्या सुमति जिणंद ॥ आठ
 जाति कलशें करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जनम्या
 जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामि ॥ नेमि असाठ
 शुदि आठमे, अष्टमीगति पामि ॥ ५ ॥ श्रावणवदि
 नी आठमे, नेमि जनम्या जगज्जाण ॥ तेम श्रावण
 शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥ ६ ॥ ज्ञाड्वा वदि
 आठम दिने, चविया स्वामि सुपास ॥ जिन उत्तम
 पद पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ॥
 संघ चतुरविध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ मा
 धव सीत एकादशी, सोमल छीज यज्ञ ॥ इंद नृति
 आदे मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसैं चण्डु
 णा, तेहनो परिवार ॥ वेद अरथ अवलो करे, मन अत्रि
 मान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एका
 श गणधार; ॥ वीरि थाप्या वंदिए, जिन शासन ज

कार ॥ ३ ॥ मद्धि जन्म अर मद्धि पास, वर चरण वि
लाशी; ॥ ऋषज्ञ अजित सुमति नमी, मद्धि घनघाति
विनाशी ॥ ५ ॥ पञ्च प्रभु शिववास पास, ऋव ऋवना
तोमि; ॥ एकादशी दिन आपणी, रिद्ध सघली जोमि
॥ ६ ॥ दश क्षेत्रे त्रिहुं कालनां, त्रणशें कल्याण; ॥ व
रस इग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगि
यार अंग लखाविये, एकादश पाठां; ॥ पुंजणि ध्वणि
विंटणी; मसी कागल काठां ॥ ८ ॥ अगियार अव्रत ठां
रुवा ए. वहो पमिमा अग्यार; ॥ खिमा विजयजिन शा
सनें, कस्यो सफल अवतार ॥ ९ ॥

॥ अथ ॥ रोहणी तपनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ रोहणी तप आराधिये, श्री श्री वासुपूज्य; ॥

दुःख दोहग डुरें टले, पूजक होए पूज्य ॥ १ ॥ पहेला
कीजें वास क्षेत्र, प्रह उठीने प्रेम ॥ मध्यान्हें करी
धोतियां, मन वच काय खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी
रचीए, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ जावें जावना जावियें,
कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रीहुं कालें लेइ धूप दीप;

(६५८)

प्रभु आगल कीजे; ॥ जिनवर केरी जक्तिसुं, अविन
ल सुख लीजे ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्तवन, जि
ननो क्रिजें जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइए, जेस नावे
संताप ॥ ५ ॥ कौरु कौरु गुण फल दिये, उत्तरोत्तर
जेद ॥ मान कहे ए विध करो, होय तो जवनो वेद
॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ वीशस्थानक तपना काउस्तगगनुं
चैत्यवंदन ॥

चोवीश पन्नर पिस्तालीशनो. उत्रीसनो करि
॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, काउस्तगग मन धरि
॥ १ ॥ पंच समसठी दश वली, सित्तेर नव पणवीम
॥ वार अरुवीश लोमस तणो, काउस्तगग धरो गुणी
श ॥ १ ॥ वीश सत्तर एकावन्न, छादशने पंच ॥ एणि पं
काउस्तगग जो करे, तो जाये जव लंच ॥ ३ ॥ अ
नुक्रमे काउस्तगग मन धरो, गुणि लेजो वीश, वीश
स्थानक एम जाणीए, संक्षेपघ्नी लेश ॥ ४ ॥ जाव फ
अनमां घणो, जो एक पद आराधे ॥ जिन उनम

(६५ए)

पद्मने, नमी निज कार्य साथे ॥ ५ ॥ इति.

॥ अथ श्री आदिजिन चैत्यवंदन ॥

सरवारथ सिद्धे शकी, चविया आदि जिनंद ॥
प्रथम राय विनता वसे, मानव गण सुखकंद ॥ १ ॥
योनि नकुल जिणंदने, हायन एक हजार ॥ मौना
तीर्ते केवली, वरु हेठे निरधार ॥ २ ॥ उत्तराषाढा
जन्म ठे ए, धनराशि अरिहंत ॥ दशसहस परिवारशुं,
वीर कहे शिवकंत ॥ ३ ॥ इति.

॥ अथ श्री चोवीश जिनना वार्णानुं चैत्यवंदन ॥

पद्मप्रजने वासुपूज्य, दोय राता कहीए ॥ चंड
प्रजने सुविधिनाथ, दो नुज्ज्वल लहीए ॥ १ ॥ मद्धि
नाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला नीरख्या, सुनिसुव्रत ने
नेमनाथ, दो अंजन सरखा ॥ २ ॥ लोले जिन कंचन
सया ए, एदा जिन चोवीश ॥ धीर विमल पंरित त
णो, ज्ञानविमल कहे शीश ॥ ३ ॥

॥ अथ चोविश जिन लंठननुं चैत्यवंदन ॥

वृषज्ज लंठन ऋषज्ज देव, अजित लंठन हाथी
 ॥ संजव लंठन घोरुलो, शिवपुरनो साथी ॥ १ ॥ अ
 जिनंदन लंठन कपि, क्रौंच लंठन सुमति ॥ पद्म लं
 ठन पद्मप्रभु, विश्वदेव सुमति ॥ २ ॥ सुपास लंठन
 साथीन, चंडप्रज्ज लंठन चंद ॥ मगर लंठन सुविधि
 प्रभु, श्रीवढ्ढ शीतल जिणंद ॥ ३ ॥ लंठन खड्गी
 श्रेयांसनो, वासुपूज्यने महिष ॥ सूअर लंठन पा
 य विमलदेव, ज्ञवियां सेवो ईश ॥ ४ ॥ सींचाणो
 जिन अनंतने, वज्र लंठन श्री धर्म ॥ शांति लंठन मर
 घलो, राखे धरमनो मर्म ॥ ५ ॥ कुशुं लंठन वोक्को
 अरजिन नंदावर्त्त ॥ घट लंठन मद्धि प्रभु, काचको
 मुनिसुव्रत ॥ ६ ॥ नमि जिनने नीलो कमल, पय पं
 कज नमीय ॥ शंख लंठन प्रभु नेमजी, दीसे उंब
 अंधिय ॥ ७ ॥ पारसनाअजीने चरणे सर्प, नील वाण
 सोहात ॥ सिंह लंठन कंचन तनु, वर्धमान विरुया
 ॥ ८ ॥ इणि पेरे लंठन चींतवी, उलखीए जिनना

(६६?)

॥ श्री महिमा प्रभु सुरिनो, लक्ष्मी रतनसुरि राय
॥ ए ॥ इति चैत्यवंदन ॥

अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन.

जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वा
मी ॥ अष्ट कर्म रिपु जीतीने, पंचम गति पामी ॥ १ ॥
प्रभु नामें आनंद कंद, सुख संपत्ति लहीए ॥ प्रभुनामे
नव नय तणां, पातक सब दहीए ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वरुण
जोमी करीए, जपीए पारस नाम; विष अमृत षड
परगमे, पावे अविचल ठाम ॥ ३ ॥

श्री शांतिजिन चैत्यवंदन.

जय जय शांतिजिणंद देव, हृष्टिअणानर स्वा
मी; विश्वसेन कुल चंद सम, प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥
अचिरा नरसर हंस जिम, जिनवर जयकारी; मारी
रोग निवारके, कीर्ति विस्तारी ॥ २ ॥ सोलमा जि
नवर प्रणामीए ए, नित्य उठी नामी शीश ॥ सुरनर
रूप प्रसन्न मन, नमतां वाधे जगीश ॥ ३ ॥

(६६९)

श्री आपादिजिन चैत्यवंदन.

अरिहंत नमो जगवंत नमो, परमेश्वर जिना
ज नमो; प्रप्रम जिनेश्वर प्रेमे पेश्वत, सिद्धां सधलां
काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रज्जु पारंगत परममहोदय,
अविनाशी अकलंक नमो; अजर अमर अद्भुत अति
शय निधि, प्रवचन जलधि मयंक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥
तिहुयण ज्ञविघण जन मण वंठिय, पूरण देव रसा
ल नमो; ललि ललि पाय नमुं हुं जाले, कर जोर्मनि
त्रिकाल नमो ॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध दुद्ध तुं जग जन स
ज्जन, नयनानंदन देव नमो; सकल सुरासुर नरवर म
यक, सारे अहनिश सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तुं तीर्थ
कर सुखकर साहिव, तुं निःकारण वंधु नमो; शम्भु
गत ज्ञविने हितवठल, तुं हि कृपारस सिंधु नमो ॥ अ०
॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्श दर्शित, लोकालोक स्वभाव न
मो; नाशित सकल कलंक कलुष मण, उगित उपय
ज्ञाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु न
हित, कारक जगजन नाथ नमो; घोर अपार जग
धि तारण, तुं शिवपुरनो नाथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥

(६६३)

अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश
नमो; बोधि दीप्त अनूपम दानेश्वर, ज्ञानत्रिमल सूरी
श नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री गौतमाष्टक छंद ॥

वीर जिशेसर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो
निशदिश ॥ जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे
नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे, मन
वांछित हेला संपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम
नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुद्धा वंकटा, त
स नामे नावे हुंकटा ॥ चूत प्रेत नवि मंरे प्राण, ते
गौतमना करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल का
य, गौतम नामे वाधे आय ॥ गौतम जिन शासन श
खगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल ढाल
सुरहां घृत गोल, मन वंछित कापरु तंवोल ॥ धरशु
धरणी निर्मल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥
गौतम उदयो अविचल ज्ञान, गौतम नाम जपो जग
जाण ॥ मोटां मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सक

ल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोरु, वाह
पोहोंचे वंठित कोरु ॥ महिअल माने मोटा राय, जो
तुठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्या पातक ट
ले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामे निर्मल
ज्ञान, गोतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अय
धारो सहु, गुरु गोतमना गुण ठे बहु ॥ कहे लावण्य
समय कर जोरु, गौतम तुठे संपत्ति कोरु ॥ ए॥ इति.

॥ अथश्री सोल सतीनो ठंद ॥

आदिनाथ आदें जिनवर वंदी, सफल मनोए
कीजीयें ए ॥ प्रजातें उठी मंगलिक कामे, सोल सती
नां नाम लीजीए ए ॥१॥ बाल कुमारी जग हितकारी
ब्राह्मी जरतनी बेहेनमीए ॥ घट घट व्यापक अक्षर
रूपे, सोल सति मांहे जे वरीए ॥२॥ बाहुवल जगि
नी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामे रूपज सुताए ॥
अंकस्वरूपी त्रिजुवन मांहे, जेह अनुपम गुणजुताए
॥ ३ ॥ चंदनवाला बालपणाश्री शीयलवंती शुद्ध अ
वीका ए ॥ अरुदना बाकुला वीर प्रति लाच्या, केव
लही व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धागि

(६६५)

नंदिनी, राजीमति नेमवद्वज्जा ए ॥ जोवन वेशे काम
ने जीत्यो, संजम लेइ देव डुवज्जा ए ॥ ५ ॥ पंच न
रतारी पांरुव नारी, डुपद तनया वखाणीए ए ॥ एक
सो आठे चीर पूराणां, शीयल महिमा तस जाणीये
ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कु
ल चंडिका ए ॥ शियल सखुणी राम जनेता, पुन्य त
णी प्रनातिका ए ॥ ७ ॥ कौशंबिक गामे संतानिक ना
मे, राज्य करे रंग राजीन ए ॥ तस घर घरणी मृगा
वती सती, सुर नुवने जश गाजीन ए ॥ ८ ॥ सुल
सा साची शीयले न काची ॥ राची नहिं विषयारसे
ए ॥ सुखमुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उद्व
से ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनक
सुता सीता सती ए ॥ जग सह जाणे धीज करंतां,
प्रनल शीतल अयो शियलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांत
ए चादणी बांधी कुवाथकी जल काढीयुंए ॥ कलंक
उतारी सतीय सुन्नज्ञ, चंपा वार उघासीयुंए ॥ ११ ॥
सुरनर वंदित शियल अखंफित, शीवा शीवपद गामि
नीए ॥ जेहने नामे निर्मल अइए, बलिहारी तस ना

(६६६)

सनी ए ॥ १२ ॥ हस्तीनागपुरे पांशुरायनी कुंता ना
मे कासनी ए ॥ पांशुव स्याता दसे दसारणी, वेन पति
व्रता पद्मिनी ए ॥ १३ ॥ शिखलवती नामे शीखलवत
धारिणी, त्रिविधे तेहने वंदिए ए ॥ नाम जपतां पातक
जाए, दरिद्रण डुरित निकुंदीए ए ॥ १४ ॥ निपिवा न
गरी ललह नरिंदनी, दस्ययंती तल मेहनी ए ॥ संकट
परुतां शीखलज राखुं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनीए ॥
अनंग अतीता जगजन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रज्ञाव
ती ए ॥ विश्व विख्याता कामिल दाता, सोलमी सती
पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे ज्ञाखी शाखे साखी, उदय
स्तन ज्ञाखे सुदा ए, बाहाणुं वालां जे नर जणशे, ते
लहेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति.

॥ अथ श्री नवकारनो वंद ॥

(दोहा.)

वंछित पूरे विविध परे, श्री जिनज्ञासन साग
निश्चे श्री नवकार नित, जपतां जय जयकार ॥१॥ अ
रुसठ अक्षर अविक फल, नवधद नवे निधान; वीत
राग स्वयं सुख वदे, पंच परमेष्ठी प्रधान ॥२॥ एक

(६६७)

अक्षर एक चित्त, समस्यां संपति आय, संचित सागर
सातनां, पातक दूर पलाय ॥३॥ सकल मंत्र शिर मुकु
टमणि, सदगुरु ज्ञाषित सार; सो ज्ञवियां मन शुद्ध
शु, नित्य जपिए नवकार. ॥ ४ ॥

(ठंड हाटकी.)

नवकार अक्षी श्रीपाल नरेश्वर पाभ्यो, राज्य प्र
सिद्ध; समज्ञान विषे शिव नाम कुमरने, सोवन पुर्
सो सिद्ध; नव लाख जपंतां नरक निवारे, पाप्मे ज्ञव
नो पार; सो ज्ञवियां ज्ञत्तं चोखे चित्ते, नित्य जपिए
नवकार ॥ ५ ॥ बांधी वरुशाखा शिके बेसी, हेठल
कुंरु हुताश; तस्करने मंत्र समर्प्यो श्रावके, उरुचो
ते आकाश; विधिरीते जप्यो विषधर विष टाले, ढाले
अमृत धार. ॥ सोण ॥ ६ ॥ बीजोरां कारण राय म
हाबल, व्यंतर दुष्ट विरोध; जेणे नवकारे हत्या टाली
पाभ्यो यक्ष प्रतिबोध; नव लाख जपंतां आए जिनवर,
इशो ठे अधिकार, सोण ॥ ७ ॥ पद्धिपति शिख्यो
मुनिवर पाप्मे, महा मंत्र मन शुद्ध; परज्व ते राज
सिंह पृथ्वीपति, पाभ्यो परिगल ऋद्ध; ए मंत्र अक्षी
अमरापुर पहोत्यो, चारुदत्त सुविचार ॥ सोण ॥ ८ ॥

(६६७)

सन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले; दीवो
श्री पासकुमारे पन्नग, अध बलतो ते टाले; संजला
व्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रनुवन अवतार. ॥ सो०
॥ ए ॥ मन शुद्धे जपतां मयणांसुंदरी, पामी प्रिय
संयोग; इण ध्याने कष्ट टल्युं उंवरनुं, रक्त पित्तनो
रोग; निश्चेशुं जपतां नवनिधि प्राये, धर्म तणो आधा
र. ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांही कृष्ण जुजंगम घा
ट्यो, घरणी करवा घात; परमेष्टि प्रजावे हार फुलनो,
वसुधा मांही विख्यात; कमलावतीये पिंगल कीधो,
पाप तणो परिहार. ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति
राखी ग्रहीने, पामी बाण प्रहार; पद पंच सुणतां
पांशुपति घर, ते अइ कुंता नार; ए मंत्र अमुलक म
हिमा मंदिर, जवडुःख जंजण हार; ॥ सो० ॥ १२ ॥
कंवल ने संवल कादव काढयां, शकट पांचशे मान;
दीधे नवकारे गया देवलोके, विलसे अमर विमान;
ए मंत्र अकी संपति वसुधा तले, विलसे जैन विदा
र; ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगे चोवीशी हुइ अनंती, होइ
वार अनंत; नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, इम

(६६ए)

ज्ञांखे अरिहंत; पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचे, सम
ख्यां संपति सार; ॥ सोण ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद
ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर; पुंरगिरि
उपर प्रत्यक्ष पेखयो, मणिधरने एक मोर; सहगुरुने
सन्मुख विधि समरंतां, सफल जनम संसार. ॥ सोण
॥ १५ ॥ शूलिकारोपण तस्कर कीधो, लोहखरो पर
सिद्ध; तिहां शेठे नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी
ऋद्ध; शेठने घेर आवी विघ्न निवाख्यां, सुरे करी मनो
हार; ॥ सोण ॥ १६ ॥ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह,
पंच दान चारित्र; पंच सजाय महाव्रत पंचह, पंच
समिति समकित; पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पा
लो पंचाचार. ॥ सो० ॥ १७ ॥

कलश ठप्पय.

नित्य जपीये नवकार, सारसंपत्ति सुखदायक;
शुद्ध मंत्र ए शाश्वतो, इम जंपे श्री जगनायक, श्री
अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य ऋणीजे; श्री उवजाय
सुसाधु, पंच परमेष्ठि शुणीजे; नवकार सार संसार

ठे, कुशल लाज वाचक कहे एक चित्ते आराधतां, वि
विध ऋद्धि वंठित लहे ॥ १७ ॥

॥ इति श्री नवकारणो ठंड समाप्त ॥

अथ श्री महावीरस्वामीनो ठंड.

श्री सिद्धारथ कुल शरणगार, त्रिशलादे सुत ज
ग आधार; शोभे सुंदर सोवन वान, शरण तमारुं श्री
वर्द्धमान ॥ १ ॥ तुम नामे लहिये संपदा, तुम नामे
सन वंठित कदा; तुम नामे लहिये सनमान, शरण
॥ २ ॥ दुर्जन दुष्ट वैरि विकराल, तुम नामे नासे त
तकाल; तुम नामे दिन दिन कट्याण, शरण ॥ ३ ॥
तुम नामे नावे आपदा, चूत प्रेत व्यंतर नहि कदा;
रोग शोग चिंता नवि जाण, शरण ॥ ४ ॥ प्रद्वारि
क पीमा नवि करे, नाम तमारुं जे अनुसरे; धर्मसिंह
मुनि ज्ञाव प्रधान, शरण ॥ ५ ॥

॥ इति श्री महावीरस्वामीनो ठंड समाप्त ॥

(६७१)

॥ अथ श्री नवकार लघु ढंड ॥

सुख कारण ज्ञवियण, समरो नित्य नवकार,
जिन ज्ञानन आगम, चौद पूरवनो सार; एमंत्रनो म
हिमा, कहेतां न लहुं पार; सुरतरु जिम चिंतित, वंठि
त फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव, सेव करे क
र जोरु; जुवि मंजल विचरे, तारे ज्ञवियण कोरु; सुर
ढंडें विलसे, अतिशय जास अनंत; पेहेले पद नमियें,
अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पन्नरे जेदें, सिद्ध अया
ज्ञगवंत; पंचमी गति पोहोता, अष्ट करम करि अंत;
कल अकल स्वरूपी पंचानंतक तेह; जिणवर पय प्र
णमुं, बीजे पद वली एह ॥ ३ ॥ गच्छ ज्ञार धुरंधुर, सुं
दर शशिहर सोम, करे सारण वारण, गुण वत्तीसैं
ओम; श्रुत जाण शिरोजणि, सागर जेम गंजीर, त्री
जे पद नमिये, आचारजं गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गु
ण आगर, सूत्र ज्ञणावे सार, तप विधि संयोगें, ज्ञां
खे अर्थ विचार; मुनिवर गुण जुता, कहियें ते नवआ
य; चौथे पद नमियें, अहोनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥
पंचाश्रव टाले, पाले पंचाचार; तपस्वी गुण धारी, वा

(६७५)

रे विषय विकार; त्रस थावर पीहर, लोक मांहे जे सा
ध; त्रिविधे ते प्रणमु, परमारथ जिणें लाध ॥ ६ ॥ अ
रि करि हरि सायणी, मायणि नूत वैताल, सवि पाप
पणासै, वाधे मंगल माल; एणें समरण संकट, दूर ट
ले ततकाल, इम जंपे जिनप्रन्न, सूरि शिष्य रसाल ॥७॥

॥ अथ बीज तिथी तपनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ फतमल पाणीनांने जाय ॥ ए देशी. ॥

॥ प्रणमी सारद माय, शासन वीर सुहंकरुंजी
॥ बीज तिथी गुण गेह, आदरो नवियण सुंदरुंजी
॥ १ ॥ एह दिन पंच कळयाण, विवरीने कहुं ते सु
णोजी ॥ माहा शुदि बीजे जाण, जन्म अन्ननंदन
तणोजी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो बीज, सुमति न
व्या सुरलोकथी जी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद
सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुन्न व
ण, दशमा शीतल जिन गणुजी ॥ चैत्र वदिनी हो
बीज, वख्या मुक्ति तस सुख घणुंजी ॥ ४ ॥ फाळगुन
पासनी बीज, उत्तम उज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ

तस चवन, कर्म दये तव पासनीजी ॥ ५ ॥ उत्तम
माघज मास, शुद्धि बीजे वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दि
न केवल नाण, सरण करो जिनराजनो जी ॥ ६ ॥
करणी रूप करो खेत, समकित रूप रोपो तिहांजी ॥
खातर किरिया हो जाण, खेरु समता करी जिहां जी
॥ ७ ॥ उपशम तद्रूप नीर, समकित ठोरु प्रगट
होवेजी ॥ संतोष करी ग्रहो वारु, पञ्चखाण व्रत चोकि
सोहेजी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष
फळ्युं तिहांजी, सांजर अनुभव रूप, उत्तरे चारित्र
फल जिहांजी ॥ ९ ॥ शांति सुधारस वारि, पान क
री सुख लिजीएं जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने
संतोष रस किजीएं जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीस
मास, उत्कृष्टी बावीस मासनी जी; ॥ चोविहार उप
वास, पालिये शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्य
क दोष वार, पन्निहण दोष लिजीएं जी ॥ देवदंडन
त्रण काल, मन वच कायाए किजीएं जी ॥ १२ ॥
उजमणुं शुद्ध चित्त, करी धरीये संयोगथी जी ॥ जि
न वाणी रस एम, पिजीए श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥

एषि विध करिये हो बीज, रागने द्वेष डुरे करी जी ॥
केवल पद लहि तास, वरे सुक्ति उलट धरी जी ॥१४॥
जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो सदाजी ॥ पञ्च
विजयनो शिष्य, भक्ति पाये सुख संपदाजी ॥१५॥ इति.

॥ अथ पंचमीसुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमी तप तमे करेरे प्राणी, जेस पामो नि
र्मल ज्ञानरे ॥ पेहेसुं ज्ञानने पठि क्रिया, नहिं कोइ
ज्ञान समानरे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान व
खाएयुं, ज्ञानना पांच प्रकाररे ॥ मति श्रुत अवधि ने
मनपर्यव, केवल एक उदाररे. ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ म
ति अषावीश श्रुत चउदहवीश, अवधि ठे असंख्य प्रका
ररे ॥ दोय जेदे मनपर्यव दाखयो, केवल एक उदाररे.
॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकदी
एक अपाररे ॥ केवल ज्ञान समुं नहिं कोइ, लोकलो
क प्रकाशरे. ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद क
रीने, म्हारी पूरो उमेदरे, ॥ समय सुंदर कहे हुं पा
पामुं, ज्ञाननो पांचसो जेदरे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

हारे मारे ठाम धरमना, सामा पचवीश देश
जो ॥ दीपेरे त्यां देश मगध सहमां शिरेरे लो. ॥ हां
रे मारे नगरी तेहमां, राजग्रही सुविशेष जो ॥ राजेरे
त्यां श्रेणिक, गाजे गजपेरेरे लोण ॥ १ ॥ हां रे मारे गा
म नगर पुर पावन करता नाथजो; विचरंता तिहां आ
वि वीर समोसखारे लोण ॥ हांण ॥ चणद सहस्स सु
निवरना साथे साथजो; सुधारे तप संयम शियले अलं
कखारे लो० ॥ २ ॥ हांण ॥ फुट्या रस जर जुट्या अं
व कदंबजो; जाणुरे गुणशिलवन हसि रोमंचीनरे लोण ॥
हांण ॥ वाया वाय सुवाय तिहां अविखंब जो ॥ वासेरे
परिमल चिहुं पासे संचिनुरे लो. ॥ ३ ॥ हांण ॥ देव
चतुरविध आवे, कोमा कोरु जो; त्रिगुंरे मणि हेम
रजतनुं ते रचेरे लो. ॥ हांण ॥ चोलठ सुरपति सेवे हो
नाहोरु जो ॥ आगेरे रस लागे इंद्राणि नचेरे लो ॥ ४ ॥
हां० ॥ मणिमय हेम सिंहासन वेठा आपजो ॥ हा
रे सुर चामर मणि रत्ने जन्धारे लो ॥ हांण ॥ सुणातां
इन्द्रि नाद टले सवि तापजो ॥ वरसेरे सुर फूल स

(६७६)

रस जानुं अन्धारे लो. ॥ ५ ॥ हां० ॥ ताजे तेजे गाजे
घन ज्यम लूवजो, राजेरे जिनराज समाजे धर्मेने
लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी आवे जन मन लूवजो
पोषेरे रस न परे धोषे जर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ आ
गम जाणी जिनतो श्रेणिक राय जो; ॥ आव्योरे परि
वरियो ह्य गय रथ पायगेरे लो. ॥ हां० ॥ देइ प्रदक्षिणा
वंदि वेठो ठाय जो ॥ सुणवारे जिन वाणी मोटे जा
यगेरे लो. ॥ ७ ॥ हां० ॥ त्रिजुवन नायक लायक तव जगवंत
जो ॥ आणीरे जिन करूणा धर्म कथा कहेरे लो ॥
हां० ॥ सहज विरोध विसारी जगना जंत जो, सुणवा
रे जिन वाणी मनमां गह गहेरे लो ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वालिम वेहेलारे आवजो ॥ ए देशी ॥

वीर जिनवर एम उपदेशे, तांजलो चतुर मुजा
एरे ॥ मोहनी निंदमां कां पमो, उलखो धर्मनां तांजो
॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ परिहरो विर
कपायरे, वापमा पंच परमादधी; कां पमो कुगतिमां क
यरे ॥ वि० ॥ २ ॥ करी शको धर्म करणी सदा, तो
रो ए उपदेशे ॥ सर्व कालं करी नवि शको ॥ तो करी

(६७७)

पर्व सु विशेषरे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ पर्व षटनां क
ह्यां, फल घणां आगमे जोयरे ॥ वचन अनुसारें आ
राधतां, सर्वथा सिद्धी फल होयरे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जी
वने आयु परञ्जव तणुं, तिथिदिनें बंध होय प्रायरे ॥
तेह ज्ञणि एह आराधतां, प्राणिनु सदगति जायरे ॥
वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमि फल तिहां, पूठे गौतम स्वा
मरे ॥ ज्विक जीव जाणवा कारणे, केहे वीर प्रजु
तामरे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, सं
पदा आठनी वृद्धिरे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एह
थी आठ गुण सिद्धिरे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लाज होय आठ
पनिहारनो, आठ पवयण फल होयरे ॥ नाश अष्ट
करमनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोयरे ॥ वि० ॥ ८ ॥
आदि जिन जन्म दिहा तणो, अजितनो जन्म कट्या
णरे ॥ चवन संजव तणो एह तिथे, अग्निनंदन निर्वा
णरे ॥ वि० ॥ ९ ॥ सुप्रति सुव्रत नमि जनमीया,
नेमनो मुक्ति दिन जाणरे ॥ पास जिन एह तिथे सि
द्ध्या, सातमा जिन चवन माणरे ॥ वि० ॥ १० ॥ ए
ह तिथि साधतो राजिनु, दंरु वीरज लह्यो मुक्तिरे

कर्म हणवा ऋणि अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्तिरे ॥ वि
॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालनां, जिन तणां के
कट्याणरे ॥ एह तिथे वली घणां संयमी, पामशे प
निर्वाणरे ॥ वि० ॥ १२ ॥ धर्म वासित पशू पंखिआ
एह तिथे करे नपवासरे ॥ व्रतधारि जीव पोशो करे
जेहने धर्म अन्त्यासरे ॥ वि० ॥ १३ ॥ ज्ञापियो वी
आठम तणो, ज्विक हित एह अधिकाररे; ॥ जिन सु
खे नञ्चरी प्राणिथा, पामशे ज्व तणो पाररे ॥ वि
॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोमो
॥ सेवजो शिष्य बुद्ध प्रेमनो, कहे कांति कर जोमो
वि०॥१५॥ कलश ॥ एम त्रिजग ज्ञासन अचल शासन
वर्धमान जिनेश्वरु ॥ बुद्ध प्रेम गुरु सु पसाय पामि
संश्रूण्यो अलवेसरु ॥ जिन गुण प्रसंगे ज्ञायो रंगें, स
वन ए आठम तणो ॥ जे ज्विक ज्ञांचे सुणे गावे, क
न्ति सुख पावे घणो ॥ १६ ॥ इति.

॥ अथ एकादशीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, चाणिका ॥

(६७९)

री समोसख्या, ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, यादव
कोरुशुं परिवस्था ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमू
ल, जक्ति गुणे माला रचि, ॥ जगपति पूजी पूठे क
ष्ण; ॥ हायिक समकित शिव रूची ॥ २ ॥ जगपति
चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगपति
मुज आतम उद्धार ॥ कारण तुम विए कोण कहे
॥ ३ ॥ जगपति तुम सरीखो मुज नाथ, माथे गाजे
गुणनिदो ॥ जगपति कोय उपाय वताव, जेस करे
शिव वधु कंतलो ॥ ४ ॥ जगपति उजल मागशिर
मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकसोने पंचाश,
कळयाणक तिथी उद्धशी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे
त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवुं जिननां
कळयाण, विवरि कहुं आगल वली ॥ ६ ॥ नरपति अर
दिक्का नमि नाण, मद्धि जन्म व्रत केवली ॥ नरपति
वर्तमान चोवीशि, मांहे कळयाणक आवली ॥ ७ ॥
नरपति मौन पणे उपवास, दोदशो जपसादा गणो ॥
नरपति मनवच काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥
नरपति दाहिण धातकी खंन, पश्चिम दिशि इहुकारथी ॥

नरपति विजय पाटण अजिधान, साचो नृप प्रजाप
लक्ष्मी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंझावति तास, चंझमुली
गजगामिनी, नरपति श्रेष्ठि शुर विख्यात, शीयल न
खिला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार,
सार नृषण चिवर धरी ॥ नरपति जाए नित्य जि
गेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोष
पात्र सुपात्र, सामायक पोषध वरे ॥ नरपति देव व
दन आवश्यक, काल वेलाए अनुसरे ॥ १२ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणामी पाय, सुव
साधु तणारी ॥ विनये वीनवे शेठ, सुनिवर करी क
रुणारी ॥ १ ॥ दाखो सुज दिन एक, घोसो पुन्य वी
योरी ॥ वाधे जिम वरु बीज, शुभ अनुबंधी वरु
री ॥ २ ॥ सुनि ज्ञापे धाहा ज्ञाग्य, पावन पर्व व
णारी ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सु मन
॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास अग्यार लंगरी ॥
अथवा वरस अग्यार, उजवी तप सु वंगरी ॥ ४ ॥
जलि सदगुरु वेण, आनंद अति उलख्योरी, तप सं
उजविय, आरण स्वर्ग वख्योरी. ॥ ५ ॥ एकदिनी

(६७१)

सागर आय, पाली पुन्य वसेरी ॥ सांजल केशवरा
य, आगल जेह थसेरी ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां शेठ; स
मृद्धत वसेरी ॥ प्रीतिमती प्रीया तास, पुन्ये जोग
जम्योरी ॥ ७ ॥ तस कुखे अवतार, सुचित शुभ
स्वपनेरी ॥ जनन्या पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह सुकनेरी
॥ ८ ॥ नादनखेष निधान, जुमीधि प्रगट हवोरी,
गर्जदोहद अनुजाव, सुव्रत नाम ठव्योरी ॥ ९ ॥ बु
द्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक जणयोरी. ॥ यौव
न वय अगीआर, रूपवती परणयोरी ॥ १० ॥ जिन
पूजन मुनिदान, सुव्रत पञ्चखाण धरेरी ॥ अगीआर
कंचन कोरु, नायक पुण्य जरेरी ॥ ११ ॥ धर्मघोष अ
णगार, तिथी अधिकार कहेरी ॥ सांजलि सुव्रत शेठ,
जातिस्मरण लहेरी ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि शा
ख, जक्ते तप उचरेरी ॥ एकादशी दिन आठ, पोहो
रो पोसो धरेरी ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुक्ते पोसह लीधो,
सुव्रत शेठे अन्यदाजी ॥ अंवर जाणि तस्कर आ
व्या, घरमां धन लूटे तदाजी. ॥ १ ॥ शासन न

देवी शक्ते, धंजाणा ते वापमाजी ॥ कोलाहल सुनि
 कोटवाल आव्यो, झूप आगल धर्या रांकमाजी ॥१॥
 पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ जेटणांजी ॥
 रायने प्रणमि चोर मुकावी, शेठे कीधां पारणांजी
 ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सोरीपुरमां आ
 करोजी ॥ शेठजी पोसह समरस वेठा, लोक कंठ
 हठ कां करोजी ॥ ४ ॥ पुण्ये हाट वखारो शेठनी,
 नगरी सौ प्रहांसा करेजी ॥ हरखे शेठजी तप गज
 मणुं, प्रेमदा साथे आदरेजी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो जा
 र झलावी, संवेगी सिर सेहरोजी ॥ चउनाणी विज
 य शेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरेजी ॥ ६ ॥ एक
 खटमाली चार चोमाली, दोसय ठठ सो अठम करे
 जी ॥ बीजा तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मोन एकावरी
 व्रत वरेजी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिश्यादृष्टी, देव
 ता सुव्रत साधुनेजी ॥ पुर्वापाजित कर्म उदेरो, अंग
 वधारे व्याधिनेजी. ॥ ८ ॥ कर्म नहीउ पापे जमीठ,
 सुर कहे जाउ लपव जणीजी ॥ साधु न जाए गंग
 जराये, पाटु प्रहारे हणयो मुनिजी ॥ ९ ॥ मुनि मन

वचन काय त्रियोगें, ध्यान अनल दहे कर्मनेजी ॥ के
वल पामी जिन पद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामनेजी.

॥ ढाल चौथी ॥ कान परंपे नेमने ए, धनधन
यादव वंश, जिहां प्रभु अवतख्या ए ॥ सुज मन मान
सहंस, जयो जिन नेमनेए ॥ १ ॥ धन शिवादेवी मा
वरीए, समुद्रविजय धन्य तात सुजात जगतगुरुए,
रत्न त्रयी अवदात ॥ जयो ॥ १ ॥ चरण विराधी नृप
न्योए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो ॥ तिणे मन नवि न
ल्लसेए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो ॥ ३ ॥ हाथी
जेस कादव गढयोए, जाणुं नपादेय हेय ॥ जण ॥ तोपण
हुं न करी शकुंए, दुष्ट कर्मनो ज्ञेय ॥ जयो ॥ ४ ॥ पण
सरणो बलिघातणो ए, किजे सीजे काज ॥ जण ॥ एहवां
वचनने सांजलीए ॥ वांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जण ॥ ५ ॥
नेम कहे एकादशीए, समकित युक्त आराध ॥ जण ॥ अश
जिनवर वारमोए, नावि चौवीशि लाध ॥ जयो ॥ ६ ॥

॥ कलश. इय नेमि जिनवर नित्य पुरंदर, रैव
वताचल मंरुणो ॥ वाण नव मुनि चंद्र वरसे, राज
नगरे संशुण्यो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि, सत्य

विजय गुरु अनुसरी ॥ कपूर विजय कवि क्षिमाविज
यगणि, जिनविजय जयसिरी वरी ॥ १ ॥ इति श्री

॥ अथ लुपाध्याय श्री यशोविजयजी कृत
मौन एकादशीना दोढसो कल्याणकनुं
स्तवन प्रारंभः ॥

ढाल पहेली.

॥ ठढी ज्ञावना मन धरो ए देशी ॥

धुर प्रणमुं जिन महरिसी ॥ समरुं सरसति उ
ह्वसी ॥ धसमसि ॥ मुजमति जिन गुण गायवा
॥ १ ॥ हरि पूठे जिन उपदिशि ॥ परव ते मौन ए
कादशी ॥ मनवसि ॥ अह्निसि ते जविदोकेने ए
॥ २ ॥ तरीआने जवजल तरसि ॥ एह परव प्राम
फरसि ॥ मनहरसि ॥ अवसरे जेह आराहसि ए ॥ ३ ॥
उजमणे ते धारसि ॥ वस्तु इग्यार इग्यारसि ॥ ४ ॥
सि ॥ ते डुरगतिनां वारणांए ॥ ४ ॥ ए दिन अतिरि

(६०५)

सुहामणो ॥ दोढसो कड्याणक तणो ॥ मन घणो ॥
गणणुं करतां सुख होये ए ॥ ५ ॥

ढाल बीजी.

पामे पामे त्रणय चोवीसि ॥ छीप क्षेत्र जिन
नामै ॥ पामे पामे पांच कड्याणक ॥ धारो शुज परि
णामे ॥ १ ॥ जिनवर ध्यायीरैरे ॥ मोह मारगना
दाता ॥ ए आंकणी ॥ सर्वज्ञाय नमो इम पहले ॥
नमो अरिहंत ए बीजे ॥ त्रीजे नमो नाथाय ते चोथे
॥ सरवज्ञाय कहीजे ॥ जिन० ॥ २ ॥ पांचमे नमो
नाथाय कहीजे ॥ पामे पामे जाणो ॥ त्रणय नाम
तीरधंकर केरां ॥ गणणां पांच वखाणो ॥ जिन०
॥ ३ ॥ त्रणय चोवीसी एक एक ढाले ॥ त्रणय नाम
जिन कहिसुं ॥ कोरु तप करी जे फल लहिये ॥ ते
जिन जक्ति लहिसुं ॥ जिन० ॥ ४ ॥ काम सवे सिजे
जिन नामे ॥ सफल होय निज जिहा ॥ जे जिजे
जिन गुण समरंता ॥ सफल जनम ते दिहा ॥
जिन० ॥ ५ ॥

ढाल त्रीजी.

जंबुद्वीप ञरत ञलुं, अतित चोवीसि सार
मेरे लाल ॥ चोथा सहायश केवली, ठठा सरवानुज्जुति
नुदार मेरे लाल ॥ १ ॥ जिनवर नामे जय हुए ॥ ए
आंकणी ॥ श्री श्रीधर जिन सातमा, हवे चोवीसी
वर्तमान मेरे लाल ॥ श्री नमिजिन एकवीसमा, नग
णीसमा मल्लि प्रधान मेरे लाल ॥ जिन० ॥ २ ॥ श्री
अरनाथ अठारमा ॥ हवे ञावि चोवीसी ञाव मेरे
लाल ॥ श्री स्वयंप्रज्ञ चोथा नमुं ॥ ठठा देवसुत मन
दयाव मेरे लाल ॥ जिन० ॥ ३ ॥ नदय नाथ जिन
सातमा ॥ तेहने नामे मंगल माल मेरे लाल ॥ लुञ्जव
रंग वधामणां ॥ वली लहीये प्रेम रसाल मेरे लाल ॥
जिन० ॥ ४ ॥ अलिअ विघन डुरें टले ॥ दूरिजन चिं
त्युं नवी धाय मेरे लाल ॥ महीमा महोटाइ वधे, वली
जगसां सुजस गवाय मेरे लाल ॥ जिन० ॥ ५ ॥

ढाल चोथी.

पुरव ञरते ते धातकी खंमेरे ॥ अतित चोवी
सी गुण अखंमेरे ॥ चोथा श्री अकलंक सोजागी रे

॥ ठठा देव सुजंकर त्यागीरे ॥ १ ॥ सप्तनाथ सप्तम
जिन रायारे ॥ सुरपति प्रणामे तेहना पायारे ॥ वर्त्त
मान चोवीसी जाणारे ॥ एकवीसमा ब्रह्मेन्ड वखाणो
रे ॥ २ ॥ लंगणीसमा गुणनाथ समरीयेंरे ॥ अठारमा
गांगीक मन धरीयेंरे ॥ कहुं अनागत हवे चोवीसीरे ॥
धातकी खंढे हैयमे हिंसीरे ॥ ३ ॥ श्री सांप्रत चोथा
सुखदायीरे ॥ ठठा श्री मुनीनाथ अमायीरे ॥ श्री विशिष्ट
सप्तम सुखकारारे ॥ तेतो लागे मुज मन प्यारारे
॥ ४ ॥ श्री जिन समरण जेहवुं मीतुरे ॥ एहवुं अमृ
त जगमां न दीतुरे ॥ सुजस महोदय श्री जिन नामे
रे ॥ विजय लहीजे ठामो ठामेरे ॥ ५ ॥

ढाल पांचमी.

पुस्कर अर्घ्य पूरव हुआ ॥ जिन वंदीएरे ॥ ज़र
त अतीत चोवीसी के ॥ पाप निकंदीएरे ॥ चोथा सु
मृड सुहंकरुं ॥ जिन० ॥ ठठा व्यक्त जगदीस के ॥
पाप नि० ॥ १ ॥ श्री कलाशत गुण ज़ख्या ॥ जिन०
॥ हवे चोवीसी वर्त्तमान के ॥ पाप नि० ॥ कट्याणक
ए दिन हुआं ॥ जिन० ॥ लीजीयें तेहनां अजिधान

के ॥ पाप नि० ॥ २ ॥ अरण्यवास एकवीसमा ॥
 जिन० ॥ नुगणीसमा श्रीयोग के ॥ पाप नि० ॥ श्री
 अयोग ते अठारमा ॥ जिन० ॥ दिये शिवरमणी संयो
 ग के ॥ पाप नि० ॥ ३ ॥ चौवीसी अनागत ज्ञानि ॥
 जिन० ॥ तिहां चोथा परम जिनेस के ॥ पाप नि० ॥
 सुधारति ठठा नसुं ॥ जिन० ॥ सातमा श्री निकेश के
 ॥ पाप. नि० ॥ ४ ॥ प्रीयमेलक परमेश्वरु ॥ जिन० ॥
 एहनुं नाम ते परम निधान के ॥ पाप नि० ॥ महो
 टानो जे आशरो ॥ जिन० ॥ तेहथी लहीयें यश बहु
 मान के पाप नि० ॥ ५ ॥

ढाल ठठी.

धातकी खंरेरे पष्ठिम ज्ञरतमां ॥ अतित चौवी
 सी संज्ञार ॥ श्री सरवारथ चोथा जिनवरु ॥ ठठा
 हरीज्जध धार ॥ १ ॥ जिनवर नामेरे मुऊ आनंद व
 णो ॥ ए आंकणी ॥ श्री सगधाधिप वंडु सातमा ॥ ह
 वे चौवीसी वर्त्तमान ॥ श्री प्रयत्न प्रणसुं एकवीसमा
 ॥ जेहनुं जगमां नहीं उपमान ॥ जिन० ॥ २ ॥ श्री

(६७९)

अहोन्न जिनवर उगणीसमा ॥ अठारमा मद्धसीहना
प्र ॥ हवे अनागत चोवीसी नमुं ॥ चोथा दिनरुकू शि
व सात ॥ जिन० ॥ ३ ॥ ठठा श्री जिन धनद संज्ञा
रीये, सातमा पोषध देव ॥ हरखे तेहना चरण कमल
तणी ॥ सुर नर सारे शेव ॥ जिन० ॥ ४ ॥ ध्यावे म
लवुं एहवा प्रचु तणो ॥ आलस मांहेरे गंग ॥ जनम
सफल करी मानुं तेहथी ॥ सुजस विलास सुरंग ॥
जिन० ॥ ५ ॥

ढाल सातमी.

पुरकर पञ्चिम नरतमां ॥ धारो अतित चोवी
सीरे ॥ चोथा प्रलंब जिनेसरुं ॥ प्रणमुं हियरुले हिं
सीरे ॥ १ ॥ एहवा साहिव नवी वीसरे ॥ क्षिण क्षि
ण समरीयें हेजेरे ॥ प्रचु गुण अनुन्नव योगथी ॥ शो
नीयें आतम तेजेरे ॥ एहवा साहिव नवी वीसरे ॥ २ ॥
ए आंकणी ॥ ठठा चारित्रनिधि सातमा ॥ प्रशमरा
जित गुण धामरे ॥ हवे वर्त्तमान चोवीसीयें ॥ समरी
जें जिन नामरे ॥ एहवा० ॥ ३ ॥ स्वामी सरवज्ञ जयं

(६९०)

करु ॥ एकवीसमा गुण गेहरे ॥ श्री विपरीत त्रुंगणी
समा ॥ अविहरु धरम सनेहरे ॥ एहवाण ॥ ४ ॥ ना
थ प्रसाद अठारमा ॥ हवे अनागत चोवीसीरे ॥ चो
था श्री अघटित जिन वंदीयें ॥ कर्मसंतति जिणे पी
सीरे ॥ एहवा० ॥ ५ ॥ श्री ब्रमणेंड ठठा नमुं ॥ रिप
अचंडाजिध वंडुरे ॥ सातमा जगजश जयकरु ॥ जिन
गुण गातां आनंडुरे ॥ एहवाण ॥ ६ ॥

ढाल आठमी.

जंबुद्वीप अैरावतेंजी ॥ अतित चोवीसी उदार
॥ श्री दयांत चोथा नमुंजी ॥ जग जनना आधार
॥ १ ॥ मनमोहन जिनजी ॥ मनधी नहीं मुज दूर ॥
ए आंकणी ॥ अजिनंदन ठठा नमुंजी ॥ सातमा श्री
रतनेस ॥ वर्त्तमान चोवीसीयेंजी ॥ हवे जिन नाम ग
णेंस ॥ मनण ॥ २ ॥ श्यामकोष्ट एकवीसमाजी ॥ त्रु
गणीसमा मरुदेव ॥ श्री अतिपार्श्व अठारमाजी ॥ त
मरुं चित्त नितमेव ॥ मनण ॥ ३ ॥ ज्ञावी चोवीसी
वंदीयेंजी ॥ चोथा श्री नंदीखेण ॥ श्री व्रतधर ठठा

(६९१)

सुजी ॥ टाली करमनी रेण ॥ मन० ॥ ४ ॥ श्री निर
वाण ते सातमाजी ॥ तेहसुं सुजस सनेह ॥ जिम च
कोर चित्त चंदसुंजी ॥ तिम मोरा मन मेह ॥ मनण ॥ ५ ॥

ढाल नवमी.

प्रथम गोवालीआ तणे नवेजीरे ॥ ए देशी ॥
पूरव अर्धे धातकीजीरे ॥ अरावतें जे अतीत ॥ चौवी
सी तेहमां कहुंजीरे ॥ कळयाणक सुप्रतीत ॥ १ ॥ म
होदय सुंदर जिनवर नाम ॥ ए आंकणी ॥ चौथा श्री
सौंदर्यने जी ॥ वंडु वारोवार ॥ ठठा त्रिविक्रम सभरी
येंजी ॥ सातमा नरसिंह सार ॥ महोदय सुंदर जि०
॥ २ ॥ वर्तमान चौवीसीयेंजी ॥ एकवीसमा हेमंत ॥
संतोषित जुगणीसमाजी ॥ अठारमा कामनाथ
संत ॥ महोदय सुंदर जि० ॥ ३ ॥ जावि चौवीसी वंदी
एजी ॥ चौथा श्री मुनिनाथ ॥ चंडाह ठठा नमुंजी
॥ नव दव नीरद पाण ॥ महोदय सुंदर जि० ॥ ४ ॥
दिलादित्य जिन सातमाजी ॥ जन मन मोहन वेद ॥
॥ सुख जश लीला पामीयेंजी ॥ जश नामे रंगरेल ॥

(६९९)

महोदय सुंदर जिण ॥ ५ ॥

ढाल दशमी.

जविका सिद्ध चक्र पद वंदो, ए देशी ॥ पुस्कर अ
र्द्ध पूरव औरवते ॥ अतीत चोवीसी संज्ञारुं ॥ श्री अष्ट
हीक चोथा वंदी ॥ जव वन अमणा निवारुंरे ॥ १ ॥
जविका ॥ एहवा जिनवर ध्यावो ॥ गुणवंतना गुण
गावोरे ॥ जविका ॥ एहवाण ॥ ए आंकणी ॥ वणि
क नाम ठठा जिन नमीये ॥ शुद्ध धर्म व्यवहारिं ॥
उदयनाथ सातमा संज्ञारो ॥ त्रएय जुवन उपगारी रे ॥
जविकाण ॥ एहवाण ॥ २ ॥ वर्तमान चोवीसी वंडु ॥
एकवीसमा तमोकंद ॥ सायकाक जुगणीसमा समरो
॥ जन मन नयणानंदरे ॥ जविका ॥ एहवा ॥ ३ ॥
श्रीक्षेमंत अठारमा वंदो ॥ ज्ञावी चोवीसी ज्ञावो ॥
श्री निरवाण चोथा जिनवर ॥ हृदयकमलमां लावोरे
॥ जविका ॥ एहवाण ॥ ४ ॥ ठठा रवीराज सातमा
॥ प्रथमनाथ प्रणमीजे ॥ चिदानंदधन सुजस महो
दय ॥ लीला लछि लहीजे रे ॥ जविका ॥ एहवाण ॥

(६९३)

ढाल अग्रगीआरमी.

करपट कुलीरे लुठणां ॥ ए देशी ॥ पश्चिम
अैरावतें नलो ॥ धातकी खंने अतीत के ॥ चोवीसीरे
पूरुवा ॥ चोथा जिन सुप्रतीत के ॥ १ ॥ जिनवर
नाम सोहामणुं ॥ घनीय न मेल्युं जाय के ॥ रात दि
वस मुऊ सांजरे ॥ संजारे सुख थाय के ॥ जिनप
॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ श्री अवबोध ठा नमुं ॥ सातमा
श्री विक्रमेंड के ॥ चोवीसी वर्त्तमानना ॥ हवे संजा
रु जिनेंड के ॥ जिनप ॥ ३ ॥ एकवीसमा श्री सुशां
तजी ॥ उंगणीसमा हरनाम के ॥ श्री नंदीकेश अ
ठारमा ॥ होजो तास प्रणाम के ॥ जिनप ॥ ४ ॥ जा
वि चोवीसी संजारीये ॥ चोथा श्री महामृगेंड के ॥
ठा असोचित वंदीयें ॥ सातमा श्री धमेंड के ॥ जि
न० ॥ ५ ॥ मन लागुं जस जेहसुं ॥ न सरे तेह विण
तास के ॥ तिणे मुऊ मन जिन गुण स्तुषि ॥ पा
मीसु जस विलास के ॥ जिनप ॥ ६ ॥

(६९४)

ढाल बारमी.

पुरकर पश्चिम औरावते हवे, अतित चोवीसी व
खाणुजी ॥ अश्ववृंद चोथा जिन नमीयें ॥ ठगा कुटी
लक जाणुंजी ॥ सातमा श्री वर्द्धमान जिनेश्वर ॥ चो
वीसी वर्त्तमानजी ॥ एकवीशमा श्री नंदीकेस जि
न ॥ ते समरु सुन्न ध्यानजी ॥ १ ॥ उगणीसमा
श्री धरमचंड जिन ॥ अठारमा श्री विवेकोजी ॥ हवे
अनागत चोवीसीमां ॥ संनारु शुन्न टेकोजी ॥ श्री
कलापक चोथा जिन ठगा ॥ श्री विशोम प्रणमीजे
जी ॥ सातमा श्री आरण्य जिन ध्यातां ॥ जन्मनो ला
हो लीजे जी ॥ २ ॥ श्री विजयप्रन्न सुरीश्वर राजे ॥
दिन दिन अधिक जगीसजी ॥ खंन्न नयरमां रही चो
मासो ॥ संवत सत्तर बत्रीसैंजी ॥ दोढसो कल्याण
कनुं गुणणुं ॥ इत्य में पूरण कीधुजी ॥ दुःख चुरण
दीवाली दीवसैं ॥ मनवंठित फल लीधुजी ॥ ३ ॥
श्री कल्याणविजयवर वाचक ॥ वादी मतंगज सिंदो
जी ॥ तास शिष्य श्री लान्नविजय बुध ॥ पंथित

(६७५)

मांहि लिहोजी ॥ तास शिष्य श्री जितविजय बुध ॥
श्री नयविजय सौजागीजी ॥ वाचक जज्ञ विजयें
तस शिष्यें ॥ शुणीआ जिन वरुजागीजी ॥ ४ ॥ ए
गणणो जे कंठे करशे ॥ ते शिवरमणी वरशेजी ॥
तरसे जव हरसे सवि पातिक ॥ निज आतम उधर
सेजी ॥ बार ढाल जे नित समरसे ॥ उचित काज
आचरसेजी ॥ सुकृत सहोदय सुजस्त महोदय ॥ ली
ला ते आदरसेजी ॥ ५ ॥

कलस.

ए बार ढाल रसाल बारह, जावना तरु मंजरी
॥ वर बार अंग विवेक पल्लव, बार व्रत सौजा करी
॥ इम बार तप विध सार साधन ॥ ध्यान जिन गु
ण अनुसरी ॥ श्री नयविजय बुध चरण सेवक ॥
जसविजय जयश्री लही ॥ १ ॥

॥ इति श्री महोपाध्याय श्री यशोविजयजी
कृत मौन एकादशीना गणणानुं बार
ढालनुं स्तवन संपूर्ण ॥

(६७६)

॥ अथ मोटुं दीवाली स्तवन. ॥

ढाल १. राग रामगिरि.

श्री श्रमण संघ तिलकोपमं गौतमं, सुगति प्र
णित्य पादारविंदं; इन्द्रजुति प्रज्व मंहसो मोचकं,
कृत कुशल कोटि कल्याण कंदं.॥१॥ सुनि मन रंजणो,
सयल दुःख जंजणो, वीर वर्धमानो जीणंदो; सुगति
गति जीम लही, तिम कहुं सुण सही, जीम होएं द
र्ष हइके आणंदो.॥सुण॥२॥ करीय नदूघोषणा देश पुरपा
टणे, मेघ जीम दान जल बहूल वरसी; धण कणग
मोतिया ऊगमगे जोतिया, जीन देइ दान इम एक व
रसी.॥सुण॥३॥ दोय विण तोय उपवास आदे करी, मा
गसिर कृष्ण दशमी दिहामे; सिद्धि साम्हा अइ वीर
दीक्षा लेइ, पाप संताप मल दूर काढे.॥सुण॥४॥ बहूल
वंजण घरे पारणुं सांमिणं, पुण्य परमान्न मध्यान्ह कि
धुं; जुवन गुरु पारणा पुन्यधी वंजणे, आप अवता
फल सयल लिधुं.॥सुण॥५॥ कर्मचंमाल गोसाल संगम

(६९७)

सुरो, जीणे जिन उपरे घात मंरुचो; एवमो वयर तें
पापिया सें कर्षो, कर्म कोनि तुंहिज सबल दंरुचो.
॥मु०॥६॥ सहज गुण रोषिउ नामे चंरुकोषिउ, जिनपदे,
स्वान जिम जेह विलगो; तेहने बुजवि उर्यो जग
पति, किधलो पापथी अतिहें अलगो. ॥मु०॥७॥ वेदया
मा त्रियाम लगें खेदियो, जेदियो तुझ नवि ध्यान कुं
जो; शूलपाणि अन्नाणि अहो बुजव्यो, तुज कृपा पार
पामे न संजो. ॥मु०॥८॥ संगमे पिनीउ प्रजुसजल लोय
णें, चिंतवे गुटश्ये किम एहो; तास उपरें दया एव
नि शी करी, सापराधे जने सबल नेहो. ॥मु०॥९॥ इम
उपसर्ग सहैतां तरणि मित वरस, सार्दि उपर अधिक
पह एकें; वीर केवल लहुं कर्म डुख सवि दहुं, गहग
हुं सुर निकर नर अनेके. ॥मु०॥१०॥ इंइजूति प्रमुख स
हस चउदश मुनि, साहुणी सहस ठत्रीस विहसी;
उगणासठ सहस एक लाख श्रजालुआ, श्राविका त्रि
जख अठार सहसी. ॥मु०॥११॥ इंम अखिल साधु परी
वारशुं परवस्थो, जलधि जंगम जीश्यो गुहिर गाजे;

(६९८)

विचरता देश परदेश निय देशना, उपदिशे सयल सं
देह जांजे ॥ सु० ॥ ११ ॥

॥ ढाल १. विवाहलानी देशी ॥

हवे निय आय अंतीम समे, जाणिय श्री जि
नरायरे; नयरी अपापाएं आवीया, राय समाजने ठा
यरे; हस्तिपालगराये दीठला, आवियमा अंगण वारे;
नयण कमल दोय विहसीआ, हरसीला हइमा मजा
रे. ॥ १३ ॥ जले जले प्रज्जुजी पधारीया, पावस पावन
किधांरे; जनम सफल आज अम तणो, अम्ह घे
पाजलां दीधांरे; राणी राय जिन प्रणामीया, मोटे मे
तियमे वधाविरे; जिन सनमुख कर जोमीय, वेठल
आगले आविरे. ॥ १४ ॥ धन अवतार अमारमो, धन दि
आजुनो एहोरे; सुरतरु आंगणे मोरिण, मोतियमे व
ठलो मेहोरे, आ श्युं अमारमे एवमो, पूरव पून्यनो ने
होरे; हैमलो हेजे हरसिण, जो जिन मलिण संजोगो
रे. ॥ १५ ॥ अति आदर अवधारिए, चरम चोमासलु रदि
यारे; राय राणि सुरनर सवे, हियरुला मांहे गद्गदि

(६७७)

यारे; अमृतघ्नी अति मीठमी, सांझली देशना जिननी
रे; पाप संताप परो अयो, शाता अइ तन मननीरे.
॥१६॥ इंड आवे आवे चंडमा, आवे नरनारीना वृंदरे;
त्रिण प्रदक्षणा देइ करी, नाटिक नव नवे ठंदेरे; जि
नमुख वयणनी गोठमी, तिहां होय अति घणी मीठी
रे; ते नर तेहज वरणवे, जीणे निज नयणले दीठीरे.
॥१७॥ इंस आणंदे अतिक्रम्या, श्रावण जाडवो आसोरे;
कौतिक कोमिलो अनुक्रमे, आवियमो कार्तिक मासो
रे; पाखि पर्व पन्होतलुं, पोहतलुं पुन्य प्रवाहिरे; राय
अठार तिहां मिळया, पोसह लेवा उठांहिरे. ॥१८॥ त्रि
वन जन सवि तिहां मिळया, श्री जिन वंदन का
ारे; सहेज संकिरण तिहां अयो, तिल पन्वा नहि
गंमोरे; गोयम स्वामि समोवनी, स्वामि सुर्धमा तिहां
वठारे; धन धन ते जिणे आपणे, लोयणे जिनवर दि
ठारे. ॥१९॥ पूरण पुन्यना नुषध, पोषध व्रत वेगे तिहां
रे; कार्तिक काली चउदशे, जिन मुखे पचखाण कि
धारे; राय अठार प्रमुख घणे, जिन पगे वांदणां दिधां

रे; जिन वचनामृत तिहां घणे, ज्ञवियणे घट घट पी
धांरे. ॥१७॥

॥ ढाल ३ ॥ राग मारु. ॥

श्री जगदीश दयालु दुख दूरे करेरे, कृपा को
नि तुज जोमी; जगमांरे जगमांरे कहिएं केहने वी
रजी रे. ॥११॥ जग जनने कुण देशे एहवी देशनारे, जा
णि निज निरवाण; नव रसरे नव रसरे सोल पहोर
दिये देशनारे. ॥१२॥ प्रबल पुन्यफल संसुचकसोहाम
णारे, अऊयणां पणपन्न; कहियांरे कहियांरे महियां
सुख सांजलि होएरे. ॥१३॥ प्रबल पापफल अऊयणां
तिम तेटलांरे, अण पुठ्यां ठत्रीस; सुणतांरे सुणतां
रे जणतां सविसुख संपजेरे. ॥१४॥ पुण्यपाल राजा ति
हां धर्म कथांतरेरे, कहो प्रभु प्रत्यक्ष देव; मुजनेरे (१)
सुपन अर्थ सवि साचलोरे. ॥१५॥ गज वानर खीर दुम
वायस सिंह घमोरे, कमलबीज इम आठ; देखिरे (२)
सुपन सज्जय मुऊ मन हुन्नरे. ॥१६॥ नखर विज कमल
अस्थानके सिंहनुंरे, जीव रहित शरीर; सोवनरे (३)

कुंज मलिन ए शुं घटेरे ॥१७॥ वीर ज्ञयो ज्ञुपाल सुणो
मन श्रीर करीरे, सुंमिण अर्थ सुविचार, हैमे रे (१)
धरज्यो धर्म धुरंधरुरे ॥१८॥

॥ ढाल ४ ॥

श्रावक सिंधुर सारिखा, जिन मतना रागी, त्या
गी सह गुरु देवधर्म, तत्वे मति जागि, विनय विवेक
विचारवंत, प्रवचन गुण पूरा, एहवा श्रावक होयंसे,
मतिमंत सनुरा ॥१९॥ लालचे लागा थोमिलें, सुखें रा
चि रहिया, घरवासे आशा अमर, परमारथ दूहिया,
व्रत वयरग थकि नहि, कोइ लेशे प्रायें, गज सुपने
फल एह, नेह नवि मांहोमांहे ॥२०॥ वानर चंचल चप
ल जाति, सरखा मुनि मोटा, आगल होत्ये लालचि,
लोत्री मन खोटा, आचारज ते आचारहिण, प्रायें प
रमादि, धर्म जेद करस्ये घणा, सहजे स्वारथ वादी.
॥२१॥ को गुणवंत अहंत संत, मोहन मुनि रुमा, सुख
मीठा मायाविया, मनमांहे कुमा, करस्ये मांहोमांहे
वाद्, पर वादे नासे, बीजा सुपन तणो विचार, इम

वीर प्रकाशे ॥३२॥ कटपवृक्ष सरिखा होस्ये, दातारज
 लेरा, देव धर्म गुरु वासना, वरि वारिना वेरा; सरल
 वृक्ष सविने दीए, मनमां गहगहता, दाता डुरलज वृ
 क्ष राज, फल फुले त्रहता ॥३३॥ कपटी जिनमत विणि
 या, वली बबूल सरिखा, खीर वृक्ष आना थया; जीम
 कंटक तिखा; दान देयंतां वारसी, अन्य पावनपात्री,
 त्रिजा सुपन विचार कह्यो, जिन धर्म विधात्री ॥३४॥
 सिंह कलेवर सारिखो, जिन शासन सबलो, अति उ
 दांत अगाहनिय, जिनवायक जमलो; परशासन साव
 ज अज, ते देखी कंपे, चनुथा सुपन विचार इम, जि
 नमुखथी जंपे ॥३५॥ गह्व गंगाजल सारीखो, मूंकी म
 ति हिणा, मुनि मन राचे विद्वरे, जीम वायस दीणा;
 वंचक आचारज अनेक, तिणे जुलविया, ते धर्मातर
 आदरे, जरुमति बहु जवियां ॥३६॥ पंचम सुपन विचा
 र एह, सुणीन राजाने, ठे सोवन कुंज दीठ, मइलो
 सुंणि कान; को को मुनि दरसण चारित्र, ग्यान पूरण
 देहा, पाले पंचाचार चारु, उंनि निज गेहा ॥३७॥ को
 कपटी चारित्र वेष, लेई विप्रतारे, मइलो सोवन कुंज

जीम, पिंम पापे जारे; ठठा सुपन विचार एह, सात
मे इंदिवर, उकरमे उतपति थइ, ते शुं कहो जिणवर.

॥३७॥ पुण्यवंत प्राणि हुस्ये, प्राहिं मध्यम जाति, दाता
जोक्ता ऋद्धिवंत, निरमल अवदात; साधु असाधु जति
वेद, तव सरीखा किजे, ते बहु जइक जवियणे, स्यो
बलंजो दीजे. ॥३८॥ राजा मंत्रिपरे सु साधु, आपोपुं गो
पी, चारित्र सुधु राखस्ये, सवि पाप विलोपी; सप्तम
सुपन विचार वीर, जिनवर इंम कहियो, अठम सुपन
तणो विचार, सुंणिमन गहगहिञ्च. ॥३९॥ न लहे जिनमत
मात्र जेह, तेह पात्र न कहिएं, दिधानुं परजव पुण्य
फल, कांइ न लहिये; पात्र अपात्र विचार जेद, जो
ला नवि लहेस्ये; पुण्य अर्थे ते अर्थ, आथ कुपात्रे देह
स्ये. ॥४०॥ उखर जूमि दृष्ट विज, तेहनो फल कहिएं,
अष्टम सुपन विचार इंम, राजा मन ग्रहियें; एह अ
नागत सवि सरूप, जाणि तिले काले, दीक्षा लीधी वी
र पास, राजा पुन्य पाले. ४१

॥ ढाल ५ ॥ राग गोमि ॥

इन्द्रमूर्ति अवसर लहिरे, पुढे कहे जिनराय, सु
 आगल हवे होयस्येरे, तारण तरण जीहाजोरे, कहे जिन
 वीरजी. ॥४३॥ मुज निरवाण समय थकीरे, त्रिहू वरस
 नव मास; माठेरो तिहां बेसश्येरे, पंचम काल निरा
 सोरे. कहे ० ॥४४॥ बारे वरश्ये मुज थकिरे, गौतम तुज
 निरवाण; सोहम बीडो पामशेरे, वरसे अखय सुख
 ठांणोरे. कहे ० ॥४५॥ चउसठ वरसे मुज थकिरे, जंवे
 निरवाण; आथमसे आदित्य थकिरे, अधिकुं केवल ना
 णो रे. कहे ० ॥४६॥ मन पङ्कव परमावधिरे, कपकोप
 म मन आंण; संयम त्रिण जिन कळपनीरे, पुलागा
 हारग हांणरे. कहे ० ॥४७॥ सिङ्गन्नव अठांणवेरे, करस्ये
 दस (वै) आलिय; चउ पूर्वि जइवाहूथी रे, घास्ये त
 यल विलीठेरे. कहे ० ॥४८॥ दोय शत पत्रेरे मुज थकिरे,
 प्रथम संघयण संठाण; पूवणुंगते नवि हूस्ये, महाप
 ण नवि जांणोरे. कहे ० ॥४९॥ चउत्रयपने मुज थकिरे.

(७७५)

होस्ये काविक सूर; करस्ये चञ्चली पञ्चुलणोरे, वरगुण
रथणानो पूरोरे. कहे० ॥ ५० ॥ सुजथी पण चोराशि
येरे, होस्ये वधर कुमार; दस पूर्वि अधिकालिउरे, रह
स्ये तिहां निरधारोरे. कहे० ॥ ५१ ॥ सुज निर्वण अ
कि ठसेरे, विस पठी वनवास; सुकी करसे नगरमां रे,
आर्य रक्षित सुनि वासोरे. कहे० ॥ ५२ ॥ सहसे व
रसे सुज थकिरे, चञ्च पूरव विबेद; जोतिण अण मि
लतां हसेरे, बहूद मतांतर जेदोरे. कहे० ॥ ५३ ॥ वि
क्रमथी पंच पंच्याशिंरे, होस्ये हरिचंद्र सूरि; जिन
शासन अजुवातसेरे, जेहथी डरियां लवि हूरोरे. कहे०
॥ ५४ ॥ छादश सत सत्तर समेरे, सुजथी सुनि सू
र हिर; बप्पचट्ट सूरि होयसेरे, ते जिन शासन वीरे.
कहे० ॥ ५५ ॥ सुज प्रतिविं चरावस्येरे, आभराय
भूपाल; सार्द्ध त्रिकोटी सोवन तणोरे, तास वयणथी
विशालोरे. कहे० ॥ ५६ ॥ पोरुस शत लंगणोतरेरे,
वरसे सुजथी सुशिंद; हेमसूरि गुरु होयस्येरे, शासन
अण दिशंदोरे. कहे० ॥ ५७ ॥ हेमसूरि पक्षिवोहोले
कुमारपाल भूपाल; जिन संक्षित करस्ये महीरे.

जिन शासन प्रतिपालो रे. कहे० ॥ ५८ ॥ गौतम न
 ला समयथीरे, मुऊ शासन मन मेल; मांहे मांहे न
 वि होस्ये रे, महु गलागल केलोरे. कहे० ॥ ५९ ॥ मु
 नि मोटा आयावियारे, वेढीगारा विशेष; आप सवा
 थ वसी थयारे, ए विटंबश्ये वेषोरे. कहे० ॥ ६० ॥ लो
 जि लखपति होयस्येरे, जम सरिखा जूपाल; सजन
 विरोधि जन हूसेरे, नवि लज्जालु दयालो रे. कहे० ॥ ६१ ॥
 निरलोजि निरमाइयारे, सुधा चारित्रवंत; थोमा मुनि
 महियले हूसेरे, सुण गौतम गुणवंतरे. कहे० ॥ ६२ ॥
 गुरु जगति शिष्य थोमलारे, श्रावक जगति विही
 मात पिताना सुत नहीरे, ते महिलाना आधिनो
 कहे० ॥ ६३ ॥ दुषसह सूरि फलगुसिरीरे, नाप
 श्रावक जाण; सच्चसिरि तिम श्राविकारे, अंतिम सं
 वखाणयो रे. कहे० ॥ ६४ ॥ वरस सहस एकवीसते
 जिन शासन विख्यात; अविचल धर्म चलावशेरे,
 तम आगम वातोरे. कहे० ॥ ६५ ॥ दूषमे दूषमा
 लनीरे, ते कहिये शी वात; कायर कंपे हैमलोरे,
 सुणतां अवदातोरे. कहे० ॥ ६६ ॥

॥ ढाल ६ ॥ पिउमो घरे आवे, ए देशी. ॥

मुऊसुं अविहम नेह बांध्यो, हेज हैमा रंगे, दृढ
मोह बंधण सवल बांध्यो, वज्र जिम अजंग; अलगा
अथा मुज थकि एहले, उपजसे रे केवल निय अंगके;
गौतमरे गुणवंता. ॥६७॥ अक्सर जांणि जिनवरे, पुठि
या गोयम स्वांम, दोहग दुखिया जीवने, आविये आ
पण काम; देवसर्मा बंजणो, जइ बुऊवोरे उणे हुंक
ने गामके. ॥गौ०॥६८॥सांजली वयण जिणंदनुं, आणंद
अंग न माय; गौतम वे कर जोरि, प्रणस्या वीर जि
नना षाय; पांगह्या पूरव प्रीतणी, चउनांणारे मनमां
निरमायके. ॥गौ०॥६९॥गौतम गुरु तिहां आविया, वंदा
विउ ते विप्र; उपदेश अमृत दीधलो, पीधलो तिणे
क्षिप्र; धसमस करतां बंजणे, वारि वागी रे अइ वेदन
विप्रके. ॥गौ०॥७०॥गौतम गुरुनां वयणलां, नवि धर्यां
तिणे कान; ते मरी तस शिर कूमि अयो, कामनीने
एक तांन; उठिया गोयम जांणिउ, तस चरीयोरे पोता
ने ज्ञान के. ॥ गौ० ॥ ७१ ॥

॥ ढाल ७ ॥ राग रामगिरि ॥

चोसठ मणनां ते झोति ऊगमगेरे, गाजे गुहिर
 गंजिर सिरेरे; पुरां तेत्रीस सागर पूरवे रे, नादे विणा
 लवसत्तमिया सूर रे; वीरजी वखाणोरे जग जन मो
 हियोरे. ॥ ७२ ॥ अमृतथी अधिकि मीठी वांणीरे, सु
 णतां सुखनो जे मनमे संपजेरे; ते लहेस्ये पोहोचस्ये
 निर्वाणोरे. वी० ॥ ७३ ॥ वांणि परुठंदे सुर पस्विही
 यारे, सुणतां पामे सुख संपत्तिनी कोरुरे; विजा अ
 ल नलटथी घणारे, आवी बेठा आगल बे कर जोमरे.
 वी० ॥ ७४ ॥ सोहम इंदो शासन मोहीयोरे, पूठ प
 मेसरने तुम आयरे; बे घनि वधारो स्वाति अकी प
 हुं रे, तो ज्ञहमग्रह लघलो दूरे जायरे. वी० ॥ ७५ ॥
 शासन शोजा अधिकि वाधयेरे, सुखीआ होशे मुनि
 वरना वृंदेरे; संघ सयलने सवि सुख संपदारे, दो
 दिन दिनथी परमानंदरे. वी० ॥ ७६ ॥ इंदा न कदा
 कहिए केहनुरे, केंणो सांध्युं नवि जाए आयरे; ज्ञानि
 पदारथ ज्ञावे निपजेरे, जे जिम सरज्यो ते तिम थार
 रे. वी० ॥ ७७ ॥ सोल पहोरनी देता देशनारे, पर

(७०ए)

नकनामा रूअमो अअयणरे; कहेतां काति वदि कहुं प
रगमिरे, वीरजी पोहोता पंचमी गति रयणरे. वी० ॥ ७७ ॥
ज्ञान दीवोरे जब दूरे अयो रे, तव किधि देवे दीवानी
श्रेणरे; तिमरे चिहूं वरणे दीवा किधलारे, दिवाली
कहिणं ठे कारण तेणरे. वी० ॥ ७८ ॥ आंसूं परिपूर
ण नयण आखंरुलोरे, मूकि चंदननी चेहमां अंगरे;
दिघो देवे दहन संघले मिलिजीरे, हा धिग धिग, सं
सार विरंगरे. वी० ॥ ७९ ॥

॥ ढाल ७ ॥ राग वीराग ॥

वंदेसु वेगे जइ वीरो, इम गौतम गहगहता, मा
रगे आवतां सांजलिउं, वीर मुगति मांहे पोहतारे; जि
नजी, तुं निसनेही मोटो, अविहरु प्रेमहतो तुज उप
रे, ते तें किघो खोटोरे जीनजी० ॥ ८१ ॥ है है वीर
कर्यो अणघटतो, मुज मोकलिउ गांमे; अंतकाले वेठां
तुज पाले, हूं स्ये नावत कामेरे. जी० ॥ ८२ ॥ चौद
सहस मुज सरिखा ताहरे, तुज सरिखो मुज तुंहि;
विशवासी वीरे ठेतरीउ, ते श्या अवगुण मुंहिरे. जी०
॥ ८३ ॥ को केहने ठेहमे नवि. वलगे, जो मिलतो हो

ए सबलो; मिलतास्युं जेणे चित्त चोर्यो, ते तिणे कयो
 निबलोरे. जी० ॥ ७४ ॥ निवुर हैमा नेह न किजे, नि
 सनेही नर निरखी; हैमां हेजे मिले जिहां हरखी, ते
 प्रीतलनि सरीखिरे. जी० ॥ ७५ ॥ तें मुऊने मनमो
 नवि दीधो, मुज मनमो तें लीधो; आप सवारथ सध
 लो किधो, मुगति जश्ने सिद्धेरे. जी० ॥ ७६ ॥ आ
 ज लगे तुज मुजसुं अंतर, सुपनंतर नवि हुंतो; हैमा
 हेजे हियालि ठंढी, मुजने मुकयो रोवंतोरे. जी०
 ॥ ७७ ॥ को केहशुं बहू प्रेम म करइयो, प्रेम विटवण
 विरुइं; प्रेमे परवश जे दूख पामे, ते कथा घणु गि
 शरे. जी० ॥ ७८ ॥ निसनेही सुखिया रहे सधले, म
 सनेही दुख देखे; तेल दुग्ध परे परनी पीमा, पामे
 नेह विशेषेरे. जी० ॥ ७९ ॥ समवसरण कहिएं दवे
 होसे, कहो कुंण नयलें जोशे; दया धेनु पुरी कुंण
 दोहस्ये, वृष दधि कुंण विलोसेरे. जी० ॥ ८० ॥ इ
 मारग जे वाल्हा जावे, ते पाठा नवि आवे; मुज हेमो
 दुखमे न समाए, ते कहो कुण समावेरे. जी० ॥ ८१ ॥
 यो दरिसण वीरा वा'लाने, जे दरिसणाना तरस्यां

जो सुहणो केवारे देखसुं, तो डुव दूरे करेशुं रे. जी०
 ॥ ए२ ॥ पुण्य कथा हवे कुंण केलवशे, कुंण वाळहा
 मेलवशे; सुज मनमो हवे कुंण खेलवशे, कुमति जि
 म तिम लवसेरे. जी० ॥ ए३ ॥ कुंण पुठयानो नत्तर
 देशे, कुंण संदेह जांजशे; संघ कमल वन किम विक
 ससे, हुं ठदमस्था वेसेरे. जी० ॥ ए४ ॥ हुं परापुरवसुं
 अजांण, में जिन वात न जांणि; मोह करे सवि जग
 अनाणी, एहवी जीनजीनी वांणीरे. जी० ॥ ए५ ॥
 एहवे जिन वयणे मन वाप्यो, मोह सबल बल का
 प्यो; इंण जावे केवल सुख आप्यो, इंडे जिनपद आ
 प्योर. जी० ॥ ए६ ॥ इंडे जुहाखा जट्टारक, जुहार
 जट्टारक तेणे; पर्व पन्होतुं जगसां वाप्युं, ते किजे स
 वि केणे रे. जी० ॥ ए७ ॥ राजा नंदिवर्द्धन नुतरीन,
 जाइ वहिनर बीजे; ते जावरु बीज हुइ जग सधले,
 वेहेन बहूपरे किजेरे. जी० ॥ ए८ ॥

॥ ढाल ए ॥ विवाहलानी ॥

पहिरीए नवरंग फालनीए, भांरि भृगमद केसर
 जालनीए; ऊव ऊवके श्रवणे जालनीए, करि कंठे

सुगताफल मालनीए. ॥ एए ॥ घर घर मंगल
मालनीए, जपे गोयम गुण जपमालनीए, पहीतलो
परव दीवालनीए, रमे रस जर रामत बालनीए,
॥१००॥ शोक संताप सवि कापीनुए, इंडे गोयम वीर
पदे थापीनुए; नारी कहे सांजल कंतनाए, जपो गो
यम नाम एकंतनाए. ॥ १०१ ॥ छयो लख लाज लखे
शरी ए, द्यो मंगल कोनी कोमेशरी ए; जाप जपो
अइ सु तपेसरी ए, जीम पामीए ऋद्धि परमेसरीए.
॥ १०२ ॥ लहिं दिवालनी दामलो ए, एतो पु
एयनो टवको टालुनुए; सुकृत सिरि दृढ करो पालनी
ए, जिम घर होय नित्य दिवालनीए. ॥ १०३ ॥

॥ ढाल १० ॥

हवे मुनिसुव्रत सीसोरे, जेहनी सबल जगीतो;
ते गुरु गजपुरे आव्यारे, वादी सवि हार मनाव्या.
॥ १ ॥ पावस चण्णमासुं रहियारे, जवियण हस्मेगद
गहीआरे; नमुंचि चक्रवर्त्ति पन्नरे, जसु हियमे नवि
वन्न ॥ २ ॥ नमुंचि तस नामे प्रधानरे, राजा सिं

बहु मान; तिले तिहां रिऊवी रायरे, मागि मोटो प
साय. ॥ ३ ॥ लिघो षट खंरु राजरे, सात दिवस मां
रि आज; पूर्वे सुनिसुं विरोध्योरे, ते किले नवि प्रति
बोध्यो. ॥४॥ ते सुनि सुं कहे बंरोरे, मुऊ धरति सवि
ठंरो; विनविउ सुनि मोटोरे, नवि माने कर्म खोटो.
॥५॥ साठसयां वर्ष तप तपिउरे, जे जिन किरियानो
खपीउ; नामे विष्णु कुमाररे, सयल लवविनो जंरार.
॥ ६ ॥ उठ क्रम जूमि लेवारे, जोवा जाइनी सेवा;
द्वयं त्रिपदि जूमि दानरे, जले जले आद्या जगवान.
॥ ७ ॥ इणे वयणे धरुहरीउरे, ते सुनि बहू कोपे
चढिउ; किधो अदभूत रूपरे, जोयण लाख सरूप. ॥८॥
प्रथम चरण पूर्वे दीधोरे, विजो पश्चिमे किधो; त्रिजो
तस पुंठे आयोरे, नमुंवि पातालें चांप्यो. ॥ ९ ॥ अर
हरीउ त्रिजुवनरे, खलजलिउ सवि जन; सलसलिउ
सुर दिनरे; परुचो नवि सांजलिए कन. ॥ १० ॥ ए
उत्पात अत्यंतरे, दूरि करो जगवंत; है है स्युं हवे आ
शे रे, बोले बहू एक साले. ॥११॥ करणे किन्न
रे, कहुआ क्रोध समेवा; मधुर मधुर गाए ग

कर जोनि विनीत. ॥ १२ ॥ विनय थकी वेगे वलिन
 रे, ए जिन शासन बलिन; दानव देवे खमाव्यो रे,
 नर नारीए वधाव्यो. ॥ १३ ॥ गावलनी जेंस ज़रुकी
 रे, जे देखी डुरे तरुकी रे; ते जतने ग्रहि ठे रे, आ
 ति उतारी मेरइए रे. ॥ १४ ॥ नवले अवतारे आव्य
 रे, जीवित फल लहि फाव्या; शैव सुंहालि कंसाररे
 फल छ्यूं नवे अवतार रे. ॥ १५ ॥ उगण तणो घरवा
 र रे, नसुंचि लख्युं घर नारे; ते जीम जीम खेरु था
 य रे, तिम तिम डुःख दूरे जाय रे. ॥ १६ ॥ मंदिर मं
 ढाण मांढ्या रे, दालिड डुख डुरे ठांढ्या; काति वदि
 परवे परवेरे, इम ए आदरीलु सर्वे. ॥ १७ ॥ पुण्ये न
 रजव पांमि रे, धर्म पुन्य करो नरधांसी; पुन्ये ऋदि
 रसालि रे, नित नित पुन्ये दिवाली. ॥ १८ ॥

कलश.

जिन तुं निरंजण सजल रंजण, डुख जंजण दे
 वता; द्यो सुख सांमि सुगति गांमि, वीर तुण पाये
 सेवता. तप गठ गयण दिणंद दइ दिसे, दीपतो जम

(४१५)

जांणिएं; श्री हीरविजय सुरिंद सहगुरु, तास पाट व
खाणीये. ॥ १९ ॥ श्री विजयसेन सुरीत सह गुरु,
विजयदेव सूरिसरु; जे जपे अहनिज्ञ नाम जेहनो, व
र्द्धमान जिणेश्वरु; निर्वाण तवन महिमा जवन, वीर
जिननो जे जणे; ते लहे लिलालब्धि लही, श्री गुण
हर्ष वधामणे. ॥ २० ॥ इतिश्री वीर निर्वाण महिमा
दीपालिका संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री वीर स्तवन ॥

वीर ह्मणें आवे ठे मारे मंदिरीए, मंदिरीएरे
वीर मंदिरीए. वीणापाये पकीने लें तो गोद विठाल,
नित नित वीनतनी करीए. वी० ॥ १ ॥ सजन कुटुंब
पुत्रादीकने, हरखे इणि पेरे उच्चरिए. वी० ॥ २ ॥
जव प्रभु आंगणे वीर पधारे, तव वड्ड सनमुख रुग
जरीए. वी० ॥ ३ ॥ सयणा सुणोने जवियण, परि
लाजिजे तो जवसायर तरीए. ॥ वी० ॥ ४ ॥ अग्र
तिबंध पणे महावीरजी, घर घर ज्ञीकाने फरीए.
वी० ॥ ५ ॥ अजिनव शेठ तणे घेर पारणुं, किंधुं फ
रतां गोचरीए. वी० ॥ ६ ॥ इम जावना करतां श्रव
णे सुणी, देव दूडूंजीरे चित्त जरीए. वी० ॥ ७ ॥ वारमा

(७१६)

कल्पे जिरण आयु बांध्युं, वीर जिनने उत्तम चित्त धरीए
वीण ॥ ७ ॥ तस पद पद्मनी सेवा करतां, सेजे शिव
सुंदरी वरीए रे. वीण ॥ ८ ॥ इति वीर स्तवनम् ॥

॥ अथ श्री वीरप्रभुनुं दीवालीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ भारग देसक सोकनो रे, केवल ज्ञान निधान
॥ जाव दया सागर प्रभु रे, परब्रपगारी प्रधानो रे
॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध अया ॥ संघ सकल आधारो
रे, हवे इण जगतमां ॥ कोण करणे उपगारो रे ॥ वी
रण ॥ २ ॥ नाथ विहूणी सैण ज्युं रे, वीर विहूणा रे
जीव ॥ साधे कोण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे
॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणो बाल ज्युं रे, अरहो प
रहो अग्रमाय ॥ वीर विहूणा जीवका रे, आकुल व्या
कुल धाय रे ॥ वीरण ॥ ४ ॥ संसय ठेदक वीरनो रे,
विरह ते केम खमाय ॥ जे हीठे सुख उपजे रे, ते वि
ण केम रहेवाय रे ॥ वीण ॥ ५ ॥ निरजामिक जव
समुझनो रे, जवअरुदि सत्तवाह ॥ ते परमेश्वर विण
मले रे, केम वाधे उच्चाहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर अ
कां पण श्रुत तणो रे, हतो परम आधार ॥ हवे शां

श्रुत आधार ठे रे ॥ अहो जिनसुझ सारो रे ॥ वीर०
॥ ७ ॥ त्रण कालें सवि जीवने रे, आगमधी आणंद
॥ सेवो ध्यावो ज्ञवि जना रे, जिन पणिमा सुखकंदो
रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचार्य सुनि रे, सहूने ए
णीपरे सिद्धि ॥ ज्ञव ज्ञव आगम संगधी रे, देवचंड
पद लीध रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति दीवाली स्तवन ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीसे
जिनराय ॥ सहगुरु स्वामीनी सरसती, प्रेमे प्रणामुं
पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गं
जीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वरुवीर
॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करी प्रणाम ॥
ज्ञविक जीवना हित ज्ञणी, पुठे गोतम स्वाम ॥ ३ ॥
सुक्ति मारग आराधीये, कहो केणी पेरं अरिहंत ॥
सुधा सरस तव वचनरस, ज्ञांखे श्री जगवंत ॥ ४ ॥
अतिचार आदोइए, व्रत धरिये गुरु शाख ॥ जीव ख
मावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥ विधिभुं
वदी वोसराविये, पापस्थान अठार ॥ चार शरण

नित्य अनुसरो, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ्र क
णी अनुसोदिये, ज्ञाव ज्ञलो मन आणी ॥ अणसण अ
वसर आदरी, नव पद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुभ्रगति
आराधन तणा, ए ठे दश अधिकार ॥ चित्त आणीने
आदरो जिम पासो ज्ञव पार ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पेहेली ॥ ए ठींकी किहां राखी ए देशी

ज्ञान दरिस्सण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आच
र ॥ एह तणा इह जव परजवना, आलोइए अतिचा
र रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुण खाणी ॥ वीर के
एम वाणी रे ॥ प्रा० ॥ गुरु उलविये नहीं गुरु वि
ये, काले धरी बहु मान ॥ सूत्र अर्थ तडुजय करी व
धां, ज्ञणीये वही उपधान रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ ज्ञानो
गरण पाटी पोथी, ठवणी नोकारवाली ॥ तेह तणी
कीधी आहातना ॥ ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥
इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह
आ जव परजव वली रे जवोजव ॥ मिठा डुक्क ते
रे ॥ ४ ॥ प्राणी लसकीत ड्यो शुद्ध जाणी ॥ जिन

(७१ए)

वचने शंका नवी कीजे, नवि परमत अजिलाष ॥ सा
धु तणी निंदा परिहरजो, फल संदेह म राख रे ॥ प्रा०
॥स०॥ ५ ॥ सुठपणुं ठंको परशंसा, गुणवंतने आदरि
ये ॥ साहस्मिने धर्म करी स्थिरता, ज्ञक्ति प्रज्ञावना क
रीए रे ॥ प्रा०॥स० ॥ ६॥संघ चैत्य प्रासाद तणो जे,
अवर्ण वाद मन लेख्यो ॥ इव्य देवको जे विणसा
रुच्यो, विणसंतां नवेख्यो रे ॥ प्रा०॥स०॥७॥ इत्यादि
क विपरीत पणाथी, समकीत खंमद्युं जेह ॥ आ ज्ञव
परज्ञव वली रे ज्ञवो ज्ञव, मित्रा पुक्कम तेहरे ॥ प्रा०
॥ ८ ॥ चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ पांच समिति त्र
ण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचन माय ॥ साधु तणे धर्म
परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ प्रा० ॥ चा०
॥ ९ ॥ श्रावकने धर्म सामायिक,पोलहमां मन वाली
॥ जे जयणा पूर्वक जे आठे, प्रवचन माय न पाली रे
॥ प्रा०॥चा० ॥ १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चा
रित्र म्होळ्युं जेह ॥ आ ज्ञवण ॥ मित्रा० ॥ ११ ॥ प्रा०
॥चा०॥ वारे जेदे तप नवी कीधो, ठते योगे निज श
क्ते ॥ धर्म मन वच काया वीरज, नवि फोरवीयुं ज्ञ
क्ते रे ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ १२ ॥ तप वीरज आचार ए

एषी पेरे, विविध विराध्या जेह ॥ आ जण ॥ मिच्छाण ॥
प्रा० ॥ १३ ॥ चा० ॥ वलीय विशेषे चारित्र केरा, अति
चार आलोक्ष्ये ॥ वीरजिणोसर वयण सुणीने, पाप
मयल सबी धोइए रे ॥ प्रा० ॥ चाण ॥ १४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

पृथिवी पाणी तेज, वाज वनस्पति ॥ ए पांवे
आवर कह्या ए ॥ करि कर्षण आरंज, क्षेत्र जे खेती
यां ॥ कूवा तलाव खणावीया ए ॥ १ ॥ घर आरंज
अनेक, टांकां ज्ञोचरां ॥ झेनी माल चणावीया ए ॥
लिंपण घुंपण काज, एषीपरे परपरे ॥ पृथ्वीकाय
विराधीया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, जीलण
अपकाय ॥ ठोती धोती करी दूहव्यां ए ॥ ज्ञाणीग
कुंजार, लोह सोवनगरा ॥ ज्ञारुजुंजा लिहादागरा ए
॥ ३ ॥ तापण होकण काज, वस्त्र निखारण ॥ रंगण
रांधण रसवती ए ॥ एषी परे कर्मादान, परे परे
लवी ॥ तेज वाज विराधीया ए ॥ ४ ॥ वामी वन
राम, वावी वनस्पति ॥ पान फुल फल चुंटीयां ए ॥

(७१)

पहोंक पापनी शाक, शेक्यां सूकव्यां ॥ डेद्यां बुद्ध्यां
आश्रीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीने एरंरु, घाणी घालीने ॥
घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलुमांहि, पी
ली शेकनी ॥ कंदमूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम ए
केंडि जीव, हएया हएावीया, ॥ हएतां जे अनुमोदि
याए ॥ आ जव परजव जेह ॥ वलीण ॥ ते सुजण
॥ ७ ॥ क्रमी सरमीया कीमा, गारर गंमोला ॥ इयल
पोरा अलशीयां ए ॥ वाला जलो चुमेल, विचलित र
सतणा ॥ वली अथाणा प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ एम वे
इंडिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते सुजण ॥ उदेही जू
लीख, मांकण मंकोमा, चांचरु कीमी कंधुआ ए
॥ ९ ॥ गइहीयां धीमेल, कानखजुरमा ॥ गींगोमा
धनेरीयां ए ॥ एम तेइंडिय जीव, जे में डुहव्या ॥
ते सुजण ॥ १० ॥ माखी मडर मांस, मसा पतंगी
यां ॥ कंसारी कोलियावमा ए ॥ ठींकण विठु तीरु,
जमरा जमरीयो, कोतांवग खरु माकनी ए ॥ ११ ॥
एम चौरिंडिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते सुजण ॥ ज
लमां नाखी जाल, जलचर डुहव्या ॥ वनमां मृग

संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीरुच्या पंखी जीव, पानी पा
झमां ॥ पोपट घाट्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंडिय जी
व, जे में डुहव्या ॥ ते सुजण ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वाणी वाणी हितकरी
जी ॥ ए देशी ॥

क्रोध लोत्र जय हास्यधीजी, बोल्यां वचन अ
सत्य ॥ कूर करी धन पारकांजी, लीधां जेह अद
रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिच्छाडुक्रम आज ॥ तुम सां
महाराजरे ॥ जिनजी ॥ देइ सां काजरे ॥ जिन
जी ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यचनां
जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लंपट पणेजी, प
णुं विरुंव्यो देहरे ॥ जिनजी ॥ मि० ॥ २ ॥ परि
हनी ममता करीजी, जवजव मेली आश्र ॥ जे जी
हांनी ते तीहां रहीजी, कोइ न आवी साश्ररे ॥ जि
नजी ॥ मि० ॥ ३ ॥ रयणी जोजन जे कर्पाजी,
कीधां जहय अजहय ॥ रसना रसनी लालचेजी, प
प कर्पा प्रत्यहरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ

नारीयांजी, वली न्नाग्यां पञ्चरक्काण ॥ कपट हेतु
किरिया करीजी, कीघां आप वखाण रे ॥ जि० ॥५॥
मि० ॥ त्रण ढाल आठे डुहेजी, आलोया अतिचार ॥
शिवगति आराधन तणोजी, ए पेहेलो अधिकार रे ॥
जिनजी० ॥ ६ ॥ मि० ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलमीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलमीरे ॥ अथवा
द्वयो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ साहेल
मीरे ॥ पादो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीघां संजा
रीये ॥ सा० ॥ हियमे धरी विचार तो ॥ शिवगति आ
राधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जी
व सवे खमावीए ॥ सा० ॥ योनी चोरासी लाखतो ॥
मन शुद्धे करी खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुं रोश न
राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ
न जाणो शत्रु तो ॥ रागद्वेष एम परिहरो ॥ सा० ॥
कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहम्मि संघ खमाविये
॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुंब करी
खामणां ॥ सा० ॥ ए जिन शासन रीति तो ॥ ५ ॥ ख

भीए अने खमावीए ॥ सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥
शीवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए त्रीजो अधिकार
तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मूर्खा
मेहुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम
म द्वेष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न कीजीए
॥ सा० ॥ क्रूपां न दीजे आल तो ॥ रति अरति मि
थ्या तजो ॥ सा० ॥ माया मोस जंजालतो ॥ ८ ॥
त्रिविध त्रिविध वोसराविये ॥ सा० ॥ पाप स्थान प्र
हारतो ॥ शिव गति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए चोरो
अधिकार तो ॥ ए ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहा आ
विया ए ॥ ए देशी ॥

जन्म जरा मरणे करीए, ए संसार असार तो ॥
कर्यां कर्म सह अनुजवे ए, कोइ न राखण दारतो
॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध जगवं
तो ॥ शरण धर्म श्री जैननो ए, साधु सरण गुणवं
तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परहरि ए, चार शरण वि

(७१५)

त धारतो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधि
कारतो ॥ ३ ॥ आ ज्ञव परज्ञव जे कर्यां ए, पाप कर्म
केइ लाख तो ॥ आत्म साखे निंदीए ए, पम्किमिए गुरु
शाख तो ॥ ४ ॥ मिष्ठ्यामति वर्त्तावियां ए, जे ज्ञांख्यां
उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशे ए, वली उठाप्यां
सूत्रतो ॥ ५ ॥ घम्यां घमाव्यां जे घणांए, घंटी हल
हथिआर तो ॥ ज्ञवज्ञव मेली मूकीयां ए, करतां जीव
संहारतो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीयां ए, जन्म जन्म
परिवार तो ॥ जन्मांतर पहोता पठीए, कोइ नकीधी
तारतो ॥ ७ ॥ आज्ञव परज्ञव जे कर्यां ए, एम अधि
करण अनेकतो ॥ त्रिविध त्रिविध वोत्तिराविये ए,
प्राणी हृदय विवेकतो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा एम करी
इ, पाप कर्यां परिहारतो ॥ शिवगति आराधन तणो
ए ॥ ए ठो अधिकार तो ॥ ए ॥ इति.

॥ ढाल ठठी ॥ आदि तुं जोयने

आपणी ए देशी ॥

धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥

दान शीयल तप आदरी, टाढ्यां दुष्कर्म ॥ १ ॥ ध
 न्य० ॥ शत्रुजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ यु
 ते जिनवर पूजीया, वली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥
 पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिनहर जिन चैत्य ॥ संघ
 चतुर्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ धन्य० ॥ ३ ॥
 शिक्कमणां सुपरे कर्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरिज
 जायने, दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्म कारज
 नुमोदिये, इम वारंवार ॥ शिवगति आराधन तणो,
 सातमो अधिकार ॥ धन० ॥ ५ ॥ ज्ञाव जलो म
 आणीये, चित्त आली ठाम ॥ समता ज्ञावे ज्ञाविये,
 ए आत्मराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण ज
 वने, कोइ अवर न होय, ॥ कर्म आप जे आचख
 जोगवीये सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समताविण जे अ
 सरे, प्राणी पुण्य काम ॥ ठार उपर ते लीपणुं, जा
 र चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ ज्ञाव जलीपरे ज्ञाविये,
 धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधन तणो, ए आ
 अधिकार ॥ ध० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगीरी नुपरे ए देशी ॥

हवे अवसर जाणी, करिये संक्षेपण सार ॥ अ
 णसण आदरिये, पचस्की चारे आहार ॥ ललुता सवि
 मुकी, ठांकी ममता अंग ॥ ए आत्म खेले समता
 ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारे कीधा, आहार अनंत
 निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचियो रंक
 ॥ डुलहो ए वली वली, अणसणनो परिणाम ॥ एथी
 पामीजे, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धना शा
 लिज्जड, खंधो मेघ कुमार ॥ अणसण आराधी, पा
 म्या ज्ञवनो पार ॥ शिव मंदिर जाशे, करी एक अव
 तार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ द
 शमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मू
 को शिव सुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाये, दुर्ग
 ति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चौद पूरवनो सा
 र ॥ ४ ॥ जन्मांतर जातां, जो पामे नवकार ॥ तो
 पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नवपद सरखो,
 मंत्र न कोइ सार ॥ इह जवने परजेवे, सुख संपत्ति
 दातार ॥ ५ ॥ जुठ नीव नीलनी, राजा राणी घाय

(७१८)

॥ नवपद महिमाथी, राजसिंह महराय ॥ राणी र
नवती बेहु, पान्यां ठे सुरजोग ॥ एक नवथी लेशे
सिद्धि वधु संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतिने ए वली, मं
फळयो ततकाल ॥ फणिवर फीटीने, प्रगट थड फू
माल ॥ शीव कूमरे योगी, सोवन पुरिसो कीध ।
एम एणे मंत्रे, काज घणानां सीध ॥ ७ ॥ ए द
अधिकारे, वीर जिणेसर जाख्यो ॥ आराधन केरो
विधि जेणे चित्तमां राख्यो ॥ तेणे पाप पखाळी, न
वज्रय दूरे नांख्यो ॥ जिन विनय करंतां, सुमति अ
त रस चाख्यो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ढाल आठमी ॥ नमो नवि जावशुं॥ए देश

॥ सिद्धारथ राय कुल तिलोए, त्रिशला मात
व्हार तो ॥ अवनितले तुमे अवतस्था ए, करवा
म उपगार ॥ १ ॥ जयोजिन विरजीए ॥ में अपरा
कर्या घणाए, केहेतां न लहुं पारतो ॥ तुम चरणे
व्या नणीए, जो तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥
श करीने आवियोए, तुम चरणे महाराज तो ॥

(७१ए)

व्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज०
कर्म अलूजण आकरांए, जन्म मरण जंजाळ तो ॥
हूं हुं एहधी उजग्यो ए, बोमावो देव दयाळ ॥ ज० ॥
॥ ४ ॥ आज मनोरथ सुज फट्या ए, नागं डुःख
दंदोलतो ॥ तूगो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्या पुन्यक
छोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ नव नव विनय तुमारमोए,
नाव चक्ति तुम पाय तो ॥ देव दया करी दीजीए ए,
बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ इय तरण तारण, सुगति कारण, डुःख निवार
ण जगजयो ॥ श्री वीर जिनवर, चरण शुणतां, अधि
क मन उलट घयो ॥ १ ॥ श्री विजय देव, सुरिंद
पटघर, तीर्थ जंगम, इण जगे ॥ तप गहपति श्री,
विजय प्रन्न सूरि, सूरि तेजे जगमगे ॥ २ ॥ श्री
हीरविजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्त्ति विजय सुरगुरु
समो ॥ तस शिष्य वाचक विनय विजये, थुण्यो जि
१, चोवीसमो ॥ ३ ॥ सइ सत्तर संवत, जंगणत्रीसे,
रही रांदेर चोमास ए ॥ विजय दशमी, विजय कार

ए, कीयो गुण, अज्यास ए ॥ ४ ॥ नरन्नव आराधन
सिद्धि साधन, सुकृत लील विदासए ॥ निर्जरा हेत,
स्तवन रचीयुं, नामे पुण्य प्रकाशए ॥ ५ ॥ इति श्री
वीर जिन आराधनारूप पुण्य प्रकाश स्तवन संपूर्णम्.

अथ श्री ज्ञानपंचमीनुं स्तवन.

पुण्य प्रशंसीये. ए देशी.

सुत सिद्धारथ नुपनोरे, सिद्धारथ जगवान ॥ वा
रह परखदा आगलेरे, ज्ञाखे श्री वर्धमानोरे ॥ १ ॥ ज
वियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायोरे, ज्ञान
जगति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतम तणा
रे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वहुं,
जिणधी दंसण होयरे ॥ २ ॥ ज० ॥ ज्ञाने चास्त्रि गु
ण वधेरे, ज्ञाने उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने श्रिविरपणुं न
हेरे, आचारज उवझायरे ॥ ३ ॥ ज० ॥ ज्ञानी श्वासां
जासमांरे, कठिण करम करे नाश ॥ वहि जेम श्वंश
दहेरे, कृणमां ज्योति प्रकाशोरे ॥ ४ ॥ ज० ॥ प्रथ

ज्ञान पढे दयारे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणंग
पगधालीयेरे, जेम चढे मोह आवासोरे ॥ ५ ॥ ज० ॥
मइ सुअ उहि मणपज्जवारे, पंचम केवल ज्ञान ॥ चउ
मुगां श्रुत एक ठे रे, स्वपर प्रकाश निदानरे ॥ ६ ॥
॥ ज० ॥ तेहनां साधन जे कह्यारे, पाटी पुस्तक आ
दि ॥ लखे लखावे साचवेरे, धर्मी धरी अप्रमादोरे
॥ ७ ॥ ज० ॥ त्रिविध आशातना जे करेरे, जणतां
करे अंतराय ॥ अंधा बेहेरा बोकनारे, मुगा पांगुला
थायरे ॥ ८ ॥ ज० ॥ जणतां गणतां न आवनेरे,
न मले बद्धन चीज ॥ गुण अंजरी वरदत्त परेरे, ज्ञा
न विराधन बीजरे ॥ ९ ॥ ज० ॥ प्रेमे पुढे परखदारे
प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणअंजरी वरदत्तनोरे, करो
अधिकार पसायोरे ॥ १० ॥ ज० ॥ इति

॥ ढाल बीजी ॥

कपूर होय अति उजलोरे--ए देशी.

जंबुहीपना जरतमां रे, नयर पदमपुर खाल ॥
अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तासरे ॥१॥

प्राणी, आराधो वरज्ञान ॥ एहज मुक्ति निदानरे ॥ प्रा
 णी० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनोरे, विनयादि
 गुणवंत ॥ पितरे ज्ञावा मूकीनरे, आठ वरस जब
 हुंतरे ॥ १ ॥ प्रा० ॥ पंक्ति यत्न करे घणोरे, मात्र ज
 णावण हेत ॥ अक्षर एक न आवरे, ग्रंथ तणी शी
 चेतरे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ कोढे व्यापी देहमीरे, राजा रा
 णी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमांरे, सिंहदास धन
 वंतरे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ कपूरतिलका गेहिनीरे, शीलेशो
 जित अंग ॥ गुणभंजरी तस बेटमीरे, मुंगी रोगे व्यं
 गरे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ सोल वरसनी सा अरे, पामी यौ
 वन वेश ॥ दुर्जग पण परणे नहींरे, मात पिता धरे
 खेदरे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणे अवसरे न्यानमांरे, विज
 यसेन गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायहरे, चरण का
 ण व्रत धाररे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक जूपालने,
 दीध वधाइ जाम ॥ चतुरंगी सेना सजीरे, वंदन जाव
 तामरे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना सांजलेरे, पुरजन स
 हित नरेश ॥ विकसित नयण वदन मुदारे, नहि प्र
 माद प्रवेशरे ॥ ९ ॥ प्रा० ॥ ज्ञान विराधन परजवे,

(७३३)

मूरख पर आधीन ॥ रोगे पीरुचा टलवलेरे, दीसे
दुःखीया दीनरे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ ज्ञान सार संसारमां
रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥ ज्ञान विना जग जीवमारे,
न लहे तत्त्व संकेतरे ॥ ११ ॥ प्रा० श्रेष्ठी पुढे मुल्लिंद
नेरे, ज्ञाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुज अंगजारे,
कवण कर्म विरतंतरे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ इति

॥ ढाल त्रीजी ॥

सूरती महिनानी.-देशीमां.

धातकीखंरुना नरतमां, खेटक नयर सुठाम ॥
व्यवहारी जिन देव ठे, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अं
गज पांच सोह्यामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंफित पा
से शीखवा, ताते मूक्या कुमार ॥ २ ॥ वालस्वजावे
रामते, करतां इहामा जाय ॥ पंफित मारे त्यारे, मा
आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी शंखिणी शीखवे, न
एवानुं नहीं काम ॥ पंरुचो आवे तेरुवा, तो तस ह
एज्यो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खनियो लेखण, वाली की
घां राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने झख

॥ ५ ॥ पारुपरे मोहोटा अथा, कन्या न दीए कोया।
 शोठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥
 त्रटकी ज्ञाखे ज्ञामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री
 होये मातनी, जाणे ठे सौ कोय ॥ ७ ॥ रेरे पा
 पिणी सापिणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसाली कहे
 ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शोठे मारी सुंदरी,
 काल करी तत खेव ॥ ए तुज बेटी उपनी, ज्ञान विराव
 न हेंव ॥ ९ ॥ मूर्खंगत गुणमंजरी, जातिसमरणपा
 मि ॥ ज्ञान दीवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि
 ॥ १० ॥ शोठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग ॥
 गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वंछित योग ॥ ११ ॥
 उज्जवल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥ नमो ना
 एस्स गणणुं गणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूत
 उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगत
 ठोश्ये, धान्य फलादि उदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीव
 तणो, साधिनु मंगल गेह ॥ पोसहमां न करी शकें, ते
 ए विधि पारणे एह ॥ १४ ॥ अथवा सौज्ञान्य पंचमी,
 उज्जल कार्त्ति मास ॥ जावज्जीव लगे सेदीये उजम

(७३५)

विधि खास ॥ १५ ॥ इति.

॥ ढाल चौथी ॥

एकवीशानी देशीमां.

पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥ चावखी दो
रा रे, पाटी पाटला वरतणां ॥ मसी कागल रे, कांबी
खन्निआ लेखिणी ॥ कवली भावली रे, चंडुआ ऊरम
र पुंजणी ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ प्रासाद प्रतिमा तास नू
खण, केसरचंदन भावली ॥ वासकूंषि वालाकूंचि,
अंग लुहणां भावली ॥ कलश थाली मंगल दीवो, आ
रति ने धूपणां ॥ चरला सुहपत्ती सामीवच्चल, नो
कारवाली आपना ॥ २ ॥ ढाल ॥ ज्ञान दरिसणारे, च
रणनां साधन जे कह्यां ॥ तप संयुतरे, गुणमंजरीए
सदह्यां ॥ नृप पूठेरे, वरदत्त कुंअरने अंगरे ॥ रोग उप
नोरे, कवण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ मुनिराज
जाखे जंबुद्वीपे, जगत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी
वसु तास नंदन, वसुत्तार वसुदेव नाम ए ॥ वनमांहे
रमतां दोय बंधव, पुण्य योगे गुरु मळ्या ॥ वैराग्य पा
मी जोग वामी, धर्म धामि संवर्या ॥ ४ ॥ ढाल ॥ ल

धु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी लहे ॥ पणसय मुनि
 ने रे, सारण वारण नितु दिए ॥ कर्मयोगे रे, अशुभ
 उदय अयो अन्यदा ॥ संधारो रे, पोरिस्ती जणी पोढ्या
 यदा ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ सर्व घाति निंद व्यापी, साधु मा
 गे वायणा ॥ उंधमां अंतराय आतां, सूरि हूआ दूम
 णा ॥ ज्ञान उपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिच्छा जूत
 मो ॥ पुण्य अमृत ठोळी नाख्युं, ज्यो पाप तणो घ
 मो ॥ ६ ॥ ढाल ॥ मन चिंतवेरे, कां मुज लाग्युं पा
 प रे ॥ श्रुत अन्यास्यो रे, तो एवमो संताप रे ॥ मुज
 बांधव रे, जोयण सयण सुखे करे ॥ मूरखता रे, आ
 ठ गुण सुख उच्चरे ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ वार वासर कोड
 मुनिने, वायणा दीधी नहीं ॥ अशुभ ध्याने आयु
 री, जूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूठ ज
 पणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव मान सरा,
 हंसगति पाम्यो सही ॥ ८ ॥ ढाल ॥ वरदत्तनेरे, जनि
 समरणा उपन्युं ॥ जव दीठेरे, गुरु प्रणामी कहे शुभ
 मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दीवमो ॥ गु
 श्रवणुण रे, जासन जे जग परवमो ॥ ९ ॥ त्रुटक ॥

(७३७)

ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो केम आवने ॥
गुरु कहे तपत्री पाप नासे, टाढ जेम घन तावने ॥
जूप पञ्जणे पुत्रने प्रज्जु, तपनी शक्ति न एवकी ॥
गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा ल्यो वेवकी
॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

मेंदी रंग लाग्यो—ए देशी.

सद्गुरु वयण सुधारसे रे, जेदी साते घात ॥
तपशुं रंग लाग्यो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो
रोग मिछ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पंचमी तप महिमा
घणो रे, प्रसयों महीयल मांही ॥ त० ॥ कन्या स
हस सयंवरा रे, वरदत्त परणयो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥
जूपे कीधो पाटवी रे, आप अयो मुनि जूप ॥ त० ॥
ज्जोम कांत गुणे करी रे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥ त०
॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, जोगवे जोग अखं
रु ॥ त० ॥ वरसे वरसे जजवे रे, पंचमी तेज प्रचंरु
॥ त० ॥ ४ ॥ ज्जुक्त जोगी अयो संजमी रे, पाले व्रत खट

काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंडने रे, परणावे नि
 ज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी घइ साधवी
 रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण उपनो रे, जि
 हां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे रे,
 गुणवंत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे,
 पुण्ये कीधो जेट ॥ त० ॥ ७ ॥ सूरसेन राजा शयो
 रे, सो कन्या नरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी के
 रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥ तिहां पण
 ते तप आदर्युं रे, लोक सहित नूपाल ॥ त० ॥ ९ ॥
 हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य नदार ॥ त० ॥ १० ॥
 चार महाव्रत चौपशुं रे, श्री जिनवरनी पास ॥ त० ॥
 ॥ केवलधर मुक्ति गयो रे, सादि अनंत निवास ॥ त० ॥
 ॥ १० ॥ रमणी विजय शुजापुरी रे, जंबु विदेह म
 ऊर ॥ त० ॥ अपरसिंह महीपालने रे, अमरावत
 घर नार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत घकी चवी रे, गुणमं
 रीनो जीव ॥ त० ॥ मानस सर जेम हंसलो रे, न
 म धर्यु सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीशे वरसे राजयो
 सहस चोराशी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता रे

(७३ए)

रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमी तप म
हिमा विषे रे, ज्ञाखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे
जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेने तस उपकार ॥ त०
॥ १४ ॥ इति ॥

॥ लाल ठठी ॥

करकुंरुने करुं वंदणा—ए देशी.

चोवीस दंरुक वारवा ॥ हुं वारी लाल ॥ चोवी
शमो जिनचंद रे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणंत
स्वर्गथी ॥ हुं० ॥ त्रिशला नर सुखकंद रे ॥ हुं० ॥ १ ॥
महावीरने करुं वंदना ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंच
मी गतिने साधवा ॥ हुं० ॥ पंचम नाण विलास रे ॥
हुं० ॥ महानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हुं० ॥ पंचमी तप प्र
काश रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ अपराधी पण उद्धर्यो ॥ हुं०
॥ चंरु कोशिल साप रे ॥ हुं० ॥ यज्ञ करता वांजणां ॥
हुं० ॥ सरखा कीधा आप रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ देवानंदा त्रा
हणी ॥ हुं० ॥ शिखरदत्त वली विप्र रे ॥ हुं० ॥ व्या
सी दिवस संबंधथी ॥ हुं० ॥ काभित पूर्यो क्षिप्र रे ॥ हुं०

॥ ४ ॥ कर्म रोगने टालवा ॥ हुं० ॥ सवि औषधनो
जाण रे ॥ हुं० ॥ आदर्यो में आशा धरी ॥ हुं० ॥
मुज उपर हित आण रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्री विजय
सिंह सूरीशनो ॥ हुं० ॥ सत्यविजय पन्यास रे ॥ हुं०
॥ शिष्य कपूरविजय कवि ॥ हुं० ॥ चंद्रकिरण जस
जास रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्ये ॥
हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे ॥ हुं० ॥ जिनविजय क
हे मुज हजो ॥ हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे
॥ हुं० ॥ ७ ॥

कलस.

इय वीर लायक विश्वनायक, सिद्धि दायक सं
स्तव्यो ॥ पंचमी तप संस्तवन टोरर, गुंथी जिन क
ठे ठव्यो ॥ पुण्य पाटण खेत्रमांहे, सत्तर त्राणु सं
त्स रे ॥ श्री पार्श्व जन्म कट्याण दिवसे, सकल त्रि
मंगल करे ॥ १ ॥ इति ॥

(७४)

॥ अथ ठ आवस्यकनुं स्तवन ॥

इहा.

चोविशे जिनवर नमुं, चतुर चेतना काज ॥

आवस्यक जिणे नपदिस्या, तेषुणस्युं जिनराज ॥१॥

आवस्यक आराधीए, दिवस प्रते दोयवार ॥ इरित दो

ष दूरे टले, ए आतम नपकार ॥ २ ॥ सामायक

चोवीसठो, वंदण पढिकमणेण ॥ कानसग्ग पच्चरका

ण कर, आतम निर्मल एण ॥ ३ ॥ जेर जाय जिम

जांगुली, मंत्र तणे महिमाय ॥ तेम आवस्यक आद

रे, पातक दूर पलाय ॥ ४ ॥ जार तजी जिम जार

वही, हेले हलुन थाय ॥ अतिचार आदोयतां, जन्म

दोष तिम जाय ॥ ५ ॥

॥ ठाल १. कपूर होय अति नजलुं, ए देशी ॥

पहेलुं सामायक करो रे, आणी समता ज्ञाव ॥

राग रोष दूरे करो रे, आतम एह स्वज्ञाव रे ॥ प्राणी

समता ठे गुण गेह, एतो अन्निनव अमृत मेह रे ॥

प्राणी समता ठे गुण गेह, ए आंकणी ॥ १ ॥ आपे

आप विचारीए रे, रमिए आप स्वरुप ॥ ममता जे
 परजावनी रे, विषमो ते विष कूप रे. प्राणीण ॥ २ ॥
 जव जव मेली सुकीयां रे, धन कुटुंब संजोग ॥ वार
 अनंति अनुजव्यां रे ॥ सवि संजोग विजोग रे. प्राण
 ॥ ३ ॥ शत्रु मित्र जग को नहीं रे, सुख दुःख माया
 जाल ॥ जो जागे चित्त चेतना रे, तो सवि दुःख वि
 सराल रे. प्राण ॥ ४ ॥ सावद्य जोग सवि परिहरो रे,
 ए सामायक रुप ॥ हूवा ए परिणामधी रे, सिद्ध अ
 नंत अरुप रे. प्राण ॥ ५ ॥

॥ ढाल ९. साहेलमीनी देशी ॥

आदीश्वर आराहीएं साहेलमी रे, अजित जजो
 जगवंत तो ॥ संजवनाथ सोहामणा, सा० अन्ननंदन
 अरिहंत तो ॥ १ ॥ सुमति पद्मप्रज्ज पूजीए, सा०
 समरु स्वामी सुपार्श्व तो, चंडप्रज्ज चित्त धारीए, सा०
 सुविधि सुविधि ऋद्धिवास तो ॥ २ ॥ शीतल नृत्य
 दिनमणि, सा० श्री पूरण श्रेयांस तो, वासुपूज्य मु
 पूजीआ, सा० विमल विमल जस हेत तो ॥ ३ ॥ करुं अन
 त उपासना, सा० धरम धरम धूर धारतो, आंति कुं

शुभ्र मङ्घ्रि नसुं, सा० मुनिसुव्रत वरुवीर तो ॥४॥
 चरण नसुं नमीनाथना, सा० नेमीश्वर करुं ध्यानतो,
 पार्श्वनाथ प्रभु पूजीए, सा० वंडु श्री वर्धमान तो
 ॥ ५ ॥ ए चोवीशे जीनवरा. सा० त्रिभुवन करण
 ज्योत तो, मुक्तिपंथ जेणे दाखव्यो, सा० निर्मल के
 वल ज्योततो ॥ ६॥ समकित शुद्ध एहथी होए. सा०
 लीजे जवनो पार तो, बीजुं आवश्यक इश्युं, सा०
 चोवीसहो सार तो ॥ ७ ॥

॥ ढाल ३. गिरिमां गोरो गीरुनु ए देशी ॥

वे कर जोमी (१) गुरुचरणे देन वांदणां रे,
 आवश्यक पचवीश धारो रे ॥ धारो रे (१) दोष वत्री
 श निवारिए रे ॥ १ ॥ चार वार गुरु चरणे मस्तक
 नामीए रे ॥ वार करी आवर्त खांभो रे, खांभो रे
 (१) वली तेत्रीश आशातना रे ॥ १ ॥ गीतारथ गु
 ण गिरुआ गुरुने वंदतां रे, नीच गोत्र दाय जाय ॥
 थाए रे (१) उंच गोत्रनी अरजना रे ॥ ३ ॥ आंण
 उदंगे कोइ न जगमां तेहनी रे, परजव लहे सौजा
 ग्य ॥ ज्ञायग रे (१) दीपे जगमां तेहनुं रे ॥ ४ ॥

कृष्णराय मुनिवरने दीघां वांदणां रे ॥ हायक सभ
कित सार, पाम्या रे (१) तीर्थकर पद पामशे रे ॥५॥
शीतल आचारज जिम ज्ञाणेजने रे ॥ इय वांदणां
दीघ; ज्ञावे रे (१) देतां वली केवल लहुं रे ॥ ६ ॥
ए आवश्यक त्रीजुं एणी पेरें जाणज्यो रे ॥ गुरुवंदना
अधिकार, करजो रे (१) विनयज्ञक्ति गुणवंतनी रे ७

॥ ढाल ४ ॥

चेतन चेतो रे चेतना, ए देशी.

ज्ञानादिक जिनवर कह्या रे, जे पांचे आचार
तो ॥ दोय वार ते दिन प्रते रे, पम्किमीए अतिचार,
जयोजिन वीरजी रे ॥ १ ॥ आलोइने पम्किमी रे,
मिठामि डुकर देय ॥ मन वच काया शुद्ध करी रे,
चारित्र चोखु करेय. जयो० ॥ २ ॥ अतिचार शब्द
गोपवे रे, न करे दोष प्रकाश ॥ माठी मद्ध तणी पं
रे, ते पामे परिहास. जयो० ॥ ३ ॥ शब्द प्रकाश
गुरु मुखे रे, होये तस ज्ञाव विशुद्ध ॥ ते हस्ती शर न
हीं रे, करे कर्म शुं जुद्ध. जयो० ॥ ४ ॥ अतिचार ५
म पम्किमी रे, धर्म करो निशुद्ध ॥ जित पताश

(७४५)

तिम वरो रे. जिम जग फल्लही मल्ल. जयो० ॥५॥
वंदितुं विधिं कहो रे, तिम पनिकमणा सूत्र॥ चोथुं
आवश्यक इशुं रे, पनिकमणा सूत्र पवित्र.जयो०॥६॥

॥ ढाल ५ ॥

हवे निसुणो इहां आवीआ, ए देशी.

वैद विचक्षण जेम हरे ए, पहेलां साल विकार
तो ॥ दोष शेष पठी रुजवा ए, करे उंसरु उपचार
तो ॥ १ ॥ अतिचार व्रण रुजवा ए, कानसग्ग तिम
होय तो ॥ नव पल्लव संजम हुवे ए, दूषण नव रहे
कोय तो ॥ २ ॥ कायानी थिरता करी ए, चपल
चित्त करो ठाम तो ॥ वचन जोग सवि परिहरी ए,
रमीए आतमरामतो ॥ ३ ॥ साल नसासादिक क
ह्या ए, जे सोले आगार तो ॥ तेह विना सवी परिह
रो ए, देह तणा व्यापार तो॥४॥आवश्यक ए पांचमुं ए,
पंचमी गति दातार तो ॥ मन शुद्धे आराधीएं ए, लहीएं
जवनो पार तो ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६ ॥

व्हालम वेहेला रे आवजो, ए देशी.

सुगुण पञ्चखाण आराधज्यो, एह ठे सुगतिनुं
हेत रे ॥ आहारनी लालच परिहरो, चतुर चित्त तुं चे
त रे. सु० ॥ १ ॥ साल काढ्युं व्रण रुजव्युं, गर वेदना
दूर रे ॥ पठी जला पछ्य जोजन अकी, वधे देह जिम
नूर रे. सु० ॥ २ ॥ तिम पस्किमण कानसग्गयी, ग
यो दोष सवि डुष्ट रे ॥ पठी पञ्चखाण गुण धारणे,
होये धर्म तनु पुष्ट रे. सु० ॥ ३ ॥ एहश्री कर्म कादव
टले, एह ठे संवर रूप रे ॥ अचिरति कुपश्री उयो,
तप अकलंक सरुप रे. सु० ॥ ४ ॥ पूरव जनम तप आ
चर्यो, विशाडया अइ नार रे ॥ जेहना नवणना नीरशी,
शमे सकल विकार रे. सु० ॥ ५ ॥ रावणे शक्ति शसे
हणयो, परुचो लखमण सेज रे ॥ दाश अरुतां सचेत
न अयो, विशाडया तप तेज रे. सु० ॥ ६ ॥ ठवुं आव
श्यक कह्युं, एहवुं ते पञ्चखाण रे ॥ ठ ए आवश्यक व
कह्यां, नमुं ते जग ज्ञाण रे. सु० ॥ ७ ॥

(७४७)

कलशः

तप गह्व नायक मुगति दायक, श्री विजय देव
सूरीश्वरो ॥ तस पद दीपक मोह जीपक, श्री विजय
प्रज्ञ सूरी गणधरो ॥ १ ॥ श्री कीर्ति विजय नवत्राय
सेवक, विनय विजय वाचक कहे ॥ ठ आवश्यक जे
आराधे, तेह शिव संपद लहे ॥ २ ॥ इति श्री पद्माव
स्यक स्तवन संपूर्ण.

॥ मुनिराज गुण स्तवन ॥

धन ते मुनिवरारे, जे चाले समझावे, ए देशी.

सम्यक् इष्टीने संतोषी, पंच महाव्रत पाले ॥ नि
ज स्वरूपथी तृप्ती शांति, अष्ट कर्मने टाले ॥ धन ते
मुनिवरारे, प्रभु ज्ञान गुण जंमार ॥ ए टेक ॥ १ ॥
पुन्य पापनी वृत्ति मुकी, सुरति सिद्धज सुखमां ॥ सा
त प्रकृति कृप उपसम करी, अरति नहीं कोइ दुःख
मां ॥ धन्य ॥ २ ॥ प्रेमे आनंद निजगुण माने, प
रिसह सहनमें सुरा ॥ जिन आणानी युक्ति जाणे, ध

र्म धुरंधर धीरा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ गृहस्थना संग पस
सर्वे, सुक्या ठे ते मनथी ॥ जीवित मरणानो संशय
बोनी, तुं हुं करे न तनथी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ अनंतानु
बंधि क्रोधादिक जे, तेनुं मूलज कापे ॥ निरवद्य वचन
श्री वीतरागी, सत्य स्वरूपे स्थापे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
दोष लगामे नहीं संजममें, आतम अनुभव लेश्या ॥
चलन हलन गुण प्रेम दयालुं, लुंचे शीरना केशा
॥ धन्य० ॥ ६ ॥ जम चेतननी जुजवी रीती, जाणे
अंतरजामी ॥ त्रिया देखी न झ्टी मांसे, विषय वा
एयने वामी ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ त्रण मोहनीने त्रोनीने,
समकीत रस चित माच्या ॥ पंच प्रमादनी वृत्ति मे
नी, ध्यान अजपा राच्या ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ त्रण योग
नी योग कलाने, जाणे परने पोते ॥ निमित्त कारण ने
उपादेय, कर्म मलने धोते ॥ धन्य० ॥ ९ ॥ आर्त रीते
कुध्यानकुं त्यागी, वर्त्ते ठे समजावे, धर्म शुक्लके मा
रग लागे, पान सुधा पय पावे ॥ धन्य० ॥ १० ॥ अंग
रागने कद्दानी कथनी, नवी कद्दे संजुता ॥ उपदेशी
वैराग अनुभव, अर्चित है अवधूता ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

(७४९)

उष्ण शीत पावोषणी रतमां, प्रेम उदासन प्यारा ॥
वावीस परिसह जीपन स्वामी, ज्ञान कृमा गुण धा
रा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ हास्य रति अरति शोक डुगंगा,
कदी आणे नहीं मनमें ॥ परम लाज अजयना दा
ता, ए मुनि लाजे जिनमें ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ बंध मो
हनी वरती मुकी, मुकी करमनी कहाणी ॥ राग द्वे
ष दोष योद्धा जीत्या, आत्म सुरत आणी ॥ धन्य०
॥ १४ ॥ एवा गुरुनी सेवा करतां, शिव सुख ठे ते
साचुं ॥ ए मुनिवरना चरणकमलनी, रेणी मस्तक या
चुं ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ धन्य धन्य ते मुनिवर जिनजी
ना, सदाय दर्शन करीए ॥ कहत नहु तेनी वाणी सुण
तां, केवल कमला वरीए ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अथ पूजाविधि आश्रयी श्री सुविधि

जिन स्तवन.

देशी चोपाइनी.

सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय
जयकार ॥ पूजानी विधि धारो सहि, श्री जगवंतेशा

र्म धुरंधर धीरा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ गृहस्थना संग पण
 सर्वे, सुक्या ठे ते मनथी ॥ जीवित मरणानो संशय
 ठोमी, तुं हुं करे न तनथी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ अनंतानु
 वंधि क्रोधादिक जे, तेनुं मूलज कापे ॥ निरवद्य वचन
 श्री वीतरागी, सत्य स्वरूपे स्थापे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
 दोष लगामे नहीं संजममें, आतम अनुभव लेश्या ॥
 चलन हलन गुण प्रेम दयालुं, लुंचे शीरना केशा
 ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ जरु चेतननी जुजवी रीती, जाणे
 अंतरजामी ॥ त्रिया देखी न इष्टी मांमे, विषय वा
 एयने वामी ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ त्रण मोहनीने त्रोमीने,
 समकीत रस चित माच्या ॥ पंच प्रमादनी वृत्ति ठो
 मी, ध्यान अजपा राच्या ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ त्रण योग
 नी योग कलाने, जाणे परने पोते ॥ निमित्त कारण ने
 उपादेय, कर्म मलने धोते ॥ धन्य० ॥ ९ ॥ आर्त रोंड
 कुध्यानकुं त्यागी, वत्ते ठे समजावे, धर्मशुकलके मा
 रग लागे, पान सुधा पय पावे ॥ धन्य० ॥ १० ॥ रंग
 रागने कहानी कथनी, नवी कहे संजुता ॥ उपदेशी
 वैराग अनुभव, अर्चित है अवधूता ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

(७४ए)

उष्ण शीत पावोषनी रतमां, प्रेम उदासन प्यारा ॥
बावीस परिसह जीपन स्वामी, ज्ञान क्षमा गुण धा
रा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ हास्य रति श्ररति शोक डुगंगा,
कदी आणे नहीं मनमें ॥ परम लाज्ज अज्जयना दा
ता, ए मुनि लाजे जिनमें ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ बंध मो
क्षनी वरती मुकी, मुकी करमनी कहाणी ॥ राग द्वे
ष दोष योद्धा जीत्या, आत्म सुरत आणी ॥ धन्य०
॥ १४ ॥ एवा गुरुनी सेवा करतां, शिव सुख ठे ते
साचुं ॥ ए मुनिवरना चरणकमलनी, रेणी मस्तक या
चुं ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ धन्य धन्य ते मुनिवर जिनजी
ना, सदाय दर्शन करीए ॥ कहत नहु तेनी वाणी सुण
तां, केवल कमला वरीए ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अथ पूजाविधि आश्रयी श्री सुविधि

जिन स्तवन.

देशी चोपाइनी.

सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय
जयकार ॥ पूजानी विधि धारो सहि, श्री जगवंते शा

मं धुरंधर वीरा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ गृहस्थना संग पण
सर्वे, मुक्या ठे ते मनथी ॥ जीवित मरणनो संशय
ठोमी, तुं हुं करे न तनथी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ अनंतानु
बंधि क्रोवादि क जे, तेनुं मूलज कापे ॥ निरवद्य वचन
श्री वीतरागी, सत्य स्वरूपे स्थापे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
दोष लगामे नही संजममें, आत्म अनुभव लेश्या ॥
चलन हलन गुण प्रेम दयालुं, लुंचे शीरना केशा
॥ धन्य० ॥ ६ ॥ जरु चेतननी जुजवी रीती, जाणे
अंतरजामी ॥ त्रिया देखी न इष्टी माने, निषय वा
ण्यने वामी ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ त्रण मोदनीने त्रोमीने,
समकीत रस चित माच्या ॥ पंच प्रमादनी वृत्ति ठे
नी, ध्यान अजपा राच्या ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ त्रण योग
नी योग कळाने, जाणे परने पोते ॥ निमित्त कारण ने
उपादेय, कर्म मलने घेते ॥ धन्य० ॥ ९ ॥ आर्त गोंड
कुल्यानकुं त्यागी, वत्ते ठे समजावे, धर्म शुक्रतेका मा
रग लागे, पान सुधा पय पावे ॥ धन्य० ॥ १० ॥ गंग
रागेने कळानी कथनी, नवी कडे संजुता ॥ उपदेशी
वैराग अनुभव, अर्चित हे अवधुता ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

(७४ए)

उष्ण शीत पावोषनी रतमां, प्रेम बुदासन प्यारा ॥
बावीस परिसह जीपन स्वामी, ज्ञान कृमा गुण धा
रा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ हास्य रति अरति शोक डुगंगा,
कदी आणे नहीं मनमें ॥ परम लाज अजयना दा
ता, ए मुनि लाजे जिनमें ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ बंध मो
हनी वरती मुकी, मुकी करमनी कहाणी ॥ राग द्वे
ष दोय योक्ष जीत्या, आतम सुरत आणी ॥ धन्य०
॥ १४ ॥ एवा गुरुनी सेवा करतां, शिव सुख ठे ते
साचुं ॥ ए मुनिवरना चरणकमलनी, रेणी मस्तक या
चुं ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ धन्य धन्य ते मुनिवर जिनजी
ना, सदाय दर्शन करीए ॥ कहत नहु तेनी वाणी सुण
तां, केवल कमला वरीए ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अथ पूजाविधि आश्रयी श्री सुविधि

जिन स्तवन.

देशी चोपाइनी.

सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय
जयकार ॥ पूजानी विधि धारो सहि, श्री जगवंतेशा

खे कही ॥ १ ॥ पूर्व सन्मुख स्नान आदरो, पश्चिम
दिशि रही वातण करो ॥ उत्तर वस्त्र पहरो सही, पु
जो उत्तर पूरव मुख रही ॥ २ ॥ घरमां पैसेतां नामे
जाग, देरातर करवानो लाग ॥ दोह दाध जूमिथी की
जीए, ऊंचुं नीचुं सहुथी वरजीए ॥ ३ ॥ पूरव उत्तर
मुख पूजा जाण, बीजी दिशे हुवे करतां दाण ॥ न
वांग पूजानो विधि एह, विधि करतां दोय निर्मल दे
ह ॥ ४ ॥ पग जंघा ने दाध वे तणी, खजा मस्तक
नी पांचमी जणी ॥ जाल कंठ हृदय ए जाण, उदर
नवसुं निलक बखाण ॥ ५ ॥ चंदन विण पूजा नवि
होय, वास्तपूजा प्रजातिं जोय ॥ कुमुम पुजा मथ्या
हे करो, लांजे धूप दीप आदरो ॥ ६ ॥ धूप उलोयो मा
वे पात, जमणे पाते दीप प्रकाश ॥ दोणुं आगल मू
को सही, चैत्यचंदन करो दक्षिण रही ॥ ७ ॥ हाथ
थकी जे जूमियें पसे, पग लागे मलीन आजनै ॥
मस्तकथी उंचुं परिदरो, नाजिथकी नीचुं मत करो
॥ ८ ॥ कीले ग्रायुं तर्जीयें फूल, एम फलनादिक रो
उप आसूल ॥ फूल पांचमी नवि वेदीए, कजिका नवि

(७५१)

ये नवि जेदीअें ॥ ए ॥ गंध धूप आखे आंणीयें, फूल
दीप बलि फल जाणीयें ॥ पाणी आठसुं सुंदर स
ही, आठ प्रकारी पूजा कही ॥ १० ॥ शांति कारण
नज्वल वस्त्र, लाज्ज कारणें पीत पवीत्र ॥ वयरी जी
पवा पहेरो श्याम, रातुं वस्त्र ते मंगल काम ॥ ११ ॥
पंच वरण वस्त्रे होय सिद्ध, खंडित सांध्यां वस्त्र निषि
द्ध ॥ पद्मासनने मौने रही, मुख कोश पूजाविधि कही
॥ १२ ॥ ए विधि पूजा कीजें सदा, जिम पाप्मीजे
सुख संपदा ॥ आनंद विमल पंडितनो दास, प्रीति वि
जय प्रणमे बद्धास ॥ १३ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथजीनुं ज्ञावपूजानुं स्तवन ॥

पूजाविधि मांहे ज्ञावीएजी, अंतरंग जे ज्ञाव ॥
ते सवि तुज आगल कहुंजी, साहेब सरल स्वज्ञाव ॥ १ ॥
सुहंकर, अवधारो प्रज्जु पास ॥ ए टेक ॥ दातण कर
तां ज्ञावीअेंजी, प्रज्जु गुण जल मुख शुद्ध ॥ ऊल उ
तारी प्रमत्तताजी, हो मुज निरमल बुद्ध ॥ सुहं ॥ २ ॥
जतनाए स्नान करीजीएजी, काढो मयल मिथ्यात ॥

अंगुष्ठो अंग शोषवीजी, जाणुं हुं अवदात ॥ सुहं०
 ॥ ३ ॥ खीरोदकना घोतीअंजी, चिंतवो चित्त संतो
 प ॥ अष्टकरम संवर जलोजी आव पमो मुखकोश ॥
 सुहं० ॥ ४ ॥ ठरशीयो एकाग्रताजी, केसर जक्ति क
 छोल ॥ अल चंदन चिंतवोजी, ध्यान घोल रंग रो
 ल ॥ सुहं ॥ ५ ॥ जाल वहुं आणा जलीजी, तिलक
 तणो ते जाव ॥ जे आजरण उत्तारीएजी, ते उत्तार्या
 परजाव ॥ सुहं० ॥ ६ ॥ जे निरमाद्य उत्तारीअंजी,
 ते तो चित्त उपाव ॥ पखाल करतां चिंतवोजी, निर
 मल चित्त समाधि ॥ सुहं० ॥ ७ ॥ अंगलूहणां वे भर
 मनांजी, आत्म स्वजाव जे अंग ॥ जे आजरण पहे
 रावीएजी, ते स्वजाव निज अंग ॥ सुहं० ॥ ८ ॥ जे
 नवयान विगुहताजी, ते पूजा नव अंग ॥ पंनानार
 विगुहताजी, तेइ फुल पंच रंग ॥ सुहं० ॥ ९ ॥ दीवा
 करतां चिंतवोजी, जानदीप सुप्रकाश ॥ नयादि पूज
 पुरीठंजी, तव पात्र सुविज्ञाल ॥ सुहं० ॥ १० ॥ वृष
 ह्य अतिकार्यताजी, कृप्यागत जोग शुभ ॥ वागना
 मद् मद्मद्देजी, तेतो अनुभव योग ॥ सुहं० ॥ ११ ॥

(७५३)

मद्य स्थानक अरु ठांरुवांजी, तेह अष्ट मंगलीक ॥
जे नैवेद्य निवेदीएजी, ते मन निश्चल ठीक ॥ सुहं०
॥ १२ ॥ लवण उतारी ज्ञावीअेंजी, कृत्रिम धर्मनो रे
त्याग ॥ मंगल दीवो अति जलोजी, शुद्ध धरम परजा
ग ॥ सुहं० ॥ १३ ॥ गीत नृत्य वादीत्रनोजी, नाद अ
नहद सार ॥ समरति रमणी जे करीजी, ते साचो
षेइकार ॥ सुहं० ॥ १४ ॥ ज्ञाव पूजा एम ज्ञावीएजी,
सत्य बजावोरे घंट ॥ त्रिज्जुवन मांहे ते विस्तरेजी,
टाले करमनी फाट ॥ सुहं० ॥ १५ ॥ इणीपरें ज्ञावना
ज्ञावतांजी, साहेब जस सुप्रसन्न ॥ जनम सफल जग
तेहनोजी, तेह पुरुष धन्य धन्य ॥ सुहं० ॥ १६ ॥ प
रम पुरुष प्रज्जु सांमलाजी, मानो ए मुज सेव ॥ दूर
करो ज्ञव आमलोजी, वाचक जश कहे देव ॥ सु
हं० ॥ १७ ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

बापलमांरे पातीकमां, तमे शुं करशो हवे रही
ने रे ॥ श्री सिद्धाचल नयणे नीरखयो, दूर जाळ तुमे
वहीने रे ॥ १ ॥ बापलमां रे० ॥ काल अनादि लगे तु

(७५४)

म साधे, प्रीत करी निरवहीने रे ॥ आज्ञकी प्रभु
चरणे रहीशुं, एम शीखवीयुं मनने रे ॥ १ ॥ वापल
कां रे० ॥ उपमकाले एणे नरते, सुक्ति नहीं संघेणने
रे ॥ पण तुज नक्ति सुक्तिने खेंचे, चमक उपल जेम
लोहने रे ॥ २ ॥ वापलकां रे० ॥ बाह्य अत्र्यंतर शत्रु
केरो, जय न होवे सुज मनने रे ॥ सेवक सुखीयो सु
जस विलासी, ते महिमा प्रभु तुजने रे ॥ वापलकां रे०
॥ ४ ॥ शुद्ध सोहागण चुरण आप्युं, मिथ्या पंक सो
धनने रे ॥ आतमज्ञाव शयो जब निरमल, आणंदमय
तुज नजने रे ॥ वापलकां रे० ॥ ५ ॥ नाम मंत्र तु
भारो साध्यो, ते शयो जग मोहनने रे ॥ तुज सुख सु
झा देखी हरखुं, जीम चातक जलवरने रे ॥ वापल
कां रे० ॥ ६ ॥ अखय निधान तुम समकित्त पामी,
कोण वंछे चल धनने रे ॥ शांत सुधारस कनक कचो
ले, सींचो सेवक तनने रे ॥ वापलकां रे० ॥ ७ ॥ तुम
विण अवर देव नहीं जाचुं, फरि फरि आ मनने रे ॥
ज्ञान विमल कहे नवजल तारो, सेवक वाह्य शर्दीने
रे ॥ वापलकां रे० ॥ ८ ॥

॥ श्री ऋषभदेवजीनुं स्तवन ॥

माता मरुदेवाना नंद, देखी तारी मुरति मांरुं
मन लोनाणुंजी ॥ मांरुं दिल लोनाणुंजी ॥ देखीण ॥
करुणाना गर करुणा सागर, काया कंचनवान ॥ घो
री लंठन पाडले कांइ, धनुष पांचसे मान ॥ माताण ॥
॥ १ ॥ त्रिगुणे बेशी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा वार ॥
योजन गामिनी वाणी मीठी, वरसंती जल धार
॥ माता० ॥ २ ॥ उर्वशी रुमी अपहराने, रामा ठे म
नरंग ॥ पाये नेत्र रणऊणे कांइ, करती नाटारंग
॥ माताण ॥ ३ ॥ तुंही ब्रह्मा तुंही विधाता, तुं जग
तारण हार ॥ तुज सरखो नहीं देव जगतमां, अमव
नीत्रां आधार ॥ माता० ॥ ४ ॥ तुंहीज त्राता तुंही
ज त्राता, तुंही जगतनो देव ॥ सुरनर किन्नर वासुदेवा,
करता तुज पद सेव ॥ माताण ॥ ५ ॥ श्री सिद्धचल
तीरथ केरो, राजा ऋषभ जिणंद ॥ कीर्ति करे माणे
क मुनी ताहरी, टाळो नव जय फंद ॥ माता० ॥
॥ ६ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

चालो चालो विमलगिरि जइए रे जवजल तर
वाने ॥ तुमे जयणाए धरज्यो पायरे पार उतरवाने
॥ ए टेक ॥ बाल कालनी चेष्टा टाली, हांरे हुंतो
धरम योवन हवे पायो रे ॥ जव जलण ॥ झूल अना
दिनी दूर निवारी हांरे हुंतो अनुजवमांलय लायोरे ॥
पारण ॥ चालोण ॥ १ ॥ जव तरपा सवी दूर निवारी,
हांरे मारी जिन चरणे लह्य लागी रे ॥ जवण ॥ सं
वर जावमां दिल हवे ठरीनुं, हांरे मारा जवनी जाव
ट जागी रे ॥ पार० ॥ चालोण ॥ २ ॥ सचितसरवनो
त्याग करीने, हांरे नित्य एकासणां तपकारी रे ॥ ज
वण ॥ पदिकमणां दोय टंकनां करशुं, हांरे जली अ
मृत क्रिया दिल धारी रे ॥ पार० ॥ चालोण ॥ ३ ॥
व्रत उचरशुं गुरुनी पासे, हांरे हुंतो यथाशक्ति अनु
सारे रे ॥ जवण ॥ गुरु साथे चरुशुं गिरिपाजे, हांरे
जे जवोदधि बुझतां तारे रे ॥ पारण ॥ चालोण ॥
॥ ४ ॥ जवतारक ए तीरघ फरसी, हांरे हुंतो सूरज
कुंममां नाह्यो रे ॥ जवण ॥ अष्ट प्रकारी ऋपज जिशं

दनी, हां रे हुंतो पूजा करीश लह्य लावी रे ॥ पारणा ॥
॥ चालो ॥ ५ ॥ तीरथ पतिने तीरथ सेवा, एतो सा
चा मोक्षना मेवा रे ॥ जव ॥ सात ठठ दोय अठम
करीने, मने स्वामीवच्छलनी हेवा रे ॥ पार. ॥ चा
लो. ॥ ६ ॥ प्रभुपदपद्म रायण तले पुजी, हुंतो पा
मीश हरख अपार रे ॥ जव. ॥ रूपविजय प्रभु ध्या
न पसाए, एतो पामे सुख श्रीकार रे । पार. ॥ चालो. ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

आंखनियेरे में आज शेत्रुंजो दीगो रे, सवा ला
ख टकानो दहानो रे, लागे मुने मीगो रे ॥ सफल
थयोरे मारा मननो उभाह्यो, वहाला मारा जवनो
संशय जाग्यो रे ॥ नरक तीर्थच गति दूर निवारी,
घरणे प्रभुजीने लाग्यो रे ॥ शत्रुंजय. ॥ १ ॥ ए आं
कणी ॥ मानव जवनो लाहो लीजे, वहाला मारा दे
हमी पावन कीजे रे ॥ सोना रूपाने फुलने वधावी,
प्रेमे प्रदक्षिणा दीजे रे ॥ शत्रुं. ॥ २ ॥ डुधने पखाळी
ने केसर घोळी वहाला. ॥ श्री आदिश्वर पूज्या रे ॥

(७५७)

श्री सिद्धाचल नयणे जोतां, पाप मेवासी ध्रूज्या रे
॥ शत्रुं० ॥३॥ श्रीसुख सौधर्मा सुरपति आगे ॥ वहा
ला० ॥ वीर जिणंद एम बोले रे ॥ त्रण नुवनमां ती
रथ मोटुं, नहीं कोई शत्रुंजय तोले रे ॥ शत्रुं० ॥ ४ ॥
इंइ सरीखा ए तीरथनी ॥ वहाला० ॥ चाकरी चित्त
मां चाहे रे, कायानी तो काह्यर काढी, सूरज कुंरुमां
नाह्ये रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्री सिद्ध खे
त्रे ॥ वहाला० ॥ साधु अनंता सिद्धा रे ॥ ते माटे ए तीर
थ मोटुं, उद्धार अनंता क्रीधा रे ॥ शत्रुं० ॥ ६ ॥ ना
ज्जीराया सुत नयणे जोतां ॥ वहाला० ॥ मेह अमीरस
वुठा रे ॥ नदयरत्न कहे आज मारे पौतें, श्री आदेश्व
र तुव्या रे ॥ शत्रुं० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समेतशिखर गिरिनुं स्तवन ॥

॥ क्रीमा करी घेर आवीन ॥ ए देशी ॥

समेत शिखर जिनवंदिये, महोटुं तीरथ एह रे

॥ पार पमाने जवतणो, तीरथ कहियें तेह रे ॥ स०

॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगे, सहस मुनि

परिवार रे ॥ पद्म प्रभु शिव सुख वर्या, त्रणशे अरु
अणगार रे ॥ स० ॥ १ ॥ पांचसें सुनि परिवारशुं, श्री
सुपास जिणंद रे ॥ चंडप्रभु श्रेयांस लगे, साथे सह
स सुणींद रे ॥ स० ॥ ३ ॥ ठ हजार मुनिराज शुं,
विमल जिनेसर सिद्धां रे ॥ सात सहसशुं चणदमा,
निज कारज वर कीधां रे ॥ स० ॥ ४ ॥ एकसो आठ
शुं धर्मजी, नवसेंशुं शांतिनाथ रे ॥ कुंथुअर एक स
हसशुं, साचो शिवपुर साथ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मद्धि
नाथ शत पांचसुं, सुनि नमी एक हजार रे ॥ तेत्रीस
मुनियुत पालजी, वरिया शीव सुख सार रे ॥ स०
॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस त्रणसें, उपर उगणपंचास रे
॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाभ्या शिवपुर वास रे
स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणें गीरि, सिद्ध अणसण
वेइ रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीने, पास शामलनुं
चेइ रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति.

॥ अथ समेतशिखरजीनुं स्तवन ॥

जइ पूजो दाव, समेतशिखर गिरि उपर पास
जी शामला ॥ जिन जक्ति दाव, करतां जिनपद पा

वे टले नव आमला ॥ ए आंकणी ॥ ठरी पाली दर्शन
करिये, नवनवन संचित पातक हरियें, नीज आतम
पुण्य रसैं नरिये ॥ ज५० ॥ १ ॥ ए गिरिवर नित्य से
वा कीजे, जिम शिव सुखमां करमां लीजे, चिदानंद
सुधारस नित्य पीजे ॥ ज५० ॥ २ ॥ जिहां शिवरम
णी वरवा आव्या, अजितादिक वीशे जिनराया, बहु
मुनिवर युत शिव वधु पाया ॥ ज५० ॥ ३ ॥ तेणे ए
उत्तम गिरि जाणो, करो सेवा आतम करी साणो, ए
फरी फरी नहीं आवे टाणो ॥ ज५० ॥ ४ ॥ तुमे धन
कन कंचननी माया, करतां अशुचि कीनी काया, कि
म तरशो विण ए गिरिराया ॥ ज५० ॥ ५ ॥ इम शु
न्न मति वचन सुणी ताजां, ए नजो जगगुरु आतम
राजा, गिरि फरसे धरी मन शुचि माजा ॥ ज५० ॥
॥ ६ ॥ संवत्सर रिपि गज चंद्र समे, फागण सुदी त्री
ज बुधवार गमे, गिरि दर्शन करतां चित्त रमे ॥ ज५० ॥
॥ ७ ॥ प्रचुपद पद्म तणी सेवा, करतां नित्य लहरियें
शीव मेवा, कहे रूपविजय मुज ते देवा ॥ ज५० ॥
॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथश्री समेतशिखरजीनुं स्तवन ॥

समेतशिखर गिरि जेटीये रे, मेटवा जवना पा
स ॥ आतम सुख वरवा जणी रे, ए तीरथ गुण नि
वास रे ॥ १ ॥ जविया सेवो तीरथ एह ॥ समेतशि
खर गुण गेह रे ॥ ज० ॥ से० ॥ ए आंकणी ॥ समे
तशिखर कटपे कह्यो रे, वीश टूंक अधिकार ॥ वी
श तीर्थकर शीव वस्था रे, बहु सुनिने परिवार रे
॥ जविया० ॥ २ ॥ सेवोण ॥ सिद्ध क्षेत्र मांहे वस्या
रे, जांखे नय व्यवहार, निश्चय निज स्वरूपमां रे,
दोय नय प्रज्जुजीना सार रे ॥ जविया० ॥ ३ ॥ सेवोण ॥
आगम वचन विचारतां रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ व
स्तु तत्त्व जिणे जाणिये रे, ते आगम स्यादवाद रे
॥ जविया० ॥ ४ ॥ सेण ॥ जयरथ राय तणी परे रे,
जात्रा करो मन रंग ॥ जव दुःखने देइ अंजली रे,
घाये सिद्धि वधुनो संग रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ से० ॥ सम
कित युत जात्रा करे रे, तो शिव हेतु घाय ॥ जव हे
तु किरिया त्यागशी रे, आतम गुण प्रगटाय रे ॥ ज० ॥
॥ ६ ॥ से० ॥ जेह समये समकित अयुं रे, तेह सम

ये होये नाण ॥ ज्ञान विमल गुरु ज्ञाखिया रे, आव
श्यक ज्ञाप्यनी वाण रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ सेवोण ॥ इति.

॥ अथ श्री आबुजीनुं स्तवन ॥

कोइ लो पर्वत धूँधलो रे लो ॥ ए देशी ॥ आबु
अचल रलीआमणो रे लो, दिलवाने मनोहार ॥ सुख
कारी रे ॥ वादलीए जे स्वर्गशु रे लो, देवल दीपे चा
र बलिहारी रे ॥ ज्ञाव धरीने जेटीए रे लो ॥ ए आंक
णी ॥ बार पादशाह बश कीया रे लो, विमल मंत्री
सर सार ॥ सु० ॥ तेणे प्रासाद निपाइउ रे लो, रिख
जजी जगदाधार रे ॥ व० ॥ १ ॥ ज्ञा० ॥ तेह चैत्यमां
जिनवरु रे लो, आठसेंने वोतेर ॥ सुख० ॥ जे दीठे प्र
चु सांजरे रे लो, मोह कर्यो जेणे जेर ॥ व० ॥ ३ ॥
॥ ज्ञा० ॥ इव्य ज्ञावधी तिम वरी रे लो, दीधी देठ
ल काज ॥ सु० ॥ चैत्य तीहां मंभावीयुं रे लो, लेवा
शीवपुर राज ॥ व० ॥ ४ ॥ आ० ॥ पंदरसें कारीग
रो रे लो, दीवी धरा प्रत्येक ॥ सु० ॥ तेम मर्दनकार
क वली रे लो, वस्तुपाल ए विवेक ॥ व० ॥ ५ ॥ आ० ॥

कोरणी धोरणी तीहां करी रे लो, दीठे बने ते वात
॥ सु० ॥ पण नवि जाए मुखे कही रे लो, सुर गुरु
सम विख्यात ॥ ब० ॥ ६ ॥ आ० ॥ त्रणे वरसे नी
पनो रे लो, ते प्रासाद उत्तंग ॥ सु० ॥ बार क्रोरु त्रे
पन लहने रे लो, खरच्या डव्य उठरंग ॥ ब० ॥ ७ ॥
॥ आ० ॥ देराणी जेठाणीना गोखमा रे लो, देखतां
हरख ते आय ॥ सु० ॥ लाख अठार खरचीआ रे लो,
धन धन एनी माय ॥ ब० ॥ ८ ॥ आ० ॥ मूल नाय
क नेमीसरु रे लो, जनम थकी ब्रह्मचार ॥ सु० ॥ नि
ज सत्ता रमणी थया रे लो, गुण अनंत आधार ॥ ब० ॥
॥ ए ॥ आ० ॥ चारसेने अरुसठ जला रे लो, जिन
वर विंब विशाल ॥ सु० ॥ आज जले में जेटीआ रे
लो, पाप गया पायात्त ॥ ब० ॥ १० ॥ आ० ॥ शिख
न धातुमय देह रे लो, एकसो पीसतालीश विंबासु०
चोमुख चैत्य जुहारीए रे लो, मरुधरमां जेम अंब
॥ ब० ॥ ११ ॥ आ० ॥ बाणुं कान्हसगिआ तेहमां रे
लो, उगणांशी जिनराय ॥ सु० ॥ अचल गढे बहु जि
नवरा रे लो, वंडु तेना पाय ॥ ब० ॥ १२ ॥ आ० ॥

(७६४)

धातुमय परमेश्वरा रे लो, अद्भूत जास स्वरूप ॥ सु० ॥
चोमुख जिन वंदता रे लो, आए निजगुण रूप ॥ व० ॥
॥ १३ ॥ आ० ॥ अठारसेंने अठारमां रे लो, चैत्र वदत्री
ज दीन ॥ सु० ॥ पालनपुरना संघशु रे लो, प्रणमी
अयो धन धन ॥ व० ॥ १४ ॥ आ० ॥ तेम शांति जग
दीसरु रे लो, जात्रा करी अद्भूत ॥ सु० ॥ जे देखी
जिन सांजरे रे लो, सेवा करे पुर हुंत ॥ व० ॥ १५ ॥
॥ आ० ॥ एम जाणी आवु तणी रे लो, जात्रा करशे
जेह ॥ सु० ॥ जिन उत्तम पद पामशे रे लो, पद्मविज
य कहे तेह ॥ व० ॥ १६ ॥ आ० ॥ इति.

॥ अथ श्री अर्बुदगिरिनुं स्तवन ॥

चालो चालोने गिरिधर रमवा जइए. ए देशी.

आवो आवोने राज, श्री अर्बुदगिरि जइये ॥
श्री जिनवरनी नक्ति करीने, आतम निर्मल अइए ॥
आ० ॥ ए आंकणी ॥ विमल वसइना प्रथम जिएसर,
मुख निरखे सुख पइए ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुमु
मवर, कंठे टोरुर ठवीये ॥ आ० ॥ १ ॥ जमणे पासे
खुण वसइ, श्री नेमीसर नमीये ॥ राजिमती वर

नयणे निरखी, दुख दोहग सवि गमीये ॥ आ० ॥१॥
सिद्धाचल श्री ऋषज्ञ जिनेसर, रैवत नेम समरिये ॥
अर्बुद गिरिनी यात्रा करंतां, चिहुं तीर्थ चित्त धरीये ॥
आ० ॥ ३ ॥ मंरुप मंरुप विविध कोरणी, नीरखी
हीयमे ठरीए ॥ श्री जिनवरनां विंब निहाली, नर
ज्ञवसफलो करीए ॥ आ० ॥ ४ ॥ अविचल गढ आ
दीश्वर प्रणामी, अशुज्ञ करम सवि हरीए ॥ पास
शांति निरखी जब नयणे, मन मोह्युं मुंगरीए ॥आ०
॥ ५ ॥ पाजे चढतां बुजम वाधे, जेम धोमे पाखरीये
॥ सकल जिनेसर पूजी केसर, पाप परुल सवि ह
रिये ॥ आ० ॥ ६ ॥ एक ध्याने प्रभुने ध्यातां, मनमां
ही नवी रुरिये ॥ ज्ञान विमल कहे प्रभु सुपसाए,
सकल संघ सुख करीये ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति.

॥ अथ श्री आबुगिरिनुं स्तवन ॥

आदि जिनेसर पूजता दुःख मैटो रे, आबुगढ
दढ चित्त; जविक जइ जेटो रे, देलवामे देहरां न
मी ॥ ३० ॥ चार परिमित नित्य ॥ ज० ॥ वीश गज

बल पदमावती ॥ ५० ॥ चक्षेसरी इय्य आण ॥ ज० ॥
 शंख दीये अंबीसुरी ॥ ५० ॥ पंचकोश वेहे वाण ॥ ज० ॥
 ॥ १ ॥ वार पादशाह जीतीने ॥ ५० ॥ विमल मंत्री
 आळहाद ॥ ज० ॥ इय्य जणी धरती कीयो ॥ ५० ॥ ऋ
 पन्न देव प्रासाद ॥ ज० ॥ ३ ॥ विहुत्तेर अधिकां आठ
 सें ॥ ५० ॥ विंव प्रमाण कहाय ॥ ज० ॥ पन्नरशे कारी
 गरे ॥ ५० ॥ वरस त्रीके ते शाय ॥ ज० ॥ इय्य अनुपम
 खरचीयो ॥ ५० ॥ लाख त्रेपन वार कोनी ॥ ज० ॥ सं
 वत दश अठाशीए ॥ ५० ॥ प्रतिष्ठा करी मन होनी ॥
 ज० ॥ ५ ॥ देराणी जेठाणीना गोखना ॥ ५० ॥ लाख
 अठार प्रमाण ॥ ज० ॥ वस्तुपाल तेजपालनी ॥ ५० ॥
 ए द्योय कांता जाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ मूलनायक नेमीसर
 ॥ ५० ॥ चारसैं अमलठ विंव ॥ ज० ॥ ऋपन्न धा
 तुमय देह रे ॥ ५० ॥ एकसो पीसताखील विंव ॥ ज०
 ॥ ७ ॥ चन्नमुख चैत्य जुहारीए ॥ ५० ॥ कान्ठस्सगीया गु
 णवंत ॥ ज० ॥ वाणुमिन तेहमां कहूं ॥ ५० ॥ अग
 न्यासी अरिहंत ॥ ज० ॥ ८ ॥ अचलगटे प्रनुजी य
 णा ॥ ५० ॥ जात्रा करो हुशियार ॥ ज० ॥ कोनी

(७६७)

तपे फल जे लहे ॥ ७७ ॥ ते प्रभु जक्ति विचारा ॥ ज ॥ ए ॥
सालंबन निरालंबने ॥ ७८ ॥ प्रभु ध्याने जवपार ॥
मंगल लीला पामीये ॥ ७९ ॥ वीर विजय जयकार ॥
ज ॥ १० ॥ इति.

॥ अथ श्री गिरनारजीनुं स्तवन ॥

माहारा वालाजी, ए देशी.

तोरणथी रथ फेरी चाट्या कंत रे, प्रीतमजी
आठ जवोनी प्रीतनी त्रोनीतंत ॥ मारा प्रीतमजी ॥
नवमे जव पण नेह न आणो मुऊ रे ॥ प्री० ॥ तो शे
कारण एटले आववुं तुज्ज ॥ मा० ॥ १ ॥ एक पोकार
सुणी तीर्यचनो एम रे ॥ प्री० ॥ मूको अबला रोती
प्रभुजी केम ॥ मा० ॥ खट् जीवना खवालमां शि
रदार रे ॥ प्री० ॥ तो केम विलवती स्वामी मूको नारी
॥ मारा० ॥ २ ॥ शिव वधु केरुं एहवुं केहवुं रुप रे ॥
प्री० ॥ मुज मूकीने चित्तमां धरी जिन जूप ॥ मा० ॥
जिनजी लीए सहसा वनमां व्रत जार रे ॥ प्री० ॥
घाती करम खपावीने निरधार ॥ मा० ॥ ३ ॥ केवल

(३६८)

ऋद्धि अनंती प्रगट कीध रे ॥ प्री० ॥ जाणी राजुल ए
म प्रतिज्ञा लीध ॥ मा० ॥ जे प्रभुजीये कीधुं करवुं
तेह रे ॥ प्री० ॥ एम कही व्रतधर अइ प्रभु पासे जेह
॥ मारा० ॥ ४ ॥ प्रभु पेहेलां निज शोक्यनुं जोवा रूप
रे ॥ प्री० ॥ केवल ज्ञान लही अइ सिद्ध सरूप ॥ मारा०
॥ शीववधु वरीया जिनवर उत्तम नेमरे ॥ प्री० ॥ पद्म
कहे प्रभु राख्यो अविचल प्रेम ॥ मा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री गिरनार तीर्थनुं स्तवन ॥

सहसावन जइ वसीए, चालोने सखी सहसा
वन जइ वसीए ॥ घरनो धंधो कवुअ न पूरो, जो
करीए अहो निसिए ॥ पीयरमां सुख घमीय न दीवुं,
अय कारण चउ दीशीये ॥ चालो० ॥ १ ॥ नाक वि
हुणा सयल कुटुंबी, लज्जा किमपि न पसिए ॥ चा०
॥ जेलां जमीए ने नजर नहीसे, रहेवुं घोर तमसीए
चा० ॥ २ ॥ पीयर पाठल ठल करी मेढ्युं, सासरीए
सुख वसीए ॥ चा० ॥ सातुमी ते घर घर अटके,
लोकेने चटके रुसीए ॥ चा० ॥ ३ ॥ कहेतां सातु
थावे हांसु, सुंशिये सुख लेइ मशीए ॥ चा० ॥ ४ ॥

(७६ए)

अमारो बालो ज़ोलो, जाणे न असि मसि कसिए ॥
घाण ॥ ४ ॥ जूठाबोली कलहण शीला, घरघर झू
नी ज्युं नसीए ॥ चाण ॥ ए दुःख देखी हसुं मूजे,
दुरजनधी दूर खसीए ॥ चा० ॥ ५ ॥ रैवतगिरिनुं
ध्यान धरीनुं, काल गयो हसमसीए ॥ चा० ॥ श्री गि
रनारे त्रण कळयाणक, नेमि नमन उल्लसिए ॥ चाण
॥ ६ ॥ शिववरशे चोवीश जिनेश्वर, अनागत चउ
वीशीए ॥ चा० ॥ कैलास उजयंत रैवत कहीए, शरण
गिरिने फरसीए ॥ चा० ॥ ७ ॥ गिरनार नंदनइ ए ना
मे, आरे आरे ठ ब्रविसिए ॥ चाण ॥ देखी महितल
महिमा मोटो, प्रजु गुण ज्ञान वरसिये ॥ चाण ८ ॥
अनुजव रंग वधे तेम पूजो, केसर घशी उरशीए ॥
चाण ॥ ज्ञावस्तव सुत केवल प्रगटे, श्री शुजवीर विल
सीए ॥ चा० ॥ ए ॥ इति.

॥ अथ श्री गिरनार तीर्थ स्तवन ॥

देखी कामनी दोयके काम व्यापिनरे के, कामे
व्यापीत ॥ ए देखी ॥ नेम निरंजन देवके सेव सदा

करुं रे के ॥ से० ॥ अहनीश तारुं ध्यानके, दील मांहे
 धरुं रे के ॥ दी० ॥ शंख लंठन गुणखाण के, अंजन
 दान ठे रे के ॥ अं० ॥ राजेमतिना कंथ के, परएया
 विणुअठे रे के ॥ प० ॥ १ ॥ तुंहिंज जीवन प्राण
 के, आतमराम ठे रे के ॥ आ० ॥ माहरे परमाधार
 के, ताहरुं नाम ठे रे के ॥ ता० ॥ समुद्र विजयना
 नंदन, नितु नितु वंदना रे के ॥ नि० ॥ कीजीये करु
 णावंत के, कर्म निकंदना रे के ॥ क० ॥ २ ॥ जीत्या
 मनमथ राज, रही गढ उपरे रे के ॥ र० ॥ पहेरी शी
 ल सन्नाह, उदास एसी धरो रे के ॥ उ० ॥ सवि जि
 नवरमां स्वामि, तुम्हे अधिकुं करचुं रे के ॥ तु० ॥
 कुमरपणे धरी धीर, महाव्रत उचस्यां रे के ॥ म०
 ॥ ३ ॥ आठ ज्ञवांतर नेह, तेह उवेखीने रे के ॥ ते०
 करुणा कीधी केवल, पशुयां देखीने रे के ॥ प० ॥
 पूरण पाली प्रीत, वली निज नारने रे के ॥ व० ॥ आषी
 संजम ज्ञार, पद्मोचामी पारने रे के ॥ प० ॥ ४ ॥
 जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणा रे के ॥ क० ॥
 निरवादे धरि नेह के, ते विरला सुणया रे के ॥ ते० ॥

राजेमतिनो कंत, वखाणे कविजना रे के ॥ व० ॥ तु
 म्हे तो दीधो ठेह के, तेह तो थीर मना रे के ॥ ते०
 ॥ ५ ॥ जादव नाथ सनाथ, करो मुजने सदा रे के
 ॥ क० ॥ दिय मुज शिरपर हाथ, होवे जेम संपदा रे
 के ॥ हो० ॥ जलि जलि मरे पतंग, दीवाने मन नहीं रे
 के ॥ दी० ॥ नाणे मन असवार, घोमो दोमो सही रे
 के ॥ घो० ॥ ६ ॥ सबला साथे प्रीत, निबलने नवि
 रुही रे के ॥ नि० ॥ पण लाग्या जे केने, किहां जाए
 मही रे के ॥ कि० ॥ जे सज्जन शुं होय ते, नीम न
 नंजिये रे के ॥ नी० ॥ पोतानो जे होय, सदा दिल
 मंजिए रे के ॥ म० ॥ ७ ॥ तुमची सु नजर होये तो,
 कर्मने मंजिए रे के ॥ क० ॥ तो उशमन होय दूरे,
 गोणे नवि मंजिए रे के ॥ को० ॥ प्राणाधार पवित्र
 के, दरशन दीजिए रे के ॥ द० ॥ ज्ञानविमल सुखपूर,
 मलीने कीजिये रे के ॥ म० ॥ ८ ॥ इति.

अथ श्री अष्टापद स्तवन.

कुंवर गंजारो नजरे देखतांजी ॥ ए देशी ॥

चन अठ दश दोय वंदिएजी, वर्तमान जगदीश

रे; अष्टापद गिरि उपरेजी, नमतां वाधे जगीशरे ॥
 च० ॥ १ ॥ नरत नरतपति जिन मुखेजी, उच्चरीयां
 व्रत वार रे; दर्शन शुद्धिने कारणेजी, चोवीश प्रभुने
 विहार रे ॥ च० ॥ २ ॥ उंचपणे कोश तिग कह्योजी,
 योजन एक विस्तार रे; निज निजमान प्रमाण नरा
 वीयाजी, विंव स्वपर उपगाररे ॥ च० ॥ ३ ॥ अजि
 तादिक चउ दाहिलेजी, पन्निमे पन्नाइ आठ रे; अनं
 त आदे दश उत्तरेजी, पूरवे ऋषज वीर पाठरे ॥ च०
 ॥ ४ ॥ ऋषज अजित पूरवे रह्याजी, ए पण आगम
 पाठ रे; आतम शक्ते करे जातराजी, ते नव मुक्तिव
 रे हणी आठ रे ॥ च० ॥ ५ ॥ देखो अचंजो श्री सिद्ध
 चलेजी, हुआ असंख्या उदार रे; आज दिने पणइणे
 गिरेजी, ऊगमग चैत्य उदार रे ॥ च० ॥ ६ ॥ रहेश
 उत्सर्पिणि लगेजी, देव महिमा गुणदाख रे; सिद्ध नि
 पद्यादिक थिर पणेजी, वसुदेव हिंमनी साख रे ॥ च०
 ॥ ७ ॥ केवली जिन मुखमें सुण्योजी, इण विवे पा
 ठ पठाय रे; श्री शुभवीर वचन रसेजी, गायो ऋष
 ज शिव वाय रे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति

अथ श्री अष्टापद स्तवन.

अष्टापद अरिहंतजी मारा वालाजी रे, आदी
वर अवधार; नमीये नेह शं ॥ मा० ॥ दश हजार
मुण्डिं शं ॥ मा० ॥ वरिया शिववधु सार ॥ न
मीये ॥ नरत नूप जावे कर्यो ॥ मा० ॥ चनुमुख
वैत्य नदार ॥ न० ॥ जिनवर चोवीशे जीहां ॥ मा० ॥
प्राप्या अति मनोहार ॥ न० ॥ मा० ॥ २ ॥ वरण
प्रमाणे विराजता ॥ मा० लंठनने अलंकार ॥ न० ॥
समनासाये सोजता ॥ मा० ॥ चिहुं दिशे चार प्र
प्रकार ॥ न० ॥ ३ ॥ मंदोदरी रावण तीहां ॥ मा० ॥
नाटक करतां विचाल ॥ न० ॥ त्रुटी तांत तव रावणे
॥ मा० ॥ निजकर वीणा सत काल ॥ न० ॥ ४ ॥ क
री बजावी तिणे समे ॥ मा० ॥ पण नवी त्रोम्युं ते
तान ॥ न० ॥ तीर्थेकर पद बांधीयुं ॥ मा० ॥ अज्ञूत जा
वशुं गान ॥ न० ॥ ५ ॥ निज लब्धे गौतम गुरु ॥
मा० ॥ करवा आव्या ते जात ॥ न० ॥ जगचिंता
मणी तीहां कर्युं ॥ मा० ॥ तापस बोध विख्यात ॥
न० ॥ ६ ॥ ए गिरि महिमा मोटको ॥ मा० ॥ तेणे

(७७४)

ज्ञव पामे जे सिद्ध ॥ न० ॥ जे निज लब्धे जिन नमे
॥ मा० ॥ पामे शाश्वत रुद्धि ॥ न० ॥ ७ ॥ पद्म वि
जय कहे एहना ॥ मा० ॥ केतां करुं रे वखाण ॥ न० ॥
वीरे स्वमुखे वरणव्यो ॥ मा० ॥ नमतां कोनि कल्या
ण ॥ न० ॥ ८ ॥ इति

अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन.

अष्टापद गिरि यात्रा कारणकुं, रावण प्रति इ
रि आया; पुष्पक नामे विमाने वेसी, मंदोदरी सुहा
या ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीये लाल, समकित निर्मल
कीजे; नयणे निरखी हो लाल, नरज्ञव सफलो कीजे;
द्वैयमे हरखी लाल, समता संग करीजे; ए आंकणी ॥
चउमुख चउगति हरण प्रासादे, चउवीसे जिन वेग;
चउदिशि सिंहासन समनासा, पूरव दिशि दोय जि
हा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संज्ञव आदे दक्षिण चारे पश्चिमे
आठ सुपासा; धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो, एवं जि
न चउवीसा ॥ श्री० ॥ वेठा सिंह तणे आकारे, जि
णहर ज्जस्ते कीधां; रयण विंव मूरति थापीने, जग
जसवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी

नाटक, रावण तांत बजावे; मादल वीणा ताल तंबू
 रो, पग रव ठम ठमकावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नक्ति जा
 वे एम नाटक करतां, त्रुटी तंती विचाले; सांधी आ
 प नसा निज करनी, लघु कलाशुं ततकाले ॥ श्री० ॥
 ॥ ६ ॥ इय जावशुं नक्ति न खंती, तो अक्षय पद
 साध्युं ॥ समकित सुरतरु फल पामीने तीर्थंकर पद
 बांध्युं ॥ श्री० ॥ एसी पेरे नविजन जे जिन आगे,
 बहुपरे जावना जावे; ज्ञान विमल गुण तेहना अह
 निश, सुरनर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति.

अथ श्री तीर्थमालासुं स्तवन.

शेत्रुंजे ऋषज समोसर्या, जला गुण जर्या ए;
 सिध्या साधु अनंत तीरथ ते नमुं रे ॥ १ ॥ तीन क
 व्याणक तीहां थयां, मुगते गयारे; नेमीसर गिरनार
 ॥ ती० ॥ २ ॥ अष्टापदे एक देहरो, गिरि सेहेरो रे ॥
 नरते नराव्यां विंब ॥ ती० ॥ ३ ॥ आबु चोमुख अ
 ति जलो, त्रिभुवन तिलो रे; विमल वसे वस्तुपाल
 ॥ ती० ॥ ४ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियाम
 णो रे; सीध्या तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ ५ ॥ नयरी

चंपा निरखीए, हिये हरखीए रे; सिध्या श्री वासु
 पुज्य ॥ ती० ॥ ६ ॥ पूरव दिशि पावापुरी, ऋद्धेन्नरी
 रे; मुगते गया महावीर ॥ ती० ॥ ७ ॥ जेसलमेर
 जुहारीए, दुःख वारीए रे; अरिहंत विंव अनेक ॥ ती०
 ॥ ८ ॥ विकानेरज वंदीए, चिर नंदिए रे; अरिहंत दे
 हरां आठ ॥ ती० ॥ ९ ॥ सौरिसरो संखेसरो, पंचासरो
 रे; फलोधि अंजण पास ॥ ती० ॥ १० ॥ अंतरीक अजा
 वरो, अमीऊरो रे; जिरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ ११ ॥
 त्रिलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे; राणापुरो रिस
 हेस ॥ ती० ॥ १२ ॥ नाकुलाइ जादवो, गोमी स्तवो
 रे; श्री वरकाणो पास ॥ ती० ॥ १३ ॥ नंदीसरनां देहरां,
 वावन जलां रे; रुचक कुंमले चार चार ॥ ती० ॥ १४ ॥
 शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा ठती रे; स्वर्ग मृत्यु पाता
 ल ॥ ती० ॥ १५ ॥ तीरथ जात्रा फल तीहां, होज्यो
 मुज इहां रे ॥ समय सुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ १६ ॥ इति

॥ अथ श्री सीमंधर जिनस्तवन ॥

धन धन खेत्र माहाविदेहजी, धन्य पुंमरिगिणी

गाम ॥ धन्य तिहांनां मानवीजी, नित उठी करे रे
प्रणाम ॥ सीमंधर स्वामी कश्येरे हुं महा विदेह आ
वीश, जयवंता जिनवर कश्ये रे हुं तमने वांदीश
॥ १ ॥ चांदलीआ संदेशमोजी, कहेजो सीमंधर स्वा
मा ॥ नरत क्षेत्रनां मानवीजी, नित उठी करे रे प्रणाम
॥ सी० ॥ २ ॥ समवसरण देवे रच्युं तीहां, चोसठ इं
ड नरेश ॥ सोना तणे सींहासन बेठा, चामर ठत्र ध
रेश ॥ सी० ॥ ३ ॥ इंझणी काढे गहूंलीजी, मोतीना
घोक पूरेश ॥ रली रली लीये लूठणांजी, जिनवर दी
ये उपदेश ॥ सी० ॥ ४ ॥ एवे समे में सांजळ्युंजी,
इवे करवां पञ्चखाण ॥ पोथी ठवणी तीहां कणेजी,
अमृत वाणी वखाण ॥ सी० ॥ ५ ॥ रायने वहालां
घोरुलांजी, वेपारीने वहाला ठे दाम ॥ अमने वहा
ला सीमंधर स्वामी, जिम सीताने श्री राम ॥ सी०
॥ ६ ॥ नहीं मागुं प्रभु राज रीद्धिजी, नहीं मागुं गरथ
जंमार ॥ हुं मागुं प्रभु एटलुंजी, तुम पासे अवतार ॥
सी० ॥ ७ ॥ दैव नदीधी पांखनीजी, केम करी आवुं रे
हजुरा ॥ मुजरो मारो मानजोजी, प्रहळुगमते सूर ॥ सी० ॥

॥ ८ ॥ समय सुंदरनी वीनतीजी, मानजो वारंवार ॥
वे कर जोमी वीनहुंजी, वीनतनी अवधार ॥ सी०॥ए॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिनस्तवन ॥

श्री युगमंधरने कहेजो, के दधिसुत वीनतनी
सुणजो रे ॥ श्री युग० ॥ ए आंकणी॥ काया पामी अ
ति कूनी, पांख नहीं रे आवुं उनी, लब्धि नहीं कोये
रुनी रे ॥ श्री०॥ १ ॥ तुम सेवा मांहे सुर कोनी, ते
इहां आवे एक दोनी, आश फले पातक मोनी रे ॥
श्री० ॥ २ ॥ दुःखम समयमां इणे नरते अतिशय ना
णी नवि वरते, कहीए कही कोण सांजलते ॥ श्री०
॥ ३ ॥ श्रवणे सुखीआ तुम नामे, नयणां दरिसण
नवि पामे, एतो ऊघमाने ठामे रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ चा
र आंगल अंतर रहेवुं, शोकलनीनी परे दुःख सहेवुं,
प्रभु विना कुण आंगल कहेवुं रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ महोटा
मेल करी आपे, वेहुने तोल करी आपे, सङ्गन जस ज
गमां व्यापे रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ वेहुनो एक मतो आवे,
केवल नाण जुगल पावे; तो सवि वात वनी आवे रे

(७७ए)

श्री० ॥ ७ ॥ गज लंठन गज गति गामी, विचरे वि
प्रविजय स्वामी, नगरी विजया गुण धामी रे ॥ श्री०
॥ ८ ॥ मात सुताराये जायो, सुदृढ नरपति कुल आ
यो, पंक्ति जिन विजये गायो रे ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इति.

॥ अथ अजरा पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

महा क्रोध थयो ते कलीकालमां जो ॥ ए गर
वानी देशीमां ॥ हां रे मारे आजनी घनी ते रलीआ
मणी जो, अजरा पासजी पुज्यानी वधामणी जो ॥
मारेण ॥ १ ॥ पूरो पूरो रे सोहागण साथीनु जो ॥ मारे
मंदिरे पधाखो पास हाथीनु जो ॥ मारेण ॥ २ ॥ हुं
तो मोतीमाना चोक पूरावती जो ॥ अजरापासजीनी
आंगीनु रचावती जो ॥ मारेण ॥ ३ ॥ हुं तो चंपेली
ना थंन रोपावती जो ॥ अजरापासजीने पधरावती
जो ॥ मारेण ॥ ४ ॥ कहे रूपचंद स्वामीने दीठमो
जो ॥ मारा हृदय कमल लागे मीठमो जो ॥ मारे
आजण ॥ ५ ॥ इति.

(७८०)

॥ अथ श्री पांच कारणानुं स्तवन ॥

दोहा.

सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज; व
स्तु तत्व सवि जाणीए, जस आगमधी आज ॥ १ ॥
स्याहादधी संपजे, सकल वस्तु विख्यात; सप्त जंग
रचना विना, बंध न बेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नयजू
जुआ, आप आपणे ठाम; पूरण वस्तु विचारतां, को
ई न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह गज, ग्रही अ
वयव एकेक; दृष्टिवंत लहे पूर्णगज, अवयव मिली
अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकलनये करी, जुगति योग
शुद्ध बोध; धन्य जिन शासन जगजयो, जिहां नदी
किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली. राग आशावरी ॥

श्री जिनशासन जगजयकारी, स्याहाद शुद्ध
रूप रे; नयएकांत मिथ्यात निवारण, अकल अजंग
अनूप रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोइ कहे एक का
लतणे वश, सकल जगत गति दोय रे; काले ठपने

काले विणसे, अवर न कारण कोय रे. श्री ॥ १ ॥ का
ले गर्ज धरे जग वनिता, काले जनमे पूत रे; काले बो
ले काले चाले, काले जाले घर सूत रे. श्री ॥३॥ का
ले दूध अकी दही आये, काले फल परिपाक रे; विविध
पदारथ काल उपाए, काले सहु आये खाक रे. श्री ॥४॥
जिन चोवीशे बारे चक्रवर्ती, वासुदेव बलदेव रे; काले
कवलित कोइ न दीसे, जसु करता सुरसेव रे. श्री
॥ ५ ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी आरा, ठए जुइ जुइ
जातरे; षट ऋतु काल विशेष विचारो, जिन्न जिन्न
दिन रातरे ॥ श्री ॥ ६ ॥ काले बाल विलास मनोहर,
यौवन काला केशरे; वृद्धपण वली पली वपु अति दुर्बल,
शक्ति नहीं लवलेशरे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

इति काल विवादः

हाल बीजी; गिरुआ गुणवीरजी, ए देशी.

तव स्वप्नाववादी वदेजी, काल किस्थुं करे रंक;

वस्तु स्वप्नावे नीपजेजी, विणसे तिमज निशंक; सु
 विवेक विचारी जुन; जुन वस्तु स्वप्नाव ॥ १ ॥ ए
 आंकणी ॥ ठते योग जोवनवतीजी, वांजणी न जणे
 वाल; मूठ नहीं महिला मुखेजी, करतल ऊगे न वाल
 ॥ सु० ॥ २ ॥ विण स्वप्नाव नवि नीपजेजी, केम प
 दारप्र कोय; अंन न लागे लींवेजी, वाग वसंते जोय
 ॥ सु० ॥ ३ ॥ मोर पिछ कुण चीतरेजी, कुण करे
 संध्या रंग; अंग विविध सवि जीवनांजी, सुंदर नयन
 कुरंग ॥ सु० ॥ ४ ॥ कांटा वोर वबुलनांजी, कोणे
 अणीयालां कीव; रूप रंग गुण जुजुआजी, तरु फ
 ल फूल प्रसिद्ध ॥ सु० ॥ ५ ॥ विषधर मस्तक नित्य
 वसेजी, मणि हर विष ततकाल; पर्वत शिर चल वाय
 रोजी, उर्ध्व अग्निनी जाल ॥ सु० ॥ ६ ॥ मठ तुंब ज
 लमां तरेजी, वूरे काग पहाण; पंखि जात गयणे फिरे
 जी, इणिपरे सयल विनाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ वायु सुंठ
 श्री उपशमेजी, हरने करे विरेच; सीजे नहीं कण कां
 गर्नुजी, शक्ति स्वप्नाव अनेक ॥ सु० ॥ ८ ॥ दश वि
 शेपे काष्ठनांजी, चुयमां थाय पहाण; शंख अस्थिनी

(७८३)

नीपजेजी, क्षेत्रे स्वज्ञाव प्रमाण ॥ सु० ॥ ए ॥ रवि
तातो शशि शीतलोजी, ज्ञव्यादिक बहु ज्ञाव; षए इ
व्य आप आपणाजी, न तजे कोय स्वज्ञाव ॥ सु० ॥
॥ १० ॥ इति स्वज्ञाव वादः

ढाल त्रीजी.

कपूर होए अति उजलो रे. ए देशी.

काल किश्युं करे बापमोजी, वस्तु स्वज्ञाव अक
ऊ; जो नवि होये ज्ञवितव्यताजी, तो किम सीजे क
ऊरे; प्राणी मकरो मन जंजाल, ज्ञावी ज्ञाव निहाल
रे ॥ प्राणी ॥ म० १ ॥ ए आंकणी. जलनिधि तरे जंगल फ
रेजी, कोरु जतन करे कोय; अणज्ञावी होवे नहींखी,
ज्ञावि होय ते होय रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ आंवे मोर वसं
तमांजी, माले माले केइ लाख; केइ खर्यां केइ खाख
टीजी, केइ आंधा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ बाजल जि
म ज्ञवितव्यताजी, जिण जिण दिसिन जाय; परवश
मन माणस तणुंजी, तृण जिम पूंठे घाय रे. प्रा० ॥ ४ ॥

नियति वशे विण चिंतव्युंजी, आवी मले तत्काल;
वरसासोनुं चिंतव्युंजी, नियति करे विस्तराल रे. प्रा०
॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त चक्रीतणांजी, नयण हणे गोवाल; दो
य सहस्सजस्त देवताजी, देह तणा रखवाल रे. प्रा०
॥ ६ ॥ को कूहो कोयल करेजी, किम राखी शके प्रा
ण; आहेमी शर ताकीयोजी, उपर जमे शींचाण रे.
प्रा० ॥ ७ ॥ आहेमी नागें रुद्रयोजी, वाण लाग्यो शीं
चाण; कोकुहो उरुी गयोजी, जून जून नियत प्रमा
ण रे. प्रा० ॥ ८ ॥ शस्त्र हण्यां संग्राममांजी, राने प
रुचा जीवंत; मंदिरमांथ्री मांनवीजी, राख्याही न रदं
त रे. प्रा० ॥ ९ ॥ इति ज्वितव्यतावादः कथितः

॥ ढाल चोथी ॥

राग मारुणी. मनोहर हीरजीरे, ए देशी.

काल स्वप्नाव नियतमतिकूमी, कर्म करे तेथाय;
कर्म निरय तिरिय नर सुरगतिजी, जीव जवंत
रे जाय; चेतन चेतिये रे ॥ १ ॥ कर्म समो नहीं कोइ.
चेतन० ए आंकणी कर्म राम वस्या वनवासे, सीता

पामे आल; कर्म लंकापति रावणनुं, राजी थयुं विस
राल ॥ चे० ॥ १ ॥ कर्म कीली कर्म कुंजर, कर्म नर
गुणवंत; कर्म रोग शोग दुःख पीडित, जनम जाय वि
लपंत ॥ चे० ॥ ३ ॥ कर्म वरस लगें रिसहेसर, उदक न
पामे अन्न; कर्म वीरने जुनुयोगमां रे, खीला रोप्या क
न्न ॥ चे० ॥ ४ ॥ कर्म एक सुखपाले बेसे, सेवक सेवे
पाय; एक हय गय रथ चढ्यां चतुरनर, एक आग
ल नजाय ॥ चे० ॥ ५ ॥ उद्यम मानी अंधतणी परे,
जग हीने हाहूतो; करम बली ते लहे सकल फल,
सुखनर सेजे सूतो रे ॥ चे० ॥ ६ ॥ उंदर एके कीधो
उद्यम, करंमीनु करकोले; मां हे घणां दिवसनो नूख्यो,
नाग रह्यो दुःख मोले रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ विवर करी
मूषक तस मुखमां, दिये आपणो देह; माग लही व
ननाग पधार्या, कर्म मर्म जूनु एह ॥ चे० ॥ ८ ॥

॥ इति कर्म विवादः कथितः ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

हवे उद्यमवादी जणे ए, ॥ ए च्यारे असम

श्रुतो; सकल पदारथ साधवा ए, एक उद्यम समरथ तो
 ॥१॥ उद्यम करतां मानवी ए, शुं नवि सीजे काज तो;
 रामे रयणायर तरी ए, लीधुं लंका राज तो ॥ २ ॥
 करम नियत ते अनुसरे ए, जेहमां शक्ति न होय तो;
 देउल वाघ मुखे पंखीयां ए, पिउ पेसंता जाय तो
 ॥ ३ ॥ विण उद्यम किम निकले ए, तिल मां हेथी ते
 ल तो; उद्यमथी उंची चढे ए, जुन एकेंडिय वेळ तो
 ॥ ४ ॥ उद्यम करतां एक समे ए, जेह नवि सीजे का
 ज तो; ते फिरि उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज
 तो ॥ ५ ॥ उद्यम करी उर्या विना ए, नवि रंधाये अ
 न्न तो; आवी न पफे कोलीउ ए, मुखमां पग्गे जतन्न
 तो ॥ ६ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यमे कीधां क
 र्म तो; उद्यमथी दूरे टले ए, जुन कर्मनो मर्म तो ॥ ७ ॥
 दृढ प्रहारी इत्या करी ए, कीधां पाप अनंत तो; उद्य
 मथी पट मानमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ८ ॥
 टीपे टीपे सर जरे ए, कांकरे कांकरे पाल तो; गिरि
 जेहया गढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निदाल तो ॥ ९ ॥
 उद्यमथी जल त्रिंउउ ए, करे पाखाणमां गम तो, उद्य

मथी विद्या नरणे ए; नद्यम जोने दाम तो ॥ १० ॥

॥ इति नद्यम विवादः ॥

॥ ढाल ठठी. ए ठंठी किहां राखी. ए देशी ॥

ए पांचे नयवाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे; अ
मिय सरस जीन वाणी सुणीने, आनंद अंग न मावे
रे प्राणी; समकित मति मन आणो, नय एकांत म ता
णो रे प्राणी; ते मिळ्या मति जाणो रे प्राणी ॥स०॥

॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समुदाय मिळ्या विण,
कोइ काज न सीजे; अंगुलियोगे करतणी परे, जे
बूजे ते रीजे रे प्राणी ॥ स० ॥ २ ॥ आग्रह आणी

कोइ एकने, एहमां दीजे वरुाइ; पण सेना मिलि स
कल रणांगण, जीते सुन्नट लरुाइ रे प्राणी ॥सम०॥

॥ ३ ॥ तंतु स्वजावे पट नपजावे, कालक्रमे रे वणा
ए; नवितव्यता होय तो निपजे, नहीं तो विघन घ
णांए रे प्राणी ॥ सम० ॥ ४ ॥ तंतु वाय नद्यम नो

क्तादिक, नाग्य सकल सहकारी; इम पांचे मलि सक
ल पदारथ, उत्पत्ति जुळ विचारी रे प्राणी ॥ सम० ॥

अतो; सकल पदारथ साधवा ए, एक उद्यम समरथ तो
॥१॥ उद्यम करतां मानवी ए, शुं नवि सीजे काज तो;
रामे रयणायर तरी ए, लीधुं लंका राज तो ॥ २ ॥
करम नियत ते अनुसरे ए, जेहमां शक्ति न होय तो;
देउल वाघ मुखे पंखीयां ए, पिउ पेसंता जाय तो
॥ ३ ॥ विण उद्यम किम निकले ए, तिल मांहेथी ते
ल तो; उद्यमथी नंची चढे ए, जुन एकेंडिय वेल तो
॥ ४ ॥ उद्यम करतां एक समे ए, जेह नवि सीजे का
ज तो; ते फिरि उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज
तो ॥ ५ ॥ उद्यम करी नुर्या विना ए, नवि रंधाये अ
न्न तो; आवी न पने कोलीउ ए, मुखमां पखे जतन्न
तो ॥ ६ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यमे कीधां क
र्म तो; उद्यमथी दूरे टले ए, जुन कर्मनो मर्म तो ॥ ७ ॥
दृढ प्रहारी हत्या करी ए, कीधां पाप अनंत तो; उद्य
मथी षट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ८ ॥
टींपे टींपे सर जरे ए, कांकरे कांकरे पाल तो; गिरि
जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निहाल तो ॥ ९ ॥
उद्यमथी जल विंडुन ए, करे पाखाणमां गम तो, उद्य

मथी विद्या ज्ञाने ए; उद्यम जोड़े दाम तो ॥ १० ॥

॥ इति उद्यम विवादः ॥

॥ ढाल ठठी. ए ठंठी किहां राखी. ए देशी ॥

ए पांचे नयवाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे; अ
मिय सरस जीन वाणी सुणीने, आनंद अंग न भावे
रे प्राणी; समकित मति मन आणो, नय एकांत म ता
णो रे प्राणी; ते मिथ्या मति जाणो रे प्राणी ॥स०॥

। १ ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समुदाय मिथ्या विण,
तोइ काज न सीजे; अंगुलियोगे करतणी परे, जे
सूजे ते रीजे रे प्राणी ॥ स० ॥ २ ॥ आग्रह आणी
तोइ एकने, एहमां दीजे वसाइ; पण सेना मिलि स
कल रणांगण, जीते सुन्नट लसाइ रे प्राणी ॥सम०॥

। ३ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावे, कालक्रमे रे वणा
इ; नवितव्यता होय तो निपजे, नहीं तो विघन घ
णांए रे प्राणी ॥ सम० ॥ ४ ॥ तंतु वाय उद्यम जो
कादिक, जाग्य सकल सहकारी; इम पांचे मलि सक
न पदारथ, उत्पत्ति जुलु विचारी रे प्राणी ॥ सम० ॥

॥ ५ ॥ नियति वशे हृद्गु करमो अइने, निगोद अकी
निकलीयो; पुण्ये मनुज ज्ञवादिक् पामी. सज्जुरुने ज
इ मलियो रे प्राणी ॥ सम० ॥ ६ ॥ ज्ञव धितिनो प
रिषाक अयो तव, पंमितवीर्यं उद्धसीत्त; ज्ञव्य स्वज्ञा
वे शिवगति पामी, शिवपुरे जइने वसीत्त रे प्राणी
॥ सम० ॥ ७ ॥ वर्द्धमान जीन इणीपरे विनये, शास
न नायक गायो; संघ सकल सुख होये जेहथी, स्या
दवादरस पायो रे प्राणी ॥ सम० ॥ ८ ॥

कलश.

इय धर्मनायक, मुक्ति दायक, वीर जिनवरसंघु
एयो; सय सत्तर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घ
णो; श्री विजयदेव सूरिंद पटधर श्री विजयप्रज्ञ मु
णिंदए, श्री कीर्त्तिविजय वाचक शिष्य इणी परे, वि
नय कहे आणंद ए ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संज्ञवनाथनुं स्तवन ॥

साहित्वा सांज्ञलो रे, संज्ञव अरज हमारी ॥ ज

(७८९)

वोजव हुं ज्ञम्यो रे, न लहि सेवा तुमारी ॥ नरय नि
गोदमां रे, तिहां हुं बहु ज्ञव ज्ञमीन ॥ तुम विना दुःख
सह्यां रे, अहोनिश क्रोधे धमधमीयो ॥ सा० ॥ १ ॥
इंद्रिय वश परुयो रे, पाढ्यां व्रत नवि सुंसे ॥ त्रस
पण नवी गण्या रे, हणीया आवर हुंसे ॥ व्रत चित
नवि धर्यां रे, बीजुं साचुं न बोढ्युं ॥ पापनी गोठमी
रे, तीहां में हइरुलुं खोढ्युं ॥ सा० ॥ २ ॥ चोरी में
करी रे, चउविह अदत्त न टाढ्युं ॥ श्री जिन आणशुं
रे, में नवि संयम पाढ्युं ॥ मधुकरतणीपरे रे; शुद्ध
न अहार गवेख्यो ॥ रसना लालचे रे, नीरस पिंरु न
वेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरज्व दोहिलो रे, पामी सो
ह वश परियो ॥ परस्त्री देखीने रे, मुज मन तिहां
जइ अमीयो ॥ काम न को सख्यां रे, पापे पिंरु में ज
रीयो ॥ शुद्ध बुद्ध नवी रही रे, तेणे नवी आत्म ल
रीयो ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचे रे, में बहु दी
नता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, मलीतो नव रही
राखी ॥ जे जन अज्जिलसे रे, ते तो तेहथी नासे ॥
तृण सम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥ सा० ॥

(७९०)

॥ ५ ॥ धन धन ते नरा रे, एहनो मोह विठोनी ॥
विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां जोनी ॥ अन्नक ते
में नख्यां रे, रात्री नोजन कीधां ॥ व्रत ठ नवि पा
लियां रे, जेहवां मूलधी लीधां ॥ साण ॥ ६ ॥ अनंत
नव हुं नम्यो रे, नमतां साहिव मलियो ॥ तुम वि
ना कोण दीये रे, बोध रयण मुज बलियो ॥ संनव
आपजो रे, चरण कमल तुम सेवा ॥ नय एम विनवे
रे, सुणजो देवाधि देवा ॥ साण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजीनुं स्तवन ॥

अंतरजामि सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तु
मारो ॥ सांनलीने आव्यो हुं तीरे, जनम मरण दुःख
वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे ठे राज, अमने शीव
सुख आपो ॥ ए आंकणी ॥ सहकोनां मनवांठित पू
री, चिंता सहनी चुरो ॥ एहवुं विरुद ठे राज तुमाहं,
केम राखो ठो दूरे ॥ सेण ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो
देखी, मनमां मेहेर न धरशो ॥ करुणासागर केम
कहेवाशो, जो उपकार न करशो ॥ सेण ॥ ३ ॥ लट

(७९)

पटनुं हवे काम नहीं ठे, प्रत्यह दरिसेण दीजे ॥ धुं
आने धीजुं नहीं साहेब, पेट पमुचां पतीजे ॥ सेण ॥
॥ ४ ॥ श्री संखेश्वर मंरुण साहेब, विनतनी अवधारो ॥
कहे जिनहर्ष मया कर मुजने, जव सायरथी तारो
॥ सेण ॥ ५ ॥ इति.

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ वाडहाजीनी वाटनी अमे जोतां रे ॥ ए देशी.

जय जिनवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर
अवतारी रे, गौतम पमुहा गणधारी ॥ १ ॥ सनेही
वीरजी जयकारी रे ॥ अंतरग रिपुने त्रासे रे, तप को
पाटोपें वासे रे, लहुं केवलनाण उद्धासे ॥ स० ॥
॥ २ ॥ कटीलंके वाद वदाय रे, पण जिन साथें
न घटाय रे, तेणो हरिलंबन प्रभु पाय ॥ स० ॥ ३ ॥
सवि सुरवहू श्रेष्ठ श्रेष्ठ कारा रे, जल पंकजनी पेरेन्या
रा रे, तजी तृषणा जोग विकारा ॥ स० ॥ ४ ॥ प्रभु
देशना अमृतधारा रे, जिन धर्म विषे रथकारा रे, जे
णो तार्या मेघ कुमारा ॥ स० ॥ ५ ॥ गौतमने केवल

आली रे, वर्या स्वातिये शिव वरमाली रे; करे उत्तम
लोक दीवाली ॥ स० ॥ ६ ॥ अंतरंग अलह निवारी रे,
शुभ सज्जनेने उपगारी रे, कहे वीर वीजु हितकारी
॥ स० ॥ ७ ॥ इति.

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ प्रभु कंठे ठवि फूलनी माला ॥ ए देशी.

रमती गमती अमुन साहेली, वेहु मली लीजी
ए एक ताली रे ॥ सखी आज अनोपम दीवाली ॥
लील विलासे पूरण मासे, पोश दशम निशि रढीया
ली रे ॥ स० ॥ १ ॥ पशुपंखी वसीयां वनवासे, तेप
ण सुखीआं समकाली रे ॥ स० ॥ एणी रात्रे घेर घे
र उत्सव होशे, सुखीयां जगतमां नरनारी रे ॥ स० ॥
॥ २ ॥ उत्तम ग्रह विशाखा जोगे, जनम्या प्रभुजी
जयकारी रे ॥ स० ॥ साते नरके अयां अजुवालां,
थावरने पण सुखकारी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ माता नमी
आवे दिक्कुमरी, अधोलोकनी वसनारी रे ॥ स० ॥ सू

तीघर शशाने करती, जोजन एक अशुची टाली रे
॥ स० ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वलोकनी आठज कुमरी, वरसावे
जल कुसुमाली रे ॥ स० ॥ पूरव रुचक आठ दर्पण
धरती, दक्षिणानी अरु कलशाली रे ॥ स० ॥ ५ ॥ अरु
पश्चिमनी पंखा धरती, उत्तर आठ चमर ढाली रे
॥ स० ॥ विदिशीनी चञ्च दीपक धरती; रुचक द्वीप
नी चणवाली रे ॥ स० ॥ ६ ॥ केल तणां घर त्रणे
करीने, मर्दन स्नान अलंकारी रे ॥ स० ॥ रक्षा पोट
ली बांधी वेहुने, मंदिर सेट्यां शणगारी रे ॥ स० ॥
॥ ७ ॥ प्रज्जु मुख कमलें अमरी जमरी, रास रमं
ती लटकाली रे ॥ स० ॥ प्रज्जु माता तुं जगतनी मा
ता, जग दीपकनी धरनारी रे ॥ स० ॥ ८ ॥ माजी तुज
नंदन घणुं जीवो, उत्तम जीवने उपगारी रे ॥ स० ॥
उप्पन्न दिक्कुमरी गुणगाती, श्री शुभवीर वचन शा
लीरे ॥ स० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

अवसर पामीने रे, कीजे नव आंबेलनी तुली

॥ उन्नी करतां आपद जाये, ऋद्धि सिद्धि लहिये बहु
ली ॥ अ० ॥ १ ॥ आसोने चैत्रे आदरशुं, सातमथी
संजाली रे ॥ आलस मेली आंवेळ करशे, तस घर
नित्य दीवाली ॥ अ० ॥ २ ॥ पूनमने दिन पूरी घाते
प्रेमशुं पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधि, जा
प जपे जपमाली ॥ अ० ॥ ३ ॥ देहेरे जशने देव जु
हारो, आदीश्वर अरिहंत रे ॥ चोवीसे चाहीने पूजो,
जावशुं जगवंत ॥ अ० ॥ ४ ॥ वे टंके पन्निक्कमणुं
बोळ्युं, देववंदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपाल तणी प
रे समजी, चित्तमां राखो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकि
त पामी अंतरजामी, आराधो एकांत रे ॥ स्याद्वाद
पंथे संचरतां, आवे जवनो अंत, ॥ अ० ॥ ६ ॥
सत्तर चोराणुंये शुद्धि चैत्रीये, वारशे वनावी
रे ॥ सिद्धचक्र गातां सुख संपत्ति, चालीने घेर
आवी ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरत्न वाचक, जे नरना
री चाले रे ॥ जवनी जावठ ते जांजीने, मुक्तिपुरी
मां महाले ॥ अ० ॥ ८ ॥

(७९५)

॥ अथ रोहिणी तपनुं स्तवन ॥

हां रे मारे वासुपूज्यनो नंदन, मधवा नामजो
॥ राणी तेहनी कमला, पंकज लोयणी रे लो ॥ हां
रे मारे आठ पुत्रने, नपर पुत्री एक जो ॥ मात पि
ताने वहादी, नामे रोहिणी रे लो ॥ १ ॥ हां रे मारे
देखी यौवन, वय निज पुत्री नूप जो ॥ स्वयंवर मंरु
प मांसी, नृपतेमाविया रे लो ॥ हां रे मारे अंग वं
गने, मरुधर केरा राय जो ॥ चातुरंगी फोजांधी चं
पाये, आवीआ रे लो ॥ २ ॥ हां रे मारे पूरव जवना,
रागे रोहिणी नाम जो ॥ नूप अशोकने कंठे, वरमा
ला धर रे लो ॥ हां रे मारे गज रथ घोडा, दान अने
बहु मान जो ॥ देइ बोलावी बेटी, बहु आसंबरे रे
लो ॥ ३ ॥ हां रे मारे रोहिणी राणी, जोगवतां सु
ख जोग जो ॥ आठ पुत्रने पुत्री चार सोहामणी रे
लो ॥ हां रे मारे आठमा पुत्रनुं, लोकपाल ठे नाम
जो ॥ ते खोले लई बेठी, गोखे जामीनी रे लो ॥ ४ ॥
हां रे मारे एहवे कोइक, नगर वणीकनो पुत्र जो ॥
आयु कथथी बालक, मरण दशा लहे रे लो ॥

(७६)

हां रे मारे मातपितादिक, सहु तेनो परिवार जो ॥ रम
तो परतो गोख तले, अईने वहे रे लो ॥ ५ ॥ हां रे मारे
ते देखी अति, हरखी राणी ताम जो ॥ पीनने ज्ञां
खे ए नाटक कुण ज्ञातनुं रे लो ॥ हां रे मारे दीप
केहे ए, पूरव पुन्य संकेत जो ॥ जन्म अकी नवी दी
तुं दुःख कोइ जातनुं रे लो ॥ ६ ॥

॥ अथ गौतमस्वामीनुं प्रज्ञाति स्तवन ॥

राग प्रज्ञाति

॥ मात पृथ्वी सुत प्रात उठी नमो, गणधर
गौतम नाम गेले ॥ प्रह समे प्रेमशुं जेह ध्यातां सदा,
चढती कला होय वंश वेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसूजूति
नंदन विश्वजन वंदन, डुरित निकंदन नाम जेनुं ॥ अ
जेद बुद्धे करी ज्ञविजन जे ज्ञजे, पूर्ण पहेंचे सही
ज्ञाग्य तेनुं ॥ मा० ॥ १ ॥ सुरमणि जेह चिंतामणि सुर
तरु, कामित पूरण कामधेनु ॥ एहज गौतमतणुं ध्या
न हृदये धरो, जेह अकी अधिक नहीं महात्म्य केनुं

(७९७)

॥ मा० ॥ ३ ॥ ज्ञान बल तेजने सकल सुख संपदा,
गौतम नामथी सिद्धि पामे ॥ अखंड प्रचंड प्रताप
होय अवनिमां, सुरनर जेहने शीश नामे ॥ मा०
॥ ४ ॥ प्रणव आदे धरी माया बीजे करी, स्वमुखे गौ
तम नाम ध्याये ॥ कोन्ही मन कामना सफल वेगे फ
ले, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ५ ॥ दुष्ट दूरे
टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधिने व्याधि नासे ॥
जूतनां प्रेतनां जोर ज्ञांजे वली, गौतम नाम जपतां
उच्चासे ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदे आप लब्धे ज
इ, पन्नरशें त्रणने दीख दीधी ॥ अठम पारणे तापस
कारणे, क्षीर लब्धे करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ७ ॥
वरस पञ्चास लगे गृहवासे वस्या, वरस वली त्रीश
करी वीर सेवा ॥ बार वरसां लगे केवल जोगव्युं, ज
क्ति जेहनी करे नित्ये देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महियल
गौतम गोत्र महिमा निधि, गुण निधि ऋद्धिने सिद्धि
दाई ॥ उदय जस नामथी, अधिक लीला लहे, सुजस
सौजाग्य दोलत सवाई ॥ ए ॥ इति ॥

(७६)

॥ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

पास संखेश्वरा, सार कर सेवकां, देवकां एवमी
वार लागे ॥ कोमी कर जोमी दरवार आगे, खमा ॥
ठाकुरां चाकुरां मान मागे ॥ पास० ॥ १ ॥ प्रगट था
पासजी मेली परुदो परो, मोरु असुराणने आप
ठोमो ॥ सुज महीराण मंजुसमां पेशीने, खलकना
नाथजी बंध खोलो ॥ पास० ॥ २ ॥ जगतमां देव ज
गदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज उंधे ॥ मो
टा दानेश्वरी तेहने दाखीए, दान दे जेह जगकाल
मोघे ॥ पा० ॥ ३ ॥ ज्नीरु पमी जादवा जोर जागी ज
रा, ततक्षण त्रीकमे तुज संजार्यो ॥ प्रगट पातालथी
पलकमां तै प्रजु, जक्तजन तेहनो जय निवार्यो ॥
पास० ॥ ४ ॥ आदि अनादी अरिहंत तुं एक ठे, दीन
दयाल ठे कोण डुजो ॥ उदयरत्न कहे प्रगट प्रजु पा
सजी, पामी जय जंजनो एह पूजो ॥ [उदयरत्न कहे
असुरनुं शुं गजु, मानसो रखे महाराज जूगे] ॥ ५ ॥ इति.

(७९९)

॥ अथ दान, शील, तप, अने ज्ञावनुं
प्रज्ञातियुं ॥

रे जीव जैन धर्म कीजीये, धर्मना चार प्रकार॥
दान शीयल तप ज्ञावना, जगमां एटलुं सार ॥ रे
जी० ॥ १ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदीसर सुखका
र ॥ शीलनी रस वोहोरावियो, श्री श्रेयांस कुमार
॥ रे जी० ॥ २ ॥ चंपा पोल उघामवा, चारणीए का
व्यां नीर ॥ सतीय सुज्जडा जश थयो, शीयले सुरन
र धीर ॥ ३ ॥ तप करी काया शोषवी, सरस नीरस
आहार ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, धन धनो अणगार
॥ रे जी० ॥ ४ ॥ अनित्य ज्ञावना ज्ञावतां, धरतां नि
र्मल ध्यान ॥ जरत आरिसा ज्ञुवनमां, पाम्या केवल
ज्ञान ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ जैन धर्म सुरतरु समो, जेह
नी शीतल गाया ॥ समय सुंदर कहे सेवतां, वंठित
फल पाया ॥ रे जी० ॥ ६ ॥

॥ अथ प्रज्ञातियुं ॥

॥ जोबनीयांनी मोजां फोजां, जाय नगारां देती

रे ॥ घनी घनीनां घनियालां वागे, तोय न जागे तेथी
रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राहसी जोर करे ठे, फेलावे फ
जेती रे, आवी अवघे नुशंके नहि लखपतिने लेती
रे ॥ जो० ॥ २ ॥ माळे वेठो मोज करे ठे, खांते जुवे
खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे, गोफण गोला सें
ती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जमराजाने शरणे जावुं, जोरा
लो कोइ जेथी रे ॥ डुनियां दूजो दीसे नांहि, आखर
तरशो तेहथी रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ दांत परुया ने मोसो
थयो, काज न सरयुं केहथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपे
समजो, कहीये वातो केती रे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ प्रजाति रागमां स्तवन ॥

प्रजाते उठीने माता मुखुं जोवे ॥ ए देशी ॥

आवी रूमी जगति में, पेहेलां न जाणी पे
हेलां न जाणी रे प्रजु पेहेलां न जाणी ॥ संसार
नी मायामां में वलोव्युं पाणी ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥
कळपतरुनां फल लावीने जे जिनवर पूजे ॥ काल अ

नादि कर्म ते संचित, सत्ताथी ध्रूजे ॥ आ० ॥ १ ॥
स्थावर तिरि निरयालय डुग, इग विगला लीजे ॥
साधारण नवमे गुणगणे, धुर ज्ञागे गीजे ॥ आ० ॥
॥ २ ॥ केवल पामीने शिवगति पामी, शैलेशी टाणे ॥
चरम समय दोय मांहे स्वामी, अंतिम गुणगणे
॥ आ० ॥ ३ ॥ बाकी नाम करमनी पयली, सघली
तीहां जावे ॥ अजर अमर निकलंक स्वरूपे निःकर्मा
थावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जे सिद्ध केरी पद्मिमा पूजे, ते
सिद्धमयी होवे ॥ नाही धोइ निर्मल चित्ते आरिसो
जेवे ॥ आ० ॥ ५ ॥ कर्म सुकृत तप केरी पूजा, फलते न
र पावे ॥ श्री शुद्धवीर स्वरूप विलोकी, शिव बहु घर
थावे ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन ॥ राग प्रज्ञाती ॥

आजको लाहो लीजीए, काल केणे रे दीठी ॥
रहण न पावे पा घनी, जब थावे चीठी ॥ आ० ॥
॥ १ ॥ मनसा वाचा कर्मणा, आलस सब ठंढी ॥
ध्यान धरुं अरिहंतनुं, स्थानक शिर मंढी ॥ आ० ॥
॥ २ ॥ विनय मूल जे पालीए, श्री जिनवर धर्म ॥ ज्ञा

(८०२)

वे शुद्ध आराधतां, बूटे निज कृत कर्म ॥ आ० ॥ ३ ॥
दान शीयल तप ज्ञावना, ए चार प्रकार ॥ दया शुद्ध
आराधिये, पामीये ज्ञवपार ॥ आ० ॥ ४ ॥ धर्मनो मर्म
ए जाणजो, राग द्वेषने वारो ॥ केवलज्ञान निपाईने,
देवचंद्र पद सारो ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ स्तवन ॥ राग प्रज्ञाति ॥

जागे सो जिन ज्ञक्त कहावे, सोवे सो संसारी
रे ॥ कर्म कलंककी कीच ज्ञइ है, ताथें ज्यो ज्ञम ज्ञा
री है ॥ जाण ॥ १ ॥ त्रस जीवकी हत्या न करे, स्था
वर करुणा कारी है ॥ कूफी साख कथन नहीं कूफा
बोले बोल विचारी है ॥ जाण ॥ २ ॥ थापण मोसे
अदत्त न लेवे, चोरी मारी निवारी है ॥ पंच साखे पाणि
ग्रहण करीने, अवर स्त्रीया ब्रह्मचारी है ॥ जाण ॥ ३ ॥
स्नान प्रमित जल जिनकी सेवा, परिग्रह संख्या धा
री है ॥ रूपचंद्र समकितके लक्षण, ताकुं वंदना इ
मारी है ॥ जाण ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ आप स्वज्ञावनी सध्याय ॥

आप स्वज्ञावमां रे, अवधू सदा मगनमें रहेनां.

जगत जीव हे करमाधीना, अचरिज कबुझ

न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा, कोइ नहीं
तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा हे सो तेरी पासे,
अवर सबे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं
अविनाशी, अब हे इनको विलासी ॥ वपु संग जब
दूर निकाशी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥
रागने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥
जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥
आ० ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए हे जग
जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अन्धासा, लहो सदा
सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कबहींक काजी कबहींक
पाजी, कबहींक हुआ अपन्नाजी ॥ कबहींक जगमें
कीर्ति गाजी, सब पुञ्जकी बाजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शुद्ध
पयोगने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म
कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ अथ सहजानंदीनी सध्याय ॥

॥ बीजी असरण ज्ञावना ॥ ए देशी ॥

सहजानंदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चित रे ॥
मोह तणा रणीआ जमे, जाग जाग मतिवंत रे, लूटे

जगतना जंत रे, नाखी वांक अत्यंत रे, नरकावास उ
वंत रे, कोइ विरला उगरंत रे ॥ स० ॥ १ ॥ राग छे
ष परिणति जजी, माया कपट कराय रे ॥ काश कु
सुम परें जीवमो, फोगट जनम गमाय रे, माथेजय
जमराय रे, श्यो मन गर्व धराय रे, सहु एक मारग
जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥ स० ॥ २ ॥
रावण सरिखा रे राजवी, नागा चाढ्या विण धाग रे;
दश माथां रण ररुवरुचां, चांच दीए शिर काग रे;
देव गया सवि ज्ञाग रे, न रह्यो माननो ठाग रे; हरि
हाथें हरिनाग रे, जोजो ज्ञाइउना राग रे ॥स०॥३॥
केइ चाढ्या केइ चालशे, केता चालणहार रे ॥ मार
ग वहेतो रे नित्य प्रत्ये, जोतां लग्न हजार रे ॥ वेश
विदेश सधार रे, ते नर एणें संसार रे ॥ जातां जम
दरवार रे, न जुवे वार कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारा
यण पुरी द्वारिकां, बलती मेली निराश रे ॥ रोता र
णमां ते एकला, नाठा देव आकाश रे ॥ किहां तरु ठा
या आवास रे, जलजल करी गयो सास रे ॥ बलजइ
सरोवर पास रे, सुणी पांरुव शिववास रे ॥स०॥५॥

राजी गाजीने बोलता करता हुकम हेरान रे ॥ पो
 ठ्या अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मदत्त
 नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे, जेवुं पींपल
 पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥ वालेस
 र विना एक घन्ती, नवि सोहातुं लगार रे ॥ ते विना
 जन्मारो वही गयो, नहीं कागल समाचार रे ॥ नहीं
 कोइ कोइनो संसार रे, स्वारथीन परिवार रे ॥ माता
 मरुदेवी सार रे, पोहोतां मोक्ष मोजार रे ॥ स० ॥ ७ ॥
 मात पिता सुत बांधवा, अधिको राग विचार रे ॥ ना
 री असारी रे चित्तमां, वंठे विषय गमार रे, जुवो सू
 रिकांता जे नार रे, विख देती ज्जरतार रे ॥ नृप जिन
 धर्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे ॥ स० ॥ ८ ॥
 हसी हसी देता रे तालीन, शय्या कुसुमनी सार रे ॥
 ते नर अंते माटी अया, लोक चणे घरवार रे, घमता
 पात्र कुंजार रे, एहवुं जाणी असार रे ॥ ठोमथो विषय
 विकार रे, धन्य तेहनो अवतार रे ॥ स० ॥ ९ ॥ आव
 चासुत शिव वर्या, वली एलाची कुमार रे ॥ धिक् धि
 क् विषया रे जीवने, लइ वैराग्य रसाल रे, मेहेली

मोह जंजाल रे, घर रमे केवल बाल रे, धन्य करकं
मू जूपाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ श्री शुभ्रविजय सुगुरु
लही, धर्म रयण धरो ठेक रे ॥ वीर वचन रस शैलनी,
चाखे चतुर विवेक रे, न गमे ते नर जेक रे, धरता
धर्मनी ठेक रे, जवजल तरिया अनेक रे ॥ स० ॥ ११ ॥

॥ अथ चेतन शिखामाणी सद्याय ॥

चेतन अब कबु चेतीयें, ज्ञान नयन उघाकी; स
मता सहजपणुं जजो, तजो ममता नारी ॥ चे०
॥ १ ॥ या हुनीयां हे बावरी, जेसी बाजीगर
बाजी ॥ साथ कीसीके नां चले; ज्युं कुलटा नारी
॥ चे० ॥ २ ॥ माया तरुठाया परें, न रहे थिरकारी;
जानत हे दिलमें जनी, पण करत विगारी ॥ चे०
॥ ३ ॥ मेरी मेरी तुं क्या करे, करे कोणशुं यारी;
पलटे एकण पलकमें, ज्युं घन अंधीयारी ॥ चे० ॥ ४ ॥
परमात्म अविचल जजो, चिदानंद आकारी; नय
कहे नियत सदा करो, सब जन सुखकारी ॥ चे० ॥ ५ ॥

॥ अथ आत्मबोधनो सद्याय ॥

॥ हो सुण आतमा मत परु मोहपंजर मांहे ॥

माया जाल रे ॥ धनराज्य जोवन रूप रामा, सुत सुता
घरवार रे ॥ हुकुम होदा हाथी घोमा, कारिमो परि
वार ॥ मायाजाल रे ॥ हो० ॥ १ ॥ अतुल बल हरि च
क्री रामा, नुजोर्जित मदमत्त रे ॥ क्रूर जमवल नि
कट आवे, गलित जाये सत्त ॥ मायाण ॥ हो० ॥ २ ॥
पुहवीने जे बत्र परें करे, मेरुनो करे दंरु रे ॥ ते प
ण गया हाथ घसता, मूकी सर्व अखंरु ॥ मा० ॥
हो० ॥ ३ ॥ जे तखत बेसी हुकुम करता, पहेरी न
वला वेश रे ॥ पाघ सेहेरा धरत टेढा, मरी गया ज
मदेश ॥ माण ॥ हो० ॥ ४ ॥ मुख तंबोलने अधर
राता, करत नव नव खेल रे ॥ तेह नर बल पुण्य
घाठे, करत परघर टेल ॥ माण हो० ॥ ५ ॥ ज्ञज्ञ स
दा ज्ञगवंत चेतन, सेव गुरुपदपद्म रे ॥ रूप कहे कर
धर्म करणी, पामे शाश्वत सद्म ॥ माण ॥ होण ॥ ६ ॥

॥ अथ आत्मबोधनो सज्ञाय ॥

॥ सांज्ञत सयणा साची सुणावुं, पूरव पुण्यें तुं
पाम्यो रे ज्ञाइ ॥ नरक निगोदमां ज्ञमतां नरज्ञव, तें
निःफल केम वाम्यो रे ज्ञाइ ॥ सां० ॥ १ ॥ जैनधर्म

जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्यो रे ज्ञाइ ॥ मेघ
घटा सरिखा गज साटे, गर्दज्ञ घरमां बांध्यो रे ज्ञाइ
॥ सा० ॥ १ ॥ कल्पवृक्ष कुहामे कापी, धंतुरो घेर
घारे रे ज्ञाइ ॥ चिंतामणि चिंतित पूरण ते, काग उमा
रुण रुरे रे ज्ञाइ ॥ सां० ॥ ३ ॥ एम जाणी जावा
नदि दीजें, नर नारी नर जवने रे ज्ञाइ ॥ तुलसी
शुद्ध धर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मननें रे ज्ञाइ
॥ सां० ॥ ४ ॥ जे विज्ञाव परज्ञावमां ज्ञीं, रमण
स्वज्ञावमां करीं रे ज्ञाइ ॥ उत्तम पद पद्मने अव
लंबी, ज्ञवियण जव जल तरीये रे ज्ञाइ ॥ सां० ॥ ५ ॥

॥ अथ धोवीमानी सजाय ॥

॥ धोवीमा तुं धोजे मननुं धोतीं रे, रखे रा
खतो मेल लगार रे ॥ एणे रे मेलें जग मेलो कयों
रे, अणधोयुं न राखे लगार रे ॥ धो० ॥ १ ॥ जिन
शासन सरोवर सोहामणुं रे, समकित तणी रुमी पा
ल रे ॥ दानादिक चारे वारणां रे, मांही नवतत्त्व कम
ल विशाल रे ॥ धो० ॥ २ ॥ तिहां ऊले मुनिवर इं
सला रे, पीये ठे तप जप नीर रे ॥ शम दम आर्व

जे सिला रे, तिहां पखाले आतम चीर रे ॥ धो० ॥
॥ ३ ॥ तपवजे तप तनके करी रे, जालवजे नव ब्र
ह्म वाम रे ॥ गंटा नरामे पाप अढारना रे, एम उ
जलुं होशे ततकाल रे ॥ धो० ॥ ४ ॥ आलोयण सा
बूनी सूधो करे रे, रखे आवे माया शेवाल रे ॥ निश्वे
पवित्रपणुं राखजे रे, पठे आपणा नियम संज्ञाल रे
॥ धो० ॥ ५ ॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे, परु मेली
ने संकेल रे ॥ समयसुंदरनी शीखनी रे, सुखनी अमृ
तवेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥

॥ अथ नरतचक्रीनी सध्याय ॥

॥ मनहीमें वैरागी नरतजी, मनहीमें वैरागी ॥

सहस बत्रीश मुकुट बंध राजा, सेवा करे वरु
जागी ॥ चोसठ सहस अंतेनरी जाके, तोहि न हुवा
अनुरागी ॥ न० ॥ १ ॥ लाख चोराशी तुरंगम जाके,
ठनुं कोरु हे पागी ॥ लाख चोराशी गज रथ सोही
यें, सुरता धर्मशुं लागी ॥ न० ॥ २ ॥ चार करोरु म
ण अन्नज नपने, लूण दश लख मण लागे ॥ तिन
कोरु तो गोकुल दूजे, एक कोरु हल सागी ॥ न० ॥

॥ ३ ॥ सहस्र वत्तीस दश वरुजागी, ज्ञये सरवके
त्यागी ॥ वनुं कोरु गामके अधिपति, तोहे न हुआ
सरागी ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगरु वाजे
मन चिंता सब ज्ञांगी ॥ कनक कीर्त्ति मुनिवर वंदतेहे,
देजो मुक्ति में मागी ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ढंढण ऋषिजीनी सधाय ॥

॥ ढंढण ऋषिने वंदणा ॥ हुं वारी ॥ उ
त्कृष्टो अणगार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ अग्निग्रह ली
धो आकरो ॥ हुं वारी० ॥ लब्धे लेशुं आहार रे ॥ हुं
वारी लाल ॥ ढं० ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी ॥
हुं० ॥ न मले शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ न लीए मूल
असूऊतो ॥ हुं० ॥ पींजर हूवो गात रे ॥ हुं० ॥ ढं०
॥ २ ॥ हरि पूठे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस्र
अठार रे ॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कोण एहमें ॥ हुं० ॥ मुजने
कहो विचार रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको
दाखीन ॥ हुं० ॥ श्री मुख नेम जिणंद रे ॥ हुं० ॥
कृष्ण उमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन्य जादवकुल चंद
रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ४ ॥ गलीआमां मुनिवर मढ्या ॥ हुं०

(७११)

वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हुं० ॥ किराही मिथ्यात्विये
देखीने ॥ हुं० आव्यो ज्ञाव विशेष रे ॥ हुं० ॥ हुं०
॥ ए ॥ आवो अम घर साधुजी ॥ हुं० ॥ ल्यो मोद
क ठे शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ ऋषिजी लेइ आवीया ॥ हुं०
प्रभुजी पास विशुद्ध रे ॥ हुं० ॥ हुं० ॥ ६ ॥ मुज ल
ब्धे मोदक मिथ्या ॥ हुं० ॥ पूठे ठे कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥
लब्धि नहीं वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्री पति लब्धि नि
हाल रे ॥ हुं० ॥ हुं० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नहीं
॥ हुं० ॥ चाह्यो परठण काज रे ॥ हुं० ॥ इंट निंजा
रे जाइने ॥ हुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ हुं० ॥ हुं०
॥ ७ ॥ आवी सूधी ज्ञावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल
नाण रे ॥ हुं० ॥ ठंढण रुषि मुगते गया ॥ हुं० ॥ कहे
जिनहर्ष सुजाण रे ॥ हुं० ॥ हुं० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ अश्मत्ताजीनी सद्भाय ॥

श्री अश्मत्ता मुनिवरजूकी, करणीकी बलिहारी
वे ॥ खट वर्षनके संजम लीनो, वीरवचन चित्त धा
री वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपति श्री देवी नंदन,
गोलासपुर अवतारी वे ॥ अंग अग्यार पठे गुण आद

र, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ तप
गुण रयण संवठर आदिक, करकें काय उद्धारि वे ॥
प्रभु आदेशें विपुलाचल पर, करी अणसण अति ज्ञारी
वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर, क
र्म कलंक निवारी वे ॥ अठारसैं अमृताले तिहिं गिरि,
कीनी आपना सारी वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक अमृत
धर्म सुगुरुके, सुपसायें सुविचारी वे ॥ शिष्य कृमा क
ल्याण हरख धर, गुण गावे जयकारी वे ॥ श्री० ॥ ५ ॥
॥ अथ करकंमू प्रत्येक बुद्धजीनी सजाय ॥

॥ चंपा नगरी अति ज्ञानी ॥ हुं वारी ॥
दधिवाहन जूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती कू
खें उपनो ॥ हुं ॥ कर्म कीधो चंमाल रे ॥ हुं ॥ १ ॥
करकंमूने करु वंदणा ॥ हुं ॥ पहिलो प्रत्येक बुद्ध रे
॥ हुं ॥ गिरुवाना गुण गावतां ॥ हुं ॥ समकित आ
ये शुद्ध रे ॥ हुं ॥ कणा ॥ १ ॥ लाधी वांशनी लाकमी ॥ हुं ॥
अयो कंचनपुर राय रे ॥ हुं ॥ वापशुं संग्राम मांकी
न ॥ हुं ॥ साधवी लीन समजाय रे ॥ हुं ॥ कणा ॥ ३ ॥
वृषज रूप देखी करी ॥ हुं ॥ प्रतिबोध पाम्यो नरेश

रे ॥ हुं० ॥ उत्तम संजम आदर्यो ॥ हुं० ॥ देवता दी
धो वेषरे ॥ हुं० ॥ क० ॥ ४ ॥ कर्म खपाय मुगते गया ॥ हुं० ॥
करकंभू रुषिराय रे ॥ हुं० ॥ समयसुंदर कहे साधुने
॥ हुं० ॥ प्रणम्यां पातक जाय रे ॥ हुं० ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोधनी सध्याय ॥

॥ कहुवां फल ठे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥
रीस तणो रस जाणीए, हलाहल तोले ॥ क० ॥ १ ॥
क्रोधे क्रोम पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध सहि
त तप जे करे, तेतो लेखें न आय ॥ क० ॥ २ ॥ साधु
घणो तपीयो हुतो, धरतो मन वैराग ॥ शिष्यना क्रो
ध थकी अयो, चंमकोशीयो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आग
उठे जे घर थकी, ते पहेलुं घर बाले ॥ जलनो जोग
जो नवि मले, तो पासेनुं परजाले ॥ क० ॥ ४ ॥ क्रो
धतणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ हाण करे जे
हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयर
लन कहे क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया करजो
निर्मली, उपशम रस नार्ही ॥ क० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ माननी सद्याय ॥

रे जीव मान न कीजीयें, मानें विनय न आवे
रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे
रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र
विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिनां सुख ठे शाश्वतां, ते
केम लहीए जुक्ति रे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वसो संसा
रमां, गुणमां अधिकारी रे ॥ माने गुण जाये गली,
प्राणी जो जो विचारी रे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान कर्णु
जो रावणे, ते तो रामे मार्यो रे ॥ डुर्योधन गरवें क
री, अंते सवि हार्यो रे ॥ रे० ॥ ४ ॥ सूकां लाकनां
सारिखो, दुःखदायी ए खोटो रे ॥ उदयरत्न कहे मान
ने, देजो देशोटो रे ॥ रे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायानी सजाय ॥

॥ समकितनुं मूल जाणीयें जी, सत्य वचन
साक्षात् ॥ साचामां समकित वसे जी, मायामां मिथ्या
त्व रे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥ ए आं
कणी ॥ मुख मीगे जूगे मनें जी, कूरु कपटनो रे

(८१५)

कोट ॥ जीजें तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताके चों
ट रे ॥ प्राण ॥ १ ॥ आप गरजें आघो पमे जी, पण न
धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे आंतरो जी, ए मायानो पा
स रे ॥ प्राण ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्रीतकीजी, तेहशुं रहे
प्रतिकूल ॥ मेल न ठंमे मन तणो जी, ए मायानुं मू
ल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया करी जी, मित्रशुं
राख्यो जेद ॥ मल्लीजीनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या
स्त्री वेद रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ नदयरतन कहे सांजलो जी,
मेलो मायानी बुद्ध ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए
मारग ठे शुद्ध रे ॥ प्राण ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अंथ लोचनी सद्याय ॥

तुमें लक्षण जो जो लोचनां रे, लोचें जन पामे
लोचना रे ॥ लोचें माहा मन मोढ्या डुरे रे, लोचें
डुर्धर पंधे संचरे रे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोच तेहनां ले
उं ज्ञामणां रे, वली पाये नमीने करुं खामणां रे ॥
लोचें मरजादा न रहे कहेनी रे, तुमें संगत मेलो ते
हनी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोचें घर मेहेली रणमां मरे रे,
लोचें उंच ते नीचुं आचरे रे ॥ लोचें पाप जणी पग

लां नरे रे, लोनें अकारज करतां न नसरे रे ॥ तु० ॥
॥ ३ ॥ लोनें मनसुं न रहे निर्मलुं रे, लोनें सगपण
नासे वेगलुं रे ॥ लोनें न रहे प्रीतिने पावतुं रे, लोनें
धन मेले बहु एकतुं रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ लोनें पुत्र प्रत्ये
पिता हणे रे, लोनें हत्या पातक नवि गणे रे ॥ ते
तो दाम तणे लोनें करी रे, उपर मणिधर घाए ते म
री रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोनेनो थोने दीसे नहीं रे,
एवं सूत्र सिद्धांते कह्युं सही रे ॥ लोनें चक्री सुजुम
नामे जुवो रे, ते तो समुद्रमांहे मूवी मुवो रे ॥ तु० ॥
॥ ६ ॥ एम जाणीने लोनेने वंरुजो रे, एक धर्म गुं
ममता मंरुजो रे ॥ कवि उदयरतन ज्ञांखे मुदा रे, वं
दूं लोने तजे तेहने सदा रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आठ मदनी सजाय ॥

मद आठ महामुनि वारीये, जे दुर्गतिना दाता
रो रे ॥ श्री वीर जिणेसर उपदिसे, ज्ञांखे सोदम ग
णधारो रे ॥ मद० ॥ १ ॥ हांजी जातिनो मद पहेलो
कह्यो, पूर्वे हरिकेशीये कीधो रे ॥ चंराल तणे कूल

उपन्यो, तपथी सवि कारज सीधो रे ॥ मदण ॥ १ ॥
हांजी कुल मद बीजो दाखीयो, मरीची जवे कीधो
प्राणी रे ॥ कोमा कोमि सागर जवमां जम्यो, मद म
करो इम मन जाणी रे ॥ मदण ॥ ३ ॥ हांजी बल म
दथी दुःख पामीया, श्रेणिक वसूज्जुति जीवो रे ॥ ज
इ जोगव्यां दुःख नरक तणां, मुख पामता नित रीवो
रे ॥ मद० ॥ ४ ॥ हांजी सनतकुमार नरेसरु, सुर
आंगल रूप वखाण्युं रे ॥ रोम रोम काया बिगनी गर्ई,
मद चौथानुं ए टाणुं रे. ॥ मद० ॥ ५ ॥ हांजी मुनि
वर संजम पालतां, तपनो मद मनमां आयो रे ॥ थ
या कूरगमु ऋषि राजीया, पाम्या तपनो अंतरायो रे
॥ मदण ॥ ६ ॥ हांजी देश दशारणनो धणी, राय द
शार्ण जइ अजिमानो रे ॥ इंडनी रुद्धि देखी बुजी
या, संसार तजी थया ज्ञानी रे ॥ मदण ॥ ७ ॥ हांजी
स्थुलिजडे विद्यानो कख्यो, मद सातमो जे दुःख दाइ
रे ॥ श्रुत पूरण अर्थ न पामीया, जुठ मान तणी अ
धिकाइ रे ॥ मदण ॥ ८ ॥ राय सुज्जुम षट खंरुनो धणी,
लोज्जनो मद कीधो अपार रे ॥ हयगय रथ सब साथ

रे गळ्युं, गयो सातमी नरक मऊार रे ॥ मद० ॥ १० ॥
 इम तन धन यौवन राजनो, म धरो मनमां अहंकारो रे ॥
 ए अधिर असत्य सवि कारमुं, विणसे कृणमां बहु वा
 रो रे ॥ मद० ॥ ११ ॥ मद आठ निवारो व्रतधारी, पालो
 संयम सुखकारी रे ॥ कहे मान विजय ते पामशे,
 अविचल पदवी नर नारी रे ॥ मद० ॥ १२ ॥

॥ अथ श्री मेतारज मुनिनी सज्जाय ॥

सम दम गुणना आगरुजी, (संजम गुणना
 आगलाजी,) पंच महाव्रत धार ॥ मासखम
 एने पारणेजी, राजगृही नगरी मऊार ॥ मेता
 रज मुनिवर, धन धन तुम अवतार ॥ १ ॥ ए आं
 कणी ॥ सोनीने घेर आवीयाजी, मेतारज रूपि राय
 ॥ जवला घमतो उठीयोजी, वंदे मुनिना पाय ॥ मेता
 रज० ॥ २ ॥ आज फळयो घर आंगणेजी विणकाले
 सहकार ॥ ल्यो निका ठे सूऊतीजी, मोदिक तणो ए
 आहार ॥ मेतारज० ॥ ३ ॥ क्राँच जीव जवला च
 र्योजी, वहोरी वळया रूपिराय ॥ सोनी मन शंका थ
 ई जी, साधुतणां ए काम ॥ मेतारज० ॥ ४ ॥ रीस

करी श्शिने कहेजी, द्यो जवला मुज आज ॥ वाघर
शीशे वींठियुंजी तरुके राख्या मुनिराज ॥ मेतारज०
॥ ५ ॥ फट फट फूटे हारुकांजी, तरु तरु त्रूटे चाम ॥
सोनीके परिसो कियोजी, मुनि राखयो मन ठाम ॥
मेतारज० ॥ ६ ॥ एहवा पण महोटा यतीजी, मन्न न
आणे रोष ॥ आतम निंदे आपणोजी, सोनीनो शो
दोष ॥ मेतारज० ॥ ७ ॥ गजसुकुमाल संतापीया
जी, बांधी माटीनी पाल ॥ खेर अंगारा शिर धर्या
जी, सुगते गया ततकाल ॥ मेतारज० ॥ ८ ॥ वाघ
णे शरीर वलूरियुंजी, साधु सुकोसल सार ॥ केवल
लही सुगति गयाजी, इम अरणिक अणगार ॥ मेता
रज० ॥ ९ ॥ पापी पालके पीलियाजी, खंधक सूरि
ना शिष्य ॥ अंबरु चेला सातशेंजी, नमो नमो ते नि
श दिश ॥ मेतारज० ॥ १० ॥ एहवा ऋषि संजारतां
जी, मेतारज ऋषिराय ॥ अंतगरु हूआ केवलीजी,
वंदो मुनिना पाय ॥ मेतारज० ॥ ११ ॥ ज्ञारी काष्ठ
नी खीये तिहांजी, लावी नांखी तिणि वार ॥ धवके
पंखी जागीयोजी, जवला काढ्या तिणे सार ॥ मेता

रज० ॥ ११ ॥ देखी जवला विठमांजी मनमां ला
ज्यो सोनार ॥ उघो मुहपति साधुनोजी, लेइ अयो
अणगार ॥ मेतारज० ॥ १३ ॥ आतम ताख्यो आपणो
जी, थिर करी मनवचकाय ॥ राजविजय रंगे जणे
जी, साधुतणी ए सद्याय ॥ मेतारज० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरणिक मुनिनी सद्याय ॥

अरणिक मुनिवर चाढ्या गोचरी, तरुके दाजे
शीशोजी ॥ पाय अणवाणरे वेलु परजले, तन सु
कुमाल मुनीशोजी ॥ अरणिक० ॥ १ ॥ मुख करमा
णुं रे मालती फूल ज्युं, ऊनो गोखनी हेगोजी ॥ खरे
रे वपोररे दीगे एकलो, मोही माननी देगोजी ॥
अरणिक० ॥ २ ॥ वयण रंगीलीरे नयणे वेंधियो, ऋ
षि धंज्यो तेणे ठाणोजी ॥ दासीने कहे जारे उताव
ली, ऋषि तेही घर आणोजी ॥ अरणिक० ॥ ३ ॥ पाव
न कीजे रे ऋषि घर आंगणुं, बोहोरो मोदक सारोजी ॥
नव यौवन रस काया कां दहो, सफल करो अवतारो
जी ॥ अरणिक० ॥ ४ ॥ चंझवदनी रे चारित्र चू
कव्युं, सुख विलसे दीन रातोजी ॥ एक दिन रमतांरे

(८१)

गोखे सोगठे, तव दीठी निज मातोजी ॥ अरणिकण ॥ ६ ॥
अरणिक अरणिक करती मा फरे, गलिये गलिये मऊ
रोजी ॥ कडो कोणे दीठारे महारो अरणीको, पूंठे लो
क हजारोजी ॥ अरणिकण ॥ ६ ॥ नतर्यो त्यांधी रे
जननीने पाय परुयो, मन शुं लाज्यो अपारोजी ॥ व
ड तुज न घटे रे चारित्र चूकवुं, जेदधी शिव सुख
सारोजी ॥ अरणिक० ॥ ७ ॥ एम समजावी रे पा
गे वालीयो, आयो गुरुने पासोजी ॥ सद् गुरु दीए
रे शीख जली परे, वैरागे मन वासोजी ॥ अरणिक०
॥ ८ ॥ अग्नि धखंतीरे शीला उपरे, अरणिके अण
सण कीधोजी ॥ रूपविजय कहे धन्य ते मुनिवरु,
जिणे मनवंठित लीधोजी ॥ अरणिक० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ वणज्जारानी सध्याय ॥

नरज्जव नयर सोहामणुं ॥ वणज्जारा रे ॥ पा
मीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायक रे ॥ सत्ता
वन संवरतणी ॥ व० ॥ पोठी ज्जरजे उदार ॥ अण ॥ १॥
शुज्ज परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥ करियाणां बहु मू

६ ॥ अ० ॥ मोह नगर जावा ज्ञानी ॥ व० ॥ करजे
चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥ २ ॥ क्रोध दावानल ललवे
॥ व० ॥ मान विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ ललंधजे ह
लवे करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ अ० ॥ ३ ॥
वंशजाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विशराम
॥ अ० ॥ खामी मनोरथ जट तणी ॥ व० ॥ पूरणुं
नही काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ राग द्वेष दोष चोरटा ॥ व० ॥
वाटमां करशे हेरान ॥ अ० ॥ विविध वीर्य उद्धासथी
॥ व० ॥ ते हलजे रे ठाय ॥ अ० ॥ ५ ॥ एम सवि
विघन विदारीने ॥ व० ॥ पहाँचजे शिवपुर वास ॥ अ० ॥
खय उपशम जे जावना ॥ व० ॥ पोठें ज्यो गुणरा
श ॥ अ० ॥ ६ ॥ खायक जावें ते अशे ॥ व० ॥ ला
ज होशे ते अपार ॥ अ० ॥ उत्तम वणज जे एम करे
॥ व० ॥ पद्म नमे वारंवार ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ आत्मशिक्षा सञ्चाय ॥

॥ राग सामग्री ॥

आत्मरामें रे मुनि रमे, चित्त विचारीने जोय

रे ॥ ताहारुं दीसे नवि कोय रे, सहु स्वारथी मढ्युं

(८२३)

जोय रे, जन्म मरण करे लोय रे, पूठें सब मती रो
य रे ॥ आ० ॥ १ ॥ सजन वर्ग सवि कारमुं, कूमो कु
टुंब परिवार रे ॥ कोइ न करे तुज सार रे, धर्म वि
ण नहीं कोइ आधार रे, जिएं पामे जवपार रे ॥ आ० ॥

॥ २ ॥ अनंत कलेवर मूकीयां; ते कीयां सगपण अ
नंत रे ॥ जव उहेगे रे तुं जम्यो, तोही न आव्यो
तुज अंत रे ॥ चेतो हृदयमां संत रे ॥ आ० ॥ ३ ॥

जोग अनंता तें जोगव्या, देव मणुअ गति मांहे रे ॥
तृप्ति न पाम्यो रे जीवयो, हजी तुज वांठा ठे त्यांहि
रे, आण संतोष चित्त मांहि रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान

करो रे आतमतणुं, परवस्तुधी चित्त वारी रे ॥ अना
दि संबंध तुजको नहीं, शुद्ध निश्चय इमं धारी रे, इण
विध निजचित्त ठारी रे, मणिचंड आतम तारी रे ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ सामायिकना बत्रीश दोषनी सद्याय ॥

॥ चोपाइ ॥

शुद्ध गुरु चरणें नामी शीश, सामायिकना दो
ष बत्रीश ॥ कहिभुं त्यां मनना दश दोष, दुशमन
खी धरतो रोष ॥ १ ॥ सामायिक अविवेकें करे, अर्थ

विचार न हैने धरे ॥ मन उद्वेग इच्छे यश घणो, न
करे विनय वमेरा तणो ॥ १ ॥ जय आणे चिंते व्या
पार, फल संशय नीआणा सार ॥ हवे वचननां दोष
निवार, कुवचन बोले करे टुंकार ॥ ३ ॥ लइ कुंची
जा घर उघामु, मुखे लवी करतो वढवामु ॥ आवो
जावो बोले गाल, मोह करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥
करे विकथा न हास्य अपार, ए दश दोष वचनना वार ॥
काया केरां दूषण बार, चपलासन जोवे दिशि चार
॥ ५ ॥ सावद्य काम करे संघात, आलस मोने उंचे
हाथ ॥ पग लांबे बेसे अविनीत, उठिंगण द्ये थांजो
जौत ॥ ६ ॥ मेल उतारे खरज खणाय, पग उपरच
ढावे पाय ॥ अति उघामुं मेले अंग, ढांके तेम वली
अंग उपंग ॥ ७ ॥ निजायें रस फल निर्गमे, करहा कं
टक तरुएं जमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक
करजो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली,
केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्री शुभवीर वचन पाल
ती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ९ ॥

॥ इति सामायिक बत्रीश दोष स्वाध्याय ॥

(८३५)

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया; मरु
देवी जस भाया, धोरी लंठन पाया ॥ जगतस्थिति
निपाया, शुद्ध चारित्र पाया; केवलसिरि राया, मोह
नगरे सधाया ॥ १ ॥ सवि जन सुखकारी, मोह मिथ्या
निवारी; डुरगति दुःख ज्ञारी, शोक संताप वारी ॥
श्रेणिकूपक सुधारी, केवलानंत धारी; नभियें नरनारी,
जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समवसरण बेठा, लागे जे
जिनजी मीठा; करे गणप पइठा, इंड चंडादि दिठा ॥ द्वाद
शांगी वरिठा, गूंथतां टाले रिठा; नविजन होय हिठा,
देखि पुण्यें गरिठा ॥ ३ ॥ सुर समकितवंता, जेह ऋ
द्धे महंता; जेह सज्जन संता, टालियें मुऊ चिंता ॥ जि
नवर सेवंता, विघ्न वारो डुरंता; जिन उत्तम श्रुणंता, पद्म
ने सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चार शाश्वता जिननी स्तुति ॥

ऋषन्न चंडानन वंदन कीजे, वारिखेण दुःख वा
रेजी ॥ वर्द्धमान जिनवर वली प्रणामो, शाश्वता नाम

ए चारेजी ॥ जरतादिक खेत्रें मली होवे, चार नाम
चित्तधारेजी ॥ तेषें चारे ए शाश्वत जिनवर, नमीएं
नित्य सवारेंजी ॥ १ ॥ उर्ध्व अधो त्रीठे लोकें थइ,
कोनी पंनरशें जाणोजी ॥ उपर कोनी बेंतालीश प्रण
मो, अरुवन लख मन आणोजी ॥ उत्रीश सहस एं
सी ते उपर, बिंब तणो परिमाणोजी ॥ असंख्यात
व्यंतर ज्योतिषिमां, प्रणमुं ते सुविहाणोजी ॥ २ ॥ रा
यपत्नेणी जीवाग्निगमें, जगवती सूत्रें ज्ञांखीजी ॥
जंबुद्वीपपन्नत्तिठाणांगे, वीवरीने धणुं दाखीजी, वली
अशाश्वती ज्ञाता कल्पमां, व्यवहार प्रमुखें आखी
जी ॥ ते जिन प्रतिमा लोपे पापी, जिहां बहु सूत्र
ठे साखीजी ॥ ३ ॥ ए जिन पूजाथी आराधक, ईशा
न इंड कहायाजी ॥ जेम सूरीयाज प्रमुख सुरवर, दे
वी तणा समुदायाजी ॥ नंदीसर अछाइ महोहव, करे
अति हरख जरायाजी ॥ जिन उत्तम कल्याणक दि
वसें, पद्म विजय नमे पायाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीज तिथीनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥

शय राणा प्रणमें, चंडतणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंडवि
मानें, शाश्वत जिनवर जेह ॥ हुं बीजतणे दिन, प्रण
मुं आणी नेह ॥ १ ॥ अग्निंदन चंदन, शीतल शीत
ल नाथ ॥ अरनाथ सुमति जिन, वासुपूज्य शिव सा
थ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निरवाण ॥ हुं
बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परका
श्यो बीजे, पुविध धर्म जगवंत ॥ जेम विमल कमल
दोय, विपूल नयन विकसंत ॥ आगम अति अनुपम,
जिहां निश्चें व्यवहार ॥ बीजें सवि कीजे, पातकनो
परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुको
मल चीर ॥ चक्रेसरी केसरी, सरस सुगंध शरीर ॥
कर जोरुी बीजें, हुं प्रणमुं तस पाय ॥ एम लब्धि वि
जय कहे, पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

श्रावण शुदि दिन पंचमीए, जन्म्या नेम जिणं
द तो ॥ श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारदको
चंद्र तो ॥ सहस वरस प्रभु आजखुए, ब्रह्मचारि जग

(८१८)

वंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणिए, पोहोता मुक्ति म
हंत तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदि जिन ए, पहोता मुक्ति
मोजार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गि
रनार तो ॥ पावापुरी नगरीमां वलीए, श्री वीरतणुं
निर्वाण तो ॥ समेतशिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिर व
हु तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवाए, जां
खे सार वचन तो ॥ जीव दया गुण बेलनीए, कीजें
तास जतन तो ॥ मृषा न बोलो मानवीए, चोरी चित्त
निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरीएं पर
नार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामें जह्न जलो ए, देवी श्री
अंबिका नाम तो ॥ शासन सानिध्य जे करे ए, करे
वली धर्मनां काम तो ॥ तप गह्व नायक गुण निलो
ए, श्री विजयसेन सूरि राय तो ॥ ऋषजदास पाय
सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, जाव घरी सुर
राजजी ॥ आठ जातना कलश करीने, न्हवरावे जि

(८१७)

नराजजी ॥ वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शि
व सुख साधेजी ॥ आठमनुं तप करतां अम घेरे, मं
गल कमला वाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गज
गंजन, अष्टापद परें बलीयाजी ॥ आठमे आठ सरूप
विचारी, मद आठे तस गलीयाजी ॥ अष्टमी गति प
होता जे जिनवर, फरस आठ नहिं अंगजी ॥ आठ
मनुं तप करतां अम घर, नित्य नित्य वाधे रंगजी ॥१॥
प्रातिहारज आठ विराजे, समवसरण जिनराजेजी ॥
आठमे आठसो आगम ज्ञांखी, ज्ञविमन संशय ज्ञां
जेजी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचा
रोजी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारी, जीव दया चित्त
धारोजी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारे पुजा करीने, मानव ज्ञव
फल लीजेजी ॥ सिद्धाई देवी जिनवर सेवी, अष्ट म
हासिद्धि दीजेजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे निर्म
ल केवल ज्ञानजी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय क
हे तपथी कोरु कढ्याणजी ॥ ४ ॥ इति.

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रुअमी, गोविंद पुठे नेम ॥ को

ए कारण ए परव मोटुं, कहोने मुज शुं तेम ॥ जिन
वर कल्याणक अति घणां, एकसोने पंचाश ॥ तेणे
कारण ए परव मोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अ
गिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कही ते जिनवर देव ॥
एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिमरेव ॥ चो
वीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥
जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनसु रंग ॥ २ ॥
अगीआर अंग लखाविएं, अगीआर पाठां सार ॥ अ
गिआर कवली विंढणां, ठवणी पूंजणी सार ॥ चाव
खी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एका
दशी एम उजवो, जेम पामियें नवपार ॥ ३ ॥ वर
कमल नयणी कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥
जुज मंरु चंरु अखंरु जेहने, समरतां सुख आयो ॥ ए
कादशी एम मनवशी, गणि हर्ष पंक्ति शीस ॥ शा
सन देवी विघन निवारो, संघतणां निश दिश ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ रोहिणी तपनी स्तुति ॥

नक्षत्र रोहिणी जे दिन आवे, अहोरत्न पोषध

करी शुभ्र ज्ञावे, चञ्चविहार मन लावे ॥ वासुपूज्य,
 नी जक्ति कीजें, गणणुं पण तस नाम जपी जें, वरष
 सत्तावीस लीजें ॥ घोमी सक्तें वरस ते सात, जाव
 जीव अथवा विख्यात, तप करी करो कर्मघात ॥ नि
 ज शक्ति उजमणुं आवे, वासुपूज्यनुं विंब जरावे,
 लाल मणिमय ठावे ॥१॥ एम अतीत अने वर्तमान, अना
 गत वंदो जिन बहु मान, कीजें तस गुण गाना ॥ तप कारक
 नी जक्ति आदरीएं, साधर्मिक वली संघनी करीए, धरम
 करी जव तरीएं ॥ रोग सोग रोहिणी तपें जाए, संकट टले
 तस जश बहु घाए, तसु सुरनर गुण गाए ॥ नी राशंसपणे
 तप एह, शंका रहितपणे करो तेह, निधि नव होए जेम
 गेह ॥ २ ॥ उपधान स्थानक जिन कल्याण, सिद्धच
 क्र शत्रुंजय जाण, पंचमी तप मन आण ॥ परिमा
 तप रोहिणी सुखकार, कनकावली रत्नावली सार,
 मुक्तावली मनोहार ॥ आठम चण्डश ने वर्धमान, इत्या
 दिक तप मांहे प्रधान, रोहिणी तप बहुमान ॥ एणि
 परें ज्ञाखे जिनवर वाणी, देशना मीठी अमीअ समा
 णी, सूत्रें तेह गुंथाणी ॥३॥ चंदा यक्षणी यक्षकुमार

वासुपूज्य शासन सुखकार, विघ्न मिटावण हार ॥ रो
हिणी तप करता जन जेह, एह जव परजव सुख
लहे तेह, अनुक्रमे जवनो ठेह ॥ आचारी पंक्ति उप
गारी, सत्य वचन जांखे सुखकारी, कपूरविजय व्रत
धारी ॥ खिमाविजय शिष्य जिनगुरु राय, तस
शिष्य मुज गुरु उत्तम थाय, पद्मविजय गुण गायी॥

॥ अथ पजूसणनी स्तुति ॥

पुण्यनुं पोषण, पापनुं शोषण, परव पजूसण
पामीजी ॥ कल्प घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शि
र नामीजी ॥ कुंअर गयवर खंध चढावी, ढोल निशा
न वजमावोजी ॥ सदगुरु संगें चढते रंगे; वीर चरित्र
सुणावोजी ॥१॥ प्रथम वखाण धरम सारथिपद, बीजे
सुपनां चारजी ॥ त्रीजे सुपन पाठक वली चोथे, वीर
जनम अधिकारजी ॥ पंचमे दीक्षा ठेहे शिवपद, सातमे
जिन त्रेवीशजी ॥ आठमे थिरावली संजलावी, पित्रमा
पूरो जगीशजी ॥१॥ ठेठ अठम अठाइ कीजें, जिनवर
चैत्य नमीजेंजी ॥ वरशी पन्तिकमणुं मुनिवंदन, संघ

(८३३)

सयल खाभीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रजा
वना, दान सुपात्रे दिजेजी ॥ ऋद्वाहु गुरु वयण सुणोने,
ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल
गिरिमां, मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवर मांही जिन
वर मोहोटा, परव पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी
साहमीवहल, बहु पकवान्न वनाइजी ॥ खिमा
विजय जिन देवी सिद्धाइ, दिन दिन अधिक व
धाइजी ॥ ४ ॥

॥ अथ पजूसणानी स्तुति ॥

सत्तरनेदी जिन पूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव
कीजेजी ॥ ढोल ढडामा जेरी नफेरी, ऊलरी नाद
सुणीजेजी ॥ वीरजिन आगे ज्ञावना ज्ञावी, मानव
जव फल लीजेजी ॥ परव पजूसण पूरव पुण्ये, आ
व्यां एम जाणीजेजी ॥ १ ॥ मास पास वली दसम
डुवालस, चत्तारी अठ कीजेजी ॥ उपर वली दस
दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेजी ॥ वना कल्प
लो ठठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेजी ॥ परवेने दिन

जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजेंजी ॥ २ ॥ आठ
दिवस लगे अमर पलावी, अष्टमनुं तप कीजेंजी ॥
नागकेतुनी परें केवल लहीए, जो शुभ जावे रहीए
जी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याणक, गणधर वाद वदी
जेंजी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे ऋषभ चरित्र
सुणीजेंजी ॥ ३ ॥ बारशे सूत्रने समाचारी, संवहरी
पडिक्कमिएजी ॥ चैत्य प्रवाडी विधि शुं कीजे, सकल
जंतुने खामोजेंजी ॥ पारणाने दिन साहमीवहल, की
जें अधिक वमाइजी ॥ मानविजय कहे सकल मनो
रथ, पूरे देवी सिद्धाइजी ॥ ४ ॥

॥ अथ अध्यात्म स्तुति ॥

उठी सवेरा सामायिक लीधुं, पण बारणुं नवि
दीधुंजी ॥ कालो कृतरों घरमां पेठो, धी सघलुं तेणें
पीधुंजी ॥ उठो बहुअर आलस मूको, ए घर आप
संजालोजी ॥ निज पतिने कहो वीरजिन पूजो, स
मकितने अजुआलोजी ॥ १ ॥ बले बिल्लामे ऊरुप
ऊडपावी, उत्रोरु सर्वे फोडीजी ॥ चंचल ठैयां वार्यां
न रहे, त्राक भांगी माल त्रोडीजी ॥ तेह विना रेंटि

(८३५)

यो नवि चाले, मौन ज्ञानो केने कहीयेंजी ॥ ऋषज्ञा
दिक चोवीश तीर्थकर, जपीयें तो सुख लहीयेंजी
॥ ९ ॥ घर वाशीदूं करोने वहूअर, टावो उंजी शा
लुजी ॥ चोरटो एक करे ठे हेरु, नरडे द्योने तालुंजी ॥
लबके प्राहुणा चार आव्या ठे, ते उज्जा नवि राखो
जी ॥ शिवपद सुख अनंतां लहियें, जो जिन वाणी
चाखोजी ॥ ३ ॥ घरनो खुणो कोल खणे ठे, बहु तुमे
मनमां लावोजी ॥ पोहोळे पलंगे प्रीतम पोढ्या, प्रेम
धरीने जगावोजी ॥ ज्ञावप्रभु सुरि कहे नहीं ए क
थलो, अध्यातम नपयोगीजी ॥ सिद्धायिका देवी सा
निध्य करेवि, साधे ते शीवपद ज्ञोगीजी ॥४॥ इति.

॥ अथश्री शांतिजिन स्तुति ॥

शांति जिनेसर समरिये, जेनी अचिरा माय ॥

विश्वसेन कुल नपना, मृग लंठन पाय ॥ गजपुर न
यरीनो धणी, सोवन वरणी काय ॥ धनुष्य चालीस
देहडी, लाख वरसनुं आय ॥ १ ॥ शांति जिनेसर
सोदमा, चक्री पंचम जाणुं ॥ कुंधुनाथ चक्री ठठा, अ

(८३६)

रनाथ वखाणुं ॥ ए त्रणे चक्री सही, देखी आणंडु ॥
संजम लेइ मुगते गया, नित्य उठीने वंडु ॥ १ ॥
शांति जिनेसर केवली, वेठा धर्म प्रकाशे ॥ दान शील
तप ज्ञावना, नर सोहे अन्यासे ॥ एह वचन जिनजी
तणां, जिणे हियडे धरियां ॥ सुणतां समकित निर्म
लां, निश्वे केवल वरिया ॥३॥ समेत शिखर गिरि उपरे,
जइने अणसण कीधुं ॥ काउस्सग्ग मुझ्यें रह्या, तिणें
मुगतिज लीधुं ॥ गरुड यकू समरुं सदा, देवी निर्वाणी
॥ नविक जीव तुमें सांजलो रिषज्जदासनी वाणी ॥४॥

॥ अथश्री ऋषज्ज देवजीनी स्तुति ॥

ज्याशी लाख पुरव घर वासें, वसीआ परिकर
युक्ताजी ॥ जन्मथकी पण देव तरु फल, क्षीरोदधि
जल ज्ञोक्ताजी ॥ मइ सुअ उहि नाण संजुता, नयण
वयणकज चंदाजी ॥ चार सहस शुं दीक्षा शिक्षा,
स्वामी श्री ऋषज्ज जिणंदाजी ॥ १ ॥ मनःपर्यव तव
नाण उपन्युं, संजति लिंग सहायाजी ॥ अठि द्वीपमां
संझी पंचेंडि, जाणे मन गत ज्ञावाजी ॥ इय अ

नंता सूक्तम त्रीण, अठारशें खित ठायाजी ॥ पत्विय अ
 संख्यम ज्ञाग त्रिकालिक, ड्व्य असंख्य परजायजी ॥ १ ॥
 ऋषज्ञ जिनेश्वर केवल पामी, रयण सिंहासण ठाया
 जी ॥ अनजिलाप्य अजिलाप्य अनंता, ज्ञाग अनंत उ
 च्चरायाजी ॥ तास अनंतमे ज्ञागे धारी, ज्ञाग अनंते
 सूत्रजी ॥ गणधर रचीआं आगम पूजी, करीअें जन्म
 पवित्रजी ॥ ३ ॥ गोमुख जह्क चक्केसरी देवी, सम
 कित शुद्ध सुहावेजी ॥ आदी देवनी सेव करंती, शासन
 सोह चढावेजी ॥ श्रद्धासंयुत जे व्रतधारी, विघन ता
 स निवारेजी ॥ श्रीशुभ्र वीर विजय प्रभु ज्ञक्तें, समरे
 नित्य सवारेजी ॥ ४ ॥

॥ अथ पंच तीरथनी आरती ॥

पेहेली आरती प्रथम जिणंदा, शत्रुंजय मंरुण
 ऋषज्ञ जिणंदा ॥ श्री सिद्धाचल तीर्थे आव्या, पूरव
 नवाणुं ज्ञविक मन ज्ञाव्या ॥ आरती कीजे श्री जिन
 वरकी ॥ १ ॥ दुसरी आरती शांति जिणंदकी ॥ शां
 ति करे प्रभु शिव मारगकी ॥ पारेवो जिणे शरणे रा

ख्यो ॥ केवल पामीने धर्म प्रकास्यो ॥ आ० ॥ १ ॥
तीसरी आरती श्री नेमनाथ ॥ राजुल नारी तारी
निज हाथ ॥ सहस पुरुष शुं संयम लोधो ॥ करी
निज आत्म कारज सीधो ॥ आ० ॥ ३ ॥ चौथी आ
रती चिहुंगति वारी ॥ पारसनाथ न्नविक हितकारी ॥
गोमी पास संखेश्वरो पास ॥ न्नविजननी पूरे मन
आस ॥ आ० ॥ ४ ॥ पांचमी आरती श्री महावोर ॥
भेरुपरे जिम रह्या धीर ॥ साढाबार वरस तप तपीया ॥
कर्म स्वपावीने शिवपुर वसिया ॥ आ० ॥ ५ ॥ ६
शिपरें प्रनुजीनी आरती करशे ॥ शुन्न परिणामें शि
वपुर वरसें ॥ इशिपरें जिनजीनी आरती गावे ॥ शु
न्न परिणामे शिवपुर जावे ॥ ६ ॥ करजोडी सेवक एम
बोले ॥ नहीं कोइ मारा जिनजीने तोले ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ अथ शांतिजिननी आरती.

जय जय आरती शांति तुमारी, तोरा चरण
कमलकी में जानं बलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसे
न अचिराजीके नंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥

(८३ए)

॥ जय० ॥ २ ॥ चालीश धनुष्य सोवनमय काया,
मृगलंठन प्रभुचरण सुहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ती
प्रभु पांचमा शोहे, शोलमा जिनवर जग सह मोहे ॥
॥ जय० ॥ ४ ॥ मंगल आरती तारी कीजे, जन्म ज
न्मनो लाहो लीजे ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोमी सेवक
गुण गावे, सो नरनारी अमरपद पावे ॥ जय०॥६॥

॥ आदि जिननी आरती.

जय जय आरतो आदि जिणंदा, नान्नीराया मरु
देवीको नंदा ॥ पेहेली आरतो पूजा कीजे, नरन्नव
पामीने लाहो लीजे ॥ १ ॥ जे०॥ दुसरी आरती दीन
दयाल, धुलेव मंरुपन्नां जग अजवाळ्युं ॥ २ ॥ जे० ॥
तीसरी आरती त्रिभुवन देवा, सुरनर इंद्र करे तो
री सेवा ॥ ३ ॥ जे०॥ चौथी आरती चौगति चुरे, मन
वांछितफल शिवसुख पुरे ॥४॥ जे०॥ पंचमी आरती
पुन्य उपाया, सुलचंदे रीखव गुण गाया ॥ जे०॥५॥

॥ अथ मंगल दीवो ॥

दीवोरे दीवो मंगलिक दीवो ॥ आरतो उत्तारन

बहु चिरंजीवो ॥ दी० ॥ सोहामणुं घर पर्व दिवाली,
अंबर खेले अबला बाली ॥ दी० ॥ देपाल न्णणे इणें
कल अजुआली, जावें जगते विघ्न निवारी ॥ दी० ॥
देपाल न्णणे इणें ए कलीकाले, आरतो उतारी राजा
कुंमारपाले ॥ दी० ॥ अम घेर मंगलिक तुम घेर मंग
लिक, मंगलिक चतुर्विध संघने होजो ॥ दी० ॥ इति.

॥ अथ मंगल चार. ॥

चारो मंगल चार, आज महारे चारो मंगल चा
र ॥ देख्यो दरस सरस जिनजीको, शोना सुंदर सार
॥ आज० ॥ १ ॥ विनुं विनुं जन मनमोहन अरचो,
घसी केशर घनसार ॥ आज० ॥ २ ॥ विविध जाति
के पुष्प मंगावो, सफल करो अवतार ॥ आ० ॥ ३ ॥
धूप नखेवोने करो आरति, मुख बोदो जयजयकार ॥
आ० ॥ ४ ॥ समवसरण आदिसर पूजो, चोमुख प्र
तिमा चार ॥ आ० ॥ ५ ॥ हैये धरी आव जावना
जावो, जिम पामो नवपार ॥ आ० ॥ ६ ॥ सकलचंद
सेवक जिनजीको, आनंदघन उपगार ॥ आ० ॥ ७ ॥

(८४१)

॥ अथ चार मंगल ॥

आज घेर नाथ पधार्या, कीजें मंगल चार ॥

आण ॥ पहिले मंगल प्रज्जुजीने पूजुं, घसी केसर घ

नसार ॥ आण ॥ १ ॥ बीजे मंगल अजर नखेवुं, कंठे

ठवुं फूलहार ॥ आण ॥ त्रीजे मंगल आरती उतारुं,

घंट वजावुं रणकार ॥ आण ॥ २ ॥ चौथे मंगल प्र

ज्जुगुण गांनं, नाटक थै थैकार ॥ आण ॥ रूपचंद कहे

नाश्र निरंजन, चरण कमल जांनं वार ॥ आणा३॥

॥ अथ जिन नव अंग पूजाना दोहा ॥

जल जरि संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

ऋषन्न चरण अंगूठमो, दायक नवजल अंत ॥ १ ॥

जानु बलें कानस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ॥ ख

मां खमां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लो

कांतिक वचने करी, वरश्या वरशी दान ॥ करकामे

प्रज्जु पूजना, पूजो जवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयुं

दोय अंसथी, देखी वीर्य अनंत ॥ ज्जुजावलें नवजल

तर्या, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ सिद्ध शिला गुण उ

जलो, लोकांते जगवंत ॥ वसिया तेणें कारण ज्वि,
 शिर शीखा पूजंत ॥ ५ ॥ तीर्थकर पद पुण्यशी,
 तिहुअण जन सेवंत ॥ त्रिज्जुवन तिलक समा प्रज्जु, जा
 ल तिलक जयवंत ॥६॥ सोल पहोर प्रज्जु देशना, कंठे
 विवर वरतुल ॥ मधुर ध्वनि सुर नर सूणे, तिणे गले
 तिलक अमूल्य ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशम बले,
 बाढ्या रागने रोप ॥ हीम दहे वनखंरुने, हृदय ति
 लक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण उजलो, सकल सु
 गुण विशराम ॥ नाज्जि कमलनी पूजना, करतां अ
 विचल धाम ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तेणे नव
 अंग जिणंद ॥ पूजो बहुविध रागशी, कहे शुन्न वीर
 मुणिंद ॥ १० ॥ इति श्री नव अंग पूजाना दोहा ॥

॥ अथ सामायिक लेवानी विधि ॥

॥ प्रथम उंचे आसनें पुस्तक प्रमुख मुकीने
 श्रावक श्राविका कटासणुं मुहपत्ति चवलो लेइ, शुद्ध
 वस्त्र जग्या पुंजी, कटासणा उपर बेसी, मुहपत्ति का
 वा हाथमां मुखपासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी

(८४३)

सनमुख राखो एक नवकार गणि पंचिंदिअ कही
खमासमण देइ शरियावहिया, तस्सज्जरो, अन्नञ्च
जससिएणं कही, एक लोगस्सनो अथवा चार नवका
रनो काञ्जस्सग्ग करी, पारी, प्रगट लोगस्स कही, ख
मासमण देइ, इञ्चाकारेण संदिसह जगवन्, सामाय
क मुहपत्ति पडिलेहुं? इञ्चं. एम कहि मुहपत्ति पडिले
हणना पचाश बोल कही, मुहपत्ति पडिलेहीएं. पढी ख
मासमण देइ० इञ्चाकारेण संदिसह जगवन् सामायक
संदिसाहुं? इञ्चं. कही खमासमण देइ, इञ्चा० सामायक
गणं? इञ्चं. एम कहि बे हाथ जोडी एक नवकार गणी,
इञ्चकारी जगवन्, पसाय करी सामायक रुंरुक उच्च
रावोजी. वडिल करेमिज्जंते कहे, पढी खमासमण देइ
इञ्चा० बेसणे संदिसाहुं? इञ्चं. कही खमासमण देइ इञ्चा०
बेसणे गणं? इञ्चं खमा० देइ इञ्चा० सजाय संदिसाहुं?
इञ्चं. खमा०॥ इञ्चा०॥ सजाय करुं? इञ्चं० एम कहि त्रण
नवकार गणवा, पढी बे घनी सजाय धर्म ध्यान
करवुं ॥ इति सामायक लेवानी विधि समाप्तम् ॥

॥ अथ सामायक पार्वानी विधि ॥

॥ खमासमण देइ इरियावहि पडिक्रमवाथी जाव
तू लोगस्ससुधी कही खमा० ॥ इच्छा० ॥ मुहपति प
डिलेहुं कही, मुहपति पडिलेहि, खमासमण देइ, इ
च्छा० ॥ सामायक पारुं? यथाशक्ति. वली खमासमण
देइ, इच्छा० ॥ सामायक पारुं; तहती कही, पढी ज
मणो हाथ चवला उपर अथवा कटासणानपर थापी,
एक नवकार गणी सामाश्यवयजुतो कहियें. पढी
जमणो हाथ थापना सन्मुख सवलो राखीने एक न
वकार गणीयें.

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमण विधि प्रारंभ ॥

॥ प्रथम सामायक लिजे. पढी पाणी वापरुं
होय तो मुहपति पडिलेहेवी, अने आहार वावरयो
होयतो वांदणां बे देवां, त्यां बीजा वांदणामां आव
सिआए ए पाठ न केहेवो. पढी यथा शक्ति पञ्चस्काण
करवुं. खमासमण देइ इच्छाकारेण० कही, वमेरा अथवा
पोते चैत्यवंदन कहिने पढी जंकिंचि नमुत्तुणं कही,

(८४५)

उत्ता अर्धने अरिहंत चेईयाणं कहिने एक नवकारनो
कानुस्सग्ग करी पारी नमोऽर्हतूणकहिने प्रथम थोय केहे
वी. पढी लोगस्स, सब्बलोए, अरिहंतचेईयाणं कहिने
एक नवकारनो कानुस्सग्ग पारीने बीजी थोय केहे
वी. पढी पुक्करवरदी कही, सुअस्स जगवज्ज करेमि
कानुस्सग्गं वंदणं कही एक नवकारनो कानुस्सग्ग पारी
त्रीजी थोय केहेवी. पढी सिद्धाणं बुद्धाणं कही वेया
वच्च गराणं करेमि कानुस्सग्गं अन्नत्तं कही पढी एक
नवकारनो कानुस्सग्गपारी, नमोऽर्हतूण कही, चौथी थोय
केहेवी. पढी बेसीने नमुत्तुणं केहेवुं. पढी चार ख
मासमण देवा पूर्वक जगवान्, आचार्य, उपाध्याय
सर्वसाधुभ्यः प्रत्ये वंदन करीयें. पढी इच्छाकारेण०
देवसि प्रतिक्रमणे ठाठं एम कहि, जमणो हाथ चवला
कटासणा उपर आपोनें इच्छं सब्बस्सवि देवसिअण के
हेवुं. पढी उत्ता अर्ध करेमिज्जंते इच्छामि ठामि कानुस्सग्गं
जोमें देवसिन्तु तस्सउत्तरीण कही, पढी अतिचारनी
आठ गाथानो कानुस्सग्ग करवो. आठ गाथा न आवडे

तो आठ नवकारनो कानुसगग करवो ते पारीने, पढी लोगस्स कहेवो. ॥ बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहीने वांदणां बे देवां. पढी उज्जा अइने इच्छा काण देवसिअं आलोउं इहं आलोएमि जो मे देवसिनुण कहीने, पढी सातलाख कहेवा. पढी अठार पापस्थानक आलोइमे सब्वस्सवि देवसिअ कहीने बेसवुं. बेसीने जमणो ठींचण उज्जो राखी एक नवकार गणी पढी करेमिज्जंते इच्छामि पम्भिकमिनुणकहीने, वंदित्तु कहेवुं, पढी वांदणां बे देवां. पढी अप्पुठिनुहं अप्पिंतर देवसिअं खामीने वांदणां बे देवां. पढी उज्जा अइ आयरियनुवद्याए कहीने, करेमिज्जंते इच्छामि ठामि कानुसगगं जोमें देवसिनुणतस्सनुत्तरीणकही, पढी बे लोगस्सनो अथवा आठ नवकारनो कानुसगगपारीने पढी लोगस्स प्रगट कहेवो, पढी सब्वलोए अरिहंतचेइयाणं, वंदणवत्तिआएण कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो कानुसगग पारीने पुस्करवरदोण सुअस्सज्जगवनुण करेमिण वंदणण कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो कानुसगग पारीने,

(८४७)

सिद्धाणं बुद्धाणं कही सुअ देवयाए करेमि कानुस्सग्गं
अन्नत्तं कही एक नवकारनो कानुस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्तुं
कही पुरुषे सुअ देवयानो पेहेली थोय कहेवो, स्त्रीये
कमल दलनी पेहेली थोय कहेवी. पढी खेत्रदेवयाए
करेमि कानुस्सग्गं कही एक नवकारनो कानुस्सग्ग पारो
नमोऽर्हत्तुं कही क्षेत्र देवयानी बीजो थोय स्त्रीये
तथा पुरुषे बने ए कहेवी. पढी प्रगट एक नवकार गणी
बेसीने, ठा आवश्यकनो सुहपति पफिलेही, बे वांदणां
दीजे. पढी सामायक, चनव्विसत्तो, वंदण, पफिक
मणुं. कानुस्सग्ग अने पच्चरकाण ए ठ आवश्यक संजा
रवां. पढी इत्थामो अणुसठिं कही, नमो खमासमणाणं
कही, नमोऽर्हत्तुं कहीने पुरुष नमोस्तु वर्द्धमानाय
कहे, अने स्त्री संसार दावानी त्रण गाथा कहे. पढी
नमुत्तुणं कही स्तवन कहेवुं. पढी वरकनक कही न
गवान् आदे वांदवा. पढी जमणो हाथ उपधी उपर
थापी अट्ठाईजेसु कहेवुं. पढी देवसिअ पायच्चित्तनो
कानुस्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा सोल नवकारनो

(८४८)

करवो. पढी ते कानुस्सग्ग पारी, प्रगट लोगस्स कही,
वेस्तीने खमासमण वे देइ सज्जायनो आदेश मागी,
एक नवकार गणी सञ्चाय कहीए, पढी एक नवकार
गणीए, पढी डुरकरकउ कम्मकउनो कानुस्सग्ग चार
लोगस्सनो संपूर्ण अथवा सोल नवकारनो करवो. एक
वरे अथवा पोते पारीने नमोऽर्हत्तु कही लघुशांति
कहेवी, पढी प्रगट लोगस्स कहेवो, पढी शरियावहि
कही तस्सउत्तरी एक लोगस्स अथवा चार नवकार
नो कानुस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स केहेवो. पढी चउ
कसाय कही, नमुत्तुणं, जावंति वे कही, उवसग्गहरं,
जयवीयराय कही, मुहपति पफिलेहेवी इत्थामिण ॥
इत्थाकाण॥ सामायक पारुं. यथाशक्ति इत्थामिण॥ इत्था
काण सामायक पारुं तहत्ति कही, पढी जमणो हाथ
उपधी उपर थापी एक नवकारगणीने सामाइअ वय
जुत्तो कहेवो. पढी थापना होयतो एक नवकार गणी
उठे. ॥ इति ॥ देवसि प्रतिक्रमण विधि कही, वाकी
अंतरविधो वरेराष्ठी समजवी.

(७४९)

॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम पूर्वतीरीते सामायक लीजे ॥ पढी कु
सुमिण डुसुमिणनो काउस्सग चार लोगसनो अथवा
सोद नवकारनो करी, पारी प्रगट लोगस्स कहेवो,
पढी खमासमण देइ जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन ज
यवीयराय सुधी करवुं. पढी चार खमासमण पूर्वक
जगवान्, आचार्य, उपाध्याय सर्व साधु प्रत्ये वांढवा,
खमासमण बे देइ, सञ्चायनो आदेश मागी एक न
वकार गणीने जरहेसरनी सञ्चाय कहीने फरी एक
नवकार गणवो. पढी इञ्चकार सुहराइनो पाठ केहेवो,
पढी इञ्चाकाण राइ प्रतिक्रमणे गजं कहीने जमणो
हाथ उपधी उपर स्थापीने इञ्चंसव्वस्सवि राइय डुच्चिंति
यण कही॥ नमुत्तुणं करेमि जंते कही, इञ्चामि गामि का
उस्सगंण तस्सउत्तरी अन्नञ्चं कही एक लोगस्स अथवा
चार नवकारनो काउस्सग पारीने, प्रगट लोगस्स
कही, सव्वलोएण अरिहंतण कही, एक लोगस्स अथवा
चार नवकारनो काउस्सग पारी पुरकरवरदीण सुअ

स्सण वंदण कही, अतिचारनी आठगाथानो अथवा
 आठ नवकारनो कानस्सग्ग पारी, सिद्धाणं बुद्धाणं
 कहीने, त्रीजा आवश्यकनो मुहपति पडिलेही वांढ
 णां वे देवां. त्यांथी ते अप्पुट्ठिन् खामि वांढणां वे दी
 जे, त्यां सुधी देवसिनीरीते जाणवुं. पण जे ठामें दे
 वसिअं आवे ते ते ठामे राइयं केहेवुं. पढी आयरिअ
 नवअण्ण करेमिअंते इहामि ठामि कानस्सग्गं तस्स
 उत्तरी कही, तप चिंतामणि करतां न आवरे तो चार
 लोगस्स अथवा सोल नवकारनो कानस्सग्ग करवो.
 ते पारी प्रगट लोगस्स कही, पढी ठठा आवश्यकनी
 मुहपति पडिलेहीनें वांढणां वे देवां, ते पढी तीर्थवंद
 न करवुं, पढी यथाशक्तिये पच्चस्काण करवुं. पढी इ
 ह्हाकारेण संदिसह जगवन् सामायक चउव्विसत्तो, वं
 दण, पडिक्कमणुं, कानस्सग्ग अने पच्चस्काण ए ठ आव
 श्यक संज्जारवां. पच्चस्काण करयुं होय तो करयुं ठेजी
 कहेवुं, अने धारयुं होय तो धारयुं ठेजी एम कहेवुं.
 पढी इहामोअणुसदिं नमोखमासमणाणं नमोऽर्हत०

(८५१)

कही विशाललोचन, नमुत्रुणं, अरिहंतचेर्श्याणं
कहीने एक नवकारनो कानस्सग्ग पारीने नमोऽर्हतु
कही कळ्याणकंदंनी शोय प्रथम कहेवी. पढी लोगस्स,
पुरक्करवरदी, सिद्धाणं बुद्धाणं, कही अनुक्रमे चार थोयो
कहीयें ठैए त्यां सुधी सर्व कहेवुं. पढी नमुत्रुणं कही,
जगवान् आदि चारने चार खमासमणे वांदवा. पढी
जमणो हाथ उपधी उपर आपी अद्दाइज्जेसु कहेवुं. पढी
श्री सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीय
राय, कानस्सग्ग, शोय पर्यंत करवुं. पढी खमासमण
पूर्वक श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीय
राय, कानस्सग्ग शोय सुधी करवुं. पढी सामायक पा
रवानो विधिनी रीते सामायक पारवा सुधी कहेवुं.॥
इति राइप्रतिक्रमणनी विधि समाप्त ॥

॥ अथ पखि प्रतिक्रमणनी विधि लिख्यते ॥

॥ देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कहि रद्दा त्यां
सुधी कहेवुं, पण चैत्यवंदन सकळाऽर्हतनुं कहेवुं ने
शोयो स्नातस्यानी कहेवी. पढी खमासमण देइने

इष्ठा कारेण संदिसह जगवन्, देवसिअ आलोइअ
 पडिकंता इष्ठाकाण पस्किमुहपति पडिलेहुं, एम कही
 मुहपति पडिलेहियें, पगी वांदणां बे दीजे पगी इष्ठा
 काण संबुद्धा खामणेणं अप्पुठिनहं अप्पिंतर पस्किअं
 खामेउ इहं खामेमि पस्कियं पन्नरस दिवसाणं पन्नर
 स राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं कही इष्ठाकाण कही
 पस्किअं आलोएमि इहं आलोएमि जोमे पस्किन अ
 इआरो कउ कही इष्ठाकाण कही पस्कि अतिचार आ
 लोउं एम कहीने अतिचार कहीये. पगी एवंकारे श्रीश्राव
 क तणे धर्मे श्रीसमकित मूल बारव्रत एकसो चोवी
 श अतिचार मांहे जे कोइ अतिचार पक दिवस मां
 हे सुद्धम बादर जाणतां अजाणतां हुन होय, ते सवि
 हुं मने, वचने अने कायाए करी मिष्ठा मिडुक्कं. सव्व
 स्सवि, पस्किअ, डुच्चिंतिअ, डुप्रासिअ, डुचिठिअ, इष्ठा
 कारेण संदिसह जगवन्, तस्समिष्ठा मिडुक्कंण। इह
 कारि जगवन्, पसाय करी पस्कि तप प्रसाद करो
 जी. एम उच्चार करीने आवी रीते कहिए. चउत्तेणं ए

(८५३)

क उपवास, वे आयंबिल त्रण निवि, चार एकासणां, आठ बियासणां, वे हजार सध्याय यथाशक्ति तपकरी प्रवेश कस्यो होय तो पशुगीत कहिए. करवो होय तो तहत्ति कहिये. ने न करवो होय तो अणवोड्या रहिये. पढी वे वांदणां दीजे; पढी इच्छाकाण पत्तेय खामणेणं अप्पुठिनहं अप्पितर पस्किअं खामेणं? इच्छं खा मेमि पस्किअं. पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जं किंचि अपत्तिअं कही पढी वांदणां वे दोजे, पढी देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह जगवन् पस्किअं पम्किमुं? समं पम्किमामि इच्छं एम कही करे मिज्जंते सामाइयं कही इच्छामि पडिक्कमिणं जोमे पस्किअं कह्या पढी खमासमण देइ इच्छाकारेण कही पस्किसूत्र पढुं. एम कही त्रण नवकार गणी साधु होय तो पस्किसूत्र कहे, अने साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदितु कहे, पढी सुअ देवयानी थोय कहेवी. पढी हेठा बेसी जमणो ठींचण उज्जो करवो. एक नवकार गणी करेमिज्जंते इच्छामि पम्किमिणं क

ही वंदितुं केहेवुं. पढी करेमिजंते इच्छामिगमि काउ
 स्सग्गं जोमे पस्सिउ, तस्सउत्तरी, अन्नत्तण कहीने वार
 लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. लोगस्स चंदेसु निम्मल
 यरा सुधी कहेवा, अथवा अरुतालीश नवकारनो का
 उसग्ग करीने पारवो. पालीने प्रगट लोगस्स कहेवो.
 पढी मुहपत्ति पनीलेहिने, वांदणां वे दिजे. पढी इ
 च्छाकाण समाप्त खामणेणं अप्पुट्ठिहं अप्पितर पस्सिअं
 खामेणं इच्छं खामेमि पस्सिअं. एक पस्साणं पन्नरस दि
 वसाणं पन्नरस राइआणं जांकिंचि अपत्तिअं कही प
 ढी खमासमण देइ ने इच्छाका० कही, पस्सिखामणां
 खामुं ? एम कहीने खामणां चार खामवां. पढो देव
 सि प्रतिक्रमणमां वंदितुं कह्या पढी वांदणां वे देइने
 त्यांथी सामायक पारिये, त्यां सुधी देवसिनी पेठे
 जाणवुं; पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणे ज्ञानादिक
 नी थोयो कहेवी, स्तवन अजितशांतिनुं कहेवुं, सञ्चा
 यने ठेकाणे उवसग्गहरं तथा संसारदावानी चार
 थोयो कहेवो. अने लघुशांतने ठेकाणे मोटी शांत क

(८५५)

हेवी. अने देवसिअंनो पाठ होय त्यां पस्किअं कहेवुं.
॥ इति पस्कि प्रतिक्रमणविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ चनुम्मासी प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ उपर लखेला पस्किना विधि प्रमाणेज ठे,
पण एटलुं विशेष जे वार लोगस्सना कानुस्सग्गने ठे
काणे वोश लोगस्सनो कानुस्सग्ग करवो, अने पस्किना
आगारनेठेकाणे चनुम्मासीना कहेवा. तथा तपने ठेकाणे
ठेठेणं वे उपवास, चार आंबिल, ठ निवी, आठ एका
सण, सोल बिआसण, चार हजार सजाय ए रीते क
हेवुं. ॥ इति चनुम्मासी प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ अथ सांवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ ए पण उपर लखेला पस्किना विधि प्रमाणे
ठे, तथापि वार लोगस्सना कानुस्सग्गने ठेकाणे चा
लीश लोगस्स अथवा एकसोने साठ नवकारनो कानु
स्सग्ग करवो, अने तपने ठेकाणे अठम जत्तं एटले त्रण
उपवास, ठ आंबिल, नव निवि, वार एकासणां, चो
वोश वेआसणां, अने ठ हजार सजाय एरीते कहे

वुं. पस्किना आगारने ठेकाणे सांवत्सरीना आगार क
हेवा. ॥ इति संवत्सरी प्रतिक्रमण ॥

॥ अथ चण्ड नियम धारवानी विगतलखी एणी ॥

॥ गाथा ॥ सच्चित्तं द्रव्यं विगडं, वाणह तंबोलं वड कुंसुमे
सु, वाहण सयण विलेवण, बंनं दिसिं न्हाणं जत्तेसुं.

१ सच्चित्त जे माटी पाणी अग्नि मोठुं नीली वनस्पति
फलफूल ढाल काठ मूल पत्र बीज आदि काचां
धान्य, पाकां पण शस्त्र लागे वे घडी अया वि
ना सचितमां तेनुं मान करे ॥

२ ड्रव्य जे जे वस्तु मुखमां जुदा स्वाद अर्थे नां
खवी तेनी गणतीनो नियम ॥

३ विगड ते डुधं, दहो, धी, गोल, तेल, कर्महविगे ते
जे तावडे तळे ने त्रण घाण तळ्या पदार्थ कडे
विगे, बीजा घाण निवियातामां तेनो नियम ॥

४ वाणह ते पगरखां मोजडि पावदि चाखदि मो
जां तेनो नियम ॥

५ तंबोल ते सोपारी पान लवंग एलची प्रमुख

मुख शुद्धि आय तेना तोलनो नियम ॥

६ वढ ते पोतानें पेहेरवामां आवे ते वस्त्रनी गण
तिनो नियम ॥ [नियम करे ॥

७ कुसुमेसु ते जे वस्तु नाके सुंघे तेना तोलनो

८ वाहाण ते त्रण जेदे. चरतुं ते घोडा हाथो उंट
बलद पात्ता प्रमुख; फरतुं ते गाडी रथ प्रमुख; तर
तुं ते वहाण, नाव, त्रापा, बोट प्रमुख; तेनो नियम ॥

९ सयण ते सुवाना खाटला पलंग गाडी पाट पा
टला, पाधरणं प्रमुखनो नियम ॥

१० विलेवण ते जे वस्तु पोताने शरीरे विलेपन करे
तेना तोलनो नियम ॥

११ बंज ते नारीना जोगनो नियम ॥

१२ दिसि ते पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, उर्ध्व, अधा,
जवानुं प्रमाण करे ते ॥

१३ न्हाण ते सर्व अंगे नाहावुं तेनुं परिमाण ॥

१४ ज्ञत्तेसु ते ज्ञोजन पाणो जम्यामां आवे तेनुं तोल ॥

१५ पृथ्वीकाय ते माटी मीठुं खनी प्रमुख पोताने
निमीत्ते वरे तेनो नियम ॥

- १६ अपकाय ते पाणी पोए वावरे नाह्या प्रमुखमां
आवे तेना तोलनुं मान ॥
- १७ तेऊकाय ते जे पोताने शरीरे जोग उपजोगमां
चुला, चारी, शघनी, अंजोठी प्रमुखनुं रांध्युं नि
पज्युं ताप्या शेक्यामां आवे तेनो नियम करे ते.
- १८ वाऊकाय ते पंखा, हिंचोला, पन्वा, लुगडादिक
थी पवन नांखीए तेनुं प्रमाण ॥
- १९ वनस्पतिकाय ते लोलां फल, फूल, शाक, खाधा
वावस्थामां आवे ते दातण सुधानुं परिमाण ॥
- २० त्रसकाय ते जे त्रास पामे ते किडा, कीमी, विंठी,
गाय, मञ्जर, पंखी, मनुष्य, देव नारकी तेमांना कोइ
ने विना अपराधे संकल्पी मारुं नही तेनो नियम
- २१ असि ते तरवार जाला तीर बुरी कोस कोदाला
पावडा, घंटि प्रमुख जीव वधनां करनारां शस्त्र
तेनो नियम करे ते ॥ [नियम करे ते ॥
- २२ मसी ते साहोना खरिया दवातो प्रमुखनो
- २३ ऋसी ते जमिन खोदवादीक घर हाट खेत्र प्र

(८५७)

मुख तलाव कुवादि पावडादिके करी खोदे तेनो
नियम ॥ इतिश्रो चउद नियमादि बोल १३ पोताथो
पळे तेम पाळे ॥ तेहने धन्य ठे ॥

॥ अथ समकित सहित बारव्रत उचरवानी
विधि संक्षेपे लखीए ठीए ॥

॥ प्रथम समकित ते यथार्थ वस्तु तत्त्वना धर्म
तथा देवगुरु धर्मनी श्रद्धा ते शुद्ध पद युक्त ॥

१ देव श्री अरिहंत, अठार दोष रहित, संपूर्ण ज्ञान,
संपूर्ण दर्शनना धणी, मुक्ति मारगना देखाम
नार ते देव वीना बीजा देवने देव बुद्धिए नाआदरुं.

२ गुरु, सुसाधु, पंचमहाव्रतधारो, निग्रंथ, मोक्ष मा
रग साधवा उद्यमी ते वीना बीजा नामधारी
पाखंती गुरु बुद्धिए ना आदरुं ॥

३ सुधर्म, श्री जिनेश्वर श्री वीतरागदेवे ज्ञाप्यो ते
आज्ञा सहित दया मूल, दुर्गती पडता प्राणी
उने आलंबन; ते वीना बीजा नाम धर्म, गुण
विना धर्म बुद्धिए न आदरुं ॥

॥ ए त्रण तत्त्व सुधां सर्दहु ते पूजुं, वांडुं, सेवुं, ते
थी विपरीत न पूजुं, न वांडुं, न सेवुं, रायान्नियोगादि
आगारें जयणा; नियम जंग न आय ॥

१ दिनप्रते देव जूहारुं, जोग ना बनें तो १ नव
कारवाली प्रमुख गणुं ॥

२ दिनप्रते गुरु वांडु. जोग ना बनें तो श्रीसीमंधरादि
प्रत्तुनीदिशिधारीने वांडू, जूलें नवकारवाली १ गणुं.

३ धर्म, प्रजाते नवकारसी आदि संध्याये डुविहार
आदि करुं. न करुं तो नवकारवाली १ गणुं. वरस
प्रते देव पूजामां रूप ॥ गुरु ड्यमां रूप धर्म
कार्यमां सात खेत्रे रूप ॥ वावरूप ॥ आशातना
टालवा खप करुं ॥ ॥ श्री ॥

१ प्रथम स्थूल प्राणातिपात विरमण अणुव्रतण
स्थूल जीव संकटपी निरअपराधें हणवानी बुद्धि
ए न हणुं. हणाववा अनुमोदवामां पण थाय
तेनी जतना उपयोग राखुं.

२ बीजे स्थूल मृषावाद विरमण व्रत. पांच प्रकारे

(८६१)

जूठ न बोलवुं तेनां नाम १ कन्या २ गो ३ जूमी
४ थापण मोसो ५ कुडीसाख्य. ए पांच प्रकारे
जूठ न बोलुं. सुद्धम जयणा ॥

३ त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत ॥ मोटी
चोरी ना करुं, तालुं तोरुं नहीं, गांठ ठोडवी
नहीं, भारग पारुवो नही, चोरीनो माल लेवो
नहीं, जावतू अणदीधुं लेवुं नहीं राज दंमादि
उपजे ते चोरी तजुं ॥

४ चोथुं स्वदारा संतोष परदार विरमण व्रत. वि
श्ववा वेश्या कुलांगना प्रमुख, देव मनुष्य त्रोजंच
संबंधि स्त्री सोयदोराने आकारे सेववी नहीं. जावतू
कुवचन तथा सरागे विकार बुद्धिए सामुं पण
जोवुं नही. तेम नारीने पुरुष संबंधि जाणवुं ॥

५ पांचमुं परिग्रह परिमाणव्रत ॥ इच्छा परिमाणव्रत ॥
धनं, धान्य, क्षेत्रं, वस्त्रं, रूपं, सुवर्नं, कुपंद, छिपंद, चतु
ष्पद ए नव प्रकारना परिग्रहनुं परिमाण वा इच्छा
परिमाण करे उपरांत संबंधे वने तो तीर्थे वावरुं ॥

(८६७)

- ६ षट् दिशि परिमाण, ते पूर्वादि दिशाए जवानो
नियम शक्ति अनुसारे करे जाव जीव सुधी०
- ७ सातसुं जोगोपजोगव्रत, तेमां जोग ते जोगवी
वस्तु फरी काममां ना आवे ते, अन्न, पान, खादिम,
स्वादिम प्रमुख; तथा उपजोग ते घर घरेणुं वस्त्र
नारी प्रमुख जोगवेला पदार्थ वारंवार जोगवे ते
उपजोग, तेनो नियम, बावीस अन्नद्वय वत्रीस अ
नंतकायधमहावीगय तजवो. १४ नियम धारवा.
- ८ आठसुं अनर्थदंरु, विना अर्थे पाप कर्मे आर्त्त रौड
विषय कषाय हास्यादिके करी सजन प्रमुख
शरीर पूजा व्रतादि कारणविना घरेणां कोश
कोदाला उखल मुसलादि हल गामां शस्त्र सज्ज
करी पाप काममां जे प्रवर्त्तावे ते० ॥
- ९ नवसुं सामायक व्रत, ते दिन, पक्ष, मास, वरसमां
सामायक करवां तेनी संख्या. वे घनि सुधी स
मज्जावे वरतवुं ते सामायक ॥
- १० दशसुं देशावगासिकव्रत ते जावजीव दिशिपरि

(८६३)

माण करेलुं तेमांथी दिनप्रते जवा आववाना नियम करी घर शेरी प्रमुखमां रहेवुं ते वे घ स्त्री मांती जावजीव सुधी नीमें खेत्रे रहेवुं, साम्नायक आदि धर्म सेववो, तथा चन्द्र नियम धारवा ते प्रथम कह्या ठे ॥

११ अगीआरमुं पोषध उपवास व्रत ते च्यार परवी वा पांच परवी पोसह मासें वरसें करवा ते शक्ति जोग चार प्रकारना पोसाना ज्ञांगा ८० एक, द्विक, त्रीक, चतुसंजोगी मली थाय ठे सर्वथी चोवीहार, देशथी आंबिल नीवि एकासण; आठ अथवा चार पहोर रात्री दिन, अथवा रात वा दिन, आत्मानें चारित्र पुष्ट करवा प्रवर्तवुं ते ॥

१२ वारमुं अतिथिसंविज्ञाग व्रत ते प्रथम कह्या ते वा गुरुने पोसह पारणादीके पडीखान्नी जे दान दीधूं ते ज्ञोजनादिक वधेलुं रहे ते पोते वावरे. जोग ना बने तो धर्म मित्रने ज्ञोजन करावे अथवा पोताना धर्माचार्य जे दिशाए विचरे ते

(८६४)

दिशाए वांटी निमंत्रणा करी वावरे ॥

॥ ए समकित मूल बारव्रत देशाची लख्य
तेमां जेदतो विशेष ठे ते सुविहित गुरुवादीकने
ने ए आदरवां. जीवित जन्म जांण्यानुं फल ए

॥ अथ पञ्चक्राणना आगारनी गाथा ।

दो चव नमुकारे, आगारा ठ चव पोरिसिए ॥
तेवय पुरिमद्वे, एकासणगंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्तेग
णेसुअ, अठेव य अंबिलंमि आगारा ॥ पंचेव य ज्ञ
ठ प्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंच चनरो अग्नि
निव्वीए अठ नव आगारा ॥ अप्पाअरणे पंच चन
वंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥



शुद्धि पत्र.

लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पातुं.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८ अ	अै		४५	१ इथ्या	इच्छा	
७ य	य्य		४८	२५ गांव	गांउ	
११ ए	ऐ		४९	२ ठे	छे	
१३ क्ष	क्षै		४९	२ कहेठे	कहेछे	
१४ ज्ञ	ज्ञै		४९	१८ वनतुं	वनतुं	
४ वलचर	थलचर		५०	४ गायछे	थायछे	
५ वदीउ	वंदीउ		५२	३ इंद्रिय	इंद्रिय	
८ मो	नमो		५३	५ निग्धा	निग्धा	
१० खीद्धान	सिद्धानं		५४	१३ करीने	करीने	
१६ करी,	करी		५५	१ निग्धायण	निग्धायण	
१८ विशुद्ध	विशुद्ध		५७	२ मोन	मौन	
२ अरिहंतादिक	अरिहंतादिक		५७	२५ लाख	लाख	
५ अवे	अने		५९	२१ आगर संपदा	आगर संपदा	
१८ कवलज्ञान	केवलज्ञान.		६०	९ विराधना	विराधना	
१ काइ	कोइ		६२	१८ स्वामीने	स्वामीने	
१२ भाव	भाव		६२	२० अरिष्टनेमि	अरिष्टनेमि	
५ प्रतिबोधी	प्रतिबोधी		७३	१६ लांठन	लांठन	
७ भगवान	भगवान		७५	८ लांछन	लांछन	
३ करता	करतो		७५	२८ सौम्यदृष्टि	सौम्यदृष्टि	
१७ दवता	देवता		७७	१६ एवमंए	एवमंए	
१ दृष्टि	दृष्टि		८५	३ तेमा	तेमां	
६ थअ	अथ		९९	१५ इगानिखमणे	इगानिख मणे	
६ क०	के०					

पाठुं.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पाठुं.	लीटी.	अशुद्ध.
१००	१६ भोगण		भोगेण	१५६	१८ ज्योतिषिदेख	ज्योतिषि
१०३	१४ पहुआ		पहुंआ			
१०३	१८ बलवण		बलवण	१५८	२ सपभूय	स्सपभूय
२०५	५ द्वादश		द्वादश	१६२	६ धम्मवक्कवाट्टिं	धम्मवक्कवाट्टिं
१०६	१ श्रृंग		श्रृंग			
१०७	१४ धीर		धीर	१६५	२ वेयावच्च	वेयावच्च
१०८	१८ पञ्चने.		पञ्चने,	१७३	२ उणोवरिया	उणोवरिया
१०८	४ विंवाइ		विंवाइ	१७५	४ लि	ली
११०	८ गंधहथीणं		गंधहथीणं	१७६	१३ निकाक्षित	निकांक्षित
१११	४ अख्खथं		अख्खयं	१७८	१५ नक्की	नक्की
११२	१० मखय		मखय	१८८	१४ द्दष्टि	द्दष्टि
११३	१३ ओघ		ओघ	१८८	१८ पडिक्कमु	पडिक्कमुं
११४	१६ लोकनाहाणं		लोगनाहाणं	१९०	३ पडिक्कमणमां	पडिक्कमणमां
१२१	६ संताइ		संताइं.	१९६	५ वेपगां	वेपगां
१२१	८ केविसाहु		केविसाहु	१९८	६ पडिक्कमीश	पडिक्कमीश
१२१	१० साहु		साहु	२०८	१ काष्ट	काष्ट
१२३	१ दारिद्रित		दारिद्रिता	२१३	१३ संग्राम	संग्राम
१२३	३ समकत्व		सम्यकत्व	२१५	१४ अन	एन
१२३	८ अविगेण		अविग्घेणं	२१८	४ कौकुच्य	कौकुच्य
१२५	४ धारण		धारण	२२०	८ जघन्य	जघन्य
१२६	१० वप्माहये		वप्पमहिणु	२२२	१३ दुप्पाज्जअ	दुप्प-
१५०	२० आखवढ		आखवढे			मज्जिअ
१५५	१ अर्हद्वक्क		अर्हद्वक्कत्र	२२७	१५ वर्मना	धर्मना
१५५	१८ कापान		कार्पोने	२३१	१२ अप्या	अप्या
१५६	२० नाक्की		नांखी	२३६	१२ संताइ	संताइं
				२३८	३ अघो	अघो
				२३८	८ जघन्य	जघन्य

लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पातु.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१४	साहर्मिण	साहर्मिण	३०८	११	वध्युं	वध्युं
१८	चित्त	चित्त	३०८	११	साधु	साधु
१४	साधर्मिक	साधर्मिक	३१६	८	दूध	दूध
छेछी	दुरियाइ	दुरियाइं	३२५	११	ओठी	ओठी
१८	जित्ते	जित्ते	३२५	१४	मोढ	मोढे
१५	जेनी	जेनी	३३०	१४	भुवः	भुवः
१७	अधिष्टायिका	अधिष्टायिका	४३१	५	मधिष्ठानं	मधिष्ठानं
२	साधुभिः	साधुभिः	३३७	२	चित्	चित्त
३	तापथी	तापथी	३३७	१२	निर्भितिः	निर्भितिः
३	दवातु	दवातु	३३७	१५	जयांत	जयांति
७	जेशु	जेशु	३३७	३	नखांशव	नखांशवः
४	नाममंत्र	नाममंत्र	३४३	५	विचयां	विचयो
२०	सिद्धि	सिद्धि	३४६	१२	द्वराजार्चितानो दे-	द्वराजार्चितानां
१५	दृष्टीना	दृष्टिनां				
१२	विजयोदवि	विजयोदवि	३४८	३	अभिध	अभिधः
१२	जीणु	जीणु	३४८	४	रैवतकः	रैवतकः
५	वंदु	वंदुं	३४८	८	विशालहृदया	विशालहृदया
२	कृष्ण	कृष्ण	३५२	१	संक्षीप्त	संक्षिप्त
२	दसन	दसन	३५२	८	कायाय	कायाये
५	अवांत	अवांति	३५५	१६	सांभल्या	सांभल्यां
११	अहकुमारोअ	अहकुमारो	३५७	५	इंधण	इंधण
७	इच्छकार	इच्छकार	३५७	८	धोमेल	धोमेल
१५	जयोतपी	जयोतिपी	३५७	८	पतंगीया	पतंगीयां
४	मुट्टिसाहिअं	मुट्टिस-	३५८	१	स्वप्नांतर	स्वप्नांतर
		सहिअं	३५८	१	आप्या	आप्यां
१२	मुट्टिसाहित	मुट्टिसहित	३६२	१०	देवद्र	देवेंद्र
७	निविगइनु	निविगइनुं	३६५	१	कर्या	कर्यां
१८	लेखुं	लेखुं	३६६			

पांशु.	लीटी	अशुद्ध.	शुद्ध.	पांशु	लीटी	अशुद्ध.	शुद्ध.
३६७	२	क्रीधो	क्रीधो	५०७	८	दूरविधारिच	दूरविधारिच
३६८	११	उधरथे	उधरथे	५०७	१६	धवल	धवल
३६८	४	कोइ	कोइ	५०८	१८	अभिग्वाय	अभिग्वाय
३८७	१७	करण	करणे	५१८	८	चाड०मय	चाड०मय
३८४	१८	घमिल	घमिल	५२१	६	घडीनो	वडीना
४०७	६५	शांतीवाला	शांतीवाला	५१२	१४	मत्वेति	मत्वेति
४१०	५	थड्ठे	थड्ठे	५२२	६	मुखरा	मुखरी
४२३	१	तथा	तथा	५२३	७	नात्यद्भुत्तं	नात्यद्भुत्तं
४३२	३	जिण	जिणं	५२५	१३	पोतान	पोतानो
४३८	१३	मार्गन	मार्गने	५२६	८	पयःपाणी	पयः-पाणी
४४४	८	संति	संति	५२७	७	नहि	न हि
४४३	१६	सीह	सीह	५२८	५	मिपोन्मिय	मिपोन्मिय
४३८	१५	पहेरेलां	पहेरेलां	५३०	१६	स्पष्टिकरोपि	स्पष्टिकरोपि
४४७	१	इष्ट	इष्ट	५३१	४	जलधर	जलधर;
४६०	१५	लुध	लुध	५३१	१०	निर्धर्म	निर्धर्म
४६४	८	शांति	शांति	५३२	१५	"	"
४६६	११	गोष्टिकानां	गोष्टिकानां	७३४	१८	सर्वरिपु	सर्वरीपु
४६७	२	"	"	५३५	२	शु	शु
४६७	७	प्रतिष्ठा	प्रतिष्ठा	५४३	१५	मुच्चे	मुच्चे
४६८	१	शांति	शांति	५४८	२	ठ	ठे
४६८	१०	प्रतिष्ठा	प्रतिष्ठा	५६५	५	हृद्वत्तिनि	हृद्वत्तिनि
४६८	११	"	"	५६५	८	बोले छे	बोले छे
४७२	१८	झां	झां	५७४	१	निश्च	निश्च
४७३	१८	"	"	५७५	१०	हृदयनां	हृदयनां
४७३	१८	"	"	५७५	४	ध्यानयी	ध्यानयी
४७३	१८	"	"	५७६	४	वृत्तं	वृत्तं
४७३	१८	"	"	५८१	८	सानिध्यतः	सानिध्यतः
४७३	१८	"	"	५८१	८	पायूपतां	पायूपतां
४७३	१८	"	"	५८४	५	दिव्यधनि	दिव्यधनि

अशुद्ध.
दुरयं
ददयं

शुद्ध.

विधुरयं
पादद्वयं

शुद्ध. लाटा. अशुद्ध.

शुद्ध.

- १ प्रात
- ६ धा
- १ विधाय
- ५ ध्यान
- ७ देवद
- ११ भवदंष्ट्रि
- १७ वज्जिनोद
- १ त्वाद्विव
- १ मोस
- ११ सागरचंदो
- १३ विलपम
- १ नमुच्छुणं
- १४ बहु गान
- १७ सढढाण
- १४ पभवाणा
- ६ इध्यकारि
- १६ लख्या छे
- ८ सिध्यासि
- १३ इथ्या
- ८ "
- १६ अधभुट्टिओ
- ३ इथ्या
- ७ वसो
- ८ हेण
- १७ पढी

- प्रति
- तथा
- विधाय
- प्यान
- देवेंद्र
- भवदंष्ट्रि
- वज्जिनेंद्र
- त्वाद्विव
- मोसं
- सागरचंदो
- विलेपन
- नमुच्छुणं
- बहु गान
- सह्वाण
- पभावाणा
- इच्छकारि
- लख्या छे
- सिच्छासि
- इच्छा
- "
- अप्पुट्टिओ
- इच्छा
- वसो
- हण
- पढी

- ६४१
- ६४८
- ६४८
- ६६०
- ६६०
- ६६०
- ६६३
- ६६३
- ६६४
- ६६८
- ६६८
- ६७१
- ६७६
- ६७७
- ६८७
- ६८८
- ६९०
- ६९७
- ६९७
- ६९८
- ७०१
- ७०५
- ७११
- ७११
- ७७
- ७१७
- ७१८
- ७२७
- १७ हिंदा
- १० जिजिनोघ
- १ पमानः
- ७ डुवणी
- ७ श्रीवस्थ
- ८ श्रेयासनो
- १४ धरशु
- १५ धरणी
- ५ गोतम
- १ "
- ५ विधि
- ११ धुर धुर
- ४ धोपे
- १२ अष्टमी
- ३ ब्रह्मदू
- ७ पाप
- १५ पार्श्व
- ३ पद
- ६ ध्यान
- १३ लुधर्मां
- ६ तत्त्वे
- ६ वासोरे
- ११ आप्योरे
- १५ वेहन
- १४ पेरे
- १३ गोतम
- ५ आदरो
- ४ खेले

- निद्रा
- ज्जिनौघ
- मानः
- ठवणी
- श्रीवच्छ
- धेयांसनो
- धरशुं
- धरणी
- गौतम
- "
- विधि
- धुरंधर
- धोप
- अष्टमी
- ब्रह्मदू
- पाप
- पार्श्व
- पदे
- ध्यान
- लुधर्मां
- तत्त्वे
- वासोरे
- आप्योरे
- वेहन
- पेरे
- गौतम
- आदरो,
- खेले

पांचुं लीटी अशुद्ध.

शुद्ध.

पांचुं

	२ क्रीडो	क्रीडो	
७३५	१० चरला	चरवला	
७४१	१५ दूर	दूरे	
७४४	१३ चौखुं	चोखुं	
७५२	३ भलोजी	भलोजी;	
७६२	६ स्वर्गशु	स्वर्गशुं	
७६५	१५ पूजता	पूजतां	
७७२	१२ असंख्या	असंख्य	
७७३	८ प्र	प्र	
७७३	१२ सतकाल	ततकाल	
७८३	११ नहींखी	नहींजी	
७८५	१० नामजो	तामजो	
७८५	११ धररे	धरेरे	
८०१	४ पामी	गामी	
८०७	७ घसता	घसंता	
८०८	५ उडावण	उडावण	
८१२	२ संवटर	संवटर	
८१५	३ विपुलाचक	विमलाचल	
८१७	६ मुखपाडता	मुखपाडंता	

	लीटी. अशुद्ध.	शुद्ध.
८१७	८ वगडी	वी गडी
८१७	१४ थया	थयो
८१८	४ कीयाजी	कीये
८१८	४ मनि	मुनि
८२०	११ वपोर	वपोरे
८२१	८ वासो	वास्यो
८२४	३ वचननां	वचनना
८२५	५ जन	जिन
८२५	१७ शाश्वतो	शाश्वतां
८२८	१७ करीने	भरीने
८३०	७ जेहखुं	जेहवो
८३४	१३ कृत्तरो	कृत्तरो
८४६	११ कहीन	हीने
८४७	३ पेहली	पेहेली
८५२	२ इछा	इच्छा
८५७	१३ अधा	अधो
८५७	१५ अंप	अंगे

